Lucent's

प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए

सामान्य हिन्दी

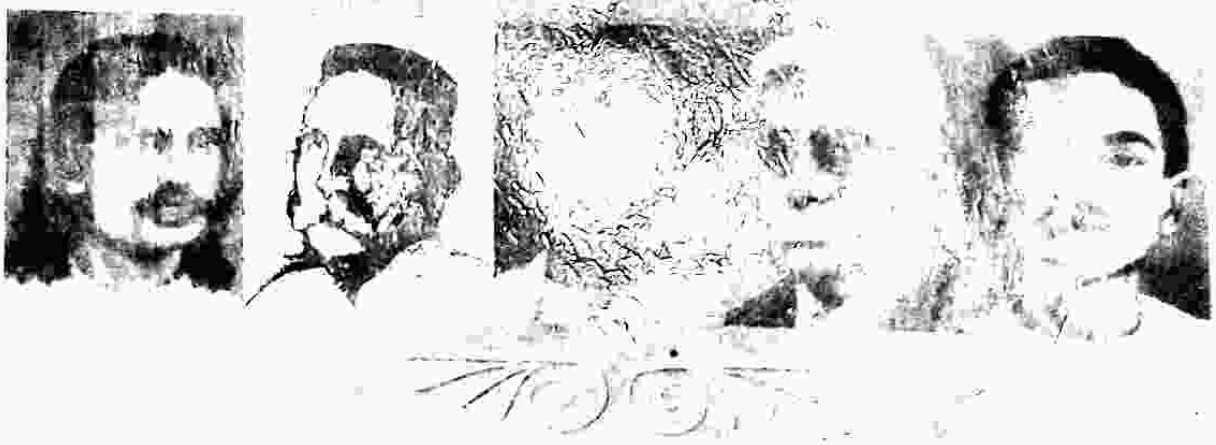

Lucent's

सामान्य हिन्दी

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों सहित

[बी० एड० प्रवेश परीक्षा, यू० जी० सी०/सी० बी० एस० ई० परीक्षा (नेट/जे.आर.एफ—हिन्दी), शिक्षक/अध्यापक/प्रवक्ता भर्त्ती परीक्षा, यू० डी० ए०/एल० डी० ए०, असिस्टेंट ग्रेड, स्टेनोग्राफर, लेखा-परीक्षक, हिन्दी अनुवादक परीक्षा, पुलिस सब-इंसपेक्टर, डिप्टी-जेलर, सी० बी० आई०, बैंक परीक्षा, एल० आई० सी०, पी० सी० एस०, आर० आर० बी० परीक्षा, पत्रकारिता प्रवेश परीक्षा आदि प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए]

संजीव कुमार
Mob. : 09801129674

प्रत्येक प्रामाणिक पुस्तक के आवरण पृष्ठ पर 3-D Hologram Sticker लगा है।
प्रामाणिकता के लिए 3-D Hologram Sticker के निचले भाग को Scratch करने पर Lucent Publication दिखेगा।

Lucent Publication
New Bypass Road, Ashochak
Patna-800 016 (Bihar)

विषय-सूची

I. भाषा खण्ड

1. हिन्दी भाषा : मुख्य तथ्य ... 1-20
   • हिन्दी भाषा का विकास • स्वतंत्रता-संग्राम के दौरान हिन्दी का राष्ट्रभाषा के रूप में विकास • स्वतंत्रता के बाद हिन्दी का राजभाषा के रूप में विकास • हिन्दी की उपभाषाएँ एवं बोलियाँ • देवनागरी लिपि • हिन्दी भाषा का मानकीकरण • विश्व हिन्दी सम्मेलन

II. व्याकरण खण्ड

A. वर्ण विचार (Phonemics) ... 21–46
2. वर्णमाला ... 21–24
3. वर्तनी ... 25–31
4. संधि ... 32–46

B. शब्द विचार (Morphology) ... 47–110
5. उपसर्ग–प्रत्यय ... 47–52
6. समास ... 53–58
7. शब्द-भेद, तत्सम–तद्भव ... 59–65
8. संज्ञा से अव्यय तक ... 66–77
9. पर्यायवाची शब्द ... 78–83
10. विलोम शब्द ... 84–88
11. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द ... 89–102
12. रिक्त स्थानों की पूर्ति ... 103–110
   • वाक्य में रिक्त स्थान की पूर्ति • अनुच्छेद में रिक्त स्थानों की पूर्ति

C. वाक्य विचार (Syntax) ... 111–155
13. वाक्य-भेद, विराम चिह्न ... 111–117
14. वाक्य-शुद्धि ... 118–1228
15. मुहावरे ... 123–135
16. लोकोक्तियाँ/कहावतें ... 136–141
17. क्रमबद्धता ... 142–146
   • वाक्य में क्रमबद्धता • अनुच्छेद में क्रमबद्धता
18. पाठ-बोधन ... 147–155

D. छंद विचार (Metrics) ... 156–174
19. शब्द-शक्ति, रस ... 156–164
20. छंद ... 165–168
21. अलंकार ... 169–174

III. साहित्य खण्ड

22. हिन्दी साहित्य : मुख्य तथ्य ... 175–222
   • काव्य • उपन्यास • कहानी • नाटक • एकांकी • आलोचना • निबंध • आत्मकथा • जीवनी • संस्मरण • रेखाचित्र • यात्रा वृतान्त • रिपोर्ताज • भाषेतिहास • शोध-प्रबंध • साहित्येतिहास • प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ • प्रमुख स्थापनाएँ • प्रमुख वाद • प्रमुख दर्शन • प्रमुख गुरु/शिष्य • प्रमुख उपनाम • प्रमुख तिथि/वर्ष • हिन्दी में सर्वप्रथम • पुरस्कार: साहित्य अकादमी, व्यास सम्मान व ज्ञानपीठ पुरस्कार

हिन्दी भाषा : मुख्य तथ्य
(Hindi Language : Main Facts)

01

1. हिन्दी भाषा का विकास

वर्गीकरण

- 'हिन्दी' विश्व की लगभग 3,000 भाषाओं में से एक है।
- आकृति या रूप के आधार पर हिन्दी वियोगात्मक या विश्लिष्ट भाषा है।
- भाषा-परिवार के आधार पर हिन्दी भारोपीय *(Indo-European)* परिवार की भाषा है।
- भारत में 4 भाषा-परिवार— भारोपीय, द्रविड़, आस्ट्रिक व चीनी-तिब्बती मिलते हैं। भारत में बोलनेवालों के प्रतिशत के आधार पर भारोपीय परिवार सबसे बड़ा भाषा-परिवार है।

भाषा-परिवार	भारत में बोलनेवालों का %
भारोपीय	73%
द्रविड़	25%
आस्ट्रिक	1.3%
चीनी-तिब्बती	0.7%

- हिन्दी, भारोपीय/भारत-यूरोपीय के भारतीय-ईरानी *(Indo-Iranian)* शाखा के भारतीय आर्य *(Indo-Aryan)* उपशाखा की एक भाषा है।
- भारतीय आर्यभाषा *(भा. आ.)* को तीन कालों में विभक्त किया जाता है।

नाम	प्रयोग काल	उदाहरण
प्राचीन भारतीय आर्यभाषा *(प्रा. भा. आ.)*	1500 ई०पू० – 500 ई०पू०	वैदिक संस्कृत व लौकिक संस्कृत
मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा *(म.भा.आ.)*	500 ई०पू० – 1000 ई०	पालि, प्राकृत, अपभ्रंश
आधुनिक भारतीय आर्यभाषा *(आ.भा.आ.)*	1000 ई०– अब तक	हिन्दी और हिन्दीतर भाषाएं –बांग्ला, उड़िया, असमिया, मराठी, गुजराती, पंजाबी, सिंधी आदि

प्राचीन भारतीय आर्यभाषा (प्रा.भा.आ.)

नाम	अन्य नाम	प्रयोग काल
वैदिक संस्कृत	छान्दस् *(यास्क, पाणिनी द्वारा प्रयुक्त नाम)*	1500 ई०पू० –1000 ई०पू०
लौकिक संस्कृत	संस्कृत, भाषा *(पाणिनी द्वारा प्रयुक्त नाम)*	1000 ई०पू० –500 ई०पू०

मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा (म.भा.आ.)

नाम	प्रयोग काल	विशेष टिप्पणी
प्रथम प्राकृत काल : पालि	500 ई.पू. – 1 ली ई.	भारत की प्रथम देश भाषा, भगवान बुद्ध के सारे उपदेश पालि में ही हैं
द्वितीय प्राकृत काल : प्राकृत	1 ली ई. –500 ई.	भगवान महावीर के सारे उपदेश प्राकृत में ही हैं
तृतीय प्राकृत काल : अपभ्रंश	500–1000 ई.	
: अवहट्ट	900–1100 ई.	संक्रमणकालीन/ संक्रांतिकालीन भाषा

आधुनिक भारतीय आर्यभाषा (आ.भा.आ.)

हिन्दी

प्राचीन हिन्दी	1100 ई० — 1400 ई०
मध्यकालीन हिन्दी	1400 ई० — 1850 ई०
आधुनिक हिन्दी	1850 ई० — अब तक

- हिन्दी की आदि जननी संस्कृत है। संस्कृत पालि, प्राकृत भाषा से होती हुई अपभ्रंश तक पहुँचती है। फिर अपभ्रंश, अवहट्ट से गुजरती हुई प्राचीन/प्रारंभिक हिन्दी का रूप लेती है। सामान्यतः, हिन्दी भाषा के इतिहास का आरंभ अपभ्रंश से माना जाता है।

हिन्दी का विकास क्रम :

संस्कृत→पालि→प्राकृत→अपभ्रंश→अवहट्ट→प्राचीन/प्रारंभिक हिन्दी

(→विकास चिह्न के लिए प्रयुक्त संकेत)

अपभ्रंश

- अपभ्रंश भाषा का विकास 500 ई० से लेकर 1000 ई० के मध्य हुआ और इसमें साहित्य का आरंभ 8वीं सदी (स्वयंभू कवि) से हुआ, जो 13वीं सदी तक जारी रहा।
- अपभ्रंश *(अप+ भ्रंश+ घञ्)* शब्द का यों तो शाब्दिक अर्थ है 'पतन' किन्तु अपभ्रंश साहित्य से अभीष्ट है—प्राकृत भाषा से विकसित भाषा विशेष का साहित्य।
- प्रमुख रचनाकार : स्वयंभू—अपभ्रंश का वाल्मीकि *('पउम चरिउ' अर्थात् राम काव्य)*, धनपाल *('भविस्सयत कहा'— अपभ्रंश का पहला प्रबंध काव्य)*, पुष्पदंत *('महापुराण', 'जसहर चरिऊ')*, सरहपा, कण्हपा आदि सिद्धों की रचनाएँ *('चरिया पद', 'दोहाकोशी')* आदि।

अपभ्रंश से आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का विकास—

अपभ्रंश के भेद	आधुनिक भारतीय आर्यभाषा
शौरसेनी	पश्चिमी हिन्दी
	राजस्थानी
	गुजराती
अर्द्धमागधी	पूर्वी हिन्दी
मागधी	बिहारी
	उड़िया
	बांग्ला
	असमिया
खस	पहाड़ी *(शौरसेनी से प्रभावित)*
ब्राचड़	पंजाबी *(शौरसेनी से प्रभावित)*
	सिन्धी
महाराष्ट्री	मराठी

अवहट्ट

- अवहट्ट 'अपभ्रष्ट' शब्द का विकृत रूप है। इसे 'अपभ्रंश का अपभ्रंश' या 'परवर्ती अपभ्रंश' कह सकते हैं। अवहट्ट अपभ्रंश और आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं के बीच की संक्रमणकालीन/संक्रातिकालीन भाषा है। इसका कालखंड 900 ई० से 1100 ई० तक निर्धारित किया जाता है। वैसे साहित्य में इसका प्रयोग 14वीं सदी तक होता रहा है।

➢ अब्दुर रहमान, दामोदर पण्डित, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, विद्यापति आदि रचनाकारों ने अपनी भाषा को 'अवहट्ट' या 'अवहट्ठ' कहा है। विद्यापति प्राकृत की तुलना में अपनी भाषा को मधुरतर बताते हैं: 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा/ ते तैसन जम्पओ अवहट्ठा' अर्थात्, देश की भाषा सब लोगों के लिए मीठी है, इसे अवहट्ठा कहा जाता है।

➢ प्रमुख रचनाकार : अद्दहमाण/अब्दुर रहमान *('संनेह रासय'/'संदेश रासक')*, दामोदर पण्डित *('उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण')*, ज्योतिरीश्वर ठाकुर *('वर्ण रत्नाकर')*, विद्यापति *('कीर्तिलता')*, रोड कवि *('राउलवेल')* आदि।

प्राचीन या पुरानी हिन्दी/प्रारंभिक या आरंभिक हिन्दी/आदिकालीन हिन्दी

➢ मध्यदेशीय भाषा-परंपरा की विशिष्ट उत्तराधिकारिणी होने के कारण हिन्दी का स्थान आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं में सर्वोपरि है।

➢ प्राचीन हिन्दी से अभिप्राय है—अपभ्रंश-अवहट्ट के बाद की भाषा।

➢ हिन्दी का आदिकाल हिन्दी भाषा का शिशु-काल है। यह वह काल था जब अपभ्रंश-अवहट्ट का प्रभाव हिन्दी भाषा पर मौजूद था और हिन्दी की बोलियों के निश्चित व स्पष्ट स्वरूप विकसित नहीं हुए थे।

हिन्दी शब्द की व्युत्पत्ति

'हिन्दी' शब्द की व्युत्पत्ति भारत के उत्तर-पश्चिम में प्रवहमान सिंधु नदी से संबंधित है। विदित है कि अधिकांश विदेशी यात्री और आक्रान्ता उत्तर-पश्चिम सिंहद्वार से ही भारत आए। भारत में आनेवाले इन विदेशियों ने जिस देश के दर्शन किए वह 'सिंधु' का देश था। ईरान *(फारस)* के साथ भारत के बहुत प्राचीन काल से ही संबंध थे और ईरानी 'सिंधु' को 'हिन्दु' कहते थे *[सिंधु→हिन्दु, स का ह में तथा ध का द में परिवर्तन—पहलवी भाषा प्रवृति के अनुसार ध्वनि परिवर्तन]*। 'हिन्दु' से 'हिन्द' बना और फिर 'हिन्द' में फारसी भाषा के संबंध कारक प्रत्यय 'ई' लगने से 'हिन्दी' बन गया। 'हिन्दी' का अर्थ है—'हिन्द का'। इस प्रकार हिन्दी शब्द की उत्पत्ति हिन्द देश के निवासियों के अर्थ में हुई। आगे चलकर यह शब्द 'हिन्द की भाषा' के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा ।

उपर्युक्त बातों से तीन बातें सामने आती हैं—

1. 'हिन्दी' शब्द का विकास कई चरणों में हुआ—
   सिंधु→ हिन्दु → हिन्द + ई → हिन्दी।

2. 'हिन्दी' शब्द मूलतः फारसी का है न कि हिन्दी भाषा का। यह ऐसे ही है जैसे बच्चा हमारे घर जनमे और उसका नामकरण हमारा पड़ोसी करे। हालांकि कुछ कट्टर हिन्दी-प्रेमी 'हिन्दी' शब्द की व्युत्पत्ति हिन्दी भाषा में ही दिखाने की कोशिश की है, जैसे— हिन *(हनन करनेवाला)* + दु *(दुष्ट)* = हिन्दु अर्थात् दुष्टों का हनन करनेवाला हिन्दु और उन लोगों की भाषा हिन्दी; हीन *(हीनों)* + दु *(दलन)* = हिन्दु अर्थात् हीनों का दलन करनेवाला हिन्दु और उनकी भाषा हिन्दी। चूँकि इन व्युत्पत्तियों में प्रमाण कम, अनुमान अधिक है इसलिए सामान्यतः इन्हें स्वीकारा नहीं जाता।

3. 'हिन्दी' शब्द के दो अर्थ हैं—'हिन्द देश के निवासी' *(यथा—'हिन्दी है हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा'—इकबाल)* और 'हिन्द की भाषा'। हाँ, यह बात अलग है कि अब यह शब्द इन दो आरंभिक अर्थों से पृथक् हो गया है। इस देश के निवासियों को अब कोई 'हिन्दी' नहीं कहता बल्कि भारतवासी, हिन्दुस्तानी आदि कहते हैं। दूसरे, इस देश की व्यापक भाषा के अर्थ में भी अब 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग नहीं होता क्योंकि भारत में अनेक भाषाएँ हैं जो सब हिन्दी नहीं कहलाती। बेशक ये सभी हिन्द की भाषाएं हैं लेकिन केवल हिन्दी नहीं हैं। उन्हें हम पंजाबी, बांग्ला, असमिया, उड़िया, मराठी आदि नामों से पुकारते हैं इसलिए हिन्द की इन सब भाषाओं के लिए 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग नहीं किया जाता।

➢ प्रमुख रचनाकार : 'हिन्दी' शब्द भाषा विशेष का वाचक नहीं है बल्कि यह भाषा-समूह का नाम है। हिन्दी जिस भाषा-समूह का नाम है उसमें आज के हिन्दी प्रदेश/क्षेत्र की 5 उपभाषाएँ तथा 17 बोलियाँ शामिल हैं। बोलियों में ब्रजभाषा, अवधी एवं खड़ी बोली को आगे चलकर मध्यकाल में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ।

➢ ब्रजभाषा : प्राचीन हिन्दी काल में ब्रजभाषा अपभ्रंश-अवहट्ट से ही जीवन-रस लेती रही। अपभ्रंश-अवहट्ट की रचनाओं में ब्रजभाषा के फूटते हुए अंकुर को देखा जा सकता है। ब्रजभाषा साहित्य का प्राचीनतम उपलब्ध ग्रंथ सुधीर अग्रवाल का 'प्रद्युम्न चरित' *(1354 ई०)* है।

➢ अवधी : अवधी की पहली कृति मुल्ला दाउद की 'चंदायन' या 'लोरकहा' *(1370 ई०)* मानी जाती है। इसके उपरांत अवधी भाषा के साहित्य का उत्तरोत्तर विकास होता गया।

➢ खड़ी बोली : प्राचीन हिन्दी काल में रचित खड़ी बोली साहित्य में खड़ी बोली के आरंभिक प्रयोगों से उसके आदि रूप या बीज रूप का आभास मिलता है। खड़ी बोली का आदिकालीन रूप सरहपा आदि सिद्धों, गोरखनाथ आदि नाथों, अमीर खुसरो जैसे सूफियों, जयदेव, नामदेव, रामानंद आदि संतों की रचनाओं में उपलब्ध है। इन रचनाकारों में हमें अपभ्रंश-अवहट्ट से निकलती हुई खड़ी बोली स्पष्टत दिखाई देती है।

मध्यकालीन हिन्दी

➢ मध्यकाल में हिन्दी का स्वरूप स्पष्ट हो गया तथा उसकी प्रमुख बोलियाँ विकसित हो गईं । इस काल में भाषा के तीन रूप निखरकर सामने आए— ब्रजभाषा, अवधी व खड़ी बोली। ब्रजभाषा और अवधी का अत्यधिक साहित्यिक विकास हुआ तथा तत्कालीन ब्रजभाषा साहित्य को कुछ देशी राज्यों का संरक्षण भी प्राप्त हुआ। इनके अतिरिक्त, मध्यकाल में खड़ी बोली के मिश्रित रूप का साहित्य में प्रयोग होता रहा। इसी खड़ी बोली का 14वीं सदी में दक्षिण में प्रवेश हुआ, अतः वहाँ इसका साहित्य में अधिक प्रयोग हुआ। 18वीं सदी में खड़ी बोली को मुसलमान शासकों का संरक्षण मिला तथा इसके विकास को नई दिशा मिली।

प्रमुख रचनाकार

➢ ब्रजभाषा : हिन्दी के मध्यकाल में मध्य देश की महान भाषा परंपरा के उत्तरदायित्व का पूरा निर्वाह ब्रजभाषा ने किया। यह अपने समय की परिनिष्ठित व उच्च कोटि की साहित्यिक भाषा थी, जिसको गौरवान्वित करने का सर्वाधिक श्रेय हिन्दी के कृष्णभक्त कवियों को है। पूर्व मध्यकाल *(अर्थात् भक्तिकाल)* में कृष्णभक्त कवियों ने अपने साहित्य में ब्रजभाषा का चरम विकास किया। पुष्टि मार्ग/शुद्धाद्वैत संप्रदाय के सूरदास *('सूर सागर')*, नंद दास, निम्बार्क

संप्रदाय के श्री भट्ट, चैतन्य संप्रदाय के गदाधर भट्ट, राधा-वल्लभ संप्रदाय के हित हरिवंश *(श्री कृष्ण की बाँसुरी के अवतार)* एवं संप्रदाय-निरपेक्ष कवियों में रसखान, मीराबाई आदि प्रमुख कृष्णभक्त कवियों ने ब्रजभाषा के साहित्यिक विकास में अमूल्य योगदान दिया। इनमें सर्वप्रमुख स्थान सूरदास का है जिन्हें 'अष्टछाप का जहाज' कहा जाता है। उत्तर मध्यकाल *(अर्थात् रीतिकाल)* में अनेक आचार्यों एवं कवियों ने ब्रजभाषा में लाक्षणिक एवं रीति ग्रंथ लिखकर ब्रजभाषा के साहित्य को समृद्ध किया। रीतिबद्ध कवियों में केशवदास, मतिराम, बिहारी, देव, पद्माकर, भिखारी दास, सेनापति, मतिराम आदि तथा रीतिमुक्त कवियों में घनानंद, आलम, बोधा आदि प्रमुख हैं। *(ब्रजबुलि— बंगाल में कृष्णभक्त कवियों द्वारा प्रचारित भाषा का नाम।)*

➢ अवधी : अवधी को साहित्यिक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय सूफी/प्रेममार्गी कवियों को है। कुत्बन *('मृगावती')*, जायसी *('पद्मावत')*, मंझन *('मधुमालती')*, आलम *('माधवानल कामकंदला')*, उसमान *('चित्रावली')*, नूर मुहम्मद *('इन्द्रावती')*, कासिमशाह *('हंस जवाहिर')*, शेख निसार *('यूसुफ जुलेखा')*, अलीशाह *('प्रेम चिंगारी')* आदि सूफी कवियों ने अवधी को साहित्यिक गरिमा प्रदान की। इनमें सर्वप्रमुख जायसी थे। अवधी को रामभक्त कवियों ने अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया, विशेषकर तुलसीदास ने 'राम चरित मानस' की रचना बैसवाड़ी अवधी में कर अवधी भाषा को जिस साहित्यिक ऊँचाई पर पहुँचाया वह अतुलनीय है। मध्यकाल में साहित्यिक अवधी का चरमोत्कर्ष दो कवियों में मिलता है जायसी और तुलसीदास में। जायसी के यहाँ जहाँ अवधी का ठेठ ग्रामीण रूप मिलता है वहाँ तुलसी के यहाँ अवधी का तत्सममुखी रूप। *(गोहारी/ गोयारी— बंगाल में सूफियों द्वारा प्रचारित अवधी भाषा का नाम।)*

➢ खड़ी बोली : मध्यकाल में खड़ी बोली का मुख्य केन्द्र उत्तर से बदलकर दक्कन में हो गया। इस प्रकार, मध्यकाल में खड़ी बोली के दो रूप हो गए—उत्तरी हिन्दी व दक्कनी हिन्दी। खड़ी बोली का मध्यकालीन रूप कबीर, नानक, दादू, मलूकदास, रज्जब आदि संतों; गंग की 'चन्द छन्द वर्णन की महिमा', रहीम के 'मदनाष्टक', आलम के 'सुदामा चरित', जटमल की 'गोरा बादल की कथा', वली, सौदा, इन्शा, नजीर आदि दक्कनी एवं उर्दू के कवियों, 'कुतुबशतम' *(17वीं सदी)*, 'भोगलू पुराण' *(18वीं सदी)*, सन्त प्राणनाथ के 'कुलजमस्वरूप' आदि में मिलता है।

आधुनिककालीन हिन्दी

➢ हिन्दी के आधुनिक काल तक आते-आते ब्रजभाषा जनभाषा से काफी दूर हट चुकी थी और अवधी ने तो बहुत पहले से ही साहित्य से मुँह मोड़ लिया था। 19वीं सदी के मध्य तक अंग्रेजी सत्ता का महत्तम विस्तार भारत में हो चुका था। इस राजनीतिक परिवर्तन का प्रभाव मध्य देश की भाषा हिन्दी पर भी पड़ा। नवीन राजनीतिक परिस्थितियों ने खड़ी बोली को प्रोत्साहन प्रदान किया। जब ब्रजभाषा और अवधी का साहित्यिक रूप जनभाषा से दूर हो गया तब उनका स्थान खड़ी बोली धीरे-धीरे लेने लगी। अंग्रेजी सरकार ने भी इसका प्रयोग आरंभ कर दिया।

➢ हिन्दी के आधुनिक काल में प्रारंभ में एक ओर उर्दू का प्रचार होने और दूसरी ओर काव्य की भाषा ब्रजभाषा होने के कारण खड़ी बोली को अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करना पड़ा। 19वीं सदी तक कविता की भाषा ब्रजभाषा और गद्य की भाषा खड़ी बोली रही। 20वीं सदी के आते-आते खड़ी बोली गद्य-पद्य दोनों की साहित्यिक भाषा बन गई।

➢ इस युग में खड़ी बोली को प्रतिष्ठित करने में विभिन्न धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक आंदोलनों ने बड़ी सहायता की। फलतः खड़ी बोली साहित्य की सर्वप्रमुख भाषा बन गयी।

खड़ी बोली

➢ भारतेन्दु-पूर्व युग : खड़ी बोली गद्य के आरंभिक रचनाकारों में फोर्ट विलियम कॉलेज के बाहर के दो रचनाकारों—सदासुख लाल 'नियाज' *('सुखसागर')* व इंशा अल्ला खां *('रानी केतकी की कहानी')*—तथा फोर्ट विलियम कॉलेज, कलकता के दो भाषा मुंशियों—लल्लू लालजी *('प्रेम सागर')* व सदल मिश्र *('नसिकेतोपाख्यान')*— के नाम उल्लेखनीय हैं। भारतेन्दु-पूर्व युग में मुख्य संघर्ष हिन्दी की स्वीकृति और प्रतिष्ठा को लेकर था । इस युग के दो प्रसिद्ध लेखकों—राजा शिव प्रसाद 'सितारे हिन्द' व राजा लक्ष्मण सिंह—ने हिन्दी के स्वरूप निर्धारण के प्रश्न पर दो सीमांतों का अनुगमन किया । राजा शिव प्रसाद ने हिन्दी का गँवारूपन दूर कर-कर उसे उर्दू-ए मुअल्ला बना दिया तो राजा लक्ष्मण सिंह ने विशुद्ध संस्कृतनिष्ठ हिन्दी का समर्थन किया।

➢ भारतेन्दु युग *(1850 ई०—1900 ई०)*: इन दोनों के बीच सर्वमान्य हिन्दी गद्य की प्रतिष्ठा कर गद्य साहित्य की विविध विधाओं का ऐतिहासिक कार्य भारतेन्दु युग में हुआ। हिन्दी सही मायने में भारतेन्दु के काल में 'नई चाल में ढली' और उनके समय में ही हिन्दी के गद्य के बहुमुखी रूप का सूत्रपात हुआ। उन्होंने न केवल स्वयं रचना की बल्कि अपना एक लेखक मंडल भी तैयार किया, जिसे 'भारतेन्दु मंडल' कहा गया। भारतेन्दु युग की महत्वपूर्ण उपलब्धि यह रही कि गद्य रचना के लिए खड़ी बोली को माध्यम रूप में अपनाकार युगानुरूप स्वस्थ दृष्टिकोण का परिचय दिया । लेकिन पद्य रचना के मामले में ब्रजभाषा या खड़ी बोली को अपनाने के प्रश्न पर विवाद बना रहा जिसका अंत द्विवेदी युग में जाकर हुआ।

➢ द्विवेदी युग *(1900 ई०—1920 ई०)* : खड़ी बोली और हिन्दी साहित्य के सौभाग्य से 1903 ई० में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका के संपादकत्व का भार संभाला। वे सरल और शुद्ध भाषा के प्रयोग के हिमायती थे। वे लेखकों की वर्तनी अथवा व्याकरण संबंधी त्रुटियों का संशोधन स्वयं करते चलते थे। उन्होंने हिन्दी के परिष्कार का बीड़ा उठाया और उसे बखूबी अंजाम दिया। गद्य तो भारतेन्दु युग से ही सफलतापूर्वक खड़ी बोली में लिखा जा रहा था, अब पद्य की व्यावहारिक भाषा भी एकमात्र खड़ी बोली प्रतिष्ठित होने लगी। इस प्रकार ब्रजभाषा, जिसके साथ 'भाषा' शब्द जुड़ा है, अपने क्षेत्र में सीमित हो गई अर्थात् 'बोली' बन गई। इसके मुकाबले मे खड़ी बोली, जिसके साथ 'बोली' शब्द लगा है, 'भाषा' बन गई, और इसका सही नाम 'हिन्दी' हो गया। अब खड़ी बोली दिल्ली के आस-पास की मेरठ-जनपदीय बोली नहीं रह गई अपितु

वह समस्त उत्तरी भारत के साहित्य का माध्यम बन गई। द्विवेदी युग में साहित्य रचना की विविध विधाएं विकसित हुई। महावीर प्रसाद द्विवेदी, श्याम सुंदर दास, पद्म सिंह शर्मा, माधव प्रसाद मिश्र, पूर्ण सिंह, चंद्रधर शर्मा गुलेरी आदि के अवदान विशेषतः उल्लेखनीय हैं।

➢ छायावाद युग *(1918 ई०—1936 ई०)* एवं उसके बाद : साहित्यिक खड़ी बोली हिन्दी के विकास में छायावाद युग का योगदान महत्वपूर्ण है। प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी वर्मा और राम कुमार वर्मा आदि ने इसमें महती योगदान दिया। इनकी रचनाओं को देखते हुए यह कोई नहीं कह सकता कि खड़ी बोली सूक्ष्म भावों को अभिव्यक्त करने में ब्रजभाषा से कम समर्थ है। हिन्दी में अनेक भाषायी गुणों का समावेश हुआ। अभिव्यंजना की विविधता, बिंबों की लाक्षणिकता, रसात्मक लालित्य छायावाद युग की भाषा की अन्यतम विशेषताएं हैं। हिन्दी काव्य में छायावाद युग के बाद प्रगतिवाद युग *(1936 ई०— 1946 ई०)* प्रयोगवाद युग *(1943 से)* आदि आए। इस दौर में खड़ी बोली का काव्य भाषा के रूप में उत्तरोत्तर विकास होता गया।

पद्य के ही नहीं, गद्य के संदर्भ में भी छायावाद युग साहित्यिक खड़ी बोली के विकास का स्वर्ण युग था। कथा साहित्य *(उपन्यास व कहानी)* में प्रेमचंद, नाटक में जयशंकर प्रसाद, आलोचना में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने जो भाषा-शैलियाँ और मर्यादाएं स्थापित की उनका अनुसरण आज भी किया जा रहा है। गद्य-साहित्य के क्षेत्र में इनके महत्व का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि गद्य-साहित्य के विभिन्न विधाओं के इतिहास में कालों का नामकरण इनके नाम को केन्द्र में रखकर किया गया है, जैसे उपन्यास के इतिहास में प्रेमचंद-पूर्व युग, प्रेमचंद युग, प्रेमचंदोत्तर युग; नाटक के इतिहास में प्रसाद-पूर्व युग, प्रसाद युग, प्रसादोत्तर युग; आलोचना के इतिहास में शुक्ल-पूर्व युग, शुक्ल युग, शुक्लोत्तर युग।

हिन्दी के विभिन्न नाम या रूप

1. हिन्दवी/हिन्दुई/जबान-ए-हिन्दी/देहलवी : मध्यकाल में मध्यदेश के हिन्दुओं की भाषा, जिसमें अरबी-फारसी शब्दों का अभाव है। *[सर्वप्रथम अमीर खुसरो (1253–1325) ने मध्य देश की भाषा के लिए हिन्दवी, हिन्दी शब्द का प्रयोग किया। उन्होंने देशी भाषा हिन्दवी, हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए एक फारसी-हिन्दी कोश 'खालिक बारी' की रचना की, जिसमें हिन्दवी शब्द 30 बार, हिन्दी शब्द 5 बार देशी भाषा के लिए प्रयुक्त हुआ है।]*
2. भाषा/भाखा : विद्यापति, कबीर, तुलसी, केशवदास आदि ने भाषा शब्द का प्रयोग हिन्दी के लिए किया है। *[19वीं सदी के प्रारंभ तक इस शब्द का प्रयोग होता रहा है। फोर्ट विलियम कॉलेज में नियुक्त हिन्दी अध्यापकों को 'भाषा मुंशी' के नाम से अभिहित करना इसी बात का सूचक है।]*
3. रेख्ता : मध्यकाल में मुसलमानों में प्रचलित अरबी-फारसी शब्दों से मिश्रित कविता की भाषा। *(जैसे-मीर, गालिब की रचनाएं)*
4. दक्खिनी/दक्कनी : मध्यकाल में दक्कन के मुसलमानों द्वारा फारसी लिपि में लिखी जानेवाली भाषा। [हिन्दी में गद्य रचना परंपरा की शुरूआत करने का श्रेय दक्कनी हिन्दी के रचनाकारों को ही है। दक्कनी हिन्दी को उत्तरी भारत में लाने का श्रेय प्रसिद्ध शायर वली दक्कनी (1667–1707) को है। वह मुगल शासन काल में दिल्ली पहुँचा और उत्तरी भारत में दक्कनी हिन्दी को लोकप्रिय बनाया।]
5. खड़ी बोली

   खड़ी बोली की 3 शैलियाँ

   ★ हिन्दी/शुद्ध हिन्दी /उच्च हिन्दी/नागरी हिन्दी/आर्यभाषा : नागरी लिपि में लिखित संस्कृत बहुल खड़ी बोली *(जैसे—जयशंकर प्रसाद की रचनाएं)*

   ★ उर्दू/जबान-ए-उर्दू/जबान-ए-उर्दू-मुअल्ला : फारसी लिपि में लिखित अरबी-फारसी बहुल खड़ी बोली *(जैसे—मण्टो की रचनाएँ)*

   ★ हिन्दुस्तानी : हिन्दी-उर्दू का मिश्रित रूप व आम जन द्वारा प्रयुक्त *(जैसे —प्रेमचंद की रचनाएं)*

नोट : *13वीं सदी से 18वीं सदी तक हिन्दी-उर्दू में कोई मौलिक भेद नहीं था।*

हिन्दी के विभिन्न अर्थ

1. भाषा शास्त्रीय अर्थ : नागरी लिपि में लिखित संस्कृत बहुल खड़ी बोली।
2. संवैधानिक/ कानूनी अर्थ : संविधान के अनुसार, हिन्दी भारत संघ की राजभाषा या अधिकृत भाषा तथा अनेक राज्यों की राजभाषा है।
3. सामान्य अर्थ : समस्त हिन्दी भाषी क्षेत्र की परिनिष्ठित भाषा अर्थात् शासन, शिक्षा, साहित्य, व्यापार आदि की भाषा।
4. व्यापक अर्थ : आधुनिक युग में हिन्दी को केवल खड़ी बोली में ही सीमित नहीं किया जा सकता। हिन्दी की सभी उपभाषाएं और बोलियाँ हिन्दी के व्यापक अर्थ में आ जाती हैं।

2. स्वतंत्रता-संग्राम के दौरान हिन्दी का राष्ट्रभाषा के रूप मे विकास

➢ राष्ट्रभाषा *(National Language)* क्या है ?

1. राष्ट्रभाषा का शाब्दिक अर्थ है—समस्त राष्ट्र में प्रयुक्त भाषा अर्थात् आम जन की भाषा *(जनभाषा)*। जो भाषा समस्त राष्ट्र में जन-जन के विचार-विनिमय का माध्यम हो, वह राष्ट्रभाषा कहलाती है।

2. राष्ट्रभाषा राष्ट्रीय एकता एवं अंतर्राष्ट्रीय संवाद-सम्पर्क की आवश्यकता की उपज होती है। वैसे तो सभी भाषाएँ राष्ट्रभाषाएँ होती हैं किन्तु राष्ट्र की जनता जब स्थानीय एवं तात्कालिक हितों व पूर्वाग्रहों से ऊपर उठकर अपने राष्ट्र की कई भाषाओं में से किसी एक भाषा को चुनकर उसे राष्ट्रीय अस्मिता का एक आवश्यक उपादान समझने लगती है तो वही राष्ट्रभाषा है।

3. स्वतंत्रता-संग्राम के दौरान राष्ट्रभाषा की आवश्यता होती है। भारत के संदर्भ में इस आवश्यकता की पूर्ति हिन्दी ने किया। यही कारण है कि हिन्दी स्वतंत्रता-संग्राम के दौरान *(विशेषतः 1900 ई०—1947 ई०)* राष्ट्रभाषा बनी।

4. राष्ट्रभाषा शब्द कोई संवैधानिक शब्द नहीं है बल्कि यह प्रयोगात्मक, व्यावहारिक व जनमान्यता-प्राप्त शब्द है।

5. राष्ट्रभाषा सामाजिक-सांस्कृतिक मान्यताओं-परंपराओं के द्वारा सामाजिक-सांस्कृतिक स्तर पर देश को जोड़ने का काम करती है अर्थात् राष्ट्रभाषा की प्राथमिक शर्त देश में विभिन्न समुदायों के बीच भावनात्मक एकता स्थापित करना है।

6. राष्ट्रभाषा का प्रयोग-क्षेत्र विस्तृत और देशव्यापी होता है। राष्ट्रभाषा सारे देश की संपर्क-भाषा होती है। इसका व्यापक जनाधार होता है।

7. राष्ट्रभाषा हमेशा स्वभाषा ही हो सकती है क्योंकि उसी के साथ जनता का भावनात्मक लगाव होता है।

8. राष्ट्रभाषा का स्वरूप लचीला होता है और इसे जनता के अनुरूप किसी भी रूप में ढाला जा सकता है।

1. अंग्रेजों का योगदान

➢ राष्ट्रभाषा सारे देश की सम्पर्क-भाषा *(link-language)* होती है। हिन्दी दीर्घकाल से सारे देश में जन-जन के पारस्परिक सम्पर्क की भाषा रही है। यह केवल उत्तर भारत की भाषा नहीं, बल्कि दक्षिण भारत के आचार्यों—वल्लभाचार्य, रामानुज, आदि—ने भी इसी भाषा के माध्यम से अपने मतों का प्रचार किया था। अहिन्दी भाषी राज्यों के भक्त-संत कवियों *(जैसे असम के शंकर देव, महाराष्ट्र के ज्ञानेश्वर व नामदेव, गुजरात के नरसी मेहता, बंगाल के चैतन्य आदि)* ने इसी भाषा को अपने धर्म और साहित्य का माध्यम बनाया था।

➢ यही कारण था कि जब जनता और सरकार के बीच संवाद-स्थापना के क्रम में फारसी या अंग्रेजी के माध्यम से दिक्कतें पेश आईं तो कंपनी सरकार ने फोर्ट विलियम कॉलेज में हिन्दुस्तानी विभाग खोलकर अधिकारियों को हिन्दी सिखाने की व्यवस्था की। यहाँ से हिन्दी पढ़े हुए अधिकारियों ने भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में उसका प्रत्यक्ष लाभ देखकर मुक्त कंठ से हिन्दी को सराहा।

➢ सी० टी० मेटकाफ ने 1806 ई० में अपने शिक्षा गुरु जान गिलक्राइस्ट को लिखा : 'भारत के जिस भाग में भी मुझे काम करना पड़ा है, कलकता से लेकर लाहौर तक, कुमाऊँ के पहाड़ों से लेकर नर्मदा तक ····· मैंने उस भाषा का आम व्यवहार देखा है, जिसकी शिक्षा आपने मुझे दी है। ····· मैं कन्याकुमारी से कश्मीर तक या जावा से सिन्धु तक इस विश्वास से यात्रा करने की हिम्मत कर सकता हूँ कि मुझे हर जगह ऐसे लोग मिल जाएँगे जो हिन्दुस्तानी बोल लेते होंगे।'

➢ टॉमस रोबक ने *1807* ई० में लिखा :'जैसे इंग्लैण्ड जानेवाले को लैटिन सेक्सन या फ्रेंच के बदले अंग्रेजी सीखनी चाहिए, वैसे ही भारत आने वाले को अरबी-फारसी या संस्कृत के बदले हिन्दुस्तानी सीखनी चाहिए।'

➢ विलियम केरी ने *1816* ई० में लिखा : 'हिन्दी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जानेवाली भाषा है।'

➢ एच० टी० कोलब्रुक ने लिखा : 'जिस भाषा का व्यवहार भारत के प्रत्येक प्रांत के लोग करते हैं, जो पढ़े-लिखे तथा अनपढ़ दोनों की साधारण बोलचाल की भाषा है, जिसको प्रत्येक गाँव में थोड़े-बहुत लोग अवश्य समझ लेते हैं, उसी का यथार्थ नाम हिन्दी है।'

➢ जार्ज ग्रियर्सन ने हिन्दी को 'आम बोलचाल की महाभाषा' *(Great Lingua Franca)* कहा है।

➢ इन विद्वानों के मंतव्यों से स्पष्ट है कि हिन्दी की व्यावहारिक उपयोगिता, देशव्यापी प्रसार एवं प्रयोगगत लचीलेपन के कारण अंग्रेजों ने हिन्दी को अपनाया। उस समय हिन्दी और उर्दू को एक ही भाषा मानी जाती थी जो दो लिपियों में लिखी जाती थी। अंग्रेजों ने हिन्दी को प्रयोग में लाकर हिन्दी की महती संभावनाओं की ओर राष्ट्रीय नेताओं एवं साहित्यकारों का ध्यान खींचा।

2. धर्म/समाज सुधारकों का योगदान

➢ धर्म/समाज सुधार की प्रायः सभी संस्थाओं ने हिन्दी के महत्व को भाँपा और हिन्दी की हिमायत की।

➢ ब्रह्म समाज *(1828 ई०)* के संस्थापक राजा राममोहन राय ने कहा : 'इस समग्र देश की एकता के लिए हिन्दी अनिवार्य है'। ब्रह्मसमाजी केशव चन्द्र सेन ने 1875 ई० में एक लेख लिखा—'भारतीय एकता कैसे हो,' जिसमें उन्होंने लिखा : 'उपाय है सारे भारत में एक ही भाषा का व्यवहार। अभी जितनी भाषाएँ भारत में प्रचलित हैं, उनमें हिन्दी भाषा लगभग सभी जगह प्रचलित है। यह हिन्दी अगर भारतवर्ष की एकमात्र भाषा बनायी जाय, तो यह काम सहज ही और शीघ्र सम्पन्न हो सकता है'। एक अन्य ब्रह्मसमाजी नवीन चन्द्र राय ने पंजाब में हिन्दी के विकास के लिए स्तुत्य योगदान दिया।

➢ आर्य समाज *(1875 ई०)* के संस्थापक दयानंद सरस्वती गुजराती भाषी थे एवं गुजराती व संस्कृत के अच्छे जानकार थे। हिन्दी का उन्हें सिर्फ कामचलाऊ ज्ञान था, पर अपनी बात अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुँचाने के लिए तथा देश की एकता को मजबूत करने के लिए उन्होंने अपना सारा धार्मिक साहित्य हिन्दी में लिखा। उनका कहना था कि 'हिन्दी के द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है'। वे इस 'आर्यभाषा' को सर्वात्मना देशोन्नति का मुख्य आधार मानते थे। उन्होंने हिन्दी के प्रयोग को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया। वे कहते थे, 'मेरी आँखें उस दिन को देखना चाहती हैं जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक सब भारतीय एक भाषा समझने और बोलने लग जायँ।'

➢ अरविंद दर्शन के प्रणेता अरविंद घोष की सलाह थी कि 'लोग अपनी-अपनी मातृभाषा की रक्षा करते हुए सामान्य भाषा के रूप में हिन्दी को ग्रहण करें'।

➢ थियोसोफिकल सोसायटी *(1875 ई०)* की संचालिका ऐनी बेसेंट ने कहा था : 'भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न भागों में जो अनेक देशी भाषाएँ बोली जाती हैं, उनमें एक भाषा ऐसी है जिसमें शेष सब भाषाओं की अपेक्षा एक भारी विशेषता है, वह यह कि उसका प्रचार सबसे अधिक है। वह भाषा हिन्दी है। हिन्दी जाननेवाला आदमी संपूर्ण भारतवर्ष में यात्रा कर सकता है और उसे हर जगह हिन्दी बोलनेवाले मिल सकते हैं। ····· भारत के सभी स्कूलों में हिन्दी की शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए।'

➢ उपर्युक्त धार्मिक/ सामाजिक संस्थाओं के अतिरिक्त प्रार्थना समाज *(स्थापना 1867 ई०, संस्थापक—आत्मारंग पाण्डुरंग)*, सनातन धर्म सभा *(स्थापना 1895 ई०, संस्थापक—पं० दीनदयाल शर्मा)*, रामकृष्ण मिशन *(स्थापना 1897 ई०, संस्थापक—विवेकानंद)* आदि ने हिन्दी प्रचार में योग दिया।

➢ इससे लगता है कि धर्म/समाज सुधारकों की यह सोच बन चुकी थी कि राष्ट्रीय स्तर पर संवाद स्थापित करने के लिए हिन्दी आवश्यक है। वे जानते थे कि हिन्दी बहुसंख्यक जन

की भाषा है, एक प्रांत के लोग दूसरे प्रांत के लोगों से सिर्फ इसी भाषा में विचारों का आदान प्रदान कर सकते हैं। भावी राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को बढ़ाने का कार्य इन्हीं धर्म/समाज सुधारकों ने किया।

3. कांग्रेस के नेताओं का योगदान

➢ 1885 ई० में कांग्रेस की स्थापना हुई। जैसे जैसे कांग्रेस का राष्ट्रीय आंदोलन जोर पकड़ता गया, वैसे वैसे राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय झंडा एवं राष्ट्रभाषा के प्रति आग्रह बढ़ता गया।

➢ 1917 ई० में लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने कहा : 'यद्यपि मैं उन लोगों में से हूँ जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।' तिलक ने भारतवासियों से आग्रह किया कि हिन्दी सीखें।

➢ महात्मा गाँधी राष्ट्र के लिए राष्ट्रभाषा को नितांत आवश्यक मानते थे। उनका कहना था : 'राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है'। गाँधीजी हिन्दी के प्रश्न को स्वराज का प्रश्न मानते थे : 'हिन्दी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है'। उन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में सामने रखकर भाषा-समस्या पर गंभीरता से विचार किया। 1917 ई० भड़ौच में आयोजित गुजरात शिक्षा परिषद के अधिवेशन में सभापति पद से भाषण देते हुए गाँधीजी ने कहा :

राष्ट्रभाषा के लिए 5 लक्षण या शर्तें होनी चाहिए—

1. अमलदारों (राजकीय अधिकारियों) के लिए वह भाषा सरल होनी चाहिए।
2. यह जरूरी है कि भारतवर्ष के बहुत से लोग उस भाषा को बोलते हों।
3. उस भाषा के द्वारा भारतवर्ष का अपनी धार्मिक, आर्थिक और राजनैतिक व्यवहार हो सकना चाहिए।
4. राष्ट्र के लिए वह भाषा आसान होनी चाहिए।
5. उस भाषा का विचार करते समय किसी क्षणिक या अल्पस्थायी स्थिति पर जोर नहीं देना चाहिए।''

वर्ष 1918 ई० में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के इन्दौर अधिवेशन में सभापति पद से भाषण देते हुए गाँधीजी ने राष्ट्रभाषा हिन्दी का समर्थन किया : 'मेरा यह मत है कि हिन्दी ही हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा हो सकती है और होनी चाहिए'। इसी अधिवेशन में यह प्रस्ताव पारित किया गया कि प्रतिवर्ष 6 दक्षिण भारतीय युवक हिन्दी सीखने को प्रयाग भेजे जाएं और 6 उत्तर भारतीय युवक को दक्षिणी भाषाएं सीखने तथा हिन्दी का प्रचार करने के लिए दक्षिण भारत में भेजा जाए। इन्दौर सम्मेलन के बाद उन्होंने हिन्दी के कार्य को राष्ट्रीय व्रत बना दिया। दक्षिण में प्रथम हिन्दी प्रचारक के रूप में गाँधीजी ने अपने सबसे छोटे पुत्र देवदास गाँधी को दक्षिण में मद्रास भेजा। गाँधीजी की प्रेरणा से मद्रास *(1927 ई०)* एवं वर्धा *(1936 ई०)* में राष्ट्रभाषा प्रचार सभाएं स्थापित की गईं।

➢ वर्ष 1925 ई० में कांग्रेस के कानपुर अधिवेशन में गाँधीजी की प्रेरणा से यह प्रस्ताव पारित हुआ कि 'कांग्रेस का, कांग्रेस की महासमिति का और कार्यकारिणी समिति का काम-काज आमतौर पर हिन्दी में चलाया जाएगा'। इस प्रस्ताव से हिन्दी-आंदोलन को बड़ा बल मिला।

➢ वर्ष 1927 ई० में गाँधीजी ने लिखा : 'वास्तव में ये अंग्रेजी में बोलनेवाले नेता हैं जो आम जनता में हमारा काम जल्दी आगे बढ़ने नहीं देते। वे हिन्दी सीखने से इंकार करते हैं जबकि हिन्दी द्रविड़ प्रदेश में भी तीन महीने के अंदर सीखी जा सकती है'।

➢ वर्ष 1927 ई० में सी० राजागोपालाचारी ने दक्षिणवालों को हिन्दी सीखने की सलाह दी और कहा : 'हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी'।

➢ वर्ष 1928 ई० में प्रस्तुत नेहरू रिपोर्ट में भाषा संबंधी सिफारिश में कहा गया था : 'देवनागरी अथवा फारसी में लिखी जानेवाली हिन्दुस्तानी भारत की राजभाषा होगी, परंतु कुछ समय के लिए अंग्रेजी का उपयोग जारी रहेगा'। सिवाय 'देवनागरी या फारसी' की जगह 'देवनागरी' तथा 'हिन्दुस्तानी' की जगह 'हिन्दी' रख देने के अंतत: स्वतंत्र भारत के संविधान में इसी मत को अपना लिया गया।

➢ वर्ष 1929 ई० में सुभाषचन्द्र बोस ने कहा : 'प्रांतीय ईर्ष्या द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिन्दी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज से नहीं मिल सकती। अपनी प्रांतीय भाषाओं की भरपूर उन्नति कीजिए, उसमें कोई बाधा नहीं डालना चाहता और न हम किसी की बाधा को सहन ही कर सकते हैं। पर सारे प्रांतों की सार्वजनिक भाषा का पद हिन्दी या हिन्दुस्तानी को ही मिला है'।

➢ वर्ष 1931 ई० में गाँधीजी ने लिखा : 'यदि स्वराज्य अंग्रजी पढ़े भारतवासियों का है और केवल उनके लिए है तो संपर्क भाषा अवश्य अंग्रेजी होगी। यदि वह करोड़ों भूखे लोगों, करोड़ों निरक्षर लोगों, निरक्षर स्त्रियों, सताये हुए अछूतों के लिए है तो संपर्क भाषा केवल हिन्दी हो सकती है'। गांधीजी जनता की बात जनता की भाषा में करने के पक्षधर थे।

➢ वर्ष 1936 ई० में गाँधीजी ने कहा : 'अगर हिन्दुस्तान को सचमुच आगे बढ़ना है तो चाहे कोई माने या न माने राष्ट्रभाषा तो हिन्दी ही बन सकती है क्योंकि जो स्थान हिन्दी को प्राप्त है वह किसी और भाषा को नहीं मिल सकता'।

➢ वर्ष 1937 ई० में देश के कुछ राज्यों में कांग्रेस मंत्रिमंडल गठित हुआ। इन राज्यों में हिन्दी की पढ़ाई को प्रोत्साहित करने का संकल्प लिया गया।

➢ जैसे-जैसे स्वतंत्रता-संग्राम तीव्रतर होता गया वैसे-वैसे हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का आंदोलन जोर पकड़ता गया। 20वीं सदी के चौथे दशक तक हिन्दी राष्ट्रभाषा के रूप में आम सहमति प्राप्त कर चुकी थी। वर्ष 1942 से 1945 का समय ऐसा था जब देश में स्वतंत्रता की लहर सबसे अधिक तीव्र थी, तब राष्ट्रभाषा से ओत-प्रोत जितनी रचनाए हिन्दी में लिखी गईं उतनी शायद किसी और भाषा में इतने व्यापक रूप से कभी नहीं लिखी गई। राष्ट्रभाषा के प्रचार के साथ राष्ट्रीयता के प्रबल हो जाने पर अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा।

राष्ट्रभाषा आंदोलन *(हिन्दी आंदोलन)* से संबंधित धार्मिक सामाजिक संस्थाएँ

नाम	मुख्यालय	स्थापना	संस्थापक
ब्रह्म समाज	कलकत्ता	1828 ई.	राजा राम मोहन राय
प्रार्थना समाज	बंबई	1867 ई.	आत्मारंग पाण्डुरंग
आर्य समाज	बंबई	1875 ई.	दयानंद सरस्वती
थियोसोफिकल सोसायटी	अडयार, मद्रास	1882 ई.	कर्नल एच. एस आलकाट एवं मैडम ब्लावत्सकी
सनातन धर्म सभ *(भारत धर्म महामंडल-1902 में नाम परिवर्तन)*	वाराणसी	1895 ई.	पं० दीन दयाल शर्मा
रामकृष्ण मिशन	बेलुर	1897 ई.	विवेकानंद

राष्ट्रभाषा आंदोलन *(हिन्दी आंदोलन)* से संबंधित साहित्यिक संस्थाएं

नाम	मुख्यालय	स्थापना
नागरी प्रचारिणी सभा	काशी/ वाराणसी	1893 ई० *संस्थापक-त्रयी—श्याम सुंदर दास, राम नारायण मिश्र व शिव कुमार सिंह*
हिन्दी साहित्य सम्मेलन	प्रयाग	1910 ई० *(प्रथम सभापति—मदन मोहन मालवीय)*
गुजरात विद्यापीठ	अहमदाबाद	1920 ई०
बिहार विद्यापीठ	पटना	1921 ई०
हिन्दुस्तानी एकेडमी	इलाहाबाद	1927 ई०
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा *(पूर्व नाम-हिन्दी साहित्य सम्मेलन)*	मद्रास	1927 ई०
हिन्दी विद्यापीठ	देवघर	1929 ई०
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति	वर्धा	1936 ई०
महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा	पुणे	1937 ई०
बंबई हिन्दी विद्यपीठ	बंबई	1938 ई०
असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति	गुवाहटी	1938 ई०
बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्	पटना	1951 ई०
अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ	नई दिल्ली	1964 ई०
नागरी लिपि परिषद्	नई दिल्ली	1975 ई०

राष्ट्रभाषा आंदोलन (हिन्दी आंदोलन) से संबंधित व्यक्तित्व

बंगाल : राजा राम मोहन राय, केशवचन्द्र सेन, नवीन चन्द्र राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, तरुणी चरण मित्र, राजेन्द्र लाल मित्र, राज नारायण बसु, भूदेव मुखर्जी, बंकिम चन्द्र चटर्जी *('हिन्दी भाषा की सहायता से भारतवर्ष के विभिन्न प्रदेशों के मध्य में जो ऐक्यबंधन संस्थापन करने में समर्थ होंगे वही सच्चे भारतबंधु पुकारे जाने योग्य हैं'।)*, सुभाष चन्द्र बोस *('अगर आज हिन्दी भाषा मान ली गई है तो वह इसलिए नहीं कि वह किसी प्रांत विशेष की भाषा है, बल्कि इसलिए कि वह अपनी सरलता, व्यापकता तथा क्षमता के कारण सारे देश की भाषा हो सकती है।')*, रवीन्द्र नाथ टैगोर *('यदि हम प्रत्येक भारतीय के नैसर्गिक अधिकारों के सिद्धांत को स्वीकार करते हैं, तो हमें राष्ट्रभाषा के रूप में उस भाषा को स्वीकार करना चाहिए जो देश के सबसे बड़े भूभाग में बोली जाती है और जिसे स्वीकार करने की सिफारिश महात्मा गांधी ने हमलोगों से की है । इसी विचार से हमें एक भाषा की आवश्यकता है और वह हिन्दी है।')*, रामानंद चटर्जी, सरोजनी नायडू, शारदा चरण मित्र *(अखिल भारतीय लिपि के रूप में देवनागरी लिपि के प्रथम प्रचारक)*, आचार्य क्षिति मोहन सेन *('हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने हेतु जो अनुष्ठान हुए हैं, उनको मैं संस्कृति का राजसूय यज्ञ समझता हूँ।')* आदि।

महाराष्ट्र : बाल गंगाधर तिलक *('यह आंदोलन उत्तर भारत में केवल एक सर्वमान्य लिपि के प्रचार के लिए नहीं है। यह तो उस आंदोलन का एक अंग है, जिसे मैं राष्ट्रीय आंदोलन कहूँगा और जिसका उद्देश्य समस्त भारतवर्ष के लिए एक राष्ट्रीय भाषा की स्थापना करना है, क्योंकि सबके लिए समान भाषा राष्ट्रीयता का महत्वपूर्ण अंग है। अतएव यदि आप किसी राष्ट्र के लोगों को एक-दूसरे के निकट लाना चाहें तो सबके लिए समान भाषा से बढ़कर सशक्त अन्य कोई बल नहीं है।')*, एन.सी. केलकर, डॉ मण्डारकर, वी० डी० सावरकर, गोपाल कृष्ण गोखले, गाडगिल, काका कालेलकर आदि।

पंजाब : लाला लाजपत राय, श्रद्धाराम फिल्लौरी आदि।

गुजरात: दयानंद सरस्वती, महात्मा गाँधी, वल्लभभाई पटेल, कन्हैयालाल माणिकलाल *(के० एम०)* मुंशी *('हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना नहीं है; वह तो है ही'।)* आदि।

दक्षिण भारत : सी० राजागोपालाचारी, टी० विजयराघवाचार्य *('हिन्दुस्तान की सभी जीवित और प्रचलित भाषाओं में मुझे हिन्दी ही राष्ट्रभाषा बनने के लिए सबसे अधिक योग्य दीख पड़ती है'।)*, सी० पी० रामास्वामी अय्यर *('देश के विभिन्न भागों के निवासियों के व्यवहार के लिए सर्वसुगम और व्यापक तथा एकता स्थापित करने के साधन के रूप में हिन्दी का ज्ञान आवश्यक है'।)*, अनन्त शयनम आयंगर *('हिन्दी ही उत्तर और दक्षिण को जोड़नेवाली समर्थ भाषा है।')*, एस० निजलिंगप्पा *('दक्षिण की भाषाओं ने संस्कृत से बहुत कुछ लेन-देन किया है, इसलिए उसी परंपरा में आई हुई हिन्दी बड़ी सरलता से राष्ट्रभाषा होने लायक है।')*, रंगनाथ रामचन्द्र दिवाकर *('जो राष्ट्रप्रेमी है, उसे राष्ट्रभाषा प्रेमी होना चाहिए'।)*, के० टी० भाष्यम, आर० वेंकटराम शास्त्री, एन० सुन्दरैया आदि।

अन्य : मदन मोहन मालवीय, पुरुषोत्तम दास टंडन *(उपनाम—'हिन्दी का प्रहरी', कथन : 'मैं हिन्दी का और हिन्दी मेरी है।')*, राजेन्द्र प्रसाद, सेठ गोविंद दास आदि।

महात्मा गाँधी के भाषा-संबंधी विचार

1. 'करोड़ों लोगों को अंग्रेजी की शिक्षा देना उन्हें गुलामी में डालने जैसा है। मैकाले ने शिक्षा की जो बुनियाद डाली, वह सचमुच गुलामी की बुनियाद थी'। *('हिन्द स्वराज्य' 1909)*
2. 'अंग्रेजी भाषा हमारे राष्ट्र के पांव में बेड़ी बनकर पड़ी हुई है····भारतीय विद्यार्थी को अंग्रेजी के मार्फत ज्ञान अर्जित करने पर कम-से-कम 6 वर्ष अधिक बरबाद करने पड़ते हैं···· यदि हमें एक विदेशी भाषा पर अधिकार पाने के लिए जीवन के अमूल्य वर्ष लगा देने पड़े, तो फिर और क्या हो सकता है'। *(1914)*
3. 'जिस भाषा में तुलसीदास जैसे कवि ने कविता की हो, वह अत्यंत पवित्र है और उसके सामने कोई भाषा ठहर नहीं सकती'। *(1916)*
4. 'हिन्दी ही हिन्दुस्तान के शिक्षित समुदाय की सामान्य भाषा हो सकती है यह बात निर्विवाद सिद्ध है। ···· जिस स्थान को अंग्रेजी भाषा आजकल लेने का प्रयत्न कर रही है और जिसे लेना उसके लिए असंभव है, वही स्थान हिन्दी को मिलना चाहिए क्योंकि हिन्दी का उस पर पूर्ण अधिकार है। यह स्थान अंग्रेजी को नहीं मिल सकता क्योंकि वह विदेशी भाषा है और हमारे लिए बड़ी कठिन है'। *(1917)*
5. 'हिन्दी भाषा वह भाषा है जिसको उत्तर में हिन्दू व मुसलमान बोलते हैं और जो नागरी और फारसी लिपि में लिखी जाती है। यह हिन्दी एकदम संस्कृतमयी नहीं है और न ही वह एकदम फारसी शब्दों से लदी है'। *(1918)*
6. 'हिन्दी और उर्दू नदियां हैं और हिन्दुस्तानी सागर है। हिन्दी और उर्दू दोनों को आपस में झगड़ा नहीं करना चाहिए। दोनों का मुकाबला तो अंग्रेजी से है'।
7. 'अंग्रेजी के व्यामोह से पिंड छुड़ाना स्वराज्य का एक अनिवार्य अंग है'।
8. 'मैं यदि तानाशाह होता *(मेरा बस चलता)* तो आज ही विदेशी भाषा में शिक्षा देना बंद कर देता, सारे अध्यापकों को स्वदेशी भाषाएं अपनाने पर मजबूर कर देता। जो आनाकानी करते, उन्हें बर्खास्त कर देता। मैं पाठ्य-पुस्तकों की तैयारी का इंतजार नहीं करूंगा, वे तो माध्यम के परिवर्तन के पीछे-पीछे अपने-आप चली आएगी। यह एक ऐसी बुराई है, जिसका तुरंत इलाज होना चाहिए'।

9. 'मेरी मातृभाषा में कितनी ही खामियाँ क्यों न हों, मैं इससे इसी तरह चिपटा रहूँगा जिस तरह बच्चा अपनी माँ की छाती से, जो मुझे जीवनदायी दूध दे सकती है। अगर अंग्रेजी उस जगह को हड़पना चाहती है जिसकी वह हकदार नहीं है, तो मैं उससे सख्त नफरत करूँगा— वह कुछ लोगों के सीखने की वस्तु हो सकती है, लाखों-करोड़ों की नहीं'।

10. 'लिपियों में सबसे अव्वल दरजे की लिपि नागरी को ही मानता हूँ। मैं मानता हूँ कि नागरी और उर्दू लिपि के बीच अंत में जीत नागरी लिपि की ही होगी'।

3. स्वतंत्रता के बाद हिन्दी का राजभाषा के रूप में विकास

राजभाषा *(Official Language)* क्या है ?

1. राजभाषा का शाब्दिक अर्थ है—राज-काज की भाषा। जो भाषा देश के राजकीय कार्यों के लिए प्रयुक्त होती है, वह 'राजभाषा' कहलाती है। राजाओं-नवाबों के जमाने में इसे 'दरबारी भाषा' कहा जाता था।

2. राजभाषा सरकारी काम-काज चलाने की आवश्यकता की उपज होती है।

3. स्वशासन आने के पश्चात् राजभाषा की आवश्यकता होती है। प्रायः राष्ट्रभाषा ही स्वशासन आने के पश्चात् राजभाषा बन जाती है। भारत में भी राष्ट्रभाषा हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ।

4. राजभाषा एक संवैधानिक शब्द है। हिन्दी को 14 सितम्बर 1949 ई० को संवैधानिक रूप से राजभाषा घोषित किया गया। इसीलिए प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

5. राजभाषा देश को अपने प्रशासनिक लक्ष्यों के द्वारा राजनीतिक-आर्थिक इकाई में जोड़ने का काम करती है। अर्थात् राजभाषा की प्राथमिक शर्त राजनीतिक प्रशासनिक एकता कायम करना है।

6. राजभाषा का प्रयोग-क्षेत्र सीमित होता है, यथा : वर्तमान समय में भारत सरकार के कार्यालयों एवं कुछ राज्यों—हिन्दी क्षेत्र के राज्यों—में राज-काज हिन्दी में होता है। अन्य राज्य सरकारें अपनी-अपनी भाषा में कार्य करती हैं, हिन्दी में नहीं; महाराष्ट्र मराठी में, पंजाब पंजाबी में, गुजरात गुजराती में आदि।

7. राजभाषा कोई भी भाषा हो सकती है स्वभाषा या परभाषा। जैसे, मुगल शासक अकबर के समय से लेकर मैकाले के काल तक फारसी राजभाषा तथा मैकाले के काल से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक अंग्रेजी राजभाषा थी जो कि विदेशी भाषा थी। जबकि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया जो कि स्वभाषा है।

8. राजभाषा का एक निश्चित मानक स्वरूप होता है जिसके साथ छेड़छाड़ या प्रयोग नहीं किया जा सकता।

I. हिन्दी की संवैधानिक स्थिति व उसकी समीक्षा

➢ स्वतंत्रता के पूर्व जो छोटे-बड़े राष्ट्रनेता राष्ट्रभाषा या राजभाषा के रूप में हिन्दी को अपनाने के मुद्दे पर सहमत थे, उनमें से अधिकांश गैर-हिन्दी भाषी नेता स्वतंत्रता मिलने के वक्त हिन्दी के नाम पर बिदकने लगे।

➢ यही वजह थी कि संविधान सभा में केवल हिन्दी पर विचार नहीं हुआ; राजभाषा के नाम पर जो बहस वहाँ 11 सितम्बर, 1949 ई० से 14 सितम्बर, 1949 ई० तक हुई, उसमें हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत एवं हिन्दुस्तानी के दावे पर विचार किया गया।

➢ किन्तु संघर्ष की स्थिति सिर्फ हिन्दी एवं अंग्रेजी के समर्थक के बीच ही देखने को मिली। हिन्दी समर्थक वर्ग में भी दो गुट थे। एक गुट देवनागरी लिपि वाली हिन्दी का समर्थक था; दूसरा गुट (महात्मा गाँधी, जे. एल. नेहरू, अबुल कलाम आजाद आदि) दो लिपियों वाली हिन्दुस्तानी के पक्ष में था।

➢ आजाद भारत में एक विदेशी भाषा, जिसे देश का बहुत थोड़ा-सा अंश *(अधिक-से-अधिक 1 या 2%)* ही पढ़-लिख और समझ सकता था, देश की राजभाषा नहीं बन सकती थी लेकिन यकायक अंग्रेजी को छोड़ने में भी दिक्कतें थीं। प्रायः 150 वर्षों से अंग्रेजी प्रशासन और उच्च शिक्षा की भाषा रही थी। हिन्दी देश की 46% जनता की भाषा थी। राजभाषा बनने के लिए हिन्दी का दावा न्याययुक्त था। साथ ही, प्रादेशिक भाषाओं की भी सर्वथा उपेक्षा नहीं की जा सकती थी।

➢ इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने राजभाषा की समस्या को हल करने की कोशिश की। संविधान सभा के भीतर और बाहर हिन्दी के विपुल समर्थन को देखकर संविधान सभा ने हिन्दी के पक्ष में अपना फैसला दिया। यह फैसला हिन्दी विरोधी एवं हिन्दी समर्थकों के बीच 'मुंशी-आयंगार फॉर्मूले' के द्वारा समझौते के परिणामस्वरूप सामने आया, जिसकी प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार थीं—

1. हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा नहीं बल्कि राजभाषा है।
2. संविधान के लागू होने के दिन से 15 वर्षों की अवधि तक अंग्रेजी बनी रहेगी।
3. एक अस्पष्ट निर्देश *(अनु० 351)* के आधार पर हिन्दी एवं हिन्दुस्तानी के विवाद को दूर कर लिया गया।

➢ संविधान में भाषा-विषयक उपबंध अनु० 120, अनु० 210 एवं भाषा-विषयक एक पृथक् भाग—भाग 17 *(राजभाषा)* के अनु० 343 से 351 तक एवं 8वीं अनुसूची में दिए गए हैं। संविधान के ये भाषा-विषयक उपबंध हिन्दी, अंग्रेजी एवं प्रादेशिक भाषाओं के परस्पर विरोधी दावों के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करते हैं।

अनु० 120 : संसद में प्रयोग की जानेवाली भाषा

संसद का कार्य हिन्दी में या अंग्रेजी में किया जाएगा, परन्तु यथास्थिति लोकसभाध्यक्ष या राज्य सभा का सभापति किसी सदस्य को उसकी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुमति दे सकता है। संसद विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तो 15 वर्ष की अवधि के पश्चात् 'या अंग्रेजी में' शब्दों का लोप किया जा सकेगा।

अनु० 210 : राज्य विधानमंडल में प्रयोग की जानेवाली भाषा

राज्यों के विधानमंडलों का कार्य अपने-अपने राज्य की राजभाषा या राजभाषाओं में या हिन्दी में या अंग्रेजी में किया जाएगा, परन्तु यथास्थिति विधानसभाध्यक्ष या विधान परिषद का सभापति किसी सदस्य को उसकी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुमति दे सकता है। संसद विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तो 15 वर्ष की अवधि के पश्चात् 'या अंग्रेजी में 'शब्दों का लोप किया जा सकेगा।

भाग-17
राजभाषा
अध्याय 1 : संघ की भाषा

अनु० 343 : संघ की राजभाषा

1. संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। अंकों का रूप भारतीय अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय रूप होगा।
2. इस संविधान के प्रारंभ से 15 वर्ष की अवधि तक *(अर्थात् 1965 तक)* उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा, जिनके लिए पहले प्रयोग किया जा रहा था।

   परन्तु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान संघ के शासकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिन्दी भाषा का और भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा।
3. संसद उक्त 15 वर्ष की अवधि के पश्चात्, विधि द्वारा
   (i) अंग्रेजी भाषा का; या
   (ii) अंकों के देवनागरी रूप का,

   ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग उपबंधित कर सकेगी जो ऐसी विधि में विनिर्दिष्ट किए जाएँ।

अनु० 344 : राजभाषा के संबंध में आयोग *(5 वर्ष के उपरांत राष्ट्रपति द्वारा)* और संसद की समिति *(10 वर्ष के उपरांत)*

अध्याय 2 : प्रादेशिक भाषाएँ

अनु० 345 : राज्य की राजभाषा या राजभाषाएं *(प्रादेशिक भाषा/ भाषाएं या हिन्दी; ऐसी व्यवस्था होने तक अंग्रेजी का प्रयोग जारी)*

अनु० 346 : एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा *(संघ द्वारा तत्समय प्राधिकृत भाषा; आपसी करार होने पर दो राज्यों के बीच हिन्दी)*

अनु० 347 : किसी राज्य की जनसंख्या के किसी अनुभाग द्वारा बोली जानेवाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध

अध्याय 3 : SC, HC आदि की भाषा

अनु० 348 : SC और HC में और संसद व राज्य विधान मंडल में विधेयकों, अधिनियमों आदि के लिए प्रयोग की जानेवाली भाषा *(उपबंध होने तक अंग्रेजी जारी)*

अनु० 349 : भाषा से संबंधित कुछ विधियां अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया *(राजभाषा संबंधी कोई भी विधेयक राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी के बिना पेश नहीं की जा सकती और राष्ट्रपति भी आयोग की सिफारिशों पर विचार करने के बाद ही मंजूरी दे सकेगा)*

अध्याय 4 : विशेष निदेश

अनु० 350 : व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जानेवाली भाषा *(किसी भी भाषा में)*

(i) भाषाई अल्पसंख्यक वर्गों के लिए प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएँ

(i) भाषाई अल्पसंख्यक वर्गों के लिए विशेष अधिकारी की नियुक्ति *(राष्ट्रपति द्वारा)*

अनु० 351 : हिन्दी के विकास के लिए निदेश

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी में और 8वीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदावली को आत्मसात करते हुए जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करें।

8वीं अनुसूची

भाषाएँ

8वीं अनुसूची में संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त 22 प्रादेशिक भाषाओं का उल्लेख है। इस अनुसूची में आरंभ में 14 भाषाएँ *[1. असमिया 2. बांग्ला 3. गुजराती 4. हिन्दी 5. कन्नड़ 6. कश्मीरी 7. मलयालम 8. मराठी 9. उड़िया 10. पंजाबी 11. संस्कृत 12. तमिल 13. तेलुगू 14. उर्दू]* थीं। बाद में सिंधी को *(21 वां संशोधन, 1967 ई०)*, तत्पश्चात् कोंकणी, मणिपुरी, नेपाली को *(71 वां संशोधन, 1992 ई०)* शामिल किया गया, जिससे इसकी संख्या 18 हो गई। तदुपरांत बोडो, डोगरी, मैथिली, संथाली को *(92 वां संशोधन, 2003)* शामिल किया गया और इस प्रकार इस अनुसूची में 22 भाषाएँ हो गईं।

अध्याय 1 (संघ की भाषा) की समीक्षा

अनु० 343 के संदर्भ में : संविधान के अनु० 343 (1) के अनुसार संघ की राजभाषा देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी घोषित की गई है। इससे देश के बहुमत की इच्छा ही प्रतिध्वनित होती है। अनु० 343 (2) के अनुसार इसे भारतीय संविधान लागू होने की तारीख अर्थात् 26 जनवरी, 1950 ई० से लागू नहीं किया जा सकता था। इसे लागू करने के लिए संविधान लागू होने के 15 वर्ष बाद की अवधि रखी तो गई, परन्तु फिर अनु० 343 (3) के द्वारा सरकार ने यह शक्ति प्राप्त कर ली कि वह इस 15 वर्ष की अवधि के बाद भी अंग्रेजी का प्रयोग जारी रख सकती है। रही-सही कसर, बाद में राजभाषा अधिनियम, 1963 ने पूरी कर दी क्योंकि इस अधिनियम ने सरकार के इस उद्देश्य को साफ कर दिया कि अंग्रेजी की हुकूमत देश पर अनंत काल तक बनी रहेगी।

इस प्रकार, संविधान में की गई व्यवस्था 343 (1) हिन्दी के लिए वरदान थी। परन्तु 343 (2) एवं 343 (3) की व्यवस्थाओं ने इस वरदान को अभिशाप में बदल दिया। वस्तुतः संविधान निर्माणकाल में संविधान निर्माताओं में जन साधारण की भावना के प्रतिकूल व्यवस्था करने का साहस नहीं था, इसलिए 343 (1) की व्यवस्था की गई। परन्तु अंग्रेजियत का वर्चस्व बनाये रखने के लिए 343 (2) एवं 343 (3) से उसे प्रभावहीन कर देश पर मानसिक गुलामी लाद दी गई।

अनु० 344 के संदर्भ में : अनु० 344 के अधीन प्रथम राजभाषा आयोग / बी० जी० खेर आयोग का 1955 में तथा संसदीय राजभाषा समिति / जी० बी० पंत समिति का 1957 में गठन हुआ। जहाँ खेर आयोग ने हिन्दी को एकान्तिक व सर्वश्रेष्ठ स्थिति में पहुँचाने पर जोर दिया वहाँ पंत समिति ने हिन्दी को प्रधान राजभाषा बनाने पर जोर तो दिया लेकिन अंग्रेजी को हटाने की बजाय उसे सहायक राजभाषा बनाये रखने की वकालत की। हिन्दी के

दुर्भाग्य से सरकार ने खेर आयोग को महज औपचारिक माना और हिन्दी के विकास के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए; जबकि सरकार ने पंत समिति की सिफारिशों को स्वीकार किया, जो आगे चलकर राजभाषा अधिनियम 1963/67 का आधार बनी जिसने हिन्दी का सत्यानाश कर दिया।

समग्रता से देखें तो स्वतंत्रता-संग्राम काल में हिन्दी देश में राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक थी अतएव राष्ट्रभाषा बनी, और राजभाषा अधिनियम 1963 के बाद यह केवल संपर्क भाषा होकर रह गयी।

अध्याय 2 *(प्रादेशिक भाषाएँ)* एवं 8वीं अनुसूची की समीक्षा

अनु० 345, 346 से स्पष्ट है कि भाषा के संबंध में राज्य सरकारों को पूरी छूट दी गई। संविधान की इन्हीं अनुच्छेदों के अधीन हिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी राजभाषा बनी। हिन्दी इस समय 9 राज्यों— उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, मध्य प्रदेश, छतीसगढ़, बिहार, झारखंड, राजस्थान, हरियाणा, व हिमाचल प्रदेश—तथा 1 केन्द्र शासित प्रदेश— दिल्ली— की राजभाषा है। उक्त प्रदेशों में आपसी पत्र-व्यवहार की भाषा हिन्दी है। दिनोंदिन हिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी का प्रयोग सभी सरकारी प्रयोजनों के लिए बढ़ता जा रहा है। इनके अतिरिक्त, अहिन्दी भाषी राज्यों में महाराष्ट्र, गुजरात व पंजाब की एवं केन्द्र शासित प्रदेशों में चंडीगढ़ व अंडमान निकोबार की सरकारों ने हिन्दी को द्वितीय राजभाषा घोषित कर रखा है तथा हिन्दी भाषी राज्यों से पत्र-व्यवहार के लिए हिन्दी को स्वीकार कर लिया है।

अनु० 347 के अनुसार यदि किसी राज्य का पर्याप्त अनुपात चाहता है कि उसके द्वारा बोली जानेवाली कोई भाषा राज्य द्वारा अभिज्ञात की जाय तो राष्ट्रपति उस भाषा को सरकारी अभिज्ञा दे सकता है। समय-समय पर राष्ट्रपति ऐसी अभिज्ञा देते रहे हैं, जो 8वीं अनुसूची में स्थान पाते रहे हैं, जैसे 1967 में सिंधी, 1992 में कोंकणी, मणिपुरी व नेपाली एवं 2003 में बोडो, डोगरी, मैथिली व संथाली। यही कारण है कि संविधान लागू होने के समय जहाँ 14 प्रादेशिक भाषाओं को मान्यता प्राप्त थी वहीं अब यह संख्या बढ़कर 22 हो गई है।

अध्याय 3 (SC, HC आदि की भाषा अर्थात् न्याय व विधि/कानून की भाषा) की समीक्षा

अनु० 348, 349 से स्पष्ट हो जाता है कि न्याय व कानून की भाषा, उन राज्यों में भी जहाँ हिन्दी को राजभाषा मान लिया गया है, अंग्रेजी ही है। नियम, अधिनियम, विनियम तथा विधि का प्राधिकृत पाठ अंग्रेजी में होने के कारण सारे नियम अंग्रेजी में ही बनाये जाते हैं। बाद में उनका अनुवाद मात्र कर दिया जाता है। इस प्रकार, न्याय व कानून के क्षेत्र में हिन्दी का समुचित प्रयोग हिन्दी राज्यों में भी अभी तक नहीं हो सका है।

अध्याय 4 *(विशेष निदेश)* की समीक्षा

अनु० 350 : भले ही संवैधानिक स्थिति के अनुसार व्यक्ति को अपनी व्यथा के निवारण हेतु किसी भी भाषा में अभ्यावेदन करने का हकदार माना गया है लेकिन व्यावहारिक स्थिति यही है कि आज भी अंग्रेजी में अभ्यावेदन करने पर ही अधिकारी तवज्जो / ध्यान देना गवारा करते हैं।

अनु० 351 : *(हिन्दी के विकास के लिए निदेश)* : अनु० 351 राजभाषा विषयक उपबंध में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें हिन्दी के भावी स्वरूप के विकास की परिकल्पना सन्निहित है। हिन्दी को विकसित करने की दिशाओं का इसमें संकेत है। इस अनुच्छेद के अनुसार संघ सरकार का यह कर्तव्य है कि वह हिन्दी भाषा के विकास और प्रसार के लिए समुचित प्रयास करे ताकि भारत में राजभाषा हिन्दी के ऐसे स्वरूप का विकास हो, जो समूचे देश में प्रयुक्त हो सके और जो भारत की मिली-जुली संस्कृति की अभिव्यक्ति की वाहिका बन सके। इसके लिए संविधान में इस बात का भी निर्देश दिया गया है कि हिन्दी में हिन्दुस्तानी और मान्यताप्राप्त अन्य भारतीय भाषाओं की शब्दावली और शैली को भी अपनाया जाय और मुख्यतः संस्कृत तथा गौणतः अन्य भाषाओं *(विश्व की किसी भी भाषा)* से शब्द ग्रहण कर उसके शब्द-भंडार को समृद्ध किया जाय।

संविधान के निर्माताओं की यह प्रबल इच्छा थी कि हिन्दी भारत में ऐसी सर्वमान्य भाषा के स्वरूप को ग्रहण करे, जो सब प्रांतों के निवासियों को स्वीकार्य हो। संविधान के निर्माताओं को यह आशा थी कि हिन्दी अपने स्वाभाविक विकास में भारत की अन्य भाषाओं से वरिष्ठ संपर्क स्थापित करेगी और हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के बीच में साहित्य का आदान-प्रदान भी होगा।

संविधान के निर्माताओं ने उचित ढंग से यह आशा की थी कि राजभाषा हिन्दी अपने भावी रूप का विकास करने में अन्य भारतीय भाषाओं का सहारा लेगी। यह इसलिए था कि राजभाषा हिन्दी को सबके लिए सुलभ और ग्राह्य रूप धारण करना है।

II. 1950 ई० के बाद हिन्दी की संवैधानिक प्रगति

- राष्ट्रपति का संविधान आदेश, 1952 : राज्यपालों, SC एवं HC के न्यायाधीशों की नियुक्ति के अधिपत्रों के लिए हिन्दी का प्रयोग प्राधिकृत।
- राष्ट्रपति का संविधान आदेश, 1955 : कुछ प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी का प्रयोग निर्धारित, जैसे (1) जनता के साथ पत्र-व्यवहार में, (2) प्रशासनिक रिपोर्ट, सरकारी पत्रिकाओं व संसदीय रिपोर्ट में, (3) संकल्पों *(resolutions)* व विधायी नियमों में, (4) हिन्दी को राजभाषा मान चुके राज्यों के साथ पत्र-व्यवहार में, (5) संधिपत्र और करार में, (6) राजनयिक व अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में भारतीय प्रतिनिधियों के नाम जारी किये जानेवाले पत्रों में।
- प्रथम राजभाषा आयोग/बाल गंगाधर *(बी. जी.)* खेर आयोग : 7 जून, 1955 (गठन); 31 जुलाई, 1956 *(प्रतिवेदन)*

आयोग की सिफारिशें : (1) सारे देश में माध्यमिक स्तर तक हिन्दी अनिवार्य की जाए। (2) देश में न्याय देश की भाषा में किया जाए। (3) जनतंत्र में अखिल भारतीय स्तर पर अंग्रेजी का प्रयोग संभव नहीं। अधिक लोगों द्वारा बोली जानेवाली हिन्दी भाषा समस्त भारत के लिए उपयुक्त है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजी का प्रयोग ठीक है, किन्तु शिक्षा, प्रशासन, सार्वजनिक जीवन तथा दैनिक कार्यकलापों में विदेशी भाषा का व्यवहार अनुचित है।

टिप्पणी : आयोग के दो सदस्यों ने—बंगाल के सुनीति कुमार चटर्जी व तमिलनाडु के पी० सुब्बोरोयान—आयोग की सिफारिशों से असहमति प्रकट की और आयोग के सदस्यों पर हिन्दी का प

लेने का आरोप लगाया। जो भी हो, प्रथम राजभाषा आयोग/खेर आयोग ने हिन्दी के अधिकाधिक और प्रगामी प्रयोग पर बल दिया था। खेर आयोग ने जो ठोस सुझाव रखे थे, सरकार ने उन्हें महज औपचारिक मानते हुए राजभाषा हिन्दी के विकास के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए।

➢ संसदीय राजभाषा समिति/गोविंद बल्लभ *(जी० बी०)* पंत समिति : 16 नवम्बर, 1957 *(गठन)*; 8 फरवरी, 1959 *(प्रतिवेदन)*

पंत समिति ने कहा कि राष्ट्रीय एकता को द्योतित करने के लिए एक भाषा को स्वीकार कर लेने का स्वतंत्रता-पूर्व का जोश ठंढा पड़ गया है। सिफारिशें—(1) हिन्दी संघ की राजभाषा का स्थान जल्दी-से-जल्दी ले। लेकिन इस परिवर्तन के लिए कोई निश्चित तारीख *(जैसे 26 जनवरी, 1965 ई०)* नहीं दी जा सकती यह परिवर्तन धीरे-धीरे स्वाभाविक रीति से होना चाहिए। (2) 1965 ई० तक अंग्रेजी प्रधान राजभाषा और हिन्दी सहायक राजभाषा रहनी चाहिए। 1965 के बाद जब हिन्दी संघ की प्रधान राजभाषा हो जाये, अंग्रेजी संघ की सहायक/सह राजभाषा रहनी चाहिए।

टिप्पणी : पंत समिति के सिफारिशों से राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन और सेठ गोविंद दास असहमत व असंतुष्ट थे और उन्होंने यह आरोप लगाया कि सरकार हिन्दी को राजभाषा के रूप में प्रास्थापित करने के लिए आवश्यक कदम नहीं उठाए हैं। इन दोनों नेताओं ने समिति द्वारा अंग्रेजी को राजभाषा बनाये रखने का भी घोर विरोध किया। जो भी हो, सरकार ने पंत समिति की सिफारिशों को स्वीकार कर लिया।

राष्ट्रपति का आदेश, 1960 : शिक्षा मंत्रालय, विधि मंत्रालय, वैज्ञानिक अनुसंधान व सांस्कृतिक कार्य मंत्रालय तथा गृह मंत्रालय को हिन्दी को राजभाषा के रूप में विकसित करने हेतु विभिन्न निर्देश।

राजभाषा अधिनियम, 1963 (1967 में संशोधित) : संविधान के अनुसार 15 वर्ष के बाद अर्थात् 1965 ई० से सारा काम-काज हिन्दी में शुरू होना था, परन्तु सरकार की ढुल-मुल नीति के कारण यह संभव नहीं हो सका। अहिन्दी क्षेत्रों में, विशेषतः बंगाल और तमिलनाडु *(DMK द्वारा)* में हिन्दी का घोर विरोध हुआ। इसकी प्रतिक्रिया हिन्दी क्षेत्र में हुई। जनसंघ *(स्थापना–1951 ई०, संस्थापक–श्यामा प्रसाद मुखर्जी)* एवं प्रजा सोशलिस्ट पार्टी/पी० एस० पी० *(स्थापना–1952 ई०, संस्थापक–लोहिया)* द्वारा हिन्दी का घोर समर्थन किया गया। हिन्दी के कट्टरपंथी समर्थकों ने भाषायी उन्माद को उभारा जिसके कारण हिन्दी की प्रगति के बदले हिन्दी को हानि पहुँची। इस भाषायी कोलाहल के बीच प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने आश्वासन दिया कि हिन्दी को एकमात्र राजभाषा स्वीकार करने से पहले अहिन्दी क्षेत्रों की सम्मति प्राप्त की जाएगी और तब तक अंग्रेजी को नहीं हटाया जाएगा। राजभाषा विधेयक को गृहमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने प्रस्तुत किया। राजभाषा विधेयक का उद्देश्य : जहाँ राजकीय प्रयोजनों के लिए 15 वर्ष बाद यानी 1965 से हिन्दी का प्रयोग प्रारंभ होना चाहिए था वहां व्यवस्था को पूर्ण रूप से लागू न करके उस अवधि के बाद भी संघ के सभी सरकारी प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी का प्रयोग बनाये रखना।

राजभाषा अधिनियम के प्रावधान : राजभाषा अधिनियम, 1963 में कुल 9 धाराएं हैं जिनमें सर्वप्रथम है— 26 जून, 1965 से हिन्दी संघ की राजभाषा तो रहेगी ही पर उस समय से हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी भी संघ के उन सभी सरकारी प्रयोजनों के लिए बराबर प्रयुक्त होती रहेगी जिनके लिए वह उस तिथि के तुरन्त पहले प्रयुक्त की जा रही थी।

टिप्पणी : इस प्रकार 26 जून, 1965 से राजभाषा अधिनियम, 1963 के तहत द्विभाषिक स्थिति प्रारंभ हुई, जिसमें संघ के सभी सरकारी प्रयोजनों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाएँ प्रयुक्त की जा सकती थीं।

राजभाषा (संशोधन) अधिनियम, 1967 : समय-समय पर संसद के भीतर और बाहर जवाहर लाल नेहरू द्वारा दिए गए आश्वासनों और लाल बहादुर शास्त्री द्वारा राजभाषा विधेयक, 1963 को प्रस्तुत करते समय अहिन्दी भाषियों को दिलाए गए विश्वास को मूर्त रूप प्रदान करने के उद्देश्य से इंदिरा गांधी, जो अपने पिता की भाँति अहिन्दी भाषियों से सहानुभूति रखती थी, के शासनकाल में राजभाषा *(संशोधन)* विधेयक, 1967 पारित किया गया।

राजभाषा (संशोधन) अधिनियम, 1967 के प्रावधान : इस अधिनियम के तहत राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा के स्थान पर नये उपबंध लागू हुए। इसके अनुसार, अंग्रेजी भाषा का प्रयोग समाप्त कर देने के लिए ऐसे सभी राज्यों के विधानमंडलों द्वारा, जिन्होंने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, संकल्प (resolution) पारित करना होगा और विधानमंडलों के संकल्पों पर विचार कर लेने के पश्चात् उसकी समाप्ति के लिए संसद के हर एक सदन द्वारा संकल्प पारित करना होगा। ऐसा नहीं होने पर अंग्रेजी अपनी पूर्व स्थिति में बनी रहेगी।

टिप्पणी : इस अधिनियम के द्वारा इस बात की व्यवस्था की गई कि अंग्रेजी सरकार के काम-काज में सहभाषा के रूप में तब तक बनी रहेगी जब तक अहिन्दी भाषी राज्य हिन्दी को एकमात्र राजभाषा बनाने के लिए सहमत न हो जाएं। इसका मतलब यह हुआ कि भारत का एक भी राज्य चाहेगा कि अंग्रेजी बनी रहे तो वह सारे देश की सहायक राजभाषा बनी रहेगी।

संसद द्वारा पारित संकल्प *(Resolution)*, 1968

1. राजभाषा हिन्दी एवं प्रादेशिक भाषाओं की प्रगति को सुनिश्चित करना।

2. त्रिभाषा सूत्र *(Three Language Formula)* को लागू करना— एकता की भावना के संवर्द्धन हेतु भारत सरकार राज्यों के सहयोग से त्रिभाषा सूत्र को लागू करेगी। त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत यह प्रस्तावित किया गया कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी व अंग्रेजी के अतिरिक्त दक्षिणी भारतीय भाषाओं में से किसी एक को तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में प्रादेशिक भाषा व अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी को पढाने की व्यवस्था की जाय।

टिप्पणी : त्रिभाषा सूत्र का प्रयोग सफल नहीं हुआ। न तो हिन्दी क्षेत्र के लोगों ने किसी दक्षिणी भारतीय भाषा का अध्ययन किया और न ही गैर-हिन्दी क्षेत्र के लोगों ने हिन्दी का।

➢ राजभाषा नियम, 1976 (यथासंशोधित, 1987) : इन नियमों की संख्या 12 है जिनमें हिन्दी के प्रयोग के संदर्भ में भारत के क्षेत्रों का 3 वर्गीय विभाजन किया गया है और प्रधान राजभाषा हिन्दी और सह राजभाषा अंग्रेजी एवं प्रादेशिक भाषाओं के प्रयोग हेतु नियम दिये गये हैं। आज भी इन्हीं नियमों के अनुसार सरकार की द्विभाषिक नीति का अनुपालन हो रहा है।

राजभाषा के विकास से संबंधित संस्थाएँ

संस्था का नाम	स्थापना	कार्य
केन्द्रीय हिन्दी समिति, नई दिल्ली	1967	भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों द्वारा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के संबंध में चालू कार्यक्रमों में समन्वय स्थापित करना; अध्यक्ष—प्रधानमंत्री

(A) शिक्षा मंत्रालय के अधीन

	संस्था का नाम	स्थापना	कार्य
1.	साहित्य अकादमी, नई दिल्ली	1954	साहित्य को बढ़ावा देने-वाली शीर्षस्थ संस्था
2.	नेशनल बुक ट्रस्ट (National Book Trust-N.B.T.), नई दिल्ली	1957	शिक्षा, विज्ञान व साहित्य की उच्च कोटि की पुस्तकों का प्रकाशन कम मूल्यों पर जनता को उपलब्ध कराना
3.	केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली	1960	शब्दकोशों, विश्वकोशों, अहिन्दी भाषियों के लिए पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन
4.	वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली	1961	विज्ञान व तकनीक से संबंधित शब्दावलियों का प्रकाशन

(B) गृह मंत्रालय के अधीन

	संस्था का नाम	स्थापना	कार्य
1.	राजभाषा विधायी आयोग	1965-75	केन्द्रीय अधिनियमों के हिन्दी पाठ का निर्माण
2.	केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो	1971	देश में अनुवाद की सबसे बड़ी संस्था
3.	राजभाषा विभाग	1975	संघ के विभिन्न शासकीय प्रयोजनों के लिए हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित सभी मामले

(C) विधि/कानून मंत्रालय के अधीन

संस्था का नाम	स्थापना	कार्य
राजभाषा विधायी आयोग	1975	यह आयोग पहले गृह मंत्रालय के अधीन था। प्रमुख कानूनों के हिन्दी पाठ का निर्माण

(D) सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अधीन

1.	*प्रकाशन विभाग (Publication Division)*	1944
2.	*फिल्म प्रभाग (Films Division)*	1948
3.	*पत्र सूचना कार्यालय (Press Information Bureau), नई दिल्ली*	1956
4.	*आकाशवाणी*	1957
5.	*दूरदर्शन*	1976

राष्ट्रभाषा व राजभाषा संबंधी कुछ विविध तथ्य

- *प्रताप नारायण मिश्र* ने 'हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्तान' का नारा दिया।
- *हिन्दी* को *राष्ट्रभाषा* बनाने का विचार सर्वप्रथम बंगाल में उदित हुआ।
- *कांग्रेस के फैजपुर अधिनेशन (1936 ई०)* एवं हरिपुरा अधिवेशन *(1938 ई०)* में कांग्रेस के विराट मण्डप में 'राष्ट्रभाषा सम्मेलन' आयोजित किये गये, जिनकी अध्यक्षता राजेन्द्र प्रसाद *(फैजपुर)* एवं जमना लाल बजाज *(हरिपुरा)* ने की।
- संविधान सभा में हिन्दी को राजभाषा बनाने का प्रस्ताव गोपाल स्वामी आयंगर ने रखा जिसका समर्थन शंकरराव देव ने किया।
- संविधान सभा में राजभाषा के नाम पर हुए मतदान में हिन्दुस्तानी को 77 वोट तथा हिन्दी को 78 वोट मिले।
- आजादी-पूर्व हिन्दी का समर्थन करनेवाले व आजादी-बाद हिन्दी का विरोध करने वाले व्यक्तित्व
  —सी० राजागोपालाचारी, सुनीति कुमार चटर्जी, हुमायूं कबीर, अनंत शयनम आय्यंगार आदि।
- 'मैं कभी भी हिन्दी का विरोधी नहीं हूँ। मैं उन हिन्दी वालों का विरोध करता हूँ जो वस्तुस्थिति को नहीं समझकर अपने स्वार्थ के कारण हिन्दी को लादने की बात सोचते हैं।'
  —सी० राजगोपालाचारी
- 'हिन्दी अहिन्दी लोगों के लिए ठीक उतनी ही विदेशी है जितनी कि हिन्दी समर्थकों के लिए अंग्रेजी।'
  —सी० राजगोपालाचारी (1958)
- 'हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्तान' वाले राष्ट्रवाद की सबसे बड़ी सीमा यह है कि यह समूचे दक्षिण भारत को भूल जाता है।
  —इरोड वेंकट रामास्वमी (ई० वी० आर०) 'पेरियार'
- 1952 में एक विख्यात स्वतंत्रता सेनानी पोट्टी श्रीरामालु ने तेलुगू भाषी लोगों के लिए एक पृथक राज्य आंध्र प्रदेश बनाने की मांग पर आमरण अनशन करते हुए 58 दिन बाद (19 अक्तू., 16 दिस.) अपनी जान दे दी। इसके बाद भाषाई आधार पर राज्यों के गठन की मुहिम में तेजी आई।
- पंजाब, महाराष्ट्र और गुजरात राज्य अपने शासन में क्रमशः पंजाबी, मराठी और गुजराती भाषा के साथ-साथ हिन्दी को 'सहभाषा' के रूप में घोषित कर रखा है।

4. हिन्दी की उपभाषाएँ एवं बोलियाँ

- हिन्दी भाषी क्षेत्र / हिन्दी क्षेत्र / हिन्दी पट्टी *(Hindi Belt)*: हिन्दी पश्चिम में अम्बाला *(हरियाणा)* से लेकर पूर्व में पूर्णिया *(बिहार)* तक तथा उत्तर में बद्रीनाथ-केदारनाथ *(उत्तराखंड)* से लेकर दक्षिण में खंडवा *(मध्य प्रदेश)* तक बोली जाती है। इसे हिन्दी भाषी क्षेत्र या हिन्दी क्षेत्र के नाम से जाना जाता है। इस क्षेत्र के अन्तर्गत 9 राज्य— उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, हरियाणा व हिमाचल प्रदेश—तथा 1 केन्द्र शासित प्रदेश *(राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र)*—दिल्ली—आते हैं। इस क्षेत्र में भारत की कुल जनसंख्या के 43% लोग रहते हैं।

हिन्दी की उपभाषाएँ व बोलियाँ

- बोली : एक छोटे क्षेत्र में बोली जानेवाली भाषा बोली कहलाती है। बोली में साहित्य रचना नहीं होती।
- उपभाषा : अगर किसी बोली में साहित्य रचना होने लगती है और क्षेत्र का विस्तार हो जाता है तो वह बोली न रहकर उपभाषा बन जाती है।
- भाषा : साहित्यकार जब उस उपभाषा को अपने साहित्य के द्वारा परिनिष्ठित सर्वमान्य रूप प्रदान कर देते हैं तथा उसका और क्षेत्र विस्तार हो जाता है तो वह भाषा कहलाने लगती है।
- एक भाषा के अंतर्गत कई उपभाषाएँ होती हैं तथा एक उपभाषा के अंतर्गत कई बोलियाँ होती हैं।

➢ सर्वप्रथम एक अंग्रेज प्रशासनिक अधिकारी जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने 1889 ई० में 'मार्डन वरनाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दोस्तान' में हिन्दी का उपभाषाओं व बोलियों में वर्गीकरण प्रस्तुत किया। बाद में ग्रियर्सन ने 1894 ई० से भारत का भाषाई सर्वेक्षण आरंभ किया जो 1927 ई० में संपन्न हुआ। उनके द्वारा संपादित ग्रंथ का नाम है—'ए लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया'। इसमें उन्होंने हिन्दी क्षेत्र की बोलियों को पाँच उपभाषाओं में बाँटकर उनकी व्याकरणिक एवं शाब्दिक विशेषताओं का विस्तार से विवरण प्रस्तुत किया है।

➢ इसके बाद, 1926 ई० में सुनीति कुमार चटर्जी ने 'बांग्ला भाषा का उद्भव और विकास *('Origin and Development of Bengali Language')*में हिन्दी का उपभाषाओं व बोलियों में वर्गीकरण प्रस्तुत किया। चटर्जी ने पहाड़ी भाषाओं को छोड़ दिया है। वे उन्हें भाषाएं नहीं गिनते।

➢ धीरेन्द्र वर्मा *('हिन्दी भाषा का इतिहास', 1933 ई०)* का वर्गीकरण मुख्यतः सुनीति कुमार चटर्जी के वर्गीकरण पर ही आधारित है. केवल उसमें कुछ संशोधन किये गये हैं जैसे उसमें पहाड़ी भाषाओं को शामिल किया गया है।

➢ इनके अलावे, कई विद्वानों ने अपना वर्गीकरण प्रस्तुत किया है। आज इस बात को लेकर आम सहमति है कि हिन्दी जिस भाषा-समूह का नाम है, उसमें 5 उपभाषाएँ और 17 बोलियाँ हैं।

हिन्दी क्षेत्र की समस्त बोलियों को 5 वर्गों में बाँटा गया है। इन वर्गों को उपभाषा कहा जाता है। इन उपभाषाओं के अंतर्गत ही हिन्दी की 17 बोलियाँ आती हैं।

उपभाषा	बोलियाँ			मुख्य क्षेत्र
राजस्थानी	मारवाड़ी *(पश्चिमी राजस्थानी)* जयपुरी या ढुंढाड़ी *(पूर्वी राजस्थानी)* मेवाती *(उत्तरी राजस्थानी)* मालवी *(दक्षिणी राजस्थानी)*			राजस्थान
पश्चिमी हिन्दी	कौरवी या खड़ी बोली बाँगरू या हरियाणवी	ओकार	बहुला	हरियाणा, उत्तर प्रदेश
	ब्रजभाषा बुंदेली कन्नौजी	ओकार	बहुला	
पूर्वी हिन्दी	अवधी बघेली छत्तीसगढ़ी			मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश
बिहारी	भोजपुरी मगही मैथिली			बिहार, उत्तर प्रदेश
पहाड़ी	कुमाऊँनी गढ़वाली			उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश

नोट : *एक भाषा विद्वान के अनुसार, शुद्ध भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि से हिन्दी की दो मुख्य उपभाषाएँ हैं—पश्चिमी हिन्दी व पूर्वी हिन्दी।*

बोली, विभाषा एवं भाषा

➢ विभिन्न बोलियां राजनीतिक-सांस्कृतिक आधार पर अपना क्षेत्र बढ़ा सकती है और साहित्य रचना के आधार पर वे अपना स्थान 'बोली' से उच्च करते हुए 'विभाषा' तक पहुँच सकती हैं।

➢ विभाषा का क्षेत्र बोली की अपेक्षा अधिक विस्तृत होती है। यह एक प्रांत या उपप्रांत में प्रचलित होती है। इसमें साहित्यिक रचनाएं भी प्राप्त होती हैं। जैसे—हिन्दी की विभाषाएं हैं—ब्रजभाषा, अवधी, खड़ी बोली, भोजपुरी व मैथिली।

➢ विभाषा स्तर पर प्रचलित होने पर ही राजनीतिक, साहित्यिक या सांस्कृतिक गौरव के कारण भाषा का स्थान प्राप्त कर लेती है, जैसे—खड़ी बोली मेरठ, बिजनौर आदि की विभाषा होते हुए भी राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत होने के कारण राष्ट्रभाषा के पद पर अधिष्ठित हुई है।

➢ इस प्रकार, दो बातें स्पष्ट होती हैं—

(i) बोली का विकास विभाषा में और विभाषा का विकास भाषा में होता है।

बोली → विभाषा → भाषा

(ii) उदाहरण

भाषा — खड़ी बोली हिन्दी
विभाषा — हिन्दी क्षेत्र की प्रमुख बोलियां—ब्रजभाषा, अवधी, खड़ी बोली, भोजपुरी व मैथिली
बोली — हिन्दी क्षेत्र की शेष बोलियाँ

प्रमुख बोलियों का संक्षिप्त परिचय

कौरवी या खड़ी बोली

➢ मूल नाम—कौरवी

➢ साहित्यिक भाषा बनने के बाद पड़ा नाम—खड़ी बोली

➢ अन्य नाम—बोलचाल की हिन्दुस्तानी, सरहिन्दी, वर्नाक्यूलर खड़ी बोली आदि।

➢ केन्द्र—कुरु जनपद अर्थात् मेरठ-दिल्ली के आस-पास का क्षेत्र। खड़ी बोली एक बड़े भू-भाग में बोली जाती है। अपने ठेठ रूप में यह मेरठ, बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, सहारनपुर, देहरादून और अम्बाला जिलों में बोली जाती है। इनमें मेरठ की खड़ी बोली आदर्श और मानक मानी जाती है।

➢ बोलने वालों की संख्या—1.5 से 2 करोड़

➢ साहित्य—मूल कौरवी में लोक-साहित्य उपलब्ध है जिसमें गीत, गीत-नाटक, लोक कथा, गप्प, पहेली आदि हैं।

➢ विशेषता—आज की हिन्दी मूलतः कौरवी पर ही आधारित है। दूसरे शब्दों में, हिन्दी भाषा का मूलाधार/मूलोद्गम (*Substratum* या *Basic dialect*) कौरवी या खड़ी बोली है।

- नमूना—कोई बादसा था। साब उसके दो राण्याँ थीं। वो एक रोज अपनी रान्नी से केने लगा मेरे समान ओर कोइ बादसा है बी? तो बड़ी बोल्ले के राजा तुम समान ओर कोन होगा। छोटी से पुच्छा तो किह्या कि एक बिजाण सहर है उसके किल्ले में जितनी तुम्हारी सारी हैसियत है उतनी एक ईंट लगी है। ओ इसने मेरी कुच बात नई रक्खी इसको तग्मार्ती *(निर्वासित)* करना चाइए। उस्कू तग्मार्ती कर दिया। ओर बड़ी कू सब राज का मालक कर दिया।

जभाषा

- केन्द्र—मथुरा
- प्रयोग क्षेत्र—मथुरा, आगरा, अलीगढ़, धौलपुरी, मैनपुरी, एटा, बदायूं, बरेली तथा आस-पास के क्षेत्र
- बोलनेवालों की संख्या—3 करोड़
- देश के बाहर ताज्जुबेकिस्तान में ब्रजभाषा बोली जाती है जिसे 'ताज्जुबेकी ब्रजभाषा' कहा जाता है।
- साहित्य—कृष्ण भक्ति काव्य की एकमात्र भाषा, लगभग सारा रीतिकालीन साहित्य। साहित्यिक दृष्टि से हिन्दी भाषा की सबसे महत्वपूर्ण बोली। साहित्यिक महत्व के कारण ही इसे ब्रजबोली नहीं ब्रजभाषा की संज्ञा दी जाती है। मध्यकाल में इस भाषा ने अखिल भारतीय विस्तार पाया। बंगाल में इस भाषा से बनी भाषा का नाम ' ब्रज बुलि' पड़ा। असम में ब्रजभाषा 'ब्रजावली' कहलाई आधुनिक काल तक इस भाषा में साहित्य सृजन होता रहा। पर परिस्थितियां ऐसी बनीं कि ब्रजभाषा साहित्यिक सिंहासन से उतार दी गई और उसका स्थान खड़ी बोली ने ले लिया।
- रचनाकार—भक्तिकालीन : सूरदास, नंद दास आदि।
  रीतिकालीन : बिहारी, मतिराम, भूषण, देव आदि।
  आधुनिक कालीन : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' आदि।
- नमूना—एक मथुरा जी के चौबे हे *(थे)*, जो डिल्ली सैहर कौ चलै। गाड़ी वारे बनिया से चौबेजी की भेंट है गई। तो वे चौबे बोले, अर भइया सेठ, कहाँ जायगो। वौ बोलो, महराजा डिल्ली जाऊँगौ। तो चौबे बोले, भइया हमऊँ बैठाल्लेय। बनिया बोलो, चार रूपा चलिंगे भाड़े के। चौबे बोले, अच्छा भइया चारी दिंगे।

अवधी

- केन्द्र—अयोध्या/अवध
- प्रयोग क्षेत्र—लखनऊ, इलाहाबाद, फतेहपुर, मिर्जापुर (अंशतः), उन्नाव, रायबरेली, सीतापुर, फैजाबाद, गोंडा, बस्ती, बहराइच, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, बाराबंकी आदि।
- बोलनेवालों की संख्या—2 करोड़
- देश के बाहर फीजी में अवधी बोलनेवाले लोग हैं।
- साहित्य—सूफी काव्य, रामभक्ति काव्य। अवधी में प्रबंध काव्य परंपरा विशेषतः विकसित हुई।
- रचनाकार—सूफी कवि : मुल्ला दाउद *('चंदायन')*, जायसी *('पद्मावत')*, कुत्बन *('मृगावती')*, उसमान *('चित्रावली')*
  रामभक्त कवि : तुलसीदास *('रामचरित मानस')*
- नमूना—एक गाँव मा एक अहिर रहा। ऊ बड़ा भोंग रहा। सबेरे जब सोय के उठै तो पहले अपने महतारी का चार टन्नी धमकाय दिये तब कौनो काम करत रहा। बेचारी बहुत पुरनिया रही नाहीं तौ का मजाल रहा केऊ देहिं पै तिरिन छुआय देत।

भोजपुरी

- केन्द्र—भोजपुर (बिहार)
- प्रयोग क्षेत्र—बनारस, जौनपुर, मिर्जापुर, गाजीपुर, बलिया, गोरखपुर, देवरिया, आजमगढ़, बस्ती; भोजपुर (आरा), बक्सर, रोहतास (सासाराम), भभुआ, सारन (छपरा), सिवान, गोपालगंज, पूर्वी चम्पारण, पश्चिमी चम्पारण आदि अर्थात् उत्तर प्रदेश का पूर्वी एवं बिहार का पश्चिमी भाग।
- बोलने वालों की संख्या—3.5 करोड़ *(बोलनेवालों की संख्या की दृष्टि से हिन्दी प्रदेश की बोलियों में सबसे अधिक बोली जानेवाली बोली)*
- इस बोली का प्रसार भारत के बाहर सूरीनाम, फिजी, मारिशस, गयाना, त्रिनिडाड में है। इस दृष्टि से भोजपुरी अतर्राष्ट्रीय महत्व की बोली है।
- साहित्य—भोजपुरी में लिखित साहित्य नहीं के बराबर है। मूलतः भोजपुर भाषी साहित्यकार मध्यकाल में ब्रजभाषा व अवधी में तथा आधुनिक काल में हिन्दी में लेखन करते रहे हैं। लेकिन अब स्थिति में परिवर्तन आ रहा है।
- रचनाकार—भिखारी ठाकुर *(उपनाम—'भोजपुरी का शेक्सपियर'*—जगदीश चंद्र माथुर द्वारा प्रदत्त। *'अनगढ हीरा'*—राहुल सांकृत्यायन के शब्दों में / *'भोजपुरी का भारतेन्दु')*
- सिनेमा—सिनेमा जगत में भोजपुरी ही हिन्दी की वह बोली है जिसमें सबसे अधिक फिल्में बनती हैं।
- नमूना—काहे दस-दस पनरह-पनरह हजार के भीड़ होला ई नाटक देखें खातिर। मालूम होत्आ कि एही नाटक में पबलिक के रस आवेला।

मैथिली

- लिपि—तिरहुता व देवनागरी
- केन्द्र—मिथिला या विदेह या तिरहुत
- प्रयोग क्षेत्र—दरभंगा, मधुबनी, मुजफ्फरपुर, पूर्णिया, मुंगेर आदि।
- बोलनेवालों की संख्या—1.5 करोड़
- साहित्य—साहित्य की दृष्टि से मैथिली बहुत संपन्न है।
- रचनाकार—विद्यापति *('पदावली')* : यदि ब्रजभाषा को सूरदास ने, अवधी को तुलसीदास ने चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया तो मैथिली को विद्यापति ने, हरिमोहन झा *(उपन्यास—कन्यादान, द्विरागमन, कहानी संग्रह—एकादशी, 'खट्टर काकाक तरंग')*, नागार्जुन *(मैथिली में 'यात्री' नाम से लेखन; उपन्यास—पारो, कविता संग्रह—'कविक स्वप्न', 'पत्रहीन नग्न गाछ')*, राजकमल चौधरी *('स्वरगंधा')* आदि।
- 8वीं अनुसूची में स्थान—92वां संविधान संशोधन अधिनियम, 2003 के द्वारा संविधान की 8वीं अनुसूची में 4 भाषाओं को स्थान दिया गया। मैथिली हिन्दी क्षेत्र की बोलियों में से 8वीं अनुसूची में स्थान पानेवाली एकमात्र बोली है।
- नमूना—

पटना किए एलऽह?	पटना एलिअइ नोकरी करैले।
भेटलह नोकरी?	नोकरी कत्तौ नइ भेटल।
गाँ में काज नइ भेटइ छलऽह?	भेटै छलै, रूपैयाबला नइ, अऽनबला।
तखन एलऽ किऐ?	रिनियाँ तङ केलकइ, ते।
कत्ते रीन छऽह?	चाइर बीस।
सूद कत्ते लइ छऽह?	दू पाइ महिनबारी।

हिन्दी का उसकी बोलियों में रूपान्तरण

हिन्दी : किसी मनुष्य के दो पुत्र थे। उनमें से छोटे ने पिता से कहा कि हे पिता अपनी संपत्ति में से जो मेरा अंश होता है सो मुझे दीजिए। तब उन्होंने उनमें अपनी संपत्ति बाँट दी। कुछ दिन बीते छोटा पुत्र सब कुछ इकट्ठा करके दूर देश चला गया और वहाँ लुच्चेपन में दिन बिताते हुए उसने अपनी संपत्ति उड़ा दी।

कौरवी या खड़ी बोली : किसी मनुष्य के दो पुत्र थे। उनमें से छुटके ने पिता से कहा कि हे पिता अपनी संपत्ति में से जो मेरा अंश हो सो मुझे दीजिये। तब उसने उनको अपनी संपत्ति बाँट दी। कुछ दिन बीते छुटका पुत्र सब कुछ इकट्ठा करके दूर देश चला गया और वहाँ लुचपन में दिन बिताते हुए उसने अपनी संपत्ति उड़ा दी।

बाँगरू या हरियाणवी : एक माणस कै दो छोरे थे। उन मैं तै छोटे छोरे ने बाप्पू तै कह्या अक बाप्पू हो धन का जौण सा हिस्सा मेरे बाँडे आवै सै मन्नै दे दे। तौ उस ने धन उन्हैं बाँड दिया। अर थोड़े दिना पाछै छोट्टा छोरा सब कुछ इकट्ठा कर कै परदेस ने चाल्ल गया और उड़ै अपणा धन खोट्टे चळण मैं खो दिया।

ब्रजभाषा : एक जने के दो छोरा हे। उनमैं-ते लोहरे-ने कही कि काका मेरे बट-कौ धन मोए दे। तब वा-ने धन उन्हैं बटि-करि दियौ। और थोरे दिना पाछे लोहरे बेटा-ने सिगरौ धन इक ठौरौ करिके दूर देसन कूँ चल्यों और वा जगे अपनौ धन उड़ाय दियौ।

बुंदेली : एक जने के दो कुँवर तै। लौरे ने मालकान तें कई कि ऐं जू मौ कौं धन मैं से जो मोरो हिसा होय सो मिलबै आवै। तब उनने अपनो धन बाँट दओ। कछु दिनन भयेते कि लौरे कुँवर बोत धन जोर के परदेश जात रये। माँ लूचपन में दिन खोये और अपनो धन उड़ा डारो।

कन्नौजी : एक जने के दोए लड़िका हते। उनमैं से छोटे ने बाप से कही कि हे पिता मालु को हीसाँ जो हमारी चाहिये सो देओ। तब उन ने मालु उन्हैं बाँट दओ। औरू थोरे दिनन पीछे छोटे लड़िका ने सब कुछ इकट्ठा करि के एक दूरि के देस को चलो गओ और हुआँ अपनी मालु बुरे चलन में उड़ाओ।

अवधी : एक मनई के दुइ बेटवे रहिन। ओह-माँ लहुरा अपने बाप से कहिस दादा धन माँ जवन हमरा बखरा लागत-होय तवन हम -का दै-द अउर वै आपन धन उन-का बाँट दिहिन। अउर ढेर दिन नाहीं बीता कि लहुरा बेटवा सब धन बटोर-के परदेस चल गय अउर उहाँ आपन धन कुचाल माँ लुटाय पड़ाय दिहिस।

बघेली : कौनेउ मड़ई के दुइ गद्याल रहैं। उन अपने बाप तन कहिन कि अरे मोरे बाप तैं हमरे हौंसन-का माल-टाल हमैं बाँटि दै। तब मड़ै-ने आपन सब लैया पुँजिया द्वानौं गद्यालन-का बाँटि दिहिस। कुछ दिन बीते छोटे गद्याले आपन सब माल-टाल जमा किहिस और लै-कै बड़ी दूरी विदेसै निकरि गवा। हुन आपन सब रुपया पैसा गुँडई-माँ उठाय डारिस।

छत्तीसगढ़ी : कोनो आदमी-के दू छोकरा रहिस-है। वो माँ के सबसे छोटे-हर अपन बाप से कहिस के जोन मोर हिस्सा होय वो-ला दे-दे। तब वो-हर अपन जायदाद-ला बाँट दिहिस। थोरेक दिन के पिछे छोटे छोकरा-हर आपन सब जायदाद-ला जोर-के दुरिह्या देस चले गइस और उहां अपन सब जायदाद-ला फूंक दिहिस।

भोजपुरी : कउनी अदिमी के तुइठे लरिका रहुए। उन्हि मैं छोटका बाबू-जी से कहलसि की ए बाबू जी धन मैं जे किछ हमार बखरा होइ से हमरा के बाँट दी। तब उहाँ का आपन धन बाँट दिहलीं। बहुत दिन ना बीतल की छोटका आपन कुल धन ले के परदेश में चल गउए और उहाँ लुचई मैं आपन धन उड़ा दिहलसि।

मगही : कोई आदमी के दू बेटा हलइ। ओकर में से छोटका आपन बाप से कहलइ कि ए बाप धन दौलत के जे हमर बखरा होव हइ से हमरा दे द। तब ऊ अपन धन-दौलत बाँट देलइ। ढेर दिन नइ बितलइ कि छोटका बेटा सब जमा करलइ अवर दूर देश चल गेलइ अवर उ हुआँ धन-दौलत लुचइ में उड़ा देलइ।

मैथिली : एक केहु आदमी कें दू लरिका रहै। ओह में से छोटका बाप से कहलक, हो बाबू धन सर्बस में से जे हम्मर हिस्सा बखरा होय से हमरी के दे द। त ऊ ओकरा कें अपन धन बाँट देलक। बहुत दिन न भैलैक कि छोटका लरिका सब किछिओ जमा करके दूर देस चल गेल और उहां लम्पटै मे दिन गमवैत अप्पन सर्बस गमा देलक।

कुमाऊँनी : एक मैसाक द्वि च्याला छ्या। उनून में नान् च्याला ले बाबू थैं क्यों कि ओ बाबा तुमार धन में जो मेरो बाँणो को होऔ बो मैकैं दी दिय। तब वीले आपन धन उनून में बाँणि दियो। मनै दिन भ्या कि नान चेलो सब कुछ बटोलिबेर परदेस न्हैग्यो और वाँ वीले आपनि गठि उड़ै दी।

गढ़वाली : एक झण का दूइ नौन्याल थ्या। ऊँ-मा-न-काणसा न अपना बूबा माँ बोले कि हे बूबा बिरसत को बाँठो जो मेरो छ मैं दे। तब वै न बिरसत ऊ सणी बाँटी दिने; और भिंडे दिन नि होया काणसा नौन्याल न सब कठो करी क एक दूर देस चल्ला और अख अपणी रोजी कुकर्म में उडाये।

5. देवनागरी लिपि

देवनागरी लिपि का विकास

- उच्चरित ध्वनि संकेतों की सहायता से भाव या विचार की अभिव्यक्ति 'भाषा' कहलाती है जबकि लिखित वर्ण संकेतों की सहायता से भाव या विचार की अभिव्यक्ति लिपि। भाषा श्रव्य होती है जबकि लिपि दृश्य।
- भारत की सभी लिपियां ब्राह्मी लिपि से ही निकली हैं।
- ब्राह्मी लिपि का प्रयोग वैदिक आर्यों ने शुरू किया।
- ब्राह्मी लिपि का प्राचीनतम नमूना 5वीं सदी BC का है जो कि बौद्धकालीन है।
- गुप्तकाल के आरंभ में ब्राह्मी के दो भेद हो गए उत्तरी ब्राह्मी व दक्षिणी ब्राह्मी। दक्षिणी ब्राह्मी से तमिल लिपि / कलिंग लिपि, तेलुगू-कन्नड़ लिपि, ग्रंथ लिपि *(तमिलनाडु)*, मलयालम लिपि *(ग्रंथ लिपि से विकसित)* का विकास हुआ।
- उत्तरी ब्राह्मी से नागरी लिपि का विकास

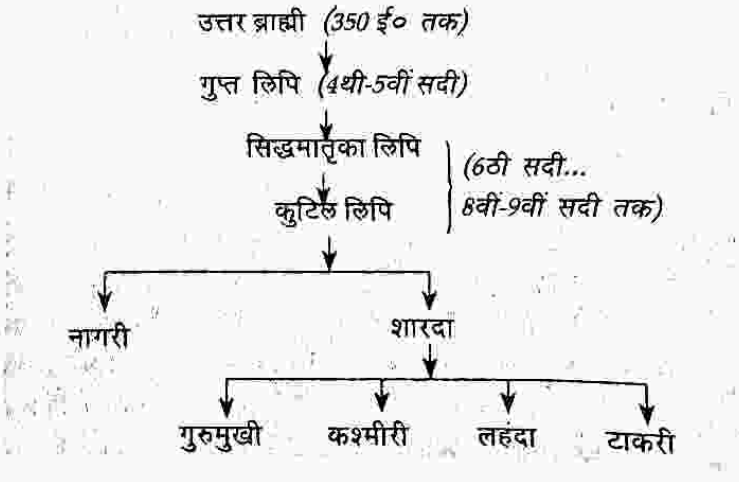

➢ नागरी लिपि का प्रयोग काल 8वीं-9वीं सदी ई० से आरंभ हुआ। 10वीं से 12वीं सदी के बीच इसी प्राचीन नागरी से उत्तरी भारत की अधिकांश आधुनिक लिपियों का विकास हुआ। इसकी दो शाखाएं मिलती हैं पश्चिमी व पूर्वी। पश्चिमी शाखा की सर्वप्रमुख/प्रतिनिधि लिपि देवनागरी लिपि है।

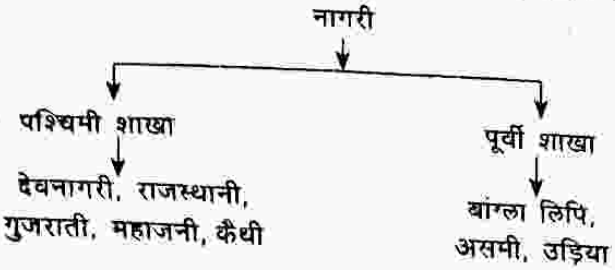

देवनागरी लिपि का हिन्दी भाषा की अधिकृत लिपि के रूप में विकास

➢ देवनागरी लिपि को हिन्दी भाषा की अधिकृत लिपि बनने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। अंग्रेजों की भाषा-नीति फारसी की ओर अधिक झुकी हुई थी इसलिए हिन्दी को भी फारसी लिपि में लिखने का षड्यंत्र किया गया।

➢ जान गिलक्राइस्ट : हिन्दी भाषा और फारसी लिपि का घालमेल फोर्ट विलियम कॉलेज *(1800–54)* की देन थी। फोर्ट विलियम कॉलेज के हिन्दुस्तानी विभाग के सर्वप्रथम अध्यक्ष जान गिलक्राइस्ट थे। उनके अनुसार हिन्दुस्तानी की तीन शैलियां थीं—दरबारी या फारसी शैली, हिन्दुस्तानी शैली व हिन्दवी शैली। वे फारसी शैली को दुरूह तथा हिन्दवी शैली को गँवारू मानते थे। इसलिए उन्होंने हिन्दुस्तानी शैली को प्राथमिकता दी। उन्होंने हिन्दुस्तानी के जिस रूप को बढ़ावा दिया, उसका मूलाधार तो हिन्दी ही था किन्तु उसमें अरबी-फारसी शब्दों की बहुलता थी और वह फारसी लिपि में लिखी जाती थी। गिलक्राइस्ट ने हिन्दुस्तानी के नाम पर असल में उर्दू का ही प्रचार किया।

➢ विलियम प्राइस : 1823 ई० में हिन्दुस्तानी विभाग के अध्यक्ष के रूप में विलियम प्राइस की नियुक्ति हुई। उन्होंने हिन्दुस्तानी के नाम पर हिन्दी *(नागरी लिपि में लिखित)* पर बल दिया। प्राइस ने गिलक्राइस्ट द्वारा जनित भाषा-संबंधी भ्रांति को दूर करने का प्रयास किया। लेकिन प्राइस के बाद कॉलेज की गतिविधियों में कोई विशेष प्रगति नहीं हुई।

➢ अदालत संबंधी विज्ञप्ति (1837 ई०) : वर्ष 1830 ई० में अंग्रेज कंपनी द्वारा अदालतों में फारसी के साथ-साथ देशी भाषाओं को भी स्थान दिया गया। वास्तव में, इस विज्ञप्ति का पालन 1837 ई० में ही शुरू हो सका। इसके बाद बंगाल में बांग्ला भाषा और बांग्ला लिपि प्रचलित हुई, संयुक्त प्रांत *(उत्तर प्रदेश)*, बिहार व मध्य प्रांत *(मध्य प्रदेश)* में भाषा के रूप में तो हिन्दी का प्रचलन हुआ लेकिन लिपि के मामले में नागरी लिपि के स्थान पर उर्दू लिपि का प्रचार किया जाने लगा। इसका मुख्य कारण अदालती अमलों की कृपा तो थी ही, साथ ही मुसलमानों ने भी धार्मिक आधार पर जी-जान से उर्दू का समर्थन किया और हिन्दी को कचहरी से ही नहीं शिक्षा से भी निकाल बाहर करने का आंदोलन चालू किया।

➢ 1857 के विद्रोह के बाद हिन्दू-मुसलमानों के पारस्परिक विरोध में ही सरकार अपनी सुरक्षा समझने लगी। अतः भाषा के क्षेत्र में उनकी नीति भेदपूर्ण हो गई। अंग्रेज विद्वानों के दो दल हो गए। दोनों ओर से पक्ष-विपक्ष में अनेक तर्क-वितर्क प्रस्तुत किए गए। बीम्स साहब उर्दू का और ग्राउस साहब हिन्दी का समर्थन करनेवालों में प्रमुख थे।

➢ नागरी लिपि और हिन्दी तथा फारसी लिपि और उर्दू का अभिन्न संबंध हो गया था। अतः दोनों से दोनों के पक्ष-विपक्ष में काफी विवाद हुआ।

➢ राजा शिव प्रसाद 'सितारे-हिन्द' का लिपि संबंधी प्रतिवेदन (1868 ई०) : फारसी लिपि के स्थान पर नागरी लिपि और हिन्दी भाषा के लिए पहला प्रयास राजा शिवप्रसाद का 1868 ई० में उनके लिपि संबंधी प्रतिवेदन 'मेमोरण्डम कोर्ट कैरेक्टर इन द अपर प्रोविन्स ऑफ इंडिया' से आरंभ हुआ।

➢ जान शोर : एक अंग्रेज अधिकारी फ्रेडरिक जान शोर ने फारसी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं के प्रयोग पर आपत्ति व्यक्त की थी और न्यायालय में हिन्दुस्तानी भाषा और देवनागरी लिपि का समर्थन किया था।

➢ बंगाल के गवर्नर ऐशले के आदेश (1870 ई० व 1873 ई०) वर्ष 1870 ई० में बंगाल के गवर्नर ऐशले ने देवनागरी के पक्ष में एक आदेश जारी किया जिसमें कहा गया कि फारसी-पूरित उर्दू नहीं लिखी जाए बल्कि ऐसी भाषा लिखी जाए जो एक कुलीन हिन्दुस्तानी फारसी से पूर्णतया अनभिज्ञ रहने पर भी बोलता है। वर्ष 1873 ई० में बंगाल सरकार ने यह आदेश जारी किया कि पटना, भागलपुर तथा छोटानागपुर डिविजनों *(संभागों)* के न्यायालयों व कार्यालयों में सभी विज्ञप्तियाँ तथा घोषणाएं हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि में जारी की जाएँ।

➢ वर्ष 1881 ई० तक आते-आते उत्तर प्रदेश के पड़ोसी प्रांतों बिहार, मध्य प्रदेश में नागरी लिपि और हिन्दी प्रयोग की सरकारी आज्ञा जारी हो गई तो उत्तर प्रदेश में नागरी आंदोलन को बड़ा नैतिक प्रोत्साहन मिला।

➢ गौरी दत्त : व्यक्तिगत रूप से मेरठ के पंडित गौरीदत्त की नागरी प्रचार के लिए की गई सेवाएँ अविस्मरणीय हैं। गौरीदत्त ने 1874 ई. में अपने संपादकत्व में 'नागरी प्रकाश' नामक पत्र का प्रकाशन आरंभ किया। उन्होंने और भी कई पत्रिकाओं का संपादन किया—'देवनागरी गजट' (1888 ई.), 'देवनागर' (1891 ई.), 'देवनागरी प्रचारक' (1892 ई.) आदि।

➢ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने नागरी आंदोलन को अभूतपूर्व शक्ति प्रदान की और वे इसके प्रतीक और नेता माने जाने लगे। उन्होंने 1882 में शिक्षा आयोग के प्रश्न-पत्र का जवाब देते हुए कहा : 'सभी सभ्य देशों की अदालतों में उनके नागरिकों की बोली और लिपि का प्रयोग होता है। यही ऐसा देश है जहाँ न तो अदालती भाषा शासकों की मातृभाषा है और न प्रजा की'।

➢ प्रताप नारायण मिश्र : पंडित प्रताप नारायण मिश्र ने 'हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्तान' का नारा लगाना शुरू किया।

➢ 1893 ई० में अंग्रेज सरकार ने भारतीय भाषाओं के लिए रोमन लिपि अपनाने का प्रश्न खड़ा कर दिया। इसकी तीव्र प्रतिक्रिया हुई।

➢ नागरी प्रचारिणी सभा, काशी *(स्थापना 1893 ई०)* व मदन मोहन मालवीय : नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना—वर्ष 1893 ई० में नागरी प्रचार एवं हिन्दी भाषा के संवर्द्धन के लिए नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की स्थापना की गई। सर्वप्रथम इस सभा ने कचहरी में नागरी लिपि का प्रवेश कराना ही अपना मुख्य कर्तव्य निश्चित किया। सभा ने 'नागरी कैरेक्टर' नामक एक पुस्तक अंग्रेजी में तैयार की, जिसमें सभी भारतीय भाषाओं के लिए रोमन लिपि की अनुपयुक्तता पर प्रकाश डाला गया था।

मालवीय के नेतृत्व में 17 सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल द्वारा लेफ्टिनेंट, गवर्नर एण्टोनी मैकडानल को याचिका या मेमोरियल देना *(1898 ई०)*—

मालवीय ने एक स्वतंत्र पुस्तिका 'कोर्ट कैरेक्टर एण्ड प्राइमरी एजुकेशन इन नॉर्थ-वेस्टर्न प्रोविन्सेज' (*1897 ई०*) लिखी, जिसका बड़ा व्यापक प्रभाव पड़ा। वर्ष 1898 ई० में प्रांत के तत्कालीन लेफ्टिनेंट गवर्नर के काशी आने पर नागरी प्रचारिणी सभा का एक प्रभावशाली प्रतिनिधि मडल मालवीय के नेतृत्व में उनसे मिला और हजारों हस्ताक्षरों से युक्त एक मेमोरियल उन्हें दिया। यह मालवीयजी का ही अथक प्रयास था जिसके परिणामस्वरूप अदालतों में नागरी को प्रवेश मिल सका। इसीलिए अदालतों में नागरी के प्रवेश का श्रेय मालवीयजी को दिया जाता है।

- इन तमाम प्रयत्नों का शुभ परिणाम यह हुआ कि 18 अप्रैल 1900 ई० को गवर्नर साहब ने फारसी के साथ नागरी को भी अदालतों/कचहरियों में समान अधिकार दे दिया। सरकार का यह प्रस्ताव हिन्दी के स्वाभिमान के लिए संतोषप्रद नहीं था। इससे हिन्दी को अधिकारपूर्ण सम्मान नहीं दिया गया था बल्कि हिन्दी के प्रति दया दिखलाई गई थी। केवल हिन्दी भाषी जनता के लिए सुविधा का प्रबंध किया गया था। फिर भी, इसे इतना श्रेय तो है ही कि नागरी को कचहरियों में स्थान दिला सका और वह मजबूत आधार प्रदान किया जिसके बल पर वह 20वीं सदी में राष्ट्रलिपि के रूप में उभरकर सामने आ सकी।
- शारदा चरण मित्र (1848–1917 ई.) : कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश शारदा चरण मित्र ने अगस्त 1907 ई० में कलकत्ता में 'एक लिपि विस्तार परिषद्' नामक संस्था की स्थापना की। मित्र ने इस संस्था की ओर से 'देवनागर' (1907 ई.) पत्र प्रकाशित करके भारत की सभी भाषाओं के साहित्य को देवनागरी लिपि में प्रस्तुत करने का उपक्रम रचा। इस पत्र में भिन्न-भिन्न भाषाओं के लेख देवनागरी लिपि में छपा करते थे। वे अखिल भारतीय लिपि के रूप में देवनागरी लिपि के प्रथम प्रचारक थे।
- नेहरू रिपोर्ट (1928 ई.) की भाषा-लिपि संबंधी संस्तुति : नेहरू रिपोर्ट की भाषा-लिपि संबंधी संस्तुति में कहा गया : 'देवनागरी अथवा फारसी में लिखी जाने वाली हिन्दुस्तानी भारत की राजभाषा होगी'। स्पष्ट है कि हिन्दी भाषा की अधिकृत लिपि के मामले में इस समय तक द्वैध या विवाद की स्थिति बनी हुई थी।
- संविधान सभा में भाषा संबंधी विधेयक पारित (14 सितम्बर, 1949 ई०) : जब संविधान सभा ने 14 सितम्बर, 1949 ई. को भाषा संबंधी विधेयक पारित किया तब जाकर लिपि के मामले में विद्यमान द्वैध या विवाद अंतिम रूप से समाप्त हुआ। अनुच्छेद 343(1) में स्पष्ट घोषणा की गई : 'संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी'। इस प्रकार, 150 वर्षों (1800–1949 ई.) के लम्बे संघर्ष के बाद देवनागरी लिपि हिन्दी भाषा की एकमात्र और अधिकृत लिपि बन पाई।

देवनागरी लिपि का नामकरण

- देवनागरी लिपि को 'लोक नागरी' एवं 'हिन्दी लिपि' भी कहा जाता है।
- देवनागरी का नामकरण विवादास्पद है। ज्यादातर विद्वान गुजरात के नागर ब्राह्मणों से इसका संबंध जोड़ते हैं। उनका मानना है कि गुजरात में सर्वप्रथम प्रचलित होने से वहाँ के पण्डित वर्ग अर्थात् नागर ब्राह्मणों के नाम से इसे 'नागरी' कहा गया। अपने अस्तित्व में आने के तुरंत बाद इसने देवभाषा संस्कृत को लिपिबद्ध किया इसलिए 'नागरी' में 'देव' शब्द जुड़ गया और बन गया 'देवनागरी'।

देवनागरी लिपि का स्वरूप

- यह लिपि बायीं ओर से दायीं ओर लिखी जाती है। जबकि फ़ारसी लिपि (उर्दू, अरबी, फ़ारसी भाषा की लिपि) दायीं ओर से बायीं ओर लिखी जाती है।
- यह अक्षरात्मक लिपि *(Syllabic script)* है जबकि रोमन लिपि (अंग्रेजी भाषा की लिपि) वर्णात्मक लिपि *(Alphabetic script)* है।

देवनागरी लिपि के गुण

1. एक ध्वनि के लिए एक ही वर्ण संकेत
2. एक वर्ण संकेत से अनिवार्यतः एक ही ध्वनि व्यक्त
3. जो ध्वनि का नाम वही वर्ण का नाम
4. मूक वर्ण नहीं
5. जो बोला जाता है वही लिखा जाता है
6. एक वर्ण में दूसरे वर्ण का भ्रम नहीं
7. उच्चारण के सूक्ष्मतम भेद को भी प्रकट करने की क्षमता
8. वर्णमाला ध्वनि वैज्ञानिक पद्धति के बिल्कुल अनुरूप
9. प्रयोग बहुत व्यापक *(संस्कृत, हिन्दी, मराठी, नेपाली की एकमात्र लिपि)*
10. भारत की अनेक लिपियों के निकट

देवनागरी लिपि के दोष

1. कुल मिलाकर 403 टाइप होने के कारण टंकन, मुद्रण में कठिनाई
2. शिरोरेखा का प्रयोग अनावश्यक अलंकरण के लिए
3. अनावश्यक वर्ण *(ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ङ्, ञ्, ष— आज इन्हें कोई शुद्ध उच्चारण के साथ उच्चरित नहीं कर पाता)*
4. द्विरूप वर्ण *(अ्र अ, क्ष क्ष, त्र त्र, ६ छ, झ झ, रा ण, श श, ल ल)*
5. समरूप वर्ण *(ख में र व का, घ में ध का, म में भ का भ्रम होना)*
6. वर्णों के संयुक्त करने की कोई निश्चित व्यवस्था नहीं
7. अनुस्वार एवं अनुनासिकता के प्रयोग में एकरूपता का अभाव
8. त्वरापूर्ण लेखन नहीं क्योंकि लेखन में हाथ बार-बार उठाना पड़ता है
9. वर्णों के संयुक्तीकरण में र के प्रयोग को लेकर भ्रम की स्थिति
10. इ की मात्रा (ि) का लेखन वर्ण के पहले पर उच्चारण वर्ण के बाद

देवनागरी लिपि में किये गये सुधार

1. बाल गंगाधर का 'तिलक फ़ांट' (1904-26)
2. सावरकर बंधुओं का 'अ की बारहखड़ी'
3. श्याम सुन्दर दास का पंचमाक्षर के बदले अनुस्वार के प्रयोग का सुझाव

4. गोरख प्रसाद का मात्राओं को व्यंजन के बाद दाहिने तरफ अलग रखने का सुझाव *(जैसे, कुल—क ु ल)*
5. श्री निवास का महाप्राण वर्ण के लिए अल्पप्राण के नीचे *s* चिह्न लगाने का सुझाव
6. हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इन्दौर अधिवेशन और काका कालेलकर के संयोजकत्व में नागरी लिपि सुधार समिति का गठन *(1935)* और उसकी सिफारिशें
7. काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा अ की बारहखड़ी और श्री निवास के सुझाव को अस्वीकार करने का निर्णय *(1945)*
8. उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा गठित आचार्य नरेन्द्र देव समिति का गठन *(1947)* और उसकी सिफारिशें
9. शिक्षा मंत्रालय के देवनागरी लिपि संबंधी प्रकाशन—'मानक देवनागरी वर्णमाला' *(1966 ई०)*, 'हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण' *(1967 ई०)*, 'देवनागरी लिपि तथा हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण' *(1983 ई०)* आदि।

6. हिन्दी भाषा का मानकीकरण

मानक भाषा *(Standard Language)*

➢ मानक का अभिप्राय है—आदर्श, श्रेष्ठ अथवा परिनिष्ठित। भाषा का जो रूप उस भाषा के प्रयोक्ताओं के अलावा अन्य भाषा-भाषियों के लिए आदर्श होता है, जिसके माध्यम से वे उस भाषा को सीखते हैं, जिस भाषा-रूप का व्यवहार पत्राचार, शिक्षा, सरकारी काम-काज एवं सामाजिक-सांस्कृतिक आदान-प्रदान में समान स्तर पर होता है, वह उस भाषा का मानक रूप कहलाता है।

➢ मानक भाषा किसी देश अथवा राज्य की वह प्रतिनिधि तथा आदर्श भाषा होती है जिसका प्रयोग वहाँ के शिक्षित वर्ग द्वारा अपने सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, व्यापारिक व वैज्ञानिक तथा प्रशासनिक कार्यों में किया जाता है।

➢ मानकीकरण (मानक भाषा के विकास) के तीन सोपान : बोली→भाषा→मानक भाषा

किसी भाषा का बोल-चाल के स्तर से ऊपर उठकर मानक रूप ग्रहण कर लेना उसका मानकीकरण कहलाता है।

प्रथम सोपान : 'बोली' : पहले स्तर पर भाषा का मूल रूप एक सीमित क्षेत्र में आपसी बोलचाल के रूप में प्रयुक्त होनेवाली बोली का होता है, जिसे स्थानीय, आंचलिक अथवा क्षेत्रीय बोली कहा जा सकता है। इसका शब्द भंडार सीमित होता है। कोई नियमित व्याकरण नहीं होता। इसे शिक्षा, आधिकारिक कार्य-व्यवहार अथवा साहित्य का माध्यम नहीं बनाया जा सकता।

द्वितीय सोपान : 'भाषा' : वही बोली कुछ विशेष भौगोलिक, सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक व प्रशासनिक कारणों से अपना क्षेत्र विस्तार कर लेती है, उसका लिखित रूप विकसित होने लगता है और इसी कारण वह व्याकरणिक साँचे में ढलने लगती है, उसका पत्राचार, शिक्षा, व्यापार, प्रशासन आदि में प्रयोग होने लगता है, तब वह बोली न रहकर 'भाषा' की संज्ञा प्राप्त कर लेती है।

तृतीय सोपान : 'मानक भाषा' : यह वह स्तर है जब भाषा के प्रयोग का क्षेत्र अत्यधिक विस्तृत हो जाता है। वह एक आदर्श रूप ग्रहण कर लेती है। उसका परिनिष्ठित रूप होता है। उसकी अपनी शैक्षणिक, वाणिज्यिक, साहित्यिक, शास्त्रीय, तकनीकी एवं कानूनी शब्दावली होती है। इसी स्थिति में पहुँचकर भाषा 'मानक भाषा' बन जाती है। उसी को 'शुद्ध', 'उच्च-स्तरीय', 'परिमार्जित' आदि भी कहा जाता है।

➢ मानक भाषा के तत्व : 1. ऐतिहासिकता 2. स्वायत्तता 3. केन्द्रोन्मुखता 4. बहुसंख्यक प्रयोगशीलता 5. सहजता/बोधगम्यता 6. व्याकरणिक साम्यता 7. सर्वविध एकरूपता।

➢ मानकीकरण का एक प्रमुख दोष यह है कि मानकीकरण करने से भाषा में स्थिरता आने लगती है जिससे भाषा की गति अवरुद्ध हो जाती है।

हिन्दी भाषा के मानकीकरण की दिशा में उठाये गए महत्वपूर्ण कदम

1. राजा शिवप्रसाद 'सितारे-हिन्द' ने क ख ग ज़ फ़ पाँच अरबी-फारसी ध्वनियों के लिए चिह्नों के नीचे नुक्ता लगाने का रिवाज आरंभ किया।

2. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' के जरिये खड़ी बोली को व्यावहारिक रूप प्रदान करने का प्रयास किया।

3. अयोध्या प्रसाद खत्री ने प्रचलित हिन्दी को 'ठेठ हिन्दी' की संज्ञा दी और ठेठ हिन्दी का प्रचार किया। उन्होंने खड़ी बोली को पद्य की भाषा बनाने के लिए आंदोलन चलाया।

4. हिन्दी भाषा के मानकीकरण की दृष्टि से द्विवेदी युग *(1900–20)* सर्वाधिक महत्वपूर्ण युग था। 'सरस्वती' पत्रिका के संपादक महावीर प्रसाद द्विवेदी ने खड़ी बोली के मानकीकरण का सवाल सक्रिय रूप से और एक आंदोलन के रूप में उठाया। युग निर्माता द्विवेदीजी ने 'सरस्वती' पत्रिका के जरिये खड़ी बोली हिन्दी के प्रत्येक अंग को गढ़ने-संवारने का कार्य खुद तो बहुत लगन से किया ही, साथ ही अन्य भाषा-साधकों को भी इस कार्य की ओर प्रवृत किया। द्विवेदीजी की प्रेरणा से कामता प्रसाद गुरू ने 'हिन्दी व्याकरण' के नाम से एक वृहद व्याकरण लिखा।

5. छायावाद युग *(1918-36)* व छायावादोत्तर युग *(1936 के बाद)* में हिन्दी के मानकीकरण की दिशा में कोई आंदोलनात्मक प्रयास तो नहीं हुआ, किन्तु भाषा का मानक रूप अपने-आप स्पष्ट होता चला गया।

6. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद *(1947 के बाद)* हिन्दी के मानकीकरण पर नये सिरे से विचार-विमर्श शुरू हुआ क्योंकि संविधान ने इसे राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित किया जिससे हिन्दी पर बहुत बड़ा उत्तरदायित्व आ पड़ा। इस दिशा में दो संस्थाओं का विशेष योगदान रहा—इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के माध्यम से 'भारतीय हिन्दी परिषद्' का तथा शिक्षा मंत्रालय के अधीनस्थ कार्यालय केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय का।

भारतीय हिन्दी परिषद् : भाषा के सर्वांगीण मानकीकरण का प्रश्न सबसे पहले 1950 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग ने ही उठाया। डॉ० धीरेन्द्र वर्मा की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गई जिसमें डॉ० हरदेव बाहरी, डॉ० ब्रजेश्वर शर्मा, डॉ० माता प्रसाद गुप्त आदि सदस्य थे। धीरेन्द्र वर्मा ने 'देवनागरी लिपि चिह्नों में एकरूपता', हरदेव बाहरी ने 'वर्ण विन्यास की समस्या,' ब्रजेश्वर शर्मा ने 'हिन्दी व्याकरण' तथा माता प्रसाद गुप्त ने 'हिन्दी शब्द-भंडार का स्थिरीकरण' विषय पर अपने प्रतिवेदन प्रस्तुत किए।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय : केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने लिपि के मानकीकरण पर अधिक ध्यान दिया और 'देवनागरी' लिपि तथा हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण' *(1983 ई०)* का प्रकाशन किया।

विश्व हिन्दी सम्मेलन

उद्देश्य : UNO की भाषाओं में हिन्दी को स्थान दिलाना व न्दी का प्रचार-प्रसार करना।

क्रम	तिथि	आयोजन स्थल
हला	10-14 जनवरी, 1975	नागपुर *(भारत)*; अध्यक्ष—शिवसागर राम गुलाम *(मारिशस के तत्कालीन राष्ट्रपति)*, उद्घाटन—इंदिरा गांधी
ूसरा	28-30 अगस्त, 1976	पोर्ट लुई *(मारिशस)*
तीसरा	28-30 अक्तूबर, 1983	नई दिल्ली *(भारत)*
चौथा	02-04 दिसम्बर, 1993	पोर्ट लुई *(मारिशस)*
पांचवां	04-08 अप्रैल, 1996	पोर्ट ऑफ स्पेन *(ट्रिनिडाड एवं टोबैगो)*
छठा	14-18 सितम्बर, 1999	लंदन *(ब्रिटेन)*
सातवां	05-09 जून, 2003	पारामारिबो *(सूरीनाम)*
आठवां	13-15 जुलाई, 2007	न्यूयार्क *(अमेरिका)*
नवां	22-24 सितम्बर, 2012	जोहान्सबर्ग *(दक्षिण अफ्रीका)*
दसवां	10–12 सितम्बर, 2015	भोपाल *(भारत)*

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

. हिन्दी किस भाषा-परिवार की भाषा है ?
(a) भारोपीय (b) द्रविड़
(c) आस्ट्रिक (d) चीनी-तिब्बती

. भारत में सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा कौन-सी है ?
(a) हिन्दी (b) संस्कृत (c) तमिल (d) उर्दू

. 'हिन्दी' भाषा का जन्म हुआ है—
(a) अपभ्रंश से (b) लौकिक संस्कृत से
(c) पालि-प्राकृत से (d) वैदिक संस्कृत से
(बी.एड., 1996)

. निम्नलिखित में से कौन-सी बोली अथवा भाषा हिन्दी के अंतर्गत नहीं आती है ?
(a) कन्नौजी (b) बांगरू (c) अवधी (d) तेलुगू
(बी.एड., 1998)

5. हिन्दी की विशिष्ट बोली 'ब्रजभाषा' किस रूप में सबसे अधिक प्रसिद्ध है ?
(a) राजभाषा (b) तकनीकी भाषा
(c) राष्ट्रभाषा (d) काव्यभाषा *(बी.एड., 1998)*

6. भारतवर्ष में हिन्दी को आप किस वर्ग में रखेंगे ?
(a) राजभाषा (b) राष्ट्रभाषा
(c) विभाषा (d) तकनीकी भाषा
(बी.एड., 1999)

7. 'ढूँढ़ाड़ी' बोली है—
(a) पश्चिमी राजस्थान की (b) पूर्वी राजस्थान की
(c) दक्षिणी राजस्थान की (d) उत्तरी राजस्थान की
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

8. 'ब्रजबुलि' नाम से जानी जाती है—
(a) पंजाबी (b) मराठी
(c) गुजराती (d) पुरानी बांग्ला
(अनुवादक परीक्षा, 2001)

9. निम्नलिखित में से कौन-सी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है ?
(a) गुजराती (b) उड़िया (c) मराठी (d) सिंधी
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

10. 'एक मनई के दुइ बेटवे रहिन। ओह मों लहुरा अपने बाप से कहिस-दादा धन मों जवन हमर बखरा लागत होय तवन हमका दै द।' यह अवतरण हिन्दी की किस बोली में है ?
(a) भोजपुरी (b) कन्नौजी
(c) अवधी (d) खड़ी बोली
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

11. निम्नलिखित में कौन-सी भाषा संस्कृत भाषा की अपभ्रंश है ?
(a) खड़ी बोली(b) ब्रजभाषा (c) अवधी (d) पालि
(बी.एड., 2003)

12. अधिकतर भारतीय भाषाओं का विकास किस लिपि से हुआ ?
(a) शारदा लिपि (b) खरोष्ठी लिपि
(c) कुटिल लिपि (d) ब्राह्मी लिपि
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

13. हिन्दी भाषा किस लिपि में लिखी जाती है ?
(a) गुरुमुखी (b) ब्राह्मी (c) देवनागरी (d) सौराष्ट्री
(बी. एड., 2004)

14. वर्तमान हिन्दी का प्रचलित रूप है—
(a) अवधी (b) ब्रजभाषा
(c) खड़ी बोली (d) देवनागरी *(बी. एड., 2004)*

15. हिन्दी भाषा की बोलियों के वर्गीकरण के आधार पर छत्तीसगढ़ी बोली है—
(a) पूर्वी हिन्दी (b) पश्चिमी हिन्दी
(c) पहाड़ी हिन्दी (d) राजस्थानी हिन्दी
(बी. एड , 2004)

16. निम्नलिखित में से कौन-सी पश्चिमी हिन्दी की बोली नहीं है ?
(a) बुन्देली (b) ब्रज (c) कन्नौजी (d) बघेली
(नेट/जे.आर.एफ., 2005)

17. भारतीय संविधान में किन अनुच्छेदों में राजभाषा संबंधी प्रावधानों का उल्लेख है ?
(a) 343-351 तक (b) 434-315 तक
(c) 443–135 तक (d) 334–153 तक
(नेट/जे.आर.एफ., 2005)

18. दक्षिणी भारत हिन्दी प्रचार सभा का मुख्यालय कहाँ पर स्थित है ?
(a) हैदराबाद (b) बंगलौर (c) चेन्नई (d) मैसूर
(नेट/जे.आर.एफ., 2005)

19. हिन्दी भाषा के विकास का सही अनुक्रम कौन-सा है ?
(a) प्राकृत-अपभ्रंश-हिन्दी (b) प्राकृत-अपभ्रंश-हिन्दी-पालि
(c) अपभ्रंश-पालि-प्राकृत-हिन्दी (d) हिन्दी-पालि-अपभ्रंश-प्राकृत
(नेट/जे.आर.एफ., 2005)

20. संविधान के अनुच्छेद 351 में किस विषय का वर्णन है ?
(a) संघ की राजभाषा
(b) उच्चतम न्यायालय की भाषा
(c) पत्राचार की भाषा
(d) हिन्दी के विकास के लिए निदेश *(टी.जी.टी., 2005)*

21. 'ब्रजभाषा' है—
(a) पूर्वी हिन्दी (b) पश्चिमी हिन्दी
(c) बिहारी हिन्दी (d) पहाड़ी हिन्दी
(टी.जी.टी., 2005)

22. 'मगही' किस उपभाषा की बोली है ?
(a) राजस्थानी (b) पश्चिमी हिन्दी
(c) पूर्वी हिन्दी (d) बिहारी
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2005)

23. हिन्दी खड़ी बोली किस अपभ्रंश से विकसित हुई है ?
(a) मागधी (b) अर्द्धमागधी
(c) शौरसेनी (d) ब्राचड़
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2005)

24. भाषा के आधार पर भारतीय राज्यों की पुनः संरचना की गई थी—
(a) 1952 ई० में (b) 1953 ई० में
(c) 1954 ई० में (d) 1956 ई० में *(रेलवे, 2005)*

25. भाषाई आधार पर सर्वप्रथम किस राज्य का गठन हुआ ?
(a) पंजाब (b) जम्मू-कश्मीर
(c) राजस्थान (d) आंध्र प्रदेश *(रेलवे, 2005)*

26. 'बघेली' बोली का संबंध किस उपभाषा से है ?
(a) राजस्थानी (b) पूर्वी हिन्दी
(c) बिहारी (d) पश्चिमी हिन्दी
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

27. किस तिथि को हिन्दी को राजभाषा बनाने का निर्णय लिया गया ?
(a) 15 अगस्त, 1947 ई० (b) 26 जनवरी, 1950 ई०
(c) 14 सितम्बर, 1949 ई० (d) 14 सितम्बर, 1950 ई०
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

28. वर्ष 1955 ई० में गठित प्रथम राजभाषा आयोग के अध्यक्ष थे—
(a) बी० जी० खेर (b) सुनीति कुमार चटर्जी
(c) जी० बी० पंत (d) पी० सुब्बोरोयान

29. भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल भाषाओं की संख्या है—
(a) 14 (b) 15 (c) 18 (d) 22

30. हिन्दी की आदि जननी है—
(a) संस्कृत (b) पालि (c) प्राकृत (d) अपभ्रंश

31. आठवां विश्व हिन्दी सम्मेलन *(World Hindi Conference)* 2007 ई० का आयोजन स्थल था—
(a) नागपुर (b) मारिशस (c) लंदन (d) न्यूयार्क

32. निम्नलिखित में से कौन भारोपीय परिवार की भाषा नहीं है ?
(a) मराठी (b) गुजराती (c) मलयालम (d) हिन्दी
(नेट/जे.आर.एफ., 2011)

33. 'हिन्दी दिवस' इस दिन मनाया जाता है—
(a) 11 जून (b) 14 सितम्बर (c) 28 सितम्ब (d) 10 अक्तूबर
(उ.प्र. पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2011, टी.जी.टी. 2014)

34. विकास की दृष्टि से प्राकृत की पूर्वकालीन अवस्था का नाम है—
(a) पालि (b) संस्कृत (c) हिन्दी (d) अवहट्ठ
(नेट/जे.आर.एफ., 2014)

35. पश्चिमी हिन्दी की दो बोलियों का सही युग्म है—
(a) कन्नौजी–अवधी (b) ब्रज–बघेली
(c) छत्तीसगढ़ी–बांगरु (d) खड़ी बोली–बुंदेली
(नेट/जे.आर.एफ., 2014)

36. अर्धमागधी अपभ्रंश से विकसित बोली है—
(a) बांगरु (b) बघेली (c) ब्रजभाषा (d) भोजपुरी
(नेट/जे.आर.एफ., 2014)

37. देवनागरी लिपि का सही विकास-क्रम है—
(a) गुप्त लिपि, ब्राह्मी लिपि, देवनागरी लिपि, नागरी लिपि
(b) नागरी लिपि, ब्राह्मी लिपि, गुप्त लिपि, देवनागरी लिपि
(c) ब्राह्मी लिपि, गुप्त लिपि, नागरी लिपि, देवनागरी लिपि
(d) गुप्त लिपि, नागरी लिपि, ब्राह्मी लिपि, देवनागरी लिपि
(नेट/जे.आर.एफ., 2014)

उत्तरमाला

1. (a)	2. (a)	3. (a)	4. (d)	5. (d)	6. (a)	7. (b)	8. (d)	9. (c)	10. (c)	11. (d)	12. (d)	
13. (c)	14. (c)	15. (a)	16. (d)	17. (a)	18. (c)	19. (a)	20. (d)	21. (b)	22. (d)	23. (c)	24. (d)	
25. (d)	26. (b)	27. (c)	28. (a)	29. (d)	30. (a)	31. (d)	32. (c)	33. (b)	34. (a)	35. (d)	36. (b)	
37. (c)												

★★★

वर्णमाला
(Alphabet)

02

भाषा संस्कृत के 'भाष्' शब्द से बना है। भाष् का अर्थ है बोलना। भाषा की सार्थक इकाई वाक्य है। वाक्य से छोटी इकाई उपवाक्य, उपवाक्य से छोटी इकाई पदबंध, पदबंध से छोटी इकाई पद *(शब्द)*, पद से छोटी इकाई अक्षर (Syllable) और अक्षर से छोटी इकाई ध्वनि या वर्ण (Letter) है। राम शब्द में 2 अक्षर *(रा म)* एवं 4 वर्ण *(र् आ म् अ)* हैं।

वर्णमाला (Alphabet)

वर्ण : भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि है। इस ध्वनि को 'वर्ण' कहते हैं।

वर्णमाला : वर्णों के व्यवस्थित समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं।

मानक हिन्दी वर्णमाला :

मूलतः हिन्दी में उच्चारण के आधार पर 45 वर्ण *(10 स्वर + 35 व्यंजन)* एवं लेखन के आधार पर 52 वर्ण *(13 स्वर + 35 व्यंजन + 4 संयुक्त व्यंजन)* हैं।

स्वर : अ आ इ ई उ ऊ (ऋ) ए ऐ ओ औ (अं) (अः)
[कुल = 10 + (3) = 13]

व्यंजनः क वर्ग—क ख ग घ ङ
च वर्ग—च छ ज झ ञ
ट वर्ग—ट ठ ड (ड़) ढ (ढ़) ण *(द्विगुण व्यंजन—ड़ ढ़)*
त वर्ग—त थ द ध न
प वर्ग—प फ ब भ म
अंतःस्थ—य र ल व
ऊष्म—श ष स ह *[कुल = 33 + (2) = 35]*

संयुक्त व्यंजन—क्ष त्र ज्ञ श्र *[कुल = 4]*
(क् + ष) (त् + र) (ज् + ञ) (श् + र)

विदेशी से आगत/गृहीत ध्वनियाँ

अरबी-फारसी : *क़ ख़ ग़ ज़ फ़ (क़ ख़ ग़ का प्रयोग अब कम) (तल बिन्दु या नुक्ता वाले वर्ण)*

अंग्रेजी : *ऑ (अर्द्ध चन्द्रबिन्दु वाले वर्ण)*

नोट : 1. *वर्णों की गणना दो आधार पर की जाती है उच्चारण व लेखन। उच्चारण के आधार पर की गई वर्ण गणना को ज्यादा उपयुक्त माना जाता है।*

2. *उच्चारण के आधार पर हिन्दी में वर्णों की कुल संख्या 47 [10 स्वर + 37 व्यंजन [35 हिन्दी के मूल व्यंजन +2 आगत व्यंजन (ज़, फ)]] हैं। क्ष त्र ज्ञ श्र एकल व्यंजन नहीं है; ये संयुक्त व्यंजन है।*

3. *लेखन के आधार पर हिन्दी में वर्णों की कुल संख्या 55 है। इसमें उन सभी पूर्ण वर्णों को शामिल किया जाता है जो लेखन या मुद्रण में प्रयोग में आते हैं।*

स्वर (Vowels)

स्वर : स्वतंत्र रूप से बोले जानेवाले वर्ण 'स्वर' कहलाते हैं। परंपरागत रूप से इनकी संख्या 13 मानी गई है। उच्चारण की दृष्टि से इनमें केवल 10 ही स्वर हैं—अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ।

स्वरों का वर्गीकरण :

1. मात्रा/उच्चारण-काल के आधार पर

ह्रस्व स्वर : जिनके उच्चारण में कम समय *(एक मात्रा का समय)* लगता है *(अ इ उ)*।

दीर्घ स्वर : जिनके उच्चारण में ह्रस्व स्वर से अधिक समय (दो मात्रा का समय) लगता है *(आ ई ऊ ए ऐ ओ औ ऑ)*।

प्लुत स्वर : जिनके उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक समय लगता है; किसी को पुकारने में या नाटक के संवादों में इसका प्रयोग किया जाता है *(रा 555 म)*।

2. जीभ के प्रयोग के आधार पर

अग्र स्वर : जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का अग्र भाग काम करता है (इ ई ए ऐ)।

मध्य स्वर : जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का मध्य भाग काम करता है (अ)।

पश्च स्वर : जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का पश्च भाग काम करता है *(आ उ ऊ ओ औ ऑ)*।

3. मुख-द्वार (मुख-विवर) के खुलने के आधार पर :

विवृत (Open) : जिन स्वरों के उच्चारण में मुख-द्वार पूरा खुलता है *(आ)*।

अर्ध-विवृत (Half-Open) : जिन स्वरों के उच्चारण में मुख-द्वार आधा खुलता है *(अ, ऐ, औ, ऑ)*।

अर्ध-संवृत (Half-close) : जिन स्वरों के उच्चारण में मुख-द्वार आधा बंद रहता है *(ए, ओ)*।

संवृत (Close) : जिन स्वरों के उच्चारण में मुख-द्वार लगभग बंद रहता है *(इ, ई, उ, ऊ)*।

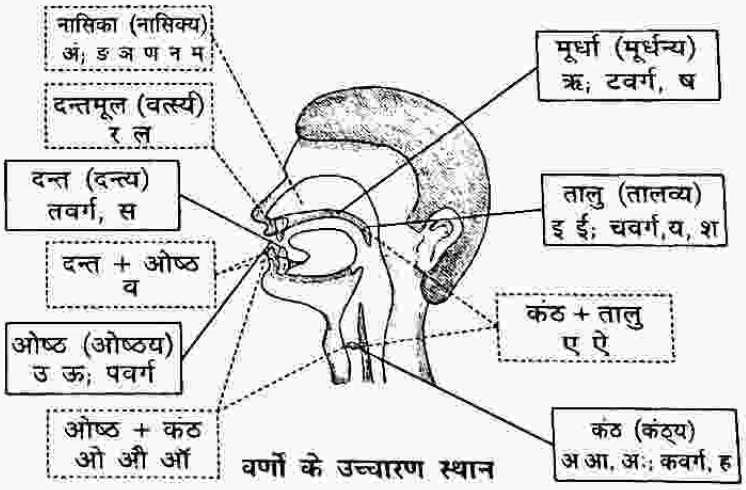

वर्णों के उच्चारण स्थान

4. ओठों की स्थिति के आधार पर

अवृतमुखी : जिन स्वरों के उच्चारण में ओंठ वृतमुखी या गोलाकार नहीं होते हैं (अ आ इ ई ए ऐ)।

वृतमुखी : जिन स्वरों के उच्चारण में ओंठ वृतमुखी या गोलाकार होते हैं (उ ऊ ओ औ ऑ)।

5. हवा के नाक व मुँह से निकलने के आधार पर

निरनुनासिक/मौखिक स्वर : जिन स्वरों के उच्चारण में हवा केवल मुँह से निकलती है *(अ आ इ आदि)*।

अनुनासिक स्वर : जिन स्वरों के उच्चारण में हवा मुँह के साथ-साथ नाक से भी निकलती है *(अँ आँ इँ आदि)*।

6. घोषत्व के आधार पर

घोष का अर्थ है स्वरतंत्रियों में श्वास का कंपन। स्वरतंत्री में जब कंपन होता है तो 'सघोष' ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं। सभी स्वर 'सघोष' ध्वनियाँ होती हैं।

व्यंजन (Consonants)

व्यंजन : स्वर की सहायता से बोले जानेवाले वर्ण 'व्यंजन' कहलाते हैं। प्रत्येक व्यंजन के उच्चारण में 'अ' स्वर मिला होता है। अ के बिना व्यंजन का उच्चारण संभव नहीं। परंपरागत रूप से व्यंजनों की संख्या 33 मानी जाती है। द्विगुण व्यंजन ड़ ढ़ को जोड़ देने पर इनकी संख्या 35 हो जाती है।

व्यंजनों का वर्गीकरण

I. स्पर्श व्यंजन : जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय हवा फेफड़ों से निकलते हुए मुँह के किसी स्थान-विशेष—कंठ, तालु, मूर्धा, दाँत या होंठ—का स्पर्श करते हुए निकले। उच्चारण-स्थान के आधार पर स्पर्श व्यंजन के वर्ग हैं : कवर्ग-कंठ्य, चवर्ग-तालव्य, टवर्ग-मूर्धन्य, तवर्ग-दन्त्य, तथा पवर्ग-ओष्ठ्य। स्पष्ट है कि स्पर्श में पीछे से आगे की ओर जाने का क्रम है : कंठ्य→तालव्य→मूर्धन्य→दन्त्य→ओष्ठ्य अर्थात् कंठ्य पहले है तो ओष्ठ्य सबसे बाद में।

वर्ग	उच्चारण स्थान	अघोष अल्पप्राण	अघोष महाप्राण	सघोष अल्पप्राण	सघोष महाप्राण	सघोष अल्पप्राण नासिक्य
कंठ्य	कंठ	क	ख	ग	घ	ङ
तालव्य	तालु *(मुँह के भीतर की ऊपरी छत का पिछला भाग)*	च	छ	ज	झ	ञ
मूर्धन्य	मूर्धा *(मुँह के भीतर की ऊपरी छत का अगला भाग)*	ट	ठ	ड	ढ	ण
दन्त्य	दाँत	त	थ	द	ध	न
ओष्ठ्य	ओष्ठ/ओंठ	प	फ	ब	भ	म

नोट : *(1) कुछ विद्वान च वर्ग को स्पर्श-संघर्षी भी मानते हैं।*

(2) घोषत्व के आधार पर : घोष का अर्थ है स्वरतंत्रियों में ध्वनि का कंपन।

अघोष : जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वरतंत्रियों में कंपन न हो (हर वर्ग का 1ला और 2रा व्यंजन)।

सघोष/घोष : जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वरतंत्रियों में कंपन हो (हर वर्ग का 3रा, 4था और 5वाँ व्यंजन)।

(3) प्राणत्व के आधार पर : यहाँ प्राण का अर्थ हवा से है।

अल्पप्राण : जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुख से कम हवा निकले (हर वर्ग का 1ला, 3रा और 5वाँ व्यंजन)।

महाप्राण : जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुख से अधिक हवा निकले, जिन व्यंजनों के उच्चारण में हकार की ध्वनि विशेष रूप से सुनाई दे (हर वर्ग का 2रा और 4था व्यंजन)।

II. अन्तःस्थ व्यंजन : जिन वर्णों का उच्चारण पारंपरिक वर्णमाला के बीच अर्थात् स्वरों व व्यंजनों के बीच स्थित हो।

	वर्ग	उच्चारण-स्थान	
य	तालव्य	तालु	सघोष, अल्पप्राण
र	वर्त्स्य	दंतमूल/मसूढ़ा	
ल	वर्त्स्य	दंतमूल/मसूढ़ा	
व	दंतोष्ठ्य	ऊपर के दाँत + निचला ओंठ	

नोट : *(1) य व—अर्द्धस्वर (ध्वनि जो कभी स्वर तो कभी व्यंजन)*

(2) र—लुंठित (जिसके उच्चारण में जीभ तालु से लुढ़ककर स्पर्श करे)

(3) ल—पार्श्विक (जिसके उच्चारण में हवा जीभ के पार्श्व/बगल से निकल जाए)

III. ऊष्म/संघर्षी : जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय वायु मुख में किसी स्थान-विशेष पर घर्षण/रगड़ खा कर निकले और ऊष्मा/गर्मी पैदा करे।

	वर्ग	उच्चारण-स्थान	
श	तालव्य	तालु	अघोष, महाप्राण
ष	मूर्धन्य	मूर्धा	
स	वर्त्स्य	दंतमूल/मसूढ़ा	

ह स्वरयंत्रीय स्वरयंत्र *(कंठ के भीतर स्थित)*—सघोष, महाप्राण

➢ उत्क्षिप्त (ड़ ढ़) : जिनके उच्चारण में जीभ पहले ऊपर उठकर मूर्धा का स्पर्श करे और फिर झटके के साथ नीचे को आये।

नोट : *ड़ ढ़ हिन्दी के विकसित व्यंजन हैं। ये संस्कृत में नहीं थे।*

ड़—मूर्धन्य, सघोष, अल्पप्राण

ढ़—मूर्धन्य, सघोष, महाप्राण

➢ आगत/गृहीत ध्वनियाँ :

क़ ··· स्पर्शी, कण्ठ + जिह्वामूल, अघोष, अल्पप्राण

ख़ ··· ऊष्म/संघर्षी, कण्ठ + जिह्वामूल, अघोष, महाप्राण

ग़ ··· ऊष्म/संघर्षी, कण्ठ + जिह्वामूल, सघोष, अल्पप्राण

ज़ ··· ऊष्म/संघर्षी, वर्त्स्य, सघोष, अल्पप्राण

फ़ ··· ऊष्म/संघर्षी, दंतोष्ठ्य, अघोष, महाप्राण

➢ अयोगवाह : अनुस्वार (ं), विसर्ग (:) अनुस्वार को 'शीर्ष बिन्दु वाला वर्ण' एवं विसर्ग को 'पार्श्व बिन्दु वाला वर्ण' भी कहते हैं।

परंपरानुसार अनुस्वार (ं) और विसर्ग (:) को स्वरों के साथ रखा जाता है किन्तु ये स्वर ध्वनियाँ नहीं हैं क्योंकि इनका उच्चारण व्यंजनों के उच्चारण की तरह स्वर की सहायता से होता है। ये व्यंजन भी नहीं हैं क्योंकि इनकी गणना स्वरों के साथ होती है और उन्हीं की तरह लिखने में इनके लिए मात्राओं [क्रमशः (ं), (:)] का प्रयोग किया जाता है। *(दूसरे शब्दों में, अनुस्वार और विसर्ग लेखन की दृष्टि से स्वर एवं उच्चारण की दृष्टि से व्यंजन होते हैं।)* चूँकि इन दोनों का जातीय योग न तो स्वर के साथ और न ही व्यंजन के साथ होता है इसलिए इन्हें 'अयोग' कहा जाता है, फिर भी ये अर्थ वहन करते हैं, इसलिए 'अयोगवाह' *(अयोग + वाह)* कहलाते हैं।

शब्दकोश देखने का सही तरीका

(शब्दकोश में वर्णों/अक्षरों के आने का क्रम)

➢ शब्दकोश में पहले स्वर बाद में व्यंजन का क्रम आता है।

➢ शब्दकोश में अनुस्वार (ं) और विसर्ग (:) का स्वतंत्र वर्ण के रूप में प्रयोग नहीं होता, लेकिन संयुक्त वर्णों के रूप में इन्हें अ आ ..... ओ औ से पहले स्थान मिलता है, जैसे—कं कः क का कि की कु कू के कै को कौ।

➢ शब्दकोश में पूर्ण वर्ण के बाद संयुक्ताक्षर का क्रम आता है, जैसे—कं कः क का ..... को कौ के बाद क्य, क्र, क्ल, क्व, क्ष।

➢ शब्दकोश में क्ष त्र ज्ञ का कोई पृथक शब्द-संग्रह नहीं मिलता क्योंकि ये संयुक्ताक्षर होते हैं। अतएव इनसे संबंधित शब्दों को ढूंढ़ने के लिए इन संयुक्ताक्षरों के पहले अक्षर या वर्ण वाले खाने में जाना होता है, जैसे—यदि हमें क्ष (क् + ष) से संबंधित शब्द का अर्थ ढूँढ़ना हो तो हमें क वाले खाने में जाना होगा; इसी तरह त्र (त् + र) के लिए त वाले खाने, ज्ञ (ज् + ञ) के लिए ज वाले खाने तथा श्र (श् + र) के लिए श वाले खाने में जाना पड़ेगा।

➢ ङ, ञ, ण, ड़, ढ़ से कोई शब्द शुरू नहीं होता इसलिए ये स्वतंत्र रूप से शब्दकोश में नहीं मिलते।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भाषा की सबसे छोटी इकाई है—
(a) शब्द (b) व्यंजन (c) स्वर (d) वर्ण

2. वर्णमाला कहते हैं—
(a) शब्द-समूह को (b) वर्णों के संकलन को
(c) शब्द गणना को (d) वर्णों के व्यवस्थित समूह को

3. निम्न में से कंठ्य ध्वनियाँ कौन-सी हैं?
(a) क, ख (b) य, र (c) च, ज (d) ट, ण
(रेलवे, 1997)

4. स्थान के आधार पर बताइए कि मूर्धन्य व्यंजन कौन-से हैं?
(a) ग, घ (b) ज, झ (c) ड, ढ (d) प, फ
(रेलवे, 1997)

5. निम्न में से 'अल्पप्राण' वर्ण कौन-से हैं?
(a) अ, आ (b) क, ग (c) थ, ध (d) फ, भ
(रेलवे, 1997)

6. निम्न में से 'नासिक्य' व्यंजन कौन-सा है?
(a) ष (b) ञ (c) ग (d) ज
(रेलवे, 1997)

7. 'ए', 'ऐ' वर्ण क्या कहलाते हैं?
(a) नासिक्य (b) मूर्धन्य
(c) ओष्ठ्य (d) कंठ-तालव्य *(रेलवे, 1997)*

8. हिन्दी वर्णमाला में 'अयोगवाह' वर्ण कौन-से हैं?
(a) अ, आ (b) इ, ई (c) उ, ऊ (d) अं, अः
(रेलवे, 1997, टी.जी.टी., 2014)

9. निम्न में बताइए कि किस शब्द में द्वित्व व्यंजन है?
(a) पुनः (b) इलाहाबाद (c) दिल्ली (d) उत्साह
(रेलवे, 1997)

10. 'श', 'ष', 'स', 'ह' कौन-से व्यंजन कहलाते हैं?
(a) प्रकंपी (b) स्पर्शी
(c) संघर्षी (d) स्पर्श-संघर्षी *(रेलवे, 1997)*

11. निम्नांकित में से बताइये कि नवीन विकसित ध्वनियाँ कौन-सी हैं?
(a) ख, ग़ (b) उ, ऊ (c) ऐ, औ (d) श, स
(रेलवे, 1997)

12. निम्न में से कौन-सा घोष वर्ण है?
(a) ख (b) च (c) म (d) ठ
(रेलवे, 1997)

13. कौन-सा अमानक वर्ण है?
(a) ख (b) ध (c) ॠ (d) भ
(बी० एड०, 1999)

14. 'क़', 'ग़', 'ज़', 'फ़' ध्वनियाँ किसकी हैं?
(a) संस्कृत की (b) अरबी-फारसी की
(c) अंग्रेजी की (d) दक्षिणी भाषाओं की
(बी० एड०, 2000)

15. हिन्दी में मूलतः वर्णों की संख्या कितनी है?
(a) 50 (b) 51 (c) 52 (d) 53
(बैंक परीक्षा, 2002)

16. 'क्ष' ध्वनि किसके अन्तर्गत आती है?
(a) मूल स्वर (b) घोष वर्ण
(c) संयुक्त वर्ण (d) तालव्य *(बैंक परीक्षा, 2002)*

17. हिन्दी शब्दकोश में 'क्ष' का क्रम किस वर्ण के बाद आता है?
(a) क (b) छ (c) त्र (d) ज्ञ
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

18. 'ज्ञ' वर्ण किन वर्णों के संयोग से बना है?
(a) ज + ञ (b) ज् + ञ (c) ज + ध (d) ज + ञ
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

19. अघोष वर्ण कौन-सा है?
(a) अ (b) ज (c) ह (d) स
(बैंक परीक्षा, 2002)

20. 'घ' का उच्चारण स्थान कौन-सा है?
(a) मूर्द्धा (b) कंठ (c) तालु (d) दंत
(बैंक परीक्षा, 2002)

21. इनमें संयुक्त व्यंजन कौन-सा है?
(a) ढ़ (b) ज्ञ (c) ङ (d) ड़
(बैंक परीक्षा, 2002)

22. निम्नलिखित में से कौन-सा वर्ण उच्चारण की दृष्टि से दंत्य नहीं है?
(a) त (b) न (c) द (d) ट
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

23. जिन शब्दों के अंत में 'अ' आता है, उन्हें क्या कहते हैं?
(a) अनुस्वार (b) अयोगवाह (c) अंतःस्थ (d) अकारांत
(बी० एड०, 2003)

24. 'क्ष' वर्ण किसके योग से बना है?
(a) क् + ष (b) क् + च (c) क् + छ (d) क् + श
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

25. हिन्दी वर्णमाला में स्वरों की कुल संख्या कितनी है?
(a) 10 (b) 11 (c) 12 (d) 13
(बी० एड०, 2004)

26. निम्नलिखित में कौन स्वर नहीं है?
(a) अ (b) उ (c) ए (d) ऋ
(बी० एड०, 2004)

27. निम्नलिखित में कौन ट वर्ग नहीं है?
(a) ठ (b) ढ (c) ण (d) घ
(बी० एड०, 2004)

28. हिन्दी वर्णमाला में व्यंजनों की संख्या है—
(a) 32 (b) 34 (c) 33 (d) 36
(बी० एड०, 2004)

9. निम्नलिखित में कौन-सा पश्च-स्वर है ?
(a) आ (b) इ (c) ज (d) ढ
(नेट/जे० आर० एफ०, 2005)

10. निम्नलिखित में से कौन अयोगवाह है ?
(a) विसर्ग (b) महाप्राण
(c) संयुक्त व्यंजन (d) अल्पप्राण
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

11. 'छ' ध्वनि का उच्चारण स्थान है—
(a) दन्त्य (b) ओष्ठ्य (c) तालव्य (d) वर्त्स्य
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. 2007)

12. निम्नलिखित में से कौन एक संयुक्त व्यंजन नहीं है ?
(a) क्ष (b) ष (c) त्र (d) ह्न
(उत्तर प्रदेश बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

13. तालव्य व्यंजन है—
(a) च, छ, ज, झ (b) ट, ठ, ड, ढ
(c) त, थ, द, ध (d) प, फ, ब, भ
(उत्तर प्रदेश बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

14. य, र, ल, व– किस वर्ग के व्यंजन हैं ?
(a) तालव्य (b) ऊष्म (c) अन्तःस्थ (d) ओष्ठ्य
(उत्तर प्रदेश बी.एड.प्रवेश परीक्षा, 2008)

15. अनुनासिक का संबंध होता है—
(a) केवल नाक से (b) केवल मुँह से
(c) नाक और मुँह दोनों से (d) इनमें से कोई नहीं
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

36. अनुनासिक व्यंजन कौन-से होते हैं ?
(a) वर्ग के प्रथमाक्षर (b) वर्ग के तृतीयाक्षर
(c) वर्ग के चतुर्थाक्षर (d) वर्ग के पंचमाक्षर
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 20

37. हिन्दी वर्णमाला में स्वरों की संख्या है—
(a) आठ (b) नौ (c) ग्यारह (d) चौदह
(उत्तराखंड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 20

38. कंठ्योष्ठ्य ध्वनि का उदाहरण है—
(a) और (b) ए (c) क (d) त
(नेट/जे आर एफ, 20

39. भाषा-निर्माण की इकाइयों का सही अनुक्रम है—
(a) शब्द, ध्वनि, वाक्य, पद (b) शब्द, वाक्य, ध्वनि, पद
(c) पद, वाक्य, ध्वनि, शब्द (d) ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य
(नेट/जे आर एफ, 20

40. निम्नांकित में से उच्चारण स्थान के आधार पर कंठ से लेकर मु
विवर में उच्चरित व्यंजन ध्वनियों का सही अनुक्रम है—
(a) कंठ्य, तालव्य, वर्त्स्य, दंत्य, ओष्ठ्य
(b) तालव्य, कंठ्य, ओष्ठ्य, दंत्य, वर्त्स्य
(c) दंत्य, ओष्ठ्य, कंठ्य, वर्त्स्य, तालव्य
(d) ओष्ठ्य, वर्त्स्य, तालव्य, कंठ्य, दंत्य
(नेट/जे आर आफ , 20

41. प्रयत्न के आधार पर 'ल' किस प्रकार की ध्वनि है ?
(a) पार्श्विक (b) उत्क्षिप्त (c) प्रकंपित (d) संघर्षहीन
(नेट/जे आर आफ , 20

उत्तरमाला

1. (d)	2. (d)	3. (a)	4. (c)	5. (b)	6. (b)	7. (d)	8. (d)	9. (c)	10. (c)	11. (a)	12. (c
13. (c)	14. (b)	15. (c)	16. (c)	17. (a)	18. (b)	19. (d)	20. (b)	21. (b)	22. (d)	23. (d)	24. (a
25. (d)	26. (d)	27. (d)	28. (c)	29. (a)	30. (a)	31. (c)	32. (b)	33. (a)	34. (c)	35 (c)	36 (d
37. (c)	38. (a)	39. (d)	40. (a)	41. (a)							

व्याख्यात्मक उत्तर

15. (c) हिन्दी में वर्णों की संख्या को लेकर विद्वानों में बहुत विवाद है। हिन्दी में वर्णों की संख्या किशोरी दास बाजपेयी के अनुसार 43, कामत प्रसाद गुरु के अनुसार 46, उदय नारायण तिवारी के अनुसार 51, धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार 53 (13 स्वर + 40 व्यंजन) है आदि।

★★★

वर्तनी
(Spelling)

03

➢ वर्तनी : लिखने की रीति को 'वर्तनी' या 'अक्षरी' कहते हैं। इसे 'हिज्जे' भी कहा जाता है।

➢ वर्तनी का सीधा संबंध उच्चारण *(pronunciation)* से होता है। हिन्दी में जो बोला जाता है वही लिखा जाता है। यदि उच्चारण अशुद्ध होगा तो वर्तनी भी अशुद्ध होगी। प्रायः अपनी मातृभाषा या बोली के कारण तथा व्याकरण संबंधी ज्ञान की कमी के कारण उच्चारण में अशुद्धियाँ आ जाती हैं जिसके कारण वर्तनी में भी अशुद्धियाँ आ जाती हैं।

➢ प्रायः लोग जिन शब्दों के उच्चारण एवं वर्तनी में अशुद्धियाँ करते हैं, उन शब्दों के अशुद्ध और शुद्ध रूप आगे तालिका में दिये जा रहे हैं—

स्वर संबंधी अशुद्धियाँ

'अ' 'आ' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अकाश	आकाश	तत्कालिक	तात्कालिक
अगामी	आगामी	नदान	नादान
अजमाइश	आजमाइश	निरान्न	निरन्न
अन्त्यक्षरी	अन्त्याक्षरी	नराज	नाराज
अर्यावर्त	आर्यावर्त	प्रमाणिक	प्रामाणिक
अलपीन	आलपीन	बदाम	बादाम्
अवाज	आवाज	ब्रह्मण	ब्राह्मण
अविष्कार	आविष्कार	भगीरथी	भागीरथी
अशीर्वाद	आशीर्वाद	व्यवसायिक	व्यावसायिक
अहार	आहार	सप्ताहिक	साप्ताहिक
अनाधिकार	अनधिकार	संसारिक	सांसारिक
आजकाल	आजकल	दुरावस्था	दुरवस्था
आधीन	अधीन	वारात	बरात
ढाकना	ढकना	हस्ताक्षेप	हस्तक्षेप
चहरदीवारी	चहारदीवारी	हाथिनी	हथिनी

'इ' 'ई' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
आशिर्वाद	आशीर्वाद	पुत्रि	पुत्री
इट	ईद	प्रतिक	प्रतीक
इश्वर	ईश्वर	प्राणि	प्राणी
इसाई	ईसाई	बिमारी	बीमारी
गोदावरि	गोदावरी	भागिरथी	भागीरथी
जिरा	जीरा	महाबलि	महाबली
तिर्थ	तीर्थ	महिना	महीना
तुलसिदास	तुलसीदास	यानि	यानी
दिपिका	दीपिका	रितिकाल	रीतिकाल
दिवाली	दीवाली	लिजिये	लीजिये
निरिक्षण	निरीक्षण	शताब्दि	शताब्दी
निरसता	नीरसता	शिर्षक	शीर्षक
पत्नि	पत्नी	समिक्षा	समीक्षा
पिढ़ी	पीढ़ी	सूचिपत्र	सूचीपत्र
पिताम्बर	पीताम्बर	हिंग	हींग
अतिथी	अतिथि	परीचय	परिचय
अभीनेता	अभिनेता	परिणती	परिणति
अभीमान	अभिमान	परीवार	परिवार
आखीर	आखिर	पाकीस्तान	पाकिस्तान
ईंजन	इंजन	पुष्टी	पुष्टि
कालीदास	कालिदास	पूर्ती	पूर्ति
किर्ति	कीर्ति	बलीदान	बलिदान
कुटीया	कुटिया	बाल्मीकी	बाल्मीकि
कोटी	कोटि	मती	मति
क्षत्रीय	क्षत्रिय	श्रीमति	श्रीमती
गीनना	गिनना	शनी	शनि
नीती	नीति	हानी	हानि
बहुव्रीही	बहुव्रीहि	हीजड़ा	हिजड़ा

'उ' 'ऊ' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अनुदित	अनूदित	नुपुर	नूपुर
उधम	ऊधम	नेहरु	नेहरू
उष्मा	ऊष्मा	रुई	रूई
जरुरत	जरूरत	वधु	वधू
तुफान	तूफान	सिन्दुर	सिन्दूर
दुसरा	दूसरा	सुई	सूई
अरूण	अरुण	रूपया	रुपया
ऊत्थान	उत्थान	साधू	साधु
गुरू	गुरु	दूबारा	दुबारा
धूआँ	धुआँ	दूकान	दुकान

'ऋ' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अनुग्रहीत	अनुगृहीत	रिगवेद	ऋग्वेद
उरिण	उऋण	रिणी	ऋणी
त्रितीय	तृतीय	रितु	ऋतु
तृकोण	त्रिकोण	रिधि	ऋद्धि
पैत्रिक	पैतृक	रिषि	ऋषि
बृटिश	ब्रिटिश	संग्रहीत	संगृहीत

'ए' 'ऐ' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
एक्ट	ऐक्ट	वेश्य	वैश्य
केंटीन	कैंटीन	मटमेले	मटमैले
केबिनेट	कैबिनेट	मेनेजर	मैनेजर
जेसा	जैसा	मेसूर	मैसूर
टेक्स	टैक्स	सेनिक	सैनिक
शनेःशनेः	शनैः शनैः	देहिक	दैहिक
पेसा	पैसा	भाषाऐं	भाषाएँ
चाहिऐ	चाहिए	योग्यताऐं	योग्यताएं
फैल	फेल	वैश्या	वेश्या
फैंकना	फेंकना	सैना	सेना

'ओ' औ' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अक्षोहिणी	अक्षौहिणी	गोरव	गौरव
अलोकिक	अलौकिक	नोकरी	नौकरी

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
ओधोगिक	औद्योगिक	पारलोकिक	पारलौकिक
ओरत	औरत	पोरुष	पौरुष
गोतम	गौतम	प्रोढ़	प्रौढ़
झोपड़ी	झोंपड़ी	न्योछावर	न्यौछावर
त्यौहार	त्योहार	लौहार	लोहार
दौना	दोना		

अनुस्वार (ं), चन्द्र बिन्दु (ँ) संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
आंख	आँख	दांत	दाँत
उंगली	उँगली	पांख	पाँख
ऊंघना	ऊँघना	बांझ	बाँझ
ऊंचा	ऊँचा	बांध	बाँध
कांपना	काँपना	बांह	बाँह
गूंगा	गूँगा	भूकना	भूँकना
गूंज	गूँज	महंगा	महँगा
छांह	छाँह	मुह	मुँह
झांसी	झाँसी	सांझ	साँझ
टांगना	टाँगना	हँस	हंस

विसर्ग (:) संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
दुश्शील	दु:शील	प्रातकाल	प्रात:काल
दुख	दु:ख	प्राय	प्राय:
निशुल्क	नि:शुल्क	मनस्थिति	मन:स्थिति
निस्वार्थ	नि:स्वार्थ	शनै शनै	शनै: शनै:

व्यंजन संबंधी अशुद्धियाँ

'छ' 'क्ष' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
आकांछा	आकांक्षा	छोभ	क्षोभ
छत्रिय	क्षत्रिय	नछत्र	नक्षत्र
छन	क्षण	प्रछेपास्त्र	प्रक्षेपास्त्र
छमा	क्षमा	रच्छा	रक्षा
छय	क्षय	लछमन	लक्ष्मण
छीण	क्षीण	संछेप	संक्षेप

'ज' 'य' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अजोधा	अयोध्या	जाचना	याचना
जदि	यदि	जुवती	युवती
जम	यम	जुवा	युवा
जमुना	यमुना	जोग	योग

'ट' 'ठ' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
कनिष्ट	कनिष्ठ	निष्टा	निष्ठा
कुष्ट	कुष्ठ	पृष्ट	पृष्ठ
गरिष्ट	गरिष्ठ	वरिष्ट	वरिष्ठ
गोष्टी	गोष्ठी	श्रेष्ट	श्रेष्ठ
घनिष्ट	घनिष्ठ	अंत्येष्ठि	अंत्येष्टि
मिष्ठान्न	मिष्टान्न	अभीष्ठ	अभीष्ट
मुठ्ठी	मुट्ठी	इकट्टा	इकट्ठा
यथेष्ठ	यथेष्ट	इष्ठ	इष्ट
विशिष्ठ	विशिष्ट	चेष्ठा	चेष्टा
संतुष्ठ	संतुष्ट	परिशिष्ठ	परिशिष्ट
षष्ठि	षष्टि	प्रविष्ठ	प्रविष्ट

'ड' 'ड़' 'ढ' 'ढ़' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
कन्नड	कन्नड़	पडता	पड़ता
क्रीडा	क्रीड़ा	पेड	पेड़
घोडा	घोड़ा	लडका	लड़का
झाडू	झाड़ू	रोड़	रोड
लुड़कना	लुढ़कना	षड्‌यत्र	षड्‌यंत्र
सीड़ियां	सीढ़ियां	सोडा	सोड़ा
पढता	पढ़ता	बूढा	बूढ़ा
ढ़कना	ढकना	मेढ़क	मेढक
ढ़ेर	ढेर		

'ण' 'न' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अर्चणा	अर्चना	फागुण	फागुन
खाणा	खाना	रसायण	रसायन
प्रार्थणा	प्रार्थना	राणी	रानी
कल्यान	कल्याण	प्रनाली	प्रणाली
कारन	कारण	प्रमान	प्रमाण
कृष्न	कृष्ण	प्रान	प्राण
गनेश	गणेश	मरन	मरण
गुन	गुण	रनभूमि	रणभूमि
चरन	चरण	रमन	रमण
नारायन	नारायण	रामायन	रामायण
परिनाम	परिणाम	विस्मरन	विस्मरण
पुन्य	पुण्य	वीना	वीणा
प्रनाम	प्रणाम	श्रवन	श्रवण

'ब' 'व' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
नबाब	नवाब	बिकट	विकट
पूर्ब	पूर्व	बिख्यात	विख्यात
ब्यथा	व्यथा	बिद्वान	विद्वान
ब्यय	व्यय	बिधि	विधि
ब्यवस्था	व्यवस्था	बिभीषण	विभीषण
ब्याकरण	व्याकरण	बिमल	विमल
ब्यापार	व्यापार	बिष	विष
बन	वन	बीबी	बीवी
बनस्पति	वनस्पति	बीरेन्द्र	वीरेन्द्र
ब्रत	व्रत	बृष्टि	वृष्टि
बातावरण	वातावरण	बैदेही	वैदेही
कामयावी	कामयाबी	धोवी	धोबी
दबदवा	दबदबा	बल्ब	बल्ब

पंचमाक्षर ('ङ' 'ञ' 'ण' 'न' 'म') संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अन्ग	अंग	झन्डा	झण्डा
अनगिन्त	अनगिनत	दन्ड	दण्ड
कन्ठ	कण्ठ	न्यून्ता	न्यूनता
कुन्डली	कुण्डली	पन्खा	पंखा
घन्टे	घण्टे	पन्क	पंक
चन्चल	चंचल	पन्डित	पंडित

'य' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अंतर्ध्यान	अंतर्धान	गृहस्थ्य	गृहस्थ
केन्द्रीयकरण	केन्द्रीकरण	मूलतय:	मूलत:
कृत्यकृत्य	कृतकृत्य	सदृश्य	सदृश
अंताक्षरी	अंत्याक्षरी	स्वास्थ	स्वास्थ्य
कवित्री	कवयित्री	सामर्थ	सामर्थ्य
मानवर	मान्यवर		

'र' 'ड़' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
उमरना	उमड़ना	पापर	पापड़
करोर	करोड़	पीरा	पीड़ा
कराही	कड़ाही	पेरा	पेड़ा
किवार	किवाड़	भेर	भेड़
कीचर	कीचड़	भेरिया	भेड़िया
घबड़ाना	घबराना	पिजड़ा	पिंजरा
टोकड़ी	टोकरी	करमनासा	कर्मनाशा
बृज	ब्रज	परयाग	प्रयाग
मात्रिभूमि	मातृभूमि	प्रन्तु	परन्तु
मिरच	मिर्च	परत्येक	प्रत्येक
रामचन्दर	रामचंद्र		

'श' 'ष' 'स' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
उत्कर्श	उत्कर्ष	मनुश्य	मनुष्य
दुश्कर्म	दुष्कर्म	राश्ट्रीय	राष्ट्रीय
निश्काम	निष्काम	विशाद	विषाद
निश्फल	निष्फल	विशेश	विशेष
परिभाशा	परिभाषा	शिश्टाचार	शिष्टाचार
पुश्प	पुष्प	शीर्शक	शीर्षक
बहिश्कार	बहिष्कार	संतोश	संतोष
भ्रश्ट	भ्रष्ट	हर्श	हर्ष
अमावश्या	अमावस्या	विकाश	विकास
कैलाश	कैलास	श्वशुर	श्वसुर
कोशी	कोसी	शंकट	संकट
तपश्या	तपस्या	शारांश	सारांश
नमश्कार	नमस्कार	शुनसान	सुनसान
पुरश्कार	पुरस्कार	शुशोभित	सुशोभित
प्रशन्न	प्रसन्न	समश्या	समस्या
प्रशाद	प्रसाद	आदर्ष	आदर्श
वेषभूषा	वेशभूषा	दृष्य	दृश्य
कष्टम	कस्टम	रजिष्टर	रजिस्टर
पोष्टमास्टर	पोस्टमास्टर	अवकास	अवकाश
प्रसंसा	प्रशंसा	असोक	अशोक
विवस	विवश	आसा	आशा
विस्वास	विश्वास	कलस	कलश
स्रवण	श्रवण	कुसलता	कुशलता
संकर	शंकर	कौसल्या	कौशल्या
संसोधित	संशोधित	जमसेदपुर	जमशेदपुर
समसान	श्मशान	तास	ताश
साबास	शाबाश	दसमी	दशमी
सुर्पणखा	शूर्पणखा	देस	देश
सोचनीय	शोचनीय	नास	नाश
अभिसेक	अभिषेक	भीस्म	भीष्म
आविस्कार	आविष्कार	वास्प	वाष्प
दुस्कर	दुष्कर	विसम	विषम
निसाद	निषाद	सुसमा	सुषमा

प्रतियोगी परीक्षाओं में वर्तनी पर आधारित प्रश्न इस प्रकार पूछे जाते हैं—

प्रकार I (Type I) : एक ही शब्द की संभावित वर्तनियों में से शुद्ध वर्तनी का चयन

उदाहरण 1 : निम्नलिखित में से शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए—

(a) अष्ठ (b) अश्ट (c) अस्ट (d) अष्ट

उत्तर (d) : अष्ट

उदाहरण 2 : नाटक को दृश्य काव्य माना जाता है।

(a) द्रश्य (a) दृष्य (a) दृश्य (a) दृषय

उत्तर (c) : दृश्य

प्रकार II (Type II) : दिए गए विकल्पों में से शुद्ध वर्तनी वाले शब्द का चयन

उदाहरण : निम्नलिखित में से शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए—

(a) कीराया (b) कछप (c) किष्मत (d) कीर्तिमान

उत्तर (d) : कीर्तिमान *(क्योंकि दिए गए शब्दों में से केवल 'कीर्तिमान' ही वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध है; 'कीराया', 'कछप', 'किष्मत' अशुद्ध है जिसका शुद्ध रूप है 'किराया', 'कश्यप', किस्मत।)*

प्रकार III (Type III) : दिए गए विकल्पों में से अशुद्ध वर्तनी वाले शब्द का चयन

उदाहरण : निम्नलिखित में से अशुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए—

(a) स्वयंभू (b) स्म्रति (c) स्वच्छंद (d) स्वाति

उत्तर (b) : स्म्रति {शुद्ध रूप 'स्मृति'}

वस्तुनिष्ट प्रश्न

1. निम्नलिखित में से शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए—
   (a) उन्नती (b) उनति (c) उनती (d) उन्नति
2. यह रास्ता द्रुगम है, सावधानी से चलें।
   (a) दुग्रम (b) दुरगम (c) दुर्गम (d) र्दुगम
3. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए—
   (a) अन्वेषण (b) अनवेषण (c) अन्वेशण (d) अन्वेश्ण *(रेलवे, 1997)*
4. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए—
   (a) जानह्वीं (b) जाहनवी (c) जाह्नवी (d) जाहनुवी *(रेलवे, 1997)*
5. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए—
   (a) अधोपतन (b) आधिःपतन (c) अधःपतन (d) आधःपतन *(रेलवे, 1997)*
6. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए—
   (a) श्रष्टि (b) श्रृष्टि (c) सृष्टि (d) शृष्टि *(बी०एड०, 1998)*
7. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए—
   (a) क्रप (b) क्रर्पा (c) क्रिपा (d) कृपा *(बी०एड०, 1999)*
8. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए—
   (a) तहसीलदारी (b) तहिसीलदारी (c) तहशीलदारी (d) तहीसलदारी *(रेलवे, 2000)*
9. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए—
   (a) अपकर्ति (b) अपकीर्ति (c) अपकीर्ती (d) अपकिर्ति *(रेलवे, 2000)*
10. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए—
    (a) छः (b) छह (c) छह् (d) छै *(बी० एड०, 2000, 2008)*
11. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए—
    (a) तरुण (b) तरूण (c) तरुन (d) तरून *(रेलवे, 2000)*

12. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए—
(a) कुमुदनी (b) कुमुदुनी (c) कुमुदिनी (d) कुमदुनी
(बी० एड०, 2000)

13. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए—
(a) ब्रतन (b) वरतन (c) बर्तन (d) बरतन
(रेलवे, 2000

14. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए—
(a) प्रतिष्टा (b) प्रतिष्ठा (c) परतिष्टा (d) परतिष्ठा
(रेलवे, 2000)

15. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए—
(a) मृत्यूंजय (b) म्रित्यन्जय (c) मृत्युंजय (d) मृत्युन्जय
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

16. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए—
(a) अस्प्रस्यता (b) अस्पृश्यता (c) अस्प्रश्यता (d) अस्पृष्यता
(उ०प्र०निर्वाचन आयोग परीक्षा, 2001)

17. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए—
(a) सताब्दी (b) सताब्दि (c) शताब्दि (d) शताब्दी
(रेलवे, 2001)

18. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए—
(a) त्रिदोश (b) तिरदोष (c) त्रिदोष (d) तृदोष
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

19. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए—
(a) उद्योगीकरण (b) औद्योगीकरण
(c) औद्योगिकरण (d) ओद्योगीकरण
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

20. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए—
(a) परिणति (b) परणति (c) परणिति (d) परीणीत
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

21. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए —
(a) स्थायि (b) स्थायी (c) स्थाई (d) स्थाइ
(बी०पी०एस०सी०,2002)

22. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए —
(a) जल्दि (b) जल्दी (c) जलदी (d) ज्लदी
(बी०पी०एस०सी०,2002)

23. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए —
(a) प्राक्कथन (b) प्रक्कथन (c) प्राकथन (d) प्रकाथन
(बी०पी०एस०सी०,2002)

24. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए —
(a) क्षेत्र (b) छेत्र (c) क्षत्र (d) श्वेत्र
(बी०पी०एस०सी०,2002)

25. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए —
(a) रसायनिक (b) रासायनिक (c) रासयनीक (d) रसयनिक
(बी०पी०एस०सी०,2002)

26. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए —
(a) प्रतिवादी (b) प्रतीवादि (c) प्रतीवादी (d) प्रतिवादि
(बी०पी०एस०सी०,2002)

27. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए —
(a) दुअन्द (b) द्वन्द (c) द्वन्द्व (d) द्वंद
(बी०पी०एस०सी०, 2002)

28. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए —
(a) उतसव (b) उत्सव (c) उस्तव (d) ऊत्सव
(बी०पी०एस०सी०,2002)

29. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए —
(a) निर्देशन (b) निरदर्शन (c) निंदशन (d) निदर्शन
(बी०पी०एस०सी०,2002)

30. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए —
(a) जेष्ठ (b) ज्येस्ठ (c) जेठ (d) ज्येष्ठ
(बी०एड०, 2003)

31. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए —
(a) अन्तर्ध्यान (b) अन्तर्धान
(c) अन्तरध्यान (d) अन्त ध्यान (बी०एड०, 2003)

32. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए —
(a) अधम्र (b) अध्रम (c) अधर्म (d) अधृम
(बी०एड०, 2003)

33. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए —
(a) अनुकृम (b) अनुक्रम (c) अनुकर्म (d) अनुकर्ड
(बी०एड०, 2004)

34. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए —
(a) रिषि (b) ऋषि (c) ऋिषी (d) ऋशि
(बी०एड०, 2004)

35. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए —
(a) दीर्घायु (b) दीरघायु (c) दीघायु (d) दीर्धायु
(बी०एड०, 2004)

36. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए —
(a) श्रृंगार (b) शृंगार (c) सिंगार (d) शिगार
(बी०एड०, 2004, 2007)

37. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए —
(a) अध्येता (b) अधियेता (c) अध्यात (d) अध्ययेता
(बी०एड०, 2004)

38. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए —
(a) कवित्री (b) कवियत्री (c) कवयित्री (d) कवियित्री
(बी०एड०, 2004, 2007)

39. शुद्ध वर्तनी का चयन कीजिए —
(a) नछत्र (b) नक्षत्र (c) नच्छत्र (d) नक्षत्तर
(बी०एड०, 2004)

40. सही वर्तनी वाले शब्द चुनें —
(a) शारीरिक (b) शारीरीक (c) शरीरिक (d) सारीरिक
(रेलवे, 2005

41. निम्नलिखित में कौन-सा शब्द शुद्ध है ?
(a) अधिशासी (b) अधिशाषी
(c) अधिसाशी (d) अधिषाशी
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006

42. वर्तनी की दृष्टि से कौन-सा शब्द सही है ?
(a) ज्योतसना (b) ज्योत्सना
(c) ज्योतिसना (d) जोत्सना
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006, बी०एड०, 2006

43. वर्तनी की दृष्टि से कौन-सा शब्द सही है ?
(a) संन्यासी (b) सन्यासी (c) सनियासी (d) सनयासी
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006

44. व्यवहारिक रूप से आपकी बात ठीक हो सकती है।
(a) वैवाहरिक (b) व्यावहारिक
(c) व्यवाहारिक (d) वैवहारिक

45. उसका कथन अतिश्योक्ति मात्र था।
(a) अतिशयुक्ति (b) अतीश्योक्ति
(c) अतीश्योक्ती (d) अतिशयोक्ति

46. चातक सुवाति की बूँद का प्यासा होता है।
(a) सवाति (b) सुवाति (c) स्वाति (d) स्वाती
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 1996)

47. साहित्य और समाज का अन्यान्याश्रित संबंध है।
(a) अन्यन्याश्रित (b) अन्योन्याश्रित
(c) अन्यान्याश्रृत (d) अन्यान्याश्रीत
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 1996)

48. रहस्य, रोमांच और वैचित्र्य का समन्वय देवकी नंदन खत्री के उपन्यासों का विशिष्टय है।
(a) वैशिष्टय (b) वैशिश्ट्य (c) वैशिषट्य (d) वैशिश्टय
(असिस्टेंट ग्रेड, 1996)

49. सेनापति एक सहस्त्र सैनिकों के साथ युद्ध क्षेत्र मे पहुँचा।
(a) सहस्त्र (b) सहस्र (c) सहस्र (d) सहास्त्र
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 1996)

50. परमात्मा ही समग्र ब्रह्माण्ड का रचयीता है।
(a) रचयिता (b) रचियता (c) राचियता (d) रचयीता
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 1996)

51. उप्रयुक्त पंक्तियाँ दिनकर की कविता से ली गई हैं।
(a) उपरयुक्त (b) उपरोक्त (c) उपर्युक्त (d) ऊपर्युक्त
(असिस्टेंट ग्रेड, 1996)

52. अपराह्ण के बाद सूर्य अस्ताचलगामी होने लगता है।
(a) अप्रहाण (b) अपरान्ह (c) अप्राह्न (d) अपराह्न
(असिस्टेंट ग्रेड, 1996)

53. मनुष्य को परामुखापेक्षी नहीं बनना चाहिए।
(a) पारमुखपेक्षी (b) परामुखपेक्षी
(c) परमुखापेक्षी (d) परमुखपेक्षी
(असिस्टेंट ग्रेड, 1996)

54. जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना व्यक्त की जाती है, वहाँ उत्प्रेछा अलंकार होता है।
(a) उत्वप्रेक्षा (b) उत्पृच्छा (c) उत्प्रेक्षा (d) उतप्रेक्षा
(लेखाकार परीक्षा, 1997)

55. बुढ़ापा दोर्बल्य का सूचक है।
(a) दोंरबलय (b) दौरबलय (c) दौर्बल्य (d) दोंबल्य
(लेखाकार परीक्षा, 1997)

56. तानसेन महान संगितज्ञ था।
(a) संगीतज्ञ्य (b) संगीतज्ञ (c) संगीतग्य (d) संगीतय
(लेखाकार परीक्षा, 1997)

57. बच्चे को आगे पढने के लिए वजिफा दिया जाता है।
(a) वजिफा (b) वज़िफ़ा (c) वजीफ़ा (d) बजीफ़ा
(लेखाकार परीक्षा, 1997)

58. प्रत्येक कथन का अपना एक सनदर्भ होता है।
(a) सनद्रर्भ (b) सन्दर्भ (c) सदंर्भ (d) सन्द्रभ
(लेखाकार परीक्षा, 1997)

59. आधुनिक हिन्दी गद्य का प्रार्दूभाव भारतेन्दु से ही होता है।
(a) प्रादुर्भाव (b) प्रार्दुर्भाव
(c) प्राद्रुभाव (d) परादुरभाव *(रेलवे, 1998)*

60. हिमालय की उतुंग चोटियाँ हमें बुलाती हैं।
(a) ऊतुंग (b) उत्वंग (c) उत्तुंग (d) ऊतुङ्ग
(रेलवे, 1998)

61. वैज्ञानिक अनुषंधान धार्मिक ग्रंथों की शिक्षा के प्रतिकूल हैं।
(a) अनुशंधान (b) अनूसन्धान
(c) अनुशांधान (d) अनुसन्धान *(रेलवे, 1998)*

62. वे हिन्दुस्तान एकेडमी के वार्षिक आधिवेसन में भाग लेने के लिए लखनऊ आए थे।
(a) अधीवेशन (b) अधिवेषन
(c) अधिवेशन (d) अधिवेश्न *(रेलवे, 1998)*

63. प्रधानमंत्री ने मन्त्रिमन्डल की बैठक की अध्यक्षता की।
(a) मंत्रीमण्डल (b) मन्त्रीमण्डल
(c) मन्त्रिमण्डल (d) मन्त्रिमन्डल
(एस०एस०सी०, 1999)

64. वह इन सब तथ्यों से अनिभिग्य है।
(a) अनिभिज्ञ (b) अनभिग्य (c) अनभीज्ञ (d) अनभिज्ञ
(एस०एस०सी०, 1999)

65. स्वातन्त्रय संग्राम में हजारों वीरों ने अपने प्राणों की आहुति दी।
(a) स्वतन्त्र्य (b) स्वातन्त्र्य
(c) स्वातान्त्रय (d) स्वातनन्त्र्य
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

66. भारतीय समाज का पुनरूत्थान शिक्षा के विकास से ही सम्भव है।
(a) पुनुरुत्थान (b) पुनरुत्थान
(c) पुनरोत्थान (d) पुनरोथ्थान
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

67. उनके स्नेह की अर्न्तस्तलीय सरिता मुखमुद्रा से स्पष्ट झाँक रही थी।
(a) अन्तस्तलीय (b) अन्तष्तलीय
(c) अन्तश्तलीय (d) अन्तष्तलिय
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

68. पश्चिमी देशों में निर्यात के लिए प्रतीद्वन्दिता बढ़ती जा रही है।
(a) प्रतिद्वन्दीता (b) प्रतिद्वन्द्विता
(c) प्रतिद्वन्द्वीता (d) प्रतिद्वन्दिता
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

69. नायिका उत्ग्रीव रहकर दिनभर नायक की प्रतीक्षा करती रही।
(a) उत्ग्रीव (b) उद्ग्रीव (c) उद्गीर्व (d) ऊद्ग्रीव
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

70. युधिस्टिर सबसे बड़े पाण्डव थे।
(a) युधष्ठिर (b) युधिष्ठिर
(c) युधिश्ठिर (d) युधिस्थिर
(एस०एस०सी०, 1999)

71. अनुशासन के अभाव में विद्यार्थियों में उच्शृंखलता आती है।
(a) उच्छृंखलता (b) उच्चशृंखलता
(c) उच्श्रंखलता (d) उत्शृंखलता
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

72. सभी देशवासियों को देश की समस्याओं के समाधान के लिए स्वयमेव सनन्द्ध हो जाना चाहिए।
(a) सन्नद्ध (b) सन्नध (c) सनद्ध (d) सनद्ध
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

73. आजकल आयुवैदिक औषाधियों की विश्वसनीयता बढ़ रही है।
(a) आयुवेदिक (b) आयुर्वेदिक
(c) आयुर्वैदिक (d) आयुर्वैदीक
(एस०एस०सी०, 1999)

74. कृष्ण-भक्ति काव्य में ऐसा बहुत कुछ है जो नित्य और निमित्तिक साम्प्रदायिक कामों से सम्बन्धित है।
(a) निमित्तिक (b) नैमित्तिक
(c) नेमित्तिक (d) निमीतिक
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

75. दिन-ब-दिन रसायनों के आप्रत्याशीत प्रभाव सामने आ रहे हैं।
(a) आप्रात्याशीत (b) आप्रत्याशित
(c) अप्रत्याशित (d) अप्रत्याशीत
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

76. उपनिषदों को गीता का स्त्रोत कहा जाता है।
(a) श्रुत (b) स्त्रुत (c) श्रोत (d) स्रोत
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

77. पति-पत्नी के जोड़े को दमपति कहते हैं।
(a) द्मपति (b) दम्पती (c) दम्पत्ती (d) दम्पति
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

78. विक्रमी संवत ईसवी सन् से 57 वर्ष आगे रहता है।
(a) संवत् (b) संवत (c) सम्वत (d) समवत्
(एस०एस०सी०, 1999)

79. अत्याध्कि व्यस्तता से जीवन में नीरसता आ जाती है।
(a) अत्याधीक (b) अत्यधिक (c) अतयाधिक (d) अत्यधीक
(एस०एस०सी०, 2000)

80. अंग-प्रत्यारोपण के क्षेत्र में भारतीय शल्य-चिकित्सिक पर्याप्त सफल रहे हैं।
(a) चिकितसक (b) चिक्तसिक
(c) चिकत्सिय (d) चिकित्सक
(एस०एस०सी०, 2000)

81. संस्कृत संश्लिश्ट भाषा है।
(a) संश्लिष्ट (b) संश्लिस्ट
(c) संस्लिष्ट (d) संष्लिष्ठ
(एस०एस०सी०, 2000)

82. मन्दाकिनी की जलधारा अजस्सर रूप से प्रवाहित हो रही थी।
(a) अजस्सर (b) अजस्र (c) अजस्त्र (d) अजसर
(एस०एस०सी०, 2000)

83. सभी भारतीय गीता के माहातम्य से परिचित हैं।
(a) माहात्म्य (b) महात्म्य
(c) माहात्मय (d) माहात्तम्य
(एस०एस०सी०, 2000)

84. शारीरिक आरोज्ञ के लिए प्रातः एवं संध्याकालीन भ्रमण अत्यन्न लाभप्रद माना गया है।
(a) आरोगय (b) अरोग्य (c) आरोग (d) आरोग्य
(एस०एस०सी०, 2000)

85. मदर टेरेसा का जीवन रोगियों के सेवा-सूश्रूषा के लिए समर्पित था।
(a) शूश्रूषा (b) सुश्रूषा (c) शूश्रुषा (d) शुश्रूषा
(एस०एस०सी०, 2000)

86. ग्यान का भण्डार अथाह होता है।
(a) गियान (b) ज्ञान (c) गिआन (d) ज्यान
(रेलवे, 2001)

87. विज्ञान की देन है विश्लेषण, निर्व्यक्तिकता तथा तटसता।
(a) निव्यर्क्तिकता (b) निर्वैयक्तिकता
(c) निर्वियक्तिकता (d) निर्वेयक्तिकता
(बी० पी० एस० सी०, 2002)

88. रोगी में उत्कट जिजीविशा थी।
(a) जीजीविषा (b) जिजीविषा
(c) जिजिविषा (d) जिजिविशा
(बी० एड०, 2003, 2008)

89. मैं तुम्हारे उज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।
(a) उजवल (b) उज्ज्वल
(c) ऊज्जवल (d) उजवल
(बी० एड० 2004, 2008)

90. प्रकारान्त्र से मेरे कथन का अभिप्राय आपसे मिलता है।
(a) प्राकारान्तर (b) प्रकारान्तर
(c) प्राकारनतर (d) प्राकारान्त्र
(अनुवादक परीक्षा, 2005)

91. मनुष्य जिसको सामान्य समझता है, उसकी सेवा में उसे आनंद प्राप्त करता है।
(a) सामान्य (b) सम्मान्य (c) समान्य (d) साम्मान्य
(अनुवादक परीक्षा, 2005)

92. जहाँ आत्मीयता हो, वहाँ विचार-विनिमय में उपचारिकता नहीं होती।
(a) औपचारिकता (b) उपचारीकता
(c) उपचारिकता (d) औपचारीकता
(अनुवादक परीक्षा, 2005)

93. दिन-रात अध्ययून करके भी वह प्रथम श्रेणी प्राप्त न कर सका।
(a) आध्यन (b) अध्ययन (c) अध्ध्यन (d) अद्धयन
(अनुवादक परीक्षा, 2005)

94. दिनकर राष्ट्रीय भावधारा के ओजस्वी कवियों में अगरगन्य हैं।
(a) अग्रगन्य (b) अग्रगण्य (c) अगर्गन्य (d) अर्गगन्य
(अनुवादक परीक्षा, 2005)

95. देश-सेवा के मार्ग पर चलते हुए उन्होंने व्यक्तिक कष्टों की बिल्कुल परवाह नहीं की।
(a) वैयक्तिक (b) वैयक्तीक
(c) वैयकत्तीक (d) व्यक्तीक *(रेलवे, 2006)*

96. दिए गए शब्दों में शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है—
(a) अर्न्तगन (b) अतिआवश्यक
(c) क्रियान्वायन (d) अतिरंजित

97. दिए गए शब्दों में शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है—
(a) ताम्र (b) उचारण (c) इतयादि (d) मुहँ

98. दिए गए शब्दों में शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है—
(a) सर्वोतम (b) संसारिक (c) स्रोत (d) कीर्ती

99. दिए गए शब्दों में अशुद्ध वर्तनी वाला शब्द है—
(a) बहुत (b) प्रणालि (c) बल्कि (d) उपयोग

100. दिए गए शब्दों में अशुद्ध वर्तनी वाला शब्द है—
(a) उभ-चुभ (b) उन्नति (c) उँचाई (d) उभय

101. सही वर्तनी का चयन कीजिए—
(a) परविक्षा (b) परीक्षा (c) पिरिक्षा (d) पृरिक्षा
(हरियाणा बी.एड.प्रवेश परीक्षा, 20)

102. शुद्ध शब्द क्या है?
(a) संर्पूण (b) संपूर्ण (c) सपूर्ण (d) सर्म्पूण
(हरियाणा बी.एड.प्रवेश परीक्षा, 20)

103. सही वर्तनी छाँटिए—
(a) जयोत्सना (b) ज्योत्स्ना (c) जोत्सना (d) ज्योत्सन
(उत्तर प्रदेश बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2)

104. शुद्ध वर्तनी वाला शब्द कौन-सा है?
(a) सुसुप्ति (b) सुसप्ति (c) सुषप्ति (d) सुषुप्ति
(राजस्थान बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2)

105. शुद्ध शब्द कौन-सा है?
(a) सचिदानन्द (b) सच्चिदानन्द
(c) सच्छिदानन्द (d) सचितानन्द
(राजस्थान बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2)

उत्तरमाला

1. (d)	2. (c)	3. (a)	4. (c)	5. (c)	6. (c)	7. (d)	8. (a)	9. (b)	10. (a)	11. (a)	12. (c)
13. (d)	14. (b)	15. (c)	16. (b)	17. (d)	18. (c)	19. (b)	20. (a)	21. (b)	22. (b)	23. (a)	24. (a)
25. (b)	26. (a)	27. (c)	28. (b)	29. (b)	30. (d)	31. (b)	32. (c)	33. (b)	34. (b)	35. (a)	36. (b)
37. (a)	38. (c)	39. (b)	40. (a)	41. (a)	42. (b)	43. (a)	44. (b)	45. (d)	46. (c)	47. (b)	48. (a)
49. (c)	50. (a)	51. (c)	52. (d)	53. (c)	54. (c)	55. (c)	56. (b)	57. (c)	58. (b)	59. (a)	60. (c)
61. (d)	62. (c)	63. (c)	64. (d)	65. (b)	66. (b)	67. (a)	68. (b)	69. (b)	70. (b)	71. (a)	72. (a)
73. (b)	74. (b)	75. (c)	76. (d)	77. (b)	78. (a)	79. (b)	80. (d)	81. (a)	82. (b)	83. (a)	84. (d)
85. (d)	86. (b)	87. (b)	88. (b)	89. (b)	90. (b)	91. (b)	92. (a)	93. (b)	94. (b)	95. (a)	96. (d)
97. (a)	98. (c)	99. (b)	100. (c)	101. (b)	102. (b)	103. (b)	104. (d)	105. (b)			

★★★

04 संधि
(Joining)

➢ दो समीपवर्ती वर्णों के मेल से जो विकार *(परिवर्तन)* होता है, वह संधि कहलाता है। संधि में पहले शब्द के अंतिम वर्ण एवं दूसरे शब्द के आदि वर्ण का मेल होता है।

उदाहरण : देव + आलय = देवालय
जगत् + नाथ = जगन्नाथ
मनः + योग = मनोयोग

➢ संधि के नियमों द्वारा मिले वर्णों को फिर मूल अवस्था में ले आने को संधि-विच्छेद कहते हैं।

उदाहरण : परीक्षार्थी = परीक्षा + अर्थी
वागीश = वाक् + ईश
अंतःकरण = अंतः + करण

संधि के भेद

संधि के पहले वर्ण के आधार पर संधि के तीन भेद किये जाते हैं—स्वर-संधि, व्यंजन-संधि व विसर्ग-संधि। संधि का पहला वर्ण यदि स्वर वर्ण हो तो 'स्वर संधि' *(जैसे—नव + आगत = नवागत; संधि का पहला वर्ण 'व'—अ-स्वरवाला है)*, संधि का पहला वर्ण यदि व्यंजन वर्ण हो तो 'व्यंजन संधि' *(जैसे—वाक् + ईश = वागीश, संधि का पहला वर्ण 'क्' व्यंजन वर्ण है)* एवं संधि का पहला वर्ण यदि विसर्गयुक्त हो तो 'विसर्ग संधि' *(जैसे—मनः + रथ = मनोरथ, संधि का पहला वर्ण 'नः' विसर्गयुक्त है)* होता है।

स्वर-संधि

स्वर-संधि : स्वर के बाद स्वर अर्थात् दो स्वरों के मेल से जो विकार *(परिवर्तन)* होता है, स्वर-संधि कहलाता है; जैसे—

सूर्य + अस्त = सूर्यास्त महा + आत्मा = महात्मा

➢ स्वर संधि के निम्नलिखित पाँच भेद हैं—

1. दीर्घ-संधि, 2. गुण-संधि, 3. वृद्धि-संधि,
4. यण-संधि और 5. अयादि-संधि।

नोट : *आ ई ऊ को 'दीर्घ', अ ए ओ को 'गुण', ऐ औ को 'वृद्धि', य र ल व को 'यण्' एवं अय आय अव आव....को 'अयादि' (अय + आदि) कहते हैं।*

1. *दीर्घ-संधि* : ह्रस्व या दीर्घ 'अ', 'इ', 'उ', के पश्चात क्रमशः ह्रस्व या दीर्घ 'अ', 'इ', 'उ' स्वर आएँ तो दोनों को मिलाकर दीर्घ 'आ', 'ई', 'ऊ' हो जाते हैं; जैसे—

अ + अ = आ	धर्म	+	अर्थ	=	धर्मार्थ
	स्व	+	अर्थी	=	स्वार्थी
	देव	+	अर्चन	=	देवार्चन
	वीर	+	अंगना	=	वीरांगना
	मत	+	अनुसार	=	मतानुसार
अ + आ = आ	देव	+	आलय	=	देवालय
	नव	+	आगत	=	नवागत
	सत्य	+	आग्रह	=	सत्याग्रह
	देव	+	आगमन	=	देवागमन
आ + अ = आ	परीक्षा	+	अर्थी	=	परीक्षार्थी
	सीमा	+	अंत	=	सीमांत
	दिशा	+	अंतर	=	दिशांतर
	रेखा	+	अंश	=	रेखांश
आ + आ = आ	महा	+	आत्मा	=	महात्मा
	विद्या	+	आलय	=	विद्यालय
	वार्ता	+	आलाप	=	वार्तालाप
	महा	+	आनंद	=	महानंद
इ + इ = ई	अति	+	इव	=	अतीव
	कवि	+	इंद्र	=	कवींद्र
	मुनि	+	इंद्र	=	मुनींद्र
	कपि	+	इंद्र	=	कपींद्र
	रवि	+	इंद्र	=	रवींद्र
इ + ई = ई	गिरि	+	ईश	=	गिरीश
	परि	+	ईक्षा	=	परीक्षा
	मुनि	+	ईश्वर	=	मुनीश्वर
	हरि	+	ईश	=	हरीश
ई + इ = ई	मही	+	इंद्र	=	महींद्र
	योगी	+	इंद्र	=	योगींद्र
	शची	+	इंद्र	=	शचींद्र
	लक्ष्मी	+	इच्छा	=	लक्ष्मीच्छा
ई + ई = ई	रजनी	+	ईश	=	रजनीश
	योगी	+	ईश्वर	=	योगीश्वर
	जानकी	+	ईश	=	जानकीश
	नारी	+	ईश्वर	=	नारीश्वर
उ + उ = ऊ	भानु	+	उदय	=	भानूदय
	विधु	+	उदय	=	विधूदय
	गुरु	+	उपदेश	=	गुरूपदेश
	लघु	+	उत्तर	=	लघूत्तर
उ + ऊ = ऊ	लघु	+	ऊर्मि	=	लघूर्मि
	धातु	+	ऊष्मा	=	धातूष्मा
	सिंधु	+	ऊर्मि	=	सिंधूर्मि
	साधु	+	ऊर्जा	=	साधूर्जा
ऊ + उ = ऊ	वधू	+	उत्सव	=	वधूत्सव
	भू	+	उत्सर्ग	=	भूत्सर्ग
	वधू	+	उपकार	=	वधूपकार
	भू	+	उद्धार	=	भूद्धार
ऊ + ऊ = ऊ	सरयू	+	ऊर्मि	=	सरयूर्मि
	भू	+	ऊष्मा	=	भूष्मा
	वधू	+	ऊर्मि	=	वधूर्मि
	भू	+	ऊर्जा	=	भूर्जा

2. गुण-संधि : यदि 'अ' और 'आ' के बाद 'इ' या 'ई', 'उ' या 'ऊ' और 'ऋ' स्वर आए तो दोनों के मिलने से क्रमशः 'ए', 'ओ' और 'अर्' हो जाते हैं; जैसे—

अ + इ = ए	नर	+	इंद्र	=	नरेंद्र
	सुर	+	इंद्र	=	सुरेंद्र
	पुष्प	+	इंद्र	=	पुष्पेंद्र
	सत्य	+	इंद्र	=	सत्येंद्र
अ + ई = ए	नर	+	ईश	=	नरेश
	परम	+	ईश्वर	=	परमेश्वर
	सोम	+	ईश	=	सोमेश
	कमल	+	ईश	=	कमलेश
आ + इ = ए	रमा	+	इंद्र	=	रमेंद्र
	महा	+	इंद्र	=	महेंद्र
	यथा	+	इष्ट	=	यथेष्ट
	राजा	+	इंद्र	=	राजेंद्र
आ + ई = ए	महा	+	ईश	=	महेश
	उमा	+	ईश	=	उमेश
	राका	+	ईश	=	राकेश
	रमा	+	ईश	=	रमेश
अ + उ = ओ	वीर	+	उचित	=	वीरोचित
	मानव	+	उचित	=	मानवोचित
	पर	+	उपकार	=	परोपकार
	हित	+	उपदेश	=	हितोपदेश
अ + ऊ = ओ	सूर्य	+	ऊर्जा	=	सूर्योर्जा
	नव	+	ऊढ़ा	=	नवोढ़ा
	जल	+	ऊर्मि	=	जलोर्मि
	समुद्र	+	ऊर्मि	=	समुद्रोर्मि
आ + उ = ओ	महा	+	उदय	=	महोदय
	महा	+	उत्सव	=	महोत्सव
	महा	+	उष्मा	=	महोष्मा
	महा	+	उदधि	=	महोदधि
	गंगा	+	उदक	=	गंगोदक
आ + ऊ = ओ	दया	+	ऊर्मि	=	दयोर्मि
	महा	+	ऊर्जा	=	महोर्जा
	महा	+	ऊर्मि	=	महोर्मि
	महा	+	ऊष्मा	=	महोष्मा
अ + ऋ = अर्	देव	+	ऋषि	=	देवर्षि
	सप्त	+	ऋषि	=	सप्तर्षि
	राज	+	ऋषि	=	राजर्षि
	ब्रह्म	+	ऋषि	=	ब्रह्मर्षि
आ + ऋ = अर्	महा	+	ऋषि	=	महर्षि

3. वृद्ध संधि : 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' आए तो दोनों के मेल से 'ऐ' हो जाता है तथा 'अ' और 'आ' के पश्चात 'ओ' या 'औ' आए तो दोनों के मेल से 'औ' हो जाता है, जैसे—

अ + ए = ऐ	एक	+	एक	=	एकैक
	लोक	+	एषणा	=	लोकैषणा
अ + ऐ = ऐ	मत	+	ऐक्य	=	मतैक्य
	धन	+	ऐश्वर्य	=	धनैश्वर्य
आ + ए = ऐ	सदा	+	एव	=	सदैव
	तथा	+	एव	=	तथैव
आ + ऐ = ऐ	महा	+	ऐश्वर्य	=	महैश्वर्य
अ + ओ = औ	वन	+	ओषधि	=	वनौषधि
	दंत	+	ओष्ठ	=	दंतौष्ठ
अ + औ = औ	परम	+	औदार्य	=	परमौदार्य
	परम	+	औषध	=	परमौषध
आ + ओ = औ	महा	+	ओजस्वी	=	महौजस्वी
	महा	+	ओज	=	महौज
आ + औ = औ	महा	+	औषध	=	महौषध
	महा	+	औदार्य	=	महौदार्य

4. यण संधि : यदि 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ' और 'ऋ' के बाद भिन्न स्वर आए तो 'इ' और 'ई' का 'य', 'उ' और 'ऊ' का 'व' तथा 'ऋ' का 'र्' हो जाता है, जैसे—

इ + अ = य	अति	+	अधिक	=	अत्यधिक
	यदि	+	अपि	=	यद्यपि
इ + आ = या	इति	+	आदि	=	इत्यादि
	अति	+	आचार	=	अत्याचार
इ + उ = यु	उपरि	+	उक्त	=	उपर्युक्त
	अति	+	उत्तम	=	अत्युत्तम
	प्रति	+	उपकार	=	प्रत्युपकार
इ + ऊ = यू	नि	+	ऊन	=	न्यून
	वि	+	ऊह	=	व्यूह
इ + ए = ये	प्रति	+	एक	=	प्रत्येक
	अभि	+	एषणा	=	अभ्येषणा
ई + आ = या	देवी	+	आगमन	=	देव्यागमन
	सखी	+	आगमन	=	सख्यागमन
ई + ऐ = यै	सखी	+	ऐश्वर्य	=	सख्यैश्वर्य
	नदी	+	ऐश्वर्य	=	नद्यैश्वर्य
उ + अ = व	सु	+	अच्छ	=	स्वच्छ
	अनु	+	अय	=	अन्वय
उ + आ = वा	सु	+	आगत	=	स्वागत
	मधु	+	आलय	=	मध्वालय
उ + इ = वि	अनु	+	इति	=	अन्विति
	अनु	+	इत	=	अन्वित
उ + ए = वे	प्रभु	+	एषणा	=	प्रभ्वेषणा
	अनु	+	एषण	=	अन्वेषण
उ + ओ = वो	गुरु	+	ओदन	=	गुर्वोदन
ऊ + आ = वा	वधू	+	आगमन	=	वध्वागमन
	भू	+	आदि	=	भ्वादि
ऋ + अ = र	पितृ	+	अनुमति	=	पित्रनुमति
ऋ + आ = रा	मातृ	+	आज्ञा	=	मात्राज्ञा
	पितृ	+	आज्ञा	=	पित्राज्ञा
ऋ + इ = रि	मातृ	+	इच्छा	=	मात्रिच्छा
	पितृ	+	इच्छा	=	पित्रिच्छा

5. अयादि संधि : यदि 'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ' स्वरों का मेल दूसरे स्वरों से हो तो 'ए' का 'अय', 'ऐ' का 'आय', 'ओ' का 'अव' तथा 'औ' का 'आव' के रूप में परिवर्तन हो जाता है, जैसे—

ए + अ = अय	ने	+	अन	=	नयन

ऐ + अ = आय	नै	+	अक	=	नायक
	गै	+	अक	=	गायक
	गै	+	अन	=	गायन
ऐ + इ = आयि	नै	+	इका	=	नायिका
	गै	+	इका	=	गायिका
ओ + अ = अव	पो	+	अन	=	पवन
	भो	+	अन	=	भवन
	श्रो	+	अन	=	श्रवण
ओ + इ = अवि	पो	+	इत्र	=	पवित्र
	गो	+	इनि	=	गविनी
ओ + ई = अवी	गो	+	ईश	=	गवीश
औ + अ = आव	पौ	+	अन	=	पावन
	पौ	+	अक	=	पावक
	भौ	+	अन	=	भावन
औ + इ = आवि	नौ	+	इक	=	नाविक
	भौ	+	इनि	=	भाविनी
औ + उ = आवु	भौ	+	उक	=	भावुक

विशेष : *इस संधि का प्रयोग संस्कृत में होता है। इन शब्दों को हिंदी में संधियुक्त नहीं माना जाता। ये शब्द केवल व्यवहृत माने जाते हैं। हिन्दी में इन शब्दों की गिनती रूढ़ शब्दों में होती है।*

व्यंजन-संधि

व्यंजन-संधि : व्यंजन के बाद स्वर या व्यंजन आने से जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन-संधि कहते हैं; जैसे—

वाक्	+	ईश	=	वागीश *(क् + ई = गी)*
सत्	+	जन	=	सज्जन *(त् + ज = ज्ज)*
उत्	+	हार	=	उद्धार *(त् + ह = द्ध)*

नोट : *व्यंजन का शुद्ध रूप हल् वाला रूप (जैसे— क् ख् ग्...) होता है।*

व्यंजन-संधि के नियम

1 वर्ग के पहले वर्ण का तीसरे वर्ण में परिवर्तन : किसी वर्ग के पहले वर्ण *(क् च् ट् त् प्)* का मेल किसी स्वर अथवा किसी वर्ग के तीसरे वर्ण *(ग ज ड द ब)* या चौथे वर्ण *(घ झ ढ ध भ)* अथवा अंतःस्थ व्यंजन *(य र ल व)* के किसी वर्ण से होने पर वर्ग का पहला वर्ण अपने ही वर्ग के तीसरे वर्ण *(ग् ज् ड् द् ब्)* में परिवर्तित हो जाता है; जैसे—

क् का ग् होना :	दिक्	+	गज	=	दिग्गज
	दिक्	+	अंत	=	दिगंत
	दिक्	+	विजय	=	दिग्विजय
	वाक्	+	ईश	=	वागीश
च् का ज् होना :	अच्	+	अंत	=	अजंत
	अच्	+	आदि	=	अजादि
ट् का ड् होना :	षट्	+	आनन	=	षडानन
	षट्	+	रिपु	=	षड्रिपु
त् का द् होना :	भगवत्	+	भजन	=	भगवद्भजन
	उत्	+	योग	=	उद्योग
	सत्	+	भावना	=	सद्भावना
	सत्	+	गुण	=	सद्गुण
प् का ब् होना :	अप्	+	ज	=	अब्ज
	अप्	+	धि	=	अब्धि
	सुप	+	अंत	=	सुबंत

2. वर्ग के पहले वर्ण का पाँचवें वर्ण में परिवर्तन : यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण *(क् च् ट् त् प्)* का मेल किसी अनुनासिक वर्ण (वस्तुतः केवल न म) से हो तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण *(ङ् ञ् ण् न् म्)* हो जाता है, जैसे—

क् का ङ् होना :	वाक्	+	मय	=	वाङ्मय
ट् का ण् होना :	षट्	+	मुख	=	षण्मुख
त् का न् होना :	उत्	+	मत्त	=	उन्मत्त
	तत्	+	मय	=	तन्मय
	चित्	+	मय	=	चिन्मय
	जगत्	+	नाथ	=	जगन्नाथ

3. 'छ' संबंधी नियम : किसी भी ह्रस्व स्वर या 'आ' का 'छ' से होने पर 'छ' से पहले 'च्' जोड़ दिया जाता है; जैसे—

स्व	+	छंद	= स्वच्छंद
परि	+	छेद	= परिच्छेद
अनु	+	छेद	= अनुच्छेद
वि	+	छेद	= विच्छेद

4. त् संबंधी नियम :

(i) 'त्' के बाद यदि 'च', 'छ' हो तो 'त्' का 'च्' हो जाता है; जैसे—

उत्	+	चारण	= उच्चारण
उत्	+	चरित	= उच्चरित
जगत्	+	छाया	= जगच्छाया
सत्	+	चरित्र	= सच्चरित्र

(ii) 'त्' के बाद यदि 'ज', 'झ' हो तो 'त्' 'ज्' में बदल जाता है; जैसे—

सत्	+	जन	= सज्जन
जगत्	+	जननी	= जगज्जननी
विपत्	+	जाल	= विपज्जाल
उत्	+	ज्वल	= उज्ज्वल
उत्	+	झटिका	= उज्झटिका

(iii) 'त्' के बाद यदि 'ट', 'ड' हो तो 'त्', क्रमशः 'ट्' 'ड्' में बदल जाता है; जैसे—

बृहत्	+	टीका	= बृहट्टीका
उत्	+	डयन	= उड्डयन

(iv) 'त्' के बाद यदि 'ल' हो तो 'त्', 'ल्' में बदल जाता है; जैसे—

उत्	+	लास	= उल्लास
तत्	+	लीन	= तल्लीन
उत्	+	लेख	= उल्लेख

(v) 'त्' के बाद यदि 'श्' हो तो 'त्' का 'च्' और 'श्' का 'छ्' हो जाता है; जैसे—

उत्	+	श्वास	= उच्छ्वास
सत्	+	शास्त्र	= सच्छास्त्र

(vi) 'त्' के बाद यदि 'ह' हो तो 'त्' के स्थान पर 'द्' और 'ह' के स्थान पर 'ध' हो जाता है; जैसे—

तत्	+	हित	= तद्धित
उत्	+	हार	= उद्धार
उत्	+	हत	= उद्धत
उत्	+	हृत	= उद्धृत

5. 'न' संबंधी नियम : यदि 'ऋ', 'र', 'ष' के बाद 'न' व्यंजन आता है तो 'न' का 'ण' हो जाता है; जैसे—

परि	+	नाम	= परिणाम
प्र	+	मान	= प्रमाण
राम	+	अयन	= रामायण
भूष	+	अन	= भूषण

6. 'म' संबंधी नियम :

(i) 'म्' का मेल 'क' से 'म' तक के किसी भी व्यंजन वर्ग से होने पर 'म्' उसी वर्ग के पंचमाक्षर *(अनुस्वार)* में बदल जाता है; जैसे—

सम्	+	कलन	= संकलन
सम्	+	गति	= संगति
सम्	+	चय	= संचय
परम्	+	तु	= परंतु
सम्	+	पूर्ण	= संपूर्ण

(ii) 'म्' का मेल यदि 'य', 'र', 'ल', 'व', 'श', 'ष', 'स', 'ह' से हो तो 'म्' सदैव अनुस्वार ही होता है; जैसे—

सम्	+	योग	= संयोग
सम्	+	रक्षक	= संरक्षक
सम्	+	लाप	= संलाप
सम्	+	विधान	= संविधान
सम्	+	शय	= संशय
सम्	+	सार	= संसार
सम्	+	हार	= संहार

(iii) 'म्' के बाद 'म' आने पर कोई परिवर्तन नहीं होता; जैसे—

सम्	+	मान	= सम्मान
सम्	+	मति	= सम्मति

विशेष : *आजकल सुविधा के लिए पंचमाक्षर के स्थान पर प्रायः अनुस्वार का ही प्रयोग होता है।*

7. 'स' संबंधी नियम : 'स' से पहले 'अ', 'आ' से भिन्न स्वर हो तो 'स' का 'ष' हो जाता है; जैसे—

वि	+	सम	= विषम
वि	+	साद	= विषाद
सु	+	समा	= सुषमा

विसर्ग-संधि

विसर्ग-संधि : विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में जो विकार होता है, उसे विसर्ग-संधि कहते हैं, जैसे—

निः	+	आहार	= निराहार
दुः	+	आशा	= दुराशा
तपः	+	भूमि	= तपोभूमि
मनः	+	योग	= मनोयोग

विसर्ग-संधि के प्रमुख नियम

1 विसर्ग का 'ओ' हो जाता है : यदि विसर्ग के पहले 'अ' और बाद में 'अ' अथवा प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण अथवा 'य', 'र', 'ल', 'व', 'ह' हो तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है; जैसे—

मनः	+	अनुकूल	= मनोनुकूल	अधः	+	गति	= अधोगति
तपः	+	बल	= तपोबल	वयः	+	वृद्ध	= वयोवृद्ध
तपः	+	भूमि	= तपोभूमि	पयः	+	द	= पयोद
पयः	+	धन	= पयोधन	मनः	+	रथ	= मनोरथ
मनः	+	योग	= मनोयोग	मनः	+	हर	= मनोहर

अपवाद : पुनः एवं अंतः में विसर्ग का र् हो जाता है; जैसे—

पुनः	+	मुद्रण	= पुनर्मुद्रण	पुनः	+	जन्म	= पुनर्जन्म
अंतः	+	धान	= अंतर्धान	अंतः	+	अग्नि	= अंतरग्नि

2. विसर्ग का 'र्' हो जाता है : यदि विसर्ग के पहले 'अ', 'आ' को छोड़ कर कोई दूसरा स्वर हो और बाद में 'आ', 'उ', 'ऊ' या तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण या 'य', 'र', 'ल', 'व' में से कोई हो तो विसर्ग का 'र्' हो जाता है; जैसे—

निः	+	आशा	= निराशा
निः	+	धन	= निर्धन
निः	+	बल	= निर्बल
निः	+	जन	= निर्जन
आशीः	+	वाद	= आशीर्वाद
दुः	+	बल	= दुर्बल
दुः	+	जन	= दुर्जन
निः	+	धारण	= निर्धारण
दुः	+	उपयोग	= दुरुपयोग
दुः	+	ऊह	= दुरुह
बहिः	+	मुख	= बहिर्मुख

3. विसर्ग का 'श्' हो जाता है : यदि विसर्ग के पहले कोई स्वर हो और बाद में 'च', 'छ' या 'श' हो तो विसर्ग का 'श्' हो जाता है; जैसे—

निः	+	चिंत	= निश्चिंत
निः	+	छल	= निश्छल
दुः	+	शासन	= दुश्शासन
दुः	+	चरित्र	= दुश्चरित्र

4. विसर्ग का 'ष्' हो जाता है : विसर्ग के पहले 'इ', 'उ' और बाद में 'क', 'ख', 'ट', 'ठ', 'प', 'फ' में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का 'ष्' हो जाता है; जैसे—

निः	+	कपट	= निष्कपट
निः	+	कंटक	= निष्कंटक
धनुः	+	टंकार	= धनुष्टंकार
निः	+	ठुर	= निष्ठुर
निः	+	प्राण	= निष्प्राण
निः	+	फल	= निष्फल

अपवाद : दुः + ख = दुःख

5. विसर्ग का 'स्' हो जाता है : विसर्ग के बाद यदि 'त' या 'थ' हो तो विसर्ग का 'स्' हो जाता है; जैसे—

नमः	+	ते	= नमस्ते	निः	+	तेज	= निस्तेज
मनः	+	ताप	= मनस्ताप	निः	+	संताप	= निस्संताप
दुः	+	तर	= दुस्तर	दुः	+	साहस	= दुस्साहस

6. विसर्ग का लोप हो जाना :

(i) यदि विसर्ग के बाद 'छ' हो तो विसर्ग लुप्त हो जाता है और 'च' का आगम हो जाता है; जैसे—

अनुः	+	छेद	= अनुच्छेद
छत्रः	+	छाया	= छत्रच्छाया

(ii) यदि विसर्ग के बाद 'र' हो तो विसर्ग लुप्त हो जाता है और उस के पहले का स्वर दीर्घ हो जाता है; जैसे—

निः	+	रोग	= नीरोग
निः	+	रस	= नीरस

(iii) यदि विसर्ग से पहले 'अ' या 'आ' हो और विसर्ग के बाद कोई भिन्न स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है; जैसे—

अतः	+	एव	= अतएव

7. विसर्ग में परिवर्तन न होना : यदि विसर्ग के पूर्व 'अ' हो तथा बाद में 'क' या 'प' हो तो विसर्ग में परिवर्तन नहीं होता; जैसे—

प्रातः	+	काल	=	प्रातःकाल
अंतः	+	करण	=	अंतःकरण
अंतः	+	पुर	=	अंतःपुर
अधः	+	पतन	=	अधःपतन

अपवाद : नमः एवं पुरः में विसर्ग का स् हो जाता है; जैसे—

नमः	+	कार	=	नमस्कार
पुरः	+	कार	=	पुरस्कार

हिन्दी की कुछ विशेष संधियाँ

संस्कृत की संधियों के अतिरिक्त हिंदी की कुछ विशेष संधियाँ हैं। इनके नियम अभी तक स्पष्ट नहीं हैं तथापि कुछ का परिचय निम्नलिखित है—

1. 'आ' का 'अ' हो जाना

आम	+	चूर	=	अमचूर
हाथ	+	कड़ी	=	हथकड़ी
राज	+	वाड़ा	=	रजवाड़ा
लड़का	+	पन	=	लड़कपन
कान	+	कटा	=	कनकटा

2. 'इ', 'ई' के स्थान पर 'इय्' हो जाता है

शक्ति	+	आँ	=	शक्तियाँ
देवी	+	आँ	=	देवियाँ

3. 'ई', 'ऊ' का क्रम से 'इ', 'उ' हो जाना

नदी	+	आँ	=	नदियाँ
वधू	+	एँ	=	वधुएँ

4. 'ह' का 'भ'

'जब', 'तब', 'कब', 'सब', 'अब' आदि शब्दों के पीछे 'ही' आने पर 'ही' के 'ह' का 'भ' हो जाता है; जैसे—

जब	+	ही	=	जभी
कब	+	ही	=	कभी
तब	+	ही	=	तभी
सब	+	ही	=	सभी

5. 'ह' का लोप—

(i) कभी-कभी कुछ शब्दों की संधि होने पर किसी एक ध्वनि का लोप हो जाता है, जैसे 'ही' में 'ह्' का लोप हो जाता है; जैसे—

यह	+	ही	=	यही
किस	+	ही	=	किसी
वह	+	ही	=	वही
उस	+	ही	=	उसी

(ii) कभी-कभी दोनों ध्वनियों में भी लोप हो जाता है। पहले शब्द से 'आ' स्वर का तथा दूसरे से 'ह' व्यंजन का लोप हो जाता है और अनुनासिकता दूसरे स्वर पर पहुँच जाती है; जैसे—

वहाँ	+	ही	=	वहीं
कहाँ	+	ही	=	कहीं
यहाँ	+	ही	=	यहीं
जहाँ	+	ही	=	जहीं

संधि-विच्छेद

विशेष : *नीचे सारणी में किसी-किसी शब्द (जैसे—नवोऽकु में ऽ चिह्न का प्रयोग किया गया है जो लुप्त अकार का चि है।*

(अ, आ, इ, ...)

अंतःकरण	=	अंतः	+	करण		
अंतःपुर	=	अंतः	+	पुर		
अन्वय	=	अनु	+	अय		
अन्वेषण	=	अनु	+	एषण		
अन्वेषक	=	अनु	+	एषक		
अन्तर्निहित	=	अन्तः	+	निहित		
अन्तर्गत	=	अन्तः	+	गत		
अन्तस्तल	=	अंतः	+	तल		
अन्तर्धान	=	अन्तः	+	धान		
अन्योन्याश्रय	=	अन्य	+	अन्य	+	आश्रय
अन्योक्ति	=	अन्य	+	उक्ति		
अण्डाकार	=	अण्ड	+	आकार		
अनायास	=	अन्	+	आयास		
अधपका	=	आधा	+	पका		
अन्वित	=	अनु	+	इत		
अनुचित	=	अन्	+	उचित		
अनूप	=	अन्	+	ऊप		
अनुपमेय	=	अन्	+	उपमेय		
अन्तर्राष्ट्रीय	=	अन्तः	+	राष्ट्रीय		
अनंग	=	अन्	+	अंग		
अनन्त	=	अन्	+	अंत		
अजन्त	=	अच्	+	अन्त		
अनन्य	=	अन्	+	अन्य		
अत्यन्त	=	अति	+	अंत		
अत्यधिक	=	अति	+	अधिक		
अतएव	=	अतः	+	एव		
अध्याय	=	अधि	+	आय		
अध्ययन	=	अधि	+	अयन		
अधीश	=	अधि	+	ईश		
अधीश्वर	=	अधि	+	ईश्वर		
अधिकांश	=	अधिक	+	अंश		
अधोगति	=	अधः	+	गति		
अधरोष्ठ	=	अधर	+	ओष्ठ		
अब्ज	=	अप्	+	ज		
अब्भूति	=	अप्	+	भूति		
अवच्छेद	=	अव	+	छेद		
अभ्यस्त	=	अभि	+	अस्त		
अभ्यागत	=	अभि	+	आगत		
अभिषेक	=	अभि	+	सेक		
अभीष्ट	=	अभि	+	इष्ट		
अम्मय	=	अप्	+	मय		
अस्तित्व	=	अस्ति	+	त्व		
अह्र्गण	=	अहर्	+	गण		
अहंकार	=	अहम्	+	कार		
अहर्मुख	=	अहर्	+	मुख		
अहोरूप	=	अहः	+	रूप		

अज्ञानांधकार	=	अज्ञान	+	अंधकार
अरण्याच्छादित	=	अरण्य	+	आच्छादित
आकृष्ट	=	आकृष्	+	त
आश्चर्य	=	आः	+	चर्य
आशोन्मुख	=	आशा	+	उन्मुख
आविष्कार	=	आविः	+	कार
आशीर्वाद	=	आशीः	+	वाद
इत्यादि	=	इति	+	आदि
आत्मावलम्बन	=	आत्मा	+	अवलम्बन
आच्छादन	=	आ	+	छादन
आत्मोत्सर्ग	=	आत्म	+	उत्सर्ग
आध्यात्मिक	=	आधि	+	आत्मिक
इतस्ततः	=	इतः	+	ततः
उच्चारण	=	उत्	+	चारण
उच्छवास	=	उत्	+	श्वास
उच्छिष्ट	=	उत्	+	शिष्ट
उच्छिन्न	=	उत्	+	छिन्न
उद्भिज	=	उत्	+	भिज
उज्ज्वल	=	उत्	+	ज्वल
उद्यान	=	उत्	+	यान
उद्याम	=	उत्	+	याम
उड्डयन	=	उत्	+	डयन
उत्कृष्ट	=	उत्कृष्	+	त
उत्कर्षापकर्ष	=	उत्कर्ष	+	अपकर्ष
उत्तमोत्तम	=	उत्तम	+	उत्तम
उत्तेजना	=	उत्	+	तेजना
उत्तरोत्तर	=	उत्तर	+	उत्तर
उद्योग	=	उत्	+	योग
उदय	=	उत्	+	अय
उद्गम	=	उत्	+	गम
उद्धार	=	उत्	+	हार
उदयोन्मुख	=	उदय	+	उन्मुख
उद्घाटन	=	उत्	+	घाटन
उद्वेग	=	उत्	+	वेग
उद्देश्य	=	उत्	+	देश्य
उद्धरण	=	उत्	+	हरण
उदाहरण	=	उत्	+	आहरण
उद्भव	=	उत्	+	भव
उद्धत	=	उत्	+	हत
उद्भाषित	=	उत्	+	भाषित
उन्नति	=	उत्	+	नति
उन्मूलित	=	उत्	+	मूलित
उन्नयन	=	उत्	+	नयन
उन्नायक	=	उत्	+	नायक
उन्मत्त	=	उत्	+	मत्त
उद्विग्न	=	उत्	+	विग्न
उपास्य	=	उप	+	आस्य
उपेक्षा	=	उप	+	ईक्षा
उपर्युक्त	=	उपरि	+	उक्त
उपयोगिता	=	उप	+	योगिता
उपदेशक	=	उप	+	देशक
उपाधि	=	उप	+	आधि
उपासना	=	उप	+	आसना
उल्लंघन	=	उत्	+	लंघन
उल्लेख	=	उत्	+	लेख
ऊहापोह	=	ऊह	+	अपोह
उपदेशान्तर्गत	=	उपदेश	+	अन्तः + गत
एकाकार	=	एक	+	आकार
एकाध	=	एक	+	आध
एकासन	=	एक	+	आसन
एकोनविंश	=	एक	+	ऊनविंश
एकैक	=	एक	+	एक
एकान्त	=	एक	+	अंत

(क वर्ग)

कंठोष्ठ्य	=	कंठ	+	ओष्ठ्य
कपिलेश्वर	=	कपिल	+	ईश्वर
कपीश	=	कपि	+	ईश
कवीन्द्र	=	कवि	+	इन्द्र
कवीश्वर	=	कवि	+	ईश्वर
कपीश्वर	=	कपि	+	ईश्वर
कल्पांत	=	कल्प	+	अंत
कालान्तर	=	काल	+	अंतर
किंचित्	=	किम्	+	चित्
किंवा	=	किम्	+	वा
किन्तु	=	किम्	+	तु
कूपोदक	=	कूप	+	उदक
कुशाग्र	=	कुश	+	अग्र
कुशासन	=	कुश	+	आसन
कुसुमायुध	=	कुसुम	+	आयुध
कुठाराघात	=	कुठार	+	आघात
कोणार्क	=	कोण	+	अर्क
क्रोधान्ध	=	क्रोध	+	अंध
कोषाध्यक्ष	=	कोष	+	अध्यक्ष
कौमी	=	कौम	+	ई
कृतान्त	=	कृत	+	अंत
कीटाणु	=	कीट	+	अणु
खगासन	=	खग	+	आसन
खटमल	=	खाट	+	मल
गवीश	=	गो	+	ईश
गणेश	=	गण	+	ईश
गंगौघ	=	गंगा	+	ओघ
गंगोदक	=	गंगा	+	उदक
गंगैश्वर्य	=	गंगा	+	ऐश्वर्य
ग्रामोद्धार	=	ग्राम	+	उद्धार
गायन	=	गै	+	अन
गिरीन्द्र	=	गिरि	+	इन्द्र
गुडाकेश	=	गुडाका	+	ईश
गुप्पचति	=	गुब्	+	पचति
गिरीश	=	गिरि	+	ईश
घड़घड़ाहट	=	घड़घड़	+	आहट
घनानंद	=	घन	+	आनंद
घुड़दौड़	=	घोड़ा	+	दौड़

(च वर्ग)

चतुरानन	=	चतुर्	+	आनन		
चतुर्भुज	=	चतुः	+	भुज		
चतुर्दिक	=	चतुः	+	दिक्		
चतुरंग	=	चतुः	+	अंग		
चन्द्रोदय	=	चन्द्र	+	उदय		
चिन्मय	=	चित्	+	मय		
चूड़ान्त	=	चूड़ा	+	अंत		
चिन्ताक्रान्त	=	चिंता	+	आक्रान्त		
छिद्रान्वेषी	=	छिद्र	+	अनु	+	एषी
छुटपन	=	छोटा	+	पन		
छुटभैया	=	छोटा	+	भैया		
जगदीश	=	जगत्	+	ईश		
जगदीन्द्र	=	जगत्	+	इन्द्र		
जगज्जय	=	जगत्	+	जय		
जगन्नियन्ता	=	जगत्	+	नियन्ता		
जगद्बन्धु	=	जगत्	+	बन्धु		
जगन्नाथ	=	जगत्	+	नाथ		
जनतैक्य	=	जनता	+	ऐक्य		
जनतौत्सुक्य	=	जनता	+	औत्सुक्य		
ज्योतिर्मठ	=	ज्योतिः	+	मठ		
जलौघ	=	जल	+	ओघ		
जानकीश	=	जानकी	+	ईश		
जागृतावस्था	=	जागृत	+	अवस्था		
जात्यभिमानी	=	जाति	+	अभिमानी		
जीवनानुकूल	=	जीवन	+	अनुकूल		
जीवनोपयोगी	=	जीवन	+	उपयोगी		
जीवनोपार्जन	=	जीवन	+	उपार्जन		
जीविकार्थ	=	जीविका	+	अर्थ		
झंडोत्तोलन	=	झंडा	+	उत्तोलन		
झगड़ालू	=	झगड़ा	+	आलू		
झड़बेरी	=	झाड़	+	बेड़		

(ट वर्ग)

टुकड़तोड़	=	टुकड़ा	+	तोड़		
टुटपूँजिया	=	टूटी	+	पूँजी		
ठाढ़ेश्वरी	=	ठाढ़ा	+	ईश्वरी		
ठकुरसुहाती	=	ठाकुर	+	सुहाना		
डंडपेल	=	डंड	+	पेलना		
डिठौना	=	डीठ	+	औना		
ढँढोरिया	=	ढँढोरा	+	इया		
ढकोसला	=	ढंक	+	कौशल		

(त वर्ग)

तज्जय	=	तत्	+	जय		
तच्छरण	=	तत्	+	शरण		
तच्छरीर	=	तत्	+	शरीर		
तथैव	=	तथा	+	एव		
तट्टीका	=	तद्	+	टीका		
तद्रूप	=	तत्	+	रूप		
तद्धवि	=	तत्	+	हवि		
तदिह	=	तत्	+	इह		
तदस्ति	=	तत्	+	अस्ति		
तदात्म्य	=	तत्	+	आत्म्य		
तदाकार	=	तत्	+	आकार		
तद्धित	=	तत्	+	हित		
तन्मय	=	तत्	+	मय		
तपोवन	=	तपः	+	वन		
तत्त्व	=	तत्	+	त्व		
तल्लय	=	तत्	+	लय		
तच्छिव	=	तत्	+	शिव		
त्वगिन्द्रय	=	त्वक्	+	इन्द्रिय		
तिरस्कृत	=	तिरः	+	कृत		
तिरस्कार	=	तिरः	+	कार		
तल्लीन	=	तत्	+	लीन		
तेऽपि	=	ते	+	अपि		
तत्तनोति	=	तद्	+	तनोति		
तड्डमरु	=	तद्	+	डमरु		
तृष्णा	=	तृष्	+	ना		
तेजोराशि	=	तेजः	+	राशि		
तेजोपुंज	=	तेजः	+	पुंज		
तेऽद्र	=	ते	+	अद्र		
तेजआभास	=	तेजः	+	आभास		
तस्मिन्नारमे	=	तस्मिन्	+	आरामे		
त्रिलोकेश्वर	=	त्रिलोक	+	ईश्वर		
तदुपरान्त	=	तत्	+	उपरान्त		
थनैला	=	थन	+	ऐला		
थुक्काफजीहत	=	थूक	+	फजीहत		
दुष्परिणाम	=	दुः	+	परिणाम		
दुर्बलता	=	दुः	+	बलता		
दुर्घटना	=	दुः	+	घटना		
दुर्दिन	=	दुः	+	दिन		
देशान्तर	=	देश	+	अंतर		
देशाभिमान	=	देश	+	अभिमान		
देशानुराग	=	देश	+	अनुराग		
देहान्त	=	देह	+	अंत		
देवालय	=	देव	+	आलय		
देवेन्द्र	=	देव	+	इन्द्र		
देवेश	=	देव	+	ईश		
देवर्षि	=	देव	+	ऋषि		
देवैश्वर्य	=	देव	+	ऐश्वर्य		
देवीच्छा	=	देवी	+	इच्छा		
देव्यागम	=	देवी	+	आगम		
दैन्यावस्था	=	दैन्य	+	अवस्था		
दैन्यादि	=	दैन्य	+	आदि		
दृष्टि	=	दृष्	+	ति		
दृष्टान्त	=	दृष्ट	+	अंत		
दन्त्योष्ठ्य	=	दन्त	+	ओष्ठ्य		
दावानल	=	दाव	+	अनल		
दिगन्त	=	दिक्	+	अंत		
दिग्गज	=	दिक्	+	गज		
दिनेश	=	दिन	+	ईश		
दिगम्बर	=	दिक्	+	अम्बर		
दिग्भाग	=	दिक्	+	भाग		
दिग्हस्ती	=	दिक्	+	हस्ती		

दिङ्नाग	=	दिक्	+	नाग
दुर्लभ	=	दुः	+	लभ
दुःखात्मक	=	दुख	+	आत्मक
दुर्बल	=	दुः	+	बल
दुरन्त	=	दुः	+	अंत
दुर्जन	=	दुः	+	जन
दुस्साहस	=	दुः	+	साहस
दुरुपयोग	=	दुः	+	उपयोग
दुश्शासन	=	दुः	+	शासन
दुष्कर्म	=	दुः	+	कर्म
दुःख	=	दुः	+	ख
दुःखान्त	=	दुःख	+	अंत
दुष्कर	=	दुः	+	कर
दुस्तर	=	दुः	+	तर
दुर्नीति	=	दुः	+	नीति
दुर्निवार	=	दुः	+	निवार
धनान्ध	=	धन	+	अन्ध
धनुर्धर	=	धनुः	+	धर
धनुष्टंकार	=	धनुः	+	टंकार
धनित्व	=	धनिन्	+	त्व
धर्मोपदेश	=	धर्म	+	उपदेश
धर्माधिकारी	=	धर्म	+	अधिकारी
ध्यानावस्थित	=	ध्यान	+	अवस्थित
नद्यूर्मि	=	नदी	+	ऊर्मि
नवोऽकुंर	=	नव	+	अंकुर
नरेश	=	नर	+	ईश
नायक	=	नै	+	अक
नाविक	=	नौ	+	इक
नास्ति	=	न	+	अस्ति
नारायण	=	नार	+	अयन
नागाधिराज	=	नाग	+	अधिराज
नवोढ़ा	=	नव	+	ऊढ़ा
नमस्कार	=	नमः	+	कार
नष्ट	=	नष्	+	त
नरेश	=	नर	+	ईश
नयन	=	ने	+	अन
नद्यर्पण	=	नदी	+	अर्पण
न्यून	=	नि	+	ऊन
नयनाभिराम	=	नयन	+	अभिराम
नदीश	=	नदी	+	ईश
निर्झर	=	निः	+	झर
निष्फल	=	निः	+	फल
निर्मल	=	निः	+	मल
निर्जन	=	निः	+	जन
निष्पाप	=	निः	+	पाप
निर्जल	=	निः	+	जल
निष्पक्ष	=	निः	+	पक्ष
निस्सार	=	निः	+	सार
निस्तार	=	निः	+	तार
निर्धन	=	निः	+	धन
निर्माण	=	निः	+	मान
निर्दोष	=	निः	+	दोष

निस्तेज	=	निः	+	तेज		
निर्घोषित	=	निः	+	घोषित		
निर्भीकता	=	निः	+	भीकता		
निरर्थ	=	निः	+	अर्थ		
निरौषध	=	निः	+	औषध		
निष्कपट	=	निः	+	कपट		
निर्हस्त	=	निः	+	हस्त		
निरिच्छा	=	निः	+	इच्छा		
निराशा	=	निः	+	आशा		
निश्छिद्र	=	निः	+	छिद्र		
निषिद्ध	=	निः	+	सिद्ध		
निर्विकार	=	निः	+	विकार		
निष्काम	=	निः	+	काम		
निरन्तर	=	निः	+	अंतर		
निर्वासित	=	निः	+	वासित		
नीरेफ	=	निः	+	रेफ		
नीरन्ध्र	=	निः	+	रन्ध्र		
नीरस	=	निः	+	रस		
निश्छल	=	निः	+	छल		
निर्गुण	=	निः	+	गुण		
निराधार	=	निः	+	आधार		
निरक्षर	=	निः	+	अक्षर		
निगमागम	=	निगम	+	आगम		
नीरोग	=	निः	+	रोग		
नीरव	=	निः	+	रव		
निर्जीव	=	निः	+	जीव		
निर्बल	=	निः	+	बल		
निर्बलात्मा	=	निर्बल	+	आत्मा		
निर्दोष	=	निः	+	दोष		
निराकार	=	निः	+	आकार		
निर्णय	=	निः	+	नय		
निर्भ्रान्ति	=	निः	+	भ्रान्ति		
निर्भर	=	निः	+	भर		
निर्द्वन्द्व	=	निः	+	द्वन्द्व		
निस्सन्देह	=	निः	+	संदेह		
निश्चित	=	निः	+	चित		
निश्चय	=	निः	+	चय		
निष्क्रिय	=	निः	+	क्रिय		
निर्विरोध	=	निः	+	विरोध		
निस्सहाय	=	निः	+	सहाय		
निरीक्षण	=	निः	+	ईक्षण		
निरुपाय	=	निः	+	उपाय		
निश्चल	=	निः	+	चल		
निरर्थक	=	निः	+	अर्थक		
निष्फल	=	निः	+	फल		
न्यूनातिन्यून	=	न्यून	+	अति	+	न्यून
नियमानुसार	=	नियम	+	अनुसार		

(प वर्ग)

पच्छाक	=	पच्	+	शाक
पदाक्रान्त	=	पद	+	आक्रान्त
पवन	=	पो	+	अन
पयोद	=	पयः	+	द

परमार्थ	=	परम	+	अर्थ
परमात्मा	=	परम	+	आत्मा
परमौषध	=	परम	+	औषध
परमेश्वर	=	परम	+	ईश्वर
परमैश्वर्य	=	परम	+	ऐश्वर्य
परमाद्रि	=	परम	+	अद्रि
परन्तु	=	परम्	+	तु
पराधीन	=	पर	+	अधीन
परमाणु	=	परम	+	अणु
पराङ्मुख	=	पराक्	+	मुख
परिच्छेद	=	परि	+	छेद
परोपकार	=	पर	+	उपकार
पर्याप्त	=	परि	+	आप्त
परीक्षा	=	परि	+	ईक्षा
पश्वधम	=	पशु	+	अधम
पयोमान	=	पयः	+	मान
पंचम	=	पंम्	+	चम
पंचांग	=	पंच	+	अंग
पवित्र	=	पो	+	इत्र
पावक	=	पौ	+	अक
पावन	=	पौ	+	अन
परिष्कार	=	परिः	+	कार
पित्रर्थ	=	पितृ	+	अर्थ
पितृऋण	=	पितृ	+	ऋण
पित्रादि	=	पितृ	+	आदि
पितारक्ष	=	पितः	+	रक्ष
पीताम्बर	=	पीत	+	अम्बर
पुरस्कार	=	पुरः	+	कार
पुरस्कृत	=	पुरः	+	कृत
पुनरुक्ति	=	पुनः	+	उक्ति
पुष्ट	=	पुष्	+	त
पुनरुत्थान	=	पुनः	+	उत्थान
पुनर्जन्म	=	पुनः	+	जन्म
पुनर्रचना	=	पुनः	+	रचना
पृष्ठ	=	पृष्	+	थ
पुस्तकालय	=	पुस्तक	+	आलय
परमावश्यक	=	परम	+	आवश्यक
प्रमाण	=	प्र	+	मान
प्रहार	=	प्र	+	हार
प्रत्याचरण	=	प्रति	+	आचरण
प्रतीत	=	प्रति	+	इत
प्रत्यक्ष	=	प्रति	+	अक्ष
प्रत्याख्यान	=	प्रति	+	आख्यान
प्रजार्थ	=	प्रजा	+	अर्थ
प्रत्यक्षात्मा	=	प्रत्यक्ष	+	आत्मा
प्रत्युपकार	=	प्रति	+	उपकार
प्रत्येक	=	प्रति	+	एक
प्रत्युत्पन्न	=	प्रति	+	उत्पन्न
प्रतिच्छाया	=	प्रति	+	छाया
प्रतिच्छवि	=	प्रति	+	छवि
प्रलयंकर	=	प्रलयम्	+	कर
प्रार्थना	=	प्र	+	अर्थना

प्रांगण	=	प्र	+	अंगण
प्रातःकाल	=	प्रातः	+	काल
प्राणिमात्र	=	प्राणिन	+	मात्र
प्राणेश्वर	=	प्राण	+	ईश्वर
प्रोत्साह	=	प्र	+	उत्साह
प्रोत्साहन	=	प्र	+	उत्साहन
प्रोज्ज्वल	=	प्र	+	उज्ज्वल
प्रौढ	=	प्र	+	ऊढ
प्रथमोध्याय	=	प्रथमः	+	अध्याय
फलाहारी	=	फल	+	आहारी
फलागम	=	फल	+	आगम
बलात्कार	=	बलात्	+	कार
बहिष्पट्	=	बहिः	+	पट्
बहिर्देश	=	बहिः	+	देश
बहिर्योग	=	बहिः	+	योग
बहिर्भाग	=	बहिः	+	भाग
बिंबोष्ठ्य	=	बिंब	+	ओष्ठ्य
बृहद्रथ	=	बृहत्	+	रथ
ब्रह्मास्त्र	=	ब्रह्म	+	अस्त्र
ब्रह्मानन्द	=	ब्रह्म	+	आनन्द
ब्रह्मर्षि	=	ब्रह्म	+	ऋषि
बहिर्मुख	=	बहिः	+	मुख
बहिष्कार	=	बहिः	+	कार
भगवद्गीता	=	भगवत्	+	गीता
भरण	=	भर	+	अन
भवन	=	भो	+	अन
भारतेन्दु	=	भारत	+	इन्दु
भाविनी	=	भौ	+	इनी
भावुक	=	भौ	+	उक
भास्कर	=	भाः	+	कर
भास्पति	=	भाः	+	पति
भानूदय	=	भानु	+	उदय
भावोन्मेष	=	भाव	+	उन्मेष
भिन्न	=	भिद्	+	न
भूर्जित	=	भू	+	उर्जित
भूदार	=	भू	+	उदार
भूषण	=	भूष्	+	अन
भगवद्भक्ति	=	भगवत्	+	भक्ति
भविष्यद्वाणी	=	भविष्यत्	+	वाणी
मकराकृत	=	मकर	+	आकृत
मतैक्य	=	मत	+	ऐक्य
मतैकता	=	मत	+	एकता
मन्वन्तर	=	मनु	+	अंतर
मनस्पात	=	मनः	+	ताप
मनोहर	=	मनः	+	हर
मनोरंजन	=	मनः	+	रंजन
मनोवैज्ञानिक	=	मनः	+	वैज्ञानिक
मनोयोग	=	मनः	+	योग
मनोऽनुसार	=	मनः	+	अनुसार
मनोरथ	=	मनः	+	रथ
मनोविकार	=	मनः	+	विकार
मनोनीत	=	मनः	+	नीत

मनोभाव	=	मनः	+	भाव		
मनोज	=	मनः	+	ज		
मनोऽवधान	=	मनः	+	अवधान		
महर्षि	=	महा	+	ऋषि		
महच्छत्र	=	महत्	+	छत्र		
महाशय	=	महा	+	आशय		
महात्मा	=	महा	+	आत्मा		
महत्त्व	=	महत्	+	त्व		
महदोज	=	महत्	+	ओज		
महीश्वर	=	मही	+	ईश्वर		
महेन्द्र	=	मही	+	इन्द्र		
महैश्वर्य	=	महा	+	ऐश्वर्य		
महेन्द्र	=	महा	+	इन्द्र		
महालाभ	=	महान्	+	लाभ		
महोरु	=	महा	+	ऊरु		
महोत्सव	=	महा	+	उत्सव		
महीश	=	महि	+	ईश		
महौज	=	महा	+	ओज		
महौदार्य	=	महा	+	औदार्य		
महेश्वर	=	महा	+	ईश्वर		
महौषधि	=	महा	+	औषधि		
महेश	=	महा	+	ईश		
मायाधीन	=	माया	+	अधीन		
मातृऋण	=	मातृ	+	ऋण		
मात्रानन्द	=	मातृ	+	आनन्द		
मुनीश्वर	=	मुनि	+	ईश्वर		
मृत्युञ्जय	=	मृत्युम्	+	जय		
मन्त्रोच्चारण	=	मंत्र	+	उत्	+	चारण
महामात्य	=	महा	+	अमात्य		

(य, र, ल, व)

यज्ञ	=	यज्	+	न		
यथेष्ट	=	यथा	+	इष्ट		
यद्यपि	=	यदि	+	अपि		
यशोदा	=	यशः	+	दा		
याच्ञा	=	याच्	+	ना		
यवनावनि	=	यवन	+	अवनि		
यशोधरा	=	यशः	+	धरा		
यशोलाभ	=	यशः	+	लाभ		
युधिष्ठिर	=	युधि	+	स्थिर		
योऽसि	=	यो	+	असि		
यशोऽभिलाषी	=	यशः	+	अभिलाषी		
रजकण	=	रजः	+	कण		
रत्नाकर	=	रत्न	+	आकर		
रमेश	=	रमा	+	ईश		
रवीन्द्र	=	रवि	+	इन्द्र		
रसातल	=	रसा	+	अतल		
रसास्वादन	=	रस	+	आस्वादन		
राजाज्ञा	=	राजा	+	आज्ञा		
रामावतार	=	राम	+	अवतार		
रामायण	=	राम	+	अयन		
रुद्रावतार	=	रुद्र	+	अवतार		

रेखांश	=	रेखा	+	अंश		
रसायन	=	रस	+	अयन		
रहस्याधिकारी	=	रहस्य	+	अधिकारी		
लघूर्मि	=	लघु	+	ऊर्मि		
लक्ष्मीश	=	लक्ष्मी	+	ईश		
लोकोत्तर	=	लोक	+	उत्तर		
लोकोपकार	=	लोक	+	उपकार		
लम्बोदर	=	लम्ब	+	उदर		
वधूर्मिका	=	वधू	+	उर्मिका		
वनस्पति	=	वनः	+	पति		
वयोवृद्ध	=	वयः	+	वृद्ध		
व्यर्थ	=	वि	+	अर्थ		
व्यस्त	=	वि	+	अस्त		
व्यवहार	=	वि	+	अवहार		
व्यभिचार	=	वि	+	अभिचार		
व्यायाम	=	वि	+	आयाम		
व्यापकता	=	वि	+	आपकता		
व्यापी	=	वि	+	आपी		
व्याप्त	=	वि	+	आप्त		
व्यापक	=	वि	+	आपक		
वाक्शूर	=	वाक्	+	शूर		
वाक्कलह	=	वाक्	+	कलह		
वाग्जाल	=	वाक्	+	जाल		
वागीश	=	वाक्	+	ईश		
वार्तालाप	=	वार्ता	+	आलाप		
वाङ्मय	=	वाक्	+	मय		
वातावरण	=	वात	+	आवरण		
वाग्रोध	=	वाक्	+	रोध		
वारीश	=	वारि	+	ईश		
वाग्दान	=	वाक्	+	दान		
विधूदय	=	विधु	+	उदय		
विपज्जाल	=	विपद्	+	जाल		
विद्यालय	=	विद्या	+	आलय		
विद्यार्थी	=	विद्या	+	अर्थी		
विच्छेद	=	वि	+	छेद		
विद्योपदेश	=	विद्या	+	उपदेश		
विन्यास	=	वि + नि	+	आस		
विमलोदक	=	विमल	+	उदक		
विपल्लीन	=	विपद्	+	लीन		
विश्वामित्र	=	विश्व	+	अमित्र		
विषम	=	वि	+	सम		
वधूचित	=	वधू	+	उचित		
वधूत्सव	=	वधू	+	उत्सव		
विस्मरण	=	वि	+	स्मरण		
वृद्धावस्था	=	वृद्ध	+	अवस्था		
वृक्षच्छाया	=	वृक्ष	+	छाया		
वृहदाकार	=	वृहत्	+	आकार		
विशेषोन्मुख	=	विशेष	+	उन्मुख		
विरुदावली	=	विरुद	+	अवली		

(श, ष, स, ह)

शताब्दी	=	शत	+	अब्दी		
शरच्चंद्र	=	शरत्	+	चन्द्र		

शस्त्रास्त्र = शस्त्र + अस्त्र
शिरोमणि = शिरः + मणि
शिलारोपण = शिला + आरोपण
शुद्धोदन = शुद्ध + ओदन
शेषांश = शेष + अंश
शीघ्रातिशीघ्र = शीघ्र + अतिशीघ्र
श्वासोच्छ्वास = श्वास + उत् + श्वास
षड्दर्शन = षट् + दर्शन
षोडशोपचार = षोडस + उपचार
षडानन = षट् + आनन
संकोच = सम् + कोच
संतप्त = सम् + तप्त
सतीश = सती + ईश
सद्गुरु = सत् + गुरु
सदाचार = सत् + आचार
सदुत्तर = सत् + उत्तर
सद्वंश = सत् + वंश
सदानन्द = सत् + आनन्द
सद्धर्म = सत् + धर्म
सद्हस्ती = सत् + हस्ती
संतोष = सम् + तोष
संतुष्ट = सम् + तुष्ट
संदेश = सम् + देश
संघर्ष = सम् + घर्ष
समाचार = सम् + आचार
संकट = सम् + कट
संकल्प = सम् + कल्प
समालोचना = सम् + आलोचना
सदैव = सदा + एव
संदेह = सम् + देह
सर्वोच्च = सर्व + उच्च
सम्मुख = सम् + मुख
सत्कार = सत् + कार
सन्नद = सत् + नद
संहारेषण = संहार + एषण
सम्मान = सम् + मान
समीक्षा = सम् + ईक्षा
समुचित = सम् + उचित
संस्कृति = सम् + कृति
संगीत = सम् + गीत
संगठन = सम् + गठन
संतोष = सम् + तोष
सरोवर = सरः + वर
संदेह = सम् + देह
सन्तान = सम् + तान
सद्भावना = सत् + भावना
सदुपयोग = सत् + उपयोग
सरोज = सरः + ज
संसर्ग = सम् + सर्ग
सत्यासक्त = सत्य + आसक्त
सर्वोदय = सर्व + उदय
समाधान = सम् + आधान

सदिच्छा = सत् + इच्छा
समालोचक = सम् + आलोचक
सदाचार = सत् + आचार
सतीच्छा = सती + इच्छा
सदवतार = सत् + अवतार
सद्गति = सत् + गति
सत्कार = सत् + कार
सम्राज = सम् + राज
संकीर्ण = सम् + कीर्ण
संयोग = सम् + योग
संकल्प = सम् + कल्प
संभव = सम् + भव
संयुक्त = सम् + युक्त
संस्कृत = सम् + कृत
संग्राम = सम् + ग्राम
सहायतार्थ = सहायता + अर्थ
सज्जन = सत् + जन
सत्याग्रह = सत्य + आग्रह
सत्साहित्य = सत् + साहित्य
संलग्न = सम् + लग्न
संघाराम = संघ + आराम
समुचित = सम् + उचित
सर्वोपरि = सर्व + उपरि
सर्वांगीण = सर्व + अंगीन
सर्वोत्तम = सर्व + उत्तम
सारांश = सार + अंश
साश्चर्य = स + आश्चर्य
साग्रह = स + आग्रह
सावधान = स + अवधान
साधूहा = साधु + उहा
सिद्धांत = सिद्ध + अन्त
सिंहासन = सिंह + आसन
सुधेच्छा = सुधा + इच्छा
सुन्दरौदन = सुन्दर + ओदन
सुरानुकूल = सुर + अनुकूल
सेवार्थ = सेवा + अर्थ
सोत्साह = स + उत्साह
सोऽहम = सः + अहम्
स्वार्थ = स्व + अर्थ
स्वर्ग = सु + अर्ग
स्वागत = सु + आगत
स्वेच्छा = स्व + इच्छा
सहोदर = सह + उदर
सद्गुण = सत् + गुण
सम्मति = सम् + मति
स्वैर = स्व + ईर
स्वाधीन = स्व + अधीन
सज्जाति = सत् + जाति
समुदाय = सम् + उदाय
समुद्रोर्मि = समुद्र + ऊर्मि
समृद्धि = सम् + ऋद्धि
सप्तर्षि = सप्त + ऋषि

सख्युचित	=	सखी	+	उचित		
सच्छास्त्र	=	सत्	+	शास्त्र		
सम्भव	=	सम्	+	भव		
सम्वाद	=	सम्	+	वाद		
सम्पूर्ण	=	सम्	+	पूर्ण		
सन्तोष	=	सम्	+	तोष		
संक्रान्ति	=	सम्	+	क्रान्ति		
संहार	=	सम्	+	हार		
संयम	=	सम्	+	यम		
संवत्	=	सम्	+	वत्		
संसार	=	सम्	+	सार		
सम्पर्क	=	सम्	+	पर्क		
सन्धि	=	सम्	+	धि		
संगम	=	सम्	+	गम		
संकोच	=	सम्	+	कोच		
संकल्प	=	सम्	+	कल्प		
संचय	=	सम्	+	चय		
स्थानान्तर	=	स्थान	+	अंतर		
स्वच्छन्द	=	स्व	+	छन्द		
स्वात्मबल	=	स्व	+	आत्मबल		
सुखोपभोग	=	सुख	+	उपभोग		
साभिलाष	=	स	+	अभिलाष		
सावकाश	=	स	+	अवकाश		
सम्मानास्पद	=	सम्	+	मान	+	आस्पद
संग्रहालय	=	सम्	+	ग्रह	+	आलय
सदसद्विवेकिनी	=	सत्	+	असत्	+	विवेकिनी
सच्चिदानन्द	=	सत्	+	चित्	+	आनन्द
सर्वतोभावेन	=	सर्वतः	+	भावेन		
स्वर्गारोहण	=	स्वर्ग	+	आरोहण		
स्वेच्छाचारी	=	स्वेच्छा	+	आचारी		
हरिश्चन्द्र	=	हरिः	+	चन्द्र		
हृदयानन्द	=	हृदय	+	आनन्द		
हताश	=	हत	+	आश		
हितोपदेश	=	हित	+	उपदेश		
हरीच्छा	=	हरि	+	इच्छा		
हिमालय	=	हिम	+	आलय		
हृदयहारिणी	=	हृदय	+	हारिणी		
हिमाच्छादित	=	हिम	+	आच्छादित		
हरेक	=	हर	+	एक		
हृद्देश	=	हृद्	+	देश		

वस्तुनिष्ट प्रश्न

1. दो वर्णों के मेल से होनेवाले विकार को कहते हैं—
   (a) संधि (b) समास (c) उपसर्ग (d) प्रत्यय
2. संधि कितने प्रकार के होते हैं ?
   (a) 1 (b) 2 (c) 3 (d) 4
3. दयानन्द में प्रयुक्त संधि का नाम है—
   (a) गुण संधि (b) दीर्घ संधि
   (c) व्यंजन संधि (d) यण् संधि
4. हरीश में प्रयुक्त संधि का नाम है—
   (a) वृद्धि संधि (b) दीर्घ संधि
   (c) यण् संधि (d) विसर्ग संधि
5. सदैव में प्रयुक्त संधि का नाम है—
   (a) व्यंजन संधि (b) स्वर संधि
   (c) विसर्ग संधि (d) इनमें से कोई नहीं
   (बी० एड०, 1996)
6. इनमें कौन स्वर संधि का उदाहरण है ?
   (a) संयोग (b) मनोहर (c) नमस्कार (d) पवन
   (रेलवे, 1997)
7. निम्नांकित में से कौन-सा शब्द वृद्धि संधि का उदाहरण नहीं है ?
   (a) सदैव (b) जलौघ (c) गुरूपदेश (d) परमौदार्य
   (रेलवे, 1997)
8. निम्न में से दीर्घ संधि युक्त पद कौन-सा है ?
   (a) महर्षि (b) देवेन्द्र (c) सूर्योदय (d) दैत्यारि
   (रेलवे, 1997)
9. पवित्र में प्रयुक्त संधि का नाम है—
   (a) यण संधि (b) गुण संधि
   (c) अयादि संधि (d) वृद्धि संधि
   (रेलवे, 1997)
10. इत्यादि का सही संधि-विच्छेद है—
    (a) इत् + यादि (b) इति + यादि
    (c) इत् + आदि (d) इति + आदि
    (एल० आई० सी०, 1997)
11. निरर्थक का सही संधि-विच्छेद है—
    (a) निर् + अर्थक (b) निरः + अर्थक
    (c) निः + अर्थक (d) निरा + अर्थक *(रेलवे, 1997)*
12. धरेश का सही संधि-विच्छेद है—
    (a) धराः + अश (b) धर + ईश
    (c) धरा + ईश (d) धरा + इश *(रेलवे, 1997)*
13. निराशा का सही संधि-विच्छेद है—
    (a) निरा + आशा (b) निर् + आशा
    (c) निः + आशा (d) निरः + आशा *(रेलवे, 1997)*
14. महोष्ण का सही संधि-विच्छेद है—
    (a) महु + उष्ण (b) महा + ऊष्ण
    (c) महो + उष्ण (d) महा + उष्ण
    (एल० आई० सी०, 1997)
15. आशीर्वाद का सही संधि-विच्छेद है—
    (a) आशीर + वाद (b) आशीः + वाद
    (c) आर्शी + वाद (d) इनमें से कोई नहीं
    (रेलवे, 1997)
16. महेश का सही संधि-विच्छेद है—
    (a) महो + ईश (b) महा + ईश
    (c) मही + ईश (d) महि + ईश
    (एल० आई० सी०, 1997)
17. सन्मति का सही संधि-विच्छेद है—
    (a) सम् + मति (b) सन् + मति
    (c) सद् + मति (d) सत् + मति *(रेलवे, 1997)*
18. अन्वय का सही संधि-विच्छेद है—
    (a) अनु + अय (b) अनू + आय
    (c) अन् + अय (d) अनु + आय
    (एल० आई० सी०, 1997)
19. परोपकार में प्रयुक्त संधि का नाम है—
    (a) विसर्ग संधि (b) गुण संधि
    (c) वृद्धि संधि (d) यण् संधि *(रेलवे, 1998)*

20. निम्नांकित में से कौन सा शब्द स्वर संधि का उदाहरण है ?
(a) अधोगति (b) उच्चारण
(c) दिग्गज (d) मन्वन्तर *(रेलवे, 1998)*

21. निश्चल का सही संधि-विच्छेद है—
(a) नीः + चल (b) निश् + चल
(c) निस् + चल (d) निः + चल *(रेलवे, 1998)*

22. निम्नलिखित शब्दों में से किसमें विसर्ग संधि है ?
(a) उज्ज्वल (b) निश्चल
(c) राजेन्द्र (d) दुर्गम *(बी० एड०, 1999)*

23. सप्तर्षि का सही संधि-विच्छेद है—
(a) सप्तर + ऋषि (b) सप्तः + ऋषि
(c) सप्त + ऋषि (d) इनमें से कोई नहीं *(रेलवे, 1999)*

24. तपोवन में प्रयुक्त संधि का नाम है—
(a) स्वर संधि (b) व्यंजन संधि
(c) विसर्ग संधि (d) इनमें से कोई नहीं *(बी० एड०, 2000)*

25. स्वागत में प्रयुक्त संधि का नाम है—
(a) व्यंजन संधि (b) यण् संधि
(c) दीर्घ संधि (d) वृद्धि संधि *(रेलवे, 2000)*

26. दिगम्बर में प्रयुक्त संधि का नाम है—
(a) स्वर संधि (b) व्यंजन संधि
(c) विसर्ग संधि (d) इनमें से कोई नहीं *(बी० एड०, 2000)*

27. निम्नलिखित शब्दों में से किसमें स्वर संधि है—
(a) अतएव (b) रजनीश
(c) तपोगुण (d) सदाचार *(बी० एड०, 2000)*

28. प्रत्युपकार का सही संधि-विच्छेद है—
(a) प्रत् + उपकार (b) प्रती + उपकार
(c) प्रति + उपकार (d) प्रति + अपकार *(रेलवे, 2000)*

29. गायक का सही संधि-विच्छेद है—
(a) गा + अक (b) गै + अक
(c) गे + यक (d) गै + यक *(रेलवे, 2000)*

30. अभिषेक का सही संधि-विच्छेद है—
(a) अभि + षेक (b) अभि + सेक
(c) अभिः + शेक (d) अभिय + सेक *(रेलवे, 2000)*

31. यद्यपि में प्रयुक्त संधि का नाम है—
(a) गुण संधि (b) अयादि संधि
(c) यण् संधि (d) दीर्घ संधि *(रेलवे, 2001)*

32. निम्नलिखित शब्दों में से किसमें स्वर संधि है ?
(a) अधोमुख (b) सज्जन
(c) वाग्जाल (d) महोदधि *(रेलवे, 2001)*

33. पवित्र का सही संधि-विच्छेद है—
(a) पव् + इत्र (b) पवः + इत्र
(c) पौ + इत्र (d) पो + इत्र
(उत्तर प्रदेश निर्वाचन आयोग परीक्षा, 2001)

34. मनोयोग का सही संधि-विच्छेद है—
(a) मनोः + योग (b) मनः + योग
(c) मनः + आयोग (d) इनमें से कोई नहीं
(उत्तर प्रदेश निर्वाचन आयोग परीक्षा, 2001)

35. प्रत्येक का सही संधि-विच्छेद है—
(a) प्रनि + एक (b) प्रतिः + एक
(c) प्रति + अक (d) प्रती + एक
(उत्तर प्रदेश निर्वाचन आयोग परीक्षा, 2001)

36. गिरीश का सही संधि-विच्छेद है—
(a) गिरि + इश (b) गिरि + ईश
(c) गिर् + इश (d) गिर् + ईश
(उत्तर प्रदेश निर्वाचन आयोग परीक्षा, 200

37. नायक में प्रयुक्त संधि का नाम है—
(a) दीर्घ संधि (b) गुण संधि
(c) वृद्धि संधि (d) अयादि संधि
(बैंक परीक्षा, 200

38. चन्द्रोदय में प्रयुक्त संधि का नाम है—
(a) यण् संधि (b) गुण संधि
(c) वृद्धि संधि (d) दीर्घ संधि *(बैंक परीक्षा, 20*

39. यशोदा में प्रयुक्त संधि का नाम है—
(a) स्वर संधि (b) व्यंजन संधि
(c) विसर्ग संधि (d) इनमें से कोई नहीं
(बैंक परीक्षा, 20

40. निम्नलिखित में एक शब्द संधि की दृष्टि से अशुद्ध है, उस शब्द का चयन कीजिए—
(a) तथैव (b) तथापि
(c) तदाकार (d) तदोपरान्त
(सब इंसपेक्टर परीक्षा, 20

41. अभ्युदय शब्द में कौन-सी संधि है ?
(a) गुण (b) अयादि (c) यण् (d) दीर्घ
(सब इंसपेक्टर परीक्षा, 20

42. स्वर संधि के कितने भेद हैं ?
(a) 3 (b) 4 (c) 5 (d) 7
(बैंक परीक्षा, 20

43. स्वर संधि का उदाहरण कौन-सा है ?
(a) वागीश (b) दिगंबर (c) रत्नाकर (d) दुष्कर्म
(बैंक परीक्षा, 20

44. व्यर्थ शब्द में किन वर्णों की संधि हुई है ?
(a) इ + अ (b) इ + उ (c) इ + ए (d) ई + अ
(बैंक परीक्षा, 20

45. घुड़दौड़ का सही संधि-विच्छेद है—
(a) घुड़ + दौड़ (b) घोड़ + दौड़
(c) घोड़ा + दौड़ (d) इनमें से कोई नहीं
(सब इंसपेक्टर परीक्षा, 20

46. महोदय का सही संधि-विच्छेद है—
(a) महो + दय (b) महा + ओदय
(c) महान + उदय (d) महा + उदय
(बी० पी० एस० सी०, 2

47. तन्मय का सही संधि-विच्छेद है—
(a) तन् + मय (b) तम् + अय
(c) तत् + मय (d) तन् + अमय
(बी० पी० एस० सी०, 2

48. उद्धरण का सही संधि-विच्छेद है—
(a) उत् + धरण (b) उत् + अण
(c) उत् + हरण (d) उद्ध + रण
(बैंक परीक्षा, 2

49. तेजोमय का सही संधि-विच्छेद है—
(a) तेज + ओमय (b) तेजः + अमय
(c) तेजः + मय (d) तेजो + मय
(बैंक परीक्षा, 2

50. राकेश का सही संधि-विच्छेद है—
(a) राके + श (b) राक + ईश
(c) राका + इश (d) राका + ईश
(सब इंसपेक्टर परीक्षा,

51. नीरोग में प्रयुक्त संधि का नाम है—
(a) स्वर संधि (b) व्यंजन संधि
(c) विसर्ग संधि (d) इनमें से कोई नहीं
(बी० एड०, 2003)

52. निर्जन में प्रयुक्त संधि का नाम है—
(a) स्वर संधि (b) व्यंजन संधि
(c) विसर्ग संधि (d) इनमें से कोई नहीं
(बी० एड०, 2003)

53. वातानुकूल का सही संधि विच्छेद है—
(a) वात + अनुकूल (b) वात + अनूकुल
(c) वाता + अनुकूल (d) वाता + अनूकुल
(पी० सी० एस०, 2003)

54. ब्रह्मास्त्र का सही संधि-विच्छेद है—
(a) ब्रह्म + अस्त्र (b) ब्रह्मा + अस्त्र
(c) बह्म + अस्त्र (d) ब्रह्मः + अस्त्र
(पी० सी० एस०, 2003)

55. उच्छवास का सही संधि-विच्छेद है—
(a) उच् + श्वास (b) उत् + श्वास
(c) उद् + श्वास (d) उच्छ + वास
(बी० एड०, 2004)

56. प्रत्युत्तर का सही संधि-विच्छेद है—
(a) प्र + त्युत्तर (b) प्रति + उत्तर
(c) प्रति + युत्तर (d) प्रत्यु + उत्तर
(बी० एड०, 2004)

57. नमस्ते का सही संधि-विच्छेद है—
(a) नम + स्ते (b) नम् + स्ते
(c) नमः + स्ते (d) नमः + ते *(बी० एड०, 2004)*

58. संतोष का सही संधि-विच्छेद है—
(a) सम् + तोष (b) सम + तोष
(c) सः + तोष (d) सन् + तोष
(बी० एड०, 2004)

59. उज्ज्वल का सही संधि-विच्छेद है—
(a) उत् + जबल (b) उत् + ज्वल
(c) उत + जल (d) उत + ज्वल
(बी० एड०, 2004)

60. विश्वामित्र का सही संधि-विच्छेद है—
(a) विश्व + मित्र (b) विश्वा + मित्र
(c) विश्वः + मित्र (d) विश्व + अमित्र
(बी० एड०, 2004)

61. संगम का सही संधि-विच्छेद है—
(a) सम + गम (b) सम् + गम
(c) सङ् + गम (d) सन् + गम
(बी० एड०, 2004)

62. स्वागतम् में प्रयुक्त संधि का नाम है—
(a) यण् संधि (b) गुण संधि
(c) दीर्घ संधि (d) वृद्धि संधि *(बी० एड०, 2004)*

63. भानूदय में प्रयुक्त संधि का नाम है—
(a) व्यंजन संधि (b) दीर्घ संधि
(c) गुण संधि (d) वृद्धि संधि *(बी० एड०, 2005)*

64. सूर्योदय में प्रयुक्त संधि का नाम है—
(a) गुण संधि (b) वृद्धि संधि
(c) यण् संधि (d) दीर्घ संधि *(बी० एड०, 2005)*

65. हरिश्चन्द्र में प्रयुक्त संधि का नाम है—
(a) स्वर संधि (b) व्यंजन संधि
(c) विसर्ग संधि (d) इनमें से कोई नहीं
(बी० एड०, 2005)

66. उच्चारण में प्रयुक्त संधि का नाम है—
(a) व्यंजन संधि (b) स्वर संधि
(c) विसर्ग संधि (d) इनमें से कोई नहीं
(बी० एड०, 2005)

67. उल्लेख का सही संधि-विच्छेद है—
(a) उल् + लेख (b) उत् + लेख
(c) उल्ल + लेख (d) उ + ल्लेख
(बी० एड०, 2005)

68. अत्याचार का सही संधि-विच्छेद है—
(a) अत्य + आचार (b) अति + चार
(c) अत्या + चार (d) अति + आचार
(बी० एड०, 2005)

69. दिगम्बर का सही संधि-विच्छेद है—
(a) दिग् + अम्बर (b) दिक् + अम्बर
(c) दिग + अम्बर (d) दिक + अम्बर
(बी० एड०, 2005)

70. उड्डयनम् का सही संधि-विच्छेद है—
(a) उत् + डयनम (b) उड् + डयनम
(c) उद् + डयनम (d) उड + डयनम
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

71. निर्विकार में प्रयुक्त संधि का नाम है—
(a) स्वर संधि (b) व्यंजन संधि
(c) विसर्ग संधि (d) इनमें से कोई नहीं

72. सत्याग्रह में प्रयुक्त संधि का नाम है—
(a) दीर्घ संधि (b) गुण संधि
(c) वृद्धि संधि (d) यण् संधि

73. श्रावण का सही संधि-विच्छेद है—
(a) श्रौ + अण (b) श्राव + अन
(c) श्राव + अण् (d) श्री + अन

74. काव्योर्मि का सही संधि-विच्छेद है—
(a) काव्य + ओर्मि (b) काव्य + उर्मि
(c) कवि + उर्मि (d) का + व्योर्मि

75. सत्याग्रह का सही संधि-विच्छेद है—
(a) सत्या + ग्रह (b) सत + आग्रह
(c) सत्य + ग्रह (d) सत्य + आग्रह

76. 'निरुत्तर' शब्द का शुद्ध संधि-विच्छेद है—
(a) नि + उत्तर (b) निः + उत्तर
(c) निर + उत्तर (d) निः + उत्तर
(हरियाणा बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2007)

77. मनः + भाव = ?
(a) मन्भाव (b) मनहयाव (c) मनोभाव (d) मनयाव
(मध्य प्रदेश प्री बी.एड. परीक्षा, 2007)

78. निः + विकार = ?
(a) निविकार (b) निर्विकार (c) निबिकार (d) निहविकार
(मध्य प्रदेश प्री बी.एड. परीक्षा, 2007)

79. सज्जन का संधि-विच्छेद क्या है ?
(a) सज + जन (b) सत् + जन
(c) सज्ज + न (d) स + ज्जन
(मध्य प्रदेश प्री बी.एड. परीक्षा, 2007)

80. सन्मार्ग में प्रयुक्त संधि है—
(a) स्वर संधि (b) व्यंजन संधि
(c) विसर्ग संधि (d) इनमें से कोई नहीं
(उत्तर प्रदेश बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

81. ज्ञानोदय में प्रयुक्त संधि है—
(a) स्वर संधि (b) व्यंजन संधि
(c) विसर्ग संधि (d) इनमें से कोई नहीं
(उत्तर प्रदेश बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

82. निराधार में प्रयुक्त संधि है—
(a) स्वर संधि (b) व्यंजन संधि
(c) विसर्ग संधि (d) इनमें से कोई नहीं
(उत्तर प्रदेश बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

83. निम्नलिखित शब्दों में से किसमें विसर्ग संधि है ?
(a) अतएव (b) नरेन्द्र
(c) सज्जन (d) सदैव
(उत्तर प्रदेश बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

84. निम्नलिखित शब्दों में से किसमें व्यंजन संधि है ?
(a) सप्तर्षि (b) निराधार
(c) सत्कार (d) हिमालय
(उत्तर प्रदेश बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

85. 'अ + इ = ए' स्वर संधि के किस भेद को व्यक्त करता है ?
(a) दीर्घ-संधि (b) गुण संधि
(c) वृद्धि संधि (d) यण् संधि
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

86. सत् + चरित्र = सच्चरित्र किस संधि का उदाहरण है ?
(a) स्वर संधि (b) व्यंजन संधि
(c) विसर्ग संधि (d) दीर्घ संधि
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

87. अधः + गति = अधोगति किस संधि का उदाहरण है ?
(a) स्वर संधि (b) विसर्ग संधि
(c) व्यंजन संधि (d) गुण संधि
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

88. उत् + हार के योग से कौन-सा शब्द बनेगा ?
(a) उतार (b) आहार (c) उदार (d) उद्
(राजस्थान बी० एड० प्रवेश परीक्षा, 20

89. 'दृगंचल' का सही संधि-विच्छेद है—
(a) दृग + अंचल (b) दृगं + अचल
(c) दृक् + अंचल (d) दृग + चल
(राजस्थान बी० एड०, 20

90. 'पर्यावरण' शब्द का सन्धि-विच्छेद कौन-सा है ?
(a) पर्या + वरण (b) परि + आवरण
(c) परिघ + आवरण (d) परिघि + आवरण
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 20

91. 'पवन' का संधि-विच्छेद क्या है ?
(a) प + अवन (b) प + वन
(c) पो + अन (d) पौ + अन
(झारखण्ड शिक्षक नियुक्ति परीक्षा, 20

92. 'यथार्थ' में कौन-सी संधि है ?
(a) दीर्घ (b) यण्
(c) गुण (d) वृद्धि *(आर.आर. बी., 20*

93. 'महोदय' में कौन-सी संधि है ?
(a) दीर्घ (b) यण् (c) गुण (d) वृद्धि
(आर.आर. बी., 20

94. 'मतैक्य' में कौन-सी संधि है ?
(a) दीर्घ (b) यण्
(c) गुण (d) वृद्धि *(आर.आर. बी., 20*

उत्तरमाला

1. (a)	2. (c)	3. (b)	4. (b)	5. (b)	6. (d)	7. (c)	8. (d)	9. (c)	10. (d)	11. (c)	12. (c
13. (c)	14. (d)	15. (b)	16. (b)	17. (d)	18. (a)	19. (b)	20. (d)	21. (d)	22. (b)	23. (c)	24. (c
25. (b)	26. (b)	27. (b)	28. (c)	29. (b)	30. (b)	31. (c)	32. (d)	33. (d)	34. (b)	35. (a)	36. (b
37. (d)	38. (b)	39. (c)	40. (d)	41. (c)	42. (c)	43. (c)	44. (a)	45. (c)	46. (d)	47. (c)	48. (a
49. (c)	50. (d)	51. (c)	52. (c)	53. (a)	54. (a)	55. (b)	56. (b)	57. (d)	58. (a)	59. (b)	60. (d
61. (b)	62. (a)	63. (b)	64. (a)	65. (c)	66. (a)	67. (b)	68. (d)	69. (b)	70. (a)	71. (c)	72. (a
73. (d)	74. (b)	75. (d)	76. (d)	77. (c)	78. (b)	79. (b)	80. (b)	81. (a)	82. (c)	83. (a)	84. (c
85. (b)	86. (b)	87. (b)	88. (d)	89. (c)	90. (b)	91. (c)	92. (a)	93. (c)	94. (d)		

★★★

उपसर्ग-प्रत्यय
(Prefixes-Suffixes)

05

शब्द-रचना (Word-formation)

➢ वर्णों के सार्थक समूह को 'शब्द' कहते हैं।

➢ व्युत्पत्ति के आधार पर शब्द के तीन भेद होते हैं—रूढ़, यौगिक और योगरूढ़ । मूलतः शब्द के दो ही भेद होते हैं—रूढ़ और यौगिक। योगरूढ़ अर्थ की दृष्टि से रूढ़ होता है। रचना की दृष्टि से यौगिक और योगरूढ़ समान होते हैं। रूढ़ के हम खंड नहीं कर सकते हैं, अतः रचना में यौगिक ही रह जाते है जिनसे हम शब्द-रचना कर सकते हैं।

➢ यौगिक शब्दों की रचना तीन प्रकार से होती है— उपसर्ग से, प्रत्यय से और समास से।

उपसर्ग से :	अति	+	अंत	=	अत्यंत
	↓		↓		↓
	उपसर्ग		मूल शब्द/धातु		यौगिक शब्द
प्रत्यय से :	लेन	+	दार	=	लेनदार
	↓		↓		↓
	मूल शब्द		प्रत्यय		यौगिक शब्द
समास से :	प्रति	+	दिन	=	प्रतिदिन
	↓		↓		↓
	शब्द		शब्द		यौगिक शब्द

➢ कभी-कभी एक ही मूल शब्द में उपसर्ग एवं प्रत्यय दोनों का प्रयोग होता है; जैसे—

स्व	+	तंत्र	+	ता	=	स्वतंत्रता
↓		↓		↓		
उपसर्ग		मूल शब्द		प्रत्यय		

➢ कभी-कभी दो प्रत्ययों का एक साथ प्रयोग किया जाता है; जैसे—

समझ	+	दार	+	ई	=	समझदारी
↓		↓		↓		
मूल शब्द		प्रत्यय		प्रत्यय		

उपसर्ग (Prefixes)

➢ उपसर्ग = उप *(समीप)* + सर्ग *(सृष्टि करना)* का अर्थ है— किसी शब्द के समीप आ कर नया शब्द बनाना।

➢ जो शब्दांश शब्दों के आदि में जुड़ कर उनके अर्थ में कुछ विशेषता लाते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं।

'हार' शब्द का अर्थ है पराजय। परंतु इसी शब्द के आगे 'प्र' शब्दांश को जोड़ने से नया शब्द बनेगा— 'प्रहार' *(प्र + हार)* जिसका अर्थ है चोट करना। इसी तरह 'आ' जोड़ने से आहार *(भोजन)*, 'सम्' जोड़ने से संहार *(विनाश)* तथा 'वि' जोड़ने से 'विहार' *(घूमना)* इत्यादि शब्द बन जाएँगे।

उपर्युक्त उदाहरण में 'प्र', 'आ', 'सम्' और 'वि' का अलग से कोई अर्थ नहीं है, परंतु 'हार' शब्द के आदि में जुड़ने से उसके अर्थ में इन्होंने परिवर्तन कर दिया है। इसका मतलब हुआ कि ये सभी शब्दांश हैं और ऐसे शब्दांशों को उपसर्ग कहते हैं।

हिंदी में प्रचलित उपसर्गों को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है—

1. संस्कृत के उपसर्ग (संख्या–22)
2. हिंदी के उपसर्ग (संख्या–13),
3. उर्दू और फारसी के उपसर्ग (संख्या–19),
4. अंग्रेजी के उपसर्ग
5. उपसर्ग के समान प्रयुक्त होने वाले संस्कृत के अव्यय।

1. संस्कृत के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	शब्द
अति-	अधिक	अत्यधिक, अत्यंत, अतिरिक्त, अतिशय
अधि-	ऊपर, श्रेष्ठ	अधिकार, अधिपति, अधिनायक
अनु-	पीछे, समान	अनुचर, अनुकरण, अनुसार, अनुशासन
अप-	बुरा, हीन	अपयश, अपमान, अपकार
अभि-	सामने, चारों ओर, पास	अभियान, अभिषेक, अभिनय, अभिमुख
अव-	हीन, नीच	अवगुण, अवनति, अवतार, अवतरण
आ-	तक, समेत	आजीवन, आगमन, आरक्षण, आक्रमण
उत्-	ऊँचा, श्रेष्ठ, ऊपर	उत्कर्ष, उत्तम, उत्पत्ति
उद्-	ऊपर, उत्कर्ष	उद्गम, उद्भव
उप-	निकट, सदृश, गौण	उपदेश, उपवन, उपमंत्री, उपहार
दुर्-	बुरा, कठिन	दुर्जन, दुर्गम, दुर्दशा, दुराचार
दुस्-	बुरा, कठिन	दुश्चरित्र, दुस्साहस, दुष्कर
निर्-	बिना, बाहर, निषेध	निरपराध, निर्जन, निराकार, निर्गुण
निस्-	रहित, पूरा, विपरीत	निस्सार, निस्तार, निश्चल, निश्चित
नि-	निषेध, अधिकता, नीचे	निवारण, निपात, नियोग, निषेध
परा-	उल्टा, पीछे	पराजय, पराभव, परामर्श, पराक्रम
परि-	आसपास, चारों तरफ	परिजन, परिक्रम, परिपूर्ण, परिमाण
प्र-	अधिक, आगे	प्रख्यात, प्रबल, प्रस्थान, प्रकृति
प्रति-	उलटा, सामने, हर एक	प्रतिकूल, प्रत्यक्ष, प्रतिक्षण, प्रत्येक
वि-	भिन्न, विशेष	विदेश, विलाप, वियोग, विपक्ष
सम्-	उत्तम, साथ, पूर्ण	संस्कार, संगम, संतुष्ट, संभव
सु-	अच्छा, अधिक	सुजन, सुगम, सुशिक्षित, सुपात्र

2. हिन्दी के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	शब्द
अ-	अभाव, निषेध	अछूता, अथाह, अटल
अन-	अभाव, निषेध	अनमोल, अनबन, अनपढ़
क-	बुरा, हीन	कपूत, कचोट
कु-	बुरा	कुचाल, कुचैला, कुचक्र
दु-	कम, बुरा	दुबला, दुलारा, दुधारू
नि-	कमी	निगोड़ा, निडर, निहत्था, निकम्मा
औ/अव-	हीन, निषेध	औगुन, औघर, औसर, औसान
भर-	पूरा	भरपेट, भरपूर, भरसक, भरमार
सु-	अच्छा	सुडौल, सुजान, सुघड़, सुफल
अध-	आधा	अधपका, अधकच्चा, अधमरा, अधकचरा
उन-	एक कम	उनतीस, उनचालीस, उनसठ, उनहत्तर
पर-	दूसरा, बाद का	परलोक, परोपकार, परसर्ग, परहित
बिन-	बिना, निषेध	बिनब्याहा, बिनबादल, बिनपाए, बिनजाने

3. अरबी-फ़ारसी के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	शब्द
अल-	निश्चित	अलबत्ता, अलगरज
कम-	थोड़ा, हीन	कमजोर, कमबख्त, कमअक्ल
खुश-	अच्छा	खुशनसीब, खुशखबरी, खुशहाल, खुशबू
गैर-	निषेध	गैरहाजिर, गैरकानूनी, गैरमुल्क, गैर-जिम्मेदार
दर-	में	दरअसल, दरहकीकत
ना-	अभाव	नापसंद, नासमझ,नाराज, नालायक
फिल/फी-	में, प्रति	फिलहाल, फीआदमी
ब-	और, अनुसार	बनाम, बदौलत, बदस्तूर, बगैर
बा-	सहित	बाकायदा, बाइज्जत, बाअदब, बामौका
बद-	बुरा	बदमाश, बदनाम, बदकिस्मत, बदबू
बर-	ऊपर, पर, बाहर	बरदाश्त, बरखास्त
बे-	बिना	बेईमान, बेइज्जत, बेचारा, बेवकूफ
बिल-	के साथ	बिलआखिर, बिलकुल, बिलवजह
बिला-	बिना	बिलावजह, बिलाशक
ला-	रहित	लापरवाह, लाचार, लावारिस, लाजवाब
सर-	मुख्य	सरताज, सरदार, सरपंच, सरकार
हम-	समान, साथवाला	हमदर्दी, हमराह, हमउम्र, हमदम
हर-	प्रत्येक	हरदिन, हरसाल, हरएक, हरबार

4. अंग्रेज़ी के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	शब्द
सब-	अधीन, नीचे	सब-जज, सब-कमेटी, सब-इंस्पेक्टर
डिप्टी-	सहायक	डिप्टी-कलेक्टर, डिप्टी-रजिस्ट्रार, डिप्टी-मिनिस्टर
वाइस-	सहायक	वाइसराय, वाइस-चांसलर, वाइस-प्रेसीडेंट
जनरल-	प्रधान	जनरल मैनेजर, जनरल सेक्रेटरी
चीफ़-	प्रमुख	चीफ़-मिनिस्टर, चीफ़-इंजीनियर, चीफ़-सेक्रेटरी
हेड-	मुख्य	हेडमास्टर, हेड क्लर्क

5. उपसर्ग के समान प्रयुक्त होने वाले संस्कृत के अव्यय

उपसर्ग	अर्थ	शब्द
अधः-	नीचे	अधःपतन, अधोगति, अधोमुखी, अधोलिखित
अंतः-	भीतरी	अंतःकरण, अंतःपुर, अंतर्मन, अंतर्देशीय
अ-	अभाव	अशोक, अकाल, अनीति
चिर-	बहुत देर	चिरंजीवी, चिरकुमार, चिरकाल, चिरायु
पुनर्-	फिर	पुनर्जन्म, पुनर्लेखन, पुनर्जीवन
बहिर्-	बाहर	बहिर्गमन, बहिर्जगत्
सत्-	सच्चा	सज्जन, सत्कर्म, सदाचार, सत्कार्य
पुरा-	पुरातन	पुरातत्व, पुरावृत्त
सम-	समान	समकालीन, समदर्शी, समकोण, समकालिक
सह-	साथ	सहकार, सहपाठी, सहयोगी, सहचर

प्रत्यय (Suffixes)

- प्रत्यय = प्रति *(साथ में पर बाद में)* + अय *(चलनेवाला)* शब्द का अर्थ है पीछे चलना।
- जो शब्दांश शब्दों के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे—दयालु = दया शब्द के अंत में आलु जुड़ने से अर्थ में विशेषता आ गई है। अतः यहाँ 'आलु' शब्दांश प्रत्यय है।
- प्रत्ययों का अपना अर्थ कुछ भी नहीं होता और न ही इनका प्रयोग स्वतंत्र रूप से किया जाता है।
- प्रत्यय के दो भेद हैं—1. कृत् प्रत्यय, 2. तद्धित प्रत्यय
- वे प्रत्यय जो क्रिया के मूल रूप यानी धातु *(root word)* में जोड़े जाते हैं, कृत प्रत्यय कहलाते हैं। कृत् प्रत्यय से बने शब्द कृदन्त *(कृत् + अंत)* शब्द कहलाते हैं। जैसे—लिख् + अक = लेखक। यहाँ अक कृत् प्रत्यय है तथा लेखक कृदन्त शब्द है।
- वे प्रत्यय जो क्रिया के मूल रूप यानी धातु को छोड़कर अन्य शब्दों—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण व अव्यय—में जुड़ते हैं, तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। तद्धित प्रत्यय से बने शब्द तद्धितांत शब्द कहलाते हैं। जैसे—सेठ + आनी = सेठानी। यहाँ आनी तद्धित प्रत्यय है तथा सेठानी तद्धितांत शब्द है।
- इस प्रकार कृत् और तद्धित प्रत्यय में मूल अंतर यह है कि कृत् प्रत्यय धातुओं में लगते हैं, जबकि तद्धित प्रत्यय धातुभिन्न शब्दों में लगते हैं।
- दोनों प्रत्ययों में समानता यह है कि दोनों प्रकार के प्रत्ययों से बननेवाले शब्द संज्ञा या विशेषण होते हैं।
- हिन्दी के प्रायः सभी कृत् एवं तद्धित प्रत्यय संस्कृत के कृत् एवं तद्धित प्रत्ययों से ही विकसित हुए हैं।

1. हिन्दी के कृत् प्रत्यय (Primary Suffixes)

प्रत्यय	मूल शब्द/धातु	उदाहरण
–अक्कड़	घूम, पी, बूझ, भूल	घुमक्कड़, पियक्कड़, बुझक्कड़, भुलक्कड़
–अन्त/अन्तू	भिड़, रट; उड़, घूम	भिड़न्त, रटन्त; उड़न्तू, घुमन्तू
–आ	घेर, छाप, ठेल, झूल	घेरा, छापा, ठेला, झूला
–आई	छा, धो, पढ़, सी	छवाई, धुलाई, पढ़ाई, सिलाई
–आऊ	टिक, बिक	टिकाऊ, बिकाऊ
–आक/आका/आकू/अंकू	तैर; उड़; लड़; लड़	तैराक; उड़ाका; लड़ाकू; लड़ंकू
–आन	चढ़, ढल, धस, भस	चढ़ान, ढलान, धसान, भसान
–आप/आपा	मिल; पूजा	मिलाप; पुजापा
–आव/आवा	घूम, चुन, दब, बह; छल, बढ़	घुमाव, चुनाव, दबाव, बहाव; छलावा, बढ़ावा
–आवट	थक, रोक, लिख,सजा	थकावट, रुकावट, लिखावट
–आवन/आवना/आवनी	मनभा, सुहा; डरा, लूभा; चेता	मनभावन, सुहावन; डरावना, लुभावना; चेतावनी
–आहट	घबरा, चिकना, चिल्ला, जगमग	घबराहट, चिकनाहट, चिल्लाहट, जगमगाहट
–इयल	अड़, मर, सड़	अड़ियल, मरियल, सड़ियल
–ई	छूट, बोल, हँस; टाँक, फाँस; परख	छुट्टी, बोली, हँसी; टाँकी, फाँसी; पारखी
–इया	घट, जड़, धुन, बढ़, भूँज	घटिया, जड़िया, धुनिया, बढ़िया, भुँजिया
–उआ	टहल, तर, पढ़	टहलुआ, तरुआ, पढ़ुआ
–ऊ	कमा, खा, चाल, रट	कमाऊ, खाऊ, चालू, रट्टू
–एरा	बस, लूट	बसेरा, लुटेरा
–ऐत	फेंक, लड़	फेंकैत, लड़ैत
–ऐया	काट, बचा, बाँट, रच	कटैया, बचैया, बटैया, रचैया
–ऐल	बिगड़, रख	बिगड़ैल, रखैल
–ओड़/ओड़ा	चाट, हँस; चाट, हँस	चटोर, हँसोड़; चटोरा, हँसोड़ा
–औता/औती	समझा; चुन, मान	समझौता; चुनौती, मनौती
–औना/औनी	खेल, घिना; ठहरा,पहर	खिलौना, घिनौना; ठहरौनी, पहरौनी
–औवल	फोड़, बूझ, मना, मींच	फुड़ौवल, बुझौवल, मनौवल, मिचौवल
–क/की	उठ, बैठ; डूब, फिर	उठक, बैठक; डुबकी, फिरकी
–त/ता/ती	खप, बच, रँग; पढ़, लिख; घट, बढ़	खपत, बचत, रँगत; पढ़ता, लिखता; घटती, बढ़ती
–न/ना/नी	खा, जमा, धड़क, लगा; छान, नाप; काट, चाट, छाँट, सूँघ	खान, जामन, धड़कन, लगान, छनना, नपना; कटनी, चटनी, छँटनी, सुँघनी

प्रत्यय	मूल शब्द/धातु	उदाहरण
–वैया	खा, खे, गा, रख	खवैया, खेवैया, गवैया, रखवैया
–हा	काट	कटहा

2. हिन्दी के तद्धित प्रत्यय (Nominal Suffixes)

प्रत्यय	शब्द	उदाहरण
–आ	भूख, प्यास, खार, प्यार; कड़ू, बाबू, बेटी, मुट्ठी; आप, डाकू	भूखा, प्यासा, खारा, प्यारा; कड़ुवा, बबुआ, बिटिया, मुठिया
–आईद	चिरा (चिता), विष, सड़ा	चिरायँद, विषाईंद, सड़ाईंद
–आई	अच्छा, खट्टा, मीठा, लाल	अच्छाई, खटाई, मिठाई, ललाई
–आऊ	घर, पण्डित	घराऊ, पण्डिताऊ
–आक/आका	चट, तड़, भड़, सड़; कड़, धम, सन	चटाक, तड़ाक, भड़ाक, सड़ाक; कड़ाका, धमाका, सनाका
–आटा	खर, फर	खर्राटा, फर्राटा
–आन/आनी	ऊँचा, चौड़ा, लम्बा; देवर, नौकर	ऊँचान, चौड़ान लम्बान; देवरानी, नौकरानी
–आयत	अपना, बहुत	अपनायत, बहुतायत
–आर/आरा/आरी	दूध, सोना; घास, भट्ठी; पूजा, भीख	दुधार, सोनार; घसियारा, भठियारा; पुजारी, भिखारी
–आलू	झगड़ा, लज्जा	झगड़ालू, लजालू
–आव	मोटा	मुटाव
–आस	खट्टा, मीठा	खटास, मिठास
–आहट/आहत	कड़ुवा, गरम, चिकना; भलमानस	कड़ुवाहट, गरमाहट, चिकनाहट; भलमनसाहत
–इन	जोगी, तेली, माली	जोगिन, तेलिन, मालिन
–इम	रक्त, स्वन, स्वर्ण	रक्तिम, स्वनिम, स्वर्णिम
–इयल	तोंद, दाढ़ी	तोंदियल, दढ़ियल
–इया	आढ़त, रसोई; आसाम, कन्नौज; अंग, जाँघ, आम, खाट, पुल, बूँद	अढ़तिया, रसोइया; असमिया, कन्नौजिया; अँगिया, जँघिया; अमिया, खटिया, पुलिया, बुँदिया
–इयाली	खुश, हरा	खुशियाली, हरियाली
–ई	अगूठा, कंठ, चैत, बिहार, लखनऊ, हलवा, सरकार; घूँट, वैद्य	अँगूठी, कंठी, चैती, बिहारी, लखनवी, हलवाई, सरकारी; घूँटी (घुट्टी), बैदई
–ईला	खर्च, गोबर, छवि, जहर, नोक, पत्थर, पानी, फुर्ती, रंग, रस, रेत, शर्म, सुर, हठ	खर्चीला, गुबरीला, छबीला, जहरीला, नुकीला, पथरीला, पनीला, फुर्तीला, रँगीला, रसीला, रेतीला, शर्मीला, सुरीला, हठीला
–उआ	आगे, गेर, फाग, मच्छ, शहर	अगुआ, गेरुआ, फगुआ, मछुआ, शहरुआ
–ऊ	गरज, ढाल, नाक, पीठ, पेट, हित	गरजू, ढालू, नक्कू, पेटू, हितू
–ए	धीरा, पीछा, बदला, लेखा, सामना	धीरे, पीछे, बदले, लेखे, सामने
–एर/एरा	अंध, घन, चाचा, फूफा, मामा, मच्छ, साँप	अंधेर, घनेरा, चचेरा, फुफेरा, ममेरा, मछेरा, सँपेरा
–एरी/एड़ी	पूजा, भाँग; गाँजा	पुजेरी, भँगेरी; गँजेड़ी
–एला	आधा, मोर	अधेला, मुरेला
–एलू	घर	घरेलू
–ऐत	डाका, बरछा, भाला, लाठी	डकैत, बरछैत, भालैत, लठैत
–ऐल/ऐला	खपरा, गुस्सा, दूध, मूँछ; विष	खपरैल, गुस्सैल, दूधैल, मुँछैल; विषैला
–ओट/ओटा	लिंग; चाम	लंगोट; चमोटा
–ओला	आम, खाट, माँझ, साँप	अमोला, खटोला, मँझोटा, सँपोला
–औटा/औटी	काजर, पहला, बिल्ली, मुख, हिरन; कष, चाम	कजरौटा, पहिलौटा, बिलौटा, मुखौटा, हिरनौटा; कसौटी, चमौटी
–औड़ा	हाथ	हथौड़ा
–औता	काठ	कठौता
–क	ठंढ, ढोल, धड़, धम	ठंढक, ढोलक, धड़क, धमक
–का/की	एक, चार, छोटा, बड़ा; कण, लोटा	इक्का, चौका, छुटका, बड़का; कनकी, लुटकी
–टा	काला, चोर, नंगा, रोम	कलूटा, चोट्टा, लंगटा, रोंगटा
–ड़/ड़ा ड़ी	भूख, लंग; चर्म, टूक, दुख, पीछा, बच्छ, मुख; आँत, टाँग, पंख, पलंग	भुक्खड़, लंगड़; चमड़ा, टुकड़ा, दुखड़ा, पिछड़ा, बछड़ा, मुखड़ा; अँतड़ी, टँगड़ी, पँखड़ी, पलँगड़ी
–पन	अपना, गँवार, छोटा, पागल, फुर्तीला, बच्चा, बड़ा, लड़का, सूना	अपनापन, गँवारपन, छुटपन, पागलपन, फुर्तीलापन, बचपन, बड़प्पन, लड़कपन, सूनापन
–पा	अपना, बहिन, बूढ़ा, राँड़	अपनापा, बहिनापा, बुढ़ापा, रँडापा
–री	कोठा, मोटा	कोठरी, मोटरी
–ला/ली	ऊपर, धुंध, नीचे, पीछे, लाड़; खाज, टीका, डफ, सूप	उपरला, धुंधला, निचला, पिछला, लाड़ला; खुजली, टिकली, डफली, सुपली
–वन्त/वन्ती	गुण, धन, बल, रूप, शील; फूल	गुणवन्त, धनवन्त, बलवन्त, रूपवन्त, शीलवन्त, फुलवन्ती
–वाल/वाला	केजरी, धारी, प्रयाग; गाड़ी, धन, पढ़ना, बाजा, लड़का, लड़की, लोहा	केजरीवाल, धारीवाल, प्रयागवाल; गाड़ीवाला, धनवाला, पढ़नेवाला, बाजावाला, लड़कावाला, लड़कीवाला, लोहेवाला
–वाँ	पाँच, सात, आठ, नव	पाँचवाँ, सातवाँ, आठवाँ, नवाँ
–वा	बच्चा, बेटा, लोटा	बचवा, बेटवा, लोटवा
–सा	आप, तुम, मुझ, राम	आप-सा, तुम-सा, मुझ-सा, राम-सा

➢ प्रत्ययों के पूर्वोक्त वर्गीकरण *(कृत् व तद्धित)* को कई भाषाविद् उचित नहीं मानते हैं क्योंकि हिन्दी में कई प्रत्यय ऐसे हैं जो दोनों रूपों में आते हैं अर्थात् धातु में भी जुड़ते हैं और संज्ञा आदि शब्दों में भी जुड़ते हैं; जैसे—

एरा — लुट + एरा (कृत् प्रत्यय) = लुटेरा
चाचा + एरा (तद्धित प्रत्यय) = चचेरा

आई — पढ़ + आई (कृत् प्रत्यय) = पढ़ाई
भला + आई (तद्धित प्रत्यय) = भलाई

नी — कतर + नी (कृत् प्रत्यय) = कतरनी
ऊंट + नी (तद्धित प्रत्यय) = ऊंटनी

➢ ये भाषाविद् प्रत्ययों के वर्गीकरण के लिए ऐतिहासिक आधार को उचित ठहराते हैं।

➢ इतिहास या स्रोत के आधार पर हिन्दी प्रत्ययों को चार वर्गों में विभाजित किया जाता है —

(A) तत्सम प्रत्यय (B) तद्भव प्रत्यय
(C) देशज प्रत्यय (D) विदेशज प्रत्यय।

(A) तत्सम प्रत्यय

प्रत्यय	बोधक / अर्थ	उदाहरण
-आ	स्त्री. प्रत्यय; भाववाचक संज्ञा प्रत्यय	आदरणीया, प्रिया, माननीया, सुता, इच्छा, पूजा
-आनी	स्त्री० प्रत्यय	देवरानी, भवानी, मेहतरानी
-आलु	विशेषण प्रत्यय, वाला	कृपालु, दयालु, निद्रालु, श्रद्धालु
-इत	विशेषण प्रत्यय, युक्त	पल्लवित, पुष्पित, फलित, हर्षित
-इमा	भाववाचक संज्ञा प्रत्यय	गरिमा, नीलिमा, मधुरिमा, महिमा
-इक	विशेषण व संज्ञा प्रत्यय	दैनिक, वैज्ञानिक, वैदिक, लौकिक
-क	स्वार्थे, समूह	घटक, ठंढक, शतक, सप्तक
-कार	लिखने या बनाने वाला; वाला	पत्रकार; जानकार
-ज	जन्मा हुआ	अंडज, जलज, पंकज, पिंडज, देशज, विदेशज
-जीवी	जीनेवाला	परजीवी, बुद्धिजीवी, लघुजीवी, दीर्घजीवी
-ज्ञ	जाननेवाला	अज्ञ, मर्मज्ञ, विज्ञ, सर्वज्ञ
-तः	क्रियाविशेषण प्रत्यय	अंशतः, वस्तुतः, स्वतः, सामान्यतः
-तया	क्रिया विशेषण प्रत्यय	मुख्यतया, विशेषतया, सामान्यतया
-तर	तुलना बोधक प्रत्यय	उच्चतर, निम्नतर, सुन्दरतर, श्रेष्ठतर
-तम	सर्वाधिकता बोधक प्रत्यय	उच्चतम, निकृष्टतम, महत्तम, लघुतम
-ता	भाववाचक संज्ञा प्रत्यय	नवीनता, मधुरता, सुन्दरता
-त्व	भाववाचक संज्ञा प्रत्यय	कृतित्व, ममत्व, महत्व, सतीत्व
-मान्	विशेषण वाचक प्रत्यय	विद्यमान, सेव्यमान, बुद्धिमान
-वान्	वाला	गुणवान, धनवान, बलवान, रूपवान

(B) तद्भव प्रत्यय

प्रत्यय	बोधक / अर्थ	उदाहरण
-अंगड़	वाला	बतंगड़
-अंतू	वाला	रटंतू , घुमंतू
-अत	संज्ञा प्रत्यय	खपत, पढ़त, रंगत, लिखत
-आँघ	संज्ञा प्रत्यय	बिषाँघ, सड़ाँघ
-आ	भाववाचक	जोड़ा, फोड़ा, झगड़ा, रगड़ा
-आई	भाववाचक प्रत्यय	कठिनाई, बुराई, सफाई
-आऊ	वाला	खाऊ, टिकाऊ, पंडिताऊ, बिकाऊ
-आप/-आपा	भाववाचक प्रत्यय	मिलाप, अपनापा, पुजापा, बुढ़ापा, रँडापा
-आर/-आरा/ आरी	करनेवाला	कुम्हार, लुहार, चमार; घसियारा; पुजारी, भिखारी
-आलू	करनेवाला	झगड़ालू, दयालू
-आवट	भाववाचक प्रत्यय	कसावट, बनावट, बिनावट, लिखावट, सजावट
-आस	इच्छावाचक प्रत्यय	छपास, प्यास, लिखास, निकास
-आहट/-आहत	भाववाचक प्रत्यय	गड़गड़ाहट, घबराहट, चिल्लाहट; मलमनसाहत
-इन	स्त्री० प्रत्यय	जुलाहिन, ठकुराइन, तेलिन, पुजारिन
-इया	वाला; लघुत्व बोधक; स्त्री० प्रत्यय	कनौजिया, पर्वतिया, भोजपुरिया; चुटिया; चुहिया, डिबिया
-ई	वाला; स्त्री० प्रत्यय	घमंडी, लालची, ऊनी, सूती; घोड़ी, लड़की, नानी, चाची
-ईला	वाला	चमकीला, पथरीला, शर्मीला, हठीला
-एरा	वाला	कँसेरा, चचेरा, फुफेरा, बहुतेरा, ममेरा, लुटेरा
-औड़ा/-औड़ी	लिंगवाचक	पकौड़ा, मुगौड़ा, सेवड़ा, रेवड़ी
-जा	जन्मा हुआ	भतीजा, भांजा, आत्मजा
-ड़/-र	स्वार्थिक	चमड़ा, चमड़ी, बछड़ा, लँगड़ा, लोथड़ा
-त/-ता	भाववाचक, कर्मवाचक	चाहत, मिल्लत; आता, खाता, जाता, सोता
-पन	भाववाचक प्रत्यय	छुटपन, बचपन, बड़प्पन, पागलपन
-ल/-ला/-ली	विशेषण, अल्पार्थक	अगल, धुँधला, निचला, पिछला, टिकली, डफली, सुपली
-वाला	कर्तृवाचक, विशेषण	अपनेवाला, ऊपरवाला, खानेवाला, जानेवाला, तौंगेवाला, लालवाला

(C) देशज प्रत्यय

प्रत्यय	बोधक अर्थ	उदाहरण
-अक्कड़	वाला	घुमक्कड़, पियक्कड़, भुलक्कड़
-अड़	स्वार्थिक	अंघड़, भुक्खड़
-आक	भाववाचक	चटाक, धड़ाक, धड़ाका, धमाका, फटाक
-आटा	भाववाचक	खर्राटा, फर्राटा
-इयल	वाला	अड़ियल, दढ़ियल, सड़ियल

(D) विदेशज/ विदेशी प्रत्यय

(i) अरबी-फ़ारसी प्रत्यय

प्रत्यय	बोधक / अर्थ	उदाहरण
-आ	भाववाचक	सफेदा, खराबा
-आना	भाववाचक, विशेषण वाचक	जुर्माना, दस्ताना, मर्दाना, मस्ताना जनाना
-आनी	संबंधवाचक	जिस्मानी, बर्फ़ानी, रूहानी
-इयत	भाववाचक	अंग्रेज़ियत, असलियत, आदमियत इंसानियत, ख़ैरियत
-कार	करनेवाला	काश्तकार, दस्तकार, सलाहकार पेशकार
-खोर	खानेवाला	गमख़ोर, घूसख़ोर, रिश्वतखोर, हरामख़ोर
-गर/गरी/ -गिरी	करनेवाला	कारीगर, कीमियागर, बाज़ीगर; जादूगरी कुलीगिरी, बाबूगिरी,
-गार	करनेवाला	परहेज़गार, मददगार, यादगार, रोज़गार
-गाह	स्थानवाचक	ईदगाह, चरागाह, बन्दरगाह
-गी	भाववाचक संज्ञा प्रत्यय	गन्दगी, जिन्दगी, बंदगी
-चा/ची	वाला	देगचा, बगीचा, इलायची, डोलची संदूकची, बाबरची
-ज़ाद/-ज़ादा/ -ज़ादी	जन्मा	आदमज़ाद; हरामज़ादा, शाहज़ादा शाहज़ादी
-दाँ	जानने वाला	उर्दूदाँ, कब्रदाँ, कानूनदाँ
-दान/ -दानी	स्थिति वाचक, आधार	इत्रदान, कलमदान, पीकदान; गोंददानी, चायदानी
-दार	वाला	ईमानदार, कर्जदार, दूकानदार, मालदार, फौजदार
-नाक	वाला	खतरनाक, खौफनाक, दर्दनाक, शर्मनाक
-बाज़/ -बाज़ी	वाला	चालबाज़, धोखेबाज़, मुकदमेबाज़ चालबाज़ी, धोखेबाज़ी, मुकदमेबाज़ी
-बान	वाला	दरबान, बागबान, मेजबान
-मंद	वाला	अक्लमंद, जरूरतमंद, दौलतमंद
-साज	वाला	घड़ीसाज

(ii) अंग्रेज़ी प्रत्यय

प्रत्यय	बोधक/अर्थ	उदाहरण
-इज्म	वाद/ मत	कम्युनिज्म, बुद्धिज्म, सोशलिज्म, मार्क्सिज्म
-इस्ट	वादी/व्यक्ति	कम्युनिस्ट, बुद्धिस्ट, मार्क्सिस्ट, सोशलिस्ट

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. उपसर्ग का प्रयोग होता है—
(a) शब्द के आदि (आरंभ) में (b) शब्द के मध्य में
(c) शब्द के अंत में (d) इनमें से कोई नहीं

2. जो धातु या शब्द के अंत में जोड़ा जाता है, उसे क्या कहते हैं ?
(a) समास (b) अव्यय (c) उपसर्ग (d) प्रत्यय

3. 'प्रख्यात' में प्रयुक्त उपसर्ग है—
(a) प्र (b) त (c) प्रख (d) आत
(बी०एड०, 1996)

4. 'प्रत्युत्पन्नमति' शब्द में कौन-सा उपसर्ग है?
(a) प्र (b) प्रति
(c) प्रत्यु (d) इनमें से कोई नहीं
(रेलवे, 1997)

5. 'गमन' शब्द को विपरीतार्थक बनाने के लिए आप किस उपसर्ग का प्रयोग करेंगे ?
(a) उप (b) आ (c) प्रति (d) अनु
(रेलवे, 1997)

6. 'निर्वासित' में प्रत्यय है—
(a) इक (b) नि (c) सित (d) इत
(रेलवे, 1997)

7. 'लेखक' शब्द के अंत में कौन-सा प्रत्यय लगा हुआ है?
(a) क (b) इक (c) आक (d) अक
(रेलवे, 1997)

8. 'अनुज' शब्द को स्त्रीवाचक बनाने के लिए आप किस प्रत्यय का प्रयोग करेंगे ?
(a) इक (b) ईय (c) आ (d) ई
(रेलवे, 1997)

9. 'सुत्' शब्द को स्त्रीवाचक बनाने के लिए किस प्रत्यय का प्रयोग किया जाएगा ?
(a) ई (b) आ (c) ईय (d) इक
(रेलवे, 1997)

10. 'स्पृश्य' शब्द को विलोमार्थक वनाने के लिए किस उपसर्ग का प्रयोग करेंगे ?
(a) नि (b) अनु (c) अ (d) कु
(रेलवे, 1997)

11. 'प्रतिकूल' शब्द में कौन-सा उपसर्ग प्रयुक्त है ?
(a) प्र (b) परा (c) परि (d) प्रति
(रेलवे, 1998)

12. कौन-सा उपसर्ग 'आचार' शब्द से पूर्व लगने पर उसका अर्थ 'जुल्म' हो जाता है ?
(a) दुर (b) अति (c) निर् (d) अन्
(रेलवे, 1998)

13. निम्नांकित में कौन-सा शब्द कृदन्त प्रत्यय से बना है ?
(a) रंगीला (b) बिकाऊ (c) दुधारू (d) कृपालु
(रेलवे, 1998)

14. किस शब्द में 'आवा' प्रत्यय नहीं है ?
(a) दिखावा (b) चढ़ावा (c) लावा (d) भुलावा
(बी०एड०, 1996)

15. इनमें कौन-सा शब्द समूहवाचक प्रत्यय नहीं है ?
(a) लोग (b) गण (c) वर्ग (d) प्रेस
(ग्राम पंचायत परीक्षा, 1998)

16. 'व्यवस्था' से पूर्व कौन-सा उपसर्ग लगायें कि उसका अर्थ विपरीत हो जाए ?
(a) अ (b) आ (c) अप (d) परि
(रेलवे, 1998)

17. निम्न में से किस शब्द में प्रत्यय का प्रयोग हुआ है ?
(a) विकल (b) अलक (c) पुलक (d) धनिक
(रेलवे, 1998)

18. निम्नलिखित में से किस शब्द में प्रत्यय लगा हुआ है ?
(a) सागर (b) नगर
(c) अगर-मगर (d) जादूगर *(बी०एड०, 1999)*

19. किस शब्द में उपसर्ग का प्रयोग हुआ है ?
(a) उपकार (b) लाभदायक
(c) पढ़ाई (d) अपनापन *(बी०एड०, 1999)*

20. 'अनुवाद' में प्रयुक्त उपसर्ग है—
(a) अ (b) अन (c) अव (d) अनु
(रेलवे, 2000)

21. 'निर्वाह' में प्रयुक्त उपसर्ग है—
(a) नि (b) निः (c) निर (d) निरि
(बी०एड०, 2000)

22. हिन्दी में 'कृत' प्रत्ययों की संख्या कितनी है ?
(a) 28 (b) 30 (c) 42 (d) 50
(रेलवे, 2001)

23. 'कृदन्त' प्रत्यय किन शब्दों के साथ जुड़ते हैं ?
(a) संज्ञा (b) सर्वनाम (c) विशेषण (d) क्रिया
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

24. निम्नलिखित पद 'इक' प्रत्यय लगने से बने हैं। इनमें से कौन-सा पद गलत है ?
(a) दैविक (b) सामाजिक (c) भौमिक (d) पक्षिक
(रेलवे, 2001)

25. किस शब्द की रचना प्रत्यय से हुई है ?
(a) अभियोग (b) व्यायाम
(c) अपमान (d) इनमें से कोई नहीं
(रेलवे, 2002)

26. 'बेइंसाफी' में प्रयुक्त उपसर्ग है—
(a) बे (b) इन (c) बेइ (d) बेइन
(रेलवे, 2002)

27. निम्नलिखित में से उपसर्ग रहित शब्द है—
(a) सुयोग (b) विदेश
(c) अत्यधिक (d) सुरेश *(बी०एड०, 2003)*

28. 'बहाव' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय कौन-सा है ?
(a) बह (b) हाव (c) आव (d) आवा
(रेलवे, 2003)

29. 'विज्ञान' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है—
(a) विज्ञ (b) ज्ञान (c) वि (d) अन
(बी०एड०, 2004)

30. 'चिरायु' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है—
(a) चि (b) चिर (c) यु (d) आयु
(बी०एड०, 2004)

31. 'धुंधला' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है—
(a) धुं (b) धुंध
(c) ला (d) इनमें से कोई नहीं
(बी०एड०, 2004)

32. 'दोषहर्ता' में प्रत्यय का चयन कीजिए—
(a) हर्ता (b) हर (c) हत (d) हारी
(बी०एड०, 2004)

33. किस शब्द में उपसर्ग नहीं है ?
(a) अपवाद (b) पराजय (c) प्रभाव (d) ओढ़ना
(बी०एड०, 2005)

34. संस्कार शब्द में किस उपसर्ग का प्रयोग हुआ है ?
(a) सम् (b) सन्
(c) सम्स (d) सन्स
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

35. 'पुरोहित' में उपसर्ग है—
(a) पुरस् (b) पुरः (c) पुरा (d) पुर

36. 'अवनत' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है—
(a) नत (b) अ (c) अव (d) अवन

37. 'सावधानी' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है—
(a) ई (b) इ (c) धानी (d) आनी

38. 'कनिष्ठ' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है—
(a) इष्ठ (b) इष्ट (c) ष्ठ (d) ष्ट

उत्तरमाला

1. (a)	2. (d)	3. (a)	4. (b)	5. (b)	6. (d)	7. (d)	8. (c)	9. (b)	10. (c)	11. (d)	12. (b)
13. (b)	14. (c)	15. (d)	16. (a)	17. (d)	18. (d)	19. (a)	20. (d)	21. (c)	22. (c)	23. (d)	24. (d)
25. (d)	26. (a)	27. (d)	28. (c)	29. (c)	30. (b)	31. (c)	32. (a)	33. (d)	34. (a)	35. (b)	36. (c)
37. (a)	38. (a)										

व्याख्यात्मक उत्तर

22. (c) हिन्दी के प्रसिद्ध वैयाकरण पं. कामता प्रसाद गुरु ने हिन्दी में 'कृत' प्रत्ययों की संख्या 42 मानी है।

★★★

समास
(Compound)

06

➢ समास शब्द दो शब्दों 'सम्' (संक्षिप्त) एवं 'आस' (कथन/शब्द) के मेल से बना है जिसका अर्थ है—संक्षिप्त कथन या शब्द । समास प्रक्रिया में शब्दों का संक्षिप्तीकरण किया जाता है।

➢ समास : दो अथवा दो से अधिक शब्दों से मिल कर बने हुए नए सार्थक शब्द को समास कहते हैं।

➢ समस्त-पद / सामासिक पद : समास के नियमों से बना शब्द समस्त-पद या सामासिक शब्द कहलाता है।

➢ समास-विग्रह : समस्त पद के सभी पदों को अलग-अलग किए जाने की प्रक्रिया समास-विग्रह या व्यास कहलाती है; जैसे— 'नील कमल' का विग्रह 'नीला है जो कमल' तथा 'चौराहा' का विग्रह है— चार राहों का समूह ।

➢ समास रचना में प्रायः दो पद होते हैं। पहले को पूर्वपद और दूसरे को उत्तरपद कहते हैं; जैसे—'राजपुत्र' में पूर्वपद 'राज' है और उत्तरपद 'पुत्र' है। समास प्रक्रिया में पदों के बीच की विभक्तियाँ लुप्त हो जाती हैं, जैसे—राजा का पुत्र = राजपुत्र। यहाँ 'का' विभक्ति लुप्त हो गई है। इसके अलावा कई शब्दों में कुछ विकार भी आ जाता है; जैसे—काठ की पुतली = कठपुतली (काठ के 'का' का 'क' बन जाना); घोड़े का सवार = घुड़सवार (घोड़े के 'घो' का 'घु' बन जाना)।

समास के भेद

समास के छह मुख्य भेद हैं—

1. अव्ययीभाव समास *(Adverbial Compound)*
2. तत्पुरुष समास *(Determinative Compound)*
3. कर्मधारय समास *(Appositional Compound)*
4. द्विगु समास *(Numeral Compound)*
5. द्वंद्व समास *(Copulative Compound)*
6. बहुव्रीहि समास *(Attributive Compound)*

पदों की प्रधानता के आधार पर वर्गीकरण—

पूर्वपद प्रधान — अव्ययीभाव
उत्तरपद प्रधान — तत्पुरुष, कर्मधारय व द्विगु
दोनों पद प्रधान — द्वंद्व
दोनों पद अप्रधान — बहुव्रीहि *(इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान होता है)*

1. अव्ययीभाव समास : जिस समास का पहला पद *(पूर्वपद)* अव्यय तथा प्रधान हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं; जैसे—

पहचान : पहला पद अनु, आ, प्रति, भर, यथा, यावत, हर आदि होता है ।

पूर्वपद–अव्यय	+	उत्तरपद	=	समस्त-पद	विग्रह
प्रति	+	दिन	=	प्रतिदिन	प्रत्येक दिन
आ	+	जन्म	=	आजन्म	जन्म से लेकर
यथा	+	संभव	=	यथासंभव	जैसा संभव हो
अनु	+	रूप	=	अनुरूप	रूप के योग्य
भर	+	पेट	=	भरपेट	पेट भर के
प्रति	+	कूल	=	प्रतिकूल	इच्छा के विरुद्ध
हाथ	+	हाथ	=	हाथों-हाथ	हाथ ही हाथ में

2. तत्पुरुष समास : जिस समास में बाद का अथवा उत्तरपद प्रधान होता है तथा दोनों पदों के बीच का कारक-चिह्न लुप्त हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं; जैसे—

राजा का कुमार = राजकुमार,
धर्म का ग्रंथ = धर्मग्रंथ,
रचना को करने वाला = रचनाकार

तत्पुरुष समास के भेद : विभक्तियों के नामों के अनुसार छह भेद हैं—

(i) कर्म तत्पुरुष *(द्वितीया तत्पुरुष)* : इसमें कर्म कारक की विभक्ति 'को' का लोप हो जाता है; जैसे—

विग्रह	समस्त-पद
गगन को चूमने वाला	गगनचुंबी
यश को प्राप्त	यशप्राप्त
चिड़ियों को मारने वाला	चिड़ीमार
ग्राम को गया हुआ	ग्रामगत
रथ को चलाने वाला	रथचालक
जेब को कतरने वाला	जेबकतरा

(ii) करण तत्पुरुष *(तृतीया तत्पुरुष)* : इसमें करण कारक की विभक्ति 'से', 'के द्वारा' का लोप हो जाता है; जैसे—

विग्रह	समस्त-पद
करुणा से पूर्ण	करुणापूर्ण
भय से आकुल	भयाकुल
रेखा से अंकित	रेखांकित
शोक से ग्रस्त	शोकग्रस्त
मद से अंधा	मदांध
मन से चाहा	मनचाहा
पद से दलित	पददलित
सूर द्वारा रचित	सूररचित

(iii) संप्रदान तत्पुरुष *(चतुर्थी तत्पुरुष)* : इसमें संप्रदान कारक की विभक्ति 'के लिए' लुप्त हो जाती है; जैसे—

विग्रह	समस्त-पद
प्रयोग के लिए शाला	प्रयोगशाला
स्नान के लिए घर	स्नानघर
यज्ञ के लिए शाला	यज्ञशाला
गौ के लिए शाला	गौशाला
देश के लिए भक्ति	देशभक्ति
डाक के लिए गाड़ी	डाकगाड़ी
परीक्षा के लिए भवन	परीक्षा भवन
हाथ के लिए कड़ी	हथकड़ी

(iv) अपादान तत्पुरुष *(पंचमी तत्पुरुष)* : इसमें अपादान कारक की विभक्ति 'से' *(अलग होने का भाव)* लुप्त हो जाती है; जैसे—

विग्रह	समस्त-पद	विग्रह	समस्त-पद
धन से हीन	धनहीन	ऋण से मुक्त	ऋणमुक्त
पथ से भ्रष्ट	पथभ्रष्ट	गुण से हीन	गुणहीन
पद से च्युत	पदच्युत	पाप से मुक्त	पापमुक्त
देश से निकाला	देशनिकाला	जल से हीन	जलहीन

(v) संबंध तत्पुरुष *(षष्ठी तत्पुरुष)* : इसमें संबंधकारक की विभक्ति 'का', 'के', 'की' लुप्त हो जाती है; जैसे—

विग्रह	समस्त-पद	विग्रह	समस्त-पद
राजा का पुत्र	राजपुत्र	देश की रक्षा	देशरक्षा
राजा की आज्ञा	राजाज्ञा	शिव का आलय	शिवालय
पर के अधीन	पराधीन	गृह का स्वामी	गृहस्वामी
राजा का कुमार	राजकुमार	विद्या का सागर	विद्यासागर

(vi) अधिकरण तत्पुरुष *(सप्तमी तत्पुरुष)* : इसमें अधिकरण कारक की विभक्ति 'में', 'पर' लुप्त हो जाती है; जैसे—

विग्रह	समस्त-पद	विग्रह	समस्त-पद
शोक में मग्न	शोकमग्न	लोक में प्रिय	लोकप्रिय
पुरुषों में उत्तम	पुरुषोत्तम	धर्म में वीर	धर्मवीर
आप पर बीती	आपबीती	कला में श्रेष्ठ	कलाश्रेष्ठ
गृह में प्रवेश	गृहप्रवेश	आनंद में मग्न	आनंदमग्न

नोट : *तत्पुरुष समास के उपर्युक्त भेदों के अलावे कुछ अन्य भेद भी हैं, जिनमें प्रमुख है नञ् समास।*

नञ् समास : जिस समास के पूर्व पद में निषेधसूचक/नकारात्मक शब्द *(अ, अन्, न, ना, गैर आदि)* लगे हों; जैसे— अधर्म *(न धर्म)*, अनिष्ट *(न इष्ट)*, अनावश्यक *(न आवश्यक)*, नापसंद *(न पसंद)*, गैरवाजिब *(न वाजिब)* आदि ।

3. कर्मधारय समास : जिस समस्त-पद का उत्तरपद प्रधान हो तथा पूर्वपद व उत्तरपद में उपमान-उपमेय अथवा विशेषण-विशेष्य संबंध हो, कर्मधारय समास कहलाता है; जैसे—

पहचान : विग्रह करने पर दोनों पद के मध्य में 'है जो', 'के समान' आदि आते हैं।

विग्रह	समस्त-पद
कमल के समान चरण	चरणकमल
कनक की-सी लता	कनकलता
कमल के समान नयन	कमलनयन
प्राणों के समान प्रिय	प्राणप्रिय
चंद्र के समान मुख	चंद्रमुख
मृग के समान नयन	मृगनयन
देह रूपी लता	देहलता
क्रोध रूपी अग्नि	क्रोधाग्नि
लाल है जो मणि	लालमणि
नीला है जो कंठ	नीलकंठ
महान है जो पुरुष	महापुरुष
महान है जो देव	महादेव
आधा है जो मरा	अधमरा
परम है जो आनंद	परमानंद

4. द्विगु समास : जिस समस्त-पद का पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण हो, वह द्विगु समास कहलाता है। इसमें समूह या समाहार का ज्ञान होता है; जैसे—

विग्रह	समस्त-पद
सात सिंधुओं का समूह	सप्तसिंधु
दो पहरों का समूह	दोपहर
तीनों लोकों का समाहार	त्रिलोक
चार राहों का समूह	चौराहा
नौ रात्रियों का समूह	नवरात्र
सात ऋषियों का समूह	सप्तऋषि/सप्तर्षि
पाँच मढ़ियों का समूह	पंचमढ़ी
सात दिनों का समूह	सप्ताह
तीनों कोणों का समाहार	त्रिकोण
तीन रंगों का समूह	तिरंगा

5. द्वंद्व समास : जिस समस्त-पद के दोनों पद प्रधान तथा विग्रह करने पर 'और', 'अथवा', 'या', 'एवं' लगते वह द्वंद्व समास कहलाता है; जैसे—

पहचान : दोनों पदों के बीच प्रायः योजक चिह्न *(Hyphen)* (-) का प्रयोग

विग्रह	समस्त-पद	विग्रह	समस्त-पद
नदी और नाले	नदी-नाले	राजा और प्रजा	राजा-प्रजा
पाप और पुण्य	पाप-पुण्य	नर और नारी	नर-नारी
सुख और दुःख	सुख-दुःख	खरा या खोटा	खरा-खोटा
गुण और दोष	गुण-दोष	राधा और कृष्ण	राधा-कृष्ण
देश और विदेश	देश-विदेश	ठंडा या गरम	ठंडा-गरम
ऊँच या नीच	ऊँच-नीच	छल और कपट	छल-कपट
आगे और पीछे	आगे-पीछे	अपना और पराया	अपना-पराया

6. बहुव्रीहि समास : जिस समस्त-पद में कोई पद प्र नहीं होता, दोनों पद मिल कर किसी तीसरे पद की ओर सं करते हैं, उसमें बहुव्रीहि समास होता है, जैसे—'नीलकंठ', नी है कंठ जिसका अर्थात् शिव। यहाँ पर दोनों पदों ने मिल एक तीसरे पद 'शिव' का संकेत किया, इसलिए यह बहुव्र समास है :

समस्त-पद	विग्रह
लंबोदर	लंबा है उदर जिसका *(गणेश)*
दशानन	दस हैं आनन जिसके *(रावण)*
चक्रपाणि	चक्र है पाणि में जिसके *(विष्णु)*
महावीर	महान वीर है जो *(हनुमान)*
चतुर्भुज	चार हैं भुजाएँ जिसकी *(विष्णु)*
प्रधानमंत्री	मंत्रियों में प्रधान है जो *(प्रधानमंत्री)*
पंकज	पंक में पैदा हो जो *(कमल)*
अनहोनी	न होने वाली घटना *(कोई विशेष घटना)*
गिरिधर	गिरि को धारण करने वाला है जो *(कृष्ण)*
पीतांबर	पीत है अंबर जिसका *(कृष्ण)*
निशाचर	निशा में विचरण करने वाला *(राक्षस)*
चौलड़ी	चार हैं लड़ियाँ जिसमें *(माला)*
त्रिलोचन	तीन हैं लोचन जिसके *(शिव)*
चंद्रमौलि	चंद्र है मौलि पर जिसके *(शिव)*
विषधर	विष को धारण करने वाला *(सर्प)*
मृगेंद्र	मृगों का इंद्र *(सिंह)*
घनश्याम	घन के समान श्याम है जो *(कृष्ण)*
मृत्युंजय	मृत्यु को जीतने वाला (शंकर)

कर्मधारय और बहुव्रीहि समास मे अंतर

इन दोनों समासों में अंतर समझने के लिए इनके वि पर ध्यान देना चाहिए। कर्मधारय समास में एक पद विशे या उपमान होता है और दूसरा पद विशेष्य या उपमेय होता जैसे— 'नीलगगन' में 'नील' विशेषण है तथा 'गगन' वि है। इसी तरह 'चरणकमल' में 'चरण' उपमेय है और 'क उपमान है। अतः ये दोनों उदाहरण कर्मधारय समास के है

बहुव्रीहि समास में समस्त पद ही किसी संज्ञा के विश का कार्य करता है; जैसे—'चक्रधर' चक्र को धारण करता है अर्थात् 'श्रीकृष्ण'।

नीलकंठ — नीला है जो कंठ—कर्मधारय समास।

नीलकंठ — नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिव—बहु समास।

लंबोदर — मोटे पेट वाला—कर्मधारय समास।

लंबोदर — लंबा है उदर जिसका अर्थात् गणेश—बहु समास।

द्विगु और बहुव्रीहि समास में अंतर

द्विगु समास का पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है और दूसरा पद विशेष्य होता है जबकि बहुव्रीहि समास में समस्त पद ही विशेषण का कार्य करता है; जैसे—

चतुर्भुज—चार भुजाओं का समूह—द्विगु समास।
चतुर्भुज—चार हैं भुजाएँ जिसकी अर्थात् विष्णु—बहुव्रीहि समास।
पंचवटी—पाँच वटों का समाहार—द्विगु समास।
पंचवटी—पाँच वटों से घिरा एक निश्चित स्थल अर्थात् दंडकारण्य में स्थित वह स्थान जहाँ वनवासी राम ने सीता और लक्ष्मण के साथ निवास किया—बहुव्रीहि समास।
दशानन—दस आननों का समूह—द्विगु समास।
दशानन—दस आनन हैं जिसके अर्थात् रावण—बहुव्रीहि समास।

द्विगु और कर्मधारय में अंतर

(i) द्विगु का पहला पद हमेशा संख्यावाचक विशेषण होता है जो दूसरे पद की गिनती बताता है जबकि कर्मधारय का एक पद विशेषण होने पर भी संख्यावाचक कभी नहीं होता है।

(ii) द्विगु का पहला पद ही विशेषण बन कर प्रयोग में आता है जबकि कर्मधारय में कोई भी पद दूसरे पद का विशेषण हो सकता है; जैसे—

नवरत्न — नौ रत्नों का समूह — द्विगु समास
चतुर्वर्ण — चार वर्णों का समूह — द्विगु समास
पुरुषोत्तम — पुरुषों में जो है उत्तम — कर्मधारय समास
रक्तोत्पल — रक्त है जो उत्पल — कर्मधारय समास

संधि और समास में अंतर

अर्थ की दृष्टि से यद्यपि दोनों शब्द समान हैं अर्थात् दोनों का अर्थ 'मेल' ही है तथापि दोनों में कुछ भिन्नताएँ हैं जो निम्नलिखित हैं—

(i) संधि वर्णों का मेल है और समास शब्दों का मेल है।
(ii) संधि में वर्णों के योग से वर्ण परिवर्तन भी होता है जबकि समास में ऐसा नहीं होता ।
(iii) समास में बहुत से पदों के बीच के कारक-चिह्नों का अथवा समुच्चयबोधकों का लोप हो जाता है; जैसे—

विद्या + आलय = विद्यालय — संधि
राजा का पुत्र = राजपुत्र — समास

(iv) संधि के तोड़ने को 'संधि-विच्छेद' कहते हैं, जबकि समास के पदों को अलग करने को 'समास-विग्रह'।

समास-निर्णय की समस्या

➢ जब परीक्षक 'शब्द' देते हैं और उसमें समास को चिह्नित करने के लिए परीक्षार्थी से कहते हैं, तब परीक्षार्थी के लिए समास-निर्णय की समस्या उठ खड़ी होती है। कारण यह कि समास-विशेष का निर्णय विग्रह से होता है। परिणामतः परीक्षार्थी शब्द का कोई भी विग्रह करने के लिए स्वतंत्र होता है। इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है—विद्याधन। विद्याधन का छः तरह से विग्रह किया जा सकता है—विद्या से (के द्वारा) अर्जित धन (तृतीया तत्पुरुष), विद्या के लिए धन (चतुर्थी तत्पुरुष), विद्या का धन (षष्ठी तत्पुरुष), विद्यारूपी धन (कर्मधारय), विद्या और धन (द्वन्द्व), विद्या है धन जिसका वह, सरस्वती (बहुव्रीहि)।

➢ यदि परीक्षक प्रश्न में स्वतंत्र 'शब्द' की जगह वाक्य में प्रयुक्त शब्द यानी 'पद' में समास बताने को कहे तो यह समस्या नहीं उठेगी, क्योंकि वाक्य में प्रयुक्त होने पर 'शब्द' सीमित होकर 'पद' बन जायेगा और पद का एक ही विग्रह होगा यानी द्विविधा की स्थिति नहीं रहेगी; जैसे—वसंत पंचमी के दिन विद्याधन की पूजा की जाती है (विद्या है धन जिसका, अर्थात् सरस्वती—बहुव्रीहि समास)।

(i) विद्याधर शर्मा की समृद्धि का राज विद्याधन ही है (विद्या से अर्जित धन—तत्पुरुष)। विद्याधन (विद्यारूपी धन—कर्मधारय समास) की चाह रखने वाले को विद्याधन (विद्या है धन जिसका, अर्थात सरस्वती—बहुव्रीहि समास) की पूजा करनी चाहिए।
(ii) मैंने एक पीताम्बर खरीदा (पीला वस्त्र-कर्मधारय समास)। मैंने पीताम्बर की पूजा की (पीत है अम्बर जिसका, अर्थात् विष्णु—बहुव्रीहि समास)।

समास-विग्रह

सामासिक पद	विग्रह	समास
अगोचर	न गोचर	नञ्
अचल	न चल	नञ्
अजन्मा	न जन्मा	नञ्
अठन्नी	आठ आनों का समाहार	द्विगु
अधर्म	न धर्म	नञ्
अनन्त	न अन्त	नञ्
अनेक	न एक	नञ्
अनपढ़	न पढ़	नञ्
अनभिज्ञ	न अभिज्ञ	नञ्
अन्याय	न न्याय	नञ्
अनुचित	न उचित	नञ्
अपवित्र	न पवित्र	नञ्
अलौकिक	न लौकिक	नञ्
अनुकूल	कुल के अनुसार	अव्ययीभाव
अनुरूप	रूप के ऐसा	अव्ययीभाव
आसमुद्र	समुद्रपर्यन्त	अव्ययीभाव
आजन्म	जन्म से लेकर	अव्ययीभाव
आशालता	आशा रूपी लता	कर्मधारय
आपबीती	आप पर बीती	सप्तमी तत्पुरुष
आकाशवाणी	आकाश से वाणी	पंचमी तत्पुरुष
आनन्दाश्रम	आनन्द का आश्रम	षष्ठी तत्पुरुष
उपकूल	कूल के निकट	अव्ययीभाव
कठफोड़वा	काठ को फोड़नेवाला	द्वितीया तत्पुरुष
कपीश	कपियों में है ईश जो—हनुमान	बहुव्रीहि
कर्महीन	कर्म से हीन	पंचमी तत्पुरुष
कर्मनिरत	कर्म में निरत	सप्तमी तत्पुरुष
कविश्रेष्ठ	कवियों में श्रेष्ठ	सप्तमी तत्पुरुष
कापुरुष	कायर पुरुष	कर्मधारय
कुम्भकार	कुम्भ को करने *(बनाने)* वाला	उपपद तत्पुरुष
काव्यकार	काव्य की रचना करनेवाला	उपपद तत्पुरुष
कृषिप्रधान	कृषि में प्रधान	सप्तमी तत्पुरुष
कुसुमकोमल	कुसुम के समान कोमल	कर्मधारय
कपोतग्रीवा	कपोत के समान ग्रीवा	कर्मधारय
कपड़ा-लत्ता	कपड़ा और लत्ता	द्वन्द्व
कृष्णार्पण	कृष्ण के लिए अर्पण	चतुर्थी तत्पुरुष
क्षत्रियाधम	क्षत्रियों में अधम	स. तत्पुरुष
खगेश	खगों का ईश है जो वह, गरुड़	बहुव्रीहि
गंगाजल	गंगा का जल	ष० तत्पुरुष
गगनांगन	गगन रूपी आंगन	कर्मधारय

सामासिक पद	विग्रह	समास
गगनचुम्बी	गगन को चूमनेवाला	द्वि० तत्पुरुष
गाड़ी घोड़ा	गाड़ी और घोड़ा	द्वन्द्व
ग्रामोद्धार	ग्राम का उद्धार	ष० तत्पुरुष
गिरकट	गिरह को काटनेवाला	द्वि० तत्पुरुष
गिरिधर	गिरि को धारण करे जो वह, श्रीकृष्ण	बहुव्रीहि
गुरुसेवा	गुरु की सेवा	ष० तत्पुरुष
गोपाल	गो का पालन जो करे वह, श्रीकृष्ण	बहुव्रीहि
गौरीशंकर	गौरी और शंकर	द्वन्द्व
गृहस्थ	गृह में स्थित	उपपद तत्पुरुष
गृहागत	गृह को आगत	कर्म तत्पुरुष
घनश्याम	घन के समान श्याम, घन-सा श्याम है जो वह—श्रीकृष्ण	बहुव्रीहि
घर-द्वार	घर और द्वार	द्वन्द्व
चक्रधर	चक्र को जो धारण करता है वह—विष्णु	बहुव्रीहि
चक्रपाणि	चक्र हो पाणि *(हाथ)* में जिसके वह, विष्णु	बहुव्रीहि
चतुरानन	चार हैं आनन जिनको वह, ब्रह्मा	बहुव्रीहि
चन्द्रभाल	भाल पर चन्द्रमा जिसके है वह, शिव	बहुव्रीहि
चवन्नी	चार आने का समाहार	द्विगु
चन्द्रोदय	चन्द्र का उदय	ष० तत्पुरुष
चन्द्रवदन	चन्द्रमा के समान वदन	कर्मधारय
चरणकमल	कमल के समान चरण	कर्मधारय
चिड़ीमार	चिड़िया को मारनेवाला	द्वितीया तत्पुरुष
चौपाया	चार पांव वाला	द्विगु
चौराहा	चार राहों का मिलन-स्थान	द्विगु
जलज	जल में उत्पन्न होता है वह, कमल	बहुव्रीहि
जलद	जल देता है जो वह, बादल	बहुव्रीहि
जन्मान्ध	जन्म से अन्धा	तृतीया तत्पुरुष
जीवनमुक्त	जीवन से मुक्त	पं० तत्पुरुष
जेबघड़ी	जेब के लिए घड़ी	चतुर्थी तत्पुरुष
ठकुरसुहाती	ठाकुर *(मालिक)* के लिए रुचिकर बातें	च० तत्पुरुष
तिलपापड़ी	तिल से बनी पापड़ी	कर्मधारय
तिलचट्टा	तिल को चाटनेवाला	द्वि० तत्पुरुष
दयासागर	दया का सागर	ष० तत्पुरुष
दहीबड़ा	दही में भिगोया बड़ा	मध्यमपदलोपी कर्मधारय
दानवीर	दान में वीर	स० तत्पुरुष
दिनानुदिन	दिन प्रतिदिन	अव्ययीभाव
दुखसंतप्त	दुःख से संतप्त	तृतीया तत्पुरुष
देशभक्ति	देश के लिए भक्ति	च० तत्पुरुष
देशनिकाला	देश से निकाला	पं० तत्पुरुष
देश-विदेश	देश और विदेश	द्वन्द्व
देवासुर	देव और असुर	द्वन्द्व
देशगत	देश को गया हुआ	द्वि० तत्पुरुष
धनहीन	धन से हीन	पं० तत्पुरुष

सामासिक पद	विग्रह	समास
धर्माधर्म	धर्म और अधर्म	द्वन्द्व
धर्मविमुख	धर्म से विमुख	पं० तत्पुरुष
नरोत्तम	नरों में उत्तम	स० तत्पुरुष
नवयुवक	नव युवक	कर्मधारय
नीलोत्पल	नील उत्पल	कर्मधारय
नीलाम्बर	नीला अम्बर या नीला है अम्बर जिसका वह, बलराम	बहुव्रीहि
नेत्रहीन	नेत्र से हीन	पं० तत्पुरुष
पकौड़ी	पकी हुई बड़ी	मध्यमपदलोपी कर्मधारय
पददलित	पद से दलित	तृ० तत्पुरुष
पदच्युत	पद से च्युत	पं० तत्पुरुष
प्रत्येक	प्रति एक	अव्ययीभाव
प्रतिदिन	दिन-दिन	अव्ययीभाव
परमेश्वर	परम ईश्वर	कर्मधारय
पल-पल	हर पल	अव्ययीभाव
परीक्षोपयोगी	परीक्षा के लिए उपयोगी	च० तत्पुरुष
पाकिटमार	पाकिट को मारने *(काटने)* वाला	द्वि० तत्पुरुष
पाप-पुण्य	पाप और पुण्य	द्वन्द्व
पादप	पैर से पीनेवाला	उपपद तत्पुरुष
पीताम्बर	पीला है अम्बर जिसका वह, श्रीकृष्ण	बहुव्रीहि
पुत्रशोक	पुत्र के लिए शोक	च० तत्पुरुष
पुस्तकालय	पुस्तक का आलय *(घर)*	ष० तत्पुरुष
बार-बार	हर बार	अव्ययीभाव
मनमौजी	मन से मौजी	तृतीया तत्पुरुष
मनगढ़न्त	मन से गढ़ा हुआ	तृ० तत्पुरुष
महाशय	महान् आशय	कर्मधारय
मदमाता	मद से माता	तृ० तत्पुरुष
महारानी	महती रानी	कर्मधारय
मालगोदाम	माल के लिए गोदाम	च० तत्पुरुष
मुरलीधर	मुरली को धरे रहे *(पकड़े रहे)* वह, श्रीकृष्ण	बहुव्रीहि
मृगनयन	मृग के समान नयन	कर्मधारय
यथाक्रम	क्रम के अनुसार	अव्ययीभाव
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार	अव्ययीभाव
यथेष्ट	यथा इष्ट	अव्ययीभाव
रसोईघर	रसोई के लिए घर	च० तत्पुरुष
राधा-कृष्ण	राधा और कृष्ण	द्वन्द्व
रामायण	राम का अयन	ष० तत्पुरुष
राजकन्या	राजा की कन्या	ष० तत्पुरुष
लम्बोदर	लम्बा है उदर जिसका वह, गणेश	बहुव्रीहि
लौहपुरुष	लौह सदृश पुरुष	कर्मधारय
वज्रायुध	वज्र है आयुध जिसका वह, इन्द्र	बहुव्रीहि
विद्यार्थी	विद्या का अर्थी	ष० तत्पुरुष
वीणापाणि	वीणा है पाणि *(हाथ)* में जिसके वह, सरस्वती	बहुव्रीहि

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. दो अथवा दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए नए सार्थक शब्द को क्या कहते हैं ?
   (a) संधि (b) समास (c) अव्यय (d) छंद
2. समास का शाब्दिक अर्थ होता है—
   (a) संक्षेप (b) विस्तार (c) विग्रह (d) विच्छेद
3. निम्नांकित में कौन-सा पद अव्ययीभाव समास है ?
   (a) गृहागत (b) आचारकुशल
   (c) प्रतिदिन (d) कुमारी *(रेलवे, 1997)*
4. जिस समास में उत्तर-पद प्रधान होने के साथ ही साथ पू तथा उत्तर-पद में विशेषण-विशेष्य का संबंध भी होता है, कौन-सा समास कहते हैं ?
   (a) बहुव्रीहि (b) कर्मधारय (c) तत्पुरुष (d) द्वन्द्व *(रेलवे,*
5. निम्नलिखित में से कर्मधारय समास किसमें है ?
   (a) चक्रपाणि (b) चतुर्युगम्
   (c) नीलोत्पलम् (d) माता-पिता *(रेलवे,*

6. जिस समास के दोनों पद अप्रधान होते हैं, वहाँ पर कौन-सा समास होता है ?
(a) द्वन्द्व (b) द्विगु (c) तत्पुरुष (d) बहुव्रीहि
(रेलवे, 1997)

7. 'जितेन्द्रिय' में कौन-सा समास है ?
(a) द्वन्द्व (b) बहुव्रीहि (c) तत्पुरुष (d) कर्मधारय
(रेलवे, 1997)

8. 'देवासुर' में कौन-सा समास है ?
(a) बहुव्रीहि (b) कर्मधारय (c) तत्पुरुष (d) द्वन्द्व
(रेलवे, 1997)

9. 'देशांतर' में कौन-सा समास है ?
(a) बहुव्रीहि (b) द्विगु (c) तत्पुरुष (d) कर्मधारय
(रेलवे, 1997)

10. 'दीनानाथ' में कौस-सा समास है ?
(a) कर्मधारय (b) बहुव्रीहि (c) द्विगु (d) द्वन्द्व
(रेलवे, 1998)

11. 'मुख-दर्शन' में कौन-सा समास है ?
(a) द्विगु (b) तत्पुरुष (c) द्वन्द्व (d) बहुव्रीहि
(रेलवे, 1998)

12. कौन-सा शब्द बहुव्रीहि समास का सही उदाहरण है ?
(a) निशिदिन (b) त्रिभुवन (c) पंचानन (d) पुरुषसिंह
(रेलवे, 1999)

13. 'निशाचर' में कौन-सा समास है ?
(a) अव्ययीभाव(b) कर्मधारय (c) नञ् (d) बहुव्रीहि
(बी०एड०, 2000)

14. 'चौराहा' में कौन-सा समास है ?
(a) बहुव्रीहि (b) तत्पुरुष
(c) अव्ययीभाव (d) द्विगु *(बी०एड०, 2000)*

15. 'दशमुख' में कौन-सा समास है ?
(a) कर्मधारय (b) बहुव्रीहि (c) तत्पुरुष (d) द्विगु
(बी०एड०, 2000)

16. 'सुपुरुष' में कौन-सा समास है ?
(a) तत्पुरुष (b) अव्ययीभाव
(c) कर्मधारय (d) द्वन्द्व
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

17. विशेषण और विशेष्य के योग से कौन-सा समास बनता है ?
(a) द्विगु (b) द्वन्द्व (c) कर्मधारय (d) तत्पुरुष
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

18. निम्नलिखित में से एक शब्द में द्विगु समास है, उस शब्द का चयन कीजिए—
(a) आजीवन (b) भूदान (c) सप्ताह (d) पुरुषसिंह
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

19. किस समास के दोनों शब्दों के समानाधिकरण होने पर कर्मधारय समास होता है ?
(a) तत्पुरुष (b) द्वन्द्व (c) द्विगु (d) बहुव्रीहि
(रेलवे, 2001)

20. किसमें सही सामासिक पद है ?
(a) पुरुषधन्वी (b) दिवारात्रि
(c) त्रिलोकी (d) मंत्रिपरिषद *(रेलवे, 2002)*

21. द्विगु समास का उदाहरण कौन-सा है ?
(a) अन्वय (b) दिन-रात
(c) चतुरानन (d) त्रिभुवन *(बैंक परीक्षा, 2002)*

22. इनमें से द्वन्द्व समास का उदाहरण है—
(a) पीताम्बर (b) नेत्रहीन
(c) चौराहा (d) रुपया-पैसा *(रेलवे, 2002)*

23. अव्ययीभाव समास का एक उदाहरण 'यथाशक्ति' का सही विग्रह क्या होगा ?
(a) जैसी-शक्ति (b) जितनी शक्ति
(c) शक्ति के अनुसार (d) यथा जो शक्ति
(बैंक परीक्षा, 2002)

24. 'पाप-पुण्य' में कौन-सा समास है ?
(a) कर्मधारय (b) द्वन्द्व
(c) तत्पुरुष (d) बहुव्रीहि *(बैंक परीक्षा, 2002)*

25. 'लम्बोदर' में कौन-सा समास है ?
(a) द्वन्द्व (b) द्विगु (c) तत्पुरुष (d) बहुव्रीहि
(बैंक परीक्षा, 2002)

26. 'देशप्रेम' में कौन-सा समास है ?
(a) अव्ययीभाव (b) तत्पुरुष
(c) द्विगु (d) बहुव्रीहि *(बैंक परीक्षा, 2002)*

27. 'परमेश्वर' में कौन-सा समास है ?
(a) द्विगु (b) कर्मधारय (c) तत्पुरुष (d) अव्ययीभाव
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

28. 'अनायास' में कौन-सा समास है ?
(a) नञ् (b) द्वन्द्व (c) द्विगु (d) अव्ययीभाव
(पी०सी०एस०, 2003)

29. 'गोशाला' में कौन-सा समास है ?
(a) तत्पुरुष (b) द्वन्द्व (c) कर्मधारय (d) द्विगु
(पी०सी०एस०, 2003)

30. 'नवग्रह' में कौन-सा समास है ?
(a) द्विगु (b) तत्पुरुष (c) द्वन्द्व (d) कर्मधारय
(पी०सी०एस०, 2003)

31. 'विद्यार्थी' में कौन-सा समास है ?
(a) तत्पुरुष (b) कर्मधारय (c) बहुव्रीहि (d) द्विगु
(पी०सी०एस०, 2003)

32. 'कन्यादान' में कौन-सा समास है ?
(a) बहुव्रीहि (b) तत्पुरुष (c) द्विगु (d) कर्मधारय
(पी०सी०एस०, 2003)

33. 'साग-पात' में कौन-सा समास है ?
(a) अव्ययीभाव (b) द्विगु
(c) कर्मधारय (d) द्वन्द्व *(पी०सी०एस०, 2003)*

34. 'नीलकमल' में कौन-सा समास है ?
(a) बहुव्रीहि (b) तत्पुरुष (c) कर्मधारय (d) द्विगु
(बी० एड०, 2004)

35. 'चतुर्भुज' में कौन-सा समास है ?
(a) द्वन्द्व (b) बहुव्रीहि (c) तत्पुरुष (d) कर्मधारय
(बी० एड०, 2004)

36. 'भाई-बहन' में कौन-सा समास है ?
(a) द्वन्द्व (b) बहुव्रीहि (c) द्विगु (d) तत्पुरुष
(बी० एड०, 2004)

37. 'वनवास' में कौन-सा समास है ?
(a) तत्पुरुष (b) कर्मधारय (c) द्वन्द्व (d) बहुव्रीहि
(बी० एड०, 2004)

38. 'पंचवटी' में कौन-सा समास है ?
(a) नञ् (b) बहुव्रीहि (c) तत्पुरुष (d) कर्मधारय
(बी० एड०, 2005)

39. 'पीताम्बर' में कौन-सा समास है ?
(a) बहुव्रीहि (b) द्वन्द्व (c) कर्मधारय (d) द्विगु
(बी० एड०, 2005)

40. 'नरोत्तम' में कौन-सा समास है ?
(a) कर्मधारय (b) तत्पुरुष (c) अव्ययीभा (d) द्वन्द्व
(बी० एड०, 2005

41. 'आजन्म' शब्द ..... का उदाहरण है—
(a) अव्ययीभाव (b) तत्पुरुष
(c) द्वन्द्व (d) द्विगु *(बी० एड०, 2005)*

42. 'युधिष्ठिर' में कौन-सा समास है ?
(a) तत्पुरुष (b) बहुव्रीहि (c) अलुक (d) कर्मधारय
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

43. 'गगनचुम्बी' में कौन सा समास है ?
(a) बहुव्रीहि (b) अव्ययीभाव
(c) तत्पुरुष (d) कर्मधारय

44. 'धक्का मुक्की' में कौन सा समास है ?
(a) कर्मधारय (b) द्विगु
(c) द्वन्द्व (d) तत्पुरुष

45. 'त्रिफला' में कौन सा समास है ?
(a) अव्ययीभाव (b) द्वन्द्व
(c) द्विगु (d) कर्मधारय

46. 'तन मन धन' में कौन सा समास है ?
(a) अव्ययीभाव (b) कर्मधारय
(c) द्विगु (d) द्वन्द्व

47. 'चक्रपाणि' में कौन सा समास है ?
(a) अव्ययीभाव (b) बहुव्रीहि
(c) कर्मधारय (d) तत्पुरुष

48. 'पाप-पुण्य' में कौन सा समास है ?
(a) द्विगु (b) द्वन्द्व (c) तत्पुरुष (d) कर्मधारय

49. 'पंचवटी' में कौन-सा समास है ?
(a) द्विगु (b) द्वन्द्व (c) कर्मधारय (d) तत्पुरुष
(हरियाणा बी० एड०, 200

50. 'मृगनयनी' में कौन-सा समास है ?
(a) अव्ययीभाव (b) तत्पुरुष
(c) कर्मधारय (d) बहुव्रीहि
(मध्य प्रदेश प्री० बी० एड०, 2007

उत्तरमाला

1. (b)	2. (a)	3. (c)	4. (b)	5. (c)	6. (d)	7. (b)	8. (d)	9. (c)	10. (a)	11. (b)	12. (c)
13. (d)	14. (d)	15. (b)	16. (c)	17. (c)	18. (c)	19. (a)	20. (b)	21. (d)	22. (d)	23. (c)	24. (b)
25. (d)	26. (b)	27. (b)	28. (a)	29. (a)	30. (a)	31. (a)	32. (b)	33. (d)	34. (c)	35. (b)	36. (a)
37. (a)	38. (b)	39. (a)	40. (b)	41. (a)	42. (b)	43. (c)	44. (c)	45. (c)	46. (d)	47. (b)	48. (b)
49. (a)	50. (c)										

★★★

शब्द भेद
(Kinds of Words)

07

➢ हिन्दी के शब्दों के वर्गीकरण के चार आधार हैं—

1. उत्पत्ति/स्रोत/इतिहास,
2. व्युत्पत्ति/रचना/बनावट,
3. रूप/प्रयोग/व्याकरणिक विवेचन
4. अर्थ

1. स्रोत/इतिहास के आधार पर

स्रोत या इतिहास के आधार पर शब्द पाँच प्रकार के होते हैं—

(i) तत्सम : 'तत्सम' *(तत् + सम)* शब्द का अर्थ है— 'उसके समान' अर्थात् संस्कृत के समान । हिन्दी में अनेक शब्द संस्कृत से सीधे आए हैं और आज भी उसी रूप में प्रयोग किए जा रहे हैं। अतः संस्कृत के ऐसे शब्द जिसे हम ज्यों-का-त्यों प्रयोग में लातें हैं, तत्सम शब्द कहलाते है; जैसे—अग्नि, वायु, माता, पिता, प्रकाश, पत्र, सूर्य आदि।

(ii) तद्भव : 'तद्भव' *(तत् + भव)* शब्द का अर्थ है— 'उससे होना' अर्थात् संस्कृत शब्दों से विकृत होकर *(परिवर्तित होकर)* बने शब्द। हिन्दी में अनेक शब्द ऐसे हैं जो निकले तो संस्कृत से ही हैं; पर प्राकृत, अपभ्रंश, पुरानी हिन्दी से गुजरने के कारण बहुत बदल गये हैं। अतः, संस्कृत के जो शब्द प्राकृत, अपभ्रंश, पुरानी हिन्दी आदि से गुजरने के कारण आज परिवर्तित रूप में मिलते हैं, तद्भव शब्द कहलाते है; जैसे—

संस्कृत	प्राकृत	हिन्दी
उज्ज्वल	उज्जल	उजला
कर्पूर	कप्पूर	कपूर
संध्या	संझा	साँझ
हस्त	हत्थ	हाथ

(iii) देशज/देशी : 'देशज' *(देश + ज)* शब्द का अर्थ है —'देश में जन्मा'। अतः ऐसे शब्द जो क्षेत्रीय प्रभाव के कारण परिस्थिति व आवश्यकतानुसार बनकर प्रचलित हो गए हैं, देशज या देशी शब्द कहलाते हैं; जैसे—थैला, गड़बड़, टट्टी, पेट, पगड़ी, लोटा, टाँग, ठेठ आदि।

(iv) विदेशज/विदेशी/आगत : 'विदेशज' *(विदेश + ज)* शब्द का अर्थ है—'विदेश में जन्मा'। 'आगत' शब्द का अर्थ है—आया हुआ। हिन्दी में अनेक शब्द ऐसे हैं जो हैं तो विदेशी मूल के, पर परस्पर संपर्क के कारण यहाँ प्रचलित हो गए हैं। अतः अन्य देश की भाषा से आए हुए शब्द विदेशज शब्द कहलाते हैं। विदेशज शब्दों में से कुछ को ज्यों-का-त्यों अपना लिया गया है *(आर्डर, कम्पनी, कैम्प, क्रिकेट इत्यादि)* और कुछ को हिन्दीकरण *(तद्भवीकरण)* कर के अपनाया गया है । *(ऑफीसर > अफसर, लैनटर्न > लालटेन, हॉस्पिटल > अस्पताल, कैप्टेन > कप्तान इत्यादि।)*

हिन्दी में विदेशज शब्द मुख्यतः दो प्रकार के हैं—मुस्लिम शासन के प्रभाव से आए अरबी-फारसी आदि शब्द तथा यूरोपीय कंपनियों के आगमन व ब्रिटिश शासन के प्रभाव से आए अंग्रेजी आदि शब्द। हिन्दी में फारसी शब्दों की संख्या लगभग 3500, अंग्रेजी शब्दों की संख्या लगभग 3000, एवं अरबी शब्दों की संख्या लगभग 2500 है।

अधिक प्रचलित वर्ग के विदेशज शब्द

अरबी : अजब,अर्जीब, अदालत, अक़्ल, अल्लाह, असर, आख़िर, आदमी, इनाम, इजलास, इज़्ज़त, इलाज, ईमान, उम्र, एहसान, औरत, औसत, कब्र, कमाल, क़र्ज़, किस्मत, कीमत, किताब, कुर्सी, ख़त, ख़िदमत, ख़याल, जिस्म, जुलूस, जलसा, जवाब, जहाज़, दुकान, ज़िक्र, तमाम, तकदीर, तारीख़, तकिया, तरक़्क़ी, दवा, दावा, दिमाग, दुनिया, नतीजा, नहर, नकल, फकीर, फिक्र, फैसला, बहस, बाकी, मुहावरा, मदद, मजबूर, मुकदमा, मुश्किल, मौसम, मौलवी, मुसाफ़िर, यतीम, राय, लिफ़ाफ़ा, वारिस, शराब, हक, हज़म, हाजिर, हिम्मत, हुक्म, हैज़ा, हौसला, हकीम, हलवाई इत्यादि।

फारसी : आवरू, आतिशबाजी, आफ़त, आराम, आमदनी, आवारा, आवाज़, उम्मीद, उस्ताद, कमीना, कारीगर, किशमिश, कुश्ती, कूचा, खाक, खुद, खुदा, खामोश, ख़ुराक, गरम, गज, गवाह, गिरफ्तार, गिर्द, गुलाब, चादर, चालाक, चश्मा, चेहरा, जलेबी, जहर, ज़ोर, जिन्दगी, जागीर, जादू, जुरमाना, तबाह, तमाशा, तनख़ाह, ताजा, तेज़, दंगल, दफ्तर, दरबार, दवा, दिल, दीवार, दुकान, नापसंद, नापाक, पाजामा, परदा, पैदा, पुल, पेश, बारिश, बुख़ार, बर्फी, मज़ा, मकान, मज़दूर, मोरचा, याद, यार, रंग, राह, लगाम, लेकिन, वापिस, शादी, सितार, सरदार, साल, सरकार, हफ्ता, हज़ार इत्यादि।

अंग्रेजी : अपील, कोर्ट, मजिस्ट्रेट, जज, पुलिस, टैक्स, कलक्टर, डिप्टी, अफसर, वोट, पेन्शन; कापी, पेंसिल, पेन, पिन, पेपर, लाइब्रेरी, स्कूल, कॉलेज; अस्पताल, डॉक्टर, कंपाउडर, नर्स, आपरेशन, वार्ड, प्लेग, मलेरिया, कॉलरा, हार्निया, डिप्थीरिया, कैंसर; कोट, कालर, पैंट, पतलून, हैट, बुश्शर्ट, स्वेटर, हैट, बूट, जम्पर, ब्लाउज, कप, प्लेट, जग, लैम्प, गैस, माचिस; केक, टॉफी, बिस्कुट, टोस्ट, चाकलेट, जैम, जेली; ट्रेन, बस, कार, मोटर, लारी, स्कूटर, साइकिल, बैटरी, ब्रेक, इंजन; यूनियन, रेल, टिकट, पार्सल, पोस्टकार्ड, मनी आर्डर, स्टेशन, ऑफ़िस, क्लर्क, गार्ड इत्यादि।

कम प्रचलित वर्ग के विदेशज शब्द

इस वर्ग के विदेशज शब्दों में प्रत्येक की संख्या 100 के आस-पास है ।

तुर्की : उर्दू, बहादुर, उज़बक, तुर्क, कुरता, कलग़ी, कैंची, चाकू, काबू, कुली, ग़लीचा, चकमक, चिक़, तमगा, तमंचा, ताश, तोप, तोपची, दारोगा, बावर्ची, बेगम, चम्मच, मुचलका, लाश, सौग़ात, बीबी, चेचक, सुराग, बारूद, नाग़ा, कुर्ता, कूच, कुमुक, कुर्क, लाश, खच्चर, सराय, गनीमत, चोग़ा, इत्यादि।

पश्तो : पठान, मटरगश्ती, गुण्डा, तड़ाक, खर्राटा, तहस-नहस, टसमस, खचड़ा, अखरोट, चख-चख, पटाख़ा, डेरा, गटागट, गुलगपाड़ा, कलूटा, गड़बड़, हड़बड़ी, अटकल, बाड़, भड़ास इत्यादि।

पुर्तगाली : अनन्नास, अलमारी, आलपिन, आया, इस्त्री, इस्पात, कमीज, कमरा, कर्नल, काज़, काफ़ी, काजू, गमला, गोभी, गोदाम, चाबी, तौलिया, पपीता, नीलाम, पादरी, फ़ीता, बाल्टी, बोतल, मिस्त्री, संतरा इत्यादि।

अत्यंत कम प्रचलित वर्ग के विदेशज शब्द

फ्रांसीसी/फ्रेंच	काजू, कारतूस, कर्फ्यू, कूपन, अंग्रेज़, लाम, फ्रांस, फ्रांसीसी, बिगुल आदि।
डच	तुरुप *(ताश में)*, बम *(टाँगे का)* आदि।
रूसी	रूबल, ज़ार, मिग, बोल्शेविक, सोवियत, स्पूतनिक आदि।
चीनी	चाय, लीची, चीकू, चीनी आदि।
जापानी	रिक्शा, सायोनारा आदि।

(v) संकर : दो भिन्न स्रोतों से आए शब्दों के मेल से बने नए शब्दों को संकर शब्द कहते हैं; जैसे—

छाया *(संस्कृत)* + दार *(फारसी)* = छायादार
पान *(हिन्दी)* + दान *(फारसी)* = पानदान
रेल *(अंग्रेज़ी)* + गाड़ी *(हिन्दी)* = रेलगाड़ी
सील *(अंग्रेज़ी)* + बंद *(फारसी)* = सीलबंद

2. रचना/बनावट के आधार पर

रचना या बनावट के आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं—

(i) रूढ़ : जिन शब्दों के सार्थक खंड न हो सकें और जो अन्य शब्दों के मेल से न बने हों उन्हें रूढ़ शब्द कहते हैं। इसे मौलिक या अयौगिक शब्द भी कहा जाता है। जैसे—चावल शब्द का यदि हम खंड करेंगे तो चा + वल या चाव + ल तो ये निरर्थक खंड होंगे । अतः चावल शब्द रूढ़ शब्द है। अन्य उदाहरण—दिन, घर, मुँह, घोड़ा आदि।

(ii) यौगिक : 'यौगिक'का अर्थ है—मेल से बना हुआ। जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों से मिल कर बनता है, उसे यौगिक शब्द कहते हैं, जैसे—विज्ञान *(वि + ज्ञान)*, सामाजिक *(समाज + इक)*, विद्यालय *(विद्या का आलय)*, राजपुत्र *(राजा का पुत्र)* आदि।

यौगिक शब्दों की रचना तीन प्रकार से होती है—उपसर्ग से, प्रत्यय से और समास से।

(iii) योगरूढ़ : वे शब्द जो यौगिक तो होते हैं, परन्तु जिनका अर्थ रूढ़ *(विशेष अर्थ)* हो जाता है, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। यौगिक होते हुए भी ये शब्द एक इकाई हो जाते हैं यानी ये सामान्य अर्थ को न प्रकट कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं; जैसे—पीताम्बर, जलज, लंबोदर, दशानन, नीलकंठ, गिरधारी, दशरथ, हनुमान, लालफीताशाही, चारपाई आदि।

'पीताम्बर' का सामान्य अर्थ है 'पीला वस्त्र', किन्तु यह विशेष अर्थ में श्रीकृष्ण के लिए प्रयुक्त होता है। इसी तरह, 'जलज' का सामान्य अर्थ है 'जल से जन्मा'; किन्तु यह विशेष अर्थ में केवल कमल के लिए प्रयुक्त होता है। जल में जन्मे और किसी वस्तु को हम 'जलज' नहीं कह सकते।

बहुव्रीहि समास के सभी उदाहरण योगरूढ़ शब्द के उदाहरण हैं।

3. रूप / प्रयोग के आधार पर

प्रयोग के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं—

(i) विकारी शब्द : वे शब्द जिनमें लिंग, वचन व कारक के आधार पर मूल शब्द का रूपांतरण हो जाता है, विकारी शब्द कहलाते हैं। जैसे—

लड़का पढ़ रहा है। *(लिंग परिवर्तन)* लड़की पढ़ रही है।
लड़का दौड़ रहा है। (वचन परिवर्तन) लड़के दौड़ रहे हैं।
लड़के के लिए आम लाओ। *(कारक परिवर्तन)* लड़कों के लिए आम लाओ।

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवं क्रिया शब्द विकारी शब्द हैं।

संज्ञा : ब्राह्मण, जयचंद, पटना, हाथ, पाँव, लड़का, लड़की, किताब, पुलिस, सफाई, ममता, बालपन, ढेर, कर्म, सरदी, सिरदर्द आदि।

सर्वनाम : मैं, तू, वह, यह, इसे, उसे, जो, जिसे, कौन, क्या, कोई, सब, बिरला आदि।

विशेषण : अच्छा, बुरा, नीला, पीला, भारी, मीठा, बुद्ध, सरल, जटिल आदि।

क्रिया : खेलना, कूदना, सोना, जागना, लेना, देना, खाना, पीना, जाना, आना आदि।

(ii) अविकारी शब्द : जिन शब्दों का प्रयोग मूल रूप में होता है और लिंग, वचन व कारक के आधार पर उनमें कोई परिवर्तन नहीं होता अर्थात् जो शब्द हमेशा एक-से रहते हैं, वे अविकारी शब्द कहलाते हैं; जैसे—आज, में, और, आहा आदि।

सभी प्रकार के अव्यय शब्द अविकारी शब्द होते हैं।

क्रिया विशेषण अव्यय : आज, कल, अब, कब, परसों, यहाँ, वहाँ, इधर, उधर, कैसे, क्यों।

संबंध बोधक अव्यय : में, से, पर, के ऊपर, के नीचे, से आगे, से पीछे, की ओर।

समुच्चयबोधक अव्यय : और, परन्तु, या, इसलिए, तो, यदि, क्योंकि।

विस्मयादिबोधक अव्यय : आहा ! हा ! हाय ! ओह ! वाह ! वाह ! राम राम ! या अल्लाह ! या खुदा!

4. अर्थ के आधार पर

अर्थ के आधार पर शब्द चार प्रकार के होते हैं—

(i) एकार्थी शब्द : जिन शब्दों का केवल एक ही अर्थ होता है, एकार्थी शब्द कहलाते हैं। व्यक्तिवाचक संज्ञा के शब्द इसी कोटि के शब्द हैं, जैसे—गंगा, पटना, जर्मन, राधा, मार्च आदि।

(ii) अनेकार्थी शब्द : जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं, जैसे—

शब्द	अनेक अर्थ	शब्द	अनेक अर्थ
हार	गले की माला, पराजय	कर	हाथ, टैक्स
कनक	सोना, धतूरा	अर्थ	प्रयोजन, धन

(iii) समानार्थी/पर्यायवाची शब्द : हिन्दी भाषा में अनेक शब्द ऐसे हैं जो समान अर्थ देते हैं, उन्हें समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहते हैं; जैसे—

शब्द	पर्यायवाची शब्द	शब्द	पर्यायवाची शब्द
आकाश	नभ, गगन, आसमान	बादल	मेघ, जलद, वारिद
सूर्य	रवि, भानु, भास्कर	फूल	पुष्प, सुमन, प्रसून

(iv) विपरीतार्थी/विलोम शब्द : जो शब्द विपरीत अर्थ बोध कराते हैं, विपरीतार्थी या विलोम शब्द कहलाते हैं; जैसे—

शब्द	विलोम शब्द	शब्द	विलोम शब्द
जय	पराजय	पाप	पुण्य
सच	झूठ	दिन	रात

तत्सम-तद्भव

(अ, आ, इ, ...)

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अकार्य	अकाज	अक्षवाट	अखाड़ा
अनर्थ	अनरथ	अग्निस्थानिका	अंगीठी
अग्रपद	अगुआ	अक्षि	आँख
अज्ञान	अजान	अमूल्य	अमोल
अश्रु	आँसू	अट्टालिका	अटारी
अक्षर	अच्छर/आखर	अमरुत	अमरूद
अन्यत्र	अनत	अशीति	अस्सी
अग्नि	आग	अंक	आँक
अवगुण	औगुन	अर्पण	अरपन
अर्द्ध	आधा	अमावस्या	अमावस
अर्क	आक	अमृत	अमिय
अगम्य	अगम	अंश	अंस
अनार्य	अनाड़ी	अंगरक्षक	अंगरखा
अन्नाद्य	अनाज	अंधकार	अंधियारा
अँगुली	अँगुरी	अग्रहायण	अगहन
अंध	अन्धा	अलक्ष्य	अलक्ष
अवतार	औतार	अद्य	आज
अगणित	अनगिनत	अग्रणी	अगाड़ी
अंगुष्ठ	अँगूठा	अवघट	औघर
अम्लिका	इमली	आश्विन	आसिन
आश्चर्य	अचरज	आकाश	अकास
आशा	आस	आत्मा	आप
आश्रय	आसरा	आदेश	आदेस
आषाढ़	असाढ़	आशिष	आसीस
आदित्यवार	इतवार	आभीर	अहीर
आमलक	आँवला	आलस्य	आलस
आलुक	आलू	आम्र	आम
आखेट	अहेर	इष्ट	ईट
ईक्ष	ईख	ईन्धन	ईंधन
ईर्ष्या	ईर्षा	उत्साह	उछाह
उपाध्याय	ओझा	उलूक	उल्लू
उष्ट्र	ऊँट	उलूखन	ओखली
उल्लास	हुलास	उपवास	उपास
उपालम्भ	उलाहना	उद्वर्तन	उबटन
उच्च	ऊँचा	उपाख्यान	उपखान
ऊर्ण	ऊन	ऋषि	रिषि
ऋतु	रितु	एला	इलायची
एकादश	ग्यारह	ऐक्य	एका
ओष्ठ	होठ	औदक	ओदा

(क वर्ग)

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
कच्चपूरिका	कचौड़ी	कज्जल	काजल
कूप	कूआँ	कषपट्टिका	कसौटी
कास	खाँसी	कर्त्तरी	कैंची
कर्पूर	कपूर	कार्य	कारज/काज
कोटि	करोड़	कपाट	किवाड़
काष्ठ	काठ	किरण	किरन
कार्तिक	कातिक	कुक्षि	कोख
कण	कन	क्लेश	कलेश
कंकन	कंगन	कपोत	कबूतर
कदली	केला	काक	काग/कौआ

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
कपर्दिका	कौड़ी	कोण	कोना
कांस्यकार	कसार	कंडुर	करेला
कोष्ट	कोठा	कथावत	कहावत
कुमार	कुँअर	किंचित	कुछ
कच्छप	कछुआ	कैवर्त	केवट
कृश	कृस	कुचिका	कूची
कृष्ण	कान्हा	कन्दुक	गेंद
कृषक	किसान	कोकिल	कोयल
क्रूर	कूर	कल्लोल	कलोल
कुक्कुर	कुत्ता	कुष्ठ	कोढ़
कर्ण	कान	कुपुत्र	कपूत
केशरी	केहरी	कर्त्तव्य	करतब
कंटक	काँटा	कर्पटक	कपड़ा
कटुक	कड़ुआ	कर्म	काम
कुम्भकार	कुम्हार	कटाक	कड़ाह
कर्त्तन	कतरन	कर्पास	कपास
कुटुम्ब	कुटुम	कीर्ति	कीरति
क्षेत्र	खेत	क्षति	छति
क्षार	खार	क्षीण	छीन
क्षण	छन	क्षत्रिय	खत्री
क्षुर	खुर	क्षुरिका	छुरी
क्षीर	खीर	क्षमा	छमा
क्षुरप्र	खुरपा	क्षेप	खेप
खट्वा	खाट	खर्जूर	खजूर
गड्डलिका	गड़रिया	गर्गर	गागर
गर्त्त	गड्ढा	ग्रामीण	गँवार
ग्राहक	गाहक	गात्र	गात
ग्रंथि	गाँठ	गो	गाय
गृष्ट	धूँट	गृद्ध	गिद्ध
गर्भिण	गाभिन	गर्जन	गरजन
गुर्जर	गूजर	गुम्फ	गूँथन
गैरिक	गेरुवा	गौर	गोरा
गोधूम	गेहूँ	गोमय	गोबर
गुहा	गुफा	गायक	गवैया
ग्राम	गाँव	गुटिका	गुड़िया
गजेन्द्र	गयन्द	गोस्वामी	गुसाई
गर्दभ	गदहा	गुण	गुन
गम्भीर	गहरा	ग्रह	गेह
गोपाल	ग्वाल	गृह	घर
गृहिणी	घरनी	गुच्छ	गुच्छा
घटी	घड़ी	घृत	घी
घट	घड़ा	घृणा	घिन
घोटक	घोड़ा	घोङ्घ	घोंघा

(च वर्ग)

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
चर्म	चमड़ा, चाम	चित्रकार	चितेरा
चर्मकार	चमार	चित्रक	चीता
चतुर्थ	चौथा	चतुष्क	चौक
चरण	चरन	चैत्र	चैत
चतुष्कोण	चौकोर	चंचु	चोंच
चिक्कण	चिकना	चौर	चोर
चर्मरिक	चमार	चक्रवाक	चकवा
चन्द्रिका	चाँदनी	चतुष्पद	चौपाया
चूर्ण	चूरन	चतुर्दिक	चहुँओर, चहुँदिसि

तत्सम	तद्भव
चतुर्दश	चौदह
चन्द्र	चन्दा
चक्र	चाक
चक्षु	चख
छाँह	छाया
छेदनम	छेनी
ज्योति	जोति
जन्म	जनम
जीर्ण	जीरन
जिह्वा	जीभ
जगत्	जग
जाड्य	जाड़ा
ज्ञानी	ग्यानी

तत्सम	तद्भव
चुम्बन	चूमना
चर्वण	चबाना
छच्छिका	छाछ
छत्र	छाता
छिद्र	छेद
ज्येष्ठ	जेठ
जन्यवास	जनवास
जम्बुल	जामुन
जीरक	जीरा
जंघा	जाँघ
जामाता	जमाई
जंभ	जबड़ा
ज्ञान	ग्यान

(ट वर्ग)

तत्सम	तद्भव
टंकशाला	टकसाल
टंग	टाँगा
टिक	डिग
डाकिनी	डायन
डयन	डैना
ढक्का	ढकना

तत्सम	तद्भव
टंक	टाका
टिट्टिभ	टिटिहरी
ठक्कुर	ठाकुर
डिब	डिब्बा
डोरक	डोरा
ढुंढन	ढूंढ़ना

(त वर्ग)

तत्सम	तद्भव
तृण	तिनका
तिलक	टीका
तुच्छ	टुच्चा
तिक्त	तीता
तप्त	तपना, तपन
ताम्रचूड़	तमचूर
तैल	तेल
तपस्वी	तपसी
त्वरित	तुरन्त
तंदुल	तन्दुल
त्रुट	टूट
थुत्कार	थुथकार
दीपक	दीया
दृष्टि	दीठि
द्विपर	दुपट्टा
दुग्ध	दूध
द्रोण	दोना
दैव	दई
दधि	दही
दरिद्र	दरिदर
द्वादश	बारह
दंश	डंक
दद्रु	दाद
दक्षिण	दाहिना
दुःख	दुख
दन्तधावन	दातून
दोरक	डोरा
द्युति	दुति
द्यूतम्	जुआ
धैर्य	धीरज
धतूर	धतूरा

तत्सम	तद्भव
तीक्ष्ण	तीखा
त्रयोदश	तेरह
तालक	ताला
ताम्बूल	पान
ताम्बूलिक	तमोली
तीर्थ	तीरथ
त्रिकाष्ठ	टिकठी
त्रोटक	टोटका
थुवर्ण	थूरना
दंड	डंडा
द्रप्टा	डाढ़
दूर्वा	दूब
द्रम्म	दाम
दक्ष	दच
द्वौ	दो
दृक	दृग
दाह	डाह
दोष	दोस
दुर्बल	दुबला
द्विपहरी	दुपहरी
दीपावलि	दिवाली
द्विवेदी	दुबे
द्विगुण	दूना
दोलिका	डोली
द्यूतकारिक	जुआरी
धनश्रेष्ठि	धन्नसेठ
धरित्री	धरती
धात्री	दाई

तत्सम	तद्भव
धूलि	धूरि
धौत	धोती
धान्य	धान
धृत	घड़
ध्वनि	धुनि
निम्ब	नीम
नापित	नाई
नारिकेल	नारियल
नप्ता	नाती
नासिक	नाक
नस्य	नस
नक्षत्र	नखत
निष्ठुर	निठुर

(प वर्ग)

तत्सम	तद्भव
पक्व	पका
पौत्री	पोती
पृष्ठ	पीठ
पक्ष	पाख/पंख
परीक्षा	परख
पिप्पल	पीपल
पर्ण	पान
पुण्य	पुन्य/पुन
पूर्ण	पूरा
परमार्थ	परमारथ
पक्वान्न	पकवान
प्रतिवास	पड़ोस
पक्व	पका
पिपासा	प्यासा
पाश	फाँस/फन्दा
पीत	पीला
पुत्र	पूत
पूपालिका	पूड़ी
पर्यंक	पलंग
पाद	पैर
प्रतिच्छाया	परछाई
पर्पट	पापड़
पंच	पाँच
पुच्छ	पूँछ
पर्पटा	परांठा
पर्पटिका	पपड़ी
परशु	फरसा
प्रहरी	पहरुआ
फाल्गुन	फागुन
फुप्फुस	फेफड़ा
बीटक	बीड़ी
बालुका	बालू
बधिर	बहिर
बिन्दु	बिन्दी
बृषभ	बैल
बन्ध्या	बाँझ

तत्सम	तद्भव
घृष्ट	घुआँ
धर्म	धरम
धर	धुर
धृष्टता	ढिठाई
नृत्य	नाच
निद्रा	नींद
निर्गुण	निरगुन
निम्बुक	नींबू
निर्झर	झरना
नव्य	नया
नकुल	नेवला
नयन	नैन
नक्र	नाक

तत्सम	तद्भव
पञ्जर	पिंजरा
पत्र	पता
पण्डित	पाँड़े
पक्षी	पंछी
पित्तल	पीतल
पौष	पूस
प्रहर	पहर
पुष्कर	पोखर
पानीय	पानी
प्रकट	प्रगट
प्रस्वेद	पसीना
पूर्व	पूरब
परश्वः	परसों
पुष्प	पुहुप, फूल
पारद	पारा
पुस्तिका	पोथी
पूपक	पुआ
पार्श्ववती	पड़ोसी
पाषाण	पाहन
प्रिय	पिया
प्रस्तर	पत्थर
पक्ष	पंख
पंक्ति	पंगत/पाँत
पुत्रवधू	पतोहू
पन्थ	पथ
पुराण	पुरान
पश्चात्ताप	पछताना
प्रहेलिका	पहेली
प्राण	प्रान
फुल्लवाटिका	फुलवाड़ी
बंशी	बाँसुरी
बकुलश्री	मौलश्री
बुभुक्षा	भूख
बत्स	बछड़ा
बन्ध	बाँध
बज्रांग	बजरंग

तत्सम	तद्भव
भक्त	भगत
भद्रक	भला
भ्रमर	भौंरा
भ्रातृवधू	भाभी
भाण्डागारिक	भंडारी
भ्रातृ	भाई
भागिनेय	भानजा
भिक्षा	भीख
भिक्षुक	भिच्छुक
भल्लूक	भालू
भगिनी	बहिन
मण्डूक	मेंढक
मरुव	मरुआ
मस्तक	माथा
मामिका	मामी
मित्र	मीत
मयूर	मोर
मानुष	मानुस
मुद्गरिका	मुँगरी
मुषल	मूखल
मशक	मच्छर
मक्षिका	मक्खी/माखी
महिष	भैंस
मिष्ठान्न	मिठाई
महार्घ	महँगा
मंचिका	मचिया

(य, र, ल, व)

तत्सम	तद्भव
यत्न	जतन
यमुना	जमुना
यम	जम
योग	जोग
यन्त्र	जन्त्र
यज्ञोपवीत	जनेऊ
यजमान	जजमान
रक्तिका	रत्ती
रात्रि	रात
राशि	रास
रक्षा	राखी
लज्जा	लाज
लौह	लोहा
लम्बक	लम्बा
लोष्ट	लोढ़ा
वेदना	बेदना
वन	बन
वर्तिका	बत्ती/बाती
विष्टा	बीट
विद्युत	बिजली
वत्स	बच्चा
व्याघ्र	बाघ
वंश	बाँस

तत्सम	तद्भव
मण्डागार	भंडार
भद्र	भला
भीष्म	भीसम
भ्रातृजा	भतीजी
भाद्र	भादो
भ्रू	भौं
भ्रम	भरम
भिक्षारी	भिखारी
भ्रातृजाया	भावज
भगिनीपति	बहनोई
मकर	मगर
मर्म	मरम
मातुल	मामा
मर्यादा	मरजादा
मृत्यु	मौत
मेघ	मेह
मास	महीना
मुख	मुँह
मूल्य	मोल
मर्कटक	मकड़ी
मार्ग	मारग
मुक्ता	मोती
मृगांक	मयंक
मल	मैल
मधूक	महुआ
मृत्तिका	माटी

तत्सम	तद्भव
यव	जौ
यश	जश
योगी	जोगी
यूथ	जत्था
युग	जुग
युवा	जवान
यौवन	जोबन
राजपुत्र	राजपूत
राज्ञी	रानी
रज्जु	रस्सी
रिक्त	रीता
लौहकार	लुहार
लवंग	लौंग
लवण	नौन
लोमश	लोमड़ी
विवाह	विआह
वरयात्रा	बारात
विग्रह	बिगाड़
व्यथा	विथा
वधू	बहू
वट	बड़
वणिक	बनिया
वृद्ध	बुड्ढा

तत्सम	तद्भव
वक	बगुला
वृक्ष	बिरीछ
वृश्चिक	बिच्छू
वीरवनिता	मैयरबानी
वर्धकिन	बढ़ई
वारिद	बादल
वातुलक	बावला
वाद्य	बाजा
विल्व	बेल

(श, ष, स, ह)

तत्सम	तद्भव
शकुन	सगुन
शलाकिका	सलाई
शत	सौ
शिक्षा	सीख
श्रावण	सावन
शृंगार	सिंगार
श्वास	साँस
शूकर	सूअर
शप्तशती	सतसई
श्यामल	साँवला
शाप	श्राप, सराप
शुण्ठिका	सोंठ
शृंगाल	सियार
शृंग	सींग
श्रेष्ठिन	सेठ
षट्	छः
षट्राग	खटराग
षष्ठ	छठा
स्कंध	कंधा
स्कन्धभार	कहार
स्तम्भ	खंभा
स्थल	थल
स्थानक	थाना
स्थापन	ठप्पा
स्थिर	थिर
साक्षी	साखी
सीसक	सीसा
सर्प	साँप
सूर्य	सूरज
सप्तशती	सतसई
सूची	सूई
सर्सप	सरसों
सौभाग्य	सुहाग
सौराष्ट्रक	सोरठा
हरिण	हिरन
हिण्डोला	हिड़ोरा
हट्टताल	हड़ताल
हास्य	हँसी
हस्तिनी	हथनी

तत्सम	तद्भव
वानर	बन्दर
वाष्प	भाप
वर्ष	बरस
व्याख्यान	बखान
वार्त्ता	बात
वाराणसी	बनारस
विग्रह	बीघा
वेश	भेस
वैराग्य	विराग

तत्सम	तद्भव
शकट	छकड़ा
श्यालक	साला
श्वसुर	ससुर
शय्या	सेज
शर्कर	शक्कर
शाक	साग
शुष्क	सूखा
शून्य	सूना
शीतल	सीतल
श्वश्री	सास
शुण्ड	सूँड़
श्रद्धा	साध
शैक्ष्य	सीख
श्रावणी	सावनी
षंड	साँड़
षट्कोना	छकोना
षट्वांग	खटवांग
षोडस	सोलह
स्फोटक	फोड़ा
स्फूट	फूट
स्नेह	नेह
स्तन	थन
स्पर्श	परस
स्वामी	साईं
स्मरण	सुमिरन
स्वर्णकार	सुनार
सज्जा	साज
सपत्नी	सौत
संदंशिका	सँड़सी
सन्धि	सेंध
सूत्र	सूत
स्वप्न	सपना
संध्या	शाम
हस्ति	हाथी
होलिका	होली
हरिद्रा	हल्दी
हस्त	हाथ
हत्याकार	हत्यारा
हृदय	हिया

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. उत्पत्ति के आधार पर शब्द के कितने भेद होते हैं ?
(a) 2 (b) 4 (c) 6 (d) 8

2. संस्कृत के ऐसे शब्द जिसे हम ज्यों-का-त्यों प्रयोग में लाते हैं कहलाते हैं—
(a) तत्सम (b) तद्भव (c) देशज (d) विदेशज

3. निम्नलिखित में 'रूढ़' शब्द कौन-सा है ?
(a) वाचनालय (b) समतल
(c) विद्यालय (d) पशु *(रेलवे, 1997)*

4. शब्द रचना के आधार पर बताइये कि कौन-सा शब्द 'योगरूढ़' है ?
(a) पवित्र (b) कुशल (c) विनिमय (d) जलज
(रेलवे, 1997)

5. निम्न में 'रूढ़' शब्द कौन-सा है ?
(a) मलयज (b) जलज (c) पंकज (d) वैभव
(रेलवे, 1997)

6. 'परीक्षा' शब्द निम्नलिखित वर्गों में से किस वर्ग में आता है ?
(a) तत्सम (b) तद्भव (c) देशज (d) विदेशज
(बी०एड०, 1998)

7. 'मजिस्ट्रेट' शब्द है—
(a) तत्सम (b) तद्भव (c) देशज (d) विदेशज
(रेलवे, 1999)

8. निम्नलिखित में कौन-सा शब्द 'देशज' है ?
(a) अग्नि (b) प्रार्थना (c) खेत (d) लोटा
(बी०एड०, 2000)

9. स्वतंत्र सत्ता धारण न करने वाले शब्द क्या कहलाते हैं ?
(a) रूढ़ (b) यौगिक
(c) योगरूढ़ (d) इनमें से कोई नहीं
(रेलवे, 2001)

10. निम्नलिखित में कौन 'यौगिक' शब्द है ?
(a) लेखक (b) पुस्तक (c) विद्यालय (d) योगी
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

11. प्रयोग की दृष्टि से सूक्ष्म अंतर व्यक्त करने वाले शब्द क्या कहलाते हैं ?
(a) प्रयोगात्मक (b) समानार्थक
(c) अनेकार्थक (d) विपरीतार्थक *(रेलवे, 2001)*

12. 'यौगिक' शब्द कौन-सा है ?
(a) पंकज (b) पाठशाला
(c) दिन (d) जलज *(बैंक परीक्षा, 2002)*

13. 'विभावरी' किस प्रकार का शब्द है ?
(a) तत्सम (b) तद्भव (c) देशज (d) संकर
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

14. 'योगरूढ़' शब्द कौन-सा है ?
(a) पीला (b) घुड़सवार (c) लम्बोदर (d) नाक
(बैंक परीक्षा, 2003)

15. नीचे दिए गए विकल्पों में से तत्सम शब्द का चयन कीजिए—
(a) पड़ोसी (b) गोधूम (c) बहू (d) शहीद
(रेलवे, 2003)

16. नीचे दिए गए विकल्पों में से तद्भव शब्द का चयन कीजिए—
(a) बैंक (b) मुँह
(c) मर्म (d) प्रलाप *(रेलवे, 2003)*

17. जिस शब्द के कई सार्थक खण्ड हो सके, उन्हें क्या कहते हैं ?
(a) रूढ़ (b) यौगिक
(c) योगरूढ़ (d) मिश्रित *(बी० एड०, 2004)*

18. कौन-सा शब्द 'देशज' नहीं है ?
(a) ढिबरी (b) पगड़ी (c) ढोर (d) पुष्कर
(बी० एड०, 2005)

19. जिन शब्दों की उत्पत्ति का पता नहीं चलता, उन्हें कहा जाता है—
(a) तत्सम (b) तद्भव (c) देशज (d) संकर
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

20. 'वकील' किस भाषा का शब्द है ?
(a) फारसी (b) अरबी (c) तुर्की (d) पुर्तगाली
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

21. 'चाय' किस भाषा का शब्द है ?
(a) चीनी (b) जापानी
(c) अंग्रेजी (d) फ्रेंच

22. 'स्टेशन' किस भाषा का शब्द है ?
(a) फ्रेंच (b) अंग्रेजी
(c) डच (d) चीनी

23. 'संकर' शब्द का अर्थ है—
(a) तत्सम शब्द
(b) तद्भव शब्द
(c) विदेशी शब्द
(d) दो भाषाओं के शब्दों से मिलकर बना शब्द

24. 'रेलगाड़ी' शब्द है—
(a) तत्सम (b) देशज (c) विदेशज (d) संकर

25. 'वानर' का तद्भव रूप है—
(a) बानर (b) बन्दर (c) बाँदर (d) बान्दर
(मध्य प्रदेश प्री.बी.एड.परीक्षा, 2007)

26. 'दर्शन' का तद्भव रूप है—
(a) दर्सन (b) दरसन (c) दर्स (d) दर्स्न
(मध्य प्रदेश प्री.बी.एड.परीक्षा, 2007)

27. निम्नलिखित में कौन-सा शब्द तत्सम है ?
(a) उद्गम (b) खेत (c) कोर्ट (d) अजीब
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

28. 'अपील' शब्द है—
(a) तत्सम (b) तद्भव (c) देशज (d) विदेशज
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

29. 'मगही' शब्द है—
(a) तत्सम (b) तद्भव (c) देशज (d) विदेशज
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

30. 'संधि' शब्द है—
(a) तत्सम (b) तद्भव (c) देशज (d) विदेशज
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

31. 'लोटा' शब्द है—
(a) तत्सम (b) तद्भव
(c) देशज (d) विदेशज
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

32. 'कमल' किस प्रकार का शब्द है ?
(a) रूढ़ (b) यौगिक
(c) योगरूढ़ (d) इनमें से कोई नहीं
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

33. 'पाकशाला' किस प्रकार का शब्द है ?
(a) रूढ़ (b) यौगिक
(c) योगरूढ़ (d) इनमें से कोई नहीं
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

34. 'दशानन' किस प्रकार का शब्द है ?
(a) रूढ़ (b) यौगिक
(c) योगरूढ़ (d) इनमें से कोई नहीं

(बिहार पुलिस सब इंस्पेक्टर परीक्षा, 2008)

35. निम्न में से एक तत्सम शब्द छाँटकर बताइए—
(a) अनजान (b) पथ (c) पत्ता (d) मोदक

(उत्तराखण्ड पुलिस सब इंस्पेक्टर परीक्षा, 2008)

36. निम्न में से कौन सा शब्द तुर्की भाषा का है ?
(a) चाय (b) रिक्शा (c) कमरा (d) कैंची

(उत्तराखण्ड पुलिस सब इंस्पेक्टर परीक्षा, 2008)

37. निम्नलिखित में तत्सम शब्द का चयन कीजिए—
(a) बारात (b) वर्षा
(c) हाथी (d) आँसू

(आर.आर.बी. इलाहाबाद एकाउन्टेन्ट असिस्टेंट, 2010)

उत्तरमाला

1. (b)	2. (a)	3. (d)	4. (d)	5. (d)	6. (a)	7. (d)	8. (d)	9. (b)	10. (c)	11. (b)	12. (b)
13. (a)	14. (c)	15. (b)	16. (b)	17. (b)	18. (d)	19. (c)	20. (b)	21. (a)	22. (b)	23. (d)	24. (d)
25. (b)	26. (b)	27. (a)	28. (d)	29. (b)	30. (a)	31. (c)	32. (a)	33. (b)	34. (c)	35. (d)	36. (d)
37. (b)											

★★★

08 संज्ञा से अव्यय तक
(From Noun to Indeclinables)

शब्द और पद : जब शब्द स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होता है और वाक्य के बाहर होता है तो यह 'शब्द' होता है, किन्तु जब शब्द वाक्य के अंग के रूप में प्रयुक्त होता है तो इसे 'पद' कहा जाता है। मतलब कि स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होने पर शब्द 'शब्द' कहलाता है, किन्तु वाक्य के अंतर्गत प्रयुक्त होने पर शब्द 'पद' कहलाता है।

पद के भेद : पद के पांच भेद होते हैं– संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अव्यय।

संज्ञा (Noun)

परिभाषा : संज्ञा को 'नाम' भी कहा जाता है। किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव आदि का 'नाम' ही उसकी संज्ञा कही जाती है। दूसरे शब्दों में किसी का नाम ही उसकी संज्ञा है तथा इस नाम से ही उसे पहचाना जाता है। संज्ञा न हो तो पहचान अधूरी है और भाषा का प्रयोग भी बिना संज्ञा के सम्भव नहीं है।

संज्ञा के प्रकार : I. व्युत्पत्ति के आधार पर संज्ञा तीन प्रकार की होती है—रूढ़ (जैसे—कृष्ण, यमुना), यौगिक (जैसे—पनघट, पाठशाला) और योगरूढ़ (जैसे—जलज, यौगिक अर्थ—जल में उत्पन्न वस्तु, योगरूढ़ अर्थ—कमल)।

II. अर्थ की दृष्टि से संज्ञा पाँच प्रकार की होती है—व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, द्रव्यवाचक संज्ञा, समूहवाचक संज्ञा एवं भाववाचक संज्ञा।

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा *(Proper Noun)* : जो किसी व्यक्ति, स्थान या वस्तु का बोध कराती है। जैसे— राम, गंगा, पटना आदि।

2. जातिवाचक संज्ञा *(Common Noun)* : जो संज्ञा किसी जाति का बोध कराती है, वे जातिवाचक संज्ञा कही जाती हैं। जैसे—नदी, पर्वत, लड़की आदि।

'नदी' जातिवाचक संज्ञा है क्योंकि यह सभी नदियों का बोध कराती है किन्तु गंगा एक विशेष नदी का नाम है इसलिए गंगा व्यक्तिवाचक संज्ञा है।

3. द्रव्यवाचक संज्ञा *(Material Noun)* : जिस संज्ञा शब्द से उस सामग्री या पदार्थ का बोध होता है जिससे कोई वस्तु बनी है। जैसे—ठोस पदार्थ : सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, ऊन आदि; द्रव पदार्थ : तेल, पानी, घी, दही आदि; गैसीय पदार्थ : धुआँ, ऑक्सीजन आदि।

4. समूहवाचक संज्ञा *(Collective Noun)* : जो संज्ञा शब्द किसी एक व्यक्ति का वाचक न होकर समूह / समुदाय के वाचक हैं। जैसे—वर्ग, टीम, सभा, समिति, आयोग, परिवार, पुलिस, सेना, अधिकारी, कर्मचारी, ताश, टी-सेट, आर्केस्ट्रा आदि।

5. भाववाचक संज्ञा *(Abstract Noun)* : किसी भाव, गुण, दशा आदि का ज्ञान कराने वाले शब्द भाववाचक संज्ञा होते हैं। जैसे— क्रोध, मिठास, यौवन, कालिमा आदि।

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय में –आव, –त्व, –पन, –अन, –इमा, –ई, –ता, –हट आदि प्रत्यय जोड़कर किया जाता है। जैसे—

जातिवाचक संज्ञा	से	भाववाचक संज्ञा	सर्वनाम	से	भाववाचक संज्ञा
पुरुष		पुरुषत्व	अपना		अपनत्व
नारी		नारीत्व	मम		ममत्व
गुरु		गुरुत्व	निज		निजत्व
विशेषण	से	भाववाचक संज्ञा	विशेषण	से	भाववाचक स
सुन्दर		सुन्दरता, सौन्दर्य	ललित		लालित्य
वीर		वीरता, वीरत्व	लाल		लालिमा
धीर		धीरता, धैर्य	भोला		भोलापन
क्रिया	से	भाववाचक संज्ञा	क्रिया	से	भाववाचक स
घबराना		घबराहट	चढ़ना		चढ़ाई
थकना		थकान	भटकना		भटकाव
अव्यय	से	भाववाचक संज्ञा	अव्यय	से	भाववाचक स
दूर		दूरी	नीचे		नीचाई
निकट		निकटता	समीप		समीपता

संज्ञाओं के विशिष्ट प्रयोग

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा का जातिवाचक संज्ञा के रूप में कभी-कभी व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक संज्ञा के रूप में होता है। जैसे— आज के युग में भी हरिश्चंद्रों की कमी नहीं है। (यहाँ 'हरिश्चन्द्र' किसी व्यक्ति का नाम न होकर सत्यनिष्ठ व्यक्तियों की जाति का बोधक है।)

देश को हानि जयचंदों से होती है। (यहाँ 'जयचंदों' किसी व्यक्ति का नाम न होकर विश्वासघाती व्यक्तियों की जाति का बोधक है।)

रामचरितमानस हिन्दुओं की बाइबिल है।

2. जातिवाचक संज्ञा का व्यक्तिवचाक संज्ञा के रूप में कभी-कभी जातिवाचक संज्ञा का प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में होता है। जैसे—

गोस्वामी जी ने रामचरितमानस की रचना की। [यहाँ 'गोस्वामी' किसी जाति का नाम न होकर व्यक्ति (गोस्वामी तुलसीदास) का बोधक है।)]

शुक्ल जी ने हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा। [यहाँ 'शुक्ल' किसी जाति का नाम न होकर व्यक्ति (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल) का बोधक है।)]

पंडित जी भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे। (पंडित जवाहरलाल नेहरू)

पद-परिचय *(Parsing)* : पद-परिचय में वाक्य के प्रत्येक पद को अलग-अलग करके उसका व्याकरणिक स्वरूप बताते हुए अन्य पदों से उसका सबंध बताना पड़ता है। इसे पद-अन्वय भी कहते हैं।

संज्ञा का पद-परिचय *(Parsing of Noun)* : वाक्य में प्रयुक्त शब्दों का पद परिचय देते समय संज्ञा, उसका भेद, लिंग, वचन, कारक एवं अन्य पदों से उसका संबंध बताना चाहिए। जैसे– राम ने रावण को बाण से मारा।

1. राम : संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुलिंग, एकवचन, कर्त्ता कारक 'मारा' क्रिया का कर्त्ता।

2. रावण : संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुलिंग, एकवचन, कर्म कारक, 'मारा' क्रिया का कर्म।

3. बाण : संज्ञा, जातिवाचक, पुलिंग, एकवचन, करण कारक 'मारा' क्रिया का साधन।

संज्ञा का रूप परिवर्तन लिंग, वचन, कारक के अनुरूप होता है, अतः इन पर भी विचार करना आवश्यक है।

I. लिंग (Gender)

'लिंग' का शाब्दिक अर्थ है—चिह्न। शब्द के जिस रूप से यह जाना जाय कि वर्णित वस्तु या व्यक्ति पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, उसे लिंग कहते हैं। लिंग के द्वारा संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि शब्दों की जाति का बोध होता है।

हिन्दी में दो लिंग हैं—पुंलिंग *(Masculine)* और स्त्रीलिंग *(Feminine)*। पुंलिंग का संधि विच्छेद है—पुम् + लिंग। पुम् + लिंग में म् का अनुस्वार हो जाता है, अतः पुंलिंग लिखना चाहिए।

हिन्दी में लिंग निर्धारण : इसके लिए निम्न आधार ग्रहण किए जाते हैं—1. रूप के आधार पर, 2. प्रयोग के आधार पर एवं 3. अर्थ के आधार पर

1. रूप के आधार पर : रूप के आधार पर लिंग निर्णय का तात्पर्य है—शब्द की व्याकरणिक बनावट। शब्द की रचना में किन प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है तथा शब्दान्त में कौन-सा स्वर है—इसे आधार बनाकर शब्द के लिंग का निर्धारण किया जाता है। जैसे—

(i) पुंलिंग शब्द

1. अकारान्त, आकारान्त शब्द प्रायः पुलिंग होते हैं। जैसे—राम, सूर्य, क्रोध, समुद्र, चीता, घोड़ा, कपड़ा, घड़ा आदि।

2. वे भाववाचक संज्ञाएं जिनके अन्त में त्व, व, य होता है, वे प्रायः पुंलिंग होती हैं। जैसे—गुरुत्व, गौरव, शौर्य आदि।

3. जिन शब्दों के अन्त में पा, पन, आव, आवा, खाना जुड़े होते हैं, वे भी प्रायः पुंलिंग होते हैं। जैसे—बुढ़ापा, मोटापा, बचपन, घुमाव, भुलावा, पागलखाना।

(ii) स्त्रीलिंग शब्द

1. आकारान्त शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—लता, रमा, ममता।

2. इकारान्त शब्द भी प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं—रीति, तिथि, हानि *(किन्तु इसके अपवाद भी हैं—कवि, कपि, रवि पुंलिंग हैं)*

3. ईकारान्त शब्द भी प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—नदी, रोटी, टोपी, *(किन्तु अपवाद भी हैं। जैसे—हाथी, दही, पानी पुंलिंग हैं)*

4. आई, इया, आवट, आहट, ता, इमा प्रत्यय वाले शब्द भी स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—लिखाई, डिबिया, मिलावट, घबराहट, सुन्दरता, महिमा।

स्त्रीलिंग प्रत्यय : पुंलिंग शब्द को स्त्रीलिंग बनाने के लिए कुछ प्रत्ययों को शब्द में जोड़ा जाता है जिन्हें स्त्री० प्रत्यय कहते हैं।

संस्कृत के स्त्री प्रत्यय	उदाहरण
–आ	छात्र–छात्रा, महोदय–महोदया
–आनी	इन्द्र–इन्द्राणी, रूद्र–रूद्राणी
–इका	गायक–गायिका, नायक–नायिका
–इनी	यक्ष–यक्षिणी, योगी–योगिनी
–ई	कुमार–कुमारी, पुत्र–पुत्री
–ती	श्रीमान्–श्रीमती, भाग्यवान्–भाग्यवती
–त्री	अभिनेता–अभिनेत्री, नेता–नेत्री
–नी	पति–पत्नी, भिक्षु–भिक्षुणी

हिन्दी के स्त्री प्रत्यय	उदाहरण
–आइन	ठाकुर–ठकुराइन, पंडित–पंडिताइन
–आनी	जेठ–जेठानी, मुगल–मुगलानी
–इन	तेली–तेलिन, धोबी–धोबिन
–इया	बेटा–बिटिया, लोटा–लुटिया
–ई	काका–काकी, पोता–पोती
–नी	मोर–मोरनी, शेर–शेरनी
उर्दू के स्त्री प्रत्यय	उदाहरण
–आ	माशूक–माशूका, वालिद–वालिदा

2. प्रयोग के आधार पर : प्रयोग के आधार पर लिंग निर्णय के लिए संज्ञा शब्द के साथ प्रयुक्त विशेषण, कारक चिह्न एवं क्रिया को आधार बनाया जा सकता है। जैसे—

1. अच्छा लड़का, अच्छी लड़की।
   (लड़का पुंलिंग, लड़की स्त्रीलिंग)
2. राम की पुस्तक, राम का चाकू।
   (पुस्तक स्त्रीलिंग है, चाकू पुंलिंग है)
3. राम ने रोटी खाई। *(रोटी स्त्रीलिंग, क्रिया स्त्रीलिंग)*
   राम ने आम खाया। *(आम पुंलिंग, क्रिया पुलिंग)*

3. अर्थ के आधार पर : कुछ शब्द अर्थ की दृष्टि से समान होते हुए भी लिंग की दृष्टि से भिन्न होते हैं। उनका उचित एवं सम्यक प्रयोग करना चाहिए। जैसे—

पुंलिंग	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
कवि	कवयित्री	महान	महती
विद्वान	विदुषी	साधु	साध्वी
नेता	नेत्री	लेखक	लेखिका

उपर्युक्त शब्दों का सही प्रयोग करने पर ही शुद्ध वाक्य बनता है। जैसे—

1. आपकी महान कृपा होगी—अशुद्ध वाक्य
   आपकी महती कृपा होगी—शुद्ध वाक्य
2. वह एक विद्वान लेखिका है—अशुद्ध वाक्य
   वह एक विदुषी लेखिका है—शुद्ध वाक्य

वाक्य रचना में लिंग संबंधी अनेक अशुद्धियां होती हैं। सजग एवं सचेत रहकर ही इन अशुद्धियों का निराकरण हो सकता है।

II. वचन (Number)

परिभाषा : वचन का अभिप्राय संख्या से है। विकारी शब्दों के जिस रूप से उनकी संख्या *(एक या अनेक)* का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।

हिन्दी में केवल दो वचन हैं—एकवचन, बहुवचन।

1. एकवचन *(Singular)* : शब्द के जिस रूप से एक वस्तु या एक पदार्थ का ज्ञान होता है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे—बालक, घोड़ा, किताब, मेज आदि।

2. बहुवचन *(Plural)* : शब्द के जिस रूप से अधिक वस्तुओं या पदार्थों का ज्ञान होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे—बालकों, घोड़ों, किताबों, मेजों आदि।

बहुवचन बनाने में प्रयुक्त प्रत्यय—

1. ए : आकारान्त पुंलिंग, तद्भव संज्ञाओं में अन्तिम 'आ' के स्थान पर 'ए' कर देने से बहुवचन हो जाता है। जैसे—

घोड़ा — घोड़े लड़का — लड़के गधा — गधे

2. एं : अकारान्त एवं आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में एं जोड़ने पर वे बहुवचन बन जाते हैं। जैसे—

पुस्तक	— पुस्तकें	बात	— बातें
सड़क	— सड़कें	गाय	— गायें
लेखिका	— लेखिकाएं	माता	— माताएं

3. यां : यां इकारान्त, ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में जुड़कर उसे बहुवचन बना देता है। जैसे—

जाति	— जातियां	रीति	— रीतियां
नदी	— नदियां	लड़की	— लड़कियां

4. ओं : ओं का प्रयोग करके भी बहुवचन बनते हैं। जैसे—

कथा	— कथाओं	साधु	— साधुओं
माता	— माताओं	बहन	— बहनों

5. कभी-कभी कुछ शब्द भी बहुवचन बनाने के लिए जोड़े जाते है। जैसे—वृन्द *(मुनिवृन्द)*, जन *(युवजन)*, गण *(कृषकगण)*, वर्ग *(छात्रवर्ग)*, लोग *(नेता लोग)* आदि।

वाक्य में वचन संबंधी अनेक अशुद्धियां होती हैं जिनका निराकरण करना आवश्यक है, जैसे—

(i) कुछ शब्द सदैव बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

प्राण	मेरे प्राण छटपटाने लगे।
दर्शन	मैंने आपके दर्शन कर लिए।
आंसू	आँखों से आँसू निकल पड़े।
होश	शेर को देखते ही मेरे होश उड़ गए।
बाल	मैंने बाल कटा दिए।
हस्ताक्षर	मैंने कागज पर हस्ताक्षर कर दिए।

(ii) कुछ शब्द नित्य एकवचन होते हैं। जैसे—

माल	माल लूट गया।
जनता	जनता भूल गई।
सामान	सामान खो गया।
सामग्री	हवन सामग्री जल गई।
सोना	सोना का भाव कम हो गया।

(iii) आदरणीय व्यक्ति के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है।

पिताजी आ रहे हैं।
तुलसी श्रेष्ठ कवि थे।
आप क्या चाहते हैं?

(iv) 'अनेकों' शब्द का प्रयोग गलत है। एक का बहुवचन अनेक है, अतः अनेकों का प्रयोग अशुद्ध माना जाता है। जैसे—

1. वहाँ अनेकों लोग थे। (अशुद्ध)
   वहाँ अनेक लोग थे। (शुद्ध)
2. बाग में अनेकों वृक्ष थे। (अशुद्ध)
   बाग में अनेक वृक्ष थे। (शुद्ध)

III. कारक (Case)

परिभाषा : संज्ञा या सर्वनाम का वाक्य के अन्य पदों *(विशेषतः क्रिया)* से जो संबंध होता है, उसे कारक कहते हैं। जैसे—राम ने रावण को बाण से मारा।

इस वाक्य में राम क्रिया *(मारा)* का कर्ता है; रावण इस मारण क्रिया का कर्म है; बाण से यह क्रिया सम्पन्न की गई है, अतः बाण क्रिया का साधन होने से करण है।

कारक एवं कारक चिह्न

हिन्दी में कारकों की संख्या आठ मानी गई है। इन कारकों के नाम एवं उनके कारक चिह्नों का विवरण इस प्रकार है—

कारक	कारक चिह्न	कारक	कारक चिह्न
कर्ता	०, ने	कर्म	०, को, ए, एँ
करण	०, से, के द्वारा	सम्प्रदान	को, के लिए, ए, एँ
अपादान	से	संबंध	का, की, के,; रा, री, रे; ना, नी, ने
अधिकरण	में, पर	सम्बोधन	ऐ !, हे !, अरे ! ओ !

करण और अपादान में अन्तर : करण और अपादान दोनों कारकों में 'से' चिह्न का प्रयोग होता है किन्तु इन दोनों में मूलभूत अंतर है। करण क्रिया का साधन या उपकरण है। कर्ता कार्य सम्पन्न करने के लिए जिस उपकरण या साधन का प्रयोग करता है, उसे करण कहते हैं। जैसे—मैं कलम से लिखता हूँ।

यहाँ कलम लिखने का उपकरण है अतः कलम शब्द का प्रयोग करण कारक में हुआ है।

अपादान में अपाय *(अलगाव)* का भाव निहित है। जैसे—पेड़ से पत्ता गिरा।

अपादान कारक पेड़ में है, पत्ते में नहीं। जो अलग हुआ है उसमें अपादान कारक नहीं माना जाता अपितु जहाँ से अलग हुआ है, उसमें अपादान कारक होता है। पेड़ तो अपनी जगह स्थिर है, पत्ता अलग हो गया अतः ध्रुव *(स्थिर)* वस्तु में अपादान होगा। एक अन्य उदाहरण—वह गाँव से चला आया। यहाँ गाँव में अपादान कारक है।

कारकों की पहचान : कारकों की पहचान कारक चिह्नों से की जाती है। कोई शब्द किस कारक में प्रयुक्त है, यह वाक्य के अर्थ पर भी निर्भर है। सामान्यतः कारक निम्न प्रकार पहचाने जाते हैं—

कर्ता *(Nominative)*	क्रिया को सम्पन्न करने वाला
कर्म *(Accurative)*	क्रिया से प्रभावित होने वाला
करण *(Instrumental)*	क्रिया का साधन या उपकरण
सम्प्रदान *(Dative)*	जिससे क्रिया के उद्देश्य/प्रयोजन का बोध हो, जिसके लिए कोई क्रिया सम्पन्न की जाय या जिसे कुछ प्रदान किया जाय।
अपादान *(Ablative)*	जहाँ अलगाव हो वहाँ ध्रुव या स्थिर में अपादान होता है। अलगाव के अलावे कारण, तुलना, भिन्नता, आरंभ, सीखने आदि का बोधक
संबंध *(Genitive)*	जहाँ दो पदों का पारस्परिक संबंध बताया जाए।
अधिकरण *(Locative)*	जो क्रिया के आधार *(स्थान, समय, अवसर)* आदि का बोध कराये।
सम्बोधन *(Vocative)*	किसी को पुकार कर सम्बोधित किया जाय।

वाक्य में कारक संबंधी अनेक अशुद्धियां होती हैं। इनका निराकरण करके वाक्य को शुद्ध बनाया जाता है। जैसे—

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
तेरे को कहां जाना है?	तुझे कहाँ जाना है?
वह घोड़े के ऊपर बैठा है।	वह घोड़े पर बैठा है।
रोगी से दाल खाई गई।	रोगी के द्वारा दाल खाई गई।
मैं कलम के साथ लिखता हूं।	मैं कलम से लिखता हूं।

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
मुझे कहा गया था।	मुझसे कहा गया था।
लड़का मिठाई को रोता है।	लड़का मिठाई के लिए रोता है।
इस किताब के अन्दर बहुत कुछ है।	इस किताब में बहुत कुछ है।
मैंने आज पटना जाना है।	मुझे आज पटना जाना है।
तेरे को मेरे से क्या लेना-देना ?	तुझे मुझसे क्या लेना-देना ?
उसे कह दो कि भाग जाय।	उससे कह दो कि भाग जाय।
सीता से जाकर के कह देना।	सीता से जाकर कह देना।
तुम्हारे से कोई काम नहीं हो सकता।	तुमसे कोई काम नहीं हो सकता।
मैं पत्र लिखने को बैठा।	मैं पत्र लिखने के लिए बैठा।
मैंने राम को यह बात कह दी थी।	मैंने राम से यह बात कह दी थी।
इन दोनों घरों में एक दीवार है।	इन दोनों घरों के बीच एक दीवार है।

सर्वनाम (Pronoun)

परिभाषा : सब नामों (संज्ञाओं) के बदले जो शब्द आए, वह सर्वनाम है यानी संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं। जैसे— मैं, तुम, हम, वे, आप आदि शब्द सर्वनाम हैं।

'सर्वनाम' (= सर्व + नाम) का शाब्दिक अर्थ है— सबका नाम। ये शब्द किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा प्रयुक्त न होकर सबके द्वारा प्रयुक्त होते हैं तथा किसी एक का नाम न होकर सबका नाम होते हैं। 'मैं' का प्रयोग सभी व्यक्ति अपने लिए करते हैं, अतः 'मैं' किसी एक का नाम न होकर सबका नाम अर्थात् सर्वनाम है।

सर्वनाम के भेद

सर्वनाम के छः भेद हैं—

1. पुरुषवाचक सर्वनाम *(Personal Pronoun)* : जो पुरुषों (पुरुष या स्त्री) के नाम के बदले आते हैं, उन्हे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं—उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष एवं अन्य पुरुष।

उत्तम पुरुष	मैं, हम, मैंने, हमने, मेरा, हमारा, मुझे,मुझको।
मध्यम पुरुष	तू, तुम, तुमने, तुझे, तूने, तुम्हें, तुमको, तुमसे, आपने, आपको।
अन्य पुरुष	वह, यह, वे, ये, इन, उन, उनको, उनसे, इन्हें, उन्हें, इससे, उसको।

2. निश्चयवाचक सर्वनाम *(Demonstrative Pronoun)* : निकट या दूर के व्यक्तियों या वस्तुओं का निश्चयात्मक संकेत जिन शब्दों से व्यक्त होता है, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे—यह, वह, ये, वे।

(i) यह मेरी पुस्तक है। (ii) वह उनकी मेज है।
(iii) ये मेरे हथियार हैं। (iv) वे तुम्हारे आदमी हैं।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम *(Indefinite Pronoun)* : जिन सर्वनामों से किसी निश्चित वस्तु का बोध नहीं होता उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे— कोई, कुछ।

(i) कोई आ गया तो क्या करोगे ?
(ii) उसने कुछ नहीं लिया।

कभी-कभी कुछ 'शब्द-समूह' भी अनिश्चय सर्वनाम के रूप में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—1. कुछ न कुछ, 2. कोई न कोई, 3. सब कुछ, 4. हर कोई, 5. कुछ भी, 6. कुछ-कुछ आदि।

4. संबंधवाचक सर्वनाम *(Relative Pronoun)* : जिस सर्वनाम से किसी दूसरे सर्वनाम से संबंध स्थापित किया जाय, उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे— जो, सो।

जो आया है, सो जायेगा यह ध्रुव सत्य है।

5. प्रश्नवाचक सर्वनाम *(Interrogative Pronoun)*: प्रश्न करने के लिए प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम शब्दों को प्रश्नवाचक सर्वनाम कहा जाता है। जैसे— कौन, क्या।

(i) कौन आया था ?
(ii) वह क्या कह रहा था ?
(iii) दूध में क्या गिर पड़ा ?

6. निजवाचक सर्वनाम *(Reflexive Pronoun)* : निजवाचक सर्वनाम है—आप। यह 'अपने आप', स्वतः, 'स्वयं' या 'खुद' के लिए प्रयुक्त सर्वनाम है। जैसे—यह कार्य मैं 'आप' ही कर लूंगा।

ध्यान रहे कि यहाँ प्रयुक्त 'आप' स्वयं के लिए प्रयुक्त है जो कि पुरुषवाचक मध्यम पुरुष आदरसूचक सर्वनाम 'आप' से अलग है।

निजवाचक सर्वनाम 'आप' का प्रयोग इन स्थितियों में होता है—

(i) किसी संज्ञा या सर्वनाम के अवधारण/निश्चय के लिए; जैसे—मैं आप वहीं से आया हूँ।
(ii) दूसरे व्यक्ति के निराकरण के लिए; जैसे—वह औरों को नहीं, अपने को, सुधार रहा है।
(iii) सर्वसाधारण के अर्थ में; जैसे—आप भला तो जग भला। अपने से बड़ों का आदर करना चाहिए।

सर्वनाम : एक नजर में

1.	पुरुषवाचक	(a) उत्तम पुरुष—मैं; हम/हमलोग
		(b) मध्यम पुरुष—तू, तुम, आप; तुमलोग, आपलोग
		(c) अन्य पुरुष—यह, ये, वह वे; ये लोग, वे लोग
2.	निश्चयवाचक	(a) निकटवर्ती—यह, ये
		(b) दूरवर्ती—वह, वे
3.	अनिश्चयवाचक	(a) प्राणि बोधक—कोई
		(b) वस्तु बोधक—कुछ
4.	सम्बन्धवाचक	जो, सो
5.	प्रश्नवाचक	(a) प्राणि बोधक—कौन; कौन-कौन
		(b) वस्तु बोधक—क्या; क्या-क्या
6.	निजवाचक	आप

नोट : जब 'यह', 'वह', 'कोई', 'कुछ','जो', 'सो' अकेले आते हैं तो सर्वनाम होते हैं और जब किसी संज्ञा के साथ आते हैं तो विशेषण हो जाते हैं। जैसे—

यह आ गई। *(यहाँ 'यह' सर्वनाम है।)*
यह किताब कैसी है। *(यहाँ 'यह' विशेषण है।)*

सर्वनाम के विकारी रूप : विभिन्न कारकों में प्रयुक्त होने पर सर्वनाम शब्दों के रूप परिवर्तित हो जाते हैं। सर्वनाम का प्रयोग सम्बोधन में नहीं होता। इसके विकारी रूप हैं—मैंने, मुझको, मुझसे, हमने, हमको, हमसे, मेरा, हमारा, उसने, उसको, तुमने, तुमको, आपने, आपको, तुझे, तुम्हारा, तुमसे, इसने, इसको, किसको आदि।

सर्वनाम का पद परिचय *(Parsing of Pronoun)*: किसी वाक्य में प्रयुक्त सर्वनाम का पद-परिचय देने के लिए पहले सर्वनाम का भेद, लिंग, वचन, कारक एवं अन्य पदों से उसका सम्बन्ध बताना पड़ता है। जैसे—(i) मैं पुस्तक पढ़ता हूं।

मैं—सर्वनाम, पुरुषवाचक, उत्तम पुरुष, पुलिंग, एकवचन, कर्ता कारक, पढ़ना क्रिया का कर्ता। जैसे—(ii)चाय में कुछ पड़ा है।

कुछ—सर्वनाम, अनिश्चयवाचक, पुलिंग, एकवचन, कर्मकारक, पड़ा क्रिया का कर्म।

विशेषण (Adjective)

परिभाषा : संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

जो शब्द विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहा जाता है और जिसकी विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहा जाता है। जैसे—मोटा लड़का हँस पड़ा। यहाँ 'मोटा' विशेषण है तथा 'लड़का' विशेष्य *(संज्ञा)* है।

विशेषण के भेद—विशेषण मूलतः चार प्रकार के होते हैं—

1. सार्वनामिक विशेषण *(Demonstrative Adjective)* : विशेषण के रूप में प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम को सार्वनामिक विशेषण कहा जाता है। इनके दो उपभेद हैं—

(i) मौलिक सार्वनामिक विशेषण : जो सर्वनाम बिना रूपान्तर के मौलिक रूप में संज्ञा के पहले आकर उसकी विशेषता बतलाते हैं उन्हें इस वर्ग में रखा जाता है। जैसे—

1. यह घर मेरा है।
2. वह किताब फटी है।
3. कोई आदमी रो रहा है।

(ii) यौगिक सार्वनामिक विशेषण : जो सर्वनाम रूपान्तरित होकर संज्ञा शब्दों की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें यौगिक सार्वनामिक विशेषण कहा जाता है। जैसे—

1. ऐसा आदमी नहीं देखा।
2. कैसा घर चाहिए?
3. जैसा देश वैसा भेष।

2. गुणवाचक विशेषण *(Adjective of Quality)*: जो शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम के गुण-धर्म, स्वभाव का बोध कराते हैं, उन्हें गुणवाचक सर्वनाम कहते हैं। गुणवाचक विशेषण अनेक प्रकार के हो सकते हैं। जैसे—

कालबोधक	नया, पुराना, ताजा, मौसमी, प्राचीन।
रंगबोधक	लाल, पीला, काला, नीला, बैंगनी, हरा।
दशाबोधक	मोटा, पतला, युवा, वृद्ध, गीला, सूखा।
गुणबोधक	अच्छा, भला, बुरा, कपटी, झूठा, सच्चा, पापी, न्यायी, सीधा, सरल।
आकारबोधक	गोल, चौकोर, तिकोना, लम्बा, चौड़ा, नुकीला, सुडौल, पतला, मोटा।

3. संख्यावाचक विशेषण *(Adjective of Number)* : जो शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम की संख्या का बोध कराते हैं, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहा जाता है। ये दो प्रकार के होते हैं—

(i) निश्चित संख्यावाचक : इनसे निश्चित संख्या का बोध होता है। जैसे— दस लड़के, बीस आदमी, पचास रुपये।

निश्चित संख्यावाचक विशेषणों को प्रयोग के अनुसार निम्न भेदों में विभक्त किया जा सकता है—

गणनावाचक	एक, दो, चार, आठ, बारह।
क्रमवाचक	पहला, दसवां, सौवां, चौथा।
आवृत्तिवाचक	तिगुना, चौगुना, सौगुना।
समुदायवाचक	चारों, आठों, तीनों।

(ii) अनिश्चित संख्यावाचक : इनसे अनिश्चित संख्या का बोध होता है। जैसे—

1. कुछ आदमी चले गए।
2. कई लोग आए थे।
3. सब कुछ समाप्त हो गया।

4. परिमाणबोधक विशेषण *(Adjective of Quantity)* : जिन विशेषणों से संज्ञा अथवा सर्वनाम के परिमाण का बोध होता है, उन्हें परिमाणबोधक विशेषण कहते हैं। इनके भी दो भेद हैं—

निश्चित परिमाणबोधक	दस किलो घी, पांच क्विंटल गेहूं।
अनिश्चित परिमाणबोधक	बहुत घी, थोड़ा दूध।

प्रविशेषण *(Adverb)*: वे शब्द जो विशेषणों की विशेषता बतलाते हैं, प्रविशेषण कहे जाते हैं। जैसे—

1. वह बहुत तेज दौड़ता है।

   यहां 'तेज' विशेषण है और 'बहुत' प्रविशेषण है क्योंकि यह तेज की विशेषता बतला रहा है।

2. सीता अत्यन्त सुन्दर है।

   यहाँ 'सुन्दर' विशेषण है तथा 'अत्यन्त' प्रविशेषण है।

विशेषणार्थक प्रत्यय : संज्ञा शब्दों को विशेषण बनाने के लिए उनमें जिन प्रत्ययों को जोड़ा जाता है, उन्हें विशेषणार्थक प्रत्यय कहते हैं। जैसे—

प्रत्यय	संज्ञा शब्द	विशेषण	प्रत्यय	संज्ञा शब्द	विशेषण
ईला	चमक	चमकीला	ई	धन	धनी
इक	अर्थ	आर्थिक	वान	दया	दयावान
मान	बुद्धि	बुद्धिमान	ईय	भारत	भारतीय

विशेषण की तुलनावस्था : इन्हें तुलनात्मक विशेषण भी कहा जाता है। विशेषण की तीन अवस्थाएं तुलनात्मक रूप में हो सकती हैं—मूलावस्था *(Positive Degree)*, उत्तरावस्था *(Comparative Degree)* एवं उत्तमावस्था *(Superlative Degree)*। जैसे—

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था	मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
लघु	लघुतर	लघुतम	सुन्दर	सुन्दरतर	सुन्दरतम
कोमल	कोमलतर	कोमलतम	बृहत्	बृहत्तर	बृहत्तम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम	महत्	महत्तर	महत्तम

विशेषण का पद-परिचय *(Parsing of Adjective)* : वाक्य में विशेषण पदों का अन्वय *(पद-परिचय)* करते समय उसका स्वरूप—भेद, लिंग, वचन, कारक और विशेष्य बताया जाता है। जैसे—

काला कुत्ता मर गया।

काला—विशेषण, गुणवाचक, रंगबोधक, पुलिंग, एकवचन, विशेष्य— कुत्ता।

मुझे थोड़ी बहुत जानकारी है।

थोड़ी बहुत—विशेषण, अनिश्चित संख्यावाचक, स्त्रीलिंग, कर्मवाचक, विशेष्य—जानकारी।

क्रिया (Verb)

परिभाषा : जिस शब्द से किसी कार्य का होना या करना समझा जाय, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे—खाना, पीना, पढ़ना, सोना, रहना, जाना आदि।

धातु : क्रिया के मूल रूप (मूलांश) को धातु कहते हैं। 'धातु' से ही क्रिया पद का निर्माण होता है इसीलिए क्रिया के सभी रूपों में 'धातु' उपस्थित रहती है। जैसे—

चलना क्रिया में 'चल' धातु है।
पढ़ना क्रिया में 'पढ़' धातु है।

प्रायः धातु में '-ना' प्रत्यय जोड़कर क्रिया का निर्माण होता है।

पहचान : धातु पहचानने का अक सरल सूत्र है कि दिये गए शब्दांश में '–ना' लगाकर देखें और यदि '-ना' लगने पर क्रिया बने तो समझना चाहिए कि वह शब्दांश धातु है।

धातु के दो भेद हैं—मूल धातु, यौगिक धातु।

(i) मूल धातु : यह स्वतन्त्र होती है तथा किसी अन्य शब्द पर निर्भर नहीं होती, जैसे—जा, खा, पी, रह आदि।

(ii) यौगिक धातु : यौगिक धातु मूल धातु में प्रत्यय लगाकर, कई धातुओं को संयुक्त करके अथवा संज्ञा और विशेषण में प्रत्यय लगाकर बनाई जाती है। यह तीन प्रकार की होती है—

1. प्रेरणार्थक क्रिया *(धातु)* : प्रेरणार्थक क्रियाएँ अकर्मक एवं सकर्मक दोनों क्रियाओं से बनती हैं। 'आना'/'लाना' जोड़ने से प्रथम प्रेरणार्थक एवं 'वाना' जोड़ने से द्वितीय प्रेरणार्थक रूप बनते हैं। जैसे—

मूल धातु	प्रेरणार्थक धातु	मूल धातु	प्रेरणार्थक धातु
उठ-ना	उठाना, उठवाना	सो-ना	सुलाना, सुलवाना
दे-ना	दिलाना, दिलवाना	खा-ना	खिलाना, खिलवाना
कर-ना	कराना, करवाना	पी-ना	पिलाना, पिलवाना

2. यौगिक क्रिया *(धातु)* : दो या दो से अधिक धातुओं के संयोग से यौगिक क्रिया बनती है। जैसे—रोना-धोना, उठना-बैठना, चलना-फिरना, खा लेना, उठ बैठना, उठ जाना।

3. नाम धातु : संज्ञा या विशेषण से बनने वाली धातु को नाम धातु कहते हैं। जैसे—गाली से गरियाना, लात से लतियाना, बात से बतियाना; गरम से गरमाना, चिकना से चिकनाना, ठंडा से ठंडाना।

क्रिया के भेद : कर्म के अनुसार या रचना की दृष्टि से क्रिया के दो भेद हैं— (i) सकर्मक क्रिया, (ii) अकर्मक क्रिया

1. सकर्मक क्रिया *(Transitive Verb)* : जिस क्रिया के साथ कर्म हो या कर्म की संभावना हो तथा जिस क्रिया का फल कर्म पर पड़ता हो, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे—

(i) राम फल खाता है। *(खाना क्रिया के साथ फल कर्म है)*
(ii) सीता गीत गाती है। *(गाना क्रिया के साथ गीत कर्म है)*
(iii) मोहन पढ़ता है। *(पढ़ना क्रिया के साथ पुस्तक कर्म की संभावना बनती है)*

2. अकर्मक क्रिया *(Intransitive Verb)* : अकर्मक क्रिया के साथ कर्म नहीं होता तथा उसका फल कर्ता पर पड़ता है। जैसे—जैसे—

(i) राधा रोती है। *(कर्म का अभाव है तथा रोती है क्रिया का फल राधा पर पड़ता है)*
(ii) मोहन हँसता है। *(कर्म का अभाव है तथा हँसता है क्रिया का फल मोहन पर पड़ता है)*

पहचान : सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं की पहचान 'क्या' और 'किसको' प्रश्न करने से होती है। यदि दोनों का उत्तर मिले, तो समझना चाहिए कि क्रिया सकर्मक है और यदि न मिले तो अकर्मक। जैसे—

1. राम फल खाता है। *(प्रश्न करने पर कि राम क्या खाता है, उत्तर मिलेगा फल। अतः 'खाना' क्रिया सकर्मक है।)*
2. बालक रोता है। *(प्रश्न करने पर कि बालक क्या रोता है, कोई उत्तर नहीं मिलता, बालक किसको रोता है कोई उत्तर नहीं मिलता। अतः 'रोना' क्रिया अकर्मक है।)*

क्रिया के कुछ अन्य भेद निम्नवत् हैं

1. सहायक क्रिया *(Helping Verb)* : सहायक क्रिया मुख्य क्रिया के साथ प्रयुक्त होकर अर्थ को स्पष्ट एवं पूर्ण करने में सहायता करती है। जैसे—

(i) मैं घर जाता हूँ। *(यहाँ 'जाना' मुख्य क्रिया है और 'हूँ' सहायक क्रिया है)*
(ii) वे हँस रहे थे। *(यहाँ 'हँसना' मुख्य क्रिया है और 'रहे थे' सहायक क्रिया है)*

2. पूर्वकालिक क्रिया *(Absolutive Verb)* : जब कर्ता एक क्रिया को समाप्त कर दूसरी क्रिया करना प्रारम्भ करता है तब पहली क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहा जाता है। जैसे—राम भोजन करके सो गया।

यहाँ भोजन करके पूर्वकालिक क्रिया है, जिसे करने के बाद उसने दूसरी क्रिया *(सो जाना)* सम्पन्न की है।

3. नामबोधक क्रिया *(Nominal Verb)* : संज्ञा अथवा विशेषण के साथ क्रिया जुड़ने से नामबोधक क्रिया बनती है। जैसे—

	संज्ञा	+	क्रिया	=	नामबोधक क्रिया
1.	लाठी	+	मारना	=	लाठी मारना
2.	रक्त	+	खौलना	=	रक्त खौलना
	विशेषण	+	क्रिया	=	नामबोधक क्रिया
1.	दुःखी	+	होना	=	दुःखी होना
2.	पीला	+	पड़ना	=	पीला पड़ना

4. द्विकर्मक क्रिया *(Double Transitive Verb)* : जिस क्रिया के दो कर्म होते हैं उसे द्विकर्मक क्रिया कहा जाता है। जैसे—

(i) अध्यापक ने छात्रों को हिन्दी पढ़ाई।
(दो कर्म—छात्रों, हिन्दी)
(ii) श्याम ने राम को थप्पड़ मार दिया।
(दो कर्म—राम, थप्पड़)

'कर्म + को/से' को अप्रधान/गौण कर्म एवं 'कर्म-को/से' को प्रधान कर्म कहते हैं; जैसे—पहले वाक्य में 'छात्रों को' अप्रधान कर्म एवं 'हिन्दी' प्रधान कर्म है।

5. संयुक्त क्रिया *(Compound Verb)* : जब कोई क्रिया दो क्रियाओं के संयोग से निर्मित होती है, तब उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं। जैसे—

(i) वह खाने लगा।
(ii) मुझे पढ़ने दो।
iii) वह पेड़ से कूद पड़ा।
(iv) मैंने किताब पढ़ ली।

(v) वह खेलती-कूदती रहती है।
(vi) आप आते-जाते रहिए।
(vii) चिड़ियां उड़ा करती हैं।
(viii) अब त्यागपत्र दे ही डालो।

6. क्रियार्थक संज्ञा *(Verbal Noun)*: जब कोई क्रिया संज्ञा की भांति व्यवहार में आती है तब उसे क्रियार्थक संज्ञा कहते हैं। जैसे—

(i) टहलना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।
(ii) देश के लिए मरना कीर्तिदायक है।

क्रिया के सम्बन्ध में 'वाच्य' और 'काल' भी विचारणीय हैं :

1. वाच्य *(Voice)*: वाच्य क्रिया का रूपान्तरण है जिसके द्वारा यह पता चलता है कि वाक्य में कर्ता, कर्म या भाव में से किसकी प्रधानता है। वाच्य के तीन भेद हैं—

(i) कर्तृवाच्य *(Active Voice)*: क्रिया के उस रूपान्तरण को कर्तृवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध होता है। यह वाच्य सकर्मक और अकर्मक दोनों से बनता है। जैसे—
1. राम ने दूध पिया। 2. सीता गाती है।
3. मैं स्कूल गया।

(ii) कर्मवाच्य *(Passive Voice)*: क्रिया के उस रूपान्तरण को कर्मवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्म की प्रधानता का बोध होता है। यह वाच्य सकर्मक क्रिया से बनता है, जैसे—
1. लेख लिखा गया। 2. गीत गाया गया।
3. पुस्तक पढ़ी गई।

(iii) भाववाच्य *(Impersonal Voice)*: क्रिया का वह रूपान्तर भाववाच्य कहलाता है, जिससे वाक्य में 'भाव' *(या क्रिया)* की प्रधानता का बोध होता है। यह वाच्य अकर्मक क्रिया से बनता है। जैसे—
1. मुझसे चला नहीं जाता।
2. उससे चुप नहीं रहा जाता।
3. सीता से हँसा नहीं जाता।

वाच्य के प्रयोग : वाक्य में क्रिया किसका अनुसरण कर रही है—कर्ता, कर्म, या भाव का— इस आधार पर तीन प्रकार के 'प्रयोग' माने गए हैं—

(i) *कर्तरि प्रयोग* : जब वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार हों, तब कर्तरि प्रयोग होता है। जैसे—
1. राम पुस्तक पढ़ता है। *(क्रिया कर्तानुसारी है)*
2. सीता आम खाती है। *(क्रिया कर्तानुसारी है)*

(ii) *कर्मणि प्रयोग* : जब वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार हों, तब कर्मणि प्रयोग होता है। जैसे—
1. राधा ने गीत गाया।
(क्रिया कर्म के अनुसार पुलिंग है)
2. मोहन ने किताब पढ़ी।
(क्रिया कर्म के अनुसार स्त्रीलिंग है)

(iii) भावे प्रयोग : जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष, कर्ता अथवा कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार न होकर सदैव पुलिंग, एकवचन और अन्य पुरुष में हो तब भावे प्रयोग होता है। जैसे—
1. राम से रोया नहीं जाता।
2. सीता से रोया नहीं जाता।
3. लड़कों से रोया नहीं जाता।

इन तीनों वाक्यों में कर्ता के बदलने पर भी क्रिया अपरिवर्तित है तथा वह पुलिंग, एकवचन और अन्य पुरुष में है अतः ये भावे प्रयोग हैं।

2. काल *(Tense)*: क्रिया के जिस रूप से कार्य व्यापार के समय तथा उसकी पूर्णता अथवा अपूर्णता का बोध होता है, उसे काल कहते हैं।

काल के तीन भेद होते हैं—

(i) वर्तमान काल *(Present Tense)*: वर्तमान काल में क्रिया व्यापार की निरन्तरता रहती है। इसके पांच भेद हैं :

सामान्य वर्तमान *(Imperfect/Simple Present/ Present Indefinite)*	वह पढ़ता है।
तात्कालिक वर्तमान *(Present Continuous)*	वह पढ़ रहा है।
पूर्ण वर्तमान *(Present Perfect)*	वह पढ़ चुका है।
संदिग्ध वर्तमान *(Doubtful Present)*	वह पढ़ता होगा।
संभाव्य वर्तमान *(Present Conjunctive)*	वह पढ़ता हो।

(ii) भूतकाल *(Past Tense)*: भूतकाल में क्रिया व्यापार की समाप्ति का बोध होता है। इसके छः भेद हैं :

सामान्य भूत *(Simple Past/Past Indefinite)*	सीता गयी।
आसन्न भूत *(Recent Past)*	सीता गयी है।
पूर्ण भूत *(Past Perfect)*	सीता गयी थी।
अपूर्ण भूत *(Past Imperfect/Continuous)*	सीता जा रही थी।
संदिग्ध भूत *(Doubtful Past)*	सीता गयी होगी।
हेतुहेतुमद्भूत *(Conditional Past)*	सीता जाती। *(क्रिया होने वाली थी, पर हुई नहीं)*

(iii) भविष्यत् काल *(Future Tense)* : भविष्य में होने वाली क्रिया का बोध भविष्यत् काल से होता है। इसके तीन भेद हैं :

सामान्य भविष्यत् *(Simple Future/ Future Indefinite)*	राम पढ़ेगा।
संभाव्य भविष्यत् *(Future Conjunctive)*	सम्भव है राम पढ़े।
हेतुहेतुमद् भविष्यत् *Conditional Future)*	छात्रवृत्ति मिले, तो राम पढ़े। *(इसमें एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर है)*

क्रिया का पद-परिचय *(Parsing of Verb)*: क्रिया के पद-परिचय में क्रिया, क्रिया का भेद, वाच्य, लिंग, पुरुष, वचन, काल और वह शब्द जिससे क्रिया का संबंध है, बतानी चाहिए। जैसे—

1. राम ने पुस्तक पढ़ी।
पढ़ी— क्रिया, सकर्मक, कर्मवाच्य, स्त्रीलिंग, एकवचन, अन्य पुरुष, सामान्य भूत, कर्म पुस्तक से सम्बन्धित।
2. मोहन कल जायेगा।
जायेगा— क्रिया, अकर्मक, कर्तृवाच्य, पुलिंग, एकवचन, अन्य पुरुष, सामान्य भविष्यत्, कर्ता मोहन से सम्बन्धित।

अव्यय (Indeclinables)

परिभाषा : ऐसे शब्द जिनमें लिंग, वचन, पुरुष, कारक आदि के कारण कोई विकार नहीं आता, अव्यय कहलाते हैं।

ये शब्द सदैव अपरिवर्तित, अविकारी एवं अव्यय रहते हैं। इनका मूल रूप स्थिर रहता है, कभी बदलता नहीं। जैसे—आज, कब, इधर, किन्तु, परन्तु, क्यों, जब, तब, और, अतः, इसलिए आदि।

अव्यय के भेद : अव्यय के चार भेद हैं :

1. क्रिया विशेषण *(Adverb)* : जो शब्द क्रिया की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहा जाता है।

अर्थ के आधार पर क्रिया विशेषण चार प्रकार के होते हैं :

(a) स्थानवाचक

स्थितिवाचक	यहाँ, वहाँ, भीतर, बाहर।
दिशावाचक	इधर, उधर, दाएं, बाएं।

(b) कालवाचक

समयवाचक	आज, कल, अभी, तुरन्त।
अवधिवाचक	रात भर, दिन भर, आजकल, नित्य।
बारबारतावाचक	हर बार, कई बार, प्रतिदिन।

(c) परिमाणवाचक

अधिकताबोधक	बहुत, खूब, अत्यन्त, अति।
न्यूनताबोधक	जरा, थोड़ा, किंचित्, कुछ।
पर्याप्तिबोधक	बस, यथेष्ट, काफी, ठीक।
तुलनाबोधक	कम, अधिक, इतना, उतना।
श्रेणीबोधक	बारी-बारी, तिल-तिल, थोड़ा-थोड़ा।

(d) रीतिवाचक

ऐसे, वैसे, जैसे, मानो, धीरे, अचानक, कदाचित्, अवश्य, इसलिए, तक, सा, तो, हाँ, जी, यथासम्भव।

2. सम्बन्धबोधक *(Preposition)* : जो अव्यय किसी संज्ञा के बाद आकर उस संज्ञा का संबंध वाक्य के दूसरे शब्द से दिखाते हैं, उन्हें संबंध बोधक कहते हैं। जैसे—वह दिन भर काम करता रहा। मैं विद्यालय तक गया था। मनुष्य पानी के बिना जीवित नहीं रह सकता।

अर्थ के आधार पर सम्बन्धबोधक अव्यय के चौदह प्रकार हैं—

स्थानवाचक	आगे, पीछे, निकट, समीप, सामने, बाहर
दिशावाचक	आसपास, ओर, तरफ, दायाँ, बायाँ
कालवाचक	पहले, बाद, आगे, पश्चात, अब, तक
साधनवाचक	द्वारा, माध्यम, सहारे, जरिए, मार्फत
उद्देश्यवाचक	लिए, वास्ते, हेतु, निमित्त
व्यतिरेकवाचक	अलावा, अतिरिक्त, सिवा, बगैर, बिना, रहित
विनिमयवाचक	बदले, एवज, स्थान पर, जगह पर
सादृश्यवाचक	समान, तुल्य, बराबर, योग्य, तरह, सरीखा
विरोधवाचक	विरोध, विरुद्ध, विपरीत, खिलाफ
साहचर्यवाचक	साथ, संग, सहित, समेत
विषयवाचक	संबंध, विषय, आश्रय, भरोसे
संग्रहवाचक	लगभग, भर, मात्र, तक, अन्तर्गत
तुलनावाचक	अपेक्षा, बनिस्बत, समक्ष, समान
कारणवाचक	कारण, परेशानी से, मारे, चलते

3. समुच्चयबोधक *(Conjunction)* : दो वाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले शब्द समुच्चयबोधक अव्यय कहे जाते हैं। जैसे—

सूरज निकला और पक्षी बोलने लगे।

यहां 'और' समुच्चयबोधक अव्यय है।

समुच्चयबोधक अव्यय मूलतः दो प्रकार के होते हैं :

(i) समानाधिकरण (ii) व्यधिकरण

पुनः समानाधिकरण समुच्चयबोधक के चार उपभेद हैं :

संयोजक	और, व, एवं, तथा।
विभाजक	या, वा, अथवा, किंवा, नहीं तो।
विरोध-दर्शक	पर, परन्तु, लेकिन, किन्तु, मगर, बल्कि, वरन्।
परिणाम-दर्शक	इसलिए, अतः, अतएव।

व्यधिकरण समुच्चयबोधक के भी चार उपभेद हैं :

कारणवाचक	क्योंकि, चूँकि, इसलिए कि।
उद्देश्यवाचक	कि, जो, जोकि, ताकि।
संकेतवाचक	जो....तो, यदि....तो, यद्यपि....तथापि।
स्वरूपवाचक	कि, जो, अर्थात्, यानी।

4. विस्मयादिबोधक *(Interjection)* : जिन अव्ययों से हर्ष, शोक, घृणा, आदि भाव व्यंजित होते हैं तथा जिनका संबंध वाक्य के किसी पद से नहीं होता, उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं, जैसे—हाय ! वह चल बसा।

इस अव्यय के निम्न उपभेद हैं :

हर्षबोधक	वाह !, आहा !, धन्य !, शाबाश !, जय!
शोकबोधक	हाय !, हा! आह !, अह!, ऊह! काश! त्राहि-त्राहि !
आश्चर्यबोधक	ऐं !, क्या !, ओहो !, हैं !
स्वीकारबोधक	हाँ !, जी हाँ !, अच्छा !, जी !, ठीक !
अनुमोदनबोधक	ठीक !, अच्छा !, हाँ-हाँ ! हो!
तिरस्कारबोधक	छिः !, हट !, धिक् !, दुर् !
सम्बोधनबोधक	अरे !, रे !, री!, भई!, अजी !, हे !, अहो !

निपात : मूलतः निपात का प्रयोग अव्ययों के लिए होता है। लेकिन ये शुद्ध अवयव नहीं होते। इनका कोई लिंग, वचन नहीं होता। निपातों का प्रयोग निश्चित शब्द, शब्द-समूह या पूरे वाक्य को अन्य (अतिरिक्त) भावार्थ प्रदान करने के लिए होता है। निपात सहायक शब्द होते हुए भी वाक्य के अंग नहीं होते। पर वाक्य में इनके प्रयोग से उस वाक्य का समग्र अर्थ प्रभावित होता है। निपात नौ प्रकार के होते हैं—

स्वीकृतिबोधक	हाँ, जी, जी हाँ।
नकारबोधक	जी नहीं, नहीं।
निषेधात्मक	मत।
प्रश्नबोधक	क्या।
विस्मयादिबोधक	क्या, काश।
तुलनाबोधक	सा।
अवधारणाबोधक	ठीक, करीब, लगभग, तकरीबन।
आदरबोधक	जी।
बलप्रदायक	तो, ही, भी, तक, भर, सिर्फ, केवल।

हिन्दी में अधिकांशतः निपात उस शब्द या शब्द-समूह के बाद आते हैं, जिनको वे विशिष्टता या बल प्रदान करते हैं, जैसे—

रमेश ने ही मुझे मारा था। (अर्थात् रमेश के अलावा और किसी ने नहीं मारा था।)

रमेश ने मुझे ही मारा था। (अर्थात् मुझे ही मारा था और किसी को नहीं।)

रमेश ने मुझे मारा ही था। (अर्थात् मारा ही था गाली आदि नहीं दी थी।)

इस प्रकार निपात वाक्यों में नया अथवा गहन भाव प्रकट करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अव्यय का पद-परिचय *(Parsing of Indeclinables)*: वाक्य में अव्यय का पद-परिचय देने के लिए अव्यय, उसका भेद, उससे संबंध रखने वाला पद—इतनी बातों का उल्लेख करना चाहिए। जैसे—वह धीरे-धीरे चलता है।

धीरे-धीरे—अव्यय, क्रिया विशेषण, रीतिवाचक, क्रिया चलता की विशेषता बताने वाला।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. वस्तु, स्थान, भाव या विचार के द्योतक शब्द को क्या कहते हैं?
(a) संज्ञा (b) सर्वनाम (c) विशेषण (d) विशेष्य

2. व्युत्पत्ति के आधार पर संज्ञा के कितने भेद होते हैं?
(a) 3 (b) 4 (c) 5 (d) 6

3. 'स्त्रीत्व' शब्द में कौन-सी संज्ञा है?
(a) जातिवाचक संज्ञा (b) व्यक्तिवाचक संज्ञा
(c) भाववाचक संज्ञा (d) द्रव्यवाचक संज्ञा
(रेलवे, 1997)

4. 'भारतीय' शब्द का बहुवचन है—
(a) भारतीयों (b) भारतिओं
(c) भारतियों (d) इनमें से कोई नहीं
(रेलवे, 1997)

5. 'सूर्य' शब्द का स्त्रीलिंग क्या होगा?
(a) सूर्याणी (b) सूर्या (c) सूर्यायी (d) सूर्यो
(रेलवे, 1997)

6. 'बुढ़ापा भी एक प्रकार का अभिशाप है'—इस वाक्य में रंगीन छपे शब्द की संज्ञा बताइए—
(a) जातिवाचक संज्ञा (b) व्यक्तिवाचक संज्ञा
(c) भाववाचक संज्ञा (d) इनमें से कोई नहीं
(रेलवे, 1998)

7. निम्नलिखित शब्दों में से कौन-सा शब्द संज्ञा है?
(a) क्रुद्ध (b) क्रोध (c) क्रोधी (d) क्रोधित
(बी० एड०, 1998)

8. 'आँसू' का बहुवचन क्या होगा?
(a) आँसू (b) आँसूएँ
(c) आँसुओं (d) इनमें से कोई नहीं
(रेलवे, 1998)

9. निम्नलिखित शब्दों में से एक शब्द पुंलिंग है, उसे बताइए—
(a) बुढ़ापा (b) जड़ता (c) घटना (d) दया
(बी० एड०, 1998)

10. निम्नलिखित वाक्य को पढ़िए तथा उसमें कारक के सही भेद को पहचानिए—
हे प्रभो! मेरी इच्छा पूर्ण करो।
(a) अधिकरण कारक (b) संबंध कारक
(c) संबोधन कारक (d) अपादान कारक*(रेलवे, 1998)*

11. भाववाचक संज्ञा बनाइए—
(a) लड़कापन (b) लड़काई (c) लड़कपन (d) लड़काईपन
(बी० एड०, 1999)

12. 'सच्चरित्रता' किस मूल शब्द से बना है?
(a) सतचरित्र (b) चरित्र (c) चरित्रता (d) सच्चरित्र
(बी० एड०, 1999)

13. कौन-सा शब्द बहुवचन है?
(a) माता (b) प्राण
(c) लड़का (d) किताब *(बी० एड०, 1999)*

14. निम्नलिखित में कौन-सा शब्द पुंलिंग है?
(a) कपट (b) सुन्दरता
(c) मूर्खता (d) निद्रा *(बी० एड०, 1999)*

15. 'गीदड़' का स्त्रीलिंग क्या होगा?
(a) गीदड़िन (b) गीदड़नी
(c) गीदड़ी (d) गिदड़िया *(बी० एड०, 1999)*

16. किस वाक्य में अपादान कारक है?
(a) राम ने रावण को तीर से मारा।
(b) मोहन से अब सहा नहीं जाता।
(c) हिमालय से गंगा निकलती है।
(d) चाकू से फल काटो। *(बी० एड०, 2000)*

17. हिन्दी में शब्दों का लिंग निर्धारण किसके आधार पर होता है
(a) संज्ञा (b) सर्वनाम
(c) क्रिया (d) प्रत्यय *(रेलवे, 2001)*

18. निम्नलिखित में भाववाचक संज्ञा कौन-सी है?
(a) शत्रुता (b) वीर
(c) मनुष्य (d) गुरु *(रेलवे, 2001)*

19. निम्नलिखित शब्दों में से स्त्रीलिंग शब्दों का चयन कीजिए—
(a) अपराध (b) अध्याय
(c) स्वदेश (d) स्थापना *(रेलवे, 2001)*

20. अर्थ के विचार से संज्ञा कितने प्रकार के होते हैं?
(a) 4 (b) 5 (c) 6 (d) 7
(बैंक परीक्षा, 2002)

21. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा है?
(a) गाय (b) पहाड़
(c) यमुना (d) आम *(रेलवे, 2002)*

22. कौन-सा शब्द जातिवाचक संज्ञा नहीं है?
(a) जवान (b) बालक (c) सुन्दर (d) मनुष्य
(बैंक परीक्षा, 2002)

23. कौन-सा शब्द भाववाचक संज्ञा नहीं है?
(a) मिठाई (b) चतुराई
(c) लड़ाई (d) उतराई *(रेलवे, 2002)*

24. जातिवाचक संज्ञा बताएँ—
(a) लड़का (b) सेना
(c) श्याम (d) दुःख *(बैंक परीक्षा, 2002)*

25. कौन-सा शब्द स्त्रीलिंग है?
(a) सहारा (b) सूचीपत्र
(c) सियार (d) परिषद *(बैंक परीक्षा, 2002)*

26. 'नेत्री' शब्द का पुंल्लिंग रूप है—
(a) नेता (b) नेतृ
(c) नेतिन (d) नेताइन *(बैंक परीक्षा, 2002)*

27. कारक के कितने भेद हैं?
(a) 7 (b) 8
(c) 9 (d) 10 *(बैंक परीक्षा, 2002)*

28. 'के लिए' किस कारक का चिह्न है?
(a) कर्म (b) सम्प्रदान
(c) संबंध (d) अपादान *(बैंक परीक्षा, 2002)*

29. 'वृक्ष से पत्ते गिरते हैं'—इस वाक्य में 'से' किस कारक का चिह्न है?
(a) कर्म (b) करण
(c) अपादान (d) अधिकरण

30. 'वृक्ष पर पक्षी बैठे हैं'—इस वाक्य में 'पर' कौन-सा कारक है ?
(a) कर्म (b) सम्प्रदान
(c) अपादान (d) अधिकरण *(बैंक परीक्षा, 2002)*

31. 'वह घर से बाहर गया'—इस वाक्य में 'से' कौन-सा कारक है ?
(a) कर्ता (b) कर्म
(c) करण (d) अपादान
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

32. 'चारपाई पर भाई साहब बैठे हैं'—इस वाक्य में 'चारपाई' शब्द किस कारक में है ?
(a) करण (b) सम्प्रदान
(c) संबंध (d) अधिकरण
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2003)

33. निम्नलिखित शब्दों में सदा स्त्रीलिंग वाला शब्द कौन-सा है ?
(a) पक्षी (b) बाज (c) मकड़ी (d) गैंडा
(रेलवे, 2003)

34. व्याकरण की दृष्टि से 'प्रेम' शब्द क्या है ?
(a) भाववाचक संज्ञा (b) विशेषण
(c) क्रिया (d) अव्यय *(बी० एड०, 2004)*

35. निम्नलिखित संज्ञा-विशेषण जोड़ी में कौन-सा सही नहीं है ?
(a) विष-विषैला (b) पिता-पैतृक
(c) आदि-आदिम (d) प्रांत-प्रांतिक *(रेलवे, 2005)*

36. कवि का स्त्रीलिंग है—
(a) कविइत्री (b) कवित्री
(c) कवयित्री (d) कवियित्री
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

37. हिन्दी भाषा में 'वचन' कितने प्रकार के हैं ?
(a) 3 (b) 2 (c) 4 (d) 5
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006, सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

38. लिंग की दृष्टि से ' दही' क्या है ?
(a) स्त्रीलिंग (b) पुंलिंग
(c) नपुंसक लिंग (d) उभयलिंग
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

39. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द स्त्रीलिंग है ?
(a) उत्साह (b) चक्रव्यूह
(c) मृत्यु (d) संकल्प
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

40. बाल का स्त्रीलिंग है—
(a) बालिका (b) वालिका (c) बाला (d) वाली

41. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द को क्या कहते हैं ?
(a) सर्वनाम (b) विशेषण (c) क्रिया (d) अव्यय

42. निम्नलिखित वाक्यों में से किस वाक्य में सर्वनाम का अशुद्ध प्रयोग हुआ है ?
(a) वह स्वयं यहाँ नहीं आना चाहती।
(b) आपके आग्रह पर मैं दिल्ली जा सकता हूँ।
(c) मैं तेरे को एक घड़ी दूँगा।
(d) मुझे इस बैठक की सूचना नहीं थी। *(बी० एड०, 1998)*

43. 'मुझे' किस प्रकार का सर्वनाम है ?
(a) उत्तम पुरुष (b) मध्यम पुरुष
(c) अन्य पुरुष (d) इनमें से कोई नहीं
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

44. सर्वनाम के कितने प्रकार हैं ?
(a) 4 (b) 5 (c) 6 (d) 7
(बैंक परीक्षा, 2002)

45. निश्चयवाचक सर्वनाम कौन-सा है ?
(a) क्या (b) कुछ (c) कौन (d) यह
(बी० एड०, 1998)

46. इनमें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कौन-सा है ?
(a) कौन (b) जो
(c) कोई (d) वह *(बैंक परीक्षा, 2002)*

47. 'यह घोड़ा अच्छा है'—इस वाक्य में 'यह' क्या है ?
(a) संज्ञा (b) सर्वनाम
(c) विशेषण (d) सार्वनामिक विशेषण
(रेलवे, 2000)

48. सम्बन्ध वाचक सर्वनाम बताएँ—
(a) कोई (b) कौन (c) जो (d) वह

49. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्दों को क्या कहते हैं ?
(a) विशेषण (b) विशेष्य (c) क्रिया (d) अव्यय

50. विशेषण के कितने प्रकार हैं ?
(a) 3 (b) 4 (c) 5 (d) 6

51. निम्नलिखित में से विशेषण चुनिए—
(a) भलाई (b) मिठास (c) थोड़ा (d) स्वयं
(रेलवे, 1997)

52. निम्नलिखित शब्दों में कौन-सा शब्द विशेषण है ?
(a) सच्चा (b) शीतलता
(c) नम्रता (d) मिठास *(बी० एड०, 1998)*

53. निम्नलिखित वाक्य में रंगीन शब्द विशेषण है, उसका भेद छाँटिए—
'कुछ बच्चे कक्षा में शोर मचा रहे थे।'
(a) गुणवाचक विशेषण
(b) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण
(c) सार्वनामिक विशेषण
(d) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण *(रेलवे, 1998)*

54. 'आलस्य' शब्द का विशेषण क्या है ?
(a) आलस (b) अलस
(c) आलसी (d) आलसीपन
(बी० एड०, 1999)

55. इनमें से गुणवाचक विशेषण कौन-सा है ?
(a) चौगुना (b) नया
(c) तीन (d) कुछ *(बी० एड०, 2000)*

56. निम्नलिखित में कौन-सा शब्द विशेषण है ?
(a) मात्र (b) खर्च
(c) निपट (d) चुपचाप *(बी० एड०, 2001)*

57. 'मानव' शब्द से विशेषण बनेगा—
(a) मनुष्य (b) मानवीकरण
(c) मानवता (d) मानवीय *(बैंक परीक्षा, 2002)*

58. 'उत्कर्ष' का विशेषण क्या होगा ?
(a) अपकर्ष (b) अवकर्ष
(c) उत्कृष्ट (d) उत्कीर्ण *(बैंक परीक्षा, 2002)*

59. 'आदर' शब्द से विशेषण बनेगा—
(a) आदरकारी (b) आदरपूर्वक
(c) आदरणीय (d) इनमें से कोई नहीं
(बैंक परीक्षा, 2002)

60. 'संस्कृति' का विशेषण है—
(a) संस्कृत (b) सांस्कृति
(c) संस्कृतिक (d) सांस्कृतिक *(रेलवे, 20002)*

61. 'पशु' शब्द का विशेषण क्या है ?
(a) पाशविक (b) पशुत्व
(c) पशुपति (d) पशुता *(रेलवे, 20003)*

62. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द विशेषण है ?
(a) सौंदर्य (b) बेकारी (c) वृक्ष (d) फुफेरा
(रेलवे, 20003)

63. 'प्रिय' विशेषण के साथ प्रयुक्त होनेवाली संज्ञा नहीं है—
(a) विषय (b) कवि (c) मित्र (d) बैरी
(बी० एड०, 2004)

64. किस वाक्य में 'अच्छा' शब्द का प्रयोग विशेषण के रूप में हुआ है ?
(a) तुमने अच्छा किया जो आ गए।
(b) यह स्थान बहुत अच्छा है।
(c) अच्छा, तुम घर जाओ।
(d) अच्छा है वह अभी आ जाए।

65. रचना की दृष्टि से क्रिया के कितने भेद हैं ?
(a) 2 (b) 3 (c) 4 (d) 5

66. क्रिया का मूल रूप कहलाता है—
(a) धातु (b) कारक
(c) क्रिया-विशेषण (d) इनमें से कोई नहीं

67. निम्नलिखित क्रियाओं में से कौन-सी क्रिया अनुकरणात्मक नहीं है ?
(a) फड़फड़ाना (b) मिमियाना
(c) झुठलाना (d) हिनहिनाना *(बी०एड०, 1998)*

68. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा ऐसा वाक्य है जिसकी क्रिया कर्ता के लिंग के अनुसार ठीक नहीं है ?
(a) राम आता है। (b) घोड़ा दौड़ता है।
(c) हाथी सोती है। (d) लड़की जाती है।
(बी० एड०, 1998)

69. काम का नाम बताने वाले शब्द को क्या कहते हैं ?
(a) संज्ञा (b) सर्वनाम
(c) क्रिया (d) क्रिया-विशेषण
(बी० एड०, 1999)

70. 'मैं खाना खा चुका हूँ'—इस वाक्य में भूतकालिक भेद इंगित कीजिए।
(a) सामान्य भूत (b) पूर्ण भूत
(c) आसन्न भूत (d) संदिग्ध भूत *(रेलवे, 20001)*

71. किस वाक्य में क्रिया वर्तमान काल में है ?
(a) उसने फल खा लिए थे।
(b) मैं तुम्हारा पत्र पढ़ रहा हूँ।
(c) अचानक बिजली कौंध उठी।
(d) कल वे आने वाले थे। *(बैंक परीक्षा, 2002)*

72. 'चिड़िया आकाश में उड़ रही है'—इस वाक्य में 'उड़ रही' क्रिया किस प्रकार की है ?
(a) अकर्मक (b) सकर्मक
(c) समापिका (d) असमापिका
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

73. किस वाक्य में क्रिया सामान्य भूतकाल में है ?
(a) उसने पुस्तक पढ़ी (b) उसने पुस्तक पढ़ी है
(c) उसने पुस्तक पढ़ी थी (d) उसने पुस्तक पढ़ी होगी
(बैंक परीक्षा, 2002)

74. निम्नलिखित में से किस वाक्य में अकर्मक क्रिया है ?
(a) गेहूँ पिस रहा है (b) मैं बालक को जगवाता हूँ
(c) मदन गोपाल को हँसा रहा है (d) राम पत्र लिखता है
(रेलवे, 20003)

75. सामान्य वर्तमान काल का उदाहरण है—
(a) सीता बाजार जाती होगी (b) रमेश ने समाचार-पत्र पढ़ा
(c) वर्षा हो रही थी (d) वह कलकत्ता जाता है
(रेलवे, 20003)

76. निम्नलिखित में से किस वाक्य में अकर्मक क्रिया है ?
(a) श्याम भात खाता है (b) ज्योति रोती है
(c) मैंने उसे पुस्तक दी (d) उसकी कमीज है
(बी० एड०, 2004)

77. निम्नलिखित में विकारी शब्द कौन-से हैं ?
(a) संज्ञा-सर्वनाम-विशेषण-क्रिया
(b) तत्सम-तद्भव-देशज-विदेशज
(c) क्रिया विशेषण-संबंधबोधक-विस्मयादिबोधक
(d) इनमें से कोई नहीं

78. अविकारी शब्द होता है—
(a) संज्ञा (b) सर्वनाम
(c) विशेषण (d) अव्यय *(रेलवे, 20001)*

79. निम्नलिखित शब्दों में से कौन-सा शब्द क्रिया-विशेषण है ?
(a) सूर्योदय (b) नीला
(c) विगत (d) धीरे-धीरे *(रेलवे, 20001)*

80. अव्यय के कितने भेद हैं ?
(a) 3 (b) 4
(c) 5 (d) 6 *(बी० एड०, 2002)*

81. किस एक वाक्य में क्रिया-विशेषण प्रयुक्त हुआ है ?
(a) वह धीरे से बोलता है (b) वह काला कुत्ता है
(c) रमेश तेज धावक है (d) सत्य वाणी सुन्दर होती है
(रेलवे, 20002)

82. 'बृहत्' विशेषण का शुद्ध उत्तमावस्था है—
(a) बृहतर (b) बृहतम (c) बृहत्तम (d) बृहत्तर
(हरियाणा बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2007)

83. 'घनिष्ठ' की शुद्ध उत्तरावस्था है—
(a) घनिष्टतर (b) घनिष्टतम
(c) घनिष्ठतर (d) घनिष्ठतम
(हरियाणा बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2007)

84. संबंध कारक का चिह्न है—
(a) में, पर (b) के लिए
(c) –रा,–रे,–री (d) से
(उत्तर प्रदेश बी.एड.प्रवेश परीक्षा, 2008)

85. निम्नलिखित में विकारी शब्द कौन-सा है ?
(a) आज (b) यथा (c) परन्तु (d) लड़का
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

86. 'सभा में बीसियों लोग थे'—इसमें विशेषण का कौन-सा भेद है?
(a) समुदाय वाचक (b) परिमाण वाचक
(c) निश्चित संख्यावाचक (d) अनिश्चित संख्यावाचक
(राजस्थान बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

87. जो क्रिया अभी हो रही हो, उसे कहते हैं—
(a) सामान्य वर्तमान (b) अपूर्ण वर्तमान
(c) संदिग्ध वर्तमान (d) संदिग्ध भूत
(राजस्थान बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

88. कौन-सा शब्द क्रिया विशेषण है ?
(a) तेज (b) पहला (c) बुद्धिमान (d) मीठा
(राजस्थान बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

89. देश को हानि <u>जयचन्दों</u> से होती है रेखांकित में संज्ञा है—
(a) जातिवाचक (b) व्यक्तिवाचक
(c) भाववाचक (d) द्रव्यवाचक
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

90. 'गरीबों को वस्त्र दो' वाक्य में कारक है—
(a) करण कारक (b) अपादान कारक
(c) सम्प्रदान कारक (d) कर्म कारक
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

91. तुम्हें <u>क्या</u> चाहिए रेखांकित का सर्वनाम भेद है—
(a) निजवाचक सर्वनाम (b) प्रश्नवाचक सर्वनाम
(c) संबंधवाचक सर्वनाम (d) निश्चयवाचक सर्वनाम
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

92. मीरा ने आधा लीटर दूध पी लिया रेखांकित में विशेषण है—
(a) गुणवाचक (b) संख्यावाचक
(c) परिमाणवाचक (d) सार्वनामिक
(उत्तराखण्ड पुलिस सब इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

93. "नल बूँद बूँद टपक रहा है" वाक्य में रेखांकित है—
(a) विशेषण (b) क्रिया
(c) क्रिया विशेषण (d) सर्वनाम
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

94. 'सुमित सो रहा है' वाक्य में क्रिया का भेद है—
(a) अकर्मक (b) सकर्मक (c) प्रेरणार्थक (d) द्विकर्मक
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

95. वाच्य कितने प्रकार के होते हैं?
(a) तीन (b) चार (c) पाँच (d) आठ
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

96. अव्यय के भेद होते हैं—
(a) पाँच (b) चार (c) तीन (d) दो
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

97. निम्न वाक्य किस अव्यय से पूरा होगा?
आज धन ... कोई नहीं पूछता
(a) के बिना (b) साथ (c) तक को (d) कहाँ
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

98. निजवाचक सर्वनाम का प्रयोग किस वाक्य में हुआ है?
(a) यह मेरी निजी पुस्तक है (b) आज अपनापन कहाँ है
(c) अपनों से क्या छिपाना (d) आप भला तो जग भला
(झारखण्ड शिक्षक नियुक्ति परीक्षा, 2009)

99. शिव का विशेषण क्या है?
(a) शिवेश (b) शंकर
(c) शैव (d) शैल
(झारखण्ड शिक्षक नियुक्ति परीक्षा, 2009)

100. 'वह घर पहुँच गया'— इस वाक्य में 'पहुँच गया' निम्नांकित में से किस क्रिया का उदाहरण है?
(a) प्रेरणार्थक क्रिया (b) द्विकर्मक क्रिया
(c) संयुक्त क्रिया (d) पूर्वकालिक क्रिया
(झारखण्ड शिक्षक नियुक्ति परीक्षा, 2009)

101. इनमें से अपादान कारक की विभक्ति क्या है?
(a) ने (b) को (c) से (d) के लिए
(झारखण्ड शिक्षक नियुक्ति परीक्षा, 2009)

102. शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होने की योग्यता प्राप्त करता है, तो उसे कहा जाता है—
(a) वाक्य (b) ध्वनि (c) पद (d) समास
(नेट जे.आर.एफ., 2014)

उत्तरमाला

1. (a)	2. (a)	3. (c)	4. (a)	5. (b)	6. (c)	7. (b)	8. (c)	9. (a)	10. (c)	11. (c)	12. (b)
13. (b)	14. (a)	15. (c)	16. (c)	17. (a)	18. (a)	19. (d)	20. (b)	21. (c)	22. (c)	23. (a)	24. (a)
25. (d)	26. (a)	27. (b)	28. (b)	29. (c)	30. (d)	31. (d)	32. (d)	33. (a)	34. (a)	35. (d)	36. (c)
37. (b)	38. (b)	39. (c)	40. (c)	41. (a)	42. (c)	43. (a)	44. (c)	45. (d)	46. (c)	47. (b)	48. (c)
49. (a)	50. (b)	51. (c)	52. (a)	53. (d)	54. (c)	55. (b)	56. (c)	57. (d)	58. (c)	59. (c)	60. (d)
61. (a)	62. (d)	63. (d)	64. (b)	65. (a)	66. (a)	67. (c)	68. (c)	69. (c)	70. (b)	71. (b)	72. (a)
73. (a)	74. (a)	75. (d)	76. (b)	77. (a)	78. (d)	79. (d)	80. (b)	81. (a)	82. (c)	83. (c)	84. (c)
85. (d)	86. (d)	87. (b)	88. (a)	89. (a)	90. (d)	91. (b)	92. (c)	93. (c)	94. (a)	95. (a)	96. (b)
97. (a)	98. (d)	99. (c)	100. (c)	101. (c)	102. (c)						

★★★

09 पर्यायवाची शब्द
(Synonyms)

(अ, आ, इ.....)

अंग अंश, अवयव, हिस्सा, भाग।
अंधकार तम, तमिस्रा, तिमिर, ध्वांत।
अग्नि पावक, ज्वाला, अनल, दहन, वह्नि, वैश्वानर, धूम्रकेतु, कृशानु, जातदेव, आग।
अनुपम अनुण, अपूर्व, अद्वितीय, अद्भुत, अतुल, अनोखा।
अन्वेषण अनुसंधान, खोज, गवेषण, जाँच, छानबीन, पूछताछ, शोध।
अभिमान अस्मिता, अहं, अहंकार, अहभाव, अहम्मन्यता, आत्मश्लाघा, गर्व, घमंड, दर्प, दंभ, मद, मान, मिथ्याभिमान।
अमृत सोम, सुधा, अमिय, पीयूष, मधु, अमी, सुरभोग।
अरण्य जंगल, वन, कानन, अटवी, कान्तार, विपिन।
अश्व तुरंग, हय, घोड़ा, घोटक, बाजि, सैन्धव।
असुर दनुज, दानव, दैत्य, राक्षस, तमीचर, निशाचर, निशिचर, सुरारि, रजनीचर, यातुधान, इन्द्रारि।
अनी कटक, दल, सेना, फौज, चमू, अनीकिनी।
आँख नयन, दृग, लोचन, चक्षु, नेत्र, अक्षि।
आँगन अँगना, अजिरा, प्राङ्गण।
आकाश गगन, नभ, अम्बर, व्योम, अन्तरिक्ष, अनन्त, आसमान, शून्य, पुष्कर, अभ्र, द्यौ,तारापथ।
आनन्द सुख, हर्ष, प्रसन्नता, प्रमोद, उल्लास, आह्लाद।
आम आम्र, रसाल, पिकबन्धु, सहकार, अतिसौरभ, अमृतफल।
आश्रम मठ, विहार, कुटी, अखाड़ा, संघ।
इच्छा आकांक्षा, वाञ्छा, अभिलाषा, मनोरथ, स्पृहा, चाह, कामना, ईहा, वासना।
इन्द्र सुरपति, देवराज, महेन्द्र, मघवा, शचीपति, पुरन्दर, सुरेश, देवेन्द्र, मेघवाहन, पुरुहूत, यासव।
इन्द्राणि इन्द्रवधू, इन्द्राणी, मघवानी, शची, शतावरी, पोलोमी।
ईश्वर परमात्मा, परमेश्वर, भगवान, ब्रह्मा, जगदीश, अगोचर, अनन्त, जगन्नाथ, परमेश, जगतप्रभु।
उक्ति कथन, वचन, सूक्ति।
उग्र प्रचंड, उत्कट, तेज, महादेव, तीव्र, विकट।
उचित ठीक, मुनासिब, वाजिब, समुचित, युक्तिसंगत, न्यायसंगत, तर्कसंगत, योग्य।
उच्छृंखल उद्दंड, अक्खड़, आवारा, अंडबंड, निरकुंश, मनमर्जी, स्वेच्छाचारी।
उजड्ड अशिष्ट, असभ्य, गँवार, जंगली, देहाती, उद्दंड, निरंकुश।
उजला उज्ज्वल, श्वेत, सफेद, धवल।
उजाड़ जंगल, बियावान, वन।
उजाला प्रकाश, रोशनी, चाँदनी।
उत्कर्ष समृद्धि, उन्नति, प्रगति, प्रशंसा, बढ़ती, उठान।
उत्कृष्ट उत्तम, उन्नत, श्रेष्ठ, अच्छा, बढ़िया, उम्दा।
उत्कोच घूस, रिश्वत।
उत्पत्ति उद्गम, पैदाइश, जन्म, उद्भव, सृष्टि, आविर्भाव, उदय।
उद्धार मुक्ति, छुटकारा, निस्तार, रिहाई।
उपाय युक्ति, साधन, तरकीब, तदबीर, यत्न, प्रयत्न।
उपद्रव उपद्रव, उत्पात, धूम, हुल्लड़।
ऋषि मुनि, साधु, यती, संन्यासी, तत्वज्ञ, तपस्वी।
ऐक्य एकत्व, एका, एकता, मेल।
ऐश्वर्य समृद्धि, विभूति।
ओज तेज, शक्ति, बल, वीर्य।
औचक अचानक, यकायक, सहसा।
औरत स्त्री, जोरू, घरनी, घरवाली।

(क वर्ग)

कपड़ा चीर, बसन, पट, अम्बर, वस्त्र।
कमल कज, पंकज, जलज, सरोज, नीरज, अम्बुज, वारिज, इन्दीवर, राजीव, उत्पल, अरविन्द।
कमला इंदिरा, पद्मा, पद्मालया, पद्मासना, भार्गवी, रमा, लक्ष्मी, लोकमाता, विष्णुप्रिया, श्री, समुद्रजा, सिंधुजा, हरिप्रिया।
कामदेव काम, मदन, मनोज, मयन, अनंग, पंचशर, मन्मथ, रतिपति, मनसिज, पुष्पधन्वा, स्मर, मीनकेतु, मकरध्वज।
कार्तिकेय कुमार, षडानन, शरभव, स्कन्द।
किरण रश्मि, मयूख, मरीचि, अंशु, कर, ज्योति, दीप्ति, प्रभा।
कुवेर अनद, यक्षराज, धनाधिप, किन्नरेश, राजराज।
कोकिल कोयल, पिक, बसन्तदूत, कोकिला, परभूत।
कपोत कबूतर, हारीत, रक्तलोचन।
कुत्ता श्वा, श्वान, कुक्कुर, शुनक, सारमेव।
कृष्ण मोहन, मुरारी, गोपाल, गिरिधर, केशव, वासुदेव, नन्दनन्दन, राधारमण, दामोदर, ब्रजवल्लभ, गोपीनाथ, मुरलीधर, द्वारिकाधीश, यदुनन्दन, कंसारि, रणछोड़, बंशीधर।
कल्पद्रुम देवद्रुम, कल्पवृक्ष, पारिजात, मन्दार, हरिचन्दन।
काक कौआ, वायस, काग, करठ, पिशुन।
कृपा दया, अनुग्रह, अनुकम्पा।
क्रोध कोप, रोष, अमर्ष, गुस्सा, आक्रोश।
खग विहग, विहंग, पक्षी, द्विज, चिड़िया, पंछी, शकुनि, पखेरू।
खंभा स्तूप, स्तम्भ, खंभ।
खल दुर्जन, दुष्ट, धूर्त, कुटिल।
खून रक्त, लहू, शोणित, रुधिर।
गंगा सुरसरि, सुरसरिता, अमरतरंगिनी, भागीरथी, मंदाकिनी, देवनदी, जाह्नवी, देवपगा, त्रिपथगा, विष्णुपदी, नदीश्वरी।
गणेश गणपति, गजबदन, गजानन, लम्बोदर, एकदन्त, भवानीनन्दन, वक्रतुण्ड, गौरीसुत, मोदकप्रिय, विनायक।
गरुड़ खगेश, पन्नगारि, उरगारि, हरियान, वातनेय, खगपति, सुपर्ण, विषमुख।
गदहा खर, गर्दभ, बैसाखनन्दन, रासभ, धूसर, वेशर, चक्रीवान
गेह भवन, सदन, घर, मन्दिर, निकेतन, आवास, निवास, धाम, गृह, आलय, आगार, ओक, निलय।
गाय गौ, धेनु, सुरभि, गौरी, भद्रा, दोग्धी।
घट घड़ा, कलश, कुम्भ, निप।
घर आलय, आवास, गेह, गृह, निकेतन, निलय, निवास, भवन वास, वास-स्थान, शाला, सदन।
घृत घी, अमृत, नवनीत।
घास तृण, दूर्वा, दूब, कुश, शाद।

(च वर्ग)

चतुर विज्ञ, निपुण, नागर, पटु, कुशल, दक्ष, प्रवीण, योग्य।
चन्द्रमा सोम, सुधांशु, राकापति, द्विजराज, विधु, मयंक, सुधाकर निशाकर, शशि, राकेश, हिमकर, कलाधर, इन्दु, मृगाक।
चन्द्रिका चाँदनी, ज्योत्स्ना, कौमुदी।
चाँदी रजत, सौध, रूपा, रूपक, रौप्य, चन्द्रहास।
चोटी मूर्धा, शीश, सानु, शृंग।
चोर खनक, दस्यु, साहसिक, रजनीचर, मोषक।

छतरी छत्र, छाता, छत्ता।
छली छलिया, कपटी, धोखेबाज।
छवि शोभा, सौंदर्य, कांति, प्रभा।
छानबीन जाँच, पूछताछ, खोज, अन्वेषण, शोध, गवेषण।
छैला सजीला, बाँका, शौकीन।
छोर नोक, कोर, किनारा, सिरा।
जल पानी, नीर, अम्बु, सलिल, अमृत, तोय, उदक, वारिय।
जंगल विपिन, कानन, अरण्य, वन।
जहाज पोत, जलयान।
जानकी सीता, वैदेही, जनकसुता, जनकतनया, जनकात्मजा।
झरना उत्स, स्रोत, प्रपात, निर्झर, प्रस्रवण।
झण्डा ध्वजा, पताका, केतु।

(ट वर्ग)

टक्कर मुठभेड़, लड़ाई, मुकाबला।
टहलुआ नौकर, सेवक, खिदमतगार।
टाँग पाँव, पैर, टंक।
टीका तिलक, चिह्न, दाग, धब्बा।
टोना टोटका, जादू, यंत्रमंत्र, लटका।
ठंढ ठंड, शीत, सरदी।
ठग छली, धूर्त, धोखेबाज।
ठौर स्थान, जगह, ठिकाना।
ठिगना बौना, वामन, नाटा।
ठीक उपयुक्त, उचित, मुनासिब।
ठेठ निपट, निरा, बिल्कुल।
डंडा सोंटा, छड़ी, लाठी।
डाली भेंट, उपहार।
ढब ढंग, रीति, तरीका, ढर्रा।
ढाँचा पंजर, ठठरी।
ढील शिथिलता, सुस्ती, अतत्परता।
ढूँढ़ खोज, तलाश।
ढोर चौपाया, मवेशी।

(त वर्ग)

तरकस तूण, तूणीर, त्रोण, निषंग, इषुधी।
तलवार असि, करवाल, चन्द्रहास, खड्ग, कृपाण, शमशीर।
तालाब सर, सरोवर, पुष्कर, जलाशय, तड़ाग, पद्माकर, ह्रद, सरसी।
तामरस कमल, पंकज, सरसिज, नीरज, पुण्डरीक, इन्दीवर।
तिमिर तम, अंधकार, अंधेरा, तमिस्रा।
तीर शर, बाण, सायक, नाराच, शिलीमुख।
तोता शुक्र, कीर, सुआ, सुग्गा, रक्ततुण्ड, दाड़िमप्रिय।
थोड़ा अल्प, न्यून, जरा, कम।
थाती जमापूँजी, धरोहर, अमानत।
थाक ढेर, समूह।
थप्पड़ तमाचा, झापड़।
थंभ खंभ, खंभा, स्तम्भ।
दया अनुकंपा, अनुग्रह, करुणा, कृपा, प्रसाद, संवेदना, सहानुभूति, सांत्वना।
दाँत दन्त, दशन, द्विज, रद, रदन।
दास नौकर, सेवक, अनुचर, चाकर, भृत्य, परिचारक, किंकर।
दिन दिन, दिवा, दिवस, वासर।
दीन दरिद्र, रंक, कंगाल, अकिंचन, निर्धन।
दुःख शोक, वेदना, कष्ट, पीड़ा, संताप, खेद, यातना, संकट, क्लेश, यंत्रणा, व्यथा।
दुर्गा चण्डिका, सिंहवाहिनी, कालिका, कल्याणी, कुमारी, कामाक्षी, सुभद्रा, महागौरी।
दूध दुग्ध, पय, क्षीर, अमृत।
देव अमर, देवता, सुर, निर्जर, वृन्दारक, आदित्य।
द्रव्य धन, सम्पत्ति, दौलत, विभूति, सम्पदा, वित्त।
धन द्रव्य, वित्त, दौलत, सम्पदा, सम्पत्ति, विभूति।
धनुष धनु, कोदण्ड, शरासन, पिनाक, सारंग, चाप, कमान।
धरती भू, धरा, पृथ्वी, अवनि, वसुधा, वसुन्धरा, मेदिनी, इला।
नदी सरिता, तटनी, तरंगिनी, आपगा, निर्झरिणी, निम्नगा, वाहिनी।
नर्क यमलोक, यमपुर, नरक, यमालय।
नर जन, मानव, मनुष्य, पुरुष, मर्त्य, मनुज।
नाव नौका, पतंग, तरणि, बेड़ा, नैया, तरी, जलयान।
निंदा दोषारोपण, फटकार, बुराई, भर्त्सना।
नेत्र चक्षु, लोचन, नयन, अक्षि, चख, आँख।

(प वर्ग)

पति नाथ, स्वामी, कांत, भर्ता, वल्लभ, आर्यपुत्र, ईश।
पत्नी कान्ता, भार्या, वल्लभा, अर्द्धांगिनी, त्रिया, वामा, दारा, गृहिणी, बहू, वधू, कलत्र, तिय, प्राणप्रिया, जाया।
पत्थर पाहन, पाषाण, प्रस्तर, उपल।
पथ मग, मार्ग, राह, पंथ, रास्ता।
पर्वत पहाड़, गिरि, शैल, अचल, नग, भूधर, महिधर, धराधर।
पानी जल, नीर, पयस, पानीय, मेघपुष्प, वारि, सलिल, सारंग।
पार्वती गौरी, गिरिजा, उमा, शैलसुता, ईश्वरी, शिवा, भवानी, अर्पणा, दुर्गा, आर्या, अम्बिका।
पिता जनक, तात, पितृ, बाप।
पुत्र बेटा, सुत, तनय, आत्मज, नन्दन, पूत, नन्द।
पुत्री बेटी, सुता, तनया, आत्मजा, नन्दिनी, तनुजा, दुहिता।
पृथ्वी भू, भूमि, धरा, धरती, धरणी, धरित्री, जगती, क्षिति, वसुधा, अवनि, मेदिनी, वसुन्धरा, उर्वी।
पवन वायु, वात, हवा, समीर, बयार, अनिल, पवमान, मारुत।
पंडित बुध, विद्वान, कोविद, सुधी, मनीषी, धीर, प्रज्ञ, विलक्षण।
पुष्प प्रसून, गुल, सुमन, कुसुम, फूल।
पुरुष आदमी, जन, नर, मर्द, मनुज, मनुष्य, मानव, मानुष।
प्रकाश ज्योति, चमक, प्रभा, छवि, द्युति।
पेड़ तरु, द्रुम, वृक्ष, पादप, रूक्ष।
पैर पाँव, पद, चरण, पाद, पग।
पक्षी विहग, विहंग, खग, पखेरू, परिन्दा, द्विज, पतंग।
फल फलम्, बीजकोश
फूल पुष्प, कुसुम, सुमन, गुल, प्रसून।
बगीचा बाग, वाटिका, उपवन, उद्यान, फुलवारी।
बन्दर कपि, मर्कट, कीश, बानर, हरि, शाखामृग।
बाण सर, तीर, सायक, विशिख, शिलीमुख, नाराच।
बादल घन, जलद, जलधर, नीरद, पयोद, मेघ, वारिद, वारिधर।
बाल कच, केश, चिकुर, चूल।
बिजली चपला, चंचला, दामिनी, सौदामिनी, तड़ित, विद्युत, बाजुरा, क्षणप्रभा, घनवल्ली।
ब्रह्मा विधि, विधाता, स्वयंभू, प्रजापति, पितामह, चतुरानन, विरंचि, अज, कर्तार, कमलासन, नाभिजन्म, हिरण्यगर्भ।
बलदेव बलराम, बलभद्र, हलायुध, राम, मूसली, रोहिणेय।
बहुत अनेक, अतीव, अति, बहुल, प्रचुर, अपरिमित, प्रभूत, अपार, अमित, अत्यन्त, असंख्य।
ब्राह्मण द्विज, भूदेव, विप्र, महीदेव, भूमिसुर, भूमिदेव।
भय भीति, डर, विभीषिका।
भौंरा मधुप, मधुकर, द्विरेप, अलि, षट्पद, भृंग, भ्रमर।
भाई तात, अनुज, अग्रज, भ्राता, भ्रातृ।
मछली मत्स्य, मीन, झख, सफरी, जलजीव।
मदिरा शराब, मद्य, मधु, हाला, आसव, वारुणी, सुरा।
मनुष्य नर, मानव, मनुज, मानुष, जन, आदमी।
महादेव शिव, शम्भू, शंकर, कैलाशनाथ, उमापति, त्रिलोचन, महेश,आशुतोष, चन्द्रशेखर, पशुपति।
माँ अंबा, अम्बिका, अम्मा, जननी, धात्री, प्रसू।

मेघ	घन, बादल, वारिद, नीरद, अम्बुद, पयोद, जलधर, वारिधर, पयोधर, जलजीवन, अभ्र।
मुनि	यती, अवधूत, संन्यासी, वैरागी, तापस, संत, भिक्षु, महात्मा, साधु।
मुर्गा	तमचूक, अरुणशिखा, ताम्रचूड़, कुक्कुट।
मोर	केकी, शिखी, शिखण्डी, नीलकंठ, मयूर, कलापी।
मोक्ष	मुक्ति, कैवल्य, अपवर्ग, परमधाम, परमपद, सद्गति, निर्वाण।
मग	पन्थ, मार्ग, बाट, पथ, राह।
मृत्यु	निधन, मरण, मीत, देहान्त, देहावसान, पंचत्व, इंतकाल, काशीवास, गंगालाभ, निर्वाण, स्वर्गवास।
मीत	सहचर, सखा, सुहृद, सपक्ष, मित्र।
मूढ़	मूर्ख, अज्ञानी, निर्बुद्धि, जड़, गंवार।
मैना	सारी, सारिका, त्रिलोचना, मधुरालापा, कलहप्रिया।
मूँगा	प्रवाल, रक्तांग, विद्रुम, रक्तमणि।

(य, र, ल, व)

यम	सूर्यपुत्र, जीवितेश, श्राद्धदेव, कृतांत, अन्तक, धर्मराज, दण्डधर, कीनाश।
यमुना	कालिन्दी, सूर्यसुता, रवितनया, तरणि-तनूजा, तरणिजा, अर्कजा, भानुजा।
युवति	युवती, सुन्दरी, श्यामा, किशोरी, तरुणी, नवयौवना।
रक्त	खून, लहू, रुधिर, शोणित, लोहित।
रमा	इन्दिरा, हरिप्रिया, श्री, लक्ष्मी, कमला, पद्मा, पद्मासना, समुद्रजा, श्रीभार्गवी, क्षीरोदतनया।
राजा	भूपाल, नरेश, नरपाल, महीप, राव, नरेन्द्र, नृप, नरनाह।
रात्रि	निशा, क्षपा, रैन, रात, यामिनी, शर्वरी, तमस्विनी, विभावरी।
रामचन्द्र	अवधेश, सीतापति, राघव, रघुपति, रघुवर, रघुनाथ, रघुराज, रघुवीर, रावणारि, जानकीवल्लभ, कमलेन्द्र, कौशल्यानन्दन।
रावण	दशानन, लंकेश, लंकापति, दशशीश, दशकंध, दैत्येन्द्र।
राधिका	राधा, व्रजरानी, हरिप्रिया, वृषभानुजा।
लड़का	बालक, शिशु, सुत, किशोर, कुमार।
लड़की	बालिका, कुमारी, सुता, किशोरी, बाला।
लता	वल्लरी,वल्ली, बेली।
लक्ष्मी	रमा, कमला, इन्दिरा, श्री, पद्मा, पद्मजा, सिन्धुसुता, कमलासना।
लक्ष्मण	लखन, शेषावतार, सौमित्र, रामानुज, शेष।
लौह	लौह, अयस, लोहा, सार।
वर्षा	पावस, बरसात, वर्षाकाल, चौमासा, वर्षाऋतु।
वसन्त	मधुमास, माधव, कुसुमाकर, ऋतुराज।
विष्णु	माधव, केशव, गोविन्द, चतुर्भुज, उपेन्द्र, दामोदर, पीताम्बर, जनार्दन, चक्रपाणि, विश्वम्भर, लक्ष्मीपति, नारायण, मधुरिपु।
वायु	हवा, पवन, समीर, अनिल, वात, मारुत।
वसन	अम्बर, वस्त्र, परिधान, पट, चीर।
विधवा	अनाथा, पतिहीना, रँड़।
विश्व	जगत, जग, भव, संसार, लोक, दुनिया।
विद्युत	चपला, चंचला, दामिनी, सौदामिनी, तड़ित, बीजुरी, घनवल्लरी, क्षणप्रभा, करका।
वारिश	वर्षण, वृष्टि, वर्षा, पावस, बरसात।
वीर्य	जीवन, सार, तेज, शुक्र, बीज।
वज्र	कुलिश, पवि, अशनि, दंभोलि।
विशाल	विराट, दीर्घ, बृहत, बड़ा, महा, महान।
वृक्ष	गाछ, तरु, पेड़, द्रुम, पादप, विटप, शाखी।

(श, ष, स, ह)

शरीर	देह, अंग, वपु, गात, तनु, कलेवर, गात्र, काया।
शत्रु	विपक्षी, अरि, प्रतिपक्षी, वैरी, अमित्र, रिपु।
शेर	केहरि, केशरी, वनराज, सिंह, शार्दूल, हरि, मृगराज।
शेषनाग	अहि, नाग, भुजंग, व्याल, उरग, पन्नग, फणीश, सारंग।
शुभ्र	गौर, श्वेत, अमल, वलक्ष, धवल, शुक्ल, अवदात।
शहद	पुष्परस, मधु, आसव, रस, मकरन्द।
षंड	हीजड़ा, नपुंसक, नामर्द।
षडानन	षट्मुख, कार्तिकेय, षाण्मातुर।
सभा	अधिवेशन, संगीति, परिषद, बैठक, महासभा।
सर्प	अहि, नाग, भुजंग, विषधर, व्याल, उरग, पन्नग, साँप, सारंग।
स्वर्ण	सुवर्ण, कंचन, हेन, हारक, जातरूप, सोना, तामरस, हिरण्य।
सरस्वती	गिरा, शारदा, भारती, वीणापाणि, विमला, वागीश, वागेश्वरी।
समुद्र	सागर, सिन्धु, उदधि, नदीश, वारीश, अम्बुधि, नीरनिधि, रत्नाकर, पयोनिधि, अर्णव, तोयनिधि, सरित्पति।
सूर्य	दिनकर, दिवाकर, रवि, भानु, भास्कर, अर्क, तरणि, पतंग, आदित्य, सविता, हंस, अंशुमाली, मार्तण्ड।
सम	सर्व, समस्त, सम्पूर्ण, पूर्ण, समग्र, अखिल, निखिल।
समूह	दल, झुण्ड , समुदाय, टोली, जत्था, मण्डली, वृन्द, गण, संघ, समुच्चय।
सिंह	शेर, केहरि, मृगेन्द्र, मृगराज, केशरी, नखायुध, बहुबल, व्याघ्र।
सुन्दर	कलित, ललाम, मंजुल, रुचिर, चारु, रम्य, मनोहर, सुहावना, चित्ताकर्षक, रमणीक, कमनीय, उत्कृष्ट, उत्तम, सुरम्य।
सन्ध्या	सायंकाल, शाम, साँझ, प्रदोषकाल, गोधूलि।
स्त्री	सुन्दरी, कान्ता, कलत्र, रमणी, महिला, ललना, वनिता, सुन्दरी।
स्वर्ग	सुरलोक, देवलोक, दिव्यधाम, ब्रह्मधाम, द्यौ।
सीता	वैदेही, जानकी,भूमिजा, जनकतनया, जनकनन्दिनी, रामप्रिया।
सहेली	आली, सखी, सहचरी, सजनी, सैरन्ध्री।
संसार	लोक, जग, जहान, जगत, विश्व।
समीप	सन्निकट, आसन्न, निकट, पास।
सेना	ऊनी, कटक, दल, चमू, अनीक, अनीकिनी।
साधु	सज्जन, भद्र, सभ्य, शिष्ट, कुलीन।
सलिल	अम्बु,जल,नीर, तोय, सलिल, पानी, वारि।
सगर्भ	बंधु, भाई, सजात, सहोदर, भ्राता, सोदर।
सगर्भा	भगिनी, सजाता, सहोदरा, बहिन, सोदरा।
हस्त	हाथ, कर, पाणि, बाहु, भुजा।
हाथी	कुंजर, गज, हस्ति, करि, नाग, मतंग, दन्ती, वारण।
हिमालय	नगपति, हिमपति, नगराज, हिमाद्रि, हिमगिरि, गिरिराज।
हिरण	सुरभी, कुरंग, मृग, सारंग, हिरन।
होंठ	अधर, ओष्ठ, ओंठ।
हनुमान	पवनसुत, पवनकुमार, महावीर, रामदूत, मारुतनय, अंजनीपुत्र, आंजनेय, कपीश्वर, केशरीनंदन, बजरंगबली, मारुति।
हिमांशु	हिमकर, निशाकर, क्षपानाथ, चन्द्रमा, चन्द्र, निशिपति।
हंस	कलकंठ, मराल, सितपक्ष, मानसौक।
हृदय	उर, छाती, वक्ष, हिय, हिया।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अमिय का पर्यायवाची शब्द है—
(a) विष (b) सुधा (c) मधुप (d) आम्र

2. पृथ्वी का पर्यायवाची शब्द है—
(a) रत्नगर्भा (b) हिरण्यगर्भा (c) वसुमती (d) स्वर्णमयी

3. शत्रु का पर्यायवाची शब्द है—
(a) सहचर (b) अरि (c) मनुज (d) सखा
(बी० एड०, 1996)

4. खर का पर्यायवाची शब्द है—
(a) रावण (b) कुंठित (c) गधा (d) मूर्ख
(बी० एड०, 1996)

5. अनन्त का पर्यायवाची शब्द है—
(a) निस्सीम (b) भगवान (c) शेषनाग (d) बन्धन
(बी० एड०, 1996)

6. अनिल का पर्यायवाची शब्द है—
(a) चक्रवात (b) पावस (c) पवन (d) अनल
(रेलवे, 1997)

7. स्तन्य का पर्यायवाची शब्द है—
(a) खीर (b) पेय (c) कौंध (d) दूध
(रेलवे, 1997)

8. अरविन्द का पर्यायवाची शब्द है—
(a) अरब निवासी (b) अरबी
(c) कमल (d) भ्रमर
(एल० आई० सी०, 1997)

9. मृगेन्द्र का पर्यायवाची शब्द है—
(a) शार्दूल (b) अहि (c) हिरन (d) कुरंग
(रेलवे, 1997)

10. जाह्नवी का पर्यायवाची शब्द है—
(a) संसार (b) जाननेवाली
(c) सुरसरि (d) जहन्नुम
(एल० आई० सी०, 1997)

11. दर्प का पर्यायवाची शब्द है—
(a) तिरस्कार (b) अहंकार (c) गर्व (d) स्वाभिमान
(रेलवे, 1997)

12. सेना का पर्यायवाची शब्द है—
(a) अनीक (b) सैनिक (c) अरि (d) अतनु
(रेलवे, 1997)

13. प्रसून का पर्यायवाची शब्द है—
(a) वृक्ष (b) पुष्प (c) चन्द्रमा (d) अग्नि
(रेलवे, 1997)

14. अमृत का पर्यायवाची शब्द नहीं है—
(a) अमिय (b) सुधा (c) पीयूष (d) रसाल
(रेलवे, 1997)

15. विभावरी का पर्यायवाची शब्द है—
(a) चन्द्रिका (b) तपसा
(c) क्षणदा (d) तरणि *(असिस्टेंट ग्रेड, 1997)*

16. तरणि का पर्यायवाची शब्द है—
(a) सूर्य (b) नाम (c) युवती (d) नदी
(ग्राम पंचायत परीक्षा, 1998)

17. दिनकर का पर्यायवाची शब्द है—
(a) निशाचर (b) प्रभाकर (c) सुधाकर (d) विभाकर
(बी० एड०, 1998)

18. आँख का पर्यायवाची शब्द नहीं है—
(a) चक्षु (b) लोचन (c) अक्षि (d) दृष्टि
(ग्राम पंचायत परीक्षा, 1998)

19. हवा का पर्यायवाची शब्द नहीं है—
(a) सलिल (b) वायु (c) अनिल (d) समीर
(बी० एड०, 1999)

20. शिव का पर्यायवाची शब्द है—
(a) पिनाकी (b) लम्बोदर (c) पिपासु (d) पिनाक
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

21. शेर का पर्यायवाची शब्द है—
(a) चीता (b) केशरी (c) शावक (d) नृसिंह
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

22. धाता का पर्यायवाची शब्द है—
(a) विष्णु (b) धाय (c) पक्ष (d) हार
(रेलवे, 2000)

23. तनु का पर्यायवाची शब्द है—
(a) शरीर (b) झील (c) चन्द्रमा (d) खटिया
(रेलवे, 2000)

24. पावक का पर्यायवाची शब्द है—
(a) अंगारा (b) हुताशन (c) लपट (d) ज्वाला
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

25. किरण का पर्यायवाची शब्द है—
(a) प्रभा (b) रवि (c) हिमांशु (d) दिनकर
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

26. धरती का पर्यायवाची शब्द है—
(a) चंचला (b) विपुला (c) सरसी (d) अचला
(रेलवे, 2001)

27. विनायक का पर्यायवाची शब्द है—
(a) सुर (b) पुत्र (c) शत्रु (d) गणेश
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

28. अतनु का पर्यायवाची शब्द है—
(a) ईश्वर (b) कृष्ण (c) कामदेव (d) वसंत
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

29. कानन का पर्यायवाची शब्द है—
(a) पुष्प (b) विहिप
(c) वन (d) इनमें से कोई नहीं
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

30. वारिद का पर्यायवाची शब्द है—
(a) कमल (b) चन्द्रमा (c) बिजली (d) बादल
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

31. भुजंग का पर्यायवाची शब्द है—
(a) केंचुआ (b) गिरगिट (c) सर्प (d) तोता
(लेखाकार परीक्षा, 2001)

32. मीन का पर्यायवाची शब्द है—
(a) शिखि (b) शायक (c) मत्स्य (d) विभावरी
(लेखाकार परीक्षा, 2001)

33. दामिनी का पर्यायवाची शब्द है—
(a) वर्षा (b) नीरद (c) बादल (d) विद्युत्
(लेखाकार परीक्षा, 2001)

34. सारंग का पर्यायवाची शब्द है—
(a) नमक (b) सारथी (c) मोर (d) घोड़ा
(रेलवे, 2001)

35. पिशुन का पर्यायवाची शब्द है—
(a) पिशाच (b) चुगलखोर (c) पीसना (d) बेईमान *(रेलवे, 2001)*

36. केतु का पर्यायवाची शब्द है—
(a) झंडा (b) आचार्य (c) किरण (d) दिशा *(रेलवे, 2001)*

37. मर्कट का पर्यायवाची शब्द है—
(a) पानी (b) पुत्र (c) बंदर (d) मित्र *(रेलवे, 2001)*

38. शांभवी का पर्यायवाची शब्द है—
(a) दुर्गा (b) दासी (c) पत्नी (d) पार्वती *(रेलवे, 2001)*

39. कुसुमेषु का पर्यायवाची शब्द है—
(a) कबूतर (b) काला (c) कामदेव (d) आकाश *(रेलवे, 2001)*

40. चन्द्रमा का पर्यायवाची शब्द है—
(a) दिवाकर (b) निशि (c) मार्तंड (d) शशि *(बैंक परीक्षा, 2002)*

41. कमल का पर्यायवाची शब्द है—
(a) रजनीगंधा (b) गुलाब (c) अम्बुज (d) मल्लिका *(बैंक परीक्षा, 2002)*

42. गणेश का पर्यायवाची शब्द है—
(a) नरेश (b) सुरेश (c) गजानन (d) दिनेश *(बैंक परीक्षा, 2002)*

43. दाँत का पर्यायवाची शब्द नहीं है—
(a) दाड़िम (b) दन्त (c) दशन (d) रदन *(बैंक परीक्षा, 2002)*

44. घोड़ा का पर्यायवाची शब्द नहीं है—
(a) अश्व (b) घोटक (c) हय (d) कटक *(बैंक परीक्षा, 2002)*

45. कमल का पर्यायवाची शब्द नहीं है—
(a) नलिन (b) रसाल (c) उत्पल (d) राजीव *(बैंक परीक्षा, 2002)*

46. तीर का पर्यायवाची शब्द नहीं है—
(a) तार (b) बाण (c) शर (d) नाराच *(बैंक परीक्षा, 2002)*

47. पहाड़ का पर्यायवाची शब्द नहीं है—
(a) पर्वत (b) भूधर
(c) शैवाल (d) नग *(बैंक परीक्षा, 2002)*

48. दिन का पर्यायवाची शब्द नहीं है—
(a) दिवस (b) दीन
(c) वार (d) बासर *(बैंक परीक्षा, 2002)*

49. अनुचर का पर्यायवाची शब्द नहीं है—
(a) भृत्य (b) चाकर
(c) सेवक (d) निर्झर *(रेलवे, 2002)*

50. वीणापाणि का पर्यायवाची शब्द है—
(a) रंभा (b) सरस्वती
(c) लक्ष्मी (d) कमल *(रेलवे, 2002)*

51. कंचन का पर्यायवाची शब्द है—
(a) हीरा (b) कनक
(c) ताँबा (d) चाँदी *(रेलवे, 2002)*

52. केदार का पर्यायवाची शब्द है—
(a) ब्रह्मा (b) विष्णु
(c) महेश (d) इन्द्र *(रेलवे, 2002)*

53. घर का पर्यायवाची शब्द है—
(a) विहार (b) इला (c) निकेतन (d) नग *(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)*

54. भवन का पर्यायवाची शब्द है—
(a) मन्दिर (b) धाम
(c) महल (d) घर *(पी०सी०एस०, 2003)*

55. कमल का पर्यायवाची शब्द है—
(a) कुसुम (b) पुष्प (c) प्रसून (d) पुंडरीक *(पी०सी०एस०, 2003)*

56. इन्द्र का पर्यायवाची शब्द है—
(a) बाजीगर (b) राजराज (c) मघवा (d) विनायक *(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)*

57. भागीरथी का पर्यायवाची शब्द है—
(a) सरिता (b) गंगा (c) यमुना (d) निर्झरिणी *(बी०एड० 2003)*

58. सरस्वती का पर्यायवाची शब्द नहीं है—
(a) शारदा (b) कमला (c) वाणी (d) वीणापाणि *(पी०सी०एस०, 2003)*

59. रक्त का पर्यायबाची शब्द नहीं है—
(a) खून (b) रुधिर (c) शोणित (d) कासरि *(पी०सी०एस०, 2003)*

60. पवन का पर्यायवाची शब्द नहीं है—
(a) वात (b) अनल (c) वायु (d) समीर *(पी०सी०एस०, 2003)*

61. आकाश का पर्यायवाची शब्द है—
(a) दृग (b) विप्र (c) व्योम (d) हय *(रेलवे, 2003)*

62. फूल का पर्यायवाची शब्द नहीं है—
(a) सुमन (b) कुसुम (c) पुष्प (d) तनुजा *(रेलवे, 2003)*

63. दिये हुए शब्दों में भिन्न अर्थ वाला शब्द है—
(a) भास्कर (b) रवि
(c) दिवाकर (d) सुधाकर *(रेलवे, 2004)*

64. दिये हुए शब्दों में भिन्न अर्थ वाला शब्द है—
(a) उषा (b) दिन
(c) प्रभात (d) सवेरा *(रेलवे, 2004)*

65. आडम्बर का समानार्थी शब्द है—
(a) ढोंग (b) तम्बू
(c) दर्प (d) आवाज *(बी०एड०, 2004)*

66. कपाल का समानार्थी शब्द है—
(a) अदृष्ट (b) खप्पर
(c) भाग्य (d) माथा *(बी०एड०, 2004)*

67. छंद का समानार्थी शब्द है—
(a) आवरण (b) पद
(c) बंधन (d) आचरण *(बी०एड०, 2004)*

68. सूर्य का अपर्यायवाची शब्द है—
(a) दिनकर (b) दिवाकर
(c) सूरज (d) महेन्द्र *(रेलवे, 2004)*

69. नागर का पर्यायवाची शब्द है—
(a) नगर (b) ढोल
(c) चतुर (d) ग्रामवासी *(रेलवे, 2004)*

70. आकाश का पर्यायवाची शब्द नहीं है—
(a) व्योम (b) अम्बक
(c) नभ (d) अनन्त *(रेलवे, 2004)*

71. दिये हुए शब्दों में भिन्न अर्थ वाला शब्द है—
(a) आत्मजा (b) नन्दिनी
(c) भार्या (d) कन्या *(बी०एड०, 2005)*

72. दिये हुए शब्दों में भिन्न अर्थ वाला शब्द है—
(a) तुरंग (b) मृगेन्द्र (c) मृगराज (d) व्याघ्र
(बी०एड०, 2005)

73. अंधकार का पर्यायवाची शब्द है—
(a) पंक (b) आतंक
(c) तिमिर (d) घन *(अनुवादक परीक्षा, 2005)*

74. निधन का पर्यायवाची शब्द है—
(a) दिवावसान (b) देहावसान
(c) देहान्तर (d) आमरण
(अनुवादक परीक्षा, 2005)

75. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प किरण का पर्यायवाची नहीं है—
(a) अंशु (b) प्रकाश
(c) रश्मि (d) मयूख *(रेलवे, 2005)*

76. समानार्थी शब्द का चयन कीजिए : नियति—
(a) चरित्र (b) स्वभाव (c) कर्म (d) भाग्य
(रेलवे, 2005)

77. अलकेश पर्यायवाची शब्द है—
(a) बादल का (b) कल्पवृक्ष का
(c) कुबेर का (d) चपला का *(रेलवे, 2004)*

78. कौन-सा शब्द बादल का पर्यायवाची नहीं है—
(a) जलद (b) नीरद (c) वारिधि (d) मेघ
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

79. असुर का पर्यायवाची शब्द नहीं है—
(a) दनुज (b) दानव (c) दैत्य (d) यक्ष

80. आम का पर्यायवाची शब्द नहीं है—
(a) अमृतफल (b) आम्र (c) रसाल (d) पिक

81. अनुपम का पर्यायवाची शब्द है—
(a) स्वर्गीय (b) लौकिक (c) पार्थिव (d) अद्वितीय

82. हनुमान का पर्यायवाची शब्द नहीं है—
(a) पवनसुत (b) अंजनीपुत्र (c) मारुति (d) विनायक

उत्तरमाला

1. (b)	2. (a)	3. (b)	4. (c)	5. (a)	6. (c)	7. (d)	8. (c)	9. (a)	10. (c)	11. (b)	12. (a)
13. (b)	14. (d)	15. (c)	16. (a)	17. (b)	18. (d)	19. (a)	20. (a)	21. (b)	22. (a)	23. (a)	24. (b)
25. (a)	26. (d)	27. (d)	28. (c)	29. (c)	30. (d)	31. (c)	32. (c)	33. (d)	34. (c)	35. (b)	36. (a)
37. (c)	38. (a)	39. (c)	40. (d)	41. (c)	42. (c)	43. (a)	44. (d)	45. (b)	46. (a)	47. (c)	48. (b)
49. (d)	50. (b)	51. (b)	52. (c)	53. (c)	54. (d)	55. (d)	56. (c)	57. (b)	58. (b)	59. (d)	60. (b)
61. (c)	62. (d)	63. (d)	64. (b)	65. (a)	66. (d)	67. (b)	68. (d)	69. (c)	70. (b)	71. (c)	72. (a)
73. (c)	74. (b)	75. (b)	76. (d)	77. (c)	78. (c)	79. (d)	80. (d)	81. (d)	82. (d)		

★★★

10 विलोम शब्द
(Antonyms)

(अ, आ)

अतिथि	आतिथेय
अदोष	सदोष
अग्रज	अनुज
अनाथ	सनाथ
अल्पायु	दीर्घायु
अनुरक्ति	विरक्ति
अराग	सुराग
अल्पज्ञ	बहुज्ञ
अस्वस्थ	स्वस्थ
अगला	पिछला
अन्त	आदि
अनुलोम	प्रतिलोम
अवनि	अम्बर
अर्थ	अनर्थ
अनाहूत	आहूत
अतुकान्त	तुकान्त
अत्यधिक	अत्यल्प
अधः	उपरि
अधिकतम	न्यूनतम
अधुनातन	पुरातन
अनुग्रह	विग्रह
अर्पित	गृहीत
अर्जन	वर्जन
अपेक्षा	उपेक्षा
अधम	उत्तम
अंगीकार	अस्वीकार
अज्ञ	विज्ञ
अतिवृष्टि	अनावृष्टि
अमावस्या	पूर्णिमा
अघ	अनघ
अकाल	सुकाल
अर्थी	प्रत्यर्थी
अनैक्य	ऐक्य
अंत	अनंत
अचर	चर
अर्वाचीन	प्राचीन
आहार	निराहार
आवश्यक	अनावश्यक
आर्द्र	शुष्क
आमिष	निरामिष
आग्रह	दुराग्रह
आसक्त	अनासक्त
आधुनिक	प्राचीन
आदि	अनादि
आगत	अनागत
आश्रित	निराश्रित
आरोह	अवरोह
आवृत	अनावृत
आस्था	अनास्था
आरम्भ	अन्त
आकुंचन	प्रसारण
अवर	प्रवर
अकाम	सुकाम
अन्तरंग	बहिरंग
अर्पण	ग्रहण
अस्त	उदय
अमर	मर्त्य
अवनति	उन्नति
अनुकूल	प्रतिकूल
अग्नि	जल
अति	अल्प
अरुचि	सुरुचि
अनेकता	एकता
अमृत	विष
अमीर	गरीब
अनित्य	नित्य
अतल	वितल
अधिक	अल्प
अधिकारी	अनधिकारी
अंधकार	प्रकाश
अंतर्मुखी	वहिर्मुखी
अश्रु	हास
अभिज्ञ	अनभिज्ञ
अग्र	पश्च
अपमान	सम्मान
अथ	इति
अनुराग	विराग
अगम	सुगम
अन्तर्द्वन्द्व	बहिर्द्वन्द्व
अपना	पराया
अमृत	विष
अनेक	एक
अवनत	उन्नत
अजेय	जेय
अदेय	देय
आदान	प्रदान
आशा	निराशा
आयात	निर्यात
आत्मा	परमात्मा
आग्रही	दुराग्रही
आतुर	अनातुर
आय	व्यय
आचार	दुराचार
आस्तिक	नास्तिक
आविर्भाव	तिरोभाव
आविर्भूत	तिरोभूत
आकर्षण	विकर्षण
आधार	निराधार
आच्छादित	अनाच्छादित
आभ्यन्तर	बाह्य
आकाश	पाताल
आगम	लोप
आगामी	विगत
आजाद	गुलाम
आदिष्ट	निषिद्ध
आलोक	अंधकार

(इ, ई)

इति	अथ
इसका	उसका
इच्छा	अनिच्छा
ईश्वर	अनीश्वर
ईषत्	अलम

(उ, ऊ)

उपकार	अपकार
उदात्त	अनुदात्त
उधार	नकद
उन्नति	अवनति
उद्घाटन	समापन
उन्मीलन	निमीलन
उत्तरायण	दक्षिणायन
ऊर्ध्व	निम्न
उत्थान	पतन
उऋण	ऋण
उदयाचल	अस्ताचल
उत्तर	दक्षिण
उत्कृष्ट	निकृष्ट
उन्मुख	विमुख
उद्यम	निरुद्यम
उद्धत	विनीत
उपस्थित	अनुपस्थित
ऊर्ध्व	अधो
ऊपर	नीचे

(ए, ऐ)

एक	अनेक
एकल	बहुल
एकता	अनेकता
ऐहिक	पारलौकिक
ऐश्वर्य	अनैश्वर्य

(ओ, औ)

ओजस्वी	निस्तेज
औपचारिक	अनौपचारिक

(क वर्ग)

कल	आज
क्रम	व्यतिक्रम
कनीय	वरीय
कुटिल	ऋजु/सरल
कृत्रिम	प्राकृत
कार्य	अकार्य
कठिन	सरल
क्रूर	अक्रूर
क्रोध	क्षमा
आगे	पीछे
आदत्त	प्रदत्त
आना	जाना
आह्वान	विसर्जन
इहलोक	परलोक
इकट्ठा	अलग
इष्ट	अनिष्ट
ईद	मुहर्रम
ईश	अनीश
उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
उदय	अस्त
उच्च	निम्न
उत्साह	निरुत्साह
उचित	अनुचित
उपचार	अपचार
उपमेय	अनुपमेय
उपमा	अनुपमा
उपाय	निरुपाय
उपयोग	दुरुपयोग
उत्कर्ष	अपकर्ष
उपयुक्त	अनुपयुक्त
उत्तम	अधम
ऊधम	विनय
उग्र	सौम्य
उपसर्ग	प्रत्यय
उर्वर	अनुर्वर/बंजर
ऊर्ध्वगामी	अधोगामी
ऊँच	नीच
एड़ी	चोटी
एकत्र	विकीर्ण
एकाग्र	चंचल
ऐक्य	अनैक्य
ऐतिहासिक	अनैतिहासिक
औचित्य	अनौचित्य
औपन्यासिक	अनौपन्यासिक
कठोर	कोमल
कुकृति	सुकृति
कुकृत्य	सुकृत्य
क्रय	विक्रय
कलुष	निष्कलुष
कड़ुवा	मीठा
कुख्यात	विख्यात
कृतज्ञ	अकृतज्ञ/कृतघ्न
कीर्ति	अपकीर्ति

कनिष्ठ	ज्येष्ठ
कायर	निडर
कुरूप	सुन्दर
कपूत	सपूत
कृष्ण	शुक्ल
कर्मण्य	अकर्मण्य
करुण	निष्करुण
कुसुम	वज्र
क्षमा	क्रोध
क्षुद्र	महत्
क्षमा	दण्ड
ख्यात	कुख्यात
खगोल	भूगोल
खुला	बन्द
खंडन	मंडन
खेद	प्रसन्नता
ग्रस्त	मुक्त
गुप्त	प्रकट
गुण	अवगुण
गोचर	अगोचर
गमन	आगमन
गुरु	लघु
ग्राह्य	त्याज्य
गद्य	पद्य
गरीब	अमीर
ग्राम्य	शिष्ट
घर	बाहर
घटना	बढ़ना
घन	तरल

कलंक	निष्कलंक
कोप	कृपा
कदाचार	सदाचार
कटु	मधु
कृपण	उदार/दानी
कर्कश	सुशील
कसूरवार	बेकसूर
क्षर	अक्षर
क्षम	अक्षम
क्षणिक	शाश्वत
खल	सज्जन
खिलना	मुरझाना
खाद्य	अखाद्य
खीझना	रीझना
खरा	खोटा
गत	आगत
गम्भीर	वाचाल
गृहीत	त्यक्त
गगन	पृथ्वी
गरल	सुधा
गणतन्त्र	राजतन्त्र
गृही	त्यागी
गेय	अगेय
गर्मी	सर्दी
गहरा	छिछला
गीला	सूखा
घृणा	प्रेम
घात	प्रतिघात
घरेलू	बनैला

(च वर्ग)

चर	अचर
चिन्मय	जड़
चल	अचल
चोर	साधु
चिन्तन	नश्वर
चेतन	अचेतन
छली	निश्छल
ज्येष्ट	कनिष्ठ
ज्योतिर्मय	तमोमय
जल	थल
जागरण	निद्रा
जागृति	सुषुप्ति
जोड़	घटाव
जड़	चेतन
जेय	अजेय
जीत	हार
झूट	सच

चढ़ाव	उतार
चंचल	स्थिर
चाह	अनचाह
चतुर	मूढ़
चिर	अचिर
छाँह	धूप
जन्म	मृत्यु
ज्वार	भाटा
जय	पराजय
जवानी	बुढ़ापा
जाग्रत	सुषुप्त
जाड़ा	गर्मी
जीवन	मरण
जंगम	स्थावर
जाति	कुजाति
ज्ञान	अज्ञान
झोपड़ी	महल

(त वर्ग)

तामसिक	सात्विक
ताना	भरनी
तारीफ	शिकायत
तिमिर	प्रकाश
तीव्र	मंद
तुच्छ	महान
तरुण	वृद्ध
तृषा	तृप्ति
थलचर	जलचर

तृष्णा	वितृष्णा
ताप	शीत
तिक्त	मधुर
तीक्ष्ण	कुंठित
तुकांत	अतुकांत
त्याज्य	ग्राह्य
तुल	अतुल
तृप्त	अतृप्त
थोड़ा	बहुत

थोक	फुटकर
दानी	कंजूस
दुरुपयोग	सदुपयोग
दुर्जन	सज्जन
धर्म	अधर्म
ध्वंस	निर्माण
धूप	छाँह
नख	शिख
नागरिक	ग्रामीण
निषिद्ध	विहित
निर्लज्ज	सलज्ज
निद्रा	जागरण
निराकार	साकार
निश्छल	छली
नमक हराम	नमक हलाल
निषेध	विधि
निश्चेष्ट	सचेष्ट
दिन	रात
दीर्घकाय	कृशकाय
दाता	सूम
दक्षिण	वाम
दृढ़	विचलित
दुर्बल	सबल
दूषित	स्वच्छ
धीर	अधीर
धार्मिक	अधार्मिक
न्याय	अन्याय
नाम	अनाम
निरर्थक	सार्थक
निंद्य	वंद्य
नेक	बद
नैतिक	अनैतिक
निराशा	आशा
निर्मल	मलिन
नया	पुराना
नित्य	अनित्य
निर्माण	ध्वंस

दयालु	निर्दय
दुर्दान्त	शांत
दानव	देव
दुर्गन्ध	सुगन्ध
धनी	निर्धन
धरा	गगन
नर	नारी
नूतन	पुरातन
निर्दय	सदय
निरामिष	सामिष
नैसर्गिक	कृत्रिम
नगद	उधार
नीरस	सरस
निर्गुण	सगुण
नगर	ग्राम
निर्जीव	सजीव
न्यून	अधिक
दुराचारी	सदाचारी
दुराशय	सदाशय
देय	अदेय
दिवा	रात्रि
दृश्य	अदृश्य
दुःशील	सुशील
दोष	गुण
धृष्ट	विनीत
नश्वर	शाश्वत
निर्दोष	सदोष
निन्दा	स्तुति
निष्काम	सकाम
निरक्षर	साक्षर
निडर	कायर
नरक	स्वर्ग
निर्धन	धनी
नकल	असल
नास्तिक	आस्तिक
नकारात्मक	सकारात्मक
नेकी	बदी

(प वर्ग)

पक्ष	विपक्ष
पंडित	मूर्ख
पठित	अपठित
परतंत्र	स्वतंत्र
पाश्चात्य	पौर्वात्य
प्रसाद	विषाद
प्राकृतिक	कृत्रिम
फूलना	मुरझाना
बन्धन	मोक्ष/मुक्ति
बढ़िया	घटिया
बर्बर	सभ्य
बहिरंग	अंतरंग
बाह्य	आभ्यंतर
भय	निर्भय
भूगोल	खगोल
भूलोक	द्युलोक
भोगी	योगी
मसृण	रूक्ष
मानवीय	अमानवीय

परुष	कोमल
पुण्य	पाप
परमार्थ	स्वार्थ
पूर्ववर्ती	परवर्ती
प्रवृत्ति	निवृत्ति
प्रत्यक्ष	परोक्ष
फल	निष्फल
बैर	प्रीति
बद	नेक
बद्ध	मुक्त
बलवान	बलहीन
बाढ़	सूखा
बाढ़ग्रस्त	सूखाग्रस्त
भ्रान्त	निर्भ्रान्त
भूत	भविष्य
भेद	अभेद
भोग्य	अभोग्य
महात्मा	दुरात्मा
मित्र	शत्रु

मुख	प्रतिमुख, पृष्ठ
मीठा	कड़ुवा
मृदुल	रूक्ष
मालिक	नौकर
पात्र	कुपात्र
पतन	उत्थान
पराया	अपना
परिश्रम	विश्राम
प्रकाश	अंधकार
प्रज्ञ	मूढ़
प्रफुल्ल	म्लान
प्रशंसा	निंदा
पानी	आग
पुरातन	नवीन
पूर्ववत्	नूतनवत्
प्रेम	घृणा
परार्थ	स्वार्थ
पुरस्कार	तिरस्कार
प्रसारण	संकोचन
प्राचीन	अर्वाचीन
प्रजा	राजा
फायदा	नुकसान
भला	बुरा
भिखारी	दाता
भारी	हल्का
मान	अपमान
मुख्य	गौण
मलिन	निर्मल
मनुज	दनुज
मृत	जीवित
मिलन	विरह
मर्त्य	अमर
माता	पिता
मोक्ष	बंधन
पुरुष	स्त्री
पराजय	जय
पता	खोज
पवित्र	अपवित्र
प्रख्यात	अख्यात
प्रतिकूल	अनुकूल
प्रलय	सृष्टि
प्रकट	गुप्त/प्रच्छन्न
पालक	संहारक
पूर्व	उत्तर/पश्चिम
पूर्णिमा	अमावस्या
पूर्ण	अपूर्ण
परकीय	स्वकीय
पतनोन्मुख	विकासोन्मुख
प्रमुख/प्रधान	गौण
प्राची	प्रतीची
फूट	मेल
बुरा	अच्छा
भद्र	अभद्र
भौतिक	आध्यात्मिक
मानव	दानव
मानक	अमानक
मूक	वाचाल
मरण	जीवन
मिहनती	आलसी
मुनाफा	नुकसान

(य, र, ल, व)

यश	अपयश
रत	विरत
लघु	गुरु
लौकिक	अलौकिक
बहिष्कार	स्वीकार
विपत्ति	सम्पत्ति
विपन्न	सम्पन्न
विस्तार	संक्षेप
विवाद	निर्विवाद/निर्णय
वृद्ध	तरुण
वादी	प्रतिवादी
विकास	ह्रास
वसंत	पतझड़
विधि	निषेध
विरह	मिलन
विष	अमृत
योगी	भोगी
रचना	ध्वंस/विनाश
राम	रावण
रूपवान	कुरूप
राजा	रंक/प्रजा
लुप्त	प्रकट
लिप्त	निर्लिप्त
विरत	निरत/शत
विकीर्ण	संकीर्ण
वैमनस्य	सौमनस्य
व्यस्त	अकर्मण्य
विक्रय	क्रय
विधवा	सधवा
यथार्थ	कल्पित
राग	विराग
लिखित	अलिखित
लेन	देन
व्यास	समास
वृष्टि	अनावृष्टि
विश्लेषण	संश्लेषण
व्यष्टि	समष्टि
विसर्जन	अह्वान
वैतनिक	अवैतनिक
विजय	पराजय
वन	मरु
वृहत्	लघु
विमुख	उन्मुख
विश्वास	अविश्वास
योग	वियोग
रात	दिन
राजतंत्र	प्रजातंत्र
रिक्त	पूर्ण
रंगीन	रंगहीन/बेरंग
लाभ	हानि
लौह	स्वर्ण
व्यर्थ	अव्यर्थ/सार्थक
विनीत	उद्धत
विपद्	सम्पद्
विशिष्ट	साधारण
व्यय	आय
विस्तृत	संक्षिप्त
विख्यात	कुख्यात
विषाद	आह्लाद
वन्य	पालित
विकर्ष	आकर्ष
वियोग	संयोग
विशेष	सामान्य

(श, ष, स, ह)

शोषण	पोषण
शरण	अशरण
श्वेत	श्याम
शिव	अशिव
शकुन	अपशकुन
शत्रु	मित्र
शुष्क	आर्द्र
श्लील	अश्लील
शांत	अशांत
श्रीगणेश	इति
श्रद्धा	अश्रद्धा
षंड	मर्द
सगुण	निर्गुण
सक्षम	अक्षम
सज्जन	दुर्जन
सत्	असत्
सूम	दाता
स्पृश्य	अस्पृश्य
सपूत	कपूत
साकार	निराकार
सदाशय	दुराशय
सुख	दुःख
सत्य	असत्य
सुकर	दुष्कर
स्वल्पायु	चिरायु
सुलभ	दुर्लभ
संग	निःसंग
ह्रास	वृद्धि
ह्रस्व	दीर्घ
सहयोगी	प्रतियोगी
सामान्य	विशिष्ट
सजल	निर्जल
सच	झूठ
संधि	विग्रह
सदय	निर्दय
सवर्ण	अवर्ण
सुकृति	कुकृति
समाज	व्यक्ति
सम्मान	अपमान
सहज	दुष्कर/कठिन
स्थावर	जंगम
स्वार्थ	परमार्थ
स्वाधीन	पराधीन
संश्लिष्ट	विश्लिष्ट
सापेक्ष	निरपेक्ष
सार	असार
सुभग	दुभग
सौभाग्य	दुर्भाग्य
स्तुति	निंदा
सुमति	कुमति
सत्कार	तिरस्कार
सात्विक	तामसिक
सुशील	दुःशील
सपद्	विपद्
हँसना	रोना
वक्र	ऋजु
वृद्धि	ह्रास
विनाश	निर्माण
विशालकाय	लघुकाय
विसर्जन	सर्जन
शीत	उष्ण
शयन	जागरण
शुभ	अशुभ
शासक	शासित
शुक्ल	कृष्ण
शोक	हर्ष
शुचि	अशुचि
शोषक	पोषक, शोषित
श्रव्य	अश्रव्य/दृश्य
श्रांत	अश्रांत
शृंखला	विशृंखला
षंडत्व	पुंसत्व
स्वजाति	विजाति
सकाम	निष्काम
संन्यासी	गृहस्थ
सुन्दर	कुरूप
सुनाम	दुर्नाम
साक्षर	निरक्षर
स्वर्ग	नरक
सृष्टि	प्रलय
सबल	निर्बल
स्थिर	चंचल
संकीर्ण	विस्तीर्ण
सादर	निरादर
स्वकीया	परकीया
सभ्य	असभ्य
हर्ष	शोक/विषाद
हिंसा	अहिंसा
सम	विषम
सरल	कठिन
सुधा	गरल
सर्द	गर्म
सुगम	दुर्गम
संघटन	विघटन
सुबह	शाम
स्वप्न	जागरण
सरस	नीरस
सपन्न	विपन्न
ससीम	असीम
स्थूल	सूक्ष्म
स्मरण	विस्मण
स्वदेशी	परदेशी
संगत	असंगत
सार्थक	निरर्थक
सामिष	निरामिष
सुगंध	दुर्गंध
सुराज	दुराज
स्वतन्त्र	परतन्त्र
सदाचार	कदाचार/दुराचार
सयोग	वियोग
समास	व्यास
सम्मुख	विमुख
समष्टि	व्यष्टि
हास	रुदन
हार	जीत

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. आलोक का विलोम शब्द है—
(a) अद्भुत (b) अज्ञात (c) अंधकार (d) रात्रि

2. ज्येष्ठ का विलोम शब्द है—
(a) कनिष्ठ (b) पूर्व (c) भूत (d) अगज

3. स्थावर का विलोम शब्द है—
(a) सचल (b) चंचल (c) चेतन (d) जंगम
(रेलवे, 1997)

4. गमन का विलोम शब्द है—
(a) जाना (b) उतरना (c) आगमन (d) चढ़ना
(रेलवे, 1997)

5. मौन का विलोम शब्द है—
(a) मुखर (b) मौखिक (c) मयंक (d) विकार
(रेलवे, 1997)

6. रंगीन छपे शब्द के लिए उपयुक्त विलोम शब्द का चयन कीजिए—
वह अपने विषय का पूर्ण अभिज्ञ है।
(a) सर्वज्ञ (b) अल्पज्ञ (c) अनभिज्ञ (d) विज्ञ
(रेलवे, 1997, बी० एड०, 2008)

7. रंगीन छपे शब्द के लिए उपयुक्त विलोम शब्द का चयन करके रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए—
सम्पन्न व्यक्ति·····की व्यथा नहीं जान सकता।
(a) आसन्न (b) विपन्न (c) निष्पन्न (d) विषण्ण
(रेलवे, 1997)

8. विस्तार का विलोम शब्द है—
(a) लघु (b) छोटा (c) सूक्ष्म (d) संक्षेप
(रेलवे, 1998)

9. गरिमा का विलोम शब्द है—
(a) अंधकार (b) लघिमा (c) घृणा (d) नीचता
(रेलवे, 1998)

10. मौखिक का विलोम शब्द है—
(a) लिखित (b) कथित (c) पठित (d) अलिखित
(रेलवे, 1999)

11. अनाथ का विलोम शब्द है—
(a) धनी (b) सनाथ (c) निर्धन (d) बेकार
(बी० एड०, 1999)

12. अल्पज्ञ का विलोम शब्द है—
(a) अवज्ञ (b) सर्वज्ञ (c) अभिज्ञ (d) कृतज्ञ
(रेलवे, 2000)

13. सकारात्मक का विलोम शब्द है—
(a) नकारात्मक (b) आशात्मक
(c) संभावात्मक (d) निराशात्मक *(रेलवे, 2000)*

14. सम्मुख का विलोम शब्द है—
(a) उन्मुख (b) विमुख (c) प्रमुख (d) अधिमुख
(स्नातक परीक्षा, 2001)

15. अथ का विलोम शब्द है—
(a) अन्त (b) इति (c) अर्थ (d) अध
(रेलवे, 2001, बी० एड०, 2008)

16. उर्वर का विलोम शब्द है—
(a) उत्कृष्ट (b) उत्तमर्ण (c) ऊसर (d) अतिवृष्टि
(रेलवे, 2001)

17. थोक का विलोम शब्द है—
(a) परचून (b) थाक (c) थोया (d) पर्यायिक
(रेलवे, 2001)

18. भूषण का विलोम शब्द है—
(a) विष्णु (b) भूशक (c) दूषण (d) भूषा
(रेलवे, 2001)

19. अवनि का विलोम शब्द है—
(a) आसमान (b) आकाश (c) अम्बर (d) गगन
(उ०प्र०निर्वाचन आयोग परीक्षा, 2001)

20. हेय का विलोम शब्द है—
(a) हास्य (b) हार (c) ग्राम्य (d) ग्राह्य
(रेलवे, 2001)

21. मृदुल का विलोम शब्द है—
(a) कठिन (b) खराब (c) रूक्ष (d) कठोर
(बैंक परीक्षा, 2002)

22. ऋणात्मक का विलोम शब्द है—
(a) धनात्मक (b) रिणात्मक (c) मानात्मक (d) अनात्मक
(रेलवे, 2002)

23. कलुष का विलोम शब्द है—
(a) पापशून्य (b) निष्पाप (c) निष्कलुष (d) निष्करुण
(बैंक परीक्षा, 2002)

24. चिरंतन का विलोम शब्द है—
(a) अलौकिक (b) लौकिक (c) नश्वर (d) नैसर्गिक
(बैंक परीक्षा, 2002)

25. संन्यासी का विलोम शब्द है—
(a) राजा (b) भोगी (c) गृहस्थ (d) ब्रह्मचर्य
(बैंक परीक्षा, 2002)

26. स्वकीया का विलोम शब्द है—
(a) स्वीकृत (b) अस्वीकृत (c) नारकीय (d) परकीया
(बैंक परीक्षा, 2002)

27. एकाधिकार का विलोम शब्द है—
(a) अनेकाधिकार (b) सर्वाधिकार
(c) पराधिकार (d) परमाधिकार
(बैंक परीक्षा, 2002)

28. श्रीगणेश का विलोम शब्द है—
(a) श्रीराधा (b) विनाश
(c) इतिश्री (d) इनमें से कोई नहीं
(बैंक परीक्षा, 2002)

29. आकर्षण का विलोम शब्द है—
(a) आकृष्ट (b) विकर्षण
(c) अनाकर्षण (d) पराकर्षण *(बैंक परीक्षा, 2002)*

30. अल्पसंख्यक का विलोम शब्द है—
(a) अतिसंख्यक (b) बहुसंख्यक
(c) महासंख्यक (d) बाहुल्य *(बैंक परीक्षा, 2002)*

31. उपमान का विलोम शब्द है—
(a) अनन्वय (b) व्यतिरेक
(c) अतुल (d) उपमेय *(पी० सी० एस, 2003)*

32. मंद का विलोम शब्द है—
(a) सुस्त (b) द्रुत
(c) शीघ्र (d) त्वरित *(पी० सी० एस, 2003)*

33. सूक्ष्म का विलोम शब्द है—
(a) अदृश्य (b) दृष्टव्य
(c) निश्चित (d) स्थूल *(पी० सी० एस, 2003)*

34. अधुनातन का विलोम शब्द है—
(a) प्राचीन (b) भूतकालिक
(c) पुरातन (d) विगतकालीन
(पी० सी० एस, 2003)

35. सृष्टि का विलोम शब्द है—
(a) मरण (b) प्रलय (c) वृष्टि (d) मोक्ष
(रेलवे, 2003)

36. निम्नलिखित में जो जोड़ा विपरीतार्थक नहीं है उसे चुनें।
(a) आय-व्यय (b) सरल-कठिन
(c) गुरु-लघु (d) धर्म-अधम *(रेलवे, 2003)*

37. अति का विपरीतार्थक शब्द है—
(a) न्यून (b) कम
(c) अल्प (d) नगण्य *(बी० एड०, 2004)*

38. ब्रह्म का विपरीतार्थक शब्द है—
(a) जीव (b) माया
(c) जगत (d) अज्ञान *(बी० एड०, 2004)*

39. बहिरंग का विपरीतार्थक शब्द है—
(a) अन्तरंग (b) रंगारंग
(c) जलतरंग (d) रागरंग *(बी० एड०, 2004)*

40. अनागत का विलोम शब्द है—
(a) वर्तमान (b) भूतकालिक
(c) विगत (d) आगत *(बी० एड०, 2004)*

41. उत्तम का विलोम शब्द है—
(a) निकृष्ट (b) विकृत
(c) अधम (d) कीर्ति *(रेलवे, 2004)*

42. नीरस का विलोम शब्द है—
(a) रसीला (b) सरस
(c) विरस (d) अरस *(बी० एड०, 2004)*

43. मुख्य का विलोम शब्द है—
(a) विमुख (b) प्रतिमुख (c) गौण (d) सामान्य
(अनुवादक परीक्षा, 2005)

44. महान का विलोम शब्द है—
(a) अल्प (b) नगण्य (c) अनुचित (d) क्षुद्र
(अनुवादक परीक्षा, 2005)

45. धनवान का विलोम शब्द है—
(a) अकिंचन (b) किंकर (c) कंचन (d) धनाढ्य
(अनुवादक परीक्षा, 2005)

46. उद्धत का विलोम शब्द है—
(a) सौख्य (b) सौम्य (c) उत्तम (d) कोमल
(अनुवादक परीक्षा, 2005)

47. मूक का विपरीतार्थक शब्द है—
(a) हास (b) शाप (c) गौण (d) वाचाल
(रेलवे, 2005)

48. सही विलोम शब्द चुनिए—अर्वाचीन
(a) नूतन (b) नव्य (c) प्राचीन (d) नवीन
(रेलवे, 2005, बी० एड०, 200

49. सही विलोम शब्द चुनिये—मानव
(a) दानव (b) दैत्य (c) राक्षस (d) पुरुष
(रेलवे, 200

50. विपरीतार्थक शब्द चुनिए—शोषक
(a) शोषित (b) पोषक (c) पोसक (d) पोषित
(रेलवे, 200

51. कृतज्ञ का विलोम क्या है ?
(a) कठिन (b) कृपण (c) कृतघ्न (d) करुण

52. विपत्ति का विलोम शब्द है—
(a) समृद्धि (b) हर्ष (c) आपत्ति (d) संपत्ति

53. अनुराग का विलोम शब्द है—
(a) अराग (b) वैराग्य (c) विराग (d) वीतराग

54. दक्षिण का विलोम शब्द है—
(a) पश्चिम (b) पूरब (c) वाम (d) दायाँ

55. आशा का विलोम शब्द है—
(a) दुराशा (b) निराशा (c) हताशा (d) नाउम्मीद

56. परोक्ष का विलोम शब्द है—
(a) प्रत्यक्ष (b) स्थूल (c) द्रष्टव्य (d) अपरोक्ष

57. उपेक्षा का विलोम है—
(a) परीक्षा (b) अपेक्षा (c) उत्प्रेक्षा (d) लौकिक
(मध्य प्रदेश प्री बी.एड. परीक्षा, 2007)

58. पाश्चात्य का विलोम शब्द है—
(a) प्रतीची (b) प्राची (c) पौर्वात्य (d) प्रत्यक्ष
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

59. शाश्वत का विलोम शब्द है—
(a) सदैव (b) अनश्वर (c) नश्वर (d) रहस्यमय
(राजस्थान बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2006)
आर.आर.बी.इलाहाबाद एकाउन्टेन्ट असिस्टेंट परीक्षा, 2010)

60. शब्द के चार विलोम दिए गए हैं। सही विलोम शब्द का चयन कीजिए—
हर्ष
(a) खेद (b) वेदना (c) दुःख (d) विषाद
(आर.आर.बी.इलाहाबाद एकाउन्टेन्ट असिस्टेंट परीक्षा, 2010)

उत्तरमाला

1. (c)	2. (a)	3. (d)	4. (c)	5. (a)	6. (c)	7. (b)	8. (d)	9. (b)	10. (a)	11. (b)	12. (b)
13. (a)	14. (b)	15. (b)	16. (c)	17. (a)	18. (c)	19. (c)	20. (d)	21. (c)	22. (a)	23. (c)	24. (c)
25. (c)	26. (d)	27. (b)	28. (c)	29. (b)	30. (b)	31. (d)	32. (b)	33. (d)	34. (c)	35. (b)	36. (d)
37. (c)	38. (a)	39. (a)	40. (d)	41. (c)	42. (b)	43. (c)	44. (d)	45. (a)	46. (b)	47. (d)	48. (c)
49. (a)	50. (b)	51. (c)	52. (d)	53. (c)	54. (c)	55. (b)	56. (a)	57. (b)	58. (c)	59. (c)	60. (d)

★★★

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द
(Single word for a group of words)

11

(अ)

जिसकी कल्पना न की जा सके	*अकल्पनीय*
जो कहा न जा सके	*अकथनीय*
हाथी को हाँकने का लोहे का हुक	*अंकुश*
जो खाया न जा सके	*अखाद्य*
जिसका जन्म पहले हुआ हो	*अग्रज*
आगे का विचार करने वाला	*अग्रसोची*
जो सबके आगे रहता हो	*अग्रणी*
जिसका ज्ञान इन्द्रियों के द्वारा न हो	*अगोचर*
जो नेत्रों से दिखाई न दे	*अगोचर*
जो इन्द्रियों से परे हो	*अगोचर*
समाचार पत्र का मुख्य *(सम्पादकीय)* लेख	*अग्रलेख*
जो खाली न जाय	*अचूक*
जो अपने स्थान या स्थिति से अलग न किया जा सके	*अच्युत*
जिसकी चिन्ता नहीं हो सकती	*अचिन्त्य*
जो छूने योग्य न हो	*अछूत*
जो छुआ न गया हो	*अछूता*
जो बूढ़ा ना हो	*अजर*
जिसका कोई शत्रु उत्पत्र न हुआ हो	*अजातशत्रु*
जिसे जीता न जा सके	*अजेय*
जो न जाना गया हो	*अज्ञात*
जो कुछ नहीं जानता हो	*अज्ञ*
जिसके कुल का पता ज्ञात न हो	*अज्ञातकुल*
जिस हँसी से अट्टालिका तक हिल जाय	*अट्टहास*
जो अपनी बात से न टले	*अटल*
न टूटने वाला	*अटूट*
जो अपनी जगह से न डिगे	*अडिग*
आढ़त का व्यापार करने वाला	*आढ़तिया*
पदार्थ का सबसे छोटा इन्द्रिय-ग्राह्य विभाग या मात्रा	*अणु*
सीमा का अनुचित उल्लंघन	*अतिक्रमण*
जिसके आने की तिथि ज्ञात न हो	*अतिथि*
किसी कथा के अंतर्गत आने वाली दूसरी कथा	*अन्तःकथा*
जो सबके मन की जानता हो	*अंतर्यामी*
आवश्यकता से अधिक वर्षा	*अतिवृष्टि*
किसी बात या कथन को बढ़ा-चढ़ा कर कहना	*अतिशयोक्ति*
जो बीत गया है	*अतीत*
इन्द्रियों की पहुँच से बाहर	*अतीन्द्रिय*
जिसकी तुलना न की जा सके	*अतुलनीय*
जो दबाया न जा सके	*अदम्य*
जो देखा न जा सके	*अदृश्य*
जिसके समान दूसरा न हो	*अद्वितीय*
जो देखने योग्य न हो	*अदर्शनीय*
जो पहले न देखा गया हो	*अदृष्टपूर्व*
धर्म या शास्त्र के विरुद्ध कार्य	*अधर्म*
अधिकार या कब्जे में आया हुआ	*अधिकृत*
सर्वाधिकार सम्पन्न शासक या अधिकारी	*अधिनायक*
विधानमंडल द्वारा पारित या स्वीकृत नियम	*अधिनियम*
कर या शुल्क का वह अंश जो किसी कारणवश अधिक से अधिक लिया जाता है	*अधिभार*
वह पत्र, जिसमें किसी को कोई काम करने का अधिकार दिया जाय	*अधिपत्र*
किसी पक्ष का समर्थन करने वाला	*अधिवक्ता*
वास्तविक मूल्य से अधिक लिया जाने वाला शुल्क	*अधिशुल्क*
सरकार द्वार प्रकाशित या सरकारी बजट में छपी सूचना	*अधिसूचना*
किसी कार्यालय या विभाग का वह अधिकारी जो अपने अधीन कार्य करने वाले कर्मचारियों की निगरानी रखे	*अधीक्षक*
किसी सभा, संस्था का प्रधान	*अध्यक्ष*
नीचे की ओर मुख किये हुए	*अधोमुख*
राज्य के अधिपति द्वारा जारी किया गया वो अधिकारिक आदेश जो किसी विशेष समय तक ही लागू हो	*अध्यादेश*
वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले	*अध्यूढ़ा*
अन्य से सम्बन्ध न रखने वाला	*अनन्य*
जिसका कोई दूसरा उपाय न हो	*अनन्योपाय*
जिसका स्वामी न हो	*अनाथ*
जिसका आदर न किया गया हो	*अनादृत*
दूसरों के गुणों में दोष ढूँढ़ने की वृति का न होना	*अनसूया*
जिसका वचन द्वारा वर्णन न किया जा सके	*अनिवर्चनीय*
जिसका निवारण न किया जा सके	*अनिवार्य*
बिना पलक गिराये हुए	*अनिमेष*
जिसका उच्चारण न किया जा सके	*अनुच्चरित*
जो परीक्षा में उत्तीर्ण न हुआ हो	*अनुत्तीर्ण*
किसी कार्य के लिए दी जाने वाली सहायता	*अनुदान*
जिसकी उपमा न दी जा सके	*अनुपम*
जिसका अनुभव किया गया हो	*अनुभूत*
किसी मत या प्रस्ताव का समर्थन करने की क्रिया	*अनुमोदन*
किसी व्यक्ति या सिद्धान्त का समर्थन करने वाला	*अनुयायी*
एक भाषा की लिखी हुई बात को दूसरी भाषा में लिखना या कहना	*अनुवाद*
परम्परा से चली आई हुई बात, उक्ति या कला	*अनुश्रुति*
जिसका मन किसी दूसरी ओर हो	*अन्यमनस्यक/अनमना*
जिसका कोई निश्चित घर न हो	*अनिकेत*
नीचे की ओर लाना या खींचना	*अपकर्ष*
जो पहले पढ़ा न गया हो	*अपठित*
दोपहर के बाद का समय	*अपराह्न*

शरीर के लिए जितना धन आवश्यक हो उससे अधिक न लेना — *अपरिग्रह*

जो मापा न जा सके — *अपरिमेय*

जिसके बिना कार्य न चल सके — *अपरिहार्य*

जो आँखों के सामने न हो — *अप्रत्यक्ष/परोक्ष*

जिसके पार न देखा जा सके — *अपारदर्शक*

जो पूरा या भरा हुआ न हो — *अपूर्ण*

जिसकी अपेक्षा *(उम्मीद)* हो — *अपेक्षित*

अभिनय करने वाला पुरुष — *अभिनेता*

अभिनय करने वाली स्त्री — *अभिनेत्री*

जो किसी की ओर मुँह किये हुए हो — *अभिमुख*

जिस पर अभियोग लगाया गया हो — *अभियुक्त*

जिसका जन्म उच्च कुल में हुआ हो — *अभिजात*

किसी कार्य को बार-बार करना — *अभ्यास*

भली प्रकार से सीखा हुआ — *अभ्यस्त*

किसी वस्तु का भीतरी भाग — *अभ्यन्तर*

किसी वस्तु को प्राप्त करने की तीव्र इच्छा — *अभीप्सा*

जो कभी मृत्यु को प्राप्त न हो — *अमर*

जो काव्य, संगीत आदि का रस न ले — *अरसिक*

द्वार या आँगन के फर्श पर रंगों से चित्र बनाने या चौक पूरने की कला — *अल्पना*

जो अल्प *(कम)* जानता हो — *अल्पज्ञ*

जो इस लोक का न हो — *अलौकिक*

जो कम बोलता हो — *अल्पभाषी*

शरीर का कोई भाग — *अवयव*

जिस पर विचार न किया गया हो — *अविचारित*

सरकार द्वारा दूसरे देश की तुलना में अपने देश की मुद्रा का मूल्य कम कर देना — *अवमूल्यन*

बिना वेतन के कार्य करने वाला — *अवैतनिक*

जो साधा *(ठीक किया)* न जा सके — *असाध्य*

जो शोक करने योग्य नहीं है — *अशोच्य*

जो स्त्री *(ऐसी पर्दानशीन है कि)* सूर्य को भी न देख सके — *असूर्यम्पश्या*

जिसका विभाजन न किया जा सके — *अविभाजित*

अच्छा-बुरा समझने की शक्ति का अभाव — *अविवेक*

जो विधान या नियम के विरुद्ध हो — *असंवैधानिक*

जिसमें शक्ति नहीं है — *अशक्त*

न हो सकने वाला — *अशक्य/असंभव*

जो शोक करने योग्य नहीं — *अशोक्य*

फेंककर चलाया जाने वाला हथियार — *अस्त्र*

किसी प्राणी को न मारना — *अहिंसा*

अंडे से जन्म लेने वाला — *अंडज*

महल का भीतरी भाग — *अन्तःपुर*

गुरु के समीप रहनेवाला विद्यार्थी — *अन्तेवासी*

जिसका जन्म छोटी *(अन्त्य)* जाति में हुआ हो — *अन्त्यज*

जिसका जन्म अनु *(पीछे)* हुआ हो — *अनुज*

जो पहले कभी न हुआ हो — *अभूतपूर्व*

जो बीत चुका है — *अतीत*

जिसकी गहराई की थाह न लग सके — *अथाह*

जो सदा से चलता आ रहा है — *अनवरत*

जो आगे की न सोचता हो — *अदूरदर्शी*

धरती और आकाश के बीच का स्थान — *अंतरिक्ष*

जिस पर आक्रमण न किया गया हो — *अनाक्रांत*

जो जीता न जा सके — *अजेय*

जिसके पास कुछ न हो — *अकिंचन*

जो कानून के विरुद्ध हो — *अवैध*

जो समय पर न हो — *असामयिक*

अपने हिस्से या अंश के रूप में कुछ देना — *अंशदान*

जिसमें कुछ करने की क्षमता न हो — *अक्षम*

जो गिना न जा सके — *अनगिनत*

जो कार्य रूप में न लाया जा सके — *अव्यावहारिक*

जिसके समान दूसरा न हो — *अद्वितीय*

जिसका खण्डन न हो सके — *अकाट्य*

जिस पर मुकदमा चल रहा हो — *अभियुक्त*

जिसकी सीमा न हो — *असीम*

जो दिया न जा सके — *अदेय*

अनुकरण करने योग्य — *अनुकरणीय*

जो मानव के योग्य न हो — *अमानुषिक*

जो बिना बुलाये आया हो — *अनाहूत*

जिस पर कोई नियंत्रण न हो — *अनियंत्रित*

जिसे अधिकार दिया गया हो — *अधिकृत*

जारी किया गया आधिकारिक आदेश — *अध्यादेश*

वर्षा का अभाव — *अनावृष्टि*

जिस पर निर्णय न हुआ हो — *अनिर्णीत*

जिस पर अनुग्रह किया गया हो — *अनुग्रहीत*

जो हिसाब-किताब की जाँच करता हो — *अंकेक्षक*

जिसकी परिभाषा देना संभव न हो — *अपरिभाषित*

जो पहले कभी घटित न हुआ हो — *अघटित*

वह पत्र जिसमें किसी को कुछ करने का अधिकार दिया गय हो — *अधिपत्र*

सीमा का उल्लंघन करना — *अतिक्रमण*

जो पहले कभी नहीं सुना गया — *अश्रुतपू*

जिसमें सामर्थ्य नहीं है — *असम*

जिसकी आशा न की जाय — *अप्रत्याशि*

जिसे पढा न जा सके — *अपाठ्*

जिसे भेदा *(तोड़ा)* न जा सके — *अभे*

आत्मा व परमात्मा का द्वैत *(अलग-अलग होना)* न माननेवा — *अद्वैतवा*

अल्प *(कम)* वेतन भोगनेवाला *(पानेवाला)* — *अल्पवेतनभो*

अध्ययन *(पढ़ना)* का काम करनेवाला — *अध्ये*

अध्यापन *(पढ़ाने)* का काम करनेवाला — *अध्याप*

आग से झुलसा हुआ — *अनलद*

जहाँ गमन *(जाया)* न किया जा सके — *अग*

(आ)

वह स्त्री जिसका पति परदेश से लौटा हो — *आगतपतिका*
वह स्त्री जिसका पति आने वाला है — *आगमिस्यतपतिका*
किसी बात पर बार-बार ज़ोर देना — *आग्रह*
वह जो अपने आचार से पवित्र है — *आचारपूत*
सामाजिक एवं प्रशासनिक अनुशासन की क्रूरता से उत्पत्र स्थिति — *आतंक*
अपने प्राण आप लेने वाला — *आत्मघाती*
दूसरे के हित में अपने आप को संकट में डालना — *आत्मोत्सर्ग*
अर्थ या धन से सम्बन्ध रखने वाला — *आर्थिक*
जो जन्म लेते ही गिर या मर गया है — *आदण्डपात*
सर्वप्रथम मत को प्रवर्तित करने वाला — *आदिप्रवर्तक*
आदि से अन्त तक — *आद्योपान्त*
पैर से लेकर सिर तक — *आपादमस्तक*
ऐसा व्रत, जो मरने पर ही समाप्त हो — *आमरणव्रत*
किसी पात्र आदि के अन्दर का स्थान, जिसमें कोई चीज आ सके — *आयतन*
देश में विदेश से माल आने की क्रिया — *आयात*
गुण-दोषों का विवेचन करने वाला — *आलोचक*
जिसे आश्वासन दिया गया हो — *आश्वस्त*
वह कवि जो तत्क्षण कविता कर सके — *आशुकवि*
ईश्वर में विश्वास रखने वाला — *आस्तिक*
जिसकी बाँहें जानु *(घुटने)* तक पहुँचती हो — *आजानुबाहु*
आशा से अतीत *(परे)* — *आशातीत*
सेतुबंध रामेश्वरम् से हिमालय तक — *आसेतुहिमालय*
बालक से वृद्ध तक — *आबालवृद्ध*
आयोजन करने वाला व्यक्ति — *आयोजक*
धन से संबंध रखने वाला — *आर्थिक*
जो आलोचना के योग्य हो — *आलोच्य*
किसी अवधि से संबंध रखने वाला — *आवधिक*
आशुलिपि *(शार्ट हैण्ड)* जाननेवाला लिपिक — *आशुलिपिक*
किसी देश के वे निवासी जो पहले से वहाँ रहते रहे हैं — *आदिवासी*

(इ, ई)

इन्द्रियों को वश में करने वाला — *इन्द्रियजित*
इंद्रियों पर किया जानेवाला वश — *इंद्रियाविग्रह*
जो इंद्रियों के ज्ञान के बाहर है — *इंद्रियातीत*
अपनी इच्छा के अनुसार काम करनेवाला — *इच्छाचारी*
किसी चीज या बात की इच्छा रखनेवाला — *इच्छुक*
किन्हीं घटनाओं का कालक्रम से किया गया वृत — *इतिवृत*
इतिहास को जानने वाला — *इतिहासज्ञ*
दूसरों की उन्नति को न देख सकना — *ईर्ष्या*
पूरब और उत्तर के बीच की दिशा — *ईशान*
जिसकी ईप्सा *(इच्छा)* की गई हो — *ईप्सित*
किसी नई चीज का बनाना — *ईजाद, आविष्कार*

(उ, ऊ)

खाने से बचा हुआ जूठा भोजन — *उच्छिष्ट*
जो छाती के बल चलता हो — *उदग (सर्प)*
जिसकी उपमा दी जाय — *उपमेय*
जिससे उपमा दी जाय — *उपमान*
जिसका मन उदार हो — *उदारमना*
जिसका मन महान हो — *महामना*
जिसका हृदय उदार हो — *उदारहृदय*
ऊपर कहा हुआ — *उपर्युक्त*
जिसका उल्लेख किया गया हो — *उल्लिखित*
जो धरती फोड़ कर जनमता है — *उद्भिज*
जो उद्धार करता है — *उद्धारक*
जो किसी नियम को न माने — *उच्छृंखल*
किसी के बाद उसकी संपत्ति प्राप्त करने वाला — *उत्तराधिकारी*
जिसने ऋण चुका दिया हो — *उऋण*
ऊपर आने वाला श्वास — *उच्छवास*
जिस पर किसी काम का उत्तरदायित्व हो — *उत्तरदायी*
वह वस्तु जिसका उत्पादन हुआ हो — *उत्पाद*
सूर्य जिस पर्वत के पीछे निकलता है — *उदयाचल*
जिस पर उपकार किया गया हो — *उपकृत*
पर्वत के पास की भूमि — *उपत्यका*
सूर्योदय से पहले का समय — *उषाकाल*
जिसके विषय में उल्लेख करना आवश्यक हो — *उल्लेखनीय*
जिसने अपना ऋण चुका दिया हो — *उऋण*
जो भूमि उपजाऊ हो — *उर्वरा*
जिस भूमि में कुछ पैदा न होता हो — *ऊसर*
ऊपर की ओर जानेवाला — *ऊर्ध्वगामी*
वह व्यक्ति जो हाथ उठाए हो — *उर्ध्वबाहु*
ऊपर की ओर बढ़ती हुई साँस — *उर्ध्वश्वास*

(ए, ऐ)

जिसका चित्त एक जगह स्थिर हो — *एकाग्रचित*
जिस पर किसी अन्य को कुछ अधिकार न हो — *एकाधिकार*
जो दिन में एक बार भोजन करता है — *एकाहारी*
इस लोक से सम्बन्धित — *ऐहिक*
इन्द्रजाल करने वाला — *ऐन्द्रजालिक*
जिसका संबंध किसी एक देश से हो — *एकदेशीय*
किसी एक पक्ष से संबंधित — *एकपक्षीय*
इंद्रियों से संबंधित — *ऐंद्रिक*
इस लोक से संबंध रखनेवाला — *ऐहलौकिक*
इतिहास से संबंधित — *ऐतिहासिक*
जो अपनी इच्छा पर निर्भर हो — *ऐच्छिक*

(ओ, औ)

परब्रह्म का सूचक 'ओं' शब्द — *ओंकार*
जिसका उच्चारण ओष्ठ *(ओंठ)*से हो — *ओष्ठय*
आड़ या परदे के लिये रथ या पालकी को ढकनेवाला कपड़ा — *ओहार*
सारे संसार के देशों की खेल प्रतियोगितायें — *ओलम्पिक*
अपनी विवाहित पत्नी से उत्पन्न *(पुत्र)* — *औरस (पुत्र)*
जिसका संबंध उपनिवेश या उपनिवेशों से हो — *औपनिवेशिक*
उपचार या ऊपरी दिखावे के रूप में होने वाला — *औपचारिक*
जिसका संबंध उपन्यास से हो — *औपन्यासिक*

(क)

जो कान को कटु लगे — कर्णकटु
कष्टों या काँटों से भरा हुआ — कंटकाकीर्ण
अपने कर्तव्य का निर्णय न कर सकने वाला — किंकर्तव्यविमूढ़
जो कटु बोलता है — कटुभाषी
जो कष्ट को सहन कर सके — कष्टसहिष्णु
जो काम से जी चुराता है — कामचोर
किसी के उपकार को न मानने वाला — कृतघ्न
जो कहा गया है — कथित
जो कहने योग्य हो — कथ्य/कथनीय
जो कला जानता हो — कलाविद्/कलाकार
जो अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ हो — कुलीन
बेलों आदि से घिरा हुआ सुरम्य स्थान — कुंज
जो किये गये उपकारों को जानता *(मानता)* हो — कृतज्ञ
जो कर्तव्य से च्युत हो गया है — कर्तव्यच्युत
जिसे वाह्य जगत् का ज्ञान न हो — कुपमण्डूक
किसी की कृपा से पूरी तरह संतुष्ट — कृतार्थ
जिसकी बुद्धि कुश के अग्र *(नोक)* की तरह तेज हो — कुशाग्रबुद्धि
जो पुरुष कविता रचता है — कवि
जो स्त्री कविता रचती है — कवयित्री
जिसके पास करोड़ों रुपये हों — करोड़पति
वह बात जो जनसाधरण में चलती आ रही है — किंवदन्ती
जिस लड़की का विवाह न हुआ हो — कुमारी
जिसे क्रय किया गया हो — क्रीत
वह नायिका जो कृष्ण पक्ष में अपने प्रेमी से मिलने जाती हो — कृष्णाभिसारिका
जो कल्पना से परे हो — कल्पनातीत
कारागार से संबंध रखने वाला — कारागारिक
कार्य करने वाला व्यक्ति — कार्यकर्ता
किन्हीं निश्चित कार्यों के लिए बनायी गयी समिति — कार्यसमिति
पद, उम्र आदि के विचार से औरों से अपेक्षाकृत छोटा — कनिष्ठ
ठीक अपने क्रम से आया हुआ — क्रमागत
नियम विरुद्ध या निन्दनीय कार्य करने वालों की सूची — काली सूची(ब्लैक लिस्ट)
जो केन्द्र की ओर उन्मुख होता हो — केन्द्राभिमुख
क्रम के अनुसार — क्रमानुसार
किसी विचार/निर्णय को कार्यरूप देना — कार्यान्वयन
धन का देवता — कुबेर
कुंती का पुत्र — कौंतेय
राजनीतिज्ञों एवं राजदूतों की कला — कूटनीति
क्षमा पाने योग्य — क्षम्य
क्षण भर में नष्ट होने वाला — क्षणभंगुर
जिसका हाथ बहुत तेज चलता हो — क्षिप्रहस्त
भूख से व्याकुल — क्षुधातुर

(ख)

ऐसा ग्रहण जिसमें सूर्य या चन्द्र का पूरा बिम्ब ढँक जाय — खग्रास
जो सदैव हाथ में खड्ग लिए रहता हो — खड्गहस्त
खाने योग्य पदार्थ — खाद्य
जिसका कोई हिस्सा टूटकर अलग हो गया हो — खंडित
वह नायिका जिसका पति रात को किसी अन्य स्त्री के पास रहकर प्रातः उसके पास आता हो — खंडिता
ऐसा जो अंदर से खाली हो — खोखला
किसी के घर की होनेवाली तलाशी — खानातलाशी

(ग)

प्राचीन आदर्श के अनुकूल चलने वाला — गतानुगतिका
जो बीत चुका हो — गत
जो इंद्रियों के ज्ञान के बाहर है — गोतीत
गणित शास्त्र के जानकार — गणितज्ञ
जो गाँव से सम्बन्धित हो — ग्रामीण
वह नाटक जिसमें गीत अधिक हों — गीतरूपक
पृथ्वी की वह शक्ति जो सभी चीजों की अपनी ओर खीचती हो — गुरुत्वाकर्षण
जो कठिनाइयों से पचता है — गरिष्ठ / गुरुपाक
जो कानून के विरुद्ध है — गैरकानूनी
गंगा का पुत्र — गांगेय
बहुत गप्पे हाँकनेवाला — गपोड़िया
जो गिरि *(पहाड़)* को धारण करता हो — गिरधारी
गृह *(घर)* बसा कर रहने वाला — गृहस्थ
रात और संध्या के बीच का समय — गोधूलि
जो छिपाने योग्य हो — गोपनीय
गगन *(आकाश)* चूमने वाला — गगनचुम्बी

(घ)

घास छीलने वाला — घसियारा
किसी के इर्द-गिर्द घेरा डालने की क्रिया — घेराबन्दी
जिसकी घोषणा की गयी हो — घोषित
बहुत सी घटनाओं का सिलसिला — घटनावली, घटनाक्रम
घूस लेने वाला/रिश्वत लेने वाला — घूसखोर/रिश्वतखोर
घुलने योग्य पदार्थ — घुलनशील
घृणा करने योग्य — घृणास्पद

(च)

महीने के किसी पक्ष की चौथी तिथि — चतुर्थी
बरसात के चार महीने — चतुर्मास
चार वेदों को जानने वाला — चतुर्वेदी
जो चक्र धारण करता है — चक्रधर / चक्रधारी
जिसके चूड़ा पर चन्द्र रहे — चन्द्रचूड़
जो चंद्र धारण करता हो — चंद्रधारी
जिसके शिखर *(सिर)* पर चंद्र हो — चंद्रशेखर
करने की इच्छा — चिकीर्षा
जिसकी चिकित्सा की जा सके — चिकित्स्य
चार राहों वाला — चौराहा
जिसके हाथ में चक्र हो — चक्रपाणि
जिसके चार पैर हों — चतुष्पद
अधिक दिनों तक जीने वाला — चिरजीवी
जो चिरकाल तक बना रहे — चिरस्थायी

चेतन स्वरूप की माया	चिद्विलास
जिसका चिंतन किया जाना चाहिए	चिंतनीय
रोगियों की चिकित्सा करने का स्थान	चिकित्सालय
चूहे फँसाने का पिंजड़ा	चूहेदानी
करुण स्वर में चिल्लाना	चीत्कार
किसी को सावधान करने के लिए कही जाने वाली बात	चेतावनी
चौथे दिन आने वाला ज्वर	चौथिया
चारों ओर की सीमा	चौहद्दी
जिस पर चिह्न लगाया गया हो	चिह्नित
जो चर्चा का विषय हो	चर्चित
किसी वस्तु का चौथा भाग	चतुर्थांश
जो अपने स्थान से डिग गया हो	च्युत
जिसे चार भुजाएँ हैं	चतुर्भुज
(छ)	
छिपे वेश में रहना	छद्मवेश
सेना के रहने का स्थान	छावनी
छात्रों के रहने का स्थान	छात्रावास
सहसा छिपकर आक्रमण करने वाला	छापामार
दूसरों के दोषों को खोजना	छिद्रान्वेषण
दूसरों के दोषों को ढूँढ़ने वाला	छिद्रान्वेषी
किसी काम या व्यक्ति में छिद्र या दोष निकालने का कार्य	छिद्रान्वेषण
कर्मचारियों आदि को छाँटकर निकालने की क्रिया	छँटनी
छः महीने के समय से सम्बन्धित	छमाही
(ज)	
जो जन्म से अंधा हो	जन्मांध
अन्न को पचाने वाली जठर *(पेट)* की अग्नि	जठराग्नि
जो जरायु *(गर्भ की थैली)* से जनमता है	जरायुज
जल में जन्म लेने वाला	जलज
जल में रहने वाले जीव-जन्तु	जलचर
जो यान जल में चलता हो	जलयान
जीने की इच्छा	जिजीविषा
इन्द्रियों को जीतने वाला	जितेन्द्रिय
जान से मारने की इच्छा	जिघांसा
किसी भी बात को जानने की इच्छा	जिज्ञासा
जो जानने को उत्सुक है	जिज्ञासु
जीतने की इच्छा	जिगीषा
जोतने का काम	जुताई
जेठ का पुत्र	जेठौत
जनता द्वारा संचालित शासन	जनतन्त्र
कुछ जानने या ज्ञान प्राप्त करने की चाह	जिज्ञासा
किसी के सम्पूर्ण जीवन के कार्यों का विवरण	जीवनचरित
जन्म से सौ वर्ष का समय	जन्मशती
जिसे जानना चाहिए	ज्ञातव्य
ज्ञान देनेवाला	ज्ञानदा
(झ)	
जिसके लम्बे-लम्बे बिखरे बाल हों	झबरा
झूठ बोलने वाला	झूठा
अपनी झक *(धुन)* में मस्त रहने वाला	झक्की
झमेला करनेवाला	झमेलिया
काँटेदार झाड़ियों का समूह	झाड़झंखाड़
वह कपड़ा जिससे कोई चीज झाड़ी जाय	झाड़न
झीं-झीं की तेज आवाज करने वाला कीड़ा	झींगुर
(ट)	
सिक्के ढालने का कारखाना	टकसाल
मूल बातों को संक्षेप में लिखना	टिप्पणी
टाइप करने की कला	टंकण
लगातार घंटा बजने से होनेवाला शब्द	टनाटन
चारों ओर जल से घिरा हुआ भू-भाग	टापू
किसी ग्रंथ या रचना की टीका करनेवाला	टीकाकार
किराए पर चलनेवाली मोटर गाड़ी	टैक्सी
ठगों का मोदक/लड्डू जिसमें बेहोश करने वाली चीज मिली रहती है	ठगमोदक/ठगलड्डू
(ठ)	
ठकठक करके बर्तन बनानेवाला	ठठेरा
ठठेरे की बिल्ली जो ठक ठक शब्द से न डरे	ठठेरमंजारिका
ठन ठन की अवाज	ठनकार
ठूसकर भरा हुआ	ठसाठस
दिन रात ठाढ़े (खड़े) रहने वाले साधु	ठाढ़ेश्वरी
ठीका लेनेवाला	ठीकेदार
(ड)	
डंडी मारनेवाला	डंडीमार
डाका मारनेवाला	डकैत
डफली बजानेवाला	डफालची/डफाली
स्थल या जल का वह तंग या पतला भाग जो स्थल या जल के दो बड़े खंडों को मिलाता है	डमरूमध्य
बहुत डरनेवाला	डरपोक
पत्रों आदि को दूरस्थ स्थानों पर पहुँचाने वाली सेवा	डाक सेवा
डाका मारने का काम	डकैती
ड्योढी पर रहनेवाला पहरेदार	ड्योढ़ीदार
(ढ)	
ढिंढोरा पिटने वाला	ढिंढोरिया
ढालने का काम	ढलाई
जिसमें ढाल हो	ढालू/ढालवाँ
ढीला होने का भाव	ढिलाई
ढोंग रचनेवाला	ढोंगी
ढोलक बजानेवाला	ढोलकिया
(त)	
उसी समय का	तत्कालीन
जिसे त्याग देना उचित हो	त्याज्य
किसी पद अथवा सेवा से मुक्ति का पत्र	त्यागपत्र

किसी भी पक्ष का समर्थन न करने वाला — *तटस्थ*
ऐसा तर्क जो देखने पर ठीक प्रतीत होता हो, किन्तु वैसा न हो — *तर्काभास*
तीन कालों की बात जानने वाला — *त्रिकालज्ञ*
भौहों के बीच का ऊपरी भाग — *त्रिकुटी*
सत्व, रज व तम — *त्रिगण*
दैहिक, दैविक व भौतिक ताप या कष्ट — *त्रिताप*
वात, पित्त व कफ — *त्रिदोष*
आँवला, हर्र व बहेड़ा — *त्रिफला*
तीन युगों में होने वाला — *त्रियुगी*
तीन नदियों का संगम — *त्रिवेणी*
तीन लोकों का समूह — *त्रिलोक*
स्वर्गलोक, मृत्युलोक और पाताललोक — *त्रिभुवन/त्रिलोक*
शीतल, मन्द व सुगन्धित वायु — *त्रिविधवायु*
जो तर्क योग्य हो — *तार्किक*
तैरने की इच्छा — *तितीर्षा*
ऋण के रूप में आर्थिक सहायता — *तकावी*
एक व्यक्ति द्वारा चलायी जाने वाली शासन प्रणाली — *तानाशाही*
चोरी छिपे चुंगी शुल्क आदि दिये बिना माल लाकर बेचनेवाला — *तस्कर*
जो तर्क के आधार पर सही सिद्ध हो — *तर्कसंगत*
तर्क के द्वारा जो माना गया हो — *तर्कसम्मत*
विवाद या गुटबन्दी से अलग रहने वाला — *तटस्थ/गुटनिरपेक्ष*
कोई काम या पद छोड़ देने के लिये लिखा गया पत्र — *त्यागपत्र*
तीन वेदों को जाननेवाला — *त्रिवेदी*
तीनों कालों को देखने वाला — *त्रिकालदर्शी*
तीन कालों को जानने वाला — *त्रिकालज्ञ*
जो तीन गुणों *(सत्व, रज व तम)* से परे हो — *त्रिगुणातीत*

(थ)

जमी हुई गाढ़ी चीज की मोटी तह — *थक्का*
चौपायों के बाँधने का स्थान — *थान*
कुछ निश्चित लम्बाई का कपड़ा — *थान*
पुलिस की बड़ी चौकी — *थाना*
थाने का प्रधान अधिकारी — *थानेदार*
किसी के पास रखी हुई दूसरे की वस्तु — *थाती/धरोहर/अमानत*

(द)

जिसने किसी विषय में मन लगा लिया हो — *दत्तचित*
एक राजनीतिक दल को छोड़कर दूसरे दल में शामिल होने वाला — *दलबदलू*
पति-पत्नी का जोड़ा — *दम्पती*
कपड़ा सीने का व्यवसाय करने वाला — *दर्जी*
दस वर्षों का समय — *दशक*
जिसके दस आनन *(मुख)* हों — *दशानन*
जो दर्शन-शास्त्र का ज्ञाता हो — *दार्शनिक*
दाव *(जंगल)* में लगने वाली आग — *दावानल*
जो द्वार का पालन *(रक्षा)* करता है — *द्वारपाल*
दिन पर दिन — *दिनोंदिन*
दो बार जन्म लेने वाला — *द्विज*
जिसने गुरु से दीक्षा ली हो — *दीक्षित*
देने की इच्छा — *दित्सा*
अनुचित या बुरा आचरण करने वाला — *दुराचारी*
बहुत दूर की बात पहले से ही सोच लेने वाला — *दूरदर्शी*
जिसे समझना बहुत कठिन हो — *दुष्कर*
जिसका दमन कठिन हो — *दुर्दम्य/दुर्दांत/दुर्धर्ष*
जिसको प्राप्त करना बहुत कठिन हो — *दुर्लभ*
जो मुश्किल से प्राप्त हो — *दुष्प्राप्य*
जिसमें जाना या समझना कठिन हो — *दुर्गम*
जिसको लाँघना कठिन हो — *दुर्लंघ्य*
पति के छोटे भाई की स्त्री — *देवरानी*
दैव या प्रारब्ध सम्बन्धी बातें जानने वाला — *देवज्ञ*
दिन के समय अपने प्रिय से मिलने जाने वाली नायिका — *दिवाभिसारिका*
जो विलंब या टालमटोल से काम करे — *दीर्घसूत्री*
दशरथ का पुत्र — *दाशरथि*
देखने की इच्छा — *दिदृक्षा*
विवाह के पश्चात् वधू का ससुराल में दूसरी बार आना — *द्विरागमन*
गोद लिया हुआ *(पुत्र)* — *दत्तक (पुत्र)*
जो दिया जा सके — *देय*
स्त्री-पुरुष का जोड़ा/पति-पत्नी का जोड़ा — *दम्पती*
दण्ड दिये जाने योग्य — *दण्डनीय*
अपराध और उन पर दण्ड देने के नियम निर्धारित करने वाला प्रश्न — *दण्डसंहिता*
अपने देश से प्यार करने वाला — *देशभक्त*
अपने देश के साथ विश्वासघात करने वाला — *देशद्रोही*
प्रतिदिन होने वाला — *दैनिक*
तेज गति से चलने वाला — *द्रुतगामी/तीव्रगामी*
जिसको रोकना या निवारण करना कठिन हो — *दुर्निवार*
जिसे भेदना या तोड़ना कठिन हो — *दुर्भेद्य*
नापाक इरादे से की जाने वाली मन्त्रणा या साजिश — *दुरभिसन्धि*
जिस समय बड़ी मुश्किल से भिक्षा मिलती है — *दुर्भिक्ष*
जो कठिनइयों से पचता है — *दुष्पाच्य*
अनुचित बात के लिये आग्रह — *दुराग्रह*
जिस पर दिनांक *(तारीख का अंक)* लगाया गया हो — *दिनांकित*
जिसे सताया गया हो — *दलित*
दो भाषायें बोलने वाला — *द्विभाषी*
दो वेदों को जाननेवाला — *द्विवेदी*
आँख की बीमारी — *दृष्टिदोष*
जो देखने योग्य हो — *द्रष्टव्य/दर्शनीय*

(ध)

धन देने वाला — *धनद*
धर्म में रुचि रखने वाला — *धर्मात्मा*
यात्रियों के लिए धर्मार्थ बना हुआ घर — *धर्मशाला*
जिस पर लम्बी-लम्बी धारियाँ हों — *धारीदार*

दा प्रसन्न रहने वाली या कला-प्रेमी नायक — *धीरललित*
क्तिशाली, दयालु और योद्धा नायक — *धीरोदात्त*
हुत चंचल, दुष्ट और अपनी प्रशंसा करने वाला नायक — *धीरोद्धत*
मछली पकड़ने या बेचने वाली जाति विशेष — *धीवर*
हवा में मिली हुई धूल या भाप के कारण होने वाला अँधेरा — *धुन्ध*
जो वस्तु दूसरे के यहाँ रखी हो — *धरोहर*
ध्यान करने योग्य या लक्ष्य — *ध्येय*

(न)

नाक से रक्त बहने का रोग — *नकसीर*
नख से शिखा तक के सब अंग — *नखशिख*
नष्ट होने वाला — *नश्वर*
नभ *(आकाश)* में विचरण करने वाला — *नभचर/खेचर*
नया उदित होने वाला — *नवोदित*
अभी-अभी जन्म लेने वाला — *नवजात*
नदी से सींचा जानेवाला प्रदेश — *नदीमातृक*
नया-नया आया हुआ — *नवागन्तुक*
नगर में जन्म लेने वाला — *नागरिक*
जिसे ईश्वर पर विश्वास न हो — *नास्तिक*
जिसका कोई आकार न हो — *निराकार*
जिसे कोई भय न हो — *निर्भय*
जो एक अक्षर भी न जानता हो — *निरक्षर*
जिसमें कोई दोष न हो — *निर्दोष*
जिसकी उपमा न दी जा सके — *निरुपम*
जिसके हृदय में ममता न हो — *निर्मम*
जिसके हृदय में दया न हो — *निर्दय*
जिसमें हानि या अनर्थ का भय न हो — *निरापद*
जिसके हृदय में पाप न हो — *निष्पाप*
निशि में विचरण करने वाला — *निशाचर*
बिना पलक गिराये हुए — *निर्निमेष*
जो तेजहीन हो — *निस्तेज*
जिसे कोई भ्रम या सन्देह न हो — *निर्भ्रान्त*
एक देश से माल दूसरे देश में जाने की क्रिया — *निर्यात*
जिसका कोई शुल्क न लिया जाय — *निःशुल्क*
किसी के साथ सम्बन्ध न रखने वाला — *निःसंग*
जिसके कोई सन्तान न हो — *निःसंतान*
जिसे कोई आकांक्षा न हो — *निःस्पृह*
जो अपने लाभ या स्वार्थ का ध्यान न रखता हो — *निःस्वार्थ*
जो निन्दा के योग्य हो — *निन्दनीय*
जो कामना रहित हो — *निष्काम*
जो चिन्ता से रहित हो — *निश्चिंत*
जिसका कोई आधार न हो — *निराधार*
जिसका कोई आश्रय न हो — *निराश्रय*
जिसके पास शक्ति न हो — *निर्बल*
जिस पर किसी प्रकार का अंकुश *(नियंत्रण)* न हो — *निरंकुश*
जो उत्तर न दे सके — *निरुत्तर*
जो न्याय जानता है — *नैयायिक*
शासकीय अधिकारियों का शासन — *नौकरशाही*
जो अति *(बहुत)* लघु *(छोटा)* नहीं है — *नातिलघु*
जो अति *(बहुत)* दीर्घ *(बड़ा)* नहीं है — *नातिदीर्घ*
जो नृत्य करता है — *नृत्यकार/नर्तक*
जिसमें तेज नहीं है — *निस्तेज*
जो नीचे लिखा गया है — *निम्नलिखित*
जिसके बारे में मतभेद न हो — *निर्विवाद*
निर्वाचन में अपना मत देने वाला — *निर्वाचक*
उच्च न्यायालय का न्यायाधीश — *न्यायमूर्ति*
नगर में रहनेवाला — *नागरिक*
जिसे देश से निकाला गया हो — *निर्वासित*
जिसका मूल नहीं है — *निर्मूल*
जिसका कोई अर्थ न हो — *निरर्थक*
जो सत्व, रज और तम तीनों गुणों से परे हो — *निर्गुण*
जिसमें मल *(गंदगी)* न हो — *निर्मल*
जिस स्थान पर अभिनेता अपना वेश-विन्यास करते हैं — *नेपथ्य*

(प)

शरीर के एक पार्श्व का लकवा — *पक्षाघात*
अपने पति के प्रति अनन्य अनुराग रखने वाली — *पतिव्रता*
अपने पद से हटाया हुआ — *पदच्युत*
अपने को पंडित माननेवाला — *पंडितम्मन्य*
पंडितों में पंडित — *पंडितरा*
पथ का प्रदर्शन करने वाला — *पथ प्रदर्शक*
जिसमें पाँच कोने हों — *पंचकोण*
जो दृष्टि के क्षेत्र से परे हो — *परोक्ष*
जो परायों का अर्थ *(हित)* चाहता है — *परमार्थी*
जो अपने पथ से भटक गया हो — *पथभ्रष्ट*
वह स्त्री जिसके पति ने त्याग *(छोड़)* दिया हो — *परित्यक्ता*
जो दूसरों का भला चाहने वाला हो — *परार्थी*
पानी में डूबकर चलने वाली नाव — *पनडुब्बी*
जो दूसरों का उपकार करने वाला हो — *परोपकारी*
दूसरों के आश्रय में रहनेवाला — *पराश्रयी*
पन्द्रह दिन में होने वाला — *पाक्षिक*
जो पृथ्वी से सम्बन्धित हो — *पार्थिव*
जिसके आर-पार देखा जा सके — *पारदर्शी*
आटा पीसने वाली स्त्री — *पिसनहारी*
पीने की इच्छा — *पिपासा*
जो पिंड से जनमता है — *पिंडज*
पिता की हत्या करनेवाला — *पितृहंता*
पिता का पिता — *पितामह*
पिता के पिता का पिता — *प्रपितामह*
कही हुई बात को बार-बार कहना — *पिष्टपेषण*
जो उक्ति बार-बार कही जाय — *पुनरुक्ति*
जो किसी का प्रतिनिधित्व *(किसी की जगह काम)* करता है — *प्रतिनिधि*
वह शासन प्रणाली जिसमें जन साधारण का शासन हो — *प्रजातंत्र*
जो शीघ्र किसी बात या युक्ति को सोच ले — *प्रत्युत्पन्नमति*

वह जिससे प्रेम किया जाय — *प्रेमपात्र*
समान रूप से आगे बढ़ने की चेष्टा — *प्रतिस्पर्द्धा*
जिसमें प्रतिभा है — *प्रतिभावान*
जो प्रणाम करने योग्य हो — *प्रणम्य*
जो मुकदमे का प्रतिवाद करे — *प्रतिवादी/मुद्दालेह*
जिसकी बाँहें अधिक लंबी हो — *प्रलंबबाहु*
बच्चा जनने वाली स्त्री — *प्रसूत*
जो पहरा देने वाला हो — *प्रहरी*
उपकार के प्रति किया गया उपकार — *प्रत्युपकार*
किसी आरोप के उत्तर में किया जाने वाला आरोप — *प्रत्यारोप*
लौटकर आया हुआ — *प्रत्यागत*
वह नायिका जिसका पति विदेश जाने को हो — *प्रवत्स्यपतिका*
वह स्त्री जिसका पति प्रोषित *(परदेश गया)* हो — *प्रोषितपतिका*
जो पूछने योग्य हो — *प्रष्टव्य*
प्राण देनेवाली औषधि — *प्राणदा*
पाप या अपराध करने पर दोषमुक्त होने के लिए किया जाने वाला धार्मिक या शुभ कार्य — *प्रायश्चित*
जो देखने में प्रिय हो — *प्रियदर्शी*
जो प्रिय बोलता हो — *प्रियवादी*
प्रिय बोलनेवाली स्त्री — *प्रियंवदा*
जो दूसरे के अधीन हो — *पराधीन*
जो प्रशंसा के योग्य हो — *प्रशंसनीय*
ऐतिहासिक युग के पूर्व का — *प्रागैतिहासिक*
पिता से प्राप्त की हुई *(सम्पत्ति)* — *पैतृक*
आँखों के समक्ष — *प्रत्यक्ष*
जो अपनी मातृभूमि छोड़ विदेश में रहता हो — *प्रवासी*
प्रयोग में लाने योग्य — *प्रयोजनीय*
किसी टूटी-फूटी वस्तु का पुनर्निर्माण — *पुनर्निर्माण*
जो पांचाल देश की हो — *पांचाली*
पर्वत की कन्या — *पार्वती*

(फ)

जो केवल फल खाकर निर्वाह करता हो — *फलाहारी*
जिस स्थान पर बैठकर माल खरीदा और बेचा जाता हो — *फड़*
जुआ खेलने का स्थान — *फड़*
आय से अधिक व्यर्थ खर्च करने वाला — *फिजूलखर्ची*
फलनेवाला या फल *(ठीक परिणाम)* देनेवाला — *फलदायी*
वह पात्र जिसमें शोभा के लिए फूल लगाकर रखे जाते हैं — *फूलदान*
जिस कागज पर मानचित्र, विवरण या कोष्ठक अंकित हो — *फलक*
छत में टाँगने का शीशे का कमल या गिलास, जिसमें मोमबत्तियाँ जलती हों — *फानूस*
घूम-फिरकर सौदा बेचने वाला — *फेरीवाला*

(ब)

किसी देवता पर चढ़ाने के लिए मारा जाने वाला पशु — *बलि*
जल में लगने वाली आग — *बड़वाग्नि*
जो बहुत कुछ जानता हो — *बहुज्ञ*
जिसने बहुत कुछ सुन रखा हो — *बहुश्रुत*
बहुत-सी भाषाओं को बोलने वाला — *बहुभाषाभाषी*
बहुत-सी भाषओं को जानने वाला — *बहुभाषाविद्*
जिसने बहुत कुछ देखा हो — *बहुदर्शी*
बहुत से रूप धारण करने वाला — *बहुरूपिया*
जिस स्त्री के सन्तान पैदा न होती हो — *बाँझ*
छोटे कद का आदमी — *बौना*
भोजन करने की इच्छा — *बुभुक्षा*
जिसकी जीविका बुद्धि के बल पर चलती हो — *बुद्धिजीवी*
जो बुद्धि द्वारा जाना जा सके — *बोधगम्य*
बहुत बोलने वाला — *बहुभाषी*
आधे से अधिक लोगों की सम्मिलित एक राय — *बहुमत*
जिसके पास कोई रोजगार न हो — *बेरोजगार*

(भ)

जिसका हृदय भग्न हो — *भग्नहृदय*
भविष्य में होनेवाला — *भावी*
जो भाग्य का धनी हो — *भाग्यवान्*
दीवार पर बने हुए चित्र — *भित्तिचित्र*
भूतों का ईश्वर — *भूतेश*
जो भू धारण करता है — *भूधर*
जो पृथ्वी के गर्भ *(भीतर)* के हाल/शास्त्र जानता हो — *भूगर्भवेत्ता/भूगर्भशास्त्री*
वह शास्त्र जिसमें पृथ्वी के स्वरूप का वर्णन हो — *भूगोल*
वे बातें जो पुस्तक के आरंभ में लिखी जाय — *भूमिका/प्राक्कथन*
जो पूर्व में था या हुआ पर अभी नहीं है — *भूतपूर्व*
(किसी पद पर) जो पहले रहा हो — *भूतपूर्व*

(म)

जिसकी आत्मा महान हो — *महात्मा*
किसी बात का गूढ़ रहस्य जानने वाला — *मर्मज्ञ*
जो मछली का आहार करता है — *मत्स्याहारी*
जिसकी भुजाएँ बड़ी हों — *महाबाहु*
देवताओं पर चढ़ाने हेतु बनाया गया दही, घी, जल, चीनी, और शहद का मिश्रण — *मधुपर्क*
किसी मत को मानने वाला — *मतानुयायी*
मनन करने योग्य — *मननीय*
जो मान-सम्मान के योग्य हो — *माननीय*
जो मधुर बोलता है — *मधुरभाषी*
मित *(कम)* बोलने वाला — *मितभाषी*
कम खर्च करने वाला — *मितव्ययी*
एक महीने में होने वाला — *मासिक*
माता की हत्या करनेवाला — *मातृहंता/मातृघाती*
मरने की इच्छा — *मुमूर्षा*
मुँह पर निकलने वाली फुंसियाँ — *मुँहासे*
जिसे मोक्ष की कामना हो — *मुमुक्षु*
भेड़ का बच्चा — *मेमना*
जो हाथों से मुक्त है अर्थात् अधिक देने वाला — *मुक्तहस्त*
जो मुकदमा लड़ता है — *मुकदमेबाज*

जिसमें मल *(गंदगी)* हो	*मलिन*
मेघ की तरह नाद करनेवाला	*मेघनाद*
किसी विषय पर दूसरे से मत न मिलना	*मतभेद*
चुनाव में अपना मत देने की क्रिया	*मतदान*
मनपसन्द या नामांकित	*मनोनीत*
वह स्थिति जब मुद्रा का चलन अधिक हो	*मुद्रास्फीति*
जिसने मृत्यु को जीत लिया है	*मृत्युंजय*
मांस आहार या भोजन करनेवाला	*मांसाहारी/मांसभोजी*

(य)

जहाँ तक हो सके	*यथासंभव*
शक्ति के अनुसार	*यथाशक्ति*
यश वाला	*यशस्वी*
क्रम के अनुसार	*यथाक्रम*
जहाँ तक सध सके	*यथासाध्य*
जैसा चाहिए वैसा	*यथोचित*
जो एक स्थान पर टिक कर नहीं रहता	*यायावर*
जो युद्ध में स्थिर रहता है	*युधिष्ठिर*
युद्ध का जहाज	*युद्धपोत*
नए युग या प्रवृत्ति का निर्माण करने वाला	*युगनिर्माता*
नए युग या प्रवृत्ति का प्रवर्तन *(लागू करने)* वाला	*युगप्रवर्तक*
युद्ध की इच्छा रखने वाला	*युयुत्सा*
यथार्थ *(सच)* कहनेवाला	*यथार्थवादी*
जो क्रम के अनुसार हो	*यथाक्रम*
यात्रा करनेवाला	*यात्री*

(र)

रक्त में रँगा हुआ या भरा हुआ	*रक्तरंजित*
जो रंग *(नाट्य)* का मंच *(स्टेज)* है	*रंगमंच*
रात को दिखाई न देनेवाला रोग	*रतौंधी*
जो रथ पर सवार है	*रथी*
जो राज्य या राजा से द्रोह करे	*राजद्रोही*
राष्ट्र का प्रमुख	*राष्ट्रपति*
गोपों को घेरा बाँधकर नाचने की क्रिया	*रास*
वह पूँजी जो सम्पत्ति आदि के रूप में हो	*रिक्थ*
वह काव्य जिसका अभिनय किया जाय	*रूपक*
जिसे देख या सुनकर रोम *(रोंगटे)* खड़े हो जायें	*रोमांचकारी*
राजा या राज्य के प्रति किया जाने वाला विद्रोह	*राजद्रोह*
जो राजनीति जानता है	*राजनीतिज्ञ*
जिसकी सूचना राजपत्र में दी गयी हो	*राजपत्रित*

(ल)

जिसके पास लाख रुपये की सम्पत्ति हो	*लखपति*
जिसका उदर लम्बा *(बड़ा)* हो	*लम्बोदर*
जिसने प्रतिष्ठा प्राप्त की है	*लब्धप्रतिष्ठ*
पाने की इच्छा	*लिप्सा*
जो भूमि का हिसाब-किताब रखता हो	*लेखपाल*
बच्चों को सुलाने के लिए गाया जाने वाला गीत	*लोरी*
वह शासन प्रणाली जो जनता द्वारा जनता के हित के लिए हो	*लोकतंत्र*
आय-व्यय, लेन-देन का लेखा करने वाला	*लेखाकार*
जो आसानी से पचता हो	*लघुपाक*

(व)

जो वर्णन के बाहर हो	*वर्णनातीत*
जो वचन से परे हो	*वचनातीत*
जो पूर्ण रूप से बहरा हो	*वज्रबधिर*
जिसके पाणि *(हाथ)* में वीणा हो	*वीणापाणि*
जिसके हाथ में वज्र हो	*वज्रपाणि*
बाल्यावस्था और युवावस्था के बीच का समय	*वयःसन्धि*
जिस स्त्री के कोई संतान न हुई हो	*बन्ध्या*
जो अधिक बोलता हो	*वाचाल*
जो मुकदमा दायर करता है	*वादी/मुद्दई*
वसुदेव के पुत्र	*वासुदेव*
जिसके भीतर की हवा का तापमान सम स्थिति में रखा गया हो	*वातानुकूलित*
वाडव *(सागर)* का अनल *(आग)*	*वाड्वानल*
जो कोई वस्तु वहन करता है	*वाहक*
बिक्री करनेवाला	*विक्रेता*
जो अपने धर्म के विपरीत आचरण करता हो	*विधर्मी*
जिस स्त्री का धव *(पति)* मर गया हो	*विधवा*
जो विश्व भर का बंधु है	*विश्वबंधु*
जो विषयों में आसक्त है	*विषयासक्त*
जो विषय विचार में आ सकता है	*विचारगम्य*
बोलने की इच्छा	*विवाक्षा*
विश्व का पर्यटन करनेवाला	*विश्वपर्यटक*
प्रतिकूल पक्ष का	*विपक्षी*
जिस पुरुष की स्त्री मर गई हो	*विधुर*
जिसकी पत्नी साथ में न हो	*विपत्नीक*
जिस पर विश्वास न किया जा सके	*विश्वासघाती*
जो विश्वास करने योग्य हो	*विश्वसनीय*
जिस पर विश्वास किया गया है	*विश्वस्त*
जो विश्व का हित चाहता है	*विश्वहितैषी*
विधि *(कानून)* के द्वारा प्राप्त	*विधिप्रदत्त*
बिजली की तरह तीव्र वेग वाला	*विद्युत्वेग*
बिजली की तरह कान्ति *(चमक)* वाला	*विद्युत्प्रभ*
जिसमें किसी प्रकार का विकार हो	*विकृत*
जिसका कोई अंग बेकार हो	*विकलांग*
किसी विषय को विशेष रूप से जाननेवाला	*विशेषज्ञ*
जिसके विषय में विवाद हो	*विवादास्पद*
स्पष्टीकरण के लिए दिया जाने वाला वक्तव्य	*विवृति*
जो व्याकरण का ज्ञाता हो	*वैयाकरण*
जो विज्ञान का ज्ञाता हो	*वैज्ञानिक*
वेतन पर काम करने वाला	*वैतनिक*
जो कानून के अनुसार हो	*वैध*
जो व्याख्या करता हो	*व्याख्याता*
विष्णु का भक्त या विष्णु संबंधी	*वैष्णव*

(श)

सौ वर्ष का समय	शताब्दी
शत्रु का नाश करने वाला	शत्रुघ्न
वह स्थान जहाँ मुर्दे जलाये जाते हैं	श्मशान
सौ में सौ	शतप्रतिशत
शयन *(सोने)* का आगार *(कमरा)*	शयनागार
शरण में आया हुआ	शरणागत
जो शक्ति का उपासक हो	शाक्त
सदैव रहने वाला	शाश्वत
जो अन्न और साग-सब्जी खाता हो	शाकाहारी
जो शास्त्र को जानता हो	शास्त्रज्ञ
सिर पर धारण करने योग्य	शिरोधार्य
जिसके नख सूप के समान हो	शूर्पणखा
जिसके हाथ में शूल हो	शूलपाणि *(शिव)*
जो तेज चलता हो	शीघ्रगामी
जो शिव की उपासना करता हो	शैव
जो सुनने योग्य हो	श्रोतव्य/श्रवणीय
जो सुनने में मधुर हो	श्रुतिमधुर
जो सुनने में कटु लगे	श्रुतिकटु

(ष)

छह कोने वाली आकृति	षट्कोण
छह-छह महीने पर होने वाला	षाण्मासिक
संगीत के छः राग	षट्राग
छः मुँहों वाला	षण्मुख/षडानन
सोलह वर्ष की लड़की	षोडशी

(स)

एक ही जाति का	सजातीय
जहाँ अनेक नदियों का संगम *(मिलन)* हो	संगम
जो संगीत जानता है	संगीतज्ञ
एक ही समय मे उत्पन्न होने वाला	समकालीन
जो सबको एकसमान देखता है	समदर्शी
जिसका आचार अच्छा हो	सदाचारी
सड़ी हुई वस्तु की गन्ध	सड़ाँध
जिसमें सात रंग हो	सतरंगा
अपने परिवार के साथ है जो	सपरिवार
सहन करना जिसका स्वभाव है	सहनशील
जो किसी सभा का सदस्य हो	सभासद
जो सब कुछ जानता हो	सर्वज्ञ
जो सबका प्यारा हो	सर्वप्रिय
जिस स्त्री का पति जीवित हो	सधवा
सबको जीतने वाला	सर्वजित
जो सव्य *(बायें हाथ से हथियार आदि चलाने में)* सधा हुआ हो	सव्यसाची
जो नाटक का सूत्र धारण *(संचालन)* करता है	सूत्रधार
जो दया के साथ *(दयालु)* है	सदय
जो सरलता से बोध्य *(समझने योग्य)* हो	सुबोध
जो आसानी से पचता हो	सुपाच्य
जहाँ मुफ्त में खाना बँटता हो	सदावर्त
सब कुछ खाने वाला	सर्वभक्षी
सत्य के प्रति आग्रह	सत्याग्रह
जो सब जगह व्याप्त हो	सर्वव्यापी
वह पुरुष जिसकी पत्नी साथ है	सपत्नीक
जो सर्वशक्तिसंपन्न है	सर्वशक्तिमान
समान वयवाला	समवयस्क
समान *(एक ही)* उदर से जन्म लेनेवाला	सहोदर
एक ही समय में वर्तमान	समसामयिक
न बहुत शीत *(ठंडा)* न बहुत उष्ण *(गर्म)*	समशीतोष्ण
प्राणों पर संकट लाने वाला	सांघातिक
जिसका कोई आकार हो	साकार
सब लोगों से सम्बन्ध रखने वाला	सार्वजनिक
एक सप्ताह में होने वाला	साप्ताहिक
सरस्वती का भक्त या सरस्वती से संबद्ध	सारस्वत
सब कालों में होनेवाला	सार्वकालिक
सब देशों से सम्बद्ध	सार्वदेशिक
समस्त पृथ्वी से सम्बन्ध रखने वाला	सार्वभौमिक
साहित्य से सम्बन्धित	साहित्यिक
जो अक्षर पढ़ना-लिखना जानता है	साक्षर
सिंह का बच्चा	सिंहशावक
जो आसानी से लब्ध *(प्राप्त)* हो सके	सुलभ
सुन्दर हृदय वाला	सुहृदय
जिनकी ग्रीवा *(गर्दन)* सुन्दर हो	सुग्रीव
स्वेद *(पसीने)* से उत्पन्न होने वाला	स्वेदज
जो स्मरण करने योग्य है	स्मरणीय/स्मर्तव्य
किसी काम में दूसरों से बढ़ने की इच्छा	स्पर्द्धा
जो स्त्री के वशीभूत या उसके स्वभाव का हो	स्त्रैण
जो स्वयं उत्पन्न हुआ हो	स्वयंभू
अपना हित चाहने वाला	स्वार्थी
अपनी इच्छा से दूसरों की सेवा करने वाला	स्वयंसेवक
जो स्वयं ही सिद्ध *(ठीक)* हो	स्वयंसिद्ध
दूसरे के स्थान पर काम करने वाला	स्थानापन्न
एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना	स्थानान्तरण
अपने ही बल पर निर्भर रहने वाला	स्वावलम्बी
स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद का	स्वातन्त्र्योत्तर
कुछ खास शर्तों द्वारा कोई कार्य कराने का समझौता	संविदा
समय से संबंधित	सामयिक
जिसके लोचन *(आँखें)* सुंदर हों	सुलोचन
जिसे सरलता से पढ़ा जा सके	सुपाठ्य
शयन करने की इच्छा	सुषुप्सा

(ह)

हाथ का लिखा हुआ	हस्तलिखित
दूसरे के हाथ में गया हुआ	हस्तान्तरित
हृदय को विदीर्ण करने वाला	हृदयविदारक
मिठाई बनाने और बेचने वाला	हलवाई
हंस के समान सुंदर मंद गति से चलने वाली स्त्री	हंसगामिनी
हिन्द की भाषा	हिन्दी
भलाई की इच्छा रखने वाला	हितैषी
अगहन और पूस में पड़ने वाली ऋतु	हेमन्त
जो दूसरे की हत्या करता है	हत्यारा

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. जो पहले कभी न हुआ हो—
(a) अद्भुत (b) अभूतपूर्व (c) अपूर्व (d) अनुपम

2. जो कहा न जा सके—
(a) अकथनीय (b) अक्षम्य (c) अजर (d) अगम्य

3. समय की दृष्टि से अनुकूल—
(a) अनुकूल (b) समानुकूल
(c) प्रतिकूल (d) समयानुकूल *(रेलवे, 1997)*

4. जो सब कुछ जानता है—
(a) अज्ञ (b) सर्वज्ञ (c) विशेषज्ञ (d) कृताज्ञ
(रेलवे, 1997)

5. जिसकी गर्दन सुन्दर है—
(a) सुदर्शन (b) सुगत (c) सुगर्दन (d) सुग्रीव
(रेलवे, 1997)

6. लौकिक—
(a) पकड़ लिया गया (b) एक समान दिखने वाला
(c) लौकी से बना (d) जो इस लोक की बात हो
(एस० आई० सी०, 1997)

7. पुरुष एव स्त्री का जोड़ा—
(a) पति पत्नी (b) युग्म (c) युगल (d) दम्पती
(ग्राम पचायत परीक्षा, 1998)

8. विधान मण्डल द्वारा पारित या स्वीकृत विधि—
(a) अधिनियम (b) नियम
(c) विनिमय (d) अध्यादेश *(बी० एड०, 1998)*

9. कार्य को नए ढंग से करने की पद्धति—
(a) पारस्परिक (b) नवागतरूप
(c) नवीनीकरण (d) आधुनिकीकरण
(ग्राम पचायत परीक्षा, 1998)

10. निश्चित समय के भीतर पत्र का उत्तर न प्राप्त होने की दशा में अनुबोधक के रूप में भेजा जानेवाला पत्र—
(a) प्रतिवेदन (b) ज्ञापन
(c) परिपत्र (d) अनुस्मारक *(बी० एड०, 1998)*

11. जिसने देश के साथ विश्वासघात किया हो—
(a) बागी (b) विश्वासघाती
(c) देशद्रोही (d) विद्रोही
(ग्राम पचायत परीक्षा, 1998)

12. जंगल में लगने वाली आग—
(a) जठरानल (b) दावानल
(c) बड़वानल (d) कामानल *(बी० एड०, 1998)*

13. वह स्त्री जिसकी कोई संतान न हो—
(a) कुलटा (b) बाँझ (c) अप्रसूता (d) विधवा
(ग्राम पचायत परीक्षा, 1998)

14. रसास्वादन
(a) किसी रस से भरा होना
(b) किसी विषय में मस्त रहना
(c) किसी रस का उपभोग करना
(d) किसी बात में रुचि लेना *(रेलवे, 1998)*

15. वर्णनातीत
(a) अतीत का वर्णन (b) अच्छा वर्णन
(c) छिपा वर्णन (d) वर्णन से परे *(रेलवे, 1998)*

16. पत्र या प्रश्नादि के उत्तर की अपेक्षा करने वाला
(a) उत्तरीय (b) उत्तरायणी
(c) उत्तराधिकारी (d) उत्तरापेक्षी
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

17. जिसके समान दूसरा न हो
(a) अलौकिक (b) स्वर्गिक (c) अप्रतिम (d) अप्रतिम
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

18. जहाँ पहुँचा न जा सके
(a) दुर्गम (b) अधिगम (c) अगम (d) सुगम
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

19. जो बहुत बातें करता हो
(a) बधिर (b) बहुज्ञ (c) वचनीय (d) बहुभाषी
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

20. अतिवृष्टि
(a) अत्यधिक विचार करना (b) अत्यधिक वर्षा होना
(c) अत्यधिक सूखा पड़ना (d) अत्यधिक संतुष्ट होना
(रेलवे, 1999)

21. अनुमति
(a) किसी कार्य की आज्ञा देना
(b) किसी कार्य के लिए निर्देश देना
(c) किसी कार्य के लिए आदेश देना
(d) किसी कार्य के लिए सहमति देना *(रेलवे, 1999)*

22. अन्योन्याश्रित
(a) किसी पर आश्रित होना
(b) किसी पर आश्रित न होना
(c) एक दूसरे पर आश्रित होना
(d) किसी को आश्रित बना देना *(रेलवे, 1999)*

23. वह सायंकालीन बेला जब पशु वन से चरकर लौटते हैं
(a) गोधूलि (b) सूर्यास्त (c) साय बेला (d) अपराह्न
(बी० एड०, 2000)

24. जो दूसरों के सहारे जीवित रहे
(a) परावलम्बी (b) पराश्रित (c) परोपजीवी (d) पराधीन
(बी० एड०, 2000)

25. किसी के प्रति उदारता एवं कृपापूर्वक किया जानेवाला व्यवहार
(a) विग्रह (b) निग्रह (c) अवग्रह (d) अनुग्रह
(अनुवादक परीक्षा, 2000)

26. दो पर्वतों के बीच की भूमि
(a) उपत्यका (b) घाटी (c) द्रोण (d) बेसिन
(बी० एड०, 2000)

27. जिसे पार करना कठिन हो
(a) निगम (b) आगम (c) दुर्गम (d) अगम्य
(अनुवादक परीक्षा, 2000)

28. जो शत्रु की हत्या करता है
(a) शत्रुघ्न (b) नश्वर (c) जन्मांध (d) निर्दय
(असिस्टेंट परीक्षा, 2000)

29. जिसके आर-पार देखा जा सके
(a) दूरदर्शी (b) सूक्ष्मदर्शी (c) पारदर्शी (d) अतलदर्शी
(बी०एड०, 2000)

30. हर काम को देर से करने वाला
(a) दीर्घदर्शी (b) अदूरदर्शी (c) विलम्बी (d) दीर्घसूत्री
(अनुवादक परीक्षा, 2000)

31. अनुशासनात्मक कार्यवाही की प्रक्रिया के फलस्वरूप पद से नीचे उतरना
(a) प्रोन्नति (b) पदोन्नति (c) पदावधि (d) पदावनति
(अनुवादक परीक्षा, 2001)

32. आयु में बड़ा व्यक्ति
(a) कनिष्ठ (b) वरिष्ठ (c) ज्येष्ठ (d) पूजनीय
(सब इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

33. वह वस्तु जो नाशवान हो
(a) नश्वर (b) शाश्वत (c) अमर (d) अलौकिक
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

34. वह स्त्री जिसे पति ने त्याग दिया है
(a) कुलटा (b) परकीया (c) परित्यक्ता (d) बाँझ
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

35. साहित्य से संबंध रखने वाला
(a) साहित्यिक (b) लेखक
(c) कवि (d) नाटककार
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

36. जो सरलतापूर्वक प्राप्त किया जा सके
(a) सरल (b) सुलभ (c) सुन्दर (d) सुप्राप्य
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

37. जिसका भोजन दूध ही होता है
(a) शाकाहारी (b) द्रव्याहारी (c) दुग्धाहारी (d) मांसाहारी
(पी० सी० एस०, 2001)

38. बिना घर का
(a) अनाथ (b) अनाहत (c) अनिकेत (d) अनिग्रह
(रेलवे, 2001)

39. हमेशा रहने वाला
(a) शाश्वत (b) समसामयिक
(c) प्राणदा (d) पार्थिव *(रेलवे, 2001)*

40. अगोचर
(a) जिसका अनुभव शरीर को न हो
(b) जिसका अनुभव हृदय को न हो
(c) जिसका अनुभव इन्द्रियों को न हो
(d) जिसका अनुभव बुद्धि को न हो *(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)*

41. युयुत्सु
(a) दूसरों को हँसाने वाला
(b) युद्ध करने का इच्छुक
(c) लड़ाई में शहीद हो जाने वाला
(d) सदा अमर रहने वाला *(उ०प्र०निर्वाचन आयोग परीक्षा, 2001)*

42. प्रत्युत्पन्नमति
(a) उत्तर न देने की क्षमता
(b) जो तत्काल उत्तर दे सके
(c) जो फिर से उत्पन्न हुआ हो
(d) जिसकी बुद्धि में नई-नई बात उत्पन्न होती हो
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

43. अंकेक्षक
(a) आय-व्यय के आँकड़ों की जाँच करने वाला
(b) अंगरक्षकों का कर्म निर्धारित करने वाला
(c) अंकों के साथ खेलने वाला
(d) गणना करने वाला *(उ०प्र०निर्वाचन आयोग परीक्षा, 2001)*

44. जिजीविषा
(a) जीवन से मुक्ति की इच्छा
(b) जीवन की इच्छा
(c) जीविका कमाने की इच्छा
(d) किसी चीज को पाने की तीव्र उत्कंठा
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

45. पार्थिव
(a) जिसका सम्बन्ध मनुष्यों से हो
(b) जिसका सम्बन्ध पृथ्वी से हो
(c) जिसका सम्बन्ध ईश्वर से हो
(d) जिसका सम्बन्ध प्रथा से हो *(रेलवे, 2001)*

46. यायावर
(a) जिसके जीवन का कोई निश्चित उद्देश्य न हो
(b) किसी भी वस्तु को अकस्मात् प्रस्तुत करने वाला
(c) एक स्थान पर टिककर न रहने वाला
(d) इधर-उधर निरुद्देश्य घूमने वाला *(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)*

47. पृष्टव्य
(a) पूछने योग्य (b) बीता हुआ
(c) जिससे प्रश्न पूछा जा सके (d) पीछे देने योग्य
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

निर्देश (48-56) : *रेखांकित वाक्यांश के लिए एक शब्द का चयन कीजिए—*

48. रवि ईश्वर को न मानने वाला मनुष्य है।
(a) सनाथ (b) पंडित
(c) आस्तिक (d) नास्तिक
(लेखाकार परीक्षा, 2001)

49. ईश्वर का कोई आकार नहीं होता है।
(a) सरोकार (b) साकार
(c) निराकार (d) इनमें से कोई नहीं
(लेखाकार परीक्षा, 2001)

50. आँखों के सामने घटित घटना पर विश्वास तो करना ही पड़ेगा।
(a) प्रत्यक्ष (b) परोक्ष (c) प्रारूपतः (d) प्रत्येक
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

51. भारतीयों की बुरी दशा देखकर गांधीजी का मन द्रवित हो गया।
(a) दुर्व्यवहार (b) दीनता (c) दुर्दशा (d) दुर्दिन
(लेखाकार परीक्षा, 2001)

52. दोपहर के समय शालू आराम कर रही थी।
(a) पूर्वाह्न (b) मध्याह्न (c) कालिग्रह (d) अपराह्न
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

53. वैभव को उस विद्यालय में इम्तिहान लेने वाला बनकर जाना है।
(a) विशेषज्ञ (b) परीक्षक (c) अध्यापक (d) समन्वयक
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

54. ममता कम बोलती है।
(a) समभाषी (b) मृतभाषी (c) मितभाषी (d) मृदुभाषी
(लेखाकार परीक्षा, 2001)

55. विवेक ने श्रेष्ठ कुल में जन्म लिया है।
(a) कुलीन (b) समकालीन
(c) कुलश्रेष्ठ (d) कुलभूषण
(पी०सी०एस०, 2001)

56. अनुपम बहुत ध्यान से पुस्तक पढ़ रहा था।
(a) सरलता (b) धैर्य (c) तन्मयता (d) धीरज
(लेखाकार परीक्षा, 2001)

57. जो ममत्व से रहित हो
(a) निरामय (b) निर्मोही (c) निर्मम (d) निष्ठुर
(बी० पी० एस० सी, 2002)

58. जो किसी का हित चाहता हो
(a) हितकारी (b) अहितकारी (c) हितैषी (d) हितभाषी
(बी० पी० एस० सी, 2002)

59. जानने की इच्छा रखने वाला
(a) विज्ञ (b) जिज्ञासु (c) ज्ञानी (d) ऋषि
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

60. पलकों को गिराए बगैर
(a) अपलक (b) उन्मीलित (c) निमीलित (d) निर्निमेष
(बी० पी० एस० सी, 2002)

61. जो सदा दूसरों पर संदेह करता है
(a) झगड़ालू (b) दयालु (c) ईर्ष्यालु (d) शंकालु
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

62. किसी विषय की पूरी छान-बीन करना
(a) विवेचन (b) विश्लेषण (c) मीमांसा (d) समीक्षा
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

63. अन्तेवासी
(a) अन्य स्थान पर रहनेवाला
(b) अन्त तक रहने वाला
(c) गुरु के समीप रहने वाला शिष्य
(d) किसी विद्या को अन्त तक पढ़ने वाला
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

64. मोक्ष की इच्छा करने वाला
(a) जिज्ञासु (b) योगी (c) आस्तिक (d) मुमुक्षु
(रेलवे, 2002, बी० एड०, 2008)

65. जिसके पास कुछ न हो
(a) अकिंचन (b) निर्धन (c) नंगा (d) दरिद्र
(रेलवे, 2002)

66. क्षेपक
(a) दूसरों को क्षमा कर देने वाला
(b) शत्रु पर घातक वार करने वाला
(c) किसी ग्रन्थ में अन्य व्यक्ति द्वारा जोड़ा गया भाग
(d) किसी व्यक्ति द्वारा छोड़े गए शेष कार्य को पूरा करनेवाला
(रेलवे, 2003)

67. थोड़ा जानने वाला
(a) अल्पज्ञ (b) बहुज्ञ (c) मूर्ख (d) अज्ञ
(रेलवे, 2003)

68. जिस तर्क का कोई जवाब न हो
(a) जोरदार (b) तीखा (c) सटीक (d) अकाट्य
(बी० एड०, 2004)

69. जिसे बुलाया न गया हो
(a) अनाहूत (b) अनबोला (c) अतिथि (d) अभ्यागत
(बी० एड०, 2004)

70. स्त्री जो अभिनय करती हो
(a) नर्तकी (b) नटी (c) अभिनेत्री (d) नायिका
(बी० एड०, 2004)

71. आशा से बहुत अधिक
(a) आशातीत (b) आशावान
(c) अप्रत्याशित (d) प्रत्याशित *(बी० एड०, 2004)*

72. जिसकी आशा न की गई हो
(a) निराशा (b) अचानक
(c) अप्रत्याशित (d) गलत *(रेलवे, 2004)*

73. जो आँखों के सामने न हो
(a) प्रत्यक्ष (b) अप्रत्यक्ष
(c) दूरस्थ (d) परोक्ष *(रेलवे, 2004)*

74. जो किए गए उपकारों को मानता है
(a) कृतज्ञ (b) कृपापात्र
(c) उपकारी (d) सुपात्र *(रेलवे, 2004)*

75. जिस स्त्री का पति जीवित हो
(a) कामिनी (b) सुभगा
(c) सधवा (d) मधवा *(बी० एड०, 2005)*

76. फेंककर चलाया जाने वाला हथियार
(a) अस्त्र (b) शस्त्र
(c) भाला (d) गुलेल *(बी० एड०, 2005)*

77. जिसका इन्द्रियों से अनुमान न हो सके
(a) जितेन्द्रिय (b) अतीन्द्रिय
(c) कालजयी (d) सर्वजयी *(बी० एड०, 2005)*

78. ऐसा रोग जिसका उपचार संभव न हो
(a) अरोगी (b) अतिरोगी (c) विरोगी (d) असाध्य
(बी० एड०, 2005)

79. किसी बात को करने का निश्चय
(a) विकल्प (b) संकल्प (c) कल्प (d) अत्यल्प
(अनुवादक परीक्षा, 2005)

80. जो कानून के अनुकूल न हो
(a) अवैध (b) जघन्य (c) अवध्य (d) आवेग
(अनुवादक परीक्षा, 2005)

81. वह स्त्री जिसका पति परदेश से आने वाला हो
(a) आगतपतिका (b) प्रोषितपतिका
(c) प्रव्रत्स्यपतिका (d) आगमिस्यतपतिका
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

82. जो पूजा के योग्य हो.
(a) पूज्यनीय (b) पूज्य (c) पुज्यनीय (d) पुजनीय
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

83. जिसका कोई शत्रु पैदा ही नहीं हुआ हो
(a) आजानुबाहु (b) अजातशत्रु
(c) अज्ञातशत्रु (d) अजातपूर्व

84. जल/समुद्र में लगने वाली आग
(a) दावानल (b) जठराग्नि
(c) जल प्रपात (d) बड़वाग्नि

85. पेट की आग
(a) दावानल (b) जठराग्नि (c) बड़वाग्नि (d) बड़वानल

86. विशिष्ट अवसर पर विशिष्ट लोगों के समक्ष दिया गया विद्वतापूर्ण भाषण
(a) सम्भाषण (b) अभिभाषण
(c) अपभाषण (d) अनुभाषण

87. किसी साहित्यिक कृति की समालोचना करने वाला
(a) प्रेक्षक (b) समीक्षक (c) उपेक्षक (d) परीक्षक

88. किसी के पास रखी दूसरे की वस्तु
(a) परवर्ती (b) बपौती (c) थाती (d) वर्तिका

89. 'जिसका जन्म न हो' एक शब्द बताएँ—
(a) अजन्मा (b) अजर (c) अनादि (d) स्वयंभू
(हरियाणा बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2007)

90. वह भाई जो अन्य माता से उत्पन्न हुआ हो—
(a) सहोदर (b) औरस (c) अन्योदर (d) दूरस्थ
(मध्य प्रदेश प्री बी. एड. परीक्षा, 2007)

91. जिसके बराबर का कोई न हो—
(a) विलक्षण (b) अनुपम
(c) असाधारण (d) लोकातीत
(मध्य प्रदेश प्री बी.एड.परीक्षा, 2007)

92. गोद में सोनेवाले स्त्री—
(a) अंकशायिनी (b) अनीन्द्रिय
(c) सिदित (d) कोई नहीं
(मध्य प्रदेश प्री बी.एड.परीक्षा, 2007)

93. जो ईश्वर में विश्वास रखता हो—
(a) मेधावी (b) अविनीत (c) नास्तिक (d) आस्तिक
(मध्य प्रदेश प्री बी.एड.परीक्षा, 2007)

94. कष्ट से सम्पन्न होने वाला—
(a) कष्टकारी (b) कष्टप्रद
(c) कष्टसाध्य (d) कोई नहीं
(मध्य प्रदेश प्री बी.एड.परीक्षा, 2007)

95. किसी संस्था के 25 वर्ष पूरे होने पर होने वाले उत्सव के लिए शब्द है—
(a) हीरक जयंती (b) रजत जयंती
(c) शताब्दी (d) स्वर्ण जयंती
(उत्तर प्रदेश बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

96. जो व्यर्थ की बातें करता हो—
(a) बहुभाषी (b) कुवक्ता (c) वाचाल (d) वाकपटु
(उत्तर प्रदेश बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

97. जो देखने में प्रिय लगता हो—
(a) समदर्शी (b) प्रियदर्शी (c) प्रियपात्र (d) दर्शनप्रिय
(उत्तर प्रदेश बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

98. अहसान न मानने वाला—
(a) कृतज्ञ (b) कृतघ्न
(c) विश्वासघाती (d) परोपजीवी
(उत्तर प्रदेश बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

99. जिसे कठिनाई से जीता जा सके—
(a) विजित (b) अज्ञेय (c) अजेय (d) दुर्जेय
(उत्तर प्रदेश बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

100. बचपन और जवानी के बीच की अवस्था—
(a) नवयुवा (b) नवोढ़ा (c) वयः संधि (d) वयस्कता
(उत्तर प्रदेश बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

101. अभिज्ञ—
(a) न जाननेवाला (b) जाननेवाला
(c) कम जाननेवाला (d) इनमें से कोई नहीं
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

102. निर्गुण—
(a) जो सत्व, रज व तम तीनों गुणों से परे हो
(b) जो सत्व, रज व तम तीनों गुणों से युक्त हो
(c) जिसमें मल न हो
(d) जिसका कोई मूल न हो
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

103. जो गणना योग्य न हो—
(a) गण्य (b) नगण्य (c) असंख्य (d) अधिगण्य
(राजस्थान बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

104. 'दूर की सोचने वाला' के लिए एक शब्द है—
(a) दूरगामी (b) दूरदर्शी
(c) भविष्यवक्ता (d) सूक्ष्म दृष्टा
(राजस्थान बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

105. 'वीर पुत्र को जन्म देने वाली स्त्री' के लिए एक शब्द है—
(a) वसुन्धरा (b) माता (c) जननी (d) वीरप्रसू
(राजस्थान बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

106. अज्ञेय शब्द के लिए एक वाक्यांश है—
(a) जिसे देखा न जा सके (b) जिसे सुना न जा सके
(c) जिसे जाना न जा सके (d) जिसे रोका न जा सके
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

उत्तरमाला

1. (b)	2. (a)	3. (d)	4. (b)	5. (d)	6. (d)	7. (d)	8. (a)	9. (c)	10. (d)	11. (c)	12. (b)
13. (b)	14. (c)	15. (d)	16. (d)	17. (d)	18. (c)	19. (d)	20. (b)	21. (d)	22. (c)	23. (a)	24. (c)
25. (d)	26. (a)	27. (c)	28. (a)	29. (c)	30. (d)	31. (d)	32. (c)	33. (a)	34. (c)	35. (a)	36. (b)
37. (c)	38. (c)	39. (a)	40. (c)	41. (b)	42. (b)	43. (a)	44. (b)	45. (b)	46. (c)	47. (a)	48. (d)
49. (c)	50. (a)	51. (c)	52. (b)	53. (b)	54. (c)	55. (a)	56. (c)	57. (c)	58. (c)	59. (b)	60. (d)
61. (d)	62. (a)	63. (c)	64. (d)	65. (a)	66. (c)	67. (a)	68. (d)	69. (a)	70. (c)	71. (a)	72. (c)
73. (d)	74. (a)	75. (c)	76. (a)	77. (b)	78. (d)	79. (b)	80. (a)	81. (d)	82. (b)	83. (b)	84. (d)
85. (b)	86. (b)	87. (b)	88. (c)	89. (a)	90. (c)	91. (b)	92. (a)	93. (d)	94. (c)	95. (b)	96. (c)
97. (b)	98. (b)	99. (d)	100. (c)	101. (b)	102. (a)	103. (c)	104. (b)	105. (d)	106. (c)		

★★★

रिक्त स्थानों की पूर्ति
(Fill in the Blanks)

12

रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिए आवश्यक है कि परीक्षार्थियों को शब्दों की सही पहचान हो। शब्दों की सही पहचान होने पर ही परीक्षार्थी गण वाक्य में दिए गए रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिए उपयुक्त शब्द चुन सकते हैं। शब्दों की सही पहचान के लिए परीक्षार्थियों को एकार्थी, अनेकार्थी, समानार्थी/पर्यायवाची, विपरीतार्थी/ विलोम, श्रुतिसम भिन्नार्थक आदि शब्दों का समुचित ज्ञान होना चाहिए। शब्दों से पहचान बढ़ाने का सर्वोत्तम तरीका है कि स्तरीय रचनाकारों की रचनाएं पढ़ें तथा वाक्य की बुनावट एवं शब्दों के प्रयोग को समझने की कोशिश करें।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

I. वाक्य में रिक्त स्थान की पूर्ति

1. सत्य और अहिंसा का ..... सम्बन्ध है।
(a) भीषण (b) विकट (c) घनिष्ठ (d) निकट

2. मानसरोवर तक पहुँचना .....है ।
(a) निर्गम (b) दुर्गम (c) दुर्लभ (d) दुष्कर्म

3. साम्प्रदायिकता की आग देश में ..... हुई है।
(a) समाई (b) पनपी (c) भड़की (d) लगी

4. भारत की .....की रक्षा करना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है।
(a) अन्विता (b) सुस्मिता (c) अस्मिता (d) विस्मिता

5. ताजमहल ..... का अद्‌भुत नमूना है।
(a) शिल्पकला (b) मूर्तिकला
(c) चित्रकला (d) स्थापत्यकला
(पी० सी० एस०, 1997)

6. उदयशंकर भट्ट हिन्दी साहित्य के प्रमुख ..... हैं।
(a) कहानीकार (b) निबंधकार
(c) उपन्यासकार (d) नाटककार
(पी० सी० एस०, 1997)

7. युद्ध-प्रधान एवं राष्ट्र-चेतनापरक कविताओं में ..... की प्रधानता होती है।
(a) ओज गुण (b) रजोगुण (c) तमोगुण (d) सतोगुण
(असिस्टेंट ग्रेड, 1997)

8. मैया मोहि..... बहुत खिजायो ।
(a) आधा (b) दाऊ (c) सुदामा (d) सखा
(पी० सी० एस०, 1997)

9. रवीन्द्रनाथ टैगोर का नाम सांस्कृतिक एवं ..... जगत में सदा अविस्मरणीय रहेगा ।
(a) दर्शन (b) संगीत (c) साहित्यिक (d) चित्रकला
(रेलवे, 1997)

10. मनुष्य मृत्यु को असुन्दर ही नहीं ..... भी मानता है।
(a) अनिवार्य (b) सुन्दर (c) त्याज्य (d) अपवित्र
(लेखाकार परीक्षा, 1997)

11. अनथक परिश्रम और सतत .....से व्यक्ति सफलता की चरम सीमा को पा लेता है।
(a) व्यवसाय (b) अध्यवसाय
(c) समवाय (d) संकाय *(असिस्टेंट ग्रेड, 1997)*

12. केवल पुस्तकीय ज्ञान छात्रों की मौलिक प्रतिभा का ..... नहीं कर सकता।
(a) अमर्ष (b) उन्मेष (c) पीयूष (d) प्रत्यूष
(असिस्टेंट ग्रेड, 1997)

13. देवानन्द की काम के प्रति लगन और निष्ठा..... है।
(a) दयनीय (b) अनुकरणीय
(c) शोभनीय (d) हास्यास्पद *(रेलवे, 1997)*

14. जो लोग समय का ख्याल नहीं रखते उनकी..... की जाती है।
(a) तारीफ (b) शिकायत (c) प्रशंसा (d) निन्दा
(लेखाकार परीक्षा, 1997)

15. कमल का ..... सौन्दर्य भँवरे को ही आकर्षित कर सकता है, भैंसे को नहीं।
(a) सौम्य (b) रम्य (c) सौरभ (d) सुकुमार
(असिस्टेंट ग्रेड, 1997)

16. विज्ञान ने ऐश्वर्य के साधन सुलभ करा दिए हैं, परन्तु संवेदनशीलता दिन-प्रतिदिन ..... होती जा रही है।
(a) दुर्गम (b) दुर्लभ (c) विलम्ब (d) अलभ्य
(रेलवे, 1997)

17. राष्ट्र की ..... के लिए शहीदों ने अपना बलिदान दिया।
(a) दान (b) शान (c) आन (d) बान
(पी० सी० एस०, 1997)

18. गुरु गोविन्द दोऊ खड़े..... लागूँ पाँव।
(a) काके (b) वाके (c) ताके (d) सबके
(लेखाकार परीक्षा, 1997)

19. परछिद्रान्वेषण एक प्रमुख ..... है।
(a) गुण (b) सगुण (c) निर्गुण (d) दुर्गुण
(ग्राम पंचायत परीक्षा, 1998)

20. यह..... सदियों से चली आ रही है।
(a) समाटी (b) परिपाटी (c) उपपाटी (d) धरपाटी
(ग्राम पंचायत परीक्षा, 1998)

21. विश्व में ..... की ही प्रधानता है।
(a) ज्ञान (b) धर्म (c) कर्म (d) वाणी
(ग्राम पंचायत परीक्षा, 1998)

22. अगर अभाव न हो तो.....कौन पूछे ?
(a) विचार (b) भाव (c) बात (d) मोल
(ग्राम पंचायत परीक्षा, 1998)

23. प्रेमचन्द ने अपने..... उपन्यासकारों को बहुत दूर तक प्रभावित किया है।
(a) पूर्ववर्ती (b) परवर्ती (c) परिवर्ती (d) अग्रवर्ती
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

24. ..... की तलाश मे भटकती हुई महिला जैसे नियति के चक्रव्यूह में फँस गई है ।
(a) सुस्मिता (b) अस्मिता (c) विस्मिता (d) स्मिता
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

25. वैज्ञानिकों ने अब जीवों में .....गुणों का समावेश करने की क्षमता प्राप्त कर ली है।
(a) आनुपातिक (b) आनुश्राविक
(c) आनुषंगिक (d) आनुवंशिक
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

26. रामायण और महाभारत का समय ····· हो गया, पर ये ग्रंथ अभी तक नए हैं।
(a) अतीत (b) अभिभूति (c) अविनीत (d) कालातीत
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

27. इस घटना में किसी····· उपद्रव के बीज निहित हैं।
(a) भावी (b) वर्तमान (c) अचानक (d) विगत
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

28. उन्हें संस्कृत और अंग्रेजी ग्रंथों के कई····· याद हैं।
(a) उदाहरण (b) अनुवाद (c) उद्धरण (d) लक्षण
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

29. पिता ने पुत्र के प्रणाम का उत्तर····· में दिया।
(a) अभिवादन (b) अवनीश (c) बख्शीश (d) स्नेहाशीष
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

30. देव-प्रतिमाओं की जीवन्तता एवं कलात्मक····· देखकर सभी विमुग्ध रह गए।
(a) धनश्री (b) इतिश्री (c) जयश्री (d) शुभश्री
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

31. अपने जीवन के उद्देश्य की पूर्ति के लिए तुम्हें ····· परिश्रम करना पड़ेगा।
(a) अथाह (b) अक्षुण्ण (c) अथक (d) अपार
(बी० एड०, 1999)

32. इस पुस्तक में आचार्य नरेन्द्र देव के बहु ····· व्यक्तित्व को कलात्मक ढंग से चित्रित किया गया है।
(a) अनुगामी (b) विकल्पित (c) आयामी (d) आगामी
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

33. बन्धु-बांधवों ने शोकसंतप्त नारी को समझाया और कुछ देर बाद वह ····· हो गई।
(a) विन्यस्त (b) व्यस्त (c) प्रकृतिस्थ (d) अस्वस्थ
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

34. दैनिक जीवन में जो व्यक्ति ····· को स्थान देता है उसकी कलात्मक रुचि का विकास होता है।
(a) शील (b) सौन्दर्य (c) स्वार्थ (d) शक्ति
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

35. मुगलों की सेनाओं में नर्तकियाँ रणक्षेत्र को भी विलास-भूमि में ····· कर देती थी।
(a) परित्यक्त (b) परिगणित (c) परिणीत (d) परिणत
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

36. अपनी प्रतिभा और परिश्रम से ही कोई व्यक्ति प्रगति के ····· पर पहुँच सकता है।
(a) शिरीष (b) शिशिर (c) शिविर (d) शिखर
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

37. सभी धर्मों में ····· प्रवणता को महत्व दिया गया है।
(a) आचार (b) विचार (c) सत्कार (d) व्यवहार
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

38. ज्यों-ज्यों व्यक्ति के अनुभवों में विस्तार होता है, उसके समक्ष नए-नए ····· खुलते हैं।
(a) क्षितिज (b) अन्तरिक्ष (c) आवरण (d) ध्वान्त
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

39. मानव हृदय का जगत ····· जगत जैसा नहीं है।
(a) प्रत्यक्ष (b) परोक्ष (c) अनुभूत (d) अदृश्य
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

40. कर्फ्यू लगने से सारे शहर में ····· सन्नाटा छा गया।
(a) निस्तब्ध (b) शाश्वत (c) प्रकम्पित (d) भयावह
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

41. राजेश की बातों से ····· होकर संदीप ने उसे मारने के लिए तलवार खींच ली।
(a) पीड़ित (b) उत्साहित (c) आन्दोलित (d) उत्तेजित
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

42. सरकारी कर्मचारियों को चाहिए कि वे उचित ····· से आवेदन करें।
(a) विचार (b) अधिकारी (c) प्रकार (d) माध्यम
(बी० एड०, 1999)

43. महात्मा बुद्ध ने लोगों को अहिंसा का ····· दिया।
(a) पाठ (b) संदेश (c) शिक्षा (d) उपदेश
(रेलवे, 2000)

44. दिशाहीनता गंतव्य स्थान तक पहुँचने में ····· होती है।
(a) साधक (b) बाधक (c) घातक (d) सहायक
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

45. इस·····परिस्थिति में आपकी सहायता करना कठिन है।
(a) तीक्ष्ण (b) कठिन (c) गंभीर (d) विषम
(रेलवे, 2000)

46. साहित्यकार की रचना करने की इच्छा ····· कहलाती है।
(a) सर्जना (b) मुमूर्षा (c) मुमुक्षा (d) सिसृक्षा
(अनुवादक परीक्षा, 2000)

47. भारत के ग्राम्यांचल में बड़ी संख्या में बच्चे बंधुआ मजदूर के रूप में ····· हैं।
(a) तन्मय (b) उन्मत्त (c) कटिबद्ध (d) कार्यरत
(अनुवादक परीक्षा, 2000)

48. गुलामी की प्रथा से ····· होकर साहित्यकारों ने अनेक मर्मस्पर्शी कहानियाँ लिखी हैं।
(a) व्यथित (b) उत्क्षिप्त (c) उत्थित (d) आह्लादित
(अनुवादक परीक्षा, 2000)

49. लाखा डाकू को ····· कराने में जनता ने सहयोग दिया।
(a) कारादंड (b) कारावास (c) गिरफ्तार (d) कैद
(रेलवे, 2000)

50. मंच पर अनेक·····विद्वानों को देखकर दर्शकों ने प्रसन्नता प्रकट की।
(a) विख्यात (b) कुख्यात (c) अज्ञात (d) अभिजात
(अनुवादक परीक्षा, 2000)

51. पूजागृह एक ····· जलने मात्र से चमचमा उठता था।
(a) कनीनिका (b) कन्दर्प (c) चंदोवा (d) कंदील
(अनुवादक परीक्षा, 2000)

52. तुलसी जैसे····· महाकवि विरले ही होते हैं।
(a) अविजेय (b) अजेय (c) कालजयी (d) दिग्विजयी
(अनुवादक परीक्षा, 2000)

53. रानी युद्ध ····· वीरतापूर्वक लड़ी।
(a) में (b) से (c) बीच (d) को
(रेलवे, 2000)

54. मुझे इस कार्यालय ····· सभी जानकारियाँ अतिशीघ्र चाहिए।
(a) द्वारा (b) में (c) की (d) सम्बन्धी
(रेलवे, 2001)

55. कलाकार की कलाकृति में जनता की आकांक्षाओं का ····· होना चाहिए।
(a) प्रतिवेदन (b) प्रतिफलन (c) दर्पण (d) प्रतिपालन
(रेलवे, 2001)

56. आपसे सादर ····· है कि आप हमारे यहाँ मुख्य अतिथि बनकर पधारें।
(a) अनुरोध (b) अनुग्रह (c) अभिलाषा (d) विनय
(रेलवे, 2001)

57. सभ्यता की दौड़ में संवेदनशीलता जैसे मनोवेगों का साथ ····· छूट जाता है।
(a) स्वतः (b) सर्वथा (c) ही (d) आप
(रेलवे, 2001)

58. योग साधना में ····· और शाकाहार का विशेष महत्व है।
(a) अल्पाहार (b) फलाहार (c) मिताहार (d) आहार
(रेलवे, 2001)

59. अगली पंचवर्षीय योजना का ..... तैयार किया जा रहा है।
(a) रूप (b) प्रारूप (c) कार्यक्रम (d) रूपरेखा
(पी० सी० एस०, 2001)

60. विदूषक को देखकर दर्शकों ने.....किया।
(a) परिहास (b) हास (c) अतिहास (d) अट्टहास
(रेलवे, 2001)

61. प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों द्वारा साहित्य में.....पैदा कर दी।
(a) कान्ति (b) क्रान्ति (c) तरणी (d) भुक्ता
(पी० सी० एस०, 2001)

62. अतिशय .....के क्षणों में आँसू अनायास टपक पड़ते हैं।
(a) रहस्य (b) हर्ष (c) उत्कर्ष (d) संघर्ष
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

63. यदि हमें आगे बढ़ना है, तो उसके लिए.....तो करने ही पड़ेंगे।
(a) प्रयास (b) चक्कर (c) कार्य (d) अनुभव
(रेलवे, 2000)

64. बन्दूक एक उपयोगी ..... है।
(a) औजार (b) अस्त्र (c) शस्त्र (d) रक्षक
(पी० सी० एस०, 2001)

65. मोहन ने..... से देशभक्ति का संकल्प किया।
(a) उत्सुकता (b) तत्परता (c) प्रयत्न (d) दृढ़ता
(रेलवे, 2001)

66. वृद्ध भिखारी दो रोटी खाकर ..... हो गया।
(a) तप (b) तप्त (c) तृप्त (d) तृण
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

67. रवि सदा मदन के प्रति ..... रहेगा।
(a) कृपा (b) कृतज्ञ (c) उपकृत (d) कर्मठ
(रेलवे, 2001)

68. सरकार द्वारा नियुक्त जाँच समिति ने अपना ....., जो व्यक्तियों के साक्ष्य और विस्तृत प्रश्नावली पर आधारित सर्वेक्षण है, आज प्रस्तुत कर दिया है।
(a) प्रतिवेदन (b) अंकेक्षण (c) परिवाद (d) आकलन
(बैंक परीक्षा, 2002)

69. कैसी..... है कि निर्धन और धनी, निर्बल और सबल, युवक और वृद्ध सभी वर्तमान से असंतुष्ट हैं।
(a) दुविधा (b) विपत्ति (c) वेदना (d) विडम्बना
(बैंक परीक्षा, 2002)

70. माननीय न्यायाधीश ने वाद को खारिज करते हुए वादी को कोई ..... नहीं प्रदान किया।
(a) सहायता (b) पारितोषिक
(c) आश्वासन (d) अनुतोष *(बैंक परीक्षा, 2002)*

71. पुरातनवादी पिता के इस फैसले ने आधनिक पुत्र को ..... में डाल दिया है।
(a) रहस्य (b) क्रोध (c) उत्सुकता (d) असमंजस
(बैंक परीक्षा, 2002)

72. बहुत अनुनय-विनय के .....भी उसके माता-पिता ने उससे कोई संबंध नहीं रखा।
(a) सहारे (b) उपरान्त (c) बलबूते (d) कारण
(बैंक परीक्षा, 2002)

73. आपका आचरण दूसरों के लिए..... हो सकता है।
(a) दृष्टान्त (b) उदाहरण (c) उद्धरण (d) अनुकरण
(बैंक परीक्षा, 2002)

74. लम्बे समय से लम्बित पड़े मुकदमों को .....के लिए न्यायपालिका को विशेष प्रयत्न करना चाहिए।
(a) निपटाने (b) निभाने (c) पूरा करने (d) सुलझाने
(बैंक परीक्षा, 2002)

75. उन्होंने अपना यज्ञ ..... सम्पन्न किया।
(a) यथाशक्ति (b) यथासंभव (c) यथाविधि (d) यथास्थान
(रेलवे, 2002)

76. वह मुझे अपने बड़े भाई .....मानता है।
(a) योग्य (b) भाँति (c) तरह (d) जैसा
(बैंक परीक्षा, 2002)

77. सहकारी संस्था शीघ्र ही सदस्यता ..... प्रारंभ कर रही है।
(a) कार्यक्रम (b) उपक्रम (c) आंदोलन (d) भर्ती
(बैंक परीक्षा, 2002)

78. उसने.....अपना पक्ष सिद्ध किया।
(a) बुद्धिपूर्वक (b) बलपूर्वक
(c) विधिपूर्वक (d) दृढ़तापूर्वक *(रेलवे, 2002)*

79. जैसे-जैसे अंधेरा.....हमें आगे बढ़ने में कठिनाई होने लगी।
(a) निकलता गया (b) चढ़ता गया
(c) फैलता गया (d) आता गया
(बैंक परीक्षा, 2002)

80. अतः नम्र ..... है कि मुझे एक सप्ताह का अवकाश प्रदान किया जाए ।
(a) निवेदन (b) आवेदन (c) आग्रह (d) विनय
(बैंक परीक्षा, 2002)

81. आणविक भट्ठियाँ असीमित शक्ति का ..... है।
(a) साधन (b) स्रोत (c) उपकरण (d) माध्यम
(बैंक परीक्षा, 2002)

82. सब पुस्तकें..... बिखरी पड़ी थीं।
(a) तत्रेव (b) सर्वत्र (c) यत्र-तत्र (d) अन्यत्र
(रेलवे, 2002)

83. बड़े उद्देश्यों में सफलता..... हमें छोटे स्वार्थों को छोड़ना पड़ता है।
(a) हेतु (b) कारण (c) लिए (d) खातिर
(बैंक परीक्षा, 2002)

84. उसने आगन्तुकों की समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुना और भली प्रकार से उनका ..... किया।
(a) समर्थन (b) अन्वेषण (c) समाधान (d) विश्लेषण
(बैंक परीक्षा, 2002)

85. कहते हैं कि उत्पादन में वृद्धि के फलस्वरूप वस्तुओं की कीमतों में ..... आती है।
(a) कमी (b) अवरोहण (c) बढ़ोतरी (d) शिथिलता
(बैंक परीक्षा, 2002)

86. विधि का यही ..... है कि जो जन्मा है उसकी मृत्यु अवश्य होगी।
(a) अध्यादेश (b) विधान (c) प्रावधान (d) अनुदेश
(बैंक परीक्षा, 2002)

87. श्रीकृष्ण के अनेक गुणों का ..... कवि ने अपनी इस कविता में किया है।
(a) ध्यान (b) वर्णन (c) मनन (d) चिन्तन
(बैंक परीक्षा, 2002)

88. स्वयंसेवकों ने ..... व्रत रखा।
(a) आपात (b) आमरण (c) आजीवन (d) आजन्म
(रेलवे, 2002)

89. मुझे आपके कहने के ..... चलने में कोई आपत्ति नहीं है।
(a) अनुसार (b) हेतु (c) समान (d) परे
(बैंक परीक्षा, 2002)

90. वस्तुतः ..... मनुष्य वही है जो मानवता का आदर करता है।
(a) यथार्थ (b) चरित्रवान (c) सम्पूर्ण (d) सच्चा
(बैंक परीक्षा, 2002)

91. धैर्यवान व्यक्ति विपत्ति में भी·····नहीं होता है ।
(a) अधीर (b) दुःखी (c) चलायमान (d) विचलित
(रेलवे, 2002)

92. अतिथि ने भोजन करने की·····व्यक्त की ।
(a) आकांक्षा (b) इच्छा (c) उत्कंठा (d) कामना
(बैंक परीक्षा, 2002)

93. संविधान में हिन्दी को ····· कहा गया है।
(a) आर्यभाषा (b) सम्पर्क भाषा
(c) राष्ट्र भाषा (d) राजभाषा *(रेलवे, 2003)*

94. न्यायालय ने अपराधी की मुक्ति का·····दिया।
(a) निर्देश (b) निदेश (c) आदेश (d) निर्णय
(बी० एड०, 2004)

95. ·····पूर्ण व्यवहार भारतीय समाज की सबसे बड़ी समस्या है।
(a) अनुशासन (b) व्यवस्था
(c) प्रशासन (d) परम्परापूर्ण *(बी० एड०, 2004)*

96. तुम मेरा अपमान मत करो, मुझे स्वयं अपने कर्मों पर·····हो रहा है ।
(a) परितोष (b) प्रताप (c) परिपाक (d) परिताप
(रेलवे, 2004)

97. मैंने इस कार्य के लिए अधिकारियों से ····· स्वीकृति प्राप्त कर ली है, ताकि हमें बाद में कोई अड़चन न हो।
(a) निहित (b) वांछित (c) वास्तविक (d) स्पष्ट
(रेलवे, 2004)

98. वर्तमान ·····में भी महात्मा गाँधी के विचारों का महत्व कम नहीं होता।
(a) सन्दर्भ (b) क्षेत्र
(c) घटनाओं (d) कार्यकलापों *(रेलवे, 2004)*

99. राम ने अपने पुत्र के नाम बैंक में दस वर्ष के लिए·····जमा खाता खुलवाया है।
(a) अनुवर्ती (b) आवर्ती (c) समवर्ती (d) प्रत्यावर्ती
(रेलवे, 2004)

100. कोई व्यक्ति किसी का मार्गदर्शन कैसे कर सकता है, जब वह स्वयं ही मार्ग से ·····है।
(a) अज्ञात (b) अभिज्ञ (c) अनभिज्ञ (d) अवगत
(रेलवे, 2004)

101. हम मन में जैसा भाव रखते हैं उनका गुप्त प्रभाव हमारे मुखमंडल में ····· हुआ करता है ।
(a) प्रकाशित (b) विकसित (c) उल्लसित (d) परिमित
(अनुवादक परीक्षा, 2005)

102. किसी रचना के शिल्प का महत्व उसके····· से किसी प्रकार गौण नहीं होता ।
(a) तथ्य (b) कथ्य (c) उत्पाद्य (d) विवेच्य
(अनुवादक परीक्षा, 2005)

103. समाज के जाति और धर्म के खेमों में बँटने से राष्ट्रीय प्रगति पर गंभीर ····· लग गए हैं।
(a) प्रश्न चिह्न (b) पद चिह्न
(c) लिपि चिह्न (d) विराम चिह्न
(अनुवादक परीक्षा, 2005)

104. देवदत्त के बाण से····· पक्षी को उठाकर सिद्धार्थ उसकी सेवा-शुश्रुषा करने लगे।
(a) हत (b) आहत (c) निहत (d) हताहत
(अनुवादक परीक्षा, 2005)

105. रसायनों ने मिट्टी की····· को नष्ट कर दिया है।
(a) उपलब्धता (b) उत्पादकता (c) पवित्रता (d) गरिमा
(अनुवादक परीक्षा, 2005)

106. प्रधानमंत्री के स्वागत के लिए·····के दोनों ओर खड़े छात्र अपने हाथ में पुष्पमालाएं लिए थे।
(a) वीथि (b) वीचि (c) वापी (d) विधा
(अनुवादक परीक्षा, 2005)

107. ·····व्यक्ति को किंकर्तव्यविमूढ़ बना देती है।
(a) दुविधा (b) सुविधा (c) विविधा (d) अभिधा
(अनुवादक परीक्षा, 2005)

108. देशभक्ति के लिए विदेशी शासक के अन्याय का कोई भी रूप ····· था।
(a) असह्य (b) दुःखद (c) त्याज्य (d) सह्य
(अनुवादक परीक्षा, 2005)

109. व्यंग्य लेखक सामाजिक·····पर तीखा प्रहार करता है।
(a) अनुरूपता (b) अभिरामता (c) संगति (d) विद्रूपता

110. स्वभाव से देवतुल्य मनुष्य जमाने के छल-प्रपंच के····· होकर अपना देवत्व खो बैठता है।
(a) अनुभूत (b) पराभूत (c) वशीभूत (d) आविर्भूत

111. देशवासियों में परस्पर·····होना देश की उन्नति के लिए अनिवार्य शर्त है।
(a) सहयोग (b) सहानुभूति (c) सद्भाव (d) सम्बन्ध

112. रामचरितमानस के ·····महात्मा तुलसीदास के समान व्यक्तित्व वाला मध्य युग में अन्य कोई पुरुष नहीं हुआ।
(a) अनुवादक (b) व्याख्याता (c) रचयिता (d) लेखक

113. एक-न-एक दिन परिश्रम का फल जरूर मिलता है, इस बात में कोई ·····नहीं है।
(a) भ्रम (b) दुविधा (c) असत्य (d) संदेह

114. रिक्त स्थान भरिए—
''यदि चादर के बाहर ····· पसारोगे तो पछताओगे''
(a) हाथ (b) बाजु (c) टाँग (d) पैर
(हरियाणा बी० एड०, 2008)

115. रिक्त स्थान की पूर्ति सही विकल्प से कीजिए—
''चमड़ी जाए पर ····· न जाए''
(a) इज्जत (b) पैसा (c) पगड़ी (d) दमड़ी
(उत्तर प्रदेश बी० एड०, 2008)

उत्तरमाला

1. (c)	2. (b)	3. (d)	4. (c)	5. (d)	6. (d)	7. (a)	8. (b)	9. (c)	10. (d)	11. (b)	12. (b)			
13. (b)	14. (d)	15. (c)	16. (b)	17. (c)	18. (a)	19. (d)	20. (b)	21. (c)	22. (d)	23. (b)	24. (a)			
25. (d)	26. (d)	27. (a)	28. (c)	29. (d)	30. (d)	31. (c)	32. (c)	33. (c)	34. (b)	35. (d)	36. (d)			
37. (d)	38. (a)	39. (a)	40. (d)	41. (d)	42. (d)	43. (d)	44. (b)	45. (d)	46. (a)	47. (d)	48. (a)			
49. (c)	50. (a)	51. (d)	52. (c)	53. (a)	54. (d)	55. (b)	56. (a)	57. (a)	58. (b)	59. (b)	60. (d)			
61. (b)	62. (b)	63. (a)	64. (c)	65. (d)	66. (c)	67. (b)	68. (a)	69. (d)	70. (d)	71. (d)	72. (b)			
73. (b)	74. (a)	75. (c)	76. (d)	77. (a)	78. (c)	79. (c)	80. (a)	81. (b)	82. (c)	83. (a)	84. (c)			
85. (a)	86. (b)	87. (b)	88. (c)	89. (a)	90. (d)	91. (d)	92. (b)	93. (d)	94. (c)	95. (a)	96. (d)			
97. (b)	98. (a)	99. (b)	100. (c)	101. (a)	102. (b)	103. (a)	104. (b)	105. (b)	106. (a)	107. (a)	108. (a)			
109. (d)	110. (c)	111. (c)	112. (c)	113. (d)	114. (d)	115. (d)								

★★★

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

II. अनुच्छेद में रिक्त स्थानों की पूर्ति

गद्यांश–1

भारत माता की कोख में जो अमूल्य ...(1)...भरी हैं जिनके कारण वह ...(2)... कहलाती है उससे कौन परिचित न होना चाहेगा ? लाखों करोड़ों वर्षों से अनेक प्रकार की धातुओं को पृथ्वी के गर्भ में पोषण मिला है। दिन-रात बहने वाली नदियों ने पहाड़ों को पीस-पीस कर अगणित प्रकार की मिट्टियों से पृथ्वी की देह को सजाया है। हमारे...(3)... आर्थिक ...(4)... के लिए उन सबकी जाँच-पड़ताल अत्यन्त आवश्यक है। पृथ्वी की गोद में जन्म लेने वाले खड़े पत्थर कुशल ...(5)...से सँवारे जाने पर अत्यन्त ...(6)...का प्रतीक बन जाते हैं। नाना भाँति के ... (7)...नग विंध्य की नदियों के प्रवाह में सूर्य की धूप से चिलकते रहते हैं, उन चीलवटों को जब ...(8)...कारीगर पहलदार कटाव पर लाते हैं तब उनके प्रत्येक घाट से नई शोभा और सुन्दरता फूट पड़ती है, वे ... (9)...हो जाते हैं। देश के नर-नारियों के रूप-मण्डन और सौन्दर्य-प्रसाधन में इन छोटे पत्थरों का भी सदा से कितना भाग रहा है; अतएव हमें उनका ...(10)...होना भी आवश्यक है।

1. (a) वृत्तियाँ (b) मूर्तियाँ (c) कृतियाँ (d) निधियाँ
2. (a) श्वेताम्बरा (b) नीलाम्बरा (c) वसुन्धरा (d) कन्दरा
3. (a) भूतकालिक (b) तात्कालिक (c) भावी (d) वर्तमानकालिक
4. (a) निर्माण (b) उत्साह (c) पतन (d) उत्थान
5. (a) शिक्षितों (b) युवकों (c) शिल्पियों (d) प्रशिक्षितों
6. (a) सौन्दर्य (b) गौरव (c) समृद्धि (d) विशालता
7. (a) विशाल (b) आकर्षित (c) अनगढ़ (d) भौतिक
8. (a) पुष्ट (b) चुस्त (c) दुरुस्त (d) चतुर
9. (a) चिकने (b) पतले (c) अनमोल (d) विशाल
10. (a) भाव (b) बोध (c) ज्ञान (d) अभिज्ञान

उत्तरमाला

1. (d) 2. (c) 3. (c) 4. (a) 5. (c) 6. (c)
7. (c) 8. (d) 9. (c) 10. (c)

गद्यांश–2

यदि विचार-सामग्री निबन्ध की आत्मा है तो भाषा-शैली निबन्ध का शरीर है। एक अच्छे निबन्ध में ...(1)...स्पष्ट तथा सुबोध भाषा का ...(2)...करना चाहिए। एक ...(3)...निबन्ध की भाषा का सबसे बड़ा गुण यही है कि वह इतनी ...(4)...हो कि पाठक का मन ...(5)... ही अपनी ओर आकर्षित कर ले। भाषा को सशक्त बनाने के लिए ...(6)...मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग किया जा सकता है। लक्षणा तथा ...(7)...नामक शब्द शक्तियों तथा विभिन्न अलंकारों के द्वारा भी भाषा में ...(8)...का समावेश किया जा सकता है। लेकिन ... (9)...में अलंकारों, मुहावरों , लोकोक्तियों आदि की ...(10)...भी नहीं होनी चाहिए । ऐसा करने से निबन्ध में अस्वाभाविकता का समावेश हो जाता है और उसका सारा लालित्य नष्ट हो जाता है।

(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 1995)

1. (a) क्लिष्ट (b) कृत्रिम (c) शुद्ध (d) परिमार्जित
2. (a) आयोग (b) प्रयोग (c) उपयोग (d) योग
3. (a) श्रेष्ठ (b) वरिष्ठ (c) गरिष्ठ (d) विशिष्ट
4. (a) अशक्त (b) सशक्त (c) निकृष्ट (d) आसक्त
5. (a) सायास (b) अभ्यास (c) अनायास (d) विपर्यास
6. (a) यथाशक्ति (b) यथास्थान (c) यथावत् (d) यथापूर्व
7. (a) व्यंजना (b) अभिव्यंजना (c) रंजना (d) अतिरंजना
8. (a) औदार्य (b) व्यवहार्य (c) सौजन्य (d) सौन्दर्य
9. (a) प्रबन्ध (b) निबन्ध (c) पदबन्ध (d) अनुबन्ध
10. (a) अतिशयता (b) प्रगाढ़ता (c) सघनता (d) प्रबलता

उत्तरमाला

1. (d) 2. (b) 3. (a) 4. (b) 5. (c) 6. (b)
7. (a) 8. (d) 9. (b) 10. (a)

गद्यांश–3

भाषा-भेद किसी न किसी रूप और मात्रा में सब समय रहता है। मध्यकाल में जब क्षेत्रीय बोलियाँ अपने-अपने विकास-पथ पर बड़ी तीव्र गति से अग्रसर हो रही थीं, वैसा टकराव-बिखराव न था। भाषायी विवाद और समस्या को जन्म देकर उकसाने-उभारने का सारा श्रेय ब्रिटिश शासन और उसके ...(1)...को है। यह विरासत हमें उन्हीं की ...(2)...के दुष्परिणामस्वरूप मिली है। इससे ...(3)...पाने के लिए सूझ-बूझ और ...(4)...की आवश्यकता है। परन्तु कभी-कभी ऐसा नहीं हो पाता और ...(5)...स्वार्थ के कारण दृष्टि-पथ...(6)...पड़ जाता है तथा मनुष्य पथभ्रष्ट ही नहीं, लक्ष्य...(7)...भी हो जाता है। परिणाम यह होता है कि...(8)... स्वार्थ वालों की बन जाती है और उनकी ... (9)... फलवती दिखाई देने लगती है। दाँव-पेंच से ...(10)...व्यक्तियों के निर्विकार चित्त में भी विकार घर बना लेता है, जिसे दूर करने को लिए असीम धैर्य, समय तथा सक्रियता की अपेक्षा होती है। एक बार एकता-सूत्र के उलझ जाने पर अभिन्नता का बोध कराना कठिन तथा दुरूह बन जाता है।

(असिस्टेंट ग्रेड, 1997)

1. (a) नियामकों (b) अवधारकों (c) अवयवों (d) समर्थकों
2. (a) प्रत्याशा (b) कूटनीति (c) कृतघ्नता (d) कटूक्तियों
3. (a) विरक्ति (b) वियुक्ति (c) त्रास (d) त्राण
4. (a) सद्भावना (b) कूटनीति (c) चिन्तन (d) चातुर्य
5. (a) विकुंचित (b) संकुचित (c) अपरोक्ष (d) प्रच्छन्न
6. (a) विस्तीर्ण (b) संकीर्ण (c) धूमित (d) धूमिल

7. (a) विरत (b) रत
(c) विरक्त (d) आसक्त

8. (a) व्यक्तिगत (b) निजी
(c) निहित (d) विहित

9. (a) प्राप्त्याशा (b) विपाशा
(c) अभिलाषा (d) दुराशा

10. (a) अनभिज्ञ (b) अभिज्ञ
(c) अज्ञ (d) विज्ञ

उत्तरमाला

1. (d) 2. (b) 3. (d) 4. (a) 5. (b) 6. (b)
7. (a) 8. (c) 9. (d) 10. (a)

गद्यांश–4

मैं यह विश्वास ज़रूर रखता हूँ कि ...(1)... सिर्फ बुज़दिली और हिंसा में से ...(2)... करना हो, तो मैं हिंसा को चुनने की ...(3)...दूँगा। मैं यह पसन्द करूँगा कि हिन्दुस्तान अपनी इज्जत ...(4)...के लिए हथियारों की मदद ले, बनिस्पत इसके कि वह कायरों की तरह खुद अपनी बेइज्जती का असहाय शिकार हो जाए या बना रहे, लेकिन मेरा ...(5)...है कि हिंसा से अहिंसा कहीं ऊँची है। सज़ा की बजाय माफी देना कहीं ...(6)...बहादुरी का काम है। 'क्षमा वीरस्य भूषणम्', क्षमा से वीर की ...(7)...बढ़ती है, लेकिन सज़ा न देना उसी हालत में ... (8)...होती है, जब देने की ताकत हो। किसी असहाय जीव का यह कहना कि मैंने अपने से...(9)... को क्षमा किया कोई अर्थ नहीं रखता। जब एक चूहा बिल्ली को अपने शरीर को टुकड़े-टुकड़े करने देता है तब वह बिल्ली को क्षमा नहीं करता, लेकिन मैं यह नहीं समझता कि हिन्दुस्तान ...(10)...है। न मैं यह समझता हूँ कि मैं बिल्कुल असहाय हूँ।

(रेलवे, 1998)

1. (a) अगर (b) मगर
(c) जिधर (d) जहाँ

2. (a) रुकाव (b) चुनाव
(c) अलगाव (d) तनाव

3. (a) सलाह (b) सहयोग
(c) मदद (d) सहकार

(a) बढ़ाने (b) बनाने
(c) बचाने (d) मनाने

5. (a) विश्वास (b) उच्छवास
(c) निःश्वास (d) आश्वासन

6. (a) अल्प (b) ज्यादा
(c) कम (d) थोड़ा

7. (a) मर्यादा (b) शोभा
(c) सौन्दर्य (d) सुन्दरता

8. (a) क्षमा (b) याचना
(c) रचना (d) जाँचना

9. (a) दयावान (b) जवान
(c) महान (d) बलवान

10. (a) साहसी (b) बहादुर
(c) कायर (d) चतुर

उत्तरमाला

1. (a) 2. (b) 3. (a) 4. (c) 5. (a) 6. (b)
7. (b) 8. (a) 9. (d) 10. (c)

गद्यांश–5

जीवन में सफलता और विफलता मन के कारण मिलती है। मन की दृढ़ संकल्प शक्ति निरन्तर कार्य में जुटाए रखती है। इससे ...(1)... सफलता मिल जाती है। मन की ...(2)...जब कार्य करने के दौरान ही ...(3)...को निर्बल बना देती है, उसमें ...(4)... का सचार कर देती है, तो ...(5)... में असफलता ही हाथ लगती है। ...(6)... मन और तन से हम कार्य में ...(7)... होते हैं। ऐसी स्थिति में मन ...(8)... हो गया, तो बुद्धि और तन ...(9)...हो जाते हैं। इसके विपरीत कभी ...(10)... कार्य करते हुए व्यक्ति का तन शिथिल हो जाता है, बुद्धि भी हार मान जाती है और धन जैसे अन्य साधन भी बाधा बन जाते हैं, तब मन की संकल्प शक्ति तन में ताकत जगा देती है, बुद्धि को प्रखर बना देती है और अन्य साधनों का अभाव भी कार्य में आड़े नहीं आता। कार्य क्षेत्र में विजय प्राप्त हो जाती है। *(अनुवादक परीक्षा, 1999)*

1. (a) वेहूदा (b) अनेकदा
(c) एकदा (d) वहुधा

2. (a) निष्प्राणता (b) दुर्बलता
(c) अबोधता (d) दुर्गमता

3. (a) समष्टि (b) शक्ति
(c) व्यक्ति (d) बुद्धि

4. (a) निराशा (b) दुराशा
(c) आशा (d) अभिलाषा

5. (a) सप्रमाण (b) परिमाण
(c) प्रमाण (d) परिणाम

6. (a) कुमति (b) बुद्धि
(c) सुमति (d) सुधि

7. (a) रत (b) विरत
(c) अनुरक्त (d) प्रेरित

8. (a) संचालित (b) विचलित
(c) सन्तप्त (d) अभिशप्त

9. (a) पभार (b) साभार
(c) आवारा (d) नकारा

10. (a) साहसिक (b) कभार
(c) अविरत (d) अनाक

उत्तरमाला

1. (d) 2. (b) 3. (c) 4. (a) 5. (d) 6. (b)
7. (a) 8. (b) 9. (d) 10. (d)

गद्यांश–6

मनुष्य स्वभावतः एकाकीपन पसन्द नहीं करता। परिवार, अथवा समाज में रहते हुए भी हमें एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता अनुभव होती है, जिससे हम हृदय की बात निस्संकोच रूप से कह सकें। पारिवारिक मर्यादाओं के कारण पारिवारिक सदस्यों के सम्मुख हम अपने ...(1)... वास्तविक रूप में नहीं रख पाते। परन्तु हृदय तो ... (2)... के लिए सदा आकुल रहता है। हमारा अन्तःकरण जिससे ... (3)... नहीं रखता, जिसके सम्मुख खुल सकता है, वही हमारा ...(4)... है। ऐसे मित्र प्रयत्नपूर्वक बनाए नहीं जाते, ...(5)...ही मिल जाते हैं। हमारा मित्र भी ...(6)...होता है। विपरीत विचारों वाले मित्र भी ... (7)... रूप में मिलते हैं। परन्तु विचारों और स्थिति की ...(8)... घनिष्ठ मित्रता के लिए अत्यन्त आवश्यक है। सामान्यतः दो ...(9)... विचारों की टकराहट अशान्ति को ही जन्म देती है।...(10)...बढ़ाने वाले तो रास्ते चलते भी मिलेंगे पर वे स्वार्थपरायण होंगे और उनका सरोकार अपनी सुख-सुविधा एवं विलासिता तक सीमित होगा। उपयुक्त मित्र मिलना जीवन की सार्थकता है। *(अनुवादक परीक्षा, 2001)*

1. (a) मनोभाव (b) स्वप्न
(c) विकल्प (d) संकल्प
2. (a) प्रतिवेदन (b) निवेदन
(c) अनुरक्ति (d) अभिव्यक्ति
3. (a) भुलाव (b) दुराव
(c) विराग (d) अनुराग
4. (a) सहृदय (b) सुहृद्
(c) पूज्य (d) श्रद्धेय
5. (a) विपर्यास (b) बहुप्रयास
(c) अनायास (d) सायास
6. (a) विरूप (b) अपरूप
(c) अनुरूप (d) प्रतिरूप
7. (a) अपवाद (b) संवाद
(c) प्रतिवाद (d) निर्विवाद
8. (a) विषमता (b) विपरीतता
(c) समानता (d) असमानता
9. (a) असंगत (b) प्रतिकूल
(c) अनुकूल (d) अकूल
10. (a) अवसाद (b) अनुमान
(c) जानपहचान (d) अभिमान

उत्तरमाला

1. (a) 2. (d) 3. (b) 4. (b) 5. (c) 6. (d)
7. (a) 8. (c) 9. (b) 10. (c)

गद्यांश–7

समाचार-पत्र आधुनिक जीवन की आवश्यकता है और आज के जीवन की महान शक्ति। समाचार-पत्र जन-साधारण के विचारों को...(1)...करने का साधन है। समाज, देश और विश्व में घटने वाली दिन-प्रतिदिन की .....(2).....का प्रामाणिक वर्णन समाचार-पत्र द्वारा ही मिल सकता है। यह जनजागृति का आधार होता है। *(रेलवे, 2001)*

1. (a) दृष्टिगत (b) अभिव्यक्त
(c) प्रकट (d) प्रस्तुत
2. (a) आपदाओं (b) विपदाओं
(c) घटनाओं (d) कलहों

उत्तरमाला

1. (b) 2. (c)

गद्यांश – 8

कई दिन वहाँ रहने पर मुझे उस साध्वी की ...(1)...के बारे मे बहुत कुछ मालूम हो गया। प्रातःकाल उसके आश्रम से निरन्तर आती हुई तुलसीदास के भजनों की स्वर लहरी मेरी सोई हुई आत्मा को ...(2)...कर देती थी। कितने दिनों से मैं रेल-पेल व भागमभाग से ...(3)...वातावरण में आने की बात सोच रहा था। इस युग में भविष्य के प्रति...(4)... हमें जल्दी निर्णय लेने से रोकती रहती है। फिर भी भीड़ से दूर निकलने की बलवती...(5)...किसके मन में रह-रह कर नहीं जाग उठती है? *(बैंक परीक्षा, 2002)*

1. (a) परिचर्या (b) दिनचर्या
(c) परिचर्चा (d) परिक्रमा
2. (a) जागृत (b) उदास
(c) चंचल (d) विचलित
3. (a) प्रभावित (b) दूषित
(c) संलग्न (d) अचेत
4. (a) आशा (b) हताशा
(c) आशंका (d) निश्चिन्तता
5. (a) उत्सुकता (b) इच्छा
(c) लालसा (d) तृष्णा

उत्तरमाला

1. (b) 2. (c) 3. (d) 4. (c) 5. (b)

गद्यांश–9

प्रेस समाज के ...(1)... की एक महत्वपूर्ण शक्ति होती है। यह देश के एक भाग की जनता को दूसरे भागों में हो रही ...(2)...से परिचित कराती है। विभिन्न ...(3)...के बारे में ज्ञान के प्रसार का यह एक महत्वपूर्ण ...(4)...है। किसी काल के ...(5)... विषयों पर जनमत तैयार करने का भी यह साधन है। समाज सुधार के ...(6)... में और शासन के कार्यों को प्रभावित करने में भी इसकी सहायता महत्वपूर्ण होती है। जनहित के...(7)... पर जनता के विचारों की अभिव्यक्ति के लिए यह एक मंच का कार्य करता है।

भारत में प्रेस का विकास उन्नीसवीं सदी के आरम्भिक वर्षों में आरम्भ हुआ और इसने जनता को ...(8)...बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत का पहला समाचार पत्र 1780 में स्थापित बंगाल गजट था। *(रेलवे, 2003)*

1. (a) संगठन (b) ऐक्य
(c) एकीकरण (d) एकता
2. (a) सूचनाओं (b) घटनाओं
(c) आपदाओं (d) जटिलताओं
3. (a) समस्याओं (b) बाधाओं
(c) अवरोधों (d) मुसीबतों
4. (a) मध्यम (b) माध्यम
(c) मीडिया (d) मार्ग
5. (a) महत्वपूर्ण (b) महत्वाकांक्षी
(c) मुख्य (d) गुरु
6. (a) प्रयासों (b) अनुष्ठानों
(c) प्रयोगों (d) अभियानों
7. (a) मुद्दों (b) विषयों
(c) बातचीत (d) कार्यकलापों
8. (a) रचनात्मक (b) कलात्मक
(c) जागृत (d) तत्पर

उत्तरमाला

1. (a) 2. (b) 3. (a) 4. (b) 5. (a) 6. (a)
7. (a) 8. (a)

गद्यांश – 10

परम्परा से ही नहीं, हमें सामयिक जन-संस्कृति से भी अपना सम्बन्ध जोड़ना है, उसके श्रेष्ठतम को अपने अध्ययन-अध्यापन का विषय बनाना है। जनसम्पर्क की स्फूर्ति से रहित हमारी शिक्षा ...(1)... ही होगी। आज हम वर्ग-विशेष में बँधकर नहीं रह सकते। प्रतिक्षण यह ...(2)...हम में जागती रहे कि हम सबसे अनिवार्य अंग हैं और समष्टि के प्रति ...(3)...का भाव हमारा नया जीवन-धर्म है। शिक्षित एवं विद्वत्-वर्ग जो कुछ जन...(4)...से प्राप्त करता है, उसे उसको सौ हाथों से लौटाना है। सामाजिक और आर्थिक ...(5)...ही नहीं, भौतिक और सांस्कृतिक उपलब्धियों को भी हमें जनता में बाँटकर खाना है। ...(6)... आज के विश्वविद्यालय राष्ट्रीय जीवन से हटकर नहीं चल सकते। उन्हें राष्ट्रीय आवश्यकताओं पर ...(7)... रखनी होगी और वैज्ञानिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक जीवन की शोधों से उनकी ...(8)...करनी होगी। हमें एक अत्यन्त मानवीय, न्यायशील, सत्य और प्रेम तथा सौहार्द्र के प्रति ...(9)... समाजसूत्र का निर्माण करना है। इसके लिए आवश्यक है कि हमारा शिक्षित समाज ...(10)...और सहानुभूतिपूर्ण हो। यह कल्पनाशील और क्रियाशील भी हो और उसमें अध्यवसाय तथा संकल्पनिष्ठा का गुण उत्कृष्ट मात्रा में हो।

(अनुवादक परीक्षा, 2005)

1. (a) निरंकुश (b) सप्राण (c) निर्मम (d) निष्प्राण
2. (a) अनुभूति (b) विभूति (c) सहानुभूति (d) स्मृति
3. (a) परसर्ग (b) प्रतिसर्ग (c) उत्सर्ग (d) विसर्ग
4. (a) विशेष (b) सामान्य (c) निर्जन (d) सामान्य
5. (a) न्याय (b) दायित्व (c) अदेय (d) भक्ष्य
6. (a) किन्तु (b) वरन् (c) प्रत्युत (d) अतएव
7. (a) चिन्ता (b) आधारशिला (c) दृष्टि (d) संसृति
8. (a) प्राप्ति (b) खोज (c) आकांक्षा (d) स्वीकृति
9. (a) सन्नद्ध (b) अविरुद्ध (c) विशुद्ध (d) प्रबुद्ध
10. (a) श्रमशील (b) संकल्पशील (c) भावसम्पन्न (d) कल्पनाप्रवण

उत्तरमाला

1. (d) 2. (a) 3. (c) 4. (b) 5. (a) 6. (d)
7. (c) 8. (a) 9. (d) 10. (b)

गद्यांश – 11

परमार्थ की उच्चतम भावना के साथ भी नागरिक जीवन में प्रवेश करने पर व्यक्ति को अविश्वास और सन्देह के अनेक पैने तीरों का लक्ष्य बनना पड़ता है। नागरिक जीवन का अकारण सन्देह कर्मनिष्ठा को ...(1)...और उसका लक्ष्यहीन दुराव जीवनदर्शन को ...(2)...कर देता है। इसके विपरीत ग्रामीण ...(3)...की पुस्तक खुली ही मिलती है। कुछ ...(4)...परिस्थितियाँ इस मान्यता और विचारधारा की ...(5)... हो सकती हैं। पर जहाँ जीवन कुछ ...(6)... है वहाँ एक ग्रामीण का सहयोग ...(7)...दैन्य-रहित होने के कारण सहज है, सहायता का ... (8)...गर्वशून्य एवं अहंकारवृत्ति से रहित होने के कारण (9)...है और परस्पर किया जाने वाला विचार-विनिमय...(10)...होने के कारण जीवन के अध्ययन का पूरक है।

1. (a) मुखर (b) पंगु (c) मूक (d) निष्क्रिय
2. (a) विभ्रांत (b) निर्भ्रांत (c) भ्रांत (d) अभ्रांत
3. (a) जीवन (b) समाज (c) मानस (d) परिवेश
4. (a) असाधारण (b) असम (c) विशिष्ट (d) विषम
5. (a) अपवाद (b) प्रवाद (c) संवाद (d) विवाद
6. (a) प्रशस्त (b) आश्वस्त (c) स्वस्थ (d) अस्वस्थ
7. (a) मान (b) प्रदान (c) अवदान (d) आदान
8. (a) मान (b) दान (c) आदान (d) अवदान
9. (a) अस्वाभाविक (b) स्वाभाविक (c) व्यावहारिक (d) अव्यावहारिक
10. (a) विशिष्ट (b) अशिष्ट (c) कृत्रिम (d) अकृत्रिम

उत्तरमाला

1. (b) 2. (c) 3. (a) 4. (c) 5. (a) 6. (b)
7. (d) 8. (b) 9. (b) 10. (d)

★★★

वाक्य-भेद
(Kinds of Sentences)

13

वाक्य : सार्थक शब्दों का व्यवस्थित समूह जिससे अपेक्षित अर्थ प्रकट हो, वाक्य कहलाता है।

वाक्य के अनिवार्य तत्व

वाक्य में निम्नलिखित छः तत्व अनिवार्य हैं—

1. सार्थकता 2. योग्यता 3. आकांक्षा
4. निकटता 5. पदक्रम 6. अन्वय

1. सार्थकता : वाक्य का कुछ न कुछ अर्थ अवश्य होता है। अतः इसमें सार्थक शब्दों का ही प्रयोग होता है।

2. योग्यता : वाक्य में प्रयुक्त शब्दों में प्रसंग के अनुसार अपेक्षित अर्थ प्रकट करने की योग्यता होती है; जैसे—'चाय खाई'. यह वाक्य नहीं है क्योंकि चाय खाई नहीं जाती बल्कि पी जाती है।

3. आकांक्षा : 'आकांक्षा' का अर्थ है 'इच्छा', वाक्य अपने आप में पूरा होना चाहिए। उसमें किसी ऐसे शब्द की कमी नहीं होनी चाहिए जिसके कारण अर्थ की अभिव्यक्ति में अधूरापन लगे। जैसे—पत्र लिखता है, इस वाक्य में क्रिया के कर्ता को जानने की इच्छा होगी। अतः पूर्ण वाक्य इस प्रकार होगा—राम पत्र लिखता है।

4. निकटता : बोलते तथा लिखते समय वाक्य के शब्दों में परस्पर निकटता का होना बहुत आवश्यक है, रूक-रूक कर बोले या लिखे गए शब्द वाक्य नहीं बनाते। अतः वाक्य के पद निरंतर प्रवाह में पास-पास बोले या लिखे जाने चाहिए।

5. पदक्रम : वाक्य में पदों का एक निश्चित क्रम होना चाहिए। 'सुहावनी है रात होती चाँदनी' इसमें पदों का क्रम व्यवस्थित न होने से इसे वाक्य नहीं मानेंगे। इसे इस प्रकार होना चाहिए—'चाँदनी रात सुहावनी होती है'।

6. अन्वय : अन्वय का अर्थ है—मेल। वाक्य में लिंग, वचन, पुरुष, काल, कारक आदि का क्रिया के साथ ठीक-ठीक मेल होना चाहिए; जैसे—'बालक और बालिकाएँ गई', इसमें कर्ता क्रिया अन्वय ठीक नहीं है। अतः शुद्ध वाक्य होगा 'बालक और बालिकाएँ गए'।

वाक्य के अंग

वाक्य के दो अंग हैं—1. उद्देश्य, 2. विधेय

1. उद्देश्य *(Subject)* : जिसके बारे में कुछ बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं; जैसे—अनुराग खेलता है। सचिन दौड़ता है।

इन वाक्यों में 'अनुराग' और 'सचिन' के विषय में बताया गया है। अतः ये उद्देश्य हैं। इसके अंतर्गत कर्ता और कर्ता का विस्तार आता है जैसे—'परिश्रम करने वाला व्यक्ति सदा सफल होता है।' इस वाक्य में कर्ता *(व्यक्ति)* का विस्तार 'परिश्रम करने वाला' है।

2. विधेय *(Predicate)* : वाक्य में उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं। जैसे—अनुराग खेलता है। इस वाक्य में 'खेलता है' विधेय है। दूसरे शब्दों में वाक्य के कर्ता *(उद्देश्य)* को अलग करने के बाद वाक्य में जो कुछ भी शेष रह जाता है, वह विधेय कहलाता है।

इसके अंतर्गत विधेय और विधेय का विस्तार आता है; जैसे—लंबे-लंबे बालों वाली लड़की अभी-अभी एक बच्चे के साथ दौड़ते हुए उधर गई'। इस वाक्य में विधेय (गई) का विस्तार 'अभी-अभी एक बच्चे के साथ दौड़ते हुए उधर' है।

वाक्य के भेद

वाक्य अनेक प्रकार के हो सकते हैं। उनका विभाजन हम दो आधारों पर कर सकते हैं—

1. अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद

अर्थ के आधार पर वाक्य के निम्नलिखित आठ भेद हैं—

(a) विधानवाचक *(Assertive Sentence)* : जिन वाक्यों में क्रिया के करने या होने की सूचना मिले, उन्हें विधानवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे—मैंने दूध पिया। वर्षा हो रही है। राम पढ़ रहा है।

(b) निषेधवाचक *(Negative Sentence)* : जिन वाक्यों से कार्य न होने का भाव प्रकट होता है, उन्हें निषेधवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे—मैंने दूध नहीं पिया। मैंने खाना नहीं खाया। तुम मत लिखो।

(c) आज्ञावाचक *(Imperative Sentence)* : जिन वाक्यों से आज्ञा, प्रार्थना, उपदेश आदि का ज्ञान होता है, उन्हें आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं; जैसे—बाज़ार जाकर फल ले आओ। मोहन तुम बैठ कर पढ़ो। बड़ों का सम्मान करो।

(d) प्रश्नवाचक *(Interrogative Sentence)* : जिन वाक्यों से किसी प्रकार का प्रश्न पूछने का ज्ञान होता है, उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे—सीता तुम कहाँ से आ रही हो ? तुम क्या पढ़ रहे हो ? रमेश कहाँ जाएगा ?

(e) इच्छावाचक *(Illative Sentence)* : जिन वाक्यों से इच्छा, आशीष एवं शुभकामना आदि का ज्ञान होता है, उन्हें इच्छावाचक वाक्य कहते हैं; जैसे—तुम्हारा कल्याण हो। आज तो मैं केवल फल खाऊँगा। भगवान तुम्हें लंबी उमर दे।

(f) संदेहवाचक *(Sentence indicating Doubt)* : जिन वाक्यों से संदेह या संभावना व्यक्त होती है, उन्हें संदेहवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे—शायद शाम को वर्षा हो जाए। वह आ रहा होगा, पर हमें क्या मालूम। हो सकता है राजेश आ जाए।

(g) विस्मयवाचक *(Exclamatory Sentence)* : जिन वाक्यों से आश्चर्य, घृणा, क्रोध, शोक आदि भावों की अभिव्यक्ति होती है, उन्हें विस्मयवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे—वाह! कितना सुंदर दृश्य है। हाय! उसके माता-पिता दोनों ही चल बसे। शाबाश! तुमने बहुत अच्छा काम किया।

(h) संकेतवाचक *(Conditional Sentence)* : जिन वाक्यों से शर्त्त (संकेत) का बोध होता है यानी एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर होता है, उन्हें संकेतवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे—यदि परिश्रम करोगे तो अवश्य सफल होगे। पिताजी अभी आते तो अच्छा होता। अगर वर्षा होगी तो फ़सल भी होगी।

2. रचना के आधार पर वाक्य के भेद

रचना के आधार पर वाक्य के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं—

(a) सरल वाक्य/साधारण वाक्य *(Simple Sentence)* : जिन वाक्यों में केवल एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय होता है, उन्हें सरल वाक्य या साधारण वाक्य कहते हैं। सरल वाक्य में एक ही समापिका क्रिया (करता है, किया, करेगा आदि) होती है; जैसे—मुकेश पढ़ता है। शिल्पी पत्र लिखती है। राकेश ने भोजन किया।

(b) संयुक्त वाक्य *(Compound Sentence)* : जिन वाक्यों में दो या दो से अधिक सरल वाक्य योजकों *(और, एवं, तथा, या, अथवा, इसलिए, अतः, फिर भी, तो, नहीं तो, किन्तु, परन्तु, लेकिन, पर आदि)* से जुड़े हों, उन्हें संयुक्त वाक्य कहते हैं; जैसे—वह सुबह गया और शाम को लौट आया। प्रिय बोलो पर असत्य नहीं। उसने बहुत परिश्रम किया किंतु सफलता नहीं मिली।

(c) मिश्रित/मिश्र वाक्य *(Complex Sentence)* : जिन वाक्यों में एक प्रधान (मुख्य) उपवाक्य हो और अन्य आश्रित (गौण) उपवाक्य हों तथा जो आपस में 'कि'; 'जो'; 'क्योंकि'; 'जितना ...उतना....', 'जैसा ...वैसा....', 'जब ...तब....', 'जहाँ ...वहाँ....', 'जिधर ...उधर....', 'अगर/यदि ...तो....', 'यद्यपि... तथापि, आदि से मिश्रित (मिले-जुले) हों, उन्हें मिश्रित वाक्य कहते हैं। इनमें एक मुख्य उद्देश्य और मुख्य विधेय के अलावा एक से अधिक समापिका क्रियाएँ होती हैं; जैसे— मैं जानता हूँ कि तुम्हारे अक्षर अच्छे नहीं बनते। जो लड़का कमरे में बैठा है वह मेरा भाई है। यदि परिश्रम करोगे तो उत्तीर्ण हो जाओगे।

वाक्य-विग्रह *(Analysis)* : वाक्य के विभिन्न अंगों को अलग-अलग किये जाने की प्रक्रिया को वाक्य-विग्रह कहते हैं। इसे 'वाक्य-विभाजन' या 'वाक्य-विश्लेषण' भी कहा जाता है।

सरल वाक्य का विग्रह करने पर एक उद्देश्य और एक विधेय बनते है। संयुक्त वाक्य में से योजक को हटाने पर दो स्वतंत्र उपवाक्य (यानी दो सरल वाक्य) बनते हैं। मिश्र वाक्य में से योजक को हटाने पर दो अपूर्ण उपवाक्य बनते हैं।

सरल वाक्य = 1 उद्देश्य + 1 विधेय
संयुक्त वाक्य = सरल वाक्य + सरल वाक्य
मिश्र वाक्य = प्रधान उपवाक्य + आश्रित उपवाक्य

उपवाक्य (Clause)

यदि किसी एक वाक्य में एक से अधिक समापिका क्रियाएँ होती हैं तो वह वाक्य उपवाक्यों में बँट जाता है और उसमें जितनी भी समापिका क्रियाएँ होती हैं उतने ही उपवाक्य होते हैं। इन उपवाक्यों में से जो वाक्य का केंद्र होता है, उसे मुख्य या प्रधान उपवाक्य *(Main clause)* कहते हैं और शेष को आश्रित उपवाक्य *(Subordinate clause)* कहते हैं। आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं—

1. संज्ञा उपवाक्य : जो आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य की क्रिया के कर्ता, कर्म अथवा क्रिया पूरक के रूप में प्रयुक्त हों, उन्हें संज्ञा उपावाक्य कहते हैं; जैसे—मैं जानता हूँ कि वह बहुत ईमानदार है। उसका विचार है कि राम सच्चा आदमी है। रश्मि ने कहा कि उसका भाई पटना गया है। इन वाक्यों में रंगीन अक्षरों वाले अंश संज्ञा उपवाक्य हैं।

पहचान : संज्ञा उपवाक्य का प्रारंभ 'कि' से होता है।

2. विशेषण उपवाक्य : जब कोई आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य की संज्ञा पद की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण उपवाक्य कहते हैं; जैसे—मैंने एक व्यक्ति को देखा जो बहुत मोटा था। ये फल कहाँ है जिन को आप लाए थे। इन वाक्यों में रंगीन अक्षरों वाले अंश विशेषण उपवाक्य हैं।

पहचान : विशेषण उपवाक्य का प्रारंभ जो अथवा इसके किसी रूप *(जिसे, जिस को, जिसने, जिन को आदि)* से होता है।

3. क्रियाविशेषण उपवाक्य : जो आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य की क्रिया की विशेषता बताए, उसे क्रियाविशेषण उपवाक्य कहते हैं। ये प्रायः क्रिया का काल, स्थान, रीति, परिमाण, कारण आदि के सूचक क्रियाविशेषणों के द्वारा प्रधान वाक्य से जुड़े रहते हैं; जैसे—मैं उससे नहीं बोलता, क्योंकि वह बदमाश है। जब वर्षा हो रही थी तब मैं कमरे में था। जहाँ-जहाँ वे गए, उनका स्वागत हुआ। यदि मैंने परिश्रम किया होता तो अवश्य सफल होता। यद्यपि वह गरीब है, तथापि ईमानदार है। इन वाक्यों में रंगीन अक्षरों वाले अंश क्रियाविशेषण उपवाक्य हैं।

पहचान : क्रियाविशेषण उपवाक्य का प्रारंभ 'क्योंकि' 'जितना', 'जैसा', 'जब', 'जहाँ', 'जिधर', 'अगर/यदि', 'यद्यपि' आदि से होता है।

उपवाक्य और पदबंध : उपवाक्य से छोटी इकाई पदबंध है। 'मेरा भाई मोहन बीमार है' उपवाक्य है और इसमें 'मेरा भाई मोहन' संज्ञा पदबंध है। पदबंध में अधूरा भाव प्रकट होता है किन्तु उपवाक्य में पूरा भाव प्रकट हो भी सकता है और कभी-कभी नहीं भी। उपवाक्य में क्रिया अनिवार्य रहती है जबकि पदबंध में क्रिया का होना आवश्यक नहीं। उदाहरण :

रमेश की बहन शीला तेज़ी से चलती बस से गिर पड़ी और उसे कई चोटें आईं। *(वाक्य)*

रमेश की बहन शीला तेज़ी से चलती बस से गिर पड़ी *(उपवाक्य)*

रमेश की बहन शीला	*(संज्ञा पदबंध)*	— पदबंध
तेज़ी से चलती बस	*(क्रिया विशेषण पदबंध)*	
गिर पड़ी	*(क्रिया पदबंध)*	

पदबंध (Phrase)

कई पदों के योग से बने वाक्यांशो को, जो एक ही पद का काम करता है, 'पदबंध' कहते हैं। पदबंध को 'वाक्यांश' भी कहते हैं। जैसे—

1. *सबसे तेज़ दौड़ने वाला छात्र* जीत गया।
2. यह लड़की *अत्यंत सुशील और परिश्रमी* है।
3. नदी *बहती चली जा रही है।*
4. नदी *कल-कल करती हुई* बह रही थी।

उपर्युक्त वाक्यों में रंगीन छपे शब्द पदबंध हैं। पहले वाक्य के 'सबसे तेज़ दौड़ने वाला छात्र' में पाँच पद हैं, किन्तु वे मिलकर एक ही पद अर्थात् संज्ञा का कार्य कर रहे हैं। दूसरे वाक्य के 'अत्यंत सुशील और परिश्रमी' में भी चार पद हैं, किन्तु वे मिलकर एक ही पद अर्थात् विशेषण का कार्य कर रहे हैं। तीसरे वाक्य के 'बहती चली जा रही है' में पाँच पद हैं, किन्तु वे मिलकर एक ही पद अर्थात् क्रिया का काम कर रहे हैं। चौथे वाक्य के 'कल-कल करती हुई' में तीन पद हैं, किन्तु वे मिलकर एक ही पद अर्थात् क्रिया विशेषण का काम कर रहे हैं।

पदबंध के प्रकार :

पदबध चार प्रकार के होते हैं—

संज्ञा पदबंध, विशेषण पदबंध, क्रिया पदबंध और क्रिया विशेषण पदबंध।

1. संज्ञा पदबंध : पदबंध का अंतिम अथवा शीर्ष शब्द यदि संज्ञा हो और अन्य सभी पद उसी पर आश्रित हो तो वह 'सज्ञा पदबंध' कहलाता है। जैसे—

(a) *चार ताकतवर मजदूर* इस भारी चीज़ को उठा पाए।
(b) राम ने *लंका के राजा रावण* को मार गिराया।
(c) *अयोध्या के राजा दशरथ* के चार पुत्र थे।
(d) *आसमान में उड़ता गुब्बारा* फट गया।

उपर्युक्त वाक्यों में रंगीन छपे शब्द 'संज्ञा पदबंध' हैं।

2. विशेषण पदबंध : पदबंध का शीर्ष अथवा अंतिम शब्द यदि विशेषण हो और अन्य सभी पद उसी पर आश्रित हों तो वह 'विशेषण पदबंध' कहलाता है। जैसे—

(a) *तेज़ चलने वाली* गाड़ियाँ प्रायः देर से पहुँचती हैं।
(b) *उस घर के कोने में बैठा हुआ* आदमी जासूस है।
(c) उसका घोड़ा *अत्यंत सुंदर, फुरतीला* और *आज्ञाकारी* है।
(d) *बरगद और पीपल की घनी छाँव* से हमें बहुत सुख मिला।

उपर्युक्त वाक्यों में रंगीन छपे शब्द 'विशेषण पदबंध' हैं।

3. क्रिया पदबंध : क्रिया पदबंध में मुख्य क्रिया पहले आती है। उसके बाद अन्य क्रियाएँ मिलकर एक समग्र इकाई बनाती हैं। यही 'क्रिया पदबंध' है। जैसे—

(a) वह बाज़ार की ओर *आया होगा*।
(b) मुझे मोहन छत से *दिखाई दे रहा है*।
(c) सुरेश नदी में *डूब गया*।
(d) अब दरवाज़ा *खोला जा सकता है*।

उपर्युक्त वाक्यों में रंगीन छपे शब्द 'क्रिया पदबंध' हैं।

4. क्रिया विशेषण पदबंध : यह पदबंध मूलतः क्रिया का विशेषण रूप होने के कारण प्रायः क्रिया से पहले आता है। इसमें क्रियाविशेषण प्रायः शीर्ष स्थान पर होता है, अन्य पद उस पर आश्रित होते हैं। जैसे—

(a) मैंने रमा की *आधी रात तक* प्रतीक्षा की।
(b) उसने साँप को *पीट-पीटकर* मारा।
(c) छात्र मोहन की शिकायत *दबी जबान* से कर रहे थे।
(d) कुछ लोग *सोते-सोते* चलते हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में रंगीन छपे शब्द 'क्रिया विशेषण पदबंध' हैं।

विराम-चिह्न *(Punctuation)*

'विराम' का अर्थ है—'रुकना' या 'ठहरना'। वाक्य को लिखते अथवा बोलते समय बीच में कहीं थोड़ा-बहुत रुकना पड़ता है जिससे भाषा स्पष्ट, अर्थवान एवं भावपूर्ण हो जाती है। लिखित भाषा में इस ठहराव को दिखाने के लिए कुछ विशेष प्रकार के चिह्नों का प्रयोग करते हैं। इन्हें ही विराम-चिह्न कहा जाता है।

भावों और विचारों को स्पष्ट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग वाक्य के बीच या अंत में किया जाता है, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं। यदि विराम-चिह्न का प्रयोग न किया जाए तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। जैसे—

1. रोको मत जाने दो। 2. रोको, मत जाने दो।
3. रोको मत, जाने दो।

उपर्युक्त उदाहरणों में पहले वाक्य में अर्थ स्पष्ट नहीं होता, जबकि दूसरे और तीसरे वाक्य में अर्थ तो स्पष्ट हो जाता है लेकिन एक-दूसरे का उलटा अर्थ मिलता है जबकि तीनों वाक्यों में वही शब्द हैं। दूसरे वाक्य में 'रोको' के बाद अल्पविराम लगाने से रोकने के लिए कहा गया है जबकि तीसरे वाक्य में 'रोको मत' के बाद अल्पविराम लगाने से किसी को न रोक कर जाने के लिए कहा गया है। इस प्रकार विराम-चिह्न लगाने से दूसरे और तीसरे वाक्य को पढ़ने में तथा अर्थ स्पष्ट करने में जितनी सुविधा होती है उतनी पहले वाक्य में नहीं होती।

अतएव विराम-चिह्नों के विषय में पूरा ज्ञान होना आवश्यक है।

हिंदी में प्रचलित प्रमुख विराम-चिह्न निम्नलिखित हैं—

नाम	चिह्न
1. पूर्ण विराम या विराम	(।)
2. अर्द्धविराम	(;)
3. अल्पविराम	(,)
4. प्रश्नवाचक चिह्न	(?)
5. विस्मयादिबोधक चिह्न	(!)
6. उद्धरण चिह्न	(" ") (' ')
7. योजक	(-)
8. निर्देशक (डैश)	(—)
9. कोष्ठक	[( )]
10. हंसपद (त्रुटिबोधक)	(^)
11. रेखांकन	(__)
12. लाघव चिह्न	(०)
13. लोप-चिह्न	(...)

नोट : *फुल स्टाप (.) को छोड़कर शेष विराम-चिह्न वही लिए गए हैं, जो अंग्रेजी में प्रचलित हैं। पूर्ण विराम के लिए बिन्दु (.) की जगह खड़ी पाई (।) को अपनाया गया है।*

1. पूर्ण विराम *(Full Stop)* (।) : हिन्दी में पूर्ण विराम चिह्न का प्रयोग सबसे अधिक होता है। यह चिह्न हिन्दी का प्राचीनतम विराम चिह्न है।

(a) इस चिह्न का प्रयोग प्रश्नवाचक और विस्मयादिबोधक वाक्यों को छोड़कर अन्य सभी प्रकार के वाक्यों के अंत में किया जाता है; जैसे—राम स्कूल से आ रहा है। वह उसकी सौंदर्यता पर मुग्ध हो गया। वह छत से गिर गया।

(b) दोहा, श्लोक, चौपाई आदि की पहली पंक्ति के अंत में एक पूर्ण विराम (।) तथा दूसरी पंक्ति के अंत में दो पूर्ण विराम (।।) लगाने की प्रथा है; जैसे—

रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे मोती, मानुस, चून ।।

(c) कभी-कभी किसी व्यक्ति या वस्तु का सजीव वर्णन करते समय वाक्यांशों के अंत में पूर्ण विराम का प्रयोग होता है; जैसे—

1. वह रामसिंह आ रहा है। गठा हुआ बदन। मस्ती भरी चाल। हँसता चेहरा। दोस्तों के लिए मोम। शत्रुओं के लिए काल।
2. संध्या का समय। आकाश में लाली। वृक्षों पर पक्षियों का कलरव। सुनसान पथ।

2. अर्द्धविराम *(Semicolon)*(;) : जहाँ अपूर्ण विराम की अपेक्षा कम देर और अल्पविराम की अपेक्षा अधिक देर तक रुकना हो, वहाँ अर्द्धविराम का प्रयोग किया जाता है।

(a) आम तौर पर अर्द्धविराम दो उपवाक्यों को जोड़ता है जो थोड़े से असंबद्ध होते हैं एवं जिन्हें 'और' से नहीं जोड़ा जा सकता है; जैसे—

फलों में आम को सर्वश्रेष्ठ फल माना गया है; किंतु श्रीनगर में और ही किस्म के फल विशेष रूप से पैदा होते हैं।

(b) दो या दो से अधिक उपाधियों के बीच अर्द्धविराम का प्रयोग होता है; जैसे—एम. ए.; बी. एड.। एम. ए.; पी. एच. डी.। एम. एस-सी.; डी. एस-सी.।

3. अल्पविराम *(Comma)*(,) : जहाँ पर अर्द्धविराम की तुलना में कम देर रुकना हो तो अल्पविराम का प्रयोग किया जाता है। इस चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में किया जाता है—

(a) एक ही प्रकार के कई शब्दों का प्रयोग होने पर प्रत्येक शब्द के बाद अल्पविराम लगाया जाता है, लेकिन अंतिम शब्द के पहले 'और' का प्रयोग होता है; जैसे—रघु अपनी संपत्ति, भूमि, प्रतिष्ठा और मान-मर्यादा सब खो बैठा।

(b) 'हाँ', 'नहीं', 'अतः', 'वस्तुतः', 'बस', 'अच्छा' जैसे शब्दों से आरंभ होने वाले वाक्यों में इन शब्दों के बाद; जैसे-

हाँ, लिख सकता हूँ।
नहीं, यह काम नहीं हो सकता।
अतः, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए।
वस्तुतः, वह पागल है ।
बस, हो गया, रहने भी दो।
अच्छा, अब मैं चलता हूँ।

(c) वाक्यांश या उपवाक्य को अलग करने के लिए; जैसे—विज्ञान का पाठ्यक्रम बदल जाने से, मैं समझता हूँ, परीक्षा परिणाम प्रभावित होगा।

(d) कभी-कभी संबोधन-सूचक शब्द के बाद अल्पविराम भी लगाया जाता है; जैसे— रवि, तुम इधर आओ।

(e) शब्द युग्मों में अलगाव दिखाने के लिए; जैसे—पाप और पुण्य, सच और झूठ, कल और आज।

(f) पत्र में संबोधन के बाद; जैसे—पूज्य पिताजी, मान्यवर, महोदय आदि। ध्यान रहे कि पत्र के अंत में भवदीय, आज्ञाकारी आदि के बाद अल्पविराम नहीं लगता।

(g) क्रियाविशेषण वाक्यांशों के बाद भी अल्पविराम आता है। जैसे—महात्मा बुद्ध ने, मायावी जगत के दुःख को देख कर, तप प्रारंभ किया।

(h) किंतु, परंतु, क्योंकि, इसलिए आदि समुच्चयबोधक शब्दों से पूर्व भी अल्पविराम लगाया जाता है; जैसे—

आज मैं बहुत थका हूँ, इसलिए विश्राम करना चाहता हूँ।
मैंने बहुत परिश्रम किया, परंतु फल कुछ नहीं मिला।

(i) तारीख के साथ महीने का नाम लिखने के बाद तथा सन्, संवत् के पहले अल्पविराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे— 2 अक्तूबर, सन् 1869 ई० को गाँधीजी का जन्म हुआ।

(j) उद्धरण से पूर्व 'कि' के बदले में अल्पविराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे— नेता जी ने कहा, ''दिल्ली चलो''।

('कि' लगने पर— नेताजी ने कहा कि ''दिल्ली चलो''।)

(k) अंकों को लिखते समय भी अल्पविराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे— 5, 6, 7, 8, 9, 10, 15, 20, 60, 70, 100 आदि।

(l) एक ही शब्द या वाक्यांश की पुनरावृत्ति होने पर अल्पविराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे—भागो, भागो, आग लग गई है।

(m) जहाँ 'यह', 'वह', 'अब', 'तब', 'तो', 'या' आदि शब्द लुप्त हो; जैसे—

वह कब लौटेगा, कह नहीं सकता। *('यह' लुप्त है)*
मैं जो कहता हूँ, ध्यान लगाकर सुनो। *('वह' लुप्त है)*
कहना था सो कह दिया, तुम जानो। *('अब' लुप्त है)*
जब जाना ही है, चले जाओ। *('तब' लुप्त है)*
यदि तुम कल आओ, मेरी किताब लेते आओगे। *('तो' लुप्त है)*

4. प्रश्नवाचक चिह्न *(Mark of Interrogation)*(?) : प्रश्नवाचक वाक्यों के अंत में इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे—तुम कहाँ जा रहे हो ? वहाँ क्या रखा है ?

इस चिह्न का प्रयोग संदेह प्रकट करने के लिए भी प्रयुक्त किया जाता है; जैसे—क्या कहा, वह निष्ठावान (?) है।

5. विस्मयादिबोधक चिह्न *(Mark of Exclamation)*(!) : (a) विस्मय, आश्चर्य, हर्ष, घृणा आदि का बोध कराने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

वाह ! आप यहाँ कैसे पधारे ? हाय ! बेचारा व्यर्थ में मारा गया।

(b) संबोधनसूचक शब्द के बाद; जैसे—

मित्रो ! अभी मैं जो कहने जा रहा हूँ।
साथियो ! आज देश के लिए कुछ करने का समय आ गया है।

(c) अतिशयता को प्रकट करने के लिए कभी-कभी दो-तीन विस्मयादिबोधक चिह्नों का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

अरे, वह मर गया ! शोक !! महाशोक !!!

6. उद्धरण चिह्न *(Inverted Commas)*(" ") : किसी और के वाक्य या शब्दों को ज्यों-का-त्यों रखने में इसका (दुहरे उद्धरण चिह्न) प्रयोग किया जाता है; जैसे—तुलसीदास ने कहा—

''रघुकुल रीति सदा चली आई। प्राण जाय पर वचन न जाई ।।''

(' ') : पुस्तक, समाचारपत्र आदि का नाम, लेखक का उपनाम, वाक्य में किसी शब्द पर जोर देने के लिए तथा उद्धरण के भीतर उद्धरण देने के लिए इकहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग करते हैं जैसे—

तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' एक अनुपम कृति है।
लेखक ने कहा, ''मैं जानता हूँ कि पुस्तक की छपाई संतोषप्रद नहीं है, पर कल ही प्रकाशक महोदय कह रहे थे, 'ऐसा प्रेस के लोगों ने जान-बूझकर किया है'।''

7. योजक चिह्न *(Hyphen)* (-) : इस चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित परिस्थितियों में किया जाता है—

(a) सामासिक पदों या पुनरुक्त और युग्म शब्दों के मध्य किया जाता है; जैसे—

जय-पराजय, लाभ-हानि, दो-दो, राष्ट्र-भक्ति।

(b) तुलनावाचक 'सा', 'सी', 'से', के पहले; जैसे—

चाँद-सा चेहरा, फूल-सी मुसकान।

(c) एक अर्थवाले सहचर शब्दों के बीच; जैसे—

कपड़ा-लत्ता, धन-दौलत, मान-मर्यादा, रुपया-पैसा।

(d) सार्थक-निरर्थक शब्द-युग्मों के बीच; जैसे—

अनाप-शनाप, उलटा-पुलटा, काम-वाम, खाना-वाना

8. निर्देशक चिह्न *(Dash)* (—) : निर्देशक चिह्न (—) योजक चिह्न (-) से थोड़ा बड़ा होता है। इस चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में किया जाता है—

(a) संवादों को लिखने के लिए—
रमेश— तुम कहाँ रहते हो ?
मोहन — मैं नेहरू नगर में रहता हूँ।

(b) कहना, लिखना, बोलना, बताना, शब्दों के बाद; जैसे—
गाँधी जी ने कहा—हिंसा मत करो।
महेश ने लिखा—सत्यम्, शिवम्, सुंदरम्।

(c) किसी प्रकार की सूची के पहले, जैसे—
सफल होने वाले छात्रों के नाम निम्नलिखित हैं—राजीव, रमेश, मोहन, श्याम, मुकेश।

जहाँ किसी भी विचार को विभक्त कर बीच में उदाहरण दिए जाते हैं, वहाँ दोनों ओर इसका प्रयोग किया जाता है, जैसे—
श्याम बाज़ार से कुछ सामान—दाल सब्ज़ी—खरीदने गया।

9. कोष्टक *(Brackets)* [( )] : कोष्टक के भीतर मुख्यतः उस सामग्री को रखते हैं जो मुख्य वाक्य का अंग होते हुए भी पृथक की जा सकती है; जैसे—

क्रिया के भेदों *(सकर्मक और अकर्मक)* के उदाहरण दीजिए।

(a) किसी कठिन शब्द को स्पष्ट करने के लिए; जैसे—
आप की सामर्थ्य *(शक्ति)* को मैं जानता हूँ।

(b) नाटक में अभिनय निर्देशों को कोष्टक में रखा जाता है; जैसे—

मेघनाद—*(कुछ आगे बढ़ कर)* लक्ष्मण यदि सामर्थ्य है तो सामने आओ।

(c) विषय, विभाग सूचक अंकों अथवा अक्षरों को प्रकट करने के लिए; जैसे—

संज्ञा के तीन भेद हैं—1. व्यक्तिवाचक 2. जातिवाचक और 3. भाववाचक संज्ञा।

10. हंसपद/त्रुटिबोधक *(Caret)* (^) : जब किसी वाक्य अथवा वाक्यांश में कोई शब्द अथवा अक्षर लिखने में छूट जाता है तो छूटे हुए वाक्य के नीचे हंसपद चिह्न का प्रयोग कर छूटे हुए शब्द को ऊपर लिख देते हैं।

जन्मसिद्ध
जैसे—स्वतंत्रता हमारा ^ अधिकार है।

11. रेखांकन चिह्न *(Underline)* (__) : वाक्य में महत्त्वपूर्ण शब्द, पद, वाक्य रेखांकित कर दिया जाता है; जैसे—

गोदान उपन्यास, प्रेमचंद द्वारा लिखित सर्वश्रेष्ठ कृति है।

12. लाघव चिह्न *(Sign of Abbreviation)* (०) : संक्षिप्त रूप लिखने के लिए लाघव चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

कृ० प० उ० = कृपया पृष्ठ उलटिए
प० न० नि० = पटना नगर निगम

13. लोप चिह्न *(Mark of Omission)* (...) : जब वाक्य या अनुच्छेद में कुछ अंश छोड़ कर लिखना हो तो लोप चिन्ह का प्रयोग किया जाता है, जैसे—

गाँधीजी ने कहा, "परीक्षा की घड़ी आ गई है ... हम करेंगे या मरेंगे"।

गौण विराम-चिह्न

नाम	चिह्न	उपयोग
अपूर्ण विराम/उपविराम (Colon)	:	आगे लिखी जा रही बात की ओर ध्यान आकृष्ट करने में, किसी व्यक्ति, वस्तु आदि का परिचय देने में, पुस्तक या लेख के शीर्षक में, जन्म व मृत्यु-तिथि में साक्षात्कथन में आदि।
पुनरुक्तिसूचक (Marks of Repetition)	" "	शब्द या वाक्य की पुनरुक्ति बचाने में।
विवरण चिह्न (Colon-dash)	:-	वाक्यांश के निर्देश में, किसी वस्तु के सविस्तार वर्णन में आदि। *(चिह्न का प्रयोग अब बहुत कम होता है)*
तारक चिह्न (Star / Asterisk Mark)	★	पाद टिप्पणी के लिए।
योग चिह्न (Plus Mark)	+	दो या अधिक शब्दों को जोड़ने में। (संधि को दिखाने के लिए, शब्द की व्युत्पत्ति बताने में)
तुल्यतासूचक चिह्न (Equivalent Mark)	=	समानता सूचित करने के लिए। (संधि एवं समास को दिखाने के लिए)
तिर्यक रेखा (Oblique / Slash)	/	'या' या 'अथवा' के अर्थ में, कविता की पंक्तियों को अलग-अलग करने में।
गोली (Bullet)	•	मुख्य बातों या तथ्यों को सारांश रूप देने में।
समाप्तिसूचक चिह्न (Finish Mark)	-०-, •••, ★★★, □□□	लेख या पुस्तक की समाप्ति का बोध कराने में।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. राम पढ़ता है।
(a) सरल वाक्य (b) संयुक्त वाक्य
(c) मिश्रित वाक्य (d) इनमें से कोई नहीं

2. उसने परिश्रम तो बहुत किया किन्तु सफलता नहीं मिली।
(a) सरल वाक्य (b) संयुक्त वाक्य
(c) मिश्रित वाक्य (d) इनमें से कोई नहीं

3. यदि सही दिशा में परिश्रम करोगे तो अवश्य सफल हो जाओगे।
(a) सरल वाक्य (b) संयुक्त वाक्य
(c) मिश्रित वाक्य (d) इनमें से कोई नहीं

4. ईश्वर तुम्हें सफलता दे।
(a) प्रश्नवाचक वाक्य (b) विस्मयवाचक वाक्य
(c) निषेधवाचक वाक्य (d) इच्छावाचक वाक्य

5. संतोष से बढ़कर सुख नहीं।
(a) मिश्र वाक्य (b) सरल वाक्य
(c) संयुक्त वाक्य (d) इनमें से कोई नहीं
(अधीनस्थ परीक्षा, 1995)

6. मजदूर मेहनत करता है किन्तु उसके लाभ से वंचित रहता है।
(a) सरल वाक्य (b) मिश्र वाक्य
(c) संयुक्त वाक्य (d) इनमें से कोई नहीं
(अधीनस्थ परीक्षा, 1995)

7. राजनीति अब एक व्यवसाय बनती जा रही है जो गुण्डागिरी के बल पर चलती है।
(a) संयुक्त वाक्य (b) मिश्र वाक्य
(c) सरल वाक्य (d) इनमें से कोई नहीं
(अधीनस्थ परीक्षा, 1995)

8. आज बहुत पानी गिरा।
   (a) साधारण वाक्य (b) मिश्र वाक्य
   (c) संयुक्त वाक्य (d) उपवाक्य *(बी० एड०, 1998)*

9. तुलसीदास ने कहा है कि विनाशकाल में मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।
   (a) साधारण वाक्य (b) सरल वाक्य
   (c) संयुक्त वाक्य (d) मिश्र वाक्य *(बी०एड०, 1998)*

10. उससे अब अकेले नहीं रहा जाता है।
   (a) कर्तृवाच्य (b) कर्मवाच्य
   (c) भाववाच्य (d) इनमें से कोई नहीं
   (सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

11. वहाँ जाओ।
   (a) निषेधवाचक (b) अनुरोधवाचक
   (c) आज्ञावाचक (d) प्रश्नवाचक *(बैंक परीक्षा, 2002)*

12. जब तक वह घर पहुँचा तब तक उसके पिता जा चुके थे।
   (a) सरल वाक्य (b) संयुक्त वाक्य
   (c) मिश्र वाक्य (d) इनमें से कोई नहीं
   (सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

13. मोहन नहीं आने वाला है।
   (a) बलदायक (b) संदेहवाचक
   (c) स्वीकारात्मक (d) नकारार्थक *(बैंक परीक्षा, 2002)*

14. किस वाक्य में क्रिया का भाववाच्य प्रयोग है ?
   (a) लड़कियों ने माँ को देखा (b) उससे फल नहीं खाये गये
   (c) घोड़ा हिनहिनाता है (d) यह काम तुमसे ही संभव है
   (रेलवे, 2002)

15. निम्न में से भाववाच्य वाक्य का चयन कीजिए—
   (a) सीता कपड़ा सीती है (b) यहाँ बैठा नहीं जाता
   (c) कपड़ा सिया जाता है (d) मेरे द्वारा पुस्तक पढ़ी गई
   (बैंक परीक्षा, 2002)

16. निम्न में से कर्तृवाच्य वाक्य का चयन कीजिए—
   (a) मोहन पुस्तक पढ़ता है (b) आपके द्वारा मालूम हुआ
   (c) नींद नहीं आती (d) पुस्तक पढ़ी गई
   (बैंक परीक्षा, 2002)

17. निम्न में से सरल वाक्य का चयन कीजिए—
   (a) उसने कहा कि कार्यालय बंद हो गया
   (b) सुबह हुई और वह आ गया
   (c) राहुल धीरे-धीरे लिखता है
   (d) जो बड़े हैं, उन्हें सम्मान दो *(बैंक परीक्षा, 2002)*

18. निम्न मे से संयुक्त वाक्य का चयन कीजिए—
   (a) जो परिश्रम करता है, वही आगे बढ़ता है
   (b) मैं पढ़ता हूँ और वह गाता है
   (c) परिश्रमी व्यक्ति ही सफलता प्राप्त करता है
   (d) क्या मेरे बिना वह पढ़ नहीं सकता है *(बैंक परीक्षा, 2002)*

19. निम्न में से मिश्र वाक्य का चयन कीजिए—
   (a) रोहन आम खा रहा है
   (b) वह पंडित है, किन्तु हठी है
   (c) आकाश में बादल गरजता है
   (d) वह कौन-सा व्यक्ति है, जिसने महात्मा गाँधी का नाम न सुना हो
   (बैंक परीक्षा, 2002)

20. निम्नलिखित मे से किस वाक्य में अकर्मक क्रिया है ?
   (a) गेहूँ पिस रहा है (b) मैं बालक को जगवाता हूँ।
   (c) मदन गोपाल को हँसा रहा है
   (d) राम पत्र लिखता है
   (रेलवे, 2003)

21. 'वह अपनी कक्षा का सर्वाधिक प्रतिभाशाली छात्र है'। इस वाक्य का बिना अर्थ बदले निम्नलिखित में कौन-सा नकारात्मक वाक्य उपयुक्त होगा।
   (a) वह अपनी कक्षा का सर्वाधिक प्रतिभाशाली छात्र नहीं है
   (b) उसके समान उसकी कक्षा में कोई प्रतिभाशाली छात्र नहीं है
   (c) प्रतिभा में वह अपनी कक्षा के किसी छात्र से कम नहीं है
   (d) अपनी कक्षा के प्रतिभाशाली छात्रों में उसकी गिनती नहीं होती
   (प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2005)

22. निम्नलिखित मिश्र वाक्यों में से कौन-सा विशेषण उपवाक्य है ?
   (a) मैं कहता हूँ कि तुम भोपाल जाओ
   (b) लखनऊ, जो उत्तर प्रदेश की राजधानी है, एक ऐतिहासिक नगर है
   (c) जब मैं स्टेशन पहुँचा, तभी ट्रेन आयी
   (d) मैं चाहता हूँ कि आप यहीं रहें *(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2005)*

23. उसने कहा कि मैं घर जाऊँगा।
   (a) सरल वाक्य (b) संयुक्त वाक्य
   (c) मिश्र वाक्य (d) प्रश्नवाचक वाक्य
   (प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

24. निम्नलिखित में से कौन-सा अल्प विराम चिह्न है ?
   (a) (.) (b) (;) (c) (,) (d) (।)
   (प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

25. निम्नलिखित में से कौन-सा अर्द्ध विराम चिह्न है ?
   (a) (.) (b) (;) (c) (,) (d) (।)

26. तुम यह काम मत करो।
   (a) आज्ञावाचक (b) निषेधवाचक
   (c) प्रश्नवाचक (d) विस्मयवाचक

27. हो सकता है राम का काम बन जाय।
   (a) निषेधवाचक (b) प्रश्नवाचक
   (c) संदेहवाचक (d) आज्ञावाचक

28. अरे ! उसने तो कमाल कर दिया।
   (a) प्रश्नवाचक (b) निषेधवाचक
   (c) विस्मयवाचक (d) इच्छावाचक

29. रानी घर जा रही है।
   (a) सरल वाक्य (b) संयुक्त वाक्य
   (c) मिश्र वाक्य (d) इनमें से कोई नहीं

30. राम क्रिकेट खेलता है पर अच्छा नहीं।
   (a) सरल वाक्य (b) संयुक्त वाक्य
   (c) मिश्र वाक्य (d) इनमें से कोई नहीं

31. ज्यों ही मैंने दरवाजा खोला कि वह आ गया।
   (a) सरल वाक्य (b) संयुक्त वाक्य
   (c) मिश्र वाक्य (d) इनमें से कोई नहीं

32. वाक्य में उचित विराम चिह्न लगाएँ—
   उसने एम ए बी एड पास किया है
   (a) एम ए. बी. एड. (b) एम. ए.; बी. एड.
   (c) एम. ए., बी. एड. (d) एम. ए., बी. एड
   (हरियाणा बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 200

33. ''राम घर गया। उसने माँ को देखा।'' का संयुक्त वाक्य बनेगा।
   (a) राम ने घर जाकर माँ को देखा
   (b) राम घर गया और उसने माँ को देखा
   (c) राम घर गया अतः उसने माँ को देखा
   (d) इनमें से कोई नहीं *(उत्तर प्रदेश बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 20*

34. राम की गाय दूध देती है—
   (a) सरल वाक्य (b) संयुक्त वाक्य
   (c) मिश्र वाक्य (d) इनमें से कोई नहीं
   (बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 20

35. वह कौन-सा व्यक्ति है जिसने जवाहर लाल नेहरू का नाम न सुना हो।
(a) सरल वाक्य (b) संयुक्त वाक्य
(c) मिश्र वाक्य (d) इनमें से कोई नहीं
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

36. वाक्य के घटक होते हैं—
(a) उद्देश्य और विधेय (b) कर्त्ता और क्रिया
(c) कर्म और क्रिया (d) कर्म और विशेषण
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

37. 'यह फाइल प्रबंधक तक पहुँचाओ' अर्थ के आधार पर वाक्य है—
(a) इच्छावाचक (b) प्रश्नवाचक
(c) संकेतवाचक (d) आज्ञावाचक
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

38. निम्न वाक्यों में से संयुक्त वाक्य कौन-सा है?
(a) वह खाना खाकर सो गया
(b) उसने खाना खाया और सो गया
(c) गीता जिस घर में रहती है बहुत गंदा है
(d) रूपा चाहती है कि वह नौकरी करे
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

39. निम्नलिखित में कौन-सा मिश्र वाक्य है?
(a) चोर को देखकर सिपाही पकड़ने दौड़ा
(b) नेताजी भाषण देकर चले गए
(c) सेठ जानता है कि नौकर ईमानदार है
(d) बिजली नहीं थी इसलिए अँधेरा था
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

40. निम्न वाक्य में रेखांकित उपवाक्य है—
उस चित्र को उठाओ जो हुसैन का बनाया हुआ है।
(a) संज्ञा उपवाक्य (b) विशेषण उपवाक्य
(c) क्रिया विशेषण उपवाक्य (d) प्रधान उपवाक्य
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

41. निम्नलिखित में से विराम चिह्न नहीं है?
(a) अल्प विराम (b) पूर्ण विराम
(c) निर्देशक चिह्न (d) अवतरण *(टी. जी. टी., 2014)*

42. इनमें कौन-सा विराम चिह्न ऐसा है जो हिन्दी में अंग्रेजी भाषा से नहीं लिया गया है?
(a) , (b) ; (c) ? (d) ।
(नेट/जे. आर. एफ, 2015)

उत्तरमाला

1. (a)	2. (b)	3. (c)	4. (d)	5. (b)	6. (c)	7. (b)	8. (a)	9. (d)	10. (c)	11. (c)	12. (c)
13. (d)	14. (b)	15. (b)	16. (a)	17. (c)	18. (b)	19. (d)	20. (a)	21. (b)	22. (b)	23. (c)	24. (c)
25. (b)	26. (b)	27. (c)	28. (c)	29. (a)	30. (b)	31. (c)	32. (b)	33. (b)	34. (a)	35. (c)	36. (a)
37. (d)	38. (b)	39. (c)	40. (b)	41. (d)	42. (d)						

14 वाक्य-शुद्धि
(Sentence-Correction)

वाक्य भाषा की अत्यंत महत्वपूर्ण इकाई होता है। अतएव परिष्कृत भाषा के लिए वाक्य शुद्धि का ज्ञान आवश्यक है। वाक्य-रचना में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय से संबंधित या अन्य प्रकार की अशुद्धियाँ हो सकती हैं। इन्ही को आधार बनाकर परीक्षा में प्रश्न पूछे जाते हैं।

नीचे कुछ उदाहरण दिए गए है। प्रत्येक वाक्य में रंगीन अक्षरों में छपे शब्द अशुद्ध हैं जिनका शुद्ध रूप कोष्ठक में दिया गया है।

I. संज्ञा-संबंधी अशुद्धियाँ

1. हिन्दी के प्रचार में आज-भी बड़े-बड़े संकट हैं। *(बड़ी-बड़ी बाधाएँ)*
2. सीता ने गीत की दो-चार लड़ियाँ गायीं। *(कड़ियाँ)*
3. पतिव्रता नारी को छूने का उत्साह कौन करेगा। *(साहस)*
4. कृषि हमारी व्यवस्था की रीढ़ है। *(का आधार)*
5. प्रेम करना तलवार की नोक पर चलना है। *(धार पर)*
6. नगर की सारी जनसंख्या भूखी है। *(जनता)*
7. वह मेरे शब्दों पर ध्यान नहीं देता। *(मेरी बात पर)*
8. जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कथा चरितार्थ होती है। *(कहावत)*
9. मुझे सफल होने की निराशा है। *(आशा नहीं)*
10. इस समस्या की औषध उसके पास है। *(का समाधान)*
11. गोलियों की बाढ़। *(बौछार)*

(i) लिंग-संबंधी अशुद्धियाँ

1. परीक्षा की प्रणाली बदलना चाहिए। *(बदलनी)*
2. हिन्दी की शिक्षा अनिवार्य कर दिया गया। *(दी गयी)*
3. मुझे मजा आती है। *(आता)*
4. रामायण का टीका। *(की)*
5. देश की सम्मान की रक्षा करो। *(के)*
6. लड़की ने जोर से हँस दी। *(दिया)*
7. दंगे में बालक, युवा, नर-नारी सब पकड़ी गयीं। *(पकड़े गये)*

(ii) वचन-संबंधी अशुद्धियाँ

1. सबों ने यह राय दी। *(सब)*
2. उसने अनेक प्रकार की विद्या सीखीं। *(विद्याएँ)*
3. मेरे आँसू से रूमाल भींग गया। *(आँसुओं)*
4. ऐसी एकाध बातें सुनकर दुःख होता है। *(बात)*
5. हमारे सामानों का ख्याल रखियेगा। *(सामान)*
6. वे विविध विषय से परिचित हैं। *(विषयों)*
7. इस विषय पर एक भी अच्छी पुस्तकें नहीं है। *(पुस्तक)*

(iii) कारक-संबंधी अशुद्धियाँ

1. हमने यह काम करना है। *(हमें)*
2. मैंने राम को पूछा। *(से)*
3. सब से नमस्ते। *(को)*
4. जनता के अन्दर असंतोष फैल गया। *(में)*
5. नौकर का कमीज। *(की)*
6. मैंने नहीं जाना। *(मुझे)*
7. मेरे नये पते से चिट्ठियाँ भेजना। *(पर)*

II. सर्वनाम-संबंधी अशुद्धियाँ

1. मेरे से मत पूछो। *(मुझ से)*
2. मेरे को यह बात पसंद नहीं। *(मुझे)*
3. तेरे को अब जाना चाहिए। *(तुझे)*
4. मैंने नहीं जाना। *(मुझे)*
5. आप आपका काम करो। *(अपना)*
6. जो सोवेगा वह खोवेगा। *(सो)*
7. आप जाकर ले लो। *(तुम)*
8. वह सब भले लोग हैं। *(वे)*
9. आँख में कौन पड़ गया ? *(क्या)*
10. मैं उन्होंके पिताजी से जाकर मिला। *(उनके)*

III. विशेषण-संबंधी अशुद्धियाँ

1. उसे भारी प्यास लगी है। *(बहुत)*
2. जीवन और साहित्य का घोर संबंध है। *(घनिष्ठ)*
3. मुझे बड़ी भूख लगी है। *(बहुत)*
4. यह एक गहरी समस्या है। *(गंभीर)*
5. वहाँ भारी भरकम भीड़ जमा थी। *(बहुत या बहुत भारी)*
6. इसका कोई अर्थ नहीं है। *(कुछ भी)*
7. इस वीरान जीवन में। *(नीरस)*
8. उसकी बहुत हानि हुई। *(बड़ी)*
9. राजेश अग्रिम बुधवार को आएगा। *(आगामी)*
10. दूध का अभाव चिन्तनीय है। *(चिन्ताजनक)*

IV. क्रिया-संबंधी अशुद्धियाँ

1. वह कुरता डालकर गया है। *(पहनकर)*
2. पगड़ी ओढ़कर आओ। *(बाँधकर)*
3. वह लड़का मोटर हाँक सकता है। *(चला)*
4. छोटी उम्र शिक्षा लेने के लिए है। *(पाने)*
5. वे दस-बारह पशु उठा ले गए। *(हाँक)*
6. राधा ने माला गूँध ली। *(गूँथ)*
7. अपना हस्ताक्षर लगा दो। *(कर)*
8. उपस्थित लोगों ने संकल्प लिया। *(किया)*
9. हमें यह सावधानी लेनी होगी। *(बरतनी)*
10. वहाँ घना अँधेरा घिरा था। *(छाया)*

V. अव्यय-संबंधी अशुद्धियाँ

1. यद्यपि वह बीमार था परन्तु वह स्कूल गया। *(तथापि)*
2. पुस्तक विद्वतापूर्ण लिखी गयी है। *(विद्वतापूर्वक)*
3. आसानीपूर्वक यह काम कर लिया। *(आसानी से)*
4. शनैः उसको सफलता मिलने लगी। *(शनैः-शनैः)*
5. एकमात्र दो उपाय हैं। *(केवल)*
6. यह पत्र आपके अनुसार है। *(अनुरूप)*
7. यह बात कदापि भी सत्य नहीं हो सकती। *(कदापि)*

8. वह अत्यन्त ही सुन्दर है। *(अत्यन्त)*
9. सारे देश भर में अकाल है। *(सारे देश में)*
10. मैं पहुँचा ही था जब कि वह आ गया। *(कि)*

VI. पदक्रम-संबंधी अशुद्धियाँ

1. छात्रों ने मुख्य अतिथि को एक फूलों की माला पहनाई। *(फूलों की एक माला)*
2. भीड़ में चार पटना के व्यक्ति भी थे। *(पटना के चार व्यक्ति)*
3. कई बैंक के कर्मचारियों ने प्रदर्शन किया। *(बैंक के कई कर्मचारियों)*
4. आप जाएँगे क्या ? *(क्या आप जाएँगे ?)*

VII. द्विरुक्ति/पुनरुक्ति-संबंधी अशुद्धियाँ

1. मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ बशर्ते कि तुम मेरा कहा मानो। *(बशर्ते/शर्त है कि)*
2. दरअसल में वह बहुत काइयाँ है। *(दरअसल/असल में)*
3. दरहकीकत में वह बहुत घाघ है। *(दरहकीकत/हकीकत में)*
4. फिलहाल में वह मुंबई गया है। *(फिलहाल/हाल में)*
5. मुख्तसर में 'गोदान' ग्रामीण जीवन का महाकाव्य है। *(मुख्तसर)*
6. मेरे मना करने के बावजूद भी वह चला गया। *(बावजूद)*
7. वह अभी शैशव अवस्था में है। *(शैशव/शिशु अवस्था)*
8. मध्यकालीन युग में कलाओं की बहुत उन्नति हुई। *(मध्यकाल/मध्ययुग)*
9. यौवनावस्था की बुराइयों से बचो। *(यौवन/युवा अवस्था)*
10. साहित्य के क्षेत्र में महिला लेखिकाओं की संख्या कम है। *(लेखिकाओं/महिला लेखकों)*
11. नौजवान युवकों को दहेज प्रथा का विरोध करना चाहिए। *(नौजवानों/युवकों)*
12. आपका भवदीय। *(आपका/भवदीय)*
13. प्रातःकाल के समय टहलना चाहिए। *(प्रातःकाल/प्रातःसमय)*
14. राजस्थान का अधिकांश भाग रेतीला है। *(अधिकांश/अधिक भाग)*
15. वे परस्पर एक दूसरे से उलझ पड़े। *(परस्पर/एक दूसरे से)*

VIII. अधिकपदत्व-संबंधी अशुद्धियाँ

निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन अक्षरों में छपे पद अनावश्यक हैं—

1. मानव ईश्वर की सबसे उत्कृष्टतम कृति है।
2. हीन भावना से ग्रस्त मोहन अपने को दुनिया का सबसे निकृष्टतम व्यक्ति समझता है।
3. सीता नित्य गीता को पढ़ती है।
4. उसने गुप्त रहस्य प्रकट कर दिये।
5. माली जल से पौधों को सींच रहा था।

IX. शब्द-ज्ञान-संबंधी अशुद्धियाँ

1. बाण बड़ा उपयोगी शस्त्र है। *(अस्त्र)*
2. लाठी बड़ा उपयोगी अस्त्र है। *(शस्त्र)*
3. चिड़ियाँ गा रही हैं। *(चहक)*
4. वह नित्य गाने की कसरत करता है। *(का अभ्यास/ का रियाज)*
5. सोहन नित्य दण्ड मारता है। *(पेलता)*
6. इस समय सीता की आयु सोलह वर्ष है। *(उम्र/अवस्था)*
7. धनीराम की सौभाग्यवती पुत्री का विवाह कल होगा। *(सौभाग्यकांक्षिणी)*
8. कर्मवान व्यक्ति को सफलता अवश्य मिलती है। *कर्मवीर)*

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. वाक्य के अशुद्ध भाग (त्रुटिपूर्ण भाग) का चयन कीजिए: मैं पटना गया (a)/ तो उस समय (b)/मेरे पास (c)/केवल बीस रुपये मात्र थे। (d)/ कोई त्रुटि नहीं (e).
2. वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए: राम राज्य में (a)/शेर और बकरी एक घाट (b)/पर पानी पीती थी। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d).
3. राजा दशरथ को (a)/ चार पुत्र राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न (b)/ पैदा हुए थे। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d).
4. एक वर्ष से मैं जिस पुस्तक की रचना में संलग्न था (a)/आज उसे छपे आकार में देखकर (b)/मेरी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d).
5. छायावाद के युग में (a)/राष्ट्रवादी विचारधारा के (b)/उन्नत स्वर (c)/ सुनने को मिलता है। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e).
6. आज भ्रष्टाचार हर क्षेत्र में (a)/ शिष्टाचार के रूप में (b)/जाना जाता है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(लेखाकार परीक्षा, 1997)*
7. राम के धनुष भंग करते ही (a)/ दूसरे राजाओं के (b)/वक्ष पर साँप लोटने लगे। (c)/ कोई त्रुटि नहीं (d). *(रेलवे, 1997)*
8. जब पृथ्वी पर पाप और अत्याचार बढ़ते हैं (a)/तब ईश्वर किसी-न-किसी महापुरुषों के रूप में (b)/पृथ्वी पर अवतार लेता है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(लेखाकार परीक्षा, 1997)*
9. अपराधी और(a)/ निरपराधी का (b)/अन्तर करना (c)/कठिन है। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e). *(रेलवे, 1997)*
10. दीपावली पर कुछ लोग (a)/ चमचमाती चाँदी के बर्तन (b)/खरीदने का लोभ संवरण न कर सके । (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(रेलवे, 1997)*
11. चन्द्रमा की स्वच्छ चाँदनी (a)/जगती तल में, (b)/पृथ्वी तल और आकाश में फैली हुई हैं। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(लेखाकार परीक्षा, 1997)*
12. स्वतन्त्रता-संग्राम में प्राण गँवाने वाले (a)/वीरों के सम्मान में सरकार ने (b)/एक दिन के सार्वजनिक अवकाश की घोषणा की है। (c)/ कोई त्रुटि नहीं (d). *(असिस्टेंट ग्रेड, 1997)*
13. महात्माओं का (a)/वैराग भी समय (b)/के परिवर्तन की अपेक्षा (c)/नहीं रखता। (d) कोई त्रुटि नहीं (e). *(रेलवे, 1997)*
14. जीवन पथ पर (a)/हमें सतत रूप से (b)/चलते रहना चाहिए। (c)/ कोई त्रुटि नहीं (d). *(लेखाकार परीक्षा, 1997)*
15. निम्नलिखित में से वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए—
    (a) नेताओं का हित इसमें है कि लोग आपस में लड़ाते रहें।
    (b) नेताओं का हित इसमें है कि लोग आपसी लड़ाई से दूर उलझे रहें।
    (c) नेताओं का हित इसमें है कि लोग आपस में लड़ते रहें।
    (d) नेताओं का हित इसमें है कि लोग उनसे लड़ते रहें। *(रेलवे, 1997)*
16. प्रत्येक देशवासियों को (a)/देश की सेवा में (b)/तन, मन, धन अर्पण करना चाहिए। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(रेलवे, 1998)*

17. आतंकवाद शायद एक दिशाहीन (a)/उद्देश्यहीन अंधेरा है (b)/जो विश्व शांति एवं प्रगति को निगल रहा है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(रेलवे, 1998)*

18. तुम कक्षा में आते हो (a)/तो तुम्हारी पुस्तक (b)/साथ क्यों नहीं लाते ? (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(रेलवे, 1998)*

19. गुणी मनुष्य कहता है (a)/कि मैं विविध प्रकार के दुःखों को (b)/ सहन करके भी दुःखी नहीं हूँ। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(रेलवे, 1998)*

20. फूल में सुगंध (a)/होती है और(b)/ तितली के पास सुन्दर पंख। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(रेलवे, 1998)*

21. स्त्री का हृदय गुलाब की पंखुड़ियों की तरह (a)/अत्यन्त कोमल(b)/ एवं संवेदनशील होता है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(ग्राम पंचायत परीक्षा, 1998)*

22. जब तक तुम अपने अभिप्राय का अभिप्रेत (a)/स्पष्ट रूप से नहीं कहते (b)/ मैं तुम्हारी सहायता नहीं कर सकूँगा (c)/ कोई त्रुटि नहीं (d). *(ग्राम पंचायत परीक्षा, 1998)*

23. मैं आज सुबह (a)/आपके घर गया था/(b) किन्तु तुम घर (c)/ पर नहीं मिले। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e). *(बी० एड०, 1999)*

24. प्रत्येक देशवासी को विभिन्नता में (a)/एकीकरण करने की शक्ति को उजागर करने वाले (b)/तत्वों की पहचान करनी चाहिए। (c)/ कोई त्रुटि नहीं (d). *(अनुवादक परीक्षा, 1999)*

25. रेखा ने अमित को आवाज लगाकर कहा (a)/कि राहुल का दूध (b)/रसोई में गैस के ऊपर रखा है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(अनुवादक परीक्षा, 1999)*

26. तुष्टीकरण करने की नीति अपनाकर (a)/न व्यक्ति आगे बढ़ सकता है (b)/और न राष्ट्र । (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(अनुवादक परीक्षा, 1999)*

27. गम्भीर नदियों, विस्तृत सागरों (a)/एवं उत्तुंग पर्वत शृंगों को पार करना भी (b)/ अब कठिन नहीं रहा। (c)/ कोई त्रुटि नहीं (d). *(अनुवादक परीक्षा, 1999)*

28. अध्यापक ने (a)/आज हमारे को (b)/नया पाठ पढ़ाया। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(रेलवे, 1999)*

29. मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि (a)/आपके द्वारा इतने परिश्रम से कमाया गया (b)/यह धन आखिर किस काम में आएगा। (c)/ कोई त्रुटि नहीं (d). *(अनुवादक परीक्षा, 1999)*

30. झगड़ों के कारण (a)/नगर की अधिकतर (b)/दुकानें आज भी (c)/बन्द रहीं। (d). *(बी० एड०, 1999)*

31. बुरा से बुरा आदमी (a)/भी सम्मान (b)/चाहता है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(रेलवे, 1999)*

32. आपके इन्हीं गुणों के कारण ही तो लोग (a)/तुम्हारी यशोगाथा का वर्णन करते (b)/अघाते नहीं। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(अनुवादक परीक्षा, 1999)*

33. निम्नलिखित में से वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए—
(a) पिछले सोमवार को स्कूल बन्द है।
(b) पिछले सोमवार को स्कूल बन्द रहेगा।
(c) पिछले सोमवार को स्कूल बन्द होना है।
(d) पिछले सोमवार को स्कूल बन्द था। *(बी० एड०, 1999)*

34. निम्नलिखित में से वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए—
(a) उन्हें एक पुत्र है। (b) उनको एक पुत्र है।
(c) उनका एक पुत्र है। (d) उनके एक पुत्र है। *(बी० एड०, 2000)*

35. इधर आजकल (a)/मौसम की वर्षा (b)/हो रही है। (c)/ कोई त्रुटि नहीं (d). *(बी० एड०, 2000)*

36. जिस व्यक्ति की आत्मा (a)/जितनी विशाल है, (b)/वह उतना ही बड़ा महापुरुष है।(c)/ कोई त्रुटि नहीं (d). *(अनुवादक परीक्षा, 2000)*

37. पतिव्रता नारी ने इस रहस्य को (a)/अपने हृदय के भीतर ही (b)/ अन्तर्निहित रखा । (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(अनुवादक परीक्षा, 2000)*

38. सेठजी (a)/ बड़े (b)/सज्जन पुरुष हैं। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(रेलवे, 2000)*

39. मैं सुबह घर से निकल पड़ा (a)/और पैदल ही (b)/अपने दोस्त के गाँव में पहुँच गया। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(अनुवादक परीक्षा, 2000)*

40. राजेन्द्र प्रसाद जी ने अपनी आत्मकथा में (a)/स्वातंत्र्य-संघर्ष का (b)/जीवन्त अंकन किया है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(अनुवादक परीक्षा, 2000)*

41. हड़ताल के प्रस्फुटन से (a)/व्यापारिक संस्थान बंद होने की (b)/ आशंका की जा रही है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(अनुवादक परीक्षा, 2000)*

42. जिस प्रकार आभूषणों के द्वारा (a)/शरीर की शोभा बढ़ जाती है (b)/उसी प्रकार अलंकारों से (c)/भाषा में लालित्य आ जाता है। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e). *(रेलवे, 2001)*

43. शीर्षक को चयन (a)/ करते समय अनुच्छेद में निहित (b)/भावों और विचारों की (c)/ परख कर लेनी चहिए। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e). *(रेलवे, 2001)*

44. बड़ों की बातों को (a)/ आदर से (b)/ सुनना चहिए। (c)/ कोई त्रुटि नहीं (d). *(बी० एड०, 2001)*

45. अरुणाचल प्रदेश में (a)/प्रातः काल (b)/के समय का दृश्य (c)/ अत्यंत मनोरम होता है।(d)/कोई त्रुटि नहीं (e). *(रेलवे, 2001)*

46. सीता राम की (a)/आज्ञाकारी (b)/पत्नी थी। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(रेलवे, 2001)*

47. तुमने अपनी (a)/स्वेच्छा से (b)/यह काम (c)/किया है। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e). *(रेलवे, 2001)*

48 व्यक्ति के हर प्रकार के कष्टों को (a)/वह पल भर में (b)/दूर करती है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(रेलवे, 2001)*

49. कारगिल (a)/युद्ध में सेना (b)/वीरता के साथ लड़े। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(रेलवे, 2001)*

50. जब वह (a)/ मेरे घर आई (b)/ तो आठ बजा था। (c)/ कोई त्रुटि नहीं (d). *(रेलवे, 2001)*

51. मेरी समझ में (a)/अभी तक यही नहीं आया (b)/कि इस बात का (c)/मेरे से क्या संबंध है। (d)/ कोई त्रुटि नहीं (e). *(रेलवे, 2001)*

52. मैं (a)/कुछ का कुछ (b)/लिख दिया है (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(रेलवे, 2002)*

53. मीठे वचन (a)/बोलना (b)/उत्तम गुण है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(रेलवे, 2002)*

54. उसकी (a)/आँखों से (b)/आँसू (c)/बहते हैं। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e). *(रेलवे, 2002)*

55. निम्नलिखित में वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए—
(a) सीता की चरित्र अच्छा है।
(b) सीता का चरित्र अच्छी है।
(c) सीता की चरित्र अच्छी है।
(d) सीता का चरित्र अच्छा है। *(बैंक परीक्षा, 2002)*

56. निम्नलिखित में वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए—
(a) मैं गाने की कसरत करता हूँ।
(b) मै गाने का अभ्यास करता हूँ।
(c) मैं गाने का शौक कर रहा हूँ।
(d). मैं गाने का व्यायाम कर रहा हूँ। *(बैंक परीक्षा, 2002)*

57. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए—
(a) यह मेरा पुस्तक है।
(b) श्रीकृष्ण के अनेक नाम हैं।
(c) बन्दूक एक उपयोगी शस्त्र है।
(d) बाघ और बकरी एक घाट पर पानी पीती हैं।
(बैंक परीक्षा, 2002)

58. जो मनुष्य (a)/राष्ट्र-प्रेमी होता है (b)/उसको देश की एक न एक वस्तु से (c)/प्रेम हो जाता है। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e).
(पी० सी० एस०, 2003)

59. समय का सदुपयोग (a)/द्वारा (b)/मनुष्य देवता (c)/बन जाता है। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e).
(पी० सी० एस०, 2003)

60. गाँधीजी (a)/पक्के ईश्वर के (b)/भक्त थे। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d).
(पी० सी० एस०, 2003)

61. शीर्षक को छोटा, (a)/आकर्षक और (b)/विषय से संबद्ध (c)/ रखना चाहिए। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e) *(पी० सी० एस०, 2003)*

62. सांस्कृतिक जागृति (a)/के पीछे (b)/राष्ट्रीय (c)/जागृति आती है। (d)/ कोई त्रुटि नहीं (e).
(पी० सी० एस०, 2003)

63. संसार के (a)/प्रत्येक कोने-कोने (b)/में अनगिनत भाषाएँ (c)/ बोली जाती हैं। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e). *(पी० सी० एस०, 2003)*

64. काव्य की शोभा (a)/अथवा चमत्कार (b)/कभी शब्दों में होता है (c)/और कभी अर्थों में।(d)/ कोई त्रुटि नहीं (e).
(पी० सी० एस०, 2003)

65. कृपया आप ही (a)/यह बताने की कृपा करें (b)/कि दिल्ली कब (c)/चलना है। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e). *(पी० सी० एस०, 2003)*

66. विद्यार्थियों ने (a)/ प्राचार्य को (b)/एक गेंदे की (c)/माला पहनाई। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e).

67. निम्नलिखित में से वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए—
(a) वह दंड पाने योग्य है। (b) वह दंड लेने योग्य है।
(c) वह दंड के योग्य है। (d) वह दंड देने योग्य है।
(बी० एड०, 2003)

68. निम्नलिखित में से वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए—
(a) भारत में अनेक जाति हैं। (b) भारत में अनेकों जाति हैं।
(c) भारत में अनेक जातियाँ हैं।
(d) भारत में अनेकों जातियाँ हैं। *(बी० एड०, 2003)*

69. निम्नलिखित में से वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए—
(a) उसे अनुत्तीर्ण होने का संशय है।
(b) उसे अनुत्तीर्ण होने का शक है।
(c) उसे अनुत्तीर्ण होने की आशा है।
(d) उस अनुत्तीर्ण होने की आशंका है। *(बी० एड०, 2003)*

70. निम्नलिखित में से वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए—
(a) फल बच्चे को काटकर खिलाओ।
(b) बच्चे को काटकर फल खिलाओ।
(c) बच्चे को फल काटकर खिलाओ।
(d) काटकर फल बच्चे को खिलाओ। *(बी० एड०, 2003)*

71. जो नारी अपने कामकाज को (a)/अपने बच्चों से अधिक महत्वाकांक्षी मानती है, (b)/उसे विवाह नहीं करना चाहिए। (c)/ कोई त्रुटि नहीं (d). *(रेलवे, 2003)*

72. उनका परिचय कराते हुए (a)/मैंने कहा कि वे (b)/बहुत ही निकट के (c)/आत्मीय रिश्तेदार हैं। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e). *(रेलवे, 2003)*

73. राम ने अपनी (a)/गलती के लिए (b)/क्षमा (c)/की भीख मांगी। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e). *(बी० एड०, 2004)*

74. धनवान को व्यर्थ (a)/बेकार में (b)/सहायता देकर (c)/ कोई लाभ न होगा। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e). *(बी० एड०, 2004)*

75. मुख्य अतिथि आए (a)/और एक फूलों की माला पहना कर (b)/ उनका स्वागत किया गया।(c)/ कोई त्रुटि नहीं (d). *(रेलवे, 2004)*

76. निम्नलिखित में से वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए—
(a) कृपया आज का अवकाश देने की कृपा करें।
(b) आज का अवकाश कृपया देने की कृपा करें।
(c) आज का अवकाश देने की कृपा करें।
(d) आज का कृपया अवकाश देने की कृपा करें। *(रेलवे, 2004)*

77. निम्नलिखित में से वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए—
(a) अधिकारियों ने कागजात का निरीक्षण किया।
(b) अधिकारियों ने कागजात का परीक्षण किया।
(c) अधिकारियों ने कागजात की जाँच की।
(d) अधिकारियो ने कागजात का अन्वेषण किया। *(रेलवे, 2004)*

78. निम्नलिखित में से वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए—
(a) वन में प्रातःकाल का दृश्य बहुत ही सुहावना होता है।
(b) वन में प्रातःकाल के समय बहुत ही सुहावना दृश्य होती है।
(c) वन में प्रातःकाल के समय बहुत ही मनोहारी दृश्य होता है।
(d) वन में प्रातःकाल का दृश्य बहुत ही खूबसूरत होता है।
(रेलवे, 2004)

79. सच्चा वीर वह है जो कभी (a)/युद्ध से पीठ दिखाकर दौड़ नहीं जाता, (b)/बल्कि शत्रु का डटकर सामना करता है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(अनुवादक परीक्षा, 2005)*

80. महात्मा गांधी के सत्य और अहिंसा (a)/के सिद्धांतों की अनेकधा बार (b)/विश्व के गणमान्य नेताओं ने प्रशंसा की। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(अनुवादक परीक्षा, 2005)*

81. यह निस्संदेहपूर्वक कहा जा सकता है कि (a)/आत्मकथा लिखना जीवनी लिखने से (b)/भी कठिन काम है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(अनुवादक परीक्षा, 2005)*

82. आजकल भारत के कारखानों से (a)/एक से एक बढ़कर श्रेष्ठतम वस्तुएँ (b)/बनकर निकल रही हैं। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(अनुवादक परीक्षा, 2005)*

83. हमें पहले प्राथमिकताएँ तय कर लेनी चाहिए (a)/प्रत्युत अपार धनराशि का व्यय (b)/निरर्थक प्रमाणित होगा। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(अनुवादक परीक्षा, 2005)*

84. इस सुलभ मनुष्य-जन्म को पाकर (a)/जो जीवन में आत्मोन्नति के लिए प्रयास नहीं करता, (b)/उसका जन्म लेना ही व्यर्थ है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(अनुवादक परीक्षा, 2005)*

85. यह एक पुरानी सामजिक मान्यता (a)/और मानसिकता है कि नारी (b)/अपने पैरों पर खड़ी होकर स्वावलम्बी बनने में अक्षम है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d). *(अनुवादक परीक्षा, 2005)*

86. निम्नलिखित में से वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए—
(a) बैल और बकरी घास चरती हैं।
(b) बैल और बकरी घास चरते हैं।
(c) बैल और बकरी घास चरता है।
(d) बैल और बकरी घास चरती है। *(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)*

87. भिखारी की (a)/दशा से (b)/मुझे दया आ गई। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d).

88. संस्मरण लेखक अपने संस्मरणों में (a)/विस्मरणीय क्षणों एवं घटनाओं का (b)/लेखा जोखा अंकित करता है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d).

89. घर के प्रत्येक (a)/सदस्यों से यह (b)/अपेक्षित है कि वे (c)/ सद्भावना से रहें। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e).

90. यह जरूरी नहीं है कि (a)/गरीब घर में पैदा होने वाला बालक (b)/आजन्म पर्यन्त गरीब ही रहे। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d).

91. डॉक्टर के कहने पर (a)/मैंने शाम सुबह लम्बी सैर (b)/पर जाना शुरू कर दिया। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d).

92. क्षमा कीजिए (a)/मैं कल नहीं आ पाऊँगा (b)/क्योंकि मैंने पटना जाना है।(c)/कोई त्रुटि नहीं (d).

93. कौन सा वाक्य शुद्ध है ?
(a) वाह ! कितना सुन्दर दृश्य है ?
(b) वाह, कितना सुन्दर दृश्य है।
(c) वाह, कितना सुन्दर दृश्य है !
(d) वाह ! कितना सुन्दर दृश्य है ! *(हरियाणा बी० एड०, 2007)*

94. कौन-सा वाक्य शुद्ध है ?
(a) 'रामचरितमानस' एक धार्मिक ग्रन्थ है
(b) 'रामचरित मानस' एक धार्मिक ग्रन्थ है
(c) 'राम चरित मानस' एक धार्मिक ग्रन्थ है
(d) रामचरित मानस एक धार्मिक ग्रन्थ है
(हरियाणा बी० एड०, 20

उत्तरमाला

1. (d) केवल बीस रुपये थे
2. (c) पर पानी पीते थे
3. (a) राजा दशरथ के
4. (b) आज उसे छपे रूप में देखकर
5. (d) सुनने को मिलते हैं
6. (c) माना जाता है
7. (c) कलेजे पर साँप लोटने लगे
8. (b) तब ईश्वर किसी-न-किसी महापुरुष के रूप में
9. (b) निरपराध का
10. (b) चाँदी के चमचमाते बर्तन
11. (b) जगती तल
12. (d) कोई त्रुटि नहीं
13. (b) वैराग्य भी समय
14. (b) हमें सतत
15. (c)
16. (a) प्रत्येक देशवासी को
17. (a) आतंकवाद एक दिशाहीन
18. (b) तो अपनी पुस्तक
19. (a) साहसी मनुष्य कहता है
20. (c) तितली के सुन्दर पंख
21. (c) एवं भावुक होता है
22. (a) अभिप्रेत का अभिप्राय
23. (c) किन्तु आप घर
24. (b) एकता करने की शक्ति को उजागर कर वाले
25. (b) कि राहुल के लिए दूध
26. (a) तुष्टीकरण की नीति अपनाकर
27. (a) गहरी नदियों, विस्तृत सागरों
28. (b) आज हमें
29. (c) धन आखिर किस काम में आएगा
30. (b) नगर की अधिकांश
31. (a) बुरे से बुरा
32. (b) आपकी यशोगाथा का वर्णन करते
33. (d)
34.
35. (a) यहां आजकल
36. (c) वह उतना ही महापुरुष
37. (c) निहित रखा
38. (b) बहुत
39. (b) और पैदल
40. (a) राजेन्द्र प्रसाद जी ने आत्मकथा में
41. (a) हड़ताल के होने से
42. (b) शरीर की शोभा बढ़ जाती है
43. (a) शीर्षक का चयन
44. (b) आदरपूर्वक
45. (c) का दृश्य
46. (b) आज्ञाकारिणी
47. (a) तुमने
48. (a) व्यक्ति के हर प्रकार के कष्ट को
49. (c) वीरता के साथ लड़ी
50. (c) आठ बजे थे
51. (d) मुझ से क्या संबंध है
52. (a) मैंने
53. (d) कोई त्रुटि नहीं
54. (e) कोई त्रुटि नहीं
56. (b)
57. (b)
58. (c) उसे देश की एक-एक वस्तु से
59. (a) समय के सदुपयोग
60. (b) ईश्वर के पक्के
61. (d) होना चाहिए
62. (b) के बाद
63. (b) प्रत्येक कोने
64. (d) और कभी अर्थ में
65. (a) आप ही
66. (c) गेंदे की एक
67. (c)
68. (c)
69. (d)
70. (c)
71. (b) अपने बच्चों से अधिक महत्वपूर्ण मानती है
72. (d) रिश्तेदार हैं
73. (d) मांगी
74. (b) 'बेकार में' का प्रयोग अनावश्यक है
75. (b) और फूलों की एक माला पहना कर
76. (c)
77. (c)
78. (a)
79. (b) युद्ध से पीठ दिखाकर भाग नहीं जाता
80. (b) के सिद्धांतों की अनेकधा
81. (a) यह निस्संदेह कहा जा सकता है कि
82. (b) एक से बढ़कर एक
83. (b) अन्यथा अपार धनराशि का
84. (a) इस दुर्लभ मनुष्य-जन्म को पाकर
85. (c) स्वावलम्बी बनने में अक्षम है
86. (b)
87. (b) दशा पर
88. (b) अविस्मरणीय क्षणों एवं घटनाओं का
89. (a) घर के सभी
90. (c) जीवनपर्यन्त गरीब ही रहे
91. (b) मैंने सुबह शाम लम्बी सैर
92. (c) क्योंकि मुझे पटना जाना है
93. (d)
94. (a)

★ ★ ★

मुहावरे
(Idioms)

15

मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है–बातचीत करना या उत्तर देना। हिन्दी में मुहावरा को 'वाग्धारा' कहते हैं, किन्तु यह अधिक प्रचलित नहीं है।

जब कोई वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को छोड़ कर विशेष अर्थ में रूढ़ हो जाता है, तो मुहावरा कहलाता है।

उदाहरण : 'श्री गणेश करना' का अर्थ है 'शुरू करना'; 'ईद का चाँद होना' का अर्थ है 'बहुत दिनों बाद दिखाई देना'; 'चार चाँद लगाना' का अर्थ है 'प्रतिष्ठा बढ़ाना' आदि।

(A) अंग संबंधी मुहावरे

➢ अँगूठा : अँगूठा चूमना—खुशामद करना
अँगूठा दिखाना—देने से इंकार करना
अँगूठा नचाना—चिढ़ाना

➢ आँसू : आँसू पोंछना—धीरज बँधाना
आँसू बहाना—खूब रोना
आँसू पी जाना—दुःख को छिपा लेना

➢ आँख : आँख उठाना—हानि पहुँचाने की दृष्टि से देखना
आँखें चार होना—देखा-देखी होना
आँखें ठंढी होना—इच्छा पूरी होना
आँख दिखाना—क्रोध प्रकट करना
आँखों पर बिठाना—आदर करना
आँखें फेरना—नजर बदलना
आँखें बिछाना—बेसब्री से प्रतीक्षा करना
आँख भर आना—आँसू आना
आँखों में धूल डालना—धोखा देना
आँखें लड़ना—देखादेखी होना, प्रेम होना
आँखें लाल करना—क्रोध की नजर से देखना
आँखें थकना—प्रतीक्षा में निराश होना
आँखों में चर्बी छाना—घमण्डी होना
आँखों में खटकना—बुरा लगना
आँखें नीली-पीली करना—नाराज होना
आँख का अंधा, गाँठ का पूरा—मूर्ख धनवान
आँखों की किरकिरी होना—शत्रु होना
आँखों का प्यारा या पुतली होना—बहुत प्यारा होना
आँखों का पानी ढल जाना—लज्जारहित हो जाना
आँखें सेंकना—किसी की सुन्दरता देख आँखें जुड़ाना
आँखें खुलना—सजग होना
आँखें आना—आँख में एक प्रकार की बीमारी होना
आँखें चुराना—सामने आने से परहेज करना
आँखें गड़ाना—दिल लगाना, इच्छा करना
आँखों में गड़ना—अत्यन्त अप्रिय होना
आँख फड़कना—सगुन उचरना
आँखें लगना—प्रेम करना, जरा-सी नींद आना
आँख मारना—इशारा करना
आँख रखना—ध्यान रखना
आँख में पानी रखना—मुरौवत रखना

➢ उँगली : उँगली उठना—निन्दा होना
उँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ना—थोड़ा-सा सहारा पाकर अधिक के लिए उत्साहित होना
कानों मे उँगली देना—किसी बात को सुनने की चेष्टा न करना
पाँचों उँगलियाँ घी में होना—सब प्रकार से लाभ-ही-लाभ
सीधी उँगली से घी न निकलना—भलमनसाहत से काम न होना

➢ ओठ : ओठ चाटना—स्वाद की इच्छा रखना
ओठ मलना—दण्ड देना
ओठ चबाना—क्रोध करना
ओठ सूखना—प्यास लगना

➢ कलेजा : कलेजे से लगाना—प्यार करना, छाती से चिपका लेना
कलेजा काँपना—डरना
कलेजा थामकर रह जाना—अफसोस कर रह जाना
कलेजा निकाल कर रख देना—अतिप्रिय वस्तु अर्पित कर देना
कलेजा ठंढा होना—संतोष होना

➢ कान : कान उमेठना—शपथ लेना
कान खोलना—सावधान करना
कान देना—ध्यान देना
कान पर जूँ न रेंगना—बेखबर रहना
कानों में तेल डालकर बैठ जाना—बात सुनकर भी ध्यान न देना
कान पकड़ना—प्रतिज्ञा करना
कान भरना—निन्दा करना
कानों कान खबर होना—बात फैलना
कान फूँकना—चेला बनाना, गुरुमंत्र देना
कान काटना—बढ़कर काम करना
कान खड़े होना—होशियार होना

➢ खून : खून खौलना—गुस्सा चढ़ना
खून सूखना—अधिक डर जाना
खून सवार होना—किसी को मार डालने के लिए तैयार होना
खून पीना—मार डालना, सताना
खून सफेद हो जाना—बहुत डर जाना

➢ गाल : गाल फुलाना—रूठना
गाल बजाना—डींग मारना
काल के गाल में जाना—मृत्यु के मुख में पड़ना

➢ गर्दन : गर्दन उठाना—प्रतिवाद करना
गर्दन पर सवार होना—पीछा न छोड़ना
गर्दन पर छुरी फेरना—अत्याचार करना

दाँत : दाँत काटी रोटी—गहरी दोस्ती
दाँत खट्टे करना—पस्त करना
दाँतों तले उँगली दबाना—दंग रह जाना
तालू में दाँत जमना—बुरे दिन आना
दाँत दिखाना—हार मानना, लाचारी प्रकट करना
दाँत जमाना—अधिकार पाने के लिए दृढ़ता दिखाना
दाँत गड़ाना—किसी वस्तु को पाने के लिए गहरी चाह करना
दाँत गिनना—उम्र बताना

नाक : नाक कटना—इज्जत जाना
नाक काटना—इज्जत नष्ट करना
नाक का बाल होना—प्रिय होना
नाकों चने चबवाना—खूब तंग करना
नाक पर मक्खी न बैठने देना—खरे स्वभाव का होना
नाक में दम करना—तंग करना
नाक रखना—प्रतिष्ठा रखना
नाक रगड़ना—मिन्नत करना
नाक में दम आना—तंग होना

मुँह : मुँह खुलना—उद्दण्डतापूर्वक बातें करना, बोलने का साहस होना
मुँह देना या डालना—किसी पशु का मुँह डालना
मुँह बन्द होना—चुप होना
मुँह में पानी भर आना—ललचना
मुँह से लार टपकना—बहुत लालची होना
मुँह काला होना—कलंक या दोष लगना
मुँह धो रखना—आशा न रखना *(व्यंग्य)*
मुँह पर *(या चेहरे पर)* हवाई उड़ना—घबराना
मुँहफट हो जाना—निर्लज्ज होना
मुँह फुलाना—रूठ जाना
मुँह बनाना—असंतुष्ट होना
मुँह मोड़ना—ध्यान न देना
मुँह लगाना—सिर चढ़ाना
मुँह रखना—लिहाज रखना
मुँहदेखी करना—पक्षपात करना
मुँह चुराना—संकोच करना
मुँह में लगाम न होना—जो मुँह में आवे सो कह देना
मुँह चाटना—खुशामद करना
मुँह भरना—घूस देना
मुँह लटकाना—रंज होना
मुँह आना—मुँह की बीमारी होना
मुँह की खाना—परास्त होना
मुँह सूखना—भयभीत होना
मुँह ताकना *(या जोहना)*—किसी का आसरा करना
मुँह में खून लगना—बुरी चाट पड़ना, चसका लगना
मुँह फेरना—अकृपा करना
मुँह मीठा करना—प्रसन्न करना
मुँह से फूल झड़ना—मधुर बोलना
मुँह में घी-शक्कर—किसी अच्छी भविष्यवाणी का अनुमोदन करना
मुँह से मुँह मिलाना—हाँ-में-हाँ मिलाना, बही-खाता आदि में हिसाब सही न लिखकर भी जमा-खर्च या उत्तर सही लिख देना

➢ सिर : सिर आँखों पर होना—सहर्ष स्वीकार होना
सिर उठाना—फुरसत पाना, विरोध में खड़ा होना
सिर पर चढ़ना—शोख होना
सिर ऊँचा करना—आदर का पात्र होना
सिर खाना—बकवास करना
सिर चढ़ाना—गुस्ताख करना
सिर झुकाना—आत्मसमर्पण करना
सिर पर पांव रखकर भागना—बहुत जल्द भाग जाना
सिर पड़ना—नाम लगना
सिर खुजलाना—बहाना करना
सिर धुनना—शोक करना
सिर पर भूत सवार होना—एक ही रट लगाना, धुन सवार होना
सिर फिर जाना—पागल हो जाना, घमंड होना
सिर चढ़कर बोलना—छिपाये न छिपना
सिर मारना—प्रयत्न करना
सिर पर खेलना—प्राण दे देना
सिर गंजा कर देना—मारने का भय दिखाना
सिर पर कफन बाँधना—शहादत के लिए तैयार होना

➢ हाथ : हाथ आना—अधिकार में आना
हाथ खींचना—अलग होना
हाथ खुजलाना—किसी को पीटने को जी चाहना
हाथ देना—सहायता देना
हाथ पसारना—माँगना
हाथ बँटाना—मदद करना
हाथ लगाना—आरंभ करना
हाथ मलना—पछताना
हाथ गरम करना—घूस देना
हाथ चूमना—हर्ष व्यक्त करना
हाथ धोकर पीछे पड़ना—जी-जान से लग जाना
हाथ पर हाथ धरे बैठना—बेकार बैठे रहना
हाथ फैलाना—याचना करना
हाथ मारना—उड़ा लेना, लाभ उठाना
हाथ साफ करना—मारना, उड़ा लेना, खूब खाना
हाथ धो बैठना—आशा खो देना
हाथापाई करना—मुठभेड़ होना
हाथ पकड़ना—किसी स्त्री को पत्नी बनाना, आश्रय देना

(B) अन्य मुहावरे (वर्णक्रमानुसार)

➢ अ : अक्ल का दुश्मन—मूर्ख
अक्ल चरने जाना—बुद्धि की कमी होना
अन्न-जल *(या दाना-पानी)* उठना—जीविका न रहना, रहने का संयोग न होना, तबादला या स्थान-परिवर्तन होना
अपना उल्लू सीधा करना—बेवकूफ बनाकर काम निकालना
अपने पाँव में आप कुल्हाड़ी मारना—जान-बूझकर आफत में पड़ना
अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना—अपनी तारीफ आप करना

अगिया बैताल—क्रोधी
अढ़ाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना—सबसे अलग रहना
अंगारों पर पैर रखना—अपने को खतरे में डालना, इतराना
अंगारों पर लोटना—क्रुद्ध होना
अक्ल का अजीर्ण होना—आवश्यकता से अधिक अक्ल होना *(व्यंग्य)*
अक्ल दंग होना—चकित होना
अक्ल का पुतला—बहुत बुद्धिमान
अन्त पाना—भेद पाना
अन्तर के पट खोलना—विवेक से काम लेना
अक्ल के घोड़े दौड़ाना—कल्पनाएँ करना
अपनी डफली आप बजाना—अपने मन की करना
अन्धे की लकड़ी—एकमात्र सहारा
अन्धों में काना राजा—अज्ञानियों में अल्पज्ञान वाले का सम्मान होना
अंक भरना—लिपट लेना
अंग टूटना—बहुत थक जाना
अंकुश देना—दबाव डालना
अंग में अंग चुराना—शरमाना
अंग-अंग फूले न समाना—आनंदविभोर होना
अंगार बनना—लाल होना, क्रोध करना
अँचरा पसारना—माँगना, याचना करना
अंडे का शाहजादा—अनुभवहीन
अटखेलियाँ सूझना—दिल्लगी करना
अँधेर नगरी—जहाँ धाँधली और अन्याय होता है
अँधेरे मुँह—प्रातः काल, तड़के
अक्ल पर पत्थर पड़ना—बुद्धिभ्रष्ट होना
अड़ियल टट्टू—रूक-रूक कर काम करना
अपना घर समझना—बिना संकोच व्यवहार
अपना-सा मुँह लेकर रह जाना—शर्मिन्दा होना
अपने पैरों पर खड़ा होना—स्वावलम्बी होना
अड़चन डालना—बाधा उपस्थित करना
अरमान निकालना—इच्छाएँ पूरी करना
अरण्य-चन्द्रिका—निष्प्रयोजन पदार्थ

➤ आ :

आकाश-पाताल एक करना—अत्यधिक उद्योग/परिश्रम करना
आकाश से तारे तोड़ना—कठिन कार्य करना
आकाश से बातें करना—बहुत ऊँचा होना
आकाश छूना—बहुत ऊँचा होना
आग का पुतला—क्रोधी
आग पर आग डालना—जले को जलाना
आग पर पानी डालना—क्रुद्ध को शांत करना, लड़नेवालों को समझाना-बुझाना
आग पानी का बैर—सहज वैर
आग बबूला होना—अति क्रुद्ध होना
आग बोना—झगड़ा लगाना
आग में घी डालना—झगड़ा बढ़ाना, क्रोध भड़काना
आग लगाकर तमाशा देखना—झगड़ा खड़ाकर उसमें आनंद लेना
आग लगाकर पानी को दौड़ना—पहले झगड़ा लगाकर फिर उसे शांत करने का यत्न करना
आग लगने पर कुआँ खोदना—पहले से करने के काम को ऐन वक्त पर करने चलना
आग से पानी होना—क्रोध करने के बाद शांत हो जाना
आग में कूद पड़ना—खतरा मोल लेना
आग उगलना—क्रोध प्रकट करना
आन की आन में—फौरन ही
आन रखना—मान रखना
आटे-दाल का भाव मालूम होना—सांसारिक कठिनाइयों का ज्ञान होना
आटे-दाल की फिक्र होना—जीविका की चिन्ता
आसमान दिखाना—पराजित करना
आठ-आठ आँसू रोना—विलाप करना
आड़े आना—नुकसानदेह
आड़े हाथों लेना—झिड़कना, बुरा-भला कहना
आस्तीन का साँप—कपटी मित्र

➤ इ, ई :

इधर-उधर करना—टालमटोल करना
इन्द्र का अखाड़ा—ऐश-मौज की जगह
ईंट से ईंट बजना—ध्वस्त होना
ईंट का जवाब पत्थर से देना—दुष्ट के साथ दुष्टता करना
ईद का चाँद होना—बहुत दिनों के बाद दिखाई पड़ना

➤ उ, ऊ :

उड़ती खबर—बेसिर पैर की बात
उलटी गंगा बहना—अनहोनी होना
उठते-बैठते—हर समय
उठ जाना—मर जाना
उठा रखना—बाकी रखना
उन्नीस-बीस होना—बहुत कम अन्तर होना
उल्लू सीधा करना—अपना स्वार्थ साधना
उलटे छूरे से मूड़ना—बेवकूफ बनाकर लूटना
ऊँचा-नीचा सुनाना—भला-बुरा कहना
ऊँचा सुनना—कम सुनना
उथल-पुथल मचाना—हलचल

➤ ए, ऐ :

एक से तीन बनाना—खूब नफा करना
एक लाठी से सबको हाँकना—उचित न्याय न करना
एक आँख से देखना—समान भाव रखना
एक आँख न भाना—तनिक भी अच्छा न लगना
एक न चलना—कोई उपाय सफल न होना
ऐंड़ी-चोटी का पसीना एक करना—खूब परिश्रम करना

➤ ओ, औ :

ओखली में सिर देना—इच्छापूर्वक किसी झंझट में पड़ना, कष्ट सहने पर उतारू होना
ओस के मोती—क्षणभंगुर

➤ क :

कलई खुलना—भेद प्रकट होना
कलम तोड़ना—खूब लिखना, अनूठी उक्ति लिखना, अनुपम रचना करना
कलेजा फटना—दिल पर बेहद चोट पहुँचना

करवटें बदलना—बैचैन रहना
काँटा बिछाना—अड़चन डालना
काला अक्षर भैंस बराबर—अनपढ़, निरा मूर्ख
काँटे बोना—बुराई करना
काँटो में घसीटना—संकट में डालना
कमर बाँधना/कसना—दृढ़-संकल्प करना
काठ मार जाना—स्तब्ध हो जाना
काम तमाम करना—मार डालना, खत्म करना
किनारा करना—अलग होना
कौड़ी के मोल बिकना—बहुत सस्ता बिकना
कागजी घोड़े दौड़ाना—व्यर्थ की लिखा-पढ़ी करना
किरकिरा होना—आनन्द बिगड़ जाना
कुत्ते की मौत मरना—बुरी तरह मरना
कोदो देकर पढ़ना—अधूरी शिक्षा पाना
कपास ओटना—सांसारिक काम-धन्धों में लगे रहना
कीचड़ उछालना—निन्दा करना
कोल्हू का बैल—खूब परिश्रमी
किताब का कीड़ा होना—बराबर पढ़ते रहना
कागज काला करना—बिना मतलब लिखना
कौड़ी का तीन समझना—तुच्छ समझना
कौड़ी काम का न होना—किसी काम का न होना
कौड़ी-कौड़ी जोड़ना—छोटी-मोटी सभी आय को कंजूसी के साथ बचाकर रखना
कचूमर निकालना—खूब पीटना
कटे पर नमक छिड़कना—विपत्ति के समय और दुःख देना
कन्नी काटना—आँख बचाकर भाग जाना
कोहराम मचाना—दुःखपूर्ण चीख-पुकार
किस खेत की मूली—अधिकारहीन, शक्तिहीन

➢ ख :

खम खाना—दबना, नष्ट होना
खटिया सेना—बीमार होना
खरी-खोटी सुनाना—भला-बुरा कहना
खाक में मिलना—बर्बाद होना
खार खाना—डाह करना
खेत आना—युद्ध में मारा जाना
खटाई में पड़ना—झमेले में पड़ा रहना
खा-पका जाना—बर्बाद करना
खेल खेलाना—परेशान करना
खाक छानना—भटकना, बहुत ढूँढ़ना
खुशामदी टट्टू—मुँहदेखी करना
खूँटे के बल कूदना—किसी के भरोसे पर जोर या जोश दिखाना
खून का प्यासा—जान मारने पर उतारू
ख्याली पुलाव—सिर्फ कल्पना करना

➢ ग :

गंगा लाभ होना—मर जाना
गला छूटना—पिंड छूटना, मुक्त होना
गीदड़भभकी—मन में डरते हुए भी ऊपर से दिखावटी क्रोध करना
गुड़ गोबर करना—बनाया काम बिगाड़ना
गुड़ियों का खेल—सहज काम
गुरुघंटाल—बहुत चालाक
गूलर का फूल—दुर्लभ चीज
गतालखाते में जाना—नष्ट होना
गाँठ में बाँधना—खूब याद रखना
गिरगिट की तरह रंग बदलना—एक बात पर न रहना
गागर में सागर भरना—अधिक बात थोड़े में कहना
गज भर की छाती होना—उत्साहित होना
गड़े मुर्दे उखाड़ना—दबी हुई बात फिर से उभारना
गाढ़े में पड़ना—संकट में पड़ना
गोटी लाल होना—लाभ होना
गुदड़ी का लाल—गरीब के घर गुणवान का होना
गुल खिलना—विचित्र घटना होना, बखेड़ा होना
गुस्सा पीना—क्रोध सहकर रह जाना
गढा खोदना—हानि पहुँचाने का उपाय करना
गूलर का कीड़ा—सीमित दायरे में भटकना

➢ घ :

घर का उजाला—कुलदीपक
घर बसना—घर में पत्नी का आना
घर का मर्द—बाहर डरपोक
घर का न घाट का—निकम्मा, कहीं का न रहना
घर का आदमी—कुटुम्ब, इष्ट-मित्र
घात पर चढ़ना—तत्पर रहना
घी के दिये जलाना—मनोरथ पूर्ण होना, आनन्द-मंगल होना
घाव पर नमक छिड़कना—दुःखित को और दुःख देना
घात लगाना—मौके की तलाश में रहना
घास खोदना—व्यर्थ काम करना
घाव हरा होना—भूले हुए दुःख को याद करना
घाट-घाट का पानी पीना—अच्छे-बुरे अनुभव रखना
घोड़े बेचकर सोना—बेफिक्र होकर सोना

➢ च :

चलता-पुर्जा—काफी चालाक
चाँद का टुकड़ा—बहुत सुन्दर
चाँद पर थूकना—किसी बड़े पुरुष को कलंक लगाना
चार चाँद लगाना—चौगुनी शोभा या इज्जत होना
चल निकलना—प्रगति करना, बढ़ना
चिकने घड़े पर पानी पड़ना—उपदेश का कोई प्रभाव न पड़ना
चोली-दामन का साथ—काफी घनिष्ठता
चुनौती देना—ललकारना
चुल्लू भर पानी में डूब मरना—अत्यन्त लज्जित होना
चैन की वंशी बजाना—सुख से समय बिताना
चोटी का पसीना एँड़ी तक बहना—खूब परिश्रम करना
चण्डूखाने की गप—झूठी गप
चार दिन की चाँदनी—क्षणिक सुख
चम्पत हो जाना—भाग जाना
चींटी के पर जमना—ऐसा काम करना जिसमें हानि या मृत्यु हो
चकमा देना—धोखा देना
चाचा बनाना—दण्ड देना
चरबी छाना—घमण्ड होना

चाँदी काटना—आनन्द से जीवन बिताना
चाँदी का जूता—रुपये का जोर
चूड़ियाँ पहनना—स्त्री की-सी असमर्थता प्रकट करना

➤ छ : छक्के छुड़ाना—खूब परेशान करना
छठी का दूध याद करना—सुख भूल जाना
छाती पर मूँग या कोदो दलना—कष्ट देना
छः पाँच करना—आनाकानी करना
छप्पर फाड़कर देना—बिना परिश्रम के देना, अनायास देना
छाती पर साँप लोटना—किसी के प्रति डाह
छोटी मुँह बड़ी बात—योग्यता से बढ़कर बोलना
छाती पर पत्थर रखना—असह्य दुःख को दिल में ही दबा लेना

➤ ज : जड़ उखाड़ना—पूर्ण नाश करना
जंगल में मंगल करना—शून्य स्थान को भी आनन्दमय कर देना
जबान में लगाम न होना—बिना सोचे-समझे बोलना
जी का जंजाल होना—अच्छा न लगना
जमीन का पैरों तले से निकल जाना—सन्नाटे में आना
जमीन चूमने लगा—धराशायी होना
जान खाना—तंग करना
जी टूटना—दिल टूटना
जी लगना—मन लगना
जी खट्टा होना—खराब अनुभव होना
जलती आग में तेल डालना—झगड़ा बढ़ाना
जहर उगलना—चुभनेवाली बात कहना
जीती मक्खी निगलना—जान-बूझकर बेईमानी या कोई अशोभनीय कार्य करना
जमीन-आसमान एक करना—बहुत उपाय करना
जी चुराना—कोशिश न करना
जान पर खेलना—प्राण संकट में डालना

➤ झ : झाड़ मारना—घृणा करना

➤ ट : टका-सा जवाब देना—फौरन अस्वीकार कर देना
टका-सा मुँह लेकर रह जाना—लज्जित हो जाना
टट्टी की आड़ में शिकार खेलना—छिपकर बुरा काम करना
टाँग अड़ाना—दखल देना
टाट उलटना—व्यापारी का अपने को दिवालिया घोषित कर देना
टेढ़ी खीर—कठिन काम
टें-टें-पों-पों—व्यर्थ हल्ला करना
टुकड़ों पर पलना—दूसरों की कमाई पर गुजारा करना

ठ : ठन-ठन गोपाल—मूर्ख, गरीब, कुछ नहीं
ठगा-सा—भौचक्का-सा
ठठेरे-ठठेरे बदला—समान बुद्धिवाले से काम पड़ना

ड : डूबते को तिनके का सहारा—संकट में पड़े को थोड़ी मदद
डींग हाँकना—शेखी बघारना
डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाना—अलग-अलग होकर काम करना
डोरी ढीली करना—सँभालकर काम न करना

➤ ढ : ढील देना—अधीनता में न रखना
ढेर करना—मारकर गिरा देना
ढेर होना—मर जाना
ढोल पीटना—जाहिर करना

➤ त : तह देना—दबा देना
तह-पर-तह देना—खूब खाना
तरह देना—ख्याल न करना
तंग करना—हैरान करना
तंग हाथ होना—निर्धन होना
तलवे चाटना या सहलाना—खुशामद करना
तिनके को पहाड़ करना—छोटी बात को बड़ी बनाना
तिल का ताड़ करना—छोटी बात को बड़ी बनाना
तीन तेरह करना या होना—नष्ट करना, तितर-बितर करना
तूती बोलना—प्रसिद्ध होना, खूब चलना
ताड़ जाना—समझ जाना
तुक में तुक मिलाना—खुशामद करना
तेवर बदलना—क्रोध करना
ताना मारना—व्यंग्य वचन बोलना
ताक में रहना—खोज में रहना
तारे गिनना—दुर्दशाग्रस्त होना, काफी चोट पहुँचना
तोते की तरह आँखें फेरना—बेमुरौवत होना

➤ थ : थाली का बैंगन होना—जिसका विचार स्थिर न रहे
थूककर चाटना—प्रतिज्ञा भंग करना
थू-थू करना—घृणा प्रकट करना

➤ द : दम मारना—विश्राम करना
दम में दम आना—राहत होना
दाल गलना—कामयाब होना, प्रयोजन सिद्ध होना
दूज का चाँद होना—कम दर्शन होना
दाँव खेलना—धोखा देना
दिन दूनी रात चौगुनी—खूब उन्नति होना
दिनों का फेर होना—बुरे दिन आना
दीदे का पानी ढल जाना—बेशर्म होना
दिमाग खाना—बकवास करना
दिल बढ़ाना—साहस भरना
दिल टूटना—साहस टूटना
दूकान बढ़ाना—दूकान बंद करना
दूध के दाँत न टूटना—ज्ञान और अनुभव का न होना
दूध का दूध पानी का पानी—निष्पक्ष न्याय
दायें-बायें देखना—सावधान होना
दिल दरिया होना—उदार होना
दो कौड़ी का आदमी—गरीब, नालायक
दो नाव पर पैर रखना—इधर भी, उधर भी, दो पक्षों से मेल रखना

➤ ध : धता बताना—टालना, भागना
धरती पर पाँव न रखना—घमंडी होना

धाक जमाना—रोब होना
धुँआ-सा मुँह होना—लज्जित होना
धूप में बाल सफेद करना—बिना अनुभव प्राप्त किये बूढ़ा होना
धूल छानना—मारे-मारे फिरना
धोबी का कुत्ता—निकम्मा
धोती ढीली होना—डर जाना

➢ न :
नजर पर चढना—पसंद आ जाना
नाच नचाना—तंग करना
नुक्ताचीनी करना—दोष दिखाना, आलोचना करना
निन्यानबे के फेरे में पड़ना—धन जमा करने के चक्कर में पड़ना
नौ दो ग्यारह होना—भाग जाना
नजर चुराना—आँख चुराना
नमक अदा करना—फर्ज पूरा करना, प्रत्युपकार करना
नमक-मिर्चा लगाना—बढ़ा-चढ़ाकर कहना
नशा उतरना—घमण्ड उतरना
नदी-नाव संयोग—ऐसी भेंट/मुलाकात जो कभी इत्तिफाक से हो जाय
नसीब चमकना—भाग्य चमकना
नींद हराम होना—तंग आना, सो न सकना
नेकी और पूछ-पूछ—बिना कहे ही भलाई करना

➢ प :
पगड़ी उतारना—इज्जत उतारना
पगड़ी रखना—मान रखना
पाकेट गरम करना—घूस देना
पहलू बचाना—कतराकर निकल जाना
पते की कहना—रहस्य या चुभती हुई काम की बात कहना
पानी उतारना—बेइज्जत करना
पानी का बुलबुला—क्षणभंगुर वस्तु
पानी देना—तर्पण करना, सींचना
पानी न माँगना—तत्काल मर जाना
पानी पर नींव डालना—ऐसी वस्तु को आधार बनाना जो टिकाऊ न हो
पानी-पानी होना—अधिक लज्जित होना
पानी-पानी करना—लज्जित करना
पानी पीकर जाति पूछना—कोई काम कर चुकने के बाद उसके औचित्य का निर्णय करना
पानी रखना—मर्यादा की रक्षा करना
पानी में आग लगाना—असभव कार्य करना
पानी लगना *(कहीं का)*—स्थान विशेष के बुरे वातावरण का असर होना
पानी करना—सरल कर देना
पानी लेना—अप्रतिष्ठित करना
पानी की तरह बहना—अन्धाधुन्ध करना
पानी फिर जाना—बर्बाद होना
पापड़ बेलना—दुःख से दिन काटना
पोल खुलना—रहस्य प्रकट करना
पौ बारह होना—खूब लाभ होना
पेट में चूहे कूदना या दौड़ना—भूख से परेशान होना
पीठ ठोंकना—साहस बँधाना
पुरानी लकीर का फकीर होना/पुरानी लकीर पीटना—पुरानी चाल मानना
पाँचो उँगलियाँ घी में—पूरा लाभ होना
पैर पकड़ना—क्षमा चाहना
पीठ दिखलाना—पलायन

➢ फ :
फूला न समाना—काफी खुश होना
फूलना-फलना—उन्नति करना
फूटी आँखों न भाना—तनिक भी न सुहाना
फफोले फोड़ना—वैर साधना
फबतियाँ कसना—ताना मारना
फूँक-फूँक कर कदम रखना—सावधान होकर काम करना
फूल झड़ना—मधुर बोलना

➢ ब :
बगुला भगत—कपटी
बगलें झाँकना—बचाव का रास्ता ढूँढ़ना
बन्दरघुड़की देना—धमकाना
बहती गंगा में हाथ धोना—वह मौका हाथ से न जाने देना जिससे सभी लाभ उठाते हों
बाग-बाग होना—खुश होना
बाँसो उछलना—काफी खुश होना
बाजार गर्म होना—सरगर्मी होना, तेजी होना
बात का धनी—वादे का पक्का, दृढ़प्रतिज्ञ
बात की बात में—अतिशीघ्र
बात चलाना—चर्चा करना
बात न पूछना—निरादार करना
बात पर न जाना—विश्वास न करना
बात बनाना—बहाना करना
बात रहना—वचन पूरा करना
बातों में उड़ाना—हँसी-मजाक में उड़ा देना
बात पी जाना—बर्दाश्त करना, सुनकर भी ध्यान न देना
बायें हाथ का खेल—सरल होना
बाल की खाल निकालना—छिद्रान्वेषण करना
बालू की भीत—शीघ्र नष्ट होनेवाली चीज
बेसिर-पैर की बात—निराधार बात
बोलबाला होना—प्रसिद्ध होना

➢ भ :
भाड़े का टट्टू—गया-बीता
भींगी बिल्ली बनना—लाचार होना
भेड़ियाधसान होना—देखा-देखी करना
भाड़ झोंकना—समय नष्ट करना
भूत चढ़ना या सवार होना—किसी बात की जिद पकड़ना, रंज के मारे आगा-पीछा भूल जाना
भारी लगना—असह्य होना
भनक पड़ना—उड़ती हुई खबर सुनना

➢ म :
मर मिटना—बर्बाद होना
मांस नोचना—तंग करना
मिट्टी के मोल बिकना—बहुत सस्ता होना
मुट्ठी गरम करना—घूस देना
मोम हो जाना—खूब नरम बन जाना
मन फट जाना—विराग होना, फीका पड़ना

मिट्टी में मिलना—नष्ट होना
मन चलना—इच्छा होना
मन के लड्डू खाना—व्यर्थ की आशा पर प्रसन्न होना
मैदान साफ होना—मार्ग में बाधा न होना
मीन-मेख करना—व्यर्थ तर्क
मैदान मारना—विजय प्राप्त करना
मन खट्टा होना—मन फिर जाना
मिट्टी पलीद करना—जलील करना
मोटा आसामी—मालदार आदमी
मुठभेड़ होना—मुकाबला होना

➢ य : यश गाना—प्रशंसा करना, एहसान मानना
यश मानना—कृतज्ञ होना
युग-युग—बहुत दिनों तक
युगधर्म—समय के अनुसार चाल या व्यवहार
युगांतर उपस्थित करना—किसी पुरानी प्रथा को हटाकर उसके स्थान पर नई प्रथा चलाना

➢ र : रंग जमना—धाक जमना
रंग में भंग होना—आनन्द में बिघ्न पड़ना
रंग उतरना—फीका होना
रंग लाना—प्रभाव दिखाना
रंग बदलना—परिवर्तन होना
रंगा सियार—ढोंगी
रफूचक्कर होना—भाग जाना
रसातल चला जाना—एकदम नष्ट हो जाना
राई से पर्वत होना—छोटे से बड़ा होना
रीढ़ टूटना—आधार समाप्त होना
रोटियाँ तोड़ना—बैठे-बैठे खाना
रोना रोना—दुखड़ा सुनाना

➢ ल : लँगोटी पर *(में)* फाग खेलना—अल्पसाधन होते हुए भी विलासी होना
लाख से लीख होना—कुछ न रह जाना
लाले पड़ना—मुँहताज होना
लुटिया डुबोना—काम बिगाड़ना
लोहा बजना—युद्ध होना
लेने के देने पड़ना—लाभ के बदले हानि
लँगोटिया यार—बचपन का दोस्त
लट्टू होना—मुग्ध होना
लोहे के चने चबाना—कठिन काम करना
लग्गी से घास डालना—दूसरों पर टालना
लल्लो-चप्पो करना—खुशामद करना, चिरौरी करना
लहू का घूंट पीना—बर्दाश्त करना
लाल-पीला होना—रंज होना
लोहा मानना—श्रेष्ठता स्वीकार करना

➢ व : वचन हारना—जबान हारना
वचन देना—जबान देना
वक्त पर काम आना—विपत्ति में मदद करना

➢ श : शर्म से गड़ जाना—अधिक लज्जित होना
शर्म से पानी-पानी होना—बहुत लजाना
शान में बट्टा लगना—इज्जत में धब्बा लगना
शेखी बघारना—डींग हाँकना
शैतान की आँत—बहुत बड़ा
शैतान की खाला—झगड़ालू स्त्री
शिकार हाथ लगना—असामी मिलना
श्री गणेश करना—आरंभ करना

➢ ष : षट्राग *(खटराग)* अलापना—रोना-गाना, बखेड़ा शुरू करना, झंझट करना

➢ स : सब्ज बाग दिखाना—बड़ी-बड़ी आशाएँ दिलाना
सिक्का जमाना—प्रभुत्व जमाना
सितारा चमकना या बुलंद होना—भाग्योदय होना
सिप्पा भिड़ाना—उपाय करना
सात-पाँच करना—आगे पीछे करना
सुबह का चिराग होना—समाप्ति पर आना
सैकड़ों घड़े पानी पड़ना—लज्जित होना
सन्नाटे में आना/सकते में आना—स्तब्ध हो जाना
सब धान बाईस पसेरी—सबके साथ एक-सा व्यवहार, सब-कुछ बराबर समझना

➢ ह : हाथ के तोते उड़ना—अचानक शोक-समाचार सुनकर स्तब्ध हो जाना
होश उड़ जाना—घबड़ा जाना
हक्क-बक्का रह जाना—भौंचक रह जाना
हजामत बनाना—ठगना
हवा लगना—संगति का प्रभाव *(बुरे अर्थ में)*
हवा खिलाना—कहीं भेजना
हड्डी-पसली दुरुस्त करना—खूब मारना
हड़प जाना—हजम कर जाना
हल्का होना—तुच्छ होना, कम होना
हजामत बनाना—ठगना, लूटना
हल्दी-गुड़ पिलाना—खूब मारना
हवा पर उड़ना—इतराना
हथियार डाल देना—हार मान लेना
हृदय पसीजना—दयार्द्र होना, द्रवित होना

मिथकीय/ऐतिहासिक नामों से संबद्ध मुहावरे

अलाउद्दीन का चिराग—आश्चर्यजनक वस्तु
इन्द्र का अखाड़ा —रास-रंग से भरी सभा
इन्द्रासन की परी —बहुत सुंदर स्त्री
कर्ण का दान —महादान.
कारूं का खजाना —अतुल धनराशि
कुबेर का धन/कोश —अतुल धनराशि
कुम्भकर्णी नींद —बहुत गहरी, लापरवाही की नींद
गोबर गणेश —मुर्ख, बुद्धू, निकम्मा
गोरख धंधा —बखेड़ा, झंझट
चाणक्य नीति —कुटिल नीति
छुपा रुस्तम —असाधारण किन्तु अप्रसिद्ध गुणी
तीसमार खां बनना —अपने को बहुत शूरवीर समझना और शेखी बघारना
तुगलकी फरमान —जनता की सुविधा-असुविधा का ख्याल किये बिना जारी किया गया शासनादेश
दूर्वासा का रूप —बहुत क्रोध करना
दुर्वासा का शाप —उग्र शाप

धन-कुबेर —अधिक धनवान
नादिरशाही हुक्म —मनमाना हुक्म
नारद मुनि —इधर-उधर की बातें कर कलह कराने वाला व्यक्ति
परशुराम का कोप —अत्यधिक क्रोध
पांचाली चीर —बड़ी लंबी, समाप्त न होनेवाली वस्तु
ब्रह्म पाश/फांस —अत्यधिक मजबूत फंदा
भगीरथ प्रयत्न —बहुत बड़ा प्रयत्न
भीष्म प्रतिज्ञा —कठोर प्रतिज्ञा
महाभारत —भयंकर झगड़ा, भयंकर युद्ध
महाभारत मचना —खूब लड़ाई-झगड़ा होना
महाभारत मचाना —खूब लड़ाई-झगड़ा करना
यमलोक भेजना —मार डालना
राम बाण —तुरन्त प्रभाव दिखाने या कभी न चूकने वाली चीज
राम राज्य —ऐसा राज्य जिसमें बहुत सुख हो
राम कहानी —अपनी कहानी, आपबीती
राम जाने —मुझे नहीं मालूम, एक प्रकार की शपथ खाना
राम नाम सत्त हो जाना —मर जाना
रामबाण औषध —अचूक दवा
राम राम करना —नमस्कार करना, भगवान का नाम जपना
लंका काण्ड —भयंकर विनाश
लंका ढहाना —किसी का सत्यानाश कर देना
लक्ष्मण रेखा —अलंघ्य सीमा या मर्यादा
विभीषण —घर का भेदी/भेदिया
शेखचिल्ली के इरादे —हवाई योजना, अमल में न आने वाले (कार्य रूप में परिणत न होने वाले) इरादे
श्री गणेश करना —आरंभ होना
सनीचर सवार होना —दुर्भाग्य आना; बुरे दिन आना
सुदामा की कुटिया —गरीब की झोंपड़ी
हम्मीर हठ —अनूठी आन
हातिमताई —दानशील, परोपकारी

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. आसमान पर चढ़ाना का अर्थ है—
(a) अत्यधिक अभिमान करना
(b) कठिन काम के लिए प्रेरित करना
(c) बहुत शोर करना (d) अत्यधिक प्रशंसा करना

2. आँख की किरकिरी होना का अर्थ है—
(a) अप्रिय लगना (b) धोखा देना
(c) कष्टदायक होना (d) बहुत प्रिय होना

3. लाल-पीला होना का अर्थ है—
(a) मुद्राएँ बनाना (b) क्रोध करना
(c) तेवर बदलना (d) रंग बदलना

4. सिर हथेली पर रखना का अर्थ है—
(a) वीरता का प्रदर्शन करना (b) पराजय स्वीकार कर लेना
(c) मरने के लिए तैयार होना (d) अहं का विसर्जन करना

5. अंतर के पट खोलना का अर्थ है—
(a) प्रशंसा करना (b) भेद खोलना
(c) विवेक से काम लेना (d) अपमानित करना
(रेलवे, 1997)

6. अंगूठी का नग होना का अर्थ है—
(a) बहुत सुन्दर (b) छिपा हुआ
(c) बहुत प्रिय (d) अनुरूप जोड़ा होना
(रेलवे, 1997)

7. काम काज में कोरा होना का अर्थ है—
(a) काम न करना (b) काम समाप्त करना
(c) काम पूरा न करना (d) काम न जानना
(लेखाकार परीक्षा, 1997)

8. जुबान पर लगाम न होना का अर्थ है—
(a) स्पष्टवादी होना
(b) अनावश्यक रूप से स्पष्टवादी होना
(c) सदैव कठोर वचन कहना
(d) सर्वत्र अपनी वाग्मिता दिखाना *(असिस्टेंट ग्रेड, 1997)*

9. टस से मस न होना का अर्थ है—
(a) कठोर हृदय होना
(b) अनुनय-विनय से न पसीजना
(c) जगह न बदलना (d) धैर्यपूर्वक सहन करना
(बी० एड०, 1997)

10. टाँग अड़ाना का अर्थ है—
(a) बदनाम करना (b) बिना कारण लड़ना
(c) गलत काम करना (d) अवरोध पैदा करना
(लेखाकार परीक्षा, 1997)

11. मुँह का निवाला का अर्थ है—
(a) स्वादिष्ट एवं प्रियकर (b) अत्यन्त प्रिय
(c) बहुत आसान काम (d) बहुत कठिन काम
(असिस्टेंट ग्रेड, 1997)

12. समुद्र मंथन करना का अर्थ है—
(a) घोर तप करना (b) दृढ़ प्रतिज्ञा करना
(c) उद्देश्य को प्राप्त करना (d) कठोर परिश्रम करना
(रेलवे, 1997)

13. खो देना के लिए सही मुहावरा है—
(a) हाथ मलना (b) हाथ कटाना
(c) हाथ साफ करना (d) हाथ धोना
(एल० आई० सी०, 1997)

14. विरोध करना के लिए सही मुहावरा है—
(a) सिर कटाना (b) सिर चढ़ाना
(c) सिर झुकाना (d) सिर उठाना
(एल० आई० सी०, 1997)

15. बुरी तरह हारना के लिए सही मुहावरा है—
(a) मुँह खून लगना (b) मुँह ताकना
(c) मुँह की खाना (d) मुँह उतरना
(एल० आई० सी०, 1997)

16. नाश कर देना के लिए मुहावरा है—
(a) पानी में आग लगाना (b) पानी-पानी होना
(c) पानी फेर देना (d) पानी भरना
(एल० आई० सी०, 1997)

17. अगर-मगर करना का अर्थ है—
(a) इधर की बात उधर करना (b) कपट करना
(c) व्यर्थ समय गँवाना (d) बहाने बनाना
(असिस्टेंट ग्रेड, 1998)

18. अग्नि परीक्षा देना का अर्थ है—
(a) कठोर तप करना (b) साहसपूर्वक सामना करना
(c) दृढ़ निश्चय करना (d) कठिन परिस्थिति में पड़ना
(बी० एड०, 1998)

19. छाती पर मूँग दलना का अर्थ है—
(a) कठिन काम करना (b) बात-बात पर लड़ना
(c) कर्जा वसूल करना (d) पास रहकर दुःख देना
(ग्राम पंचायत परीक्षा, 1998)

20. तीर मारना का अर्थ है—
(a) युद्ध-कला मेंनिपुण होना (b) शिकार करना
(c) बड़ा काम करना (d) धन कमाना *(रेलवे, 1998)*

21. तेली का बैल होना का अर्थ है—
(a) बुरी तरह काम में लगे रहना
(b) काम करने से बहाना करना
(c) मन लगाकर काम नहीं करना
(d) निर्धन होना
(ग्राम पंचायत परीक्षा, 1998)

22. युद्ध में मृत्यु पाना के लिए सही मुहावरा है—
(a) काम आना (b) काम तमाम करना
(c) देर हो जाना (d) डेरा उठ जाना
(बी० एड०, 1998)

23. मालूम होता है तुम्हारे यहाँ रहने का संयोग समाप्त हो गया है। रेखांकित वाक्यांश के लिए सही मुहावरा है—
(a) नाता टूट जाना (b) डेरा उठ जाना
(c) अन्न जल उठ जाना (d) हाथ तंग होना
(रेलवे, 1998)

24. अरुण ने परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए बहुत परिश्रम किया। रेखांकित वाक्यांश के लिए सही मुहावरा है—
(a) जान पर खेलना (b) लोहे के चने चबाना
(c) एंड़ी चोटी का जोर लगाना (d) लुटिया डुबाना *(रेलवे, 1998)*

25. भ्रष्ट नेताओं के कारण कांग्रेस चुनाव हार गयी। रेखांकित वाक्यांश के लिए सही मुहावरा है—
(a) अन्तर पट खुलना (b) लुटिया डूब जाना
(c) अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना
(d) भूत भगाना *(रेलवे, 1998)*

26. आँख का नीर (पानी) ढल जाना का अर्थ है—
(a) मरते समय आँसू बहाना (b) निर्लज्ज हो जाना
(c) निरुत्साहित होना (d) निष्प्रभ होना
(एस० एस० सी०, 1999)

27. कान फूँकना का अर्थ है—
(a) चौकन्ना करना (b) चुगली करना
(c) जादू-टोना करना (d) दीक्षित करना
(एस० एस० सी०, 1999)

28. कच्चे घड़े पानी धरना का अर्थ है—
(a) कमजोर से मदद की अपेक्षा करना
(b) ठीक ढंग से काम न करना
(c) कठिन काम करना
(d) मूर्खतापूर्ण कार्य करना *(अनुवादक परीक्षा, 1999)*

29. छक्के छुड़ाना का अर्थ है—
(a) क्रिकेट के खेल का एक नियम
(b) हराना
(c) घायल करना (d) परेशान करना *(रेलवे, 1999)*

30. चाँदी का ऐनक लगाना का अर्थ है—
(a) घूस लेकर ही किसी का काम करना
(b) खूब लाभ होना
(c) किसी-न-किसी प्रकार प्रतिष्ठा बनाए रखना
(d) बहुत अमीर होना *(अनुवादक परीक्षा, 1999)*

31. दाम लगाना का अर्थ है—
(a) मूल्य आँकना (b) पूरी कीमत देना
(c) लागत मात्र देना (d) मोल-भाव करना
(एस० एस० सी०, 1999)

32. तोते की तरह आँखें फेरना का अर्थ है—
(a) पुराने संबंधों को एकदम भुला देना
(b) किसी रोग से बुरी तरह ग्रस्त होना
(c) दोस्त के साथ विश्वासघात करना
(d) बिना सोचे-समझे निर्णय लेना *(एस० एस० सी०, 1999)*

33. दिन को दिन और रात को रात न समझना का अर्थ है—
(a) सूर्योदय से रात्रि-पर्यन्त अथक कार्य करना
(b) वास्तविकता को समझने की कोशिश ही न करना
(c) यथार्थ से अवगत न होना
(d) कोई बड़ा काम करते समय अपने सुख आराम का कुछ भी ध्यान न रखना *(अनुवादक परीक्षा, 1999)*

34. पौ बारह होना का अर्थ है—
(a) दाव हारना (b) कार्य सिद्ध होना
(c) लाभ ही लाभ होना (d) सुबह हो जाना *(रेलवे, 1999)*

35. मखमली जूते मारना का अर्थ है—
(a) मीठी बातों से लज्जित करना
(b) व्यंग्य करना
(c) धनी व्यक्ति को प्रताड़ित करना
(d) अपमानित करना *(एस० एस० सी०, 1999)*

36. रीढ़ टूटना का अर्थ है—
(a) आधार ही न रहना (b) निराश हो जाना
(c) कमजोर होना (d) दुर्दशाग्रस्त होना
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

37. शैतान की आँत का अर्थ है—
(a) अत्यन्त धूर्त व्यक्ति (b) अत्यन्त नगण्य वस्तु
(c) बहुत लंबी वस्तु (d) अत्यन्त लाभदायक वस्तु
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

38. सुबह शाम करना का अर्थ है—
(a) समय व्यतीत करना (b) आवारागर्दी करना
(c) टाल-मटोल करना (d) दिन-रात काम करना
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

39. सूरत नजर आना का अर्थ है—
(a) गुण प्रकट होना (b) वास्तविकता का पता चलना
(c) बहुत दिनों के बाद दिखाई पड़ना
(d) उपाय सूझना *(एस० एस० सी०, 1999)*

40. हाथ ऊँचा होना का अर्थ है—
(a) युद्ध में विजय प्राप्त कर लेना
(b) दान आदि के लिए मन में उदारता का भाव होना
(c) अत्यधिक प्रतिष्ठित
(d) किसी को मारने के लिए हाथ उठाना
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

41. बरसात में मच्छर नाक में दम कर देते हैं। रेखांकित मुहावरे का अर्थ है—
(a) सांस न लेने देना (b) सोने न देना
(c) बहुत परेशान करना (d) प्रदूषण फैलाना
(बी० एड०, 1999)

42. अंगूठा चूमना का अर्थ है—
(a) इंकार करना (b) तिरस्कार करना
(c) नासमझी दिखाना (d) खुशामद करना
(अनुवादक परीक्षा, 2000)

43. अक्ल का पुतला का अर्थ है—
(a) बहुत बुद्धिमान (b) बहुत चतुर
(c) अत्यन्त धूर्त (d) अत्यन्त मूर्ख
(अनुवादक परीक्षा, 2000)

44. गागर में सागर भरना का अर्थ है—
(a) सरस दोहों की रचना करना
(b) मूर्खतापूर्ण काम करना
(c) असंभव काम करना (d) थोड़े शब्दों में अधिक कहना
(अनुवादक परीक्षा, 2000, सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

45. चादर के बाहर पैर पसारना का अर्थ है—
(a) आराम की नींद सोना (b) बढ़ा-चढ़ाकर बातें करना
(c) आत्मप्रशंसा करना
(d) क्षमता से अधिक व्यय करना *(अनुवादक परीक्षा, 2000)*

46. जौहर खुलना का अर्थ है—
(a) क्रुद्ध होना (b) परीक्षा होना
(c) जौहर टूट जाना (d) भेद का पता लगना
(रेलवे, 2000)

47. ढपोर शंख का अर्थ है—
(a) सब संबंध छोड़ देना (b) काँपने लगना
(c) विख्यात होना (d) बेवकूफ *(रेलवे, 2000)*

48. दिल पक जाना का अर्थ है—
(a) अच्छा लगना (b) प्रेम न होना
(c) अत्यन्त पीड़ित होना (d) कष्ट पहुँचना *(रेलवे, 2000)*

49. नौ-दो ग्यारह होना का अर्थ है—
(a) मिलकर कार्य करना (b) धोखे में पड़ना
(c) निशाना बन जाना (d) रफू-चक्कर होना
(रेलवे, 2000)

50. नाक पर सुपारी तोड़ना का अर्थ है—
(a) इज्जत उतार देना (b) घृणा प्रकट करना
(c) बहुत परेशान करना (d) असंभव कार्य करना
(अनुवादक परीक्षा, 2000)

51. पेट में दाढ़ी होना का अर्थ है—
(a) भेद न लगने देना
(b) वस्तु का सही स्थान पर न होना
(c) अप्राकृतिक व्यवहार होना
(d) छोटी उम्र में ही बुद्धिमान होना *(अनुवादक परीक्षा, 2000)*

52. पानी पीकर घर पूछना का अर्थ है—
(a) अनोखा काम करना (b) विपरीत काम करना
(c) काम निकलने के बाद सोचना
(d) आराम से विचार करना *(अनुवादक परीक्षा, 2000)*

53. विहंगम-दृष्टि का अर्थ है—
(a) सरसरी दृष्टि (b) गहरी दृष्टि
(c) सम्यक् दृष्टि (d) पैनी दृष्टि
(अनुवादक परीक्षा, 2000)

54. भयभीत होना के लिए सही मुहावरा है—
(a) कलेजे पर साँप लोटना (b) कलेजे पर पत्थर पड़ना
(c) कलेजा धक-धक करना (d) कलेजा मुँह को आना
(बी० एड०, 2000)

55. किसी वस्तु का आवश्यकता से कम होना के लिए सही मुहावरा है—
(a) अँगुली चाटना (b) ऊँट के मुँह में जीरा
(c) ओस के चाटे प्यास न बुझना
(d) एक अनार सौ बीमार
(बी० एड०, 2000)

56. पुलिस के द्वारा की गई नाकेबन्दी की वजह से डाकुओं की····· रिक्त स्थान के लिए उपयुक्त मुहावरा है—
(a) नानी मर गई (b) ऐसी-तैसी हो रही है
(c) जान के लाले पड़ गए हैं
(d) तरकीब काम नहीं कर रही है
(रेलवे, 2000)

57. आधा तीतर आधा बटेर का अर्थ है—
(a) उचित सामंजस्य का अभाव (b) छोटा-बड़ा होना
(c) रंग बिरंग होना (d) बेमेल तथा बेढंगा होना
(उ० प्र० निर्वाचन आयोग परीक्षा, 2001)

58. गूलर का फूल होना का अर्थ है—
(a) कभी-कभी दिखाई देना (b) स्पष्ट दिखाई देना
(c) कभी भी दिखाई न देना (d) व्यर्थ की बात करना
(उ० प्र० निर्वाचन आयोग परीक्षा, 2001)

59. घाट-घाट का पानी पीना का अर्थ है—
(a) बहुत अनुभवी होना (b) बहुत यात्रा करना
(c) अधिक लोगों से मित्रता करना
(d) रोजगार के नये-नये अवसर तलाश करना
(उ० प्र० निर्वाचन आयोग परीक्षा, 2001)

60. टिप्पस लगाना का अर्थ है—
(a) झूठी बातें मिलाना (b) सिफारिश करना
(c) निशाना लगाना (d) रिश्वत देना
(उ० प्र० निर्वाचन आयोग परीक्षा, 2001)

61. मधु जहर का घूँट पी कर रह गई। रेखांकित मुहावरे का अर्थ है—
(a) कड़वी दवा पीना (b) क्रोध को नियंत्रित करना
(c) अपमानित होना (d) व्यंग्य सहना
(लेखाकार परीक्षा, 2001)

62. वीरु और जय में चोली-दामन का साथ है। रेखांकित मुहावरे का अर्थ है—
(a) एक-दूसरे पर निर्भरता (b) एक-दूसरे से शत्रुता
(c) एक-दूसरे से मित्रता (d) एक-दूसरे से स्पर्धा
(लेखाकार परीक्षा, 2001)

63. राहुल ने तो आग में घी डालने का निश्चय किया। रेखांकित मुहावरे का अर्थ है—
(a) यज्ञ करना (b) खुशी मनाना
(c) रोशनी करना (d) उत्तेजित करना
(लेखाकार परीक्षा, 2001)

64. इस वर्ष मेरा बैल भी मर गया और चोरी भी हो गई, इसी को कहते हैं·····। रिक्त स्थान के लिए उपयुक्त मुहावरे का चयन कीजिए ।
(a) दाल में कुछ काला है (b) कंगाली में आटा गीला
(c) काला अक्षर भैंस बराबर (d) एक पंथ दो काज
(लेखाकार परीक्षा, 2001)

65. पुत्र की हरकतों से तंग आकर पिता ने उसे ····· । रिक्त स्थान के लिए उपयुक्त मुहावरे का चयन कीजिए।
(a) कहीं का न रखा (b) ठिकाने लगा दिया
(c) तिलांजलि दे दी (d) घर से निकाल दिया
(रेलवे, 2001)

66. दुःखी सुदामा को द्वारका में आया देख श्री कृष्ण ने उन्हें·····। रिक्त स्थान के लिए उपयुक्त मुहावरे का चयन कीजिए।
(a) ईद का चाँद बनाया (b) तारे तोड़कर ला दिए
(c) छाती से लगाकर रखा (d) सिर आँखों पर बिठाया
(रेलवे, 2001)

67. अंधे की लकड़ी का अर्थ है—
(a) गँवार व्यक्ति (b) अनपढ़ व्यक्ति
(c) एकमात्र सहारा (d) बिल्कुल असमर्थ होना
(बैंक परीक्षा, 2002)

68. अंडे का शहजादा का अर्थ है—
(a) कमजोर व्यक्ति (b) चालाक व्यक्ति
(c) अनुभवी व्यक्ति (d) अनुभवहीन व्यक्ति
(बैंक परीक्षा, 2002)

69. अक्ल का दुश्मन का अर्थ है—
(a) मित्र (b) शत्रु
(c) महापंडित (d) महामूर्ख *(बैंक परीक्षा, 2002)*

70. आगा-पीछा करना का अर्थ है—
(a) चापलूसी करना (b) उलट-फेर करना
(c) हिचकना (d) दुविधा में पड़ना
(बैंक परीक्षा, 2002)

71. आँखें बिछाना का अर्थ है—
(a) प्रेम होना (b) झिड़की देना
(c) प्रतीक्षा करना (d) आदर-सत्कार करना
(बैंक परीक्षा, 2002)

72. आकाश से बातें का अर्थ है—
(a) घमण्डी होना (b) बहुत ऊँचा होना
(c) आकाशवाणी होना (d) अपने-आप बोलते रहना
(रेलवे, 2002)

73. काँटा बोना का अर्थ है—
(a) भेद प्रकट करना (b) हानि पहुँचाना
(c) संदेह करना (d) प्यार करना
(बैंक परीक्षा, 2002)

74. कलम तोड़ना का अर्थ है—
(a) क्रोध दिखाना (b) बहुत सुन्दर लिखना
(c) भद्दी चीजें लिखना (d) बहुत मेहनत करना
(बैंक परीक्षा, 2002)

75. कौड़ी को न पूछना का अर्थ है—
(a) मदद न करना (b) निमंत्रण न देना
(c) निकम्मा समझना (d) खतरे से बचाना
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

76. गाल बजाना का अर्थ है—
(a) पिटाई करना (b) क्रोधित होना
(c) डींग हाँकना (d) गाली देना*(बैंक परीक्षा, 2002)*

77. घुटने टेक देना का अर्थ है—
(a) विवाह करना (b) याद करना
(c) हार मानना (d) कायर होना
(बैंक परीक्षा, 2002)

78. घर बसाना का अर्थ है—
(a) घर बनाना (b) घर में रहना
(c) विवाह करना (d) मदद करना
(बैंक परीक्षा, 2002)

79. घुल्लू भर पानी में डूबना का अर्थ है—
(a) बहुत अधिक हानि होना (b) बहुत अधिक दुःखी होना
(c) बहुत अधिक लज्जित होना (d) बहुत अधिक निराश होना
(बैंक परीक्षा, 2002)

80. चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना का अर्थ है—
(a) तेजी से चलना (b) घबरा जाना
(c) जवाब न देना (d) क्रोधित होना
(बैंक परीक्षा, 2002)

81. ठन ठन गोपाल का अर्थ है—
(a) कंगाल (b) बेकार
(c) धनवान (d) समय आने पर मुकर जाना
(बैंक परीक्षा, 2002)

82. तालु में जीभ न लगना का अर्थ है—
(a) भूख से तड़पना (b) प्यास से परेशान होना
(c) चुप न रहना (d) स्वाद न मिलना
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

83. बाँसों उछलना का अर्थ है—
(a) अभद्र व्यवहार करना (b) अहंकार होना
(c) पागल होना (d) प्रसन्न होना *(रेलवे, 2002)*

84. भाड़ झोंकना का अर्थ है—
(a) अनाज भूनना (b) काम बिगाड़ना
(c) मामूली कमाई करना (d) व्यर्थ समय नष्ट करना
(रेलवे, 2002)

85. मूँछ मुंडाना का अर्थ है—
(a) बुरा-भला सुनाना (b) अहंकारी होना
(c) बनावटी बातें करना (d) हार मानना
(बैंक परीक्षा, 2002)

86. लंगोटी में फाग खेलना का अर्थ है—
(a) पहलवानी करना (b) व्यायाम करना
(c) ब्रह्मचारी होना (d) दरिद्रता में आनन्द मनाना
(रेलवे, 2002)

87. सीधे मुँह बात न करना का अर्थ है—
(a) नाराज होना (b) हार मानना
(c) फटकार सुनाना (d) घमण्ड करना
(बैंक परीक्षा, 2002)

88. अब सुनीता के हाथ पीले करने का समय आ गया है। रेखांकित मुहावरे का अर्थ है—
(a) सजाने का (b) विवाह करने का
(c) प्यार करने का (d) अत्यधिक पिटाई करने का
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

89. मेरा बेटा आशीष मेरी आँखों का तारा है। रेखांकित मुहावरे का अर्थ है—
(a) बहुत सुन्दर (b) बहुत बुद्धिमान
(c) बहुत प्रिय (d) बहुत समझदार
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

90. अवसरवादी व्यक्ति हमेशा अपना उल्लू सीधा करने का प्रयास करता है। रेखांकित मुहावरे का अर्थ है—
(a) लोक व्यवहार के विरुद्ध (b) स्वार्थ पूर्ति
(c) विश्वासघात (d) बात बदलने का
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

91. कपटी मित्र के लिए सही मुहावरा है—
(a) दाँत काटी रोटी (b) आस्तीन का साँप
(c) अक्ल की दुम (d) आबनूस का कुन्दा
(बैंक परीक्षा, 2002)

92. बात तय थी, लेकिन ऐन मौके पर उसके इनकार करने से सारा काम रूक गया। रेखांकित वाक्यांश के लिए उपयुक्त मुहावरा है—
(a) अक्ल पर पत्थर पड़ना (b) गुड़ गोबर करना
(c) खटाई में पड़ना (d) कल पड़ना
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

93. मुंशी प्रेमचन्द उपन्यास सम्राट कहे जाते हैं, कथा क्षेत्र में उनका लेखन अति उत्तम है। रेखांकित वाक्यांश के लिए उपयुक्त मुहावरा है—
(a) टोपी उछालना (b) कलम तोड़ना
(c) कान काटना (d) तूती बोलना
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

94. बच्चों को जरा-सी शरारत पर विवेक ने……। रिक्त स्थान के लिए उपयुक्त मुहावरे का चयन कीजिए।
(a) घर सिर पर उठा लिया (b) पीठ दिखा दी
(c) नाकों चने चबवा दिए (d) हवाई किले बना लिए
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

95. अंधों में काना राजा का अर्थ है—
(a) अज्ञानियों में अल्पज्ञान वाले का सम्मान होना
(b) विद्वानों की सभा में मूर्ख का सम्मान होना
(c) मूर्खों द्वारा विद्या की पूजा करना
(d) दुष्टों की सभा में सज्जन का सम्मान होना
(पी० सी० एस०, 2003)

96. अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना का अर्थ है—
(a) अनाड़ीपन करना (b) आत्महत्या करना
(c) उपकार न मानना
(d) स्वयं अपने को हानि पहुँचाना *(पी० सी० एस०, 2003)*

97. अधेर नगरी का अर्थ है—
(a) जहाँ अंधेरा हो (b) राज्यविहीन जगह
(c) अन्याय की जगह
(d) जहाँ छोटे-बड़े का ख्याल न रखा जाता हो *(पी० सी० एस०, 2003)*

98. आग में घी डालना का अर्थ है—
(a) शुभ अवसर पर अड़चन डालना
(b) यज्ञ करना
(c) किसी के क्रोध को भड़काना
(d) मूल्यवान वस्तु को नष्ट करना *(पी० सी० एस०, 2003)*

99. आड़े समय पर काम आना का अर्थ है—
(a) मुसीबत में सहायक होना (b) इनकार करना
(c) हत्या करना (d) सिफारिश करना *(पी० सी० एस०, 2003)*

100. ईमान बेचना का अर्थ है—
(a) धोखा देना (b) गलत काम करना
(c) याराना तोड़ना (d) अपने कर्तव्य से हट जाना *(पी० सी० एस०, 2003)*

101. काठ का उल्लू का अर्थ है—
(a) निर्जीव (b) गुणवान
(c) मूर्ख (d) अत्यधिक सरल *(पी० सी० एस०, 2003)*

102. द्रोपदी का चीर का अर्थ है—
(a) नारी का अपमान करना (b) शर्मनाक कार्य
(c) कभी समाप्त न होना (d) इनमें से कोई नहीं *(पी० सी० एस०, 2003)*

103. भगीरथ प्रयत्न का अर्थ है—
(a) साधारण प्रयत्न (b) असाधारण प्रयत्न
(c) लगातार प्रयत्न करते रहना
(d) कठिन तपस्या करना *(पी० सी० एस०, 2003)*

104. भीष्म प्रतिज्ञा का अर्थ है—
(a) दिखाने मात्र की प्रतिज्ञा (b) कठोर प्रतिज्ञा
(c) दृढ़ प्रतिज्ञा (d) इनमें से कोई नहीं

105. खून पानी होना का अर्थ है—
(a) पानी का खून में प्रवेश करना
(b) कोई असर न होना
(c) भाई का खून करना
(d) पानी पीते ही खून की उल्टी करना *(रेलवे, 2004)*

106. अनड़ियों में बल पड़ना का अर्थ है—
(a) बहुत रोना (b) बहुत हँसना
(c) बीमार होना (d) दौड़-धूप करना *(बी० एड०, 2004)*

107. अँगूठा दिखाना का अर्थ है—
(a) इंकार करना (b) मजाक उड़ाना
(c) प्रसन्नता प्रकट करना (d) नृत्य की एक मुद्रा *(बी० एड०, 2004)*

108. उल्लू सीधा करना का अर्थ है—
(a) ठगना (b) उल्लू पालना
(c) खुशामद करना (d) अपना काम निकालना *(रेलवे, 2004)*

109. माथा ठनकना का अर्थ है—
(a) भयभीत हो जाना (b) हिम्मत आ जाना
(c) क्रोध आना (d) अनिष्ट की आशंका होना *(रेलवे, 2004)*

110. ठीकरा फूटना का अर्थ है—
(a) जोर-जोर से हँसना (b) दुःखी होना
(c) किसी के सर झूठा दोष लगाना
(d) बर्तन तोड़ना *(रेलवे, 2004)*

111. उलट-फेर होना का अर्थ है—
(a) करवट लेना (b) हिंसा होना
(c) अपेक्षा के विरुद्ध काम करना
(d) परिवर्तन होना *(बी० एड०, 2004)*

112. पेट में दाढ़ी होना का अर्थ है—
(a) धूर्त प्राणी (b) रोगग्रसित होना
(c) पेट तक लंबी दाढ़ी होना
(d) देखने में सीधा, किन्तु चालाक होना *(बी० एड०, 2005)*

113. पापड़ बेलना का अर्थ है—
(a) पापड़ बनाना (b) मुसीबत उठाना
(c) खाना बनाना (d) पतली रोटी बनाना *(बी० एड०, 2005)*

114. कान का कच्चा होना का अर्थ है—
(a) कम सुनना (b) सुनी बात पर विश्वास करना
(c) दूसरे की बात न मानना (d) कान का कमजोर होना *(बी० एड०, 2005)*

115. उन्नीस-बीस होना का अर्थ है—
(a) बहुत कम अंतर होना (b) बहुत अंतर होना
(c) हिसाब जोड़ना (d) भाग जाना *(बी० एड०, 2005)*

116. पानी न माँगना का अर्थ है—
(a) मर्यादा की रक्षा करना (b) तत्काल मर जाना
(c) असंभव कार्य करना (d) इज्जत न खोना *(अनुवादक परीक्षा, 2005)*

117. कलेजा होना का अर्थ है—
(a) द्रवित होना (b) विवश होना
(c) विकल होना (d) हिम्मत होना *(अनुवादक परीक्षा, 2005)*

118. दाँतों तले उँगली दबाना का अर्थ है—
(a) बहुत पछताना (b) चुप रह जाना
(c) हैरान होना (d) दर्द महसूस करना *(रेलवे, 2005, बी० एड०, 2008)*

119. आँखों पर चर्बी छाना का अर्थ है—
(a) धोखा खाना (b) कुछ समझ न आना
(c) अभिमान करना (d) निर्लज्ज होना

120. कूपमंडूक होना का अर्थ है—
(a) घर में ही रहना (b) कुएँ में गिरना
(c) अत्यन्त सीमित ज्ञान होना (d) मूर्ख होना

121. गुड़ गोबर करना का अर्थ है—
(a) अच्छी चीज को बुरा कहना (b) बनाया काम बिगाड़ना
(c) अच्छा और बुरा मिलना (d) इनमें से कोई नहीं

122. न तीन में न तेरह में का अर्थ है—
(a) बहुत उपयोगी होना (b) नष्ट कर देना
(c) बुद्धिहीन होना (d) किसी काम का न होना

123. 'कान काटना' मुहावरे का अर्थ है—
(a) कटखना होना (b) चतुर होना
(c) मूर्ख होना (d) विनम्र होना *(मध्य प्रदेश प्री बी.एड. परीक्षा, 200)*

124. 'तलवार की धार पर चलना' का अर्थ है—
(a) नुकीला होना (b) पराजित कर देना
(c) ईर्ष्या करना (d) कठिन कार्य करना

125. 'चिकना घड़ा होना' का क्या तात्पर्य है ?
(a) चिकना होना (b) सम्पृक्त होना
(c) निर्लज्ज होना (d) भयभीत होना
(मध्य प्रदेश प्री बी एड. परीक्षा, 2007)

126. 'उड़ती चिड़ियों के पंख गिनना' का अर्थ है—
(a) होशियार होना (b) अनुभव होना
(c) बतलबी होना (d) मूर्ख होना
(मध्य प्रदेश प्री बी एड. परीक्षा, 2007)

127. 'सफेद झूठ' का अर्थ है—
(a) सच होना (b) पूर्णतः असत्य
(c) अभिमान (d) शिष्ट
(मध्य प्रदेश प्री बी एड. परीक्षा, 2007)

128. 'पत्थर की लकीर' होने का अर्थ है—
(a) कठोर होना (b) कठिन होना
(c) अमिट होना (d) मिट जाना
(मध्य प्रदेश प्री बी.एड. परीक्षा, 2007)

129. 'डोरे डालना' का अर्थ क्या है—
(a) प्रेम में फँसना (b) दुःखी करना
(c) बाँधना (d) फन्दे डालना
(मध्य प्रदेश प्री बी.एड. परीक्षा, 2007)

130. 'उँगली पर नाचना' का अर्थ होगा—
(a) अपनी इच्छानुसार चलाना
(b) किसी की इच्छानुसार चलना
(c) थोड़ा-सा सहारा पाना
(d) आरोप लगाना (उत्तर प्रदेश बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

131. 'हाथ का मैल' का अर्थ है—
(a) तुच्छ वस्तु (b) कीमती वस्तु
(c) महंगी वस्तु (d) भारी वस्तु
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

132. 'डींग हाँकना' का अर्थ है—
(a) शेखी बघारना (b) बुराई करना
(c) निन्दा करना (d) हँसी उड़ाना
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

133. निम्न में कौन-सा मुहावरा नहीं है ?
(a) आस्तीन का साँप (b) उल्लू बनाना
(c) कमर टूटना (d) दूर के ढोल सुहावने
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

134. 'आँखें चुराना' का अर्थ है—
(a) कतराना (b) धोखा देना
(c) ठगना (d) चाल चलना
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

135. 'माथा ठनकना' का अर्थ है—
(a) उदास होना (b) नुकसान होना
(c) सिर दर्द होना (d) शक हो जाना
(राजस्थान बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

136. 'आसमान से बातें करना' का अर्थ है—
(a) पागल हो जाना (b) तेज दौड़ना
(c) बहुत ऊँचा (d) बहुत परिश्रम करना
(राजस्थान बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

137. 'हाथ को हाथ न सूझना' का अर्थ है—
(a) भ्रम में पड़ जाना (b) खोये रहना
(c) घना अँधेरा होना (d) चोट लगना
(राजस्थान बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

138. 'थाली का बैंगन' से क्या अभिप्राय है ?
(a) सिद्धान्तहीन व्यक्ति (b) गोल मटोल
(c) अधिक चिकना (d) चौड़ा होना
(राजस्थान बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

उत्तरमाला

1. (d)	2. (a)	3. (b)	4. (c)	5. (c)	6. (d)	7. (d)	8. (b)	9. (b)	10. (d)	11. (c)	12. (d)
13. (d)	14. (d)	15. (c)	16. (c)	17. (d)	18. (d)	19. (d)	20. (c)	21. (a)	22. (a)	23. (c)	24. (c)
25. (b)	26. (b)	27. (d)	28. (b)	29. (b)	30. (c)	31. (a)	32. (a)	33. (d)	34. (c)	35. (a)	36. (a)
37. (c)	38. (c)	39. (c)	40. (b)	41. (c)	42. (d)	43. (a)	44. (d)	45. (d)	46. (d)	47. (d)	48. (c)
49. (d)	50. (c)	51. (d)	52. (c)	53. (c)	54. (c)	55. (b)	56. (b)	57. (d)	58. (a)	59. (a)	60. (b)
61. (b)	62. (a)	63. (d)	64. (b)	65. (c)	66. (d)	67. (c)	68. (d)	69. (d)	70. (c)	71. (c)	72. (b)
73. (b)	74. (b)	75. (c)	76. (c)	77. (c)	78. (c)	79. (c)	80. (b)	81. (a)	82. (c)	83. (d)	84. (d)
85. (d)	86. (d)	87. (d)	88. (b)	89. (c)	90. (b)	91. (b)	92. (b)	93. (d)	94. (a)	95. (a)	96. (d)
97. (c)	98. (c)	99. (a)	100. (d)	101. (c)	102. (c)	103. (b)	104. (c)	105. (b)	106. (b)	107. (a)	108. (d)
109. (d)	110. (c)	111. (d)	112. (d)	113. (b)	114. (b)	115. (a)	116. (b)	117. (d)	118. (c)	119. (c)	120. (c)
121. (b)	122. (d)	123. (b)	124. (d)	125. (c)	126. (b)	127. (b)	128. (c)	129. (a)	130. (b)	131. (a)	132. (a)
133. (d)	134. (a)	135. (d)	136. (c)	137. (c)	138. (a)						

★★★

16 लोकोक्तियाँ/कहावतें
(Proverbs)

'लोकोक्ति' का अर्थ है 'लोक में प्रचलित उक्ति'। जब कोई पूरा कथन किसी प्रसंग विशेष में उद्धृत किया जाता है तो लोकोक्ति कहलाता है। इसी को 'कहावत' कहते हैं। उदाहरण :

'उस दिन बात-ही बात में राम ने कहा, हाँ, मैं अकेला ही कुँआ खोद लूँगा। इस पर सबों ने हँसकर कहा, व्यर्थ बकबक करते हो, अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता'। यहाँ 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता' लोकोक्ति का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है 'एक व्यक्ति के करने से कोई कठिन काम पूरा नहीं होता'।

मुहावरा और लोकोक्ति में अंतर

दोनों में अंतर इस प्रकार हैं—

(i) मुहावरा वाक्यांश होता है, जबकि लोकोक्ति एक पूरा वाक्य। दूसरे शब्दों में, मुहावरों में उद्देश्य और विधेय नहीं होता, जबकि लोकोक्ति में उद्देश्य और विधेय होता है।

(ii) मुहावरा वाक्य का अंश होता है, इसलिए उनका स्वतंत्र प्रयोग संभव नहीं है; उनका प्रयोग वाक्यों के अंतर्गत ही संभव है। लोकोक्ति एक पूरे वाक्य के रूप में होती है, इसलिए उनका स्वतंत्र प्रयोग संभव है।

(iii) मुहावरे शब्दों के लाक्षणिक या व्यंजनात्मक प्रयोग हैं जबकि लोकोक्तियाँ वाक्यों के लाक्षणिक या व्यंजनात्मक प्रयोग हैं।

लोकोक्तियाँ/कहावतें एवं उनके अर्थ

- अशर्फी की लूट और कोयले पर छाप—
  मूल्यवान वस्तुओं को नष्ट करना और तुच्छ को सँजोना
- अधजल गगरी छलकत जाय—
  थोड़ी विद्या, धन या बल होने पर इतराना
- अंधों के आगे रोना, अपना दीदा खोना—
  निर्दयी या मूर्ख के आगे दुःखड़ा रोना बेकार होता है
- अपनी करनी पार उतरनी— *किये का फल भोगना*
- अपना ढेंढर न देखे और दूसरे की फूली निहारे—
  अपना दोष न देखकर दूसरों का दोष देखना
- अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग—
  परस्पर संगठन या मेल न रखना
- आप डूबे जग डूबा—
  जो स्वयं बुरा होता है, दूसरों को भी बुरा समझता है
- आग लगन्ते झोंपड़ा जो निकले सो लाभ—
  नष्ट होती हुई वस्तुओं में से जो निकल आये वह लाभ ही है
- आग लगाकर जमालो दूर खड़ी—
  झगड़ा लगाकर अलग हो जाना
- आगे नाथ न पीछे पगहा—
  अपना कोई न होना, घर का अकेला होना
- आगे कुआँ, पीछे खाई— *हर तरफ हानि की आशंका*
- आँख का अंधा नाम नयनसुख— *गुण के विरुद्ध नाम*
- आधा तीतर आधा बटेर— *बेमेल स्थिति*
- आप भला तो जग भला— *स्वयं अच्छे तो संसार अच्छा*
- आम का आम गुठली का दाम—*सब तरह से लाभ-ही-लाभ*
- आये थे हरि-भजन को ओटन लगे कपास—
  करने को तो कुछ आये और करने लगे कुछ और
- इतनी-सी जान, गज भर की जबान—
  छोटा होना पर बढ़-बढ़कर बोलना
- ईंट का जवाब पत्थर— *दुष्ट के साथ दुष्टता करना*
- इस हाथ दे, उस हाथ ले— *कर्मों का फल शीघ्र पाना*
- ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया—*कहीं सुख, कहीं दुःख*
- उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे—
  अपराधी ही पकड़नेवाले को डाँट बताये
- उद्योगिनं पुरुषसिंहनुपैति लक्ष्मी—
  उद्योगी को ही धन मिलता है
- ऊपर-ऊपर बाबाजी, भीतर दगाबाजी—
  बाहर से अच्छा, भीतर से बुरा
- ऊँची दूकान फीका पकवान—*बाहर ढकोसला भीतर कुछ नहीं*
- ऊँचे चढ़ के देखा, तो घर- घर एकै लेखा—सभी एक समान
- ऊँट किस करवट बैठता है— *किसकी जीत होती है*
- ऊँट के मुँह में जीरा— *जरूरत से बहुत कम*
- ऊँट बहे और गदहा पूछे कितना पानी—
  जहाँ बड़ों का ठिकाना नहीं, वहाँ छोटों का क्या कहना
- ऊधो का लेना न माधो का देना— *लटपट से अलग रहना*
- एक पंथ दो काज— *एक नहीं, दो लाभ*
- एक तो करेला आप तीता दूजे नीम चढ़ा—
  बुरे का और बुरे से संग होना
- एक अनार सौ बीमार— *एक वस्तु को सभी चाहनेवाले*
- एक तो चोरी दूसरे सीनाजोरी— *दोष करके न मानना*
- एक म्यान में दो तलवार—*एक स्थान पर दो उग्र विचार वाले*
- ओछे की प्रीत बालू की भीत— *नीचों का प्रेम क्षणिक*
- ओस चाटने से प्यास नहीं बूझती—
  अधिक कंजूसी से काम नहीं चलता
- कबीरदास की उलटी बानी, बरसे कंबल भींगे पानी—
  प्रकृतिविरुद्ध कार्य
- कहाँ राजा भोज कहाँ भोजवा (गंगू) तेली—
  छोटे का बड़े के साथ मिलान करना
- कहे खेत की, सुने खलिहान की—
  हुक्म कुछ और करना कुछ और
- कहीं का ईंट कहीं का रोड़ा, भानुमति ने कुनबा जोड़ा—
  इधर-उधर से सामान जुटाकर काम करना
- काला अक्षर भैंस बराबर— *निरा अनपढ़*

➤ काबुल में क्या गदहे नहीं होते— *अच्छे-बुरे सभी जगह हैं*

➤ का वर्षा जब कृषि सुखाने—
मौका बीत जाने पर कार्य करना व्यर्थ है

➤ काठ की हाँड़ी दूसरी बार नहीं चढ़ती—
कपट का फल अच्छा नहीं होता

➤ किसी का घर जले, कोई तापे—
दूसरे का दुःख में देखकर अपने को सुखी मानना

➤ खरी मजूरी चोखा काम—
अच्छे मुआवजे में ही अच्छा फल प्राप्त होना

➤ खोदा पहाड़ निकली चुहिया— *कठिन परिश्रम, थोड़ा लाभ*

➤ खेत खाये गदहा, मार खाये जोलहा—
अपराध करे कोई, दण्ड मिले किसी और को

➤ गाँव का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध—
बाहर के व्यक्तियों का सम्मान, पर अपने यहाँ के व्यक्तियों की कद्र नहीं

➤ गुड़ खाय गुलगुले से परहेज— *बनावटी परहेज*

➤ गोद में छोरा नगर में ढिंढोरा—
पास की वस्तु का दूर जाकर ढूँढ़ना

➤ गाछे कटहल, ओठे तेल—
काम होने के पहले ही फल पाने की इच्छा

➤ गरजे सो बरसे नहीं— *बकवादी कुछ नहीं करता*

➤ गुरु गुड़, चेला चीनी—
गुरु से शिष्य का ज्यादा काबिल हो जाना

➤ घड़ी में घर जले, नौ घड़ी भद्रा—
हानि के समय सुअवसर-कुअवसर पर ध्यान न देना

➤ घर पर फूस नहीं, नाम धनपत—
गुण कुछ नहीं, पर गुणी कहलाना

➤ घर का भेदी लंका ढाए— *आपस की फूट से हानि होती है*

➤ घर की मुर्गी दाल बराबर—
घर की वस्तु का कोई आदर नहीं करना

➤ घर में दिया जलाकर मसजिद में जलाना—
दूसरे को सुधारने के पहले अपने को सुधारना

➤ घी का लड्डू टेढ़ा भला—
लाभदायक वस्तु किसी तरह की क्यों न हो

➤ चोर की दाढ़ी में तिनका—
जो दोषी होता है वह खुद डरता रहता है

➤ चूहे घर में दण्ड पेलते हैं— *अभाव-ही-अभाव*

➤ चमड़ी जाय, पर दमड़ी न जाय— *महा कंजूस*

➤ ठठेरे-ठठेरे बदलीअल— *चालाक को चालक से काम पड़ना*

➤ ताड़ से गिरा तो खजूर पर अटका—
एक खतरे में से निकलकर दूसरे खतरे में पड़ना

➤ तीन कनौजिया, तेरह चूल्हा— *जितने आदमी उतने विचार*

➤ तेली का तेल जले और मशालची का सिर दुखे (छाती फाटे)—*खर्च किसी का हो और बुरा किसी और को मालूम हो*

➤ तन पर नहीं लत्ता पान खाय अलबत्ता— *शेखी बघारना*

➤ तीन लोक से मथुरा न्यारी— *निराला ढंग*

➤ तुम डाल-डाल तो हम पात-पात—
किसी की चाल को खूब समझते हुए चलना

➤ थूक कर चाटना ठीक नहीं—
देकर लेना ठीक नहीं, वचन-भंग करना, अनुचित

➤ दमड़ी की हाँड़ी गयी, कुत्ते की जात पहचानी गयी—
मामूली वस्तु में दूसरे की पहचान

➤ दमड़ी की बुलबुल, नौ टका दलाली—
काम साधारण, खर्च अधिक

➤ दाल-भात में मूसलचन्द— *बेकार दखल देना*

➤ दुधारु गाय की दो लात भी भली—
जिससे लाभ होता हो, उसकी बातें भी सह लेनी चाहिए

➤ दूध का जला मट्ठा भी फूँक-फूँक कर पीता है—
एक बार धोखा खा जाने पर सावधान हो जाना

➤ दूर का ढोल सुहावना— *दूर से कोई चीज अच्छी लगती है*

➤ देशी मुर्गी, विलायती बोल— *बेमेल काम करना*

➤ धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का—
निकम्मा, व्यर्थ इधर-उधर डोलनेवाला

➤ नक्कारखाने में तूती की आवाज— *सुनवाई न होना*

➤ न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी—
न बड़ा प्रबंध होगा न काम होगा

➤ रोजा बख्शाने गये, नमाज गल पड़ी— *लाभ के बदले हानि*

➤ न देने के नौ बहाने— *न देने के बहुत-से बहाने*

➤ न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी—
झगड़े के कारण को नष्ट करना

➤ नदी में रहकर मगर से वैर—
जिसके अधिकार में रहना, उसी से वैर करना

➤ नाच न जाने आँगन टेढ़ा—
खुद तो ज्ञान नहीं रखना और सामग्री या दूसरों को दोष देना

➤ नौ की लकड़ी, नब्बे खर्च— *काम साधारण, खर्च अधिक*

➤ नौ नगद, न तेरह उधार—
अधिक उधार की अपेक्षा थोड़ा लाभ अच्छा

➤ नीम हकीम खतरे जान— *अयोग्य से हानि*

➤ नाम बड़े, पर दर्शन थोड़े— *गुण से अधिक बड़ाई*

➤ पढ़े फारसी बेचे तेल देखो यह किस्मत (या कुदरत) का खेल— *भाग्यहीन होना*

➤ पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं— *पराधीनता में सुख नहीं*

➤ पहले भीतर तब देवता-पितर— *पेट-पूजा सबसे प्रधान*

➤ पूछी न आछी, मैं दुलहिन की चाची—
जबरदस्ती किसी के सर पड़ना

➤ पराये धन पर लक्ष्मीनारायण—
दूसरे का धन पाकर अधिकार जमाना

➤ पानी पीकर जात पूछना—
कोई काम कर चुकने के बाद उसके औचित्य पर विचार करना

➤ पंच परमेश्वर— *पाँच पंचों की राय*

➤ नाचे कूदे तोड़े तान, ताको दुनिया राखे मान—
आडम्बर दिखानेवाला मान पाता है

➤ बूड़ा वंश कबीर का उपजा पूत कमाल—
श्रेष्ठ वंश में बुरे का पैदा होना

➤ बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद—
मूर्ख गुण की कद्र करना नहीं जानता

➢ बाँझ क्या जाने प्रसव की पीड़ा—
जिसको दुःख नहीं हुआ है वह दूसरे के दुःख को समझ नहीं सकता

➢ बिल्ली के भाग्य से छींका (सिकहर) टूटा—
संयोग अच्छा लग गय

➢ बोये पेड़ बबूल के आम कहाँ से होय—
जैसी करनी, वैसी भरनी

➢ बैल का बैल गया नौ हाथ का पगहा भी गया—
बहुत बड़ा घाटा

➢ बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी—
भय की जगह पर कब तक रक्षा होगी

➢ बेकार से बेगार भली—
चुपचाप बैठे रहने की अपेक्षा कुछ काम करना

➢ बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ, छोटे मियाँ सुभान अल्लाह—
बड़ा तो जैसा है, छोटा उससे बढ़कर है

➢ भइ गति साँप-छछूँदर केरी— दुविधा में पड़ना

➢ भैंस के आगे बीन बजावे, भैंस रही पगुराय—
मूर्ख को गुण सिखाना व्यर्थ है

➢ भागते भूत की लँगोटी ही सही—
जाते हुए माल में से जो मिल जाय वही बहुत है

➢ मियाँ की दौड़ मस्जिद तक—
किसी के कार्यक्षेत्र या विचार शक्ति का सीमित होना

➢ मन चंगा तो कठौती में गंगा—हृदय पवित्र तो सब कुछ ठीक

➢ मुँह में राम, बगल में छुरी— कपटी

➢ मान न मान मैं तेरा मेहमान—जबरदस्ती किसी के गले पड़ना

➢ मेढ़क को भी जुकाम— ओछे का इतराना

➢ मार-मार कर हकीम बनाना— जबरदस्ती आगे बढ़ाना

➢ माले मुफ्त दिले बेरहम—
मुफ्त मिले पैसे को खर्च करने में ममता न होना

➢ मियाँ बीवी राजी तो क्या करेगा काजी—
जब दो व्यक्ति परस्पर किसी बात पर राजी हों तो दूसरे को इसमें क्या

➢ मोहरों की लूट, कोयले पर छाप—
मूल्यवान वस्तुओं को छोड़कर तुच्छ वस्तुओं पर ध्यान देना

➢ मानो तो देव, नहीं तो पत्थर— विश्वास ही फलदायक

➢ मँगनी के बैल के दाँत नहीं देखे जाते—
मुफ्त मिली चीज पर तर्क व्यर्थ

➢ रस्सी जल गयी पर ऐंठन न गयी—
बुरी हालत में पड़कर भी अभिमान न त्यागना

➢ रोग का घर खाँसी, झगड़े घर हाँसी— अधिक मजाक बुरा

➢ लश्कर में ऊँट बदनाम—दोष किसी का, बदनामी किसी की

➢ लूट में चरखा नफा— मुफ्त में जो हाथ लगे, वही अच्छा

➢ लेना-देना साढ़े बाईस— सिर्फ मोल-तोल करना

➢ सब धान बाईस पसेरी— अच्छे बुरे सबको एक समझना

➢ सत्तर चूहे खाके बिल्ली चली हज को—
जन्म भर बुरा करके अन्त में धर्मात्मा बनना

➢ साँप मरे पर लाठी न टूटे—
अपना काम हो जाय पर कोई हानि भी न हो

➢ सीधी उँगली से घी नहीं निकलता—
सिधाई से काम नहीं होता

➢ सारी रामायण सुन गये, सीता किसकी जोय (जोरू)—
सारी बात सुन जाने पर साधारण सी बात का भी ज्ञान न होना

➢ हाथ कंगन को आरसी क्या— प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण क्या

➢ हाथी चले बाजार, कुत्ता भूँके हजार—
उचित कार्य करने में दूसरों की निन्दा की परवाह नहीं करनी चाहिए

➢ हाथी के दाँत दिखाने के और, खाने के और—
बोलना कुछ, करना कुछ

➢ हँसुए के ब्याह में खुरपे का गीत— बेमौका

➢ हंसा थे सो उड़ गये, कागा भये दीवान— नीच का सम्मान

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. जैसी करनी, वैसी भरनी का अर्थ है—
   (a) कार्य के अनुसार परिणाम मिलता है
   (b) जो जितना उधार लेता है, उसे उतना ही लौटाना पड़ता है
   (c) बुरे काम का बुरा परिणाम होता है
   (d) अच्छा फल चाहने वाले को बुरा काम छोड़ देना चाहिए
2. चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए का अर्थ है—
   (a) पैसा ही माँ-बाप होना (b) अत्यधिक कंजूस होना
   (c) मक्खीचूस होना (d) मर जाए पर पैसा न जाए
3. अब पछताए क्या होत जब चिड़िया चुग गई खेत का अर्थ है—
   (a) समय रहते काम करना चाहिए
   (b) समय पर काम न करने से बाद में पछताना पड़ता है
   (c) नष्ट फसल की रखवाली बेकार है
   (d) अपने सामान की रक्षा पहले ही करनी चाहिए
4. छछून्दर के सिर में चमेली का तेल का अर्थ है—
   (a) दान के लिए सुपात्र न होना
   (b) गंजे व्यक्ति के सिर पर सुगन्धित तेल लगाना
   (c) बिल्कुल अनपढ़ व्यक्ति को धन मिलना
   (d) अयोग्य व्यक्ति को अच्छा पद मिलना
5. माँगे भीख पूछे गाँव की जमा का अर्थ है—
   (a) अपनी असलियत भूलकर बात करना
   (b) भीख माँगकर गुजारा करना
   (c) ग्राम समाज की भलाई करना
   (d) इनमें से कोई नहीं (रेलवे, 1997)
6. कोई इर घाट तो कोई बीर घाट का अर्थ है—
   (a) बार-बार कथन बदलना (b) ताल-मेल न होना
   (c) तितर-बितर होना (d) बहुत चालाक होना (रेलवे, 1998)
7. अपनी डफली अपना राग का अर्थ है—
   (a) स्वतंत्र होना (b) अपना दुखड़ा रोना
   (c) संगठन का अभाव
   (d) सबका अपने-अपने मन के अनुसार चलना (रेलवे, 1999)
8. हँसुए के ब्याह में खुरपी का गीत का अर्थ है—
   (a) शादी का गीत गाना (b) जश्न मनाना
   (c) असंगत बातें करना (d) निचले स्तर का कार्य करना (रेलवे, 1999)

9. जाके पाँव न फटे बिवाई सो क्या जाने पीर पराई का का अर्थ है—
(a) दयालु होना (b) कठोर होना
(c) दूसरे के कष्ट को अनुभव करना
(d) जिसके ऊपर बीतती है वही जानता है *(रेलवे, 1998)*

10. जस दूल्हा तस बनी बराता का अर्थ है—
(a) संगठन से ही कार्य सिद्ध होता है
(b) सुन्दर वस्तु के साथ ही सुन्दर वस्तु का मेल होना
(c) सभी साथी एक ही जैसे
(d) बेढंगा होना *(रेलवे, 1998)*

11. आडम्बर बहुत, किन्तु वास्तविकता कुछ नहीं के लिए सही लोकोक्ति है—
(a) आँख का अंधा नाम नयनसुख
(b) ऊँची दुकान फीका पकवान
(c) ऊँट के मुँह में जीरा
(d) खोदा पहाड़ निकली चुहिया *(बी० एड०, 1998)*

12. चोर-चोर·····भाई
(a) सगे (b) चचेरे (c) मौसेरे (d) ममेरे *(बी० एड०, 1998)*

13. ऊँट के मुँह में ·····
(a) जीरा (b) केला (c) बन्दर (d) मिर्च *(रेलवे, 1998)*

14. ·····के अंधे को हरा ही हरा नजर आता है।
(a) बचपन (b) सावन (c) बात (d) आँख *(रेलवे, 1998)*

15. कर·····तो हो भला
(a) सेवा (b) भला (c) बला (d) बुरा *(रेलवे, 1998)*

16. अंधों में·····राजा
(a) लंगड़ा (b) लूला (c) काना (d) पहलवान *(रेलवे, 1998)*

17. घर का भेदी ·····ढाए
(a) बाबरी (b) अयोध्या (c) लंका (d) कहर *(रेलवे, 1998)*

18. नाच न जाने·····टेढ़ा
(a) कमरा (b) गाना (c) कमर (d) आँगन *(रेलवे, 1998)*

19. जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि का अर्थ है—
(a) कवि के लिए कहीं भी अगम्य नहीं
(b) कवि निरकुंश होता है
(c) कवि कल्पनाशील होता है
(d) कवि भावप्रवण होता है *(एस० एस० सी०, 1999)*

20. पुचकारा कुत्ता सिर चढ़े का अर्थ है—
(a) पुचकारने पर कुत्ता भी प्यार दिखाता है
(b) ओछे लोग मुँह लगाने पर अनुचित लाभ उठाते हैं
(c) ओछे लोग ही इस जमाने में तरक्की कर सकते हैं
(d) नगण्य व्यक्ति को कभी अपमानित नहीं करना चाहिए *(एस० एस० सी०, 1999)*

21. तीन दिन मेहमान चौथे दिन हैवान का अर्थ है—
(a) आतिथ्य थोड़े दिन का ही अच्छा होता है
(b) अतिथि का कभी अनादर नहीं करना चाहिए
(c) मेहमान भी कभी-कभी शैतान बन जाता है
(d) ससुराल में दामाद को अधिक दिन नहीं रहना चाहिए *(अनुवादक परीक्षा, 1999)*

22. अधजल गगरी·····जाय
(a) फैलत (b) लुढ़कत (c) उछलत (d) छलकत *(रेलवे, 1999)*

23. ·····धतूरें सो कहत गहनो गढ़ो न जात
(a) रजत (b) कनक (c) स्वर्ण (d) कंचन *(रेलवे, 1999)*

24. तबेली की बला बन्दर के सिर का अर्थ है—
(a) किसी की शिकायत दूसरों से करना
(b) एक-दूसरे से लड़वाना
(c) किसी का अपराध दूसरे के सिर
(d) अपना दोष दूसरों के सिर मढ़ना *(रेलवे, 2000)*

25. एक और एक ग्यारह होते हैं का अर्थ है—
(a) संसार में सब संभव है (b) भीड़ में बल है
(c) गणित विद्या में निपुणता प्राप्त करना
(d) संगठन में शक्ति है *(अनुवादक परीक्षा, 2000)*

26. कुम्हार अपना ही घड़ा सराहता है का अर्थ है—
(a) अपनी ही प्रशंसा करना
(b) अपनी बनाई हुई वस्तु सबको अच्छी लगती है
(c) किसी को बोलने नहीं देना
(d) दूसरों की वस्तु को तुच्छ समझना *(रेलवे, 2000)*

27. काला अक्षर भैंस बराबर का अर्थ है—
(a) छिद्रान्वेषी होना (b) समदर्शी होना
(c) अनपढ़ होना (d) अदूरदर्शी होना *(अनुवादक परीक्षा, 2000)*

28. गए थे रोजा छुड़ाने, नमाज गले पड़ी का अर्थ है—
(a) मुश्किल में पड़ जाना (b) कष्ट पहुँचना
(c) गरीब हो जाना
(d) उपकार करने के बदले स्वयं को दुःख भोगना पड़ा *(रेलवे, 2000)*

29. गंगा गए गंगादास, जमुना गए जमुनादास का अर्थ है—
(a) अपने-अपने घर जाना (b) अपना-अपना काम करना
(c) किसी की नहीं सुनना
(d) जिसका कोई दृढ़ सिद्धान्त नहीं होता *(रेलवे, 2000)*

30. कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली का अर्थ है—
(a) ऊटपटांग बात करना
(b) राजा और सामान्य व्यक्ति की तुलना
(c) राजा भोज और गंगू तेली के बीच तुलना करने का प्रयास
(d) आकाश-पाताल का अन्तर होना *(रेलवे, 2000)*

31. काठ की हाँड़ी बार-बार नहीं चढ़ती का अर्थ है—
(a) बुरे दिन हमेशा नहीं रहते
(b) लकड़ी का बर्तन अग्नि से जल सकता है
(c) छल-कपट का व्यवहार हमेशा नहीं चलता
(d) दुर्भाग्य की मार बार-बार नहीं होती *(उ० प्र० निर्वाचन आयोग परीक्षा, 2001)*

32. टूट चाप नहिं जुरै रिसाने का अर्थ है—
(a) टूटा धनुष क्रोध करने से नहीं जुड़ता
(b) चिन्ता छोड़ो सुख से जिओ
(c) नुकसान के लिए परेशान नहीं होना चाहिए
(d) नुकसान हो जाने पर क्रोध करना व्यर्थ है *(रेलवे, 2001)*

33. आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास का अर्थ है—
(a) हरि भक्ति का मार्ग कठिन होता है
(b) उद्देश्य की प्राप्ति में असफल होना
(c) किसी कार्य विशेष की उपेक्षा कर किसी अन्य कार्य में लग जाना
(d) ईश्वर भक्ति को छोड़कर व्यापार में लग जाना

34. अंधा पावै आँखें तो पतियाय का अर्थ है—
(a) सबसे मूल्यवान वस्तु प्राप्त करके प्रसन्न होना
(b) अभीष्ट की प्राप्ति होने पर विश्वास का जमना
(c) असंभव की चाह होना
(d) असंभव को संभव कर दिखाना *(रेलवे, 2001)*

35. उधो का लेना न माधो को देना का अर्थ है—
(a) अपने काम से काम (b) भक्ति भाव से दूर रहना
(c) हिसाब साफ रखना (d) सबसे अलग रहना
(उ० प्र० निर्वाचन आयोग परीक्षा, 2001)

36. उपाय वही सफल और श्रेष्ठ है जिसका लोहा विरोधी को भी मानना पड़े के लिए सही लोकोक्ति है—
(a) आधा तीतर आधा बटेर
(b) चमत्कार को नमस्कार
(c) जादू वही जो सिर चढ़कर बोले
(d) इनमें से कोई नहीं *(रेलवे, 2001)*

37. यह प्रेम का पंथ कराल महा के लिए सही लोकोक्ति है—
(a) अरु नेह सों नातो बड़ावतो है
(b) तरवार की धार पै धावनो है
(c) दुखदाई औ घोर सतावनी है
(d) मन ही मन में उर भावनी है *(रेलवे, 2001)*

38. राम नाम जपना, पराया माल अपना का अर्थ है—
(a) दान करना
(b) सर्वज्ञ होना
(c) धोखे से धन जमा करना
(d) दूसरों से सहानुभूति रखना *(बैंक परीक्षा, 2002)*

39. फिसल पड़े तो हर गंगे का अर्थ है—
(a) मजबूरी में काम पड़ना
(b) नुकसान उठाना
(c) एक साथ दो काम करना
(d) विपत्ति पड़ने पर ईश्वर का स्मरण करना
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

40. नीम हकीम खतरे जान का अर्थ है—
(a) डींग हाँकना
(b) बीमारी का गलत इलाज होना
(c) खतरनाक चीजें
(d) अल्प विद्या भयंकर *(बैंक परीक्षा, 2002)*

41. सौ सयाने एक मत का अर्थ है—
(a) कुछ भी निश्चय न कर पाना
(b) ज्यादा चालाक बनना
(c) अच्छे विचारों में भिन्नता होना
(d) बुद्धिमानों के विचार एक-से होते हैं *(बैंक परीक्षा, 2002)*

42. नन पर नहीं लत्ता पान खाए अलबत्ता का अर्थ है—
(a) बहुत गरीब होना (b) झूठा दिखावा करना
(c) एक साथ दो लाभ होना (d) बुरी आदत का शिकार
(बैंक परीक्षा, 2002, रेलवे, 2010)

43. गुरु गुड़ चेला चीनी का अर्थ है—
(a) गुरु हमेशा सर्वोपरि होता है
(b) गुरु से चेले का आगे बढ़ जाना
(c) चेले द्वारा महान कार्य करना
(d) गुरु के कथनानुसार कार्य करना *(बैंक परीक्षा, 2002)*

44. चोर की दाढ़ी में तिनका का अर्थ है—
(a) चोर आडम्बर दिखाता है
(b) चोर साधारण जन से अधिक दान करता है
(c) अपराधी सदा शंका से घिरा रहता है
(d) इनमें से कोई नहीं *(बैंक परीक्षा, 2002)*

45. आँख का अंधा नाम नयनसुख का अर्थ है—
(a) एक ही व्यक्ति में कई अवगुण होना
(b) केवल नाम अच्छा होने से ही कोई व्यक्ति अच्छा नहीं होता
(c) गुण के विपरीत नाम
(d) आँख न होने पर भी सुखी *(बैंक परीक्षा, 2002)*

46. पर उपदेश कुशल बहुतेरे का अर्थ है—
(a) बिन मांगे सलाह देना
(b) दूसरों को उपदेश देने को आसान समझना
(c) बिना सोचे दूसरों की सलाह पर काम करना
(d) दूसरों की बात को शीघ्र मान लेना *(बैंक परीक्षा, 2002)*

47. निम्नलिखित में एक लोकोक्ति है, उसका चयन कीजिए—
(a) कठपुतली होना (b) आँख चुराना
(c) आस्तीन का साँप (d) एक पंथ दो काज
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

48. आम के आम गुठलियों के दाम का अर्थ है—
(a) मनमानी करना (b) नकली वस्तु देना
(c) दोहरा लाभ होना (d) बहुत चतुर व्यापारी बनना
(पी० सी० एस०, 2003)

49. आ बैल मुझे मार का अर्थ है—
(a) छेड़छाड़ करना
(b) जान बूझकर मुसीबत में पड़ना
(c) बलशाली के सामने वीरता दिखाना
(d) कायर होते हुए भी वीरता का प्रदर्शन करना
(पी० सी० एस०, 2003)

50. हाथ कंगन को आरसी क्या का अर्थ है—
(a) बिल्कुल पढ़ा-लिखा न होना
(b) विद्वान को धन की आवश्यकता नहीं
(c) सुन्दर महिला को जेवर की जरूरत नहीं
(d) प्रत्यक्ष को प्रमाण की जरूरत नहीं *(पी० सी० एस०, 2003)*

51. आप डूबे तो जग डूबा का अर्थ है—
(a) बुरा आदमी सबको बुरा कहता है
(b) मरने के बाद कौन देखने आता है कि क्या हुआ
(c) अपनी हानि होने पर दूसरों को भी हानि पहुँचाना
(d) सबको अपने समान समझना *(पी० सी० एस०, 2003)*

52. तेल देखो तेल की धार देखो का अर्थ है—
(a) लापरवाही से नुकसान होता है
(b) तेल की धार देखकर तेल का परीक्षण करना
(c) काम करते समय उसकी पहचान करना
(d) रूख पहचानना *(पी० सी० एस०, 2003)*

53. अधजल गगरी छलकत जाए का अर्थ है—
(a) अल्पज्ञ द्वारा गर्व प्रदर्शन (b) अत्यधिक बोलना
(c) संभल कर न चलना
(d) अपनी छोटी-सी बात की प्रशंसा करना
(पी० सी० एस०, 2003, सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

54. अंधे के हाथ बटेर लगना का अर्थ है—
(a) अंधा भी अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकता है
(b) अंधेरे में कोई चीज मिल जाना
(c) अपात्र को सफलता मिल जाना
(d) शेयरों में भारी लाभ होना *(पी० सी० एस०, 2003)*

55. घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध का अर्थ है—
(a) घर के ज्ञानी को सम्मान नहीं
(b) घर-घर में मिट्टी के चूल्हे
(c) घर की मुर्गी दाल बराबर (d) घर का भेदी लंका ढाहे
(रेलवे, 2003)

56. कोयले की दलाली में मुँह काला का अर्थ है—
(a) कोयले का व्यापार करना (b) बुरे काम से बुराई मिलना
(c) झूठ बोलना (d) व्यापार में घाटा होना *(रेलवे, 2003)*

57. हथेली पर सरसों नहीं जमती का अर्थ है—
(a) सरसों के लिए जमीन चाहिए, हथेली नहीं
(b) हर काम में मनमानी नहीं चल सकती
(c) काम के लिए समय चाहिए, जब चाहो तभी काम नहीं हो सकता
(d) सफलता समय पर आती है *(रेलवे, 2004, 2010)*

58. आगे नाथ न पीछे पगहा का अर्थ है—
(a) पूर्ण स्वतंत्र (b) अपने मन की कहना
(c) बंधन रहित होना (d) इधर-उधर भागना *(बी० एड०, 2005)*

59. तीन लोक से मथुरा न्यारी का अर्थ है—
(a) बहुत सुन्दर होना (b) दूर की वस्तु सुन्दर लगना
(c) जरूरत से ज्यादा बड़ाई करना
(d) कृष्ण भक्त होना *(बी० एड०, 2005)*

60. खग जाने खग ही की भाषा का अर्थ है—
(a) पक्षियों की भाषा जानना
(b) समान प्रवृत्ति वाले ही एक दूसरे को सराहते हैं
(c) पक्षी अपनी भाषा स्वयं समझते हैं
(d) पक्षियों की तरह बोलना *(बी० एड०, 2005)*

61. ओखली में सिर दिया तो मूसलों का क्या डर का अर्थ है—
(a) मूर्ख के साथ मित्रता करने पर हानि ही होती है
(b) मुसीबतों से घबराना किसी भी प्रकार से उचित नहीं
(c) ओछे व्यक्ति किसी को लाभ नहीं पहुँचा सकते
(d) कठिन काम शुरू करने पर कष्ट तो सहन करने ही पड़ते हैं *(अनुवादक परीक्षा, 2005)*

62. जैसी बहे बयार, पीठ तब तैसी दीजे का अर्थ है—
(a) समय का रुख देखकर काम करना चाहिए
(b) राजनीति में दल-बदल करते रहना चाहिए
(c) ऐसा काम करना चाहिए जिससे संकट में न फँसा जाए
(d) पवन की तरह कभी शीतल और कभी उष्ण होना चाहिए

63. तू डाल-डाल मैं पात-पात का अर्थ है—
(a) दोनों विद्वान (b) दोनों तत्त्वज्ञ
(c) दोनों मूर्ख (d) दोनों चालाक

64. बिल्ली को पहले ही दिन मारना चाहिए का अर्थ है—
(a) भय का शमन शुरू में ही कर देना चाहिए
(b) दुश्मन पर पहले ही वार कर देना चाहिए
(c) रौब पहले ही दिन पड़ता है, फिर नहीं
(d) बुरा समय आते ही सचेत हो जाना चाहिए

65. सिर सहलाए भेजा खाए का अर्थ है—
(a) एकदम निकट आकर शोरगुल करना
(b) किसी के सिर पर सवार हो जाना
(c) दोस्त बनकर हानि पहुँचाना
(d) चापलूसों के कहने को करना

66. एक अनार सौ बीमार का अर्थ है—
(a) एक वैद्य अनेक बीमार
(b) किसी वस्तु की पूर्ति कम किन्तु माँग अधिक
(c) महामारी के दिनों में दवाओं की कमी
(d) किसी वस्तु की आपूर्ति समाप्त हो जाना

67. 'नौ दिन चले अढाई कोस' का अर्थ है—
(a) बहुत धीमी गति से काम करना
(b) बहुत धीमी गति से चलना
(c) अधिक समय में कम काम करना
(d) हरामखोरी करना *(मध्य प्रदेश प्री बी.एड. परीक्षा, 2007)*

68. 'एक तो करेला आप तीता दूजा नीम चढ़ा' का अर्थ है—
(a) बुरे का और बुरे से संग होना
(b) एक बुरा तो दूसरा उससे भी बुरा
(c) बुरे व्यक्ति की बुरी संतान
(d) बुरे का अच्छे से संग होना *(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)*

69. 'खोदा पहाड़ निकली चुहिया' लोकोक्ति का अर्थ है—
(a) कम परिश्रम करके बहुत मिलना
(b) परिश्रम अधिक और फल कम
(c) परिश्रम के बिना ही फल पा जाना
(d) श्रम करने पर कुछ न मिलना *(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)*

70. निम्नलिखित कहावत का सही अर्थ बताइए—
चूहे के चाम से नगाड़े नहीं मढ़े जाते
(a) कंजूसी करना
(b) सीमित साधनों से काम चलाना
(c) छोटे होकर बड़ा काम करना
(d) सीमित साधनों से बड़े काम नहीं होते *(आर.आर.बी. इलाहाबाद एकाउन्टेन्ट असिस्टेंट, 2010)*

71. 'खरबूजे को देख खरबूजा रंग बदलता है'—लोकोक्ति का अर्थ है-
(a) संगति का प्रभाव अवश्य पड़ता है
(b) प्रयत्न ज्यादा पर लाभ थोड़ा
(c) कपटपूर्ण व्यवहार
(d) किए का फल भोगना पड़ेगा *(उत्तराखण्ड पी. सी. एस, 2012)*

उत्तरमाला

1. (a)	2. (b)	3. (b)	4. (d)	5. (a)	6. (b)	7. (d)	8. (c)	9. (d)	10. (c)	11. (b)	12. (c)	
13. (a)	14. (b)	15. (b)	16. (c)	17. (c)	18. (d)	19. (a)	20. (b)	21. (a)	22. (d)	23. (b)	24. (c)	
25. (d)	26. (b)	27. (c)	28. (d)	29. (d)	30. (d)	31. (c)	32. (d)	33. (c)	34. (b)	35. (a)	36. (c)	
37. (b)	38. (c)	39. (a)	40. (d)	41. (d)	42. (b)	43. (b)	44. (c)	45. (c)	46. (b)	47. (d)	48. (c)	
49. (b)	50. (d)	51. (a)	52. (d)	53. (a)	54. (c)	55. (a)	56. (b)	57. (c)	58. (c)	59. (c)	60. (b)	
61. (d)	62. (a)	63. (d)	64. (a)	65. (c)	66. (b)	67. (a)	68. (a)	69. (b)	70. (d)	71. (a)		

★★★

17 क्रमबद्धता (Rearrangement)

➢ क्रमबद्धता पर आधारित प्रश्न दो तरह से पूछे जाते हैं:—

I. वाक्य में क्रमबद्धता : इस तरह के प्रश्नों में अव्यवस्थित वाक्यांशों से एक सही क्रमबद्ध वाक्य बनाना होता है।

II. अनुच्छेद में क्रमबद्धता : इस तरह के प्रश्नों में अव्यवस्थित वाक्यों से एक सही क्रमबद्ध अनुच्छेद बनाना होता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

I. वाक्य में क्रमबद्धता

निर्देश: *नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न में वाक्य के पहले और अंतिम भागों को क्रमशः (1) और (6) की संख्या दी गई है। इनके बीच में आने वाले अंशों को चार भागों में बाँटकर (य), (र), (ल), (व) की संख्या दी गई है। ये चारों भाग उचित क्रम में नहीं हैं। इन्हें ध्यान से पढ़कर दिए गए विकल्पों में से उचित क्रम चुनिए, जिससे सही वाक्य का निर्माण हो।*

1. (1) स्वदेश-प्रेम के
(य) नागरिकों ने देश के (र) सदा
(ल) आह्वान पर (व) वशीभूत होकर
(6) बड़े से बड़ा त्याग किया है।
(a) व य ल र (b) य र ल व
(c) ल व र य (d) व र ल य

2. (1) गृहिणी गृहस्थ जीवनरूपी नौका की वह पतवार है
(य) इस नौका को
(र) बचाती हुई
(ल) थपेड़ों और भंवरों से
(व) जो अपनी बुद्धिबल, चरित्रबल और त्यागमय जीवन से
(6) किनारे तक पहुँचाती है।
(a) य र ल व (b) र ल य व
(c) ल र व य (d) व य ल र
(लेखाकार परीक्षा, 1997)

3. (1) मेरा विश्वास है कि
(य) जिस चीज में मनुष्य के प्यारे हाथ लगते हैं
(र) और मन की पवित्रता
(ल) उसमें उसके हृदय का प्रेम
(व) सूक्ष्म रूप में मिल जाती है
(6) उसमें मुर्दे को जिन्दा करने की शक्ति आ जाती है।
(a) य ल र व (b) र व ल य
(c) ल व य र (d) व र य ल
(लेखाकार परीक्षा, 1997)

4. (1) देश में अनुशासन की पुनः स्थापना हेतु
(य) का थोड़ा-बहुत समावेश
(र) यह आवश्यक है कि हमारी शिक्षा-व्यवस्था में
(ल) अवश्य किया जाए
(व) नैतिक और चारित्रिक शिक्षा
(6) ताकि छात्रों को कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का ज्ञान हो सके।
(a) य र ल व (b) र व य ल
(c) ल व य र (d) व ल र य
(लेखाकार परीक्षा, 1997)

5. (1) जब तक प्रेमचन्द जी
(य) मुझे मुश्किल से घण्टे-आधे घण्टे का समय मिलता
(र) मेरे घर रहे
(ल) जब मैं उनके साथ चाय पीता था
(व) अन्यथा उनका समय अन्य व्यक्ति अधिकतर
(6) उनकी अनिच्छा से अपने अधिकार में कर लेते।
(a) य व ल र (b) र य ल व
(c) ल र व य (d) व य र ल
(लेखाकार परीक्षा, 199

6. (1) जिस समाज में ब्याहता को
(य) अकारण ही अग्नि की भेंट चढ़ा दिया जाता हो
(र) वह समाज निश्चित रूप से
(ल) प्यार के स्थान पर यातना दी जाती है
(व) सभ्यों का समाज नहीं
(6) अपितु नितान्त असभ्यों का समाज है।
(a) य व र ल (b) र ल व य
(c) ल य र व (d) व र य ल
(लेखाकार परीक्षा, 19

7. (1) धूप में चमकता
(य) हरा-भरा बगीचा (र) वे पेड़ अब बहुत
(ल) दीख रहा है, सामने (व) बड़े हो गए हैं
(6) जिन्हें बाबा ने लगाया था।
(a) य ल र व (b) र ल व य
(c) ल र व य (d) व य र ल *(रेलवे, 19*

8. (1) धनिया ने नाक सिकोड़कर कहा
(य) उसका नाम सुनकर
(र) मैंने तुमसे सौ बार
(ल) मेरे मुँह पर भाइयों का बखान न किया करो
(व) हजार बार कह दिया कि
(6) मेरे देह में आग लग जाती है।
(a) य व र ल (b) र व ल य
(c) ल य र व (d) व य ल र *(रेलवे, 1*

9. (1) वह भाषा जो सार्वजनिक हो
(य) अर्थात् सारे राष्ट्र के निवासियों द्वारा
(र) और राजनीतिक कार्यों में जिसका प्रयोग किया जाए
(ल) बोली और समझी जा सके
(व) साथ ही साथ उसे संविधान द्वारा स्वीकृति प्राप्त हो
(6) ऐसी भाषा को हम राष्ट्र भाषा कहेंगे।
(a) य ल र व (b) र ल व य
(c) ल य र व (d) व र य ल *(रेलवे,*

10. (1) सामाजिक जीवन में
(य) क्रोध की जरूरत बराबर पड़ती है
(र) मनुष्य दूसरों के द्वारा पहुँचाए जाने वाले बहुत से
(ल) यदि क्रोध न हो तो
(व) कष्टों की चिर निवृति का
(6) उपाय ही न कर सके।
(a) य ल र व (b) र य ल व
(c) ल र व य (d) व य र ल *(रेलवे,*

11. (1) मरुभूमि राजस्थान की प्रत्येक स्थली पर
(य) जहाँ पद्मिनी और लक्ष्मीबाई ने देश के हितार्थ तलवार धारण की
(र) जहाँ की देवियों ने अपने सतीत्व की
(ल) रक्षा के लिए अपने प्राण अग्निदेव को समर्पित कर दिए
(व) वहाँ के वीरों का रक्त प्रवाहित हुआ
(6) और शत्रुओं का मान मर्दन किया।
(a) य र ल व (b) व य र ल
(c) ल व य र (d) व र ल य *(रेलवे, 1998)*

12. (य) बेकारी की समस्या (र) बढ़ती जा रही है
(ल) शिक्षित वर्ग की (व) दिन-प्रतिदिन
(a) र य व ल (b) ल य व र
(c) व ल र य (d) य र ल व *(रेलवे, 1998)*

13. (1) काव्य के विषय में द्विवेदीजी की एक
(य) विशेष प्रकार की रुचि बन गई थी और चूँकि वे
(र) कवि की दृष्टि से करते थे अतः अनेक नए काव्यों को, जो
(ल) काव्य का अध्ययन आलोचक की दृष्टि से नहीं वरन्
(व) उनके संस्कारों से मेल नहीं खाते थे, मुक्त भाव से स्वीकार करना
(6) उनके लिए कठिन हो जाता था।
(a) य र ल व (b) य ल र व
(c) य व र ल (d) य व ल र
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

14. (1) वैसे देखा जाए तो
(य) प्रकृति स्वयं उस शक्ति का निर्माण करती है, जो
(र) नाना प्रकार के दाहक और पाचक रसों के रूप में
(ल) उदर के भीतर कोई अग्नि की ज्वाला नहीं है, किन्तु
(व) नाना भाँति के खाद्य पदार्थों अर्थात् भोज्य को
(6) पचा सकती है।
(a) ल य र व (b) य र व ल
(c) ल र य व (d) र य व ल
(एस० एस० सी०, 1999)

15. (1) हमें यह समझ लेना चाहिए कि
(य) एक सुन्दर स्वरूप है और यह भी मानना होगा कि
(र) धर्म की भाषा अधिक स्पष्ट, मूर्त्त और परिष्कृत
(ल) होती गई है और इसके लिए बहुत हद तक
(व) धर्म मानव जाति की मूलगत अनुभूतियों का
(6) विज्ञान ही उत्तरदायी है।
(a) य र ल व (b) र ल व य
(c) व य र ल (d) व य ल र
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

16. (1) मिथकीय आवरणों को
(य) अर्थ देने वाले लोग
(र) सार्वभौम रचनात्मकता को पहचानने वाले कला समीक्षक
(ल) हटा उसे तथ्यानुयायी
(व) मनोवैज्ञानिक कहलाते हैं, आवरणों की
(6) कहलाते हैं।
(a) य ल व र (b) ल य व र
(c) ल र व य (d) य र व ल
(एस० एस० सी०, 1999)

17. (1) वस्तुतः हिन्दी साहित्य का आदिकाल
(य) की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है और यही
(र) अपनी विविध साहित्यिक प्रवृत्तियों,
(ल) विविधताएं आदिकालीन साहित्य की समस्याओं
(व) विविध काव्य-रूपों एवं शैलियों
(6) को जन्म देने वाली हैं।
(a) र य ल व (b) र व य ल
(c) व र य ल (d) व र ल य
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

18. (1) प्रायः विद्वान यह मानते हैं कि जीवन का बाहरी पक्ष
(य) जीवन को प्रेरित करने वाले आदर्श
(र) जैसे रहन-सहन, मकान, सड़क, यातायात के साधन आदि
(ल) जैसे सत्य, प्रेम, अहिंसा आदि
(व) सभ्यता के अन्तर्गत आते हैं और
(6) संस्कृति के अंतर्गत आते हैं।
(a) य र व ल (b) र व य ल
(c) ल व य र (d) व र य ल
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

19. (1) हमारा उद्देश्य होगा, जीवन के
(य) करना कि हमारा सामाजिक जीवन
(र) हर सांस्कृतिक पहलू का इस प्रकार विकास
(ल) पुनर्गठित हो और वह सौन्दर्य एवं आनन्द को
(व) स्वतंत्रता, समता और मानवता के आधार पर
(6) उपलब्ध करा सके।
(a) व र ल य (b) र य ल व
(c) र य व ल (d) व र य ल
(एस० एस० सी०, 1999)

20. (1) जंगल में जिस प्रकार
(य) अपनी संस्कृतियों के द्वारा एक-दूसरे के साथ मिलकर
(र) अनेक लता, वृक्ष और वनस्पति अपने
(ल) अविरोधी स्थिति प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार राष्ट्रीय जन
(व) अदम्य भाव से उठते हुए पारस्परिक सम्मिलन से
(6) राष्ट्र में रहते हैं ।
(a) य र व ल (b) र व ल य
(c) व य र ल (d) व र य ल
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

21. (1) अपनी व्यक्तिगत सत्ता की
(य) जगत के वास्तविक दृश्यों और
(र) जीवन की वास्तविक दशाओं में जो हृदय समय-समय
(ल) निज के योग-क्षेम से संबंध से मुक्त करके,
(व) अलग भावना से हटाकर
(6) पर रमता है, वही सच्चा कवि हृदय है।
(a) ल र य व (b) य र व ल
(c) व ल य र (d) ल व र य
(अनुवादक परीक्षा, 2000)

22. (1) यदि अपवित्र और अमंगलकारी विचार
(य) हमारा सारा जीवन, उसके कार्य और फल एक दूषित वातावरण से भर जाएंगे और
(र) हमारे पार्थिव शरीर की समाप्ति ही नहीं
(ल) हमारे अन्तस् में आविर्भूत होने लगे तो
(व) अपितु उन मानव-मूल्यों की भी समाप्ति हो जाएगी जिन पर
(6) मानव-जीवन और उसका अस्तित्व अवलम्बित है।
(a) ल र य व (b) र ल य व
(c) ल य र व (d) य ल र व
(अनुवादक परीक्षा, 2000)

23. (1) जो कलाकार नाटक, संगीत, नृत्य और चित्रकारी में लगे हैं, हम
(य) सामाजिक जीवन को सौन्दर्यमय बनाकर उसे
(र) जनता की इच्छाओं और आकांक्षाओं को प्रतिफलित होने दे और
(ल) उन्हें प्रोत्साहित करेंगे कि वे अपनी कलाकृतियों में
(व) उन्हें एकत्र करेंगे और

(6) आनन्द से परिपूरित करें।

(a) व य ल र (b) ल र व य
(c) व ल र य (d) य र ल व

(अनुवादक परीक्षा, 2000)

24. (1) सब जानते हैं कि हिन्दी
(य) सिद्ध होगी ही, अंग्रेजी सह राजभाषा पद
(र) देर-सवेर भारत की एकमात्र राजभाषा
(ल) से हटेगी ही, तो उस स्थिति
(व) के अनुकूल अपने को बना लेने के लिए
(6) हम हिन्दी का अध्ययन कर रहे हैं।

(a) र य ल व (b) ल र व य
(c) ल य र व (d) र व ल य

(अनुवादक परीक्षा, 2000)

25. (1) इस तरह हम
(य) जो अपनी लेखनी या कूची, वाणी या वाद्यों द्वारा
(र) उन सभी कलाकारों का आह्वान कर रहे हैं
(ल) एक व्यापक संगठन न होने के कारण जिनकी साधनाएँ
(व) समाज को 'सत्यं', 'शिवं', 'सुन्दरं' की ओर ले जाने में लगे हैं किन्तु
(6) इच्छित फल नहीं दे पा रही है

(a) र य ल व (b) र य व ल
(c) य व र ल (d) य र व ल

(अनुवादक परीक्षा, 2000)

26. (1) कभी-कभी तय करना
(य) मानवीय विकास का इतिहास
(र) कठिन हो जाता है कि
(ल) षड्यंत्रों से बना है या यह
(व) राजा-सम्राटों के युद्धों और
(6) सारी यात्रा आदि शब्द से शुरू होकर किताब-दर-किताब होती हुई हम तक आई है।

(a) र ल य व (b) व ल र य
(c) र य व ल (d) ल र य व

(अनुवादक परीक्षा, 2000)

27. (1) जिस प्रकार
(य) दहकना है उसी प्रकार (र) उसके स्वभाव का
(ल) मनुष्य का धर्म (व) अग्नि का धर्म
(6) पर्याय होना चहिए।

(a) व य ल र (b) ल य व र
(c) व य र ल (d) र ल य व *(रेलवे, 2001)*

28. (1) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(य) और नवयुग की चेतना लेकर निबंध के
(र) एवं विचारात्मक कोटियों में रखे जा सकते हैं, जो
(ल) प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा का गंभीर ज्ञान
(व) क्षेत्र में अवतरित हुए तथा इनके निबंध भावात्मक
(6) इनके व्यक्तित्व की छाप लिए हुए हैं।

(a) व र ल य (b) य ल र व
(c) र व य ल (d) ल य व र

(अनुवादक परीक्षा, 2000)

29. (1) जाति, देश और काल की सीमाओं में
(य) साहित्यिक मूल्यांकन प्रस्तुत करेंगे, तो
(र) सामयिक आवश्यकता-रागात्मक एकता
(ल) साहित्य के मूल उद्देश्य तथा
(व) बँधे रहकर यदि हम
(6) से ही दूर जा पड़ेंगे।

(a) ल र य व (b) व य ल र
(c) व र ल य (d) य ल र व

(अनुवादक परीक्षा, 200

30. (1) मनुष्य पाँव से चलता है
(य) समुदाय से चलता है (र) तब उसे जीवन कहते हैं,
(ल) प्राणों से चलता है (व) तब उसे यात्रा कहते हैं,
(6) तब उसे समाज कहते हैं।

(a) र ल व य (b) य ल व र
(c) व ल र य (d) व य र ल

(अनुवादक परीक्षा, 2005)

31. (1) संक्षेपतः कहा जा सकता है कि
(य) अनायास ही मानव-जीवन की सर्वोपयोगी
(र) सरस साधन काव्य ही है, जिसका
(ल) चारों पदार्थों की प्राप्ति का सुलभ तथा
(व) अनुशीलन करने पर अल्पबुद्धि वाले प्राणी भी
(6) वस्तुओं को प्राप्त कर सकते हैं।

(a) ल र व य (b) व ल र य
(c) य र व ल (d) ल र य व

(अनुवादक परीक्षा, 2005)

32. (1) सच्ची बात तो यह है कि
(य) वह अपना मनोरंजन संगीत और अभिनय जैसे
(र) किसी भी युग का प्राणी ऐसा नीरस
(ल) आनन्ददायक साधनों के
(व) और हृदयहीन नहीं होता है कि
(6) द्वारा नहीं करता।

(a) र य ल व (b) य ल व र
(c) र व य ल (d) ल व र य

(अनुवादक परीक्षा, 2005)

33. (1) साहित्यकार
(य) न तो क्रांतिकर्मी होता है
(र) सामाजिक विद्रूपताओं को परख कर
(ल) और न निरा समाज-सुधारक, वह तो
(व) उनमें यथोचित संशोधन का
(6) अन्वेषक होता है।

(a) य ल र व (b) व ल य र
(c) य र ल व (d) व य र ल

34. (1) एक
(य) एक राष्ट्रीय चेतना (र) की समष्टि ही
(ल) लेकर रहने वाले व्यक्तियों (व) भौगोलिक सीमा में
(6) देश है।

(a) य र ल व (b) य ल व र
(c) व य ल र (d) व र ल य

उत्तरमाला

1. (a)	2. (d)	3. (a)	4. (b)	5. (b)	6. (c)	7. (a)	8. (b)	9. (a)	10. (a)	11. (d)	12. (b)
13. (b)	14. (a)	15. (c)	16. (b)	17. (b)	18. (b)	19. (c)	20. (b)	21. (c)	22. (c)	23. (c)	24. (a)
25. (b)	26. (c)	27. (a)	28. (d)	29. (b)	30. (c)	31. (a)	32. (c)	33. (a)	34. (c)		

★★★

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

II. अनुच्छेद में क्रमबद्धता

निर्देश : नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न में अनुच्छेद के पहले और अंतिम भागों को क्रमशः (1) और (6) की संख्या दी गई है। इनके बीच में आने वाले चार वाक्य को (य), (र), (ल), (व) की संख्या दी गई है। ये चारों वाक्य उचित क्रम में नहीं हैं। इन्हें ध्यान से पढ़कर दिए गए विकल्पों में से उचित क्रम चुनिए, जिससे सही अनुच्छेद का निर्माण हो।

1. (1) जीवन एक संघर्ष है।
(य) असहाय स्थिति में भी संघर्ष में कूदा जा सकता है।
(र) मान लिया कि आपके पास साधनों का अभाव है, लेकिन आप तो हैं।
(ल) भले ही आप कमजोर हैं, लेकिन विपदाओं से भिड़ने का, कुछ न कुछ करने का साहस तो आप में है।
(व) इस संघर्ष में अपने आपको असहाय समझना और संघर्ष से मुँह मोड़ लेना उचित नहीं है।
(6) यही बहुत है।
(a) र ल व य (b) य र व ल
(c) व य र ल (d) य व ल र

(अनुवादक परीक्षा, 1995)

2. (1) दहेज प्रथा का जन्म पुरानी सामाजिक प्रथाओं में ढूँढा जा सकता है।
(य) उसे नई गृहस्थी बसानी होती है।
(र) विवाह के बाद लड़की एक नए घर में जाती है।
(ल) अपना नया घोंसला बनाने में उसे अधिक असुविधा न हो इसलिए उसे कुछ उपहार देने का रिवाज था।
(व) उपहार में उसे गृहस्थी में काम आने वाली वस्तुएँ स्वेच्छा से दी जाती थीं, कोई बाध्यता नहीं होती थी।
(6) पर धीरे-धीरे इसमें बुराइयाँ आती गईं।
(a) य र ल व (b) र य ल व
(c) र ल व य (d) र व ल य

(अनुवादक परीक्षा, 1995)

3. (1) शब्द और अर्थ को काव्य का शरीर कहा गया है। ये दोनों ही अभिन्न हैं।
(य) शब्द के साथ अर्थ का लगाव है और अर्थ के साथ शब्द का।
(र) इसी प्रकार शब्द के बिना अर्थ का मानव मस्तिष्क में कठिनाई से निर्वाह होता है।
(ल) अर्थ के बिना शब्द का कोई मूल्य नहीं।
(व) शब्द और अर्थ की एकता को पार्वती-परमेश्वर की एकता का उपमान बताकर कालिदास ने इस अटूट संबंध को महत्ता प्रदान की थी।
(6) एक के बिना दूसरे की पूर्णता नहीं, इसलिए दोनों मिलकर ही काव्य का शरीरत्व सम्पादित करते हैं।
(a) व र ल य (b) ल य र व
(c) य र व ल (d) ल र व य

(अनुवादक परीक्षा, 1995)

4. (1) आज हिन्दी को प्रत्येक क्षेत्र में सम्मान प्राप्त है।
(य) न जाने कितनी समितियाँ और अकादमियाँ सक्रिय हैं।
(र) समस्त विश्व के विश्वविद्यालयों में हिन्दी विभाग खुल चुके हैं।
(ल) हिन्दी भाषा और साहित्य को समस्त विश्व में प्रतिष्ठित करने वाले प्रशासनिक माध्यम कार्यरत हैं।
(व) उच्चस्तरीय हिन्दी अध्यापन की व्यवस्था के साथ ही शोध संस्थान भी गतिशील हैं।
(6) फिर भी हिन्दी को वह सर्वोच्च स्थान प्राप्त नहीं है।
(a) ल व र य (b) व र ल य
(c) र य ल व (d) ल य र व

(असिस्टेंट ग्रेड, 1995)

5. (1) महात्मा गाँधी के जीवन के मूल मंत्र थे—सत्य और अहिंसा।
(य) उनकी आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' इसका प्रत्यक्षण उदाहरण है।
(र) किसी प्रकार की हिंसा का आश्रय लेकर प्राप्त की गई स्वाधीनता भी उन्हें स्वीकार्य न थी।
(ल) अहिंसा से उनका तात्पर्य था—मनसा, वाचा, कर्मणा अहिंसा।
(व) सत्य के बिना वे एक कदम भी आगे बढ़ने को तैयार न थे।
(6) वास्तव में, गाँधी को महामानव नहीं, देवाताओं की कोटि में रखा जाना चाहिए।
(a) र ल व य (b) व य ल र
(c) य व ल र (d) ल र य व

(असिस्टेंट ग्रेड, 1995)

6. (1) हमारा देश उत्सवों और त्योहारों का देश है।
(य) ये त्योहार जनमानस में उल्लास जगाते हैं।
(र) यहाँ अनेक त्योहार मनाए जाते हैं।
(ल) समन्वय की भावना भी पैदा करते हैं।
(व) लोगों में देशभक्ति और गौरव का भाव भरते हैं।
(6) इन अवसरों पर सब मिलकर खुशियाँ मनाते हैं।
(a) र ल व य (b) र य व ल
(c) ल व य र (d) व य र ल

(असिस्टेंट ग्रेड, 1995)

7. (1) भारतीय साहित्य का आदर्श त्याग और उत्सर्ग है।
(य) किसी राष्ट्र की सबसे मूल्यवान सम्पत्ति उसके साहित्यिक आदर्श होते हैं।
(र) भारतीय स्वयं को उस समय कृतकार्य समझता है, जब वह माया बंधन से मुक्त हो जाता है।
(ल) यूरोप का कोई व्यक्ति लखपति होकर और ऊँची सोसाइटी में मिलकर स्वयं को कृतकार्य समझता है।
(व) जब उसमें भोग और अधिकार का मोह नहीं रहता।
(6) व्यास और वाल्मीकि के आदर्श आज भी भारत का सिर ऊँचा किए हुए हैं।
(a) य र व ल (b) य ल र व
(c) र व ल य (d) ल र व य

(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 1996)

8. (1) आज विज्ञान मनुष्यों के हाथों में अद्‌भुत और अतुल शक्ति दे रहा है।
(य) इसलिए हमें उस भावना को जागृत रखना है और उसे जागृत रखने के लिए कुछ ऐसे साधनों को भी हाथ में रखना होगा जो उस अहिंसात्मक त्याग-भावना को प्रोत्साहित करें और भोग-भावना को दबाए रखें।
(र) नैतिक अंकुश के बिना शक्ति मानव के लिए हितकर नहीं होती।
(ल) उसका उपयोग एक ओर व्यक्ति और समूह के उत्कर्ष में और दूसरी ओर व्यक्ति और समूह के गिराने में होता रहेगा।
(व) वह नैतिक अंकुश चेतना या भावना ही दे सकती है।
(6) वही उस शक्ति को परिमित भी कर सकती है और उसके उपयोग को नियंत्रित भी।
(a) य र व ल (b) य ल र व
(c) र य ल व (d) ल य र व

(असिस्टेंट ग्रेड, 1995)

9. (1) मनुष्य स्वभाव से देव-तुल्य है।
(य) जमाने के छल-प्रपंच और परिस्थितियों के वशीभूत होकर वह अपना देवत्व खो बैठता है।
(र) हमारी सभ्यता साहित्य पर ही आधारित है।
(ल) साहित्य इसी देवत्व को अपने स्थान पर प्रतिष्ठित करने की चेष्टा करता है।
(व) हम जो कुछ भी हैं, साहित्य के ही बनाए हुए हैं।
(6) किसी भी राष्ट्र की आत्मा की प्रतिध्वनि होती है– साहित्य।
(a) य ल व र (b) य ल र व
(c) र व य ल (d) व र य ल
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 1996)

10. (1) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल गंभीर विचारक थे।
(य) परिणामतः उन्होंने अपने निबंधों में जिस भी विषय को उठाया, उसके नए आयामों का उद्‌घाटन किया।
(र) उन्होंने अपने निबंधों में इन तीनों का समंजित रूप में उपयोग किया ।
(ल) उनका अध्ययन गहन और विस्तृत था।
(व) उनका जीवन का अनुभव और निरीक्षण भी ठोस था।
(6) 'भाव या मनोविकार' निबंध इसका स्पष्ट प्रमाण है।
(a) ल व र य (b) व ल र य
(c) य व ल र (d) य ल व र *(रेलवे, 1997)*

11. (1) अनुभूति के द्वंद्व ही से प्राणी के जीवन का आरंभ होता है।
(य) पेट का भरा या खाली रहना ही ऐसी अनुभूति के लिए पर्याप्त होता है।
(र) बच्चे के छोटे से हृदय में पहले सुख और दुःख की सामान्य अनुभूति भरने के लिए जगह होती है।
(ल) जीवन के आरंभ में इन्हीं दोनों के चिह्न हँसना और रोना देखे जाते हैं।
(व) उच्च प्राणी मनुष्य भी केवल एक जोड़ी अनुभूति लेकर इस संसार में आता है।
(6) पर ये अनुभूतियाँ बिल्कुल सामान्य रूप से रहती है, विशेष विशेष विषयों की ओर विशेष-विशेष रूपों में ज्ञानपूर्वक उन्मुख नहीं होती।
(a) ल र य व (b) व र य ल
(c) ल य र व (d) य ल र व *(रेलवे, 1997)*

12. (1) सांस्कृतिक वैविध्य के बारे में सोचना होगा।
(य) इसे चिन्तन के स्तर पर देखा जा सकता है।
(र) संस्कृति के अन्तर्तम में अनेक समानाताएँ हैं।
(ल) यही विविधता मे एकता है।
(व) यह हमें अलग-अलग नहीं बनाती।
(6) यह हमारी एक बड़ी शक्ति है।
(a) व र य ल (b) व ल र य
(c) र व ल य (d) य व र ल *(रेलवे, 1997)*

13. (1) फिर मैं सोचने लगा-अतीत क्या चला ही गया ?
(य) मैं किसी तरह विश्वास नहीं कर सका कि अतीत एकदम उठ गया है।
(र) अपने पीछे क्या हम एक विशाल शून्य मरुभूमि छोड़ते जा रहे हैं ?
(ल) कहाँ जाएगा वह ?
(व) आज जो कुछ हम कर रहे हैं, कल क्या यह सब लोप हो जाएगा ?
(6) मुझे क्षिप्रा की लोल तरंगों पर बैठे कालिदास स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं; अतीत कहीं गया नहीं है, वह मेरी रग-रग में सुप्त है।
(a) य ल व र (b) ल य व र
(c) र व ल य (d) य र व ल *(रेलवे, 1997)*

उत्तरमाला

1. (c) 2. (b) 3. (d) 4. (b) 5. (b) 6. (b) 7. (c) 8. (d) 9. (a) 10. (a) 11. (b) 12. (a) 13. (c)

★★★

पाठ-बोधन
(Comprehension)

18

किसी दिए गए पाठ को पढ़कर अध्येता द्वारा प्रतिपाद्य विषय तथा गद्यांश में निहित मूल अर्थ को हृदयंगम करना ही पाठ-बोधन कहलाता है। इस प्रकार का अभ्यास परीक्षार्थी की योग्यता को जाँचने का सर्वोचित मापदण्ड होता है। पूर्वाभ्यास के बावजूद इससे परीक्षार्थी की सही सूझ-बूझ तथा ग्रहण करने की सही क्षमता की परख की जा सकती है।

पाठ-बोधन संबंधी सामान्य बातें

1. दिए गए पाठ का स्तर, विचार, भाषा, शैली आदि प्रत्येक दृष्टि से परीक्षा के स्तर के अनुरूप होता है।
2. पाठ का स्वरूप साहित्यिक (अधिकांशतः), वैज्ञानिक, विवरणात्मक आदि होता है।
3. दिया गया पाठ अपठित *(अर्थात् जो पढ़ा न गया हो)* होता है।
4. अपठित पाठ प्रायः गद्यांश होते हैं, किसी-किसी परीक्षा में पद्यांश भी।
5. पाठ से ही संबंधित कुछ वस्तुनिष्ठ प्रश्न नीचे दिए गए होते हैं तथा प्रत्येक के चार/पाँच वैकल्पिक उत्तर सुझाए गए होते हैं। परीक्षार्थी को इनमें से सही उत्तर चुनकर उसे निर्देशानुसार चिह्नित करना होता है।

पाठ-बोधन पर आधारित प्रश्नों को हल करने की विधि

1. प्रथम चरण में पाठ को शीघ्रता से किन्तु ध्यानपूर्वक पढ़कर विषय-वस्तु तथा केन्द्रीय भाव को जानने का प्रयास करें।
2. दूसरे चरण में पाठ को धीरे-धीरे एवं पूरे मनोयोग से नीचे दिए गए प्रश्नों को ध्यान में रखते हुए पढ़ें। संभावित उत्तरों को साथ-साथ रेखांकित करें।
3. तीसरे चरण में प्रश्नों के सही उत्तरों को सावधानीपूर्वक चिह्नांकित करें।

नोट : *(i) उत्तर पाठ पर ही आधारित होने चाहिए। कल्पना पर आधारित उत्तर से बचना चाहिए।*
(ii) उत्तर प्रसंगानुकूल एवं सीधा होना चाहिए।
(iii) प्रत्येक विकल्प पर विचार करके देखें कि उनमें से किसके अर्थ की संगति संबंधित वाक्य के साथ सही बैठती है।

1.

वैज्ञानिक प्रयोग की सफलता ने मनुष्य की बुद्धि का अपूर्व विकास कर दिया है। द्वितीय महायुद्ध में एटम बम की शक्ति ने कुछ क्षणों में ही जापान की अजेय शक्ति को पराजित कर दिया। इस शक्ति की युद्धकालीन सफलता ने अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, फ्रान्स आदि सभी देशों को ऐसे शस्त्रास्त्रों के निर्माण की प्रेरणा दी कि सभी भयंकर और सर्वविनाशकारी शस्त्र बनाने लगे। अब सेना को पराजित करने तथा शत्रु-देश पर पैदल सेना द्वारा आक्रमण करने के लिए शस्त्र-निर्माण के स्थान पर देश के विनाश करने की दिशा में शस्त्रास्त्र बनने लगे हैं। इन हथियारों का प्रयोग होने पर शत्रु-देशों की अधिकांश जनता और संपत्ति थोड़े समय में ही नष्ट की जा सकेगी। चूँकि ऐसे शस्त्रास्त्र प्रायः सभी स्वतन्त्र देशों के संग्रहालयों में कुछ न कुछ आ गये हैं, अतः युद्ध की स्थिति में उनका प्रयोग भी अनिवार्य हो जायेगा। अतः दुनिया का सर्वनाश या अधिकांश नाश तो अवश्य ही हो जायेगा। इसीलिए निःशस्त्रीकरण की योजनाएँ बन रही हैं। शस्त्रास्त्रों के निर्माण में जो दिशा अपनाई गई, उसी के अनुसार आज इतने उन्नत शस्त्रास्त्र बन गये हैं, जिनके प्रयोग से व्यापक विनाश आसन्न दिखाई पड़ता है। अब भी परीक्षणों की रोकथाम तथा बने शस्त्रों के प्रयोग के रोकने के मार्ग खोजे जा रहे हैं। इन प्रयासों के मूल में एक भयंकर आतंक और विश्व-विनाश का भय कार्य कर रहा है।

1. इस गद्यांश का मूल कथ्य क्या है ?
   (a) आतंक और सर्वनाश का भय
   (b) विश्व में शस्त्रास्त्रों की होड़
   (c) द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका
   (d) निःशस्त्रीकरण और विश्व शान्ति
2. भयंकर विनाशकारी आधुनिक शस्त्रास्त्रों के बनाने की प्रेरणा किसने दी ?
   (a) अमेरिका ने
   (b) अमेरिका की विजय ने
   (c) जापान के विनाश ने
   (d) बड़े देशों की पारस्परिक प्रतिस्पर्धा ने
3. एटम बम की अपार शक्ति का प्रथम अनुभव कैसे हुआ ?
   (a) जापान में हुई भयंकर विनाशलीला से
   (b) जापान की अजेय शक्ति की पराजय से
   (c) अमोरिका, रूस, ब्रिटेन और फ्रांस की प्रतिस्पर्धा से
   (d) अमेरिका की विजय से
4. बड़े-बड़े देश आधुनिक विनाशकारी शस्त्रास्त्र क्यों बना रहे हैं ?
   (a) अपनी-अपनी सेनाओं में कमी करने के उद्देश्य से
   (b) अपने संसाधनों का प्रयोग करने के उद्देश्य से
   (c) अपना-अपना सामरिक व्यापार बढ़ाने के उद्देश्य से
   (d) पारस्परिक भय के कारण
5. आधुनिक युद्ध भयंकर व विनाशकारी होते हैं क्योंकि—
   (a) दोनों देशों के शस्त्रास्त्र इन युद्धों में समाप्त हो जाते हैं।
   (b) अधिकांश जनता और उसकी सम्पत्ति नष्ट हो जाती है।
   (c) दोनों देशों में महामारी और भुखमरी फैल जाती है।
   (d) दोनों देशों की सेनाएँ इन युद्धों में मारी जाती हैं।
6. इस गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक है—
   (a) निःशस्त्रीकरण
   (b) आधुनिक शस्त्रास्त्रों का विनाशकारी प्रभाव
   (c) एटम बम की शक्ति
   (d) आतंक और विश्व-विनाश का भय
7. 'व्यापक विनाश आसन्न दिखाई पड़ता है।' इस वाक्य में 'आसन्न' का अर्थ क्या है ?
   (a) अवश्य घटित होने वाला
   (b) कुछ समय बाद घटित होने वाला
   (c) किसी क्षेत्र विशेष में घटित होने वाला
   (d) कभी घटित नहीं होने वाला

8. 'निःशस्त्रीकरण' से क्या तात्पर्य है ?
   (a) आधुनिक शस्त्रास्त्रों का मुक्त व्यापार
   (b) आधुनिक शस्त्रास्त्रों के परीक्षण, प्रयोग एवं भंडारण पर प्रतिबंध
   (c) एटम की शक्ति का रचनात्मक कार्यों में प्रयोग
   (d) एटम बम का जनता पर प्रयोग न करने का संकल्प

9. निःशस्त्रीकरण की योजनाएँ क्यों बनाई जा रही हैं ?
   (a) क्योंकि आतंक और विश्व के सर्वनाश का भय बढ़ता जा रहा है।
   (b) क्योंकि बड़े देशों के संसाधन समाप्त होते जा रहे हैं।
   (c) क्योंकि तृतीय विश्व युद्ध की अभी कोई सम्भावना नहीं है।
   (d) क्योंकि ये योजनाएँ संयुक्त राष्ट्र संघ ने बनाई हैं।

10. विश्व को सर्वनाश से बचाने के लिए कौन सी योजना सर्वाधिक प्रभावी हो सकती है ?
   (a) एटम शक्ति का नियोजन
   (b) निःशस्त्रीकरण की योजना
   (c) प्रत्येक देश को आधुनिक शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित करने की योजना
   (d) रूस-अमेरिका की मित्रता की योजना

उत्तरमाला

1. (d) 2. (c) 3. (b) 4. (c) 5. (b) 6. (a)
7. (a) 8. (b) 9. (a) 10. (b)

2.

स्वतंत्र व्यवसाय की अर्थनीति के नये वैश्विक वातावरण ने विदेशी पूँजी निवेश को खुली छूट दे रखी है जिसके कारण दूरदर्शन में ऐसे विज्ञापनों की भरमार हो गई है जो उन्मुक्त वासना, हिंसा, अपराध, लालच और ईर्ष्या जैसी मानव की हीनतम प्रवृत्तियों को आधार मानकर चल रहे हैं। अत्यन्त खेद का विषय है कि राष्ट्रीय दूरदर्शन ने भी उनकी भोंडी नकल की ठान ली है। आधुनिकता के नाम पर जो कुछ दिखाया जा रहा है, सुनाया जा रहा है, उससे भारतीय जीवन मूल्यों का दूर का भी रिश्ता नहीं है, वे सत्य से भी कोसों दूर हैं। नयी पीढ़ी जो स्वयं में रचनात्मक गुणों के विकास करने की जगह दूरदर्शन के सामने बैठकर कुछ सीखना, जानना और मनोरंजन करना चाहती है, उसका भगवान ही मालिक है।

जो असत्य है, वह सत्य नहीं हो सकता। समाज को शिव बनाने का प्रयत्न नहीं होगा तो समाज शव बनेगा ही। आज यह मजबूरी हो गई है कि दूरदर्शन पर दिखाये जाने वाले वासनायुक्त अश्लील दृश्यों से चार पीढ़ियाँ एक साथ आँखें चार कर रही हैं। नतीजा सामने है। बलात्कार, अपहरण, छोटी बच्चियों के साथ निकट सम्बन्धियों द्वारा शर्मनाक यौनाचार की घटनाओं में वृद्धि। ठुमक कर चलते शिशु दूरदर्शन पर दिखाये और सुनाये जा रहे स्वर और भंगिमाओं पर अपनी कमर लचकाने लगे हैं। ऐसे कार्यक्रम न शिव हैं, न समाज को शिव बनाने की शक्ति है इनमें। फिर जो शिव नहीं, वह सुन्दर कैसे हो सकता है।

(असिस्टेंट ग्रेड, 1996)

1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक होगा—
   (a) पाश्चात्य उपभोक्तावाद और भारतीय दूरदर्शन
   (b) पाश्चात्य जीवन-मूल्यों का प्रचारक भारतीय दूरदर्शन
   (c) भारतीय दूरदर्शन की अनर्थकारी भूमिका
   (d) भारतीय जीवन-मूल्य और दूरदर्शन

2. नयी आर्थिक व्यवस्था से भारतीय दूरदर्शन किस तरह प्रभावित है ?
   (a) हिंसा, यौनाचार, बलात्कार, अपहरण आदि मानव की हीन वृत्तियों से सम्बन्धित कार्यक्रमों का बाहुल्य हो चला है और यह सब पाश्चात्य मीडिया का ही असर है।
   (b) पाश्चात्य मीडिया के प्रभाव के चलते भारतीय दूरदर्शन नये और स्वतन्त्र जीवन-मूल्यों की स्थापना में पूरे जोर से लग गया है।
   (c) पाश्चात्य मीडिया के अनुकरण पर भारतीय दूरदर्शन भी स्त्री-स्वातंत्र्य का प्रचार करने लगा है।
   (d) भारतीय दूरदर्शन के कार्यक्रमों पर पाश्चात्य जीवन शैली का गहरा असर दिखाई देने लगा है।

3. नई आर्थिक नीति का प्रत्यक्ष प्रभाव क्या हो रहा है ?
   (a) विकासशील देश अपनी राष्ट्रीय अस्मिता खोते जा रहे हैं।
   (b) पाश्चात्य जीवन-मूल्यों का विश्व के विकासशील देशों में व्यापक प्रचार हो रहा है।
   (c) उपभोक्तावाद को खुला प्रोत्साहन मिल रहा है।
   (d) विकासशील देश विकसित देशों की आर्थिक गुलामी में फँसते जा रहे हैं।

4. अर्थनीति के नये वैश्विक वातावरण से लेखक का क्या तात्पर्य है ?
   (a) विकासशील देशों का विकसित देशों की आर्थिक गुलामी में फँसना
   (b) अर्थव्यवस्था की दृष्टि से सारे विश्व का एक सूत्र में जुड़ जाना
   (c) आर्थिक नीति में राष्ट्रीय प्रतिबंधों को हटाकर उसका उदारीकरण जिससे कोई देश अन्य किसी देश में व्यवसाय करने, उद्योग लगाने आदि आर्थिक कार्यक्रमों में स्वतंत्र हो
   (d) विकसित देशों के पूँजीपतियों को विकासशील देशों में पूँजी-निवेश की स्वतंत्रता

5. 'समाज को शिव बनाने का प्रयत्न नहीं होगा तो समाज शव बनेगा ही'—इस वाक्य से लेखक का क्या तात्पर्य है?
   (a) भारतीय दूरदर्शन अपना दायित्व ईमानदारी से नहीं निभा रहा है।
   (b) वह भारतीय समाज को कल्याण के मार्ग पर न चलाकर श्मशान के मार्ग पर ले जा रहा है।
   (c) वह समाज को नए जीवन्त मूल्यों से अनुप्राणित करने के स्थान पर उसे मुर्दा बनाने में लगा है।
   (d) भारतीय दूरदर्शन अपने 'सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्' के आदर्श को भूल कर सामाजिक जीवन को विकृत कर रहा है।

उत्तरमाला

1. (c) 2. (a) 3. (b) 4. (c) 5. (d)

3.

सब प्रकार के शासन में—चाहे धर्म-शासन हो, चाहे राजशासन या संप्रदाय-शासन—मनुष्य जाति के भय और लोभ से पूरा काम लिया गया है। दण्ड का भय और अनुग्रह का लोभ दिखाते हुए राज-शासन तथा नरक का भय और स्वर्ग का लोभ दिखाते हुए धर्म-शासन और मत-शासन चलते आ रहे हैं। इनके द्वारा भय-लोभ का प्रवर्तन उचित सीमा के बाहर भी प्रायः हुआ है और होता रहा है। जिस प्रकार शासकवर्ग अपनी रक्षा और स्वार्थसिद्धि के लिए भी इनसे काम लेते आए हैं, उसी प्रकार धर्म-प्रवर्तक और आचार्य अपने स्वरूप-वैचित्र्य की रक्षा और अपने प्रभाव की प्रतिष्ठा के लिए भी। शासन की पहुँच प्रवृत्ति और निवृत्ति की बाहरी व्यवस्था तक ही होती है। उनके मूल या मर्म तक उसकी गति नहीं होती। भीतरी या सच्ची प्रवृत्ति-निवृत्ति को जागृत रख

वाली शक्ति कविता है, जो धर्म-क्षेत्र में भक्ति-भावना को जगाती रहती है। भक्ति धर्म की रसात्मक अनुभूति है। अपने मंगल और लोक के मंगल का संगम उसी के भीतर दिखाई पड़ता है। इस संगम के लिए प्रकृति के क्षेत्र के बीच मनुष्य को अपने हृदय के प्रसार का अभ्यास करना चाहिए। जिस प्रकार ज्ञान नरसत्ता के प्रसार के लिए है, उसी प्रकार हृदय भी। रागात्मिका वृत्ति के प्रसार के बिना विश्व के साथ जीवन का सामंजस्य घटित नहीं हो सकता। जब मनुष्य के सुख और आनन्द का मेल शेष प्रकृति के सुख-सौंदर्य के साथ हो जाएगा, जब उसकी रक्षा का भाव तृण-गुल्म, वृक्ष-लता, पशु-पक्षी, कीट-पतंग, सबकी रक्षा के भाव के साथ समन्वित हो जाएगा, तब उसके अवतार का उद्देश्य पूर्ण हो जाएगा और वह जगत् का सच्चा प्रतिनिधि हो जाएगा। काव्य-योग की साधना इसी भूमि पर पहुँचाने के लिए है।

(असिस्टेंट ग्रेड, 1997)

1. शासन और कविता की पहुँच में अंतर यह है कि एक व्यक्ति
   (a) को प्रवृत्ति की ओर ले जाता है, दूसरा निवृत्ति की ओर
   (b) के सामाजिक जीवन को प्रभावित करता है, दूसरा धार्मिक जीवन को
   (c) के बाह्य व्यक्तित्व को प्रभावित करता है, दूसरा आंतरिक व्यक्तित्व को
   (d) के भौतिक जीवन को प्रभावित करता है, दूसरा उसके मर्म को आघात पहुँचाता है

2. शासन मनुष्य को इसलिए संचालित कर पाता है, क्योंकि
   (a) मनुष्य स्वभावतः कायर एवं लालची होता है।
   (b) मनुष्य अपना इहलोक और परलोक दोनों बनाना चाहता है।
   (c) लोभ और भय मनुष्य की वे कमजोरियाँ हैं जो सभी में समान रूप से पाई जाती हैं।
   (d) मनुष्य इहलोक में रहते हुए ही अपना परलोक भी बनाना चाहता है।

3. रेखांकित पंक्ति से लेखक का आशय है कि भक्ति
   (a) धर्म का वह स्वरूप है जो व्यक्ति को चिरकाल तक आनन्द में डुबोए रहता है।
   (b) वह अनुभूति है जिसमें धर्म जैसा शुष्क विषय भी आनन्ददायक बन जाता है।
   (c) धर्म का वह स्वरूप है जिसके आचरण में व्यक्ति सदैव आनंद का अनुभव करता है।
   (d) ऐसी विचार धारा है जो व्यक्ति को सदैव आनंदमग्न रखती है।

4. मनुष्य संसार के साथ तभी सामंजस्य स्थापित कर सकता है जब
   (a) वह अपने भाव-क्षेत्र में सम्पूर्ण विश्व को समाविष्ट कर ले।
   (b) वह सम्पूर्ण जगत् के साथ प्रेम-भाव की स्थिति में आ जाए।
   (c) व्यक्ति अपने जीवन का सामंजस्य प्रकृति और पशु-पक्षी जगत् के साथ भी कर ले।
   (d) सृष्टि स्वयं को उसके सुख में सुखी और दुःख में दुःखी अनुभव करे।

5. मनुष्य की काव्य योग साधना तब पूरी होगी जब वह
   (a) जगत् का सच्चा प्रतिनिधि हो जाएगा।
   (b) भावात्मक दृष्टि से प्रकृति के साथ अभेद की स्थिति में आ जाएगा।
   (c) जड़-चेतन संसार के सुख में अपना सुख मानने लगेगा।
   (d) प्राकृतिक उपादानों की रक्षा का दायित्व अपने ऊपर समझने लगेगा।

उत्तरमाला

1. (c) 2. (c) 3. (b) 4. (b) 5. (d)

4.

हमारे इतिहास के अध्ययन ने हमें यह दर्शाया है कि जीवन प्रायः बहुत क्रूर तथा कठोर है। इसके लिए उत्तेजित होना या लोगों को पूरी तरह दोषी ठहराना मूर्खता है और उसका कोई लाभ नहीं। गरीबी, दुःख और शोषण के कारणों को समझने और उनको दूर करने के प्रयत्नों में ही समझदारी है। यदि हम ऐसा करने में असफल हो जाते हैं और घटनाओं की दौड़ में पीछे रह जाते हैं, तो हम अवश्य कष्ट पाते हैं। भारत इस तरह से पीछे रह गया। यह कुछ प्राचीन रह गया। इसके समाज ने पुरातन परम्परा को धारण कर लिया, इसके सामाजिक ढाँचे ने अपने जीवन और शक्ति को खो दिया और यह निष्क्रिय होने लगा। यह आश्चर्यजनक नहीं है कि भारत ने कष्ट पाया। अंग्रेज इसका कारण रहे हैं। यदि अंग्रेज ऐसा न करते, तो शायद कोई और लोग ऐसा ही करते ।

परन्तु अंग्रेजों ने भारत का एक बहुत बड़ा हित किया। उनके नए और हृष्ट-पुष्ट जीवन के प्रभाव ने भारत को हिला दिया और उनमें राजनीतिक एकता और राष्ट्रीयता की भावना जागृत हो गई। शायद यह बड़ा दुःखदायी था कि हमारे प्राचीन देश और लोगों में नवजीवन लाने की आवश्यकता थी। अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य केवल क्लर्क बनाना और तत्कालीन पश्चिमी विचारों से लोगों को परिचित कराना था। एक नया वर्ग बनने लगा, अंग्रेजी शिक्षित वर्ग, संख्या में कम और लोगों से कटा हुआ, परन्तु जिसके भाग्य में नए राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व था। यह वर्ग पहले इंग्लैण्ड और अंग्रेजी स्वतंत्रता के विचारों का पूरी तरह प्रशंसक था। तब ही लोग स्वतंत्रता और प्रजातंत्र के बारे में बातें कर रहे थे। यह सब अनिश्चित था और इंग्लैण्ड भारत में अपने लाभ के लिए निरंकुशता से राज्य कर रहा था, परन्तु यह आशा की जाती थी कि इंग्लैण्ड ठीक समय पर भारत को स्वतन्त्रता दे देगा।

भारत में पश्चिमी विचारों का प्रभाव हिन्दू धर्म पर भी कुछ सीमा तक पड़ा। जनसमूह तो प्रभावित नहीं हुआ, परन्तु जैसा मैं तुम्हें बता चुका हूँ, ब्रिटिश सरकार की नीति ने रूढ़िवादी लोगों की वास्तव में सहायता की, परन्तु नया मध्यम वर्ग जो अभी बन रहा था, जिसमें सरकारी कर्मचारी और व्यावसायिक लोग थे, प्रभावित हो गए थे। उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में पश्चिमी तरीकों से हिन्दू धर्म में सुधार लाने का प्रयत्न बंगाल में हुआ। हिन्दू धर्म के अनगिनत सुधारक अतीत में थे। इनमें से कुछ का उल्लेख मैं तुम्हें अपने इन पत्रों में कर चुका हूँ, परन्तु नया प्रयत्न निश्चय ही ईसाईवाद और पश्चिमी विचारों से प्रभावित था। इस प्रयत्न के निर्माता राजा राममोहन राय थे, एक महान व्यक्ति और एक महान विद्वान् जिसका नाम हम पहले ही सती प्रथा की समाप्ति के सम्बन्ध में ले चुके हैं। वे संस्कृत, अरबी और दूसरी कई भाषाएँ बहुत अच्छी तरह जानते थे और उन्होंने ध्यान से कई धर्मों का अध्ययन किया था। वे धार्मिक समारोह और पूजा आदि के विरुद्ध थे और उन्होंने समाज सुधार और स्त्री शिक्षा का समर्थन किया। जिस समाज की उन्होंने स्थापना की वह ब्रह्मो समाज कहलाया। *(यू० जी० सी०, 1998)*

1. इस अवतरण से लेखक के विषय में यह पता चलता है कि
   (a) भारत की समस्याओं के लिए वह विदेशी शासकों को दोषी ठहराता है।
   (b) वह भारत पर ब्रिटिश प्रभाव का परीक्षण निष्पक्षता से करता है।

(c) लेखक ने बहुत से वर्ष इंग्लैण्ड में बिताये हैं और भारत की तरफ उसकी अरुचि विकसित हो गई है।
(d) वह हिन्दू धर्म का सच्चा अनुयायी है।

2. लेखक कहता है कि पश्चिमी विचारों ने मार्ग प्रशस्त किया है—
(a) जनसमूह में निराशा का
(b) भारतीयों में अधिक निरक्षरता का
(c) मध्यम वर्ग के लोगों की ओर से विद्रोह का
(d) हिन्दू धर्म में सुधार का

3. यह अंग्रेजों द्वारा भारत को दिए गए महान् लाभों में से एक नहीं है।
(a) यह राजनीतिक एकता की भावना लाया।
(b) अंग्रेजी शिक्षा भारतीयों की तत्कालीन पश्चिमी विचारधारा के सम्पर्क में लायी।
(c) एक नए शिक्षित मध्यम वर्ग का जन्म हुआ।
(d) इसने रूढ़िवादिता और अन्धविश्वास को बढ़ावा दिया।

4. राजा राममोहन राय के व्यक्तित्व की पहचान की जाती थी—
(a) संस्कृत और अरबी की एक छात्रवृत्ति से
(b) विभिन्न धर्मों के समीकरण से
(c) पश्चिमी विचार के प्रकारों की एक निष्ठावान नकल से
(d) ईसाई धर्म के अधिकतम प्रभाव से

उत्तरमाला

1. (b) 2. (d) 3. (d) 4. (b)

5.

संस्कृति और सभ्यता—ये दो शब्द हैं और उनके अर्थ भी अलग-अलग हैं। सभ्यता मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी बाहरी तरक्की करता है। संस्कृति वह गुण है जिससे वह अपनी भीतरी उन्नति करता है, करुणा, प्रेम और परोपकार सीखता है। आज रेलगाड़ी, मोटर और हवाई जहाज, लम्बी-चौड़ी सड़कें और बड़े-बड़े मकान, अच्छा भोजन और अच्छी पोशाक, ये सभ्यता की पहचान हैं और जिस देश में इनकी जितनी ही अधिकता है उस देश को हम उतना ही सभ्य मानते हैं। मगर संस्कृति उन सबसे कहीं बारीक चीज है। वह मोटर नहीं, मोटर बनाने की कला है; मकान नहीं, मकान बनाने की रुचि है। संस्कृति धन नहीं, गुण है। संस्कृति ठाठ-बाट नहीं, विनय और विनम्रता है। एक कहावत है कि सभ्यता वह चीज है जो हमारे पास है, लेकिन संस्कृति वह गुण है जो हममें छिपा हुआ है। हमारे पास घर होता है, कपड़े-लत्ते होते हैं, मगर ये सारी चीजें हमारी सभ्यता के सबूत हैं, जबकि संस्कृति इतने मोटे तौर पर दिखलाई नहीं देती, वह बहुत ही सूक्ष्म और महान चीज है और वह हमारी हर पसंद, हर आदत में छिपी रहती है। मकान बनाना सभ्यता का काम है, लेकिन हम मकान का कौन-सा नक्शा पसंद करते हैं—यह हमारी संस्कृति बतलाती है। आदमी के भीतर काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और मत्सर ये छः विकार प्रकृति के दिए हुए हैं। मगर ये विकार अगर बेरोक छोड़ दिए जायें, तो आदमी इतना गिर जाए कि उसमें और जानवर में कोई भेद नहीं रह जाये। इसलिए आदमी इन विकारों पर रोक लगाता है। इन दुर्गुणों पर जो आदमी जितना ज्यादा काबू कर पाता है, उसकी संस्कृति भी उतनी ही ऊँची समझी जाती है। संस्कृति का स्वभाव है कि वह आदान-प्रदान से बढ़ती है। जब दो देशों या जातियों के लोग आपस में मिलते हैं तब उन दोनों की संस्कृतियाँ एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं। इसलिए संस्कृति की दृष्टि से वह जाति या वह देश बहुत ही धनी समझा जाता है जिसने ज्यादा-से-ज्यादा देशों या जातियों की संस्कृतियों से लाभ उठाकर अपनी संस्कृति का विकास किया हो।

(अनुवादक परीक्षा, 1999)

1. 'सभ्यता' का अभिप्राय है—
(a) मानव को कलाकार बना देने वाली विशेषता
(b) मानव के भौतिक विकास का विधायक गुण
(c) मनुष्य के स्वाधीन चिंतन की गाथा
(d) युग-युग की ऐश्वर्यपूर्ण कहानी

2. 'संस्कृति' का अभिप्राय है—
(a) हर युग में प्रासंगिक विशिष्टता
(b) विशिष्ट जीवन-दर्शन से सन्तुलित जीवन
(c) आनन्द मनाने का एक विशेष विधान
(d) मानव की आत्मिक उन्नति का संवर्धक आन्तरिक गुण

3. संस्कृति सभ्यता से इस रूप में भी भिन्न है कि संस्कृति—
(a) सभ्यता की अपेक्षा स्थूल और विशद होती है।
(b) एक आदर्श विधान है और सभ्यता यथार्थ होती है।
(c) सभ्यता की अपेक्षा अत्यन्त सूक्ष्म होती है।
(d) समन्वयमूलक है और सभ्यता नितान्त मौलिक होती है।

4. संस्कृति का मूल स्वभाव है कि वह—
(a) मानव-मानव में भेदभाव नहीं रखती।
(b) मनुष्य की आत्मा में विश्वास रखती है।
(c) आदान-प्रदान से बढ़ती है।
(d) एक समुदाय के जीवन में ही जीवित रह सकती है।

5. मानव की मानवीयता इसी बात में निहित है कि वह—
(a) अपनी सभ्यता और संस्कृति का प्रचार करे।
(b) अपनी संस्कृति को समृद्ध करने के लिए कटिबद्ध रहे।
(c) सभ्यता की ऊँचाइयों को पाने का प्रयास करे।
(d) अपने मन से विद्यमान विकारों पर नियंत्रण पाने की चेष्टा करे।

उत्तरमाला

1. (b) 2. (d) 3. (c) 4. (c) 5. (d)

6.

पश्चिम की प्रौद्योगिकी और पूरब की धर्मचेतना का सर्वश्रेष्ठ लेकर ही नई मानव संस्कृति का निर्माण सम्भव है। पश्चिम नया धर्म चाहता है, पूरब नया ज्ञान। दोनों की अपनी-अपनी आवश्यकता है। वहाँ यन्त्र है, मन्त्र नहीं। यहाँ मन्त्र है, यन्त्र नहीं। वहाँ भौतिक सम्पन्नता है, यहाँ आध्यात्मिक सम्पन्नता है। पश्चिम के आध्यात्मिक दैन्य को दूर करने में पूरब की मैत्री, करुणा और अहिंसा के सन्देश महत्वपूर्ण होंगे तो पूरब के भौतिक दैन्य को पश्चिम की प्रौद्योगिकी दूर करेगी। पूरब-पश्चिम के मिलन से ही मनुष्य की देह और आत्मा को एक साथ चरितार्थता मिलेगी। इससे प्रौद्योगिकी जड़ता के बंधनों से मुक्त होगी और पूरब का अध्यात्मवाद, परलोकवाद तथा निष्क्रियतावाद से छुटकारा पाएगा। भाग्यवाद को प्रौद्योगिकी को सौंपकर हम मनुष्य की कर्मण्यता को चरितार्थ करेंगे और इस धरती के जीवन को स्वर्गोपम बनाएंगे। जीवन से भाग करके नहीं, उसके भीतर से ही हमें लोकमंगल की साधना करनी होगी। विरक्तिमूलक आध्यात्मिकता का स्थान लोकमांगलिक आध्यात्मिकता लेगी। यह आध्यात्मिकता लोकमंगल और लोकसेवा में ही चरितार्थता पाएगी। मनुष्य मात्र के दुःख उत्पीड़न और अभाव के प्रति संवेदित और क्रियाशील होकर ही हम अपनी आध्यात्मिकता को प्राणवान, जीवन्त और सार्थक बना सकेंगे। ज्ञान को शक्ति में नहीं, परमार्थ तथा उत्सर्ग में ढालकर ही हम मानवता को उजागर करेंगे। प्रकृति से हम जो कुछ पाया है, उसे हम बलात् छीनी हुई वस्तु क्यों मानें। क्यों न हम यह स्वीकार करें कि प्रकृति ने अपने अक्षय भण्डार को मानव-मात्र के लिए अनावृत्त कर रखा है? प्रकृति के प्र

प्रतियोगिता या प्रतिस्पर्धा का भाव क्यों रखा जाए ? वस्तुतः प्रकृति के प्रति सहयोगी, कृतज्ञ तथा सदाशय होकर ही मनुष्य अपनी भीतरी प्रकृति को राग-द्वेष से मुक्त करता है और स्पर्धा को प्रेम में बदलता है। आज आणविक प्रौद्योगिकी को मानव कल्याण का साधन बनाने की अत्यन्त आवश्यकता है। यह तभी सम्भव है जब मनुष्य की बौद्धिकता के साथ-साथ उसकी रागात्मकता का विकास हो। रवीन्द्र और गाँधी का यही सन्देश है। 'कामायनी' के रचयिता जयशंकर प्रसाद ने श्रद्धा और इड़ा के समन्वय पर बल दिया है। मानवता की रक्षा और उसके विकास के लिए पूरब-पश्चिम का सम्मिलन आवश्यक है। तभी कवि पन्त का यह कथन चरितार्थ हो सकेगा—

'मानव तुम सबसे सुन्दरतम'। *(अनुवादक परीक्षा, 2000)*

1. उपरिलिखित अवतरण का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक हो सकता है—
   (a) पूरब-पश्चिम का सम्मिलन
   (b) मानव-उत्पीड़न से मुक्ति
   (c) पूरब पूरब है पश्चिम पश्चिम है
   (d) मानव तुम सबसे सुन्दरतम्
2. मनुष्य का एक साथ दैहिक और आत्मिक विकास निम्नांकित कथन की क्रियान्विति से ही सम्भव है—
   (a) पूँजीवाद और साम्यवाद के समन्वय से
   (b) पूरब और पश्चिम के समन्वय से
   (c) तन्त्र और मन्त्र के समन्वय से
   (d) लोक और परलोक के समन्वय से
3. पश्चिम के पास अभाव है—
   (a) आध्यात्मिक सम्पदा का
   (b) भौतिक सुख-सुविधाओं का
   (c) यान्त्रिक सभ्यता का
   (d) वैज्ञानिक प्रगति का
4. प्रकृति के प्रति श्रेयस्कर है मनुष्य का—
   (a) रागात्मक भाव (b) कृतज्ञता भाव
   (c) स्पर्धा भाव (d) असूया भाव
5. भौतिक साधन विपन्नता से मुक्ति के लिए आज अनिवार्य है—
   (a) आणविक शस्त्रास्त्रों का निर्माण
   (b) परलोकवादी विचारधारा का त्याग
   (c) पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण
   (d) प्रौद्योगिकी का ग्रहण
6. मनुष्य मात्र के दुःखों एवं अभावों के प्रति संवेदनशीलता से सप्राण एवं सार्थक बन सकती है हमारी—
   (a) प्रौद्योगिकी क्षेत्र की प्रगति (b) प्रकृति से प्रतिस्पर्धा
   (c) आध्यात्मिकता (d) भौतिक सम्पन्नता
7. वर्तमान युग में अध्यात्मवाद सार्थकता प्राप्त कर सकता है—
   (a) लोकहित भावना से सम्पन्न होकर
   (b) प्रकृति पर विजयी होकर
   (c) जीवन से पलायन करके
   (d) विरक्तिमूलक अध्यात्म को अपना करके
8. मैत्री, करुणा और अहिंसा को अपनाने से दूर होने की सम्भावना है—
   (a) प्राच्य भौतिकवाद के दैन्य की
   (b) पश्चिमी भौतिकवाद की विपन्नता की
   (c) पश्चिमी अध्यात्मवाद की विपन्नता की
   (d) पूरबी अध्यात्मवाद की विपन्नता की
9. पश्चिम की प्रौद्योगिकी और पूरब की धर्म-चेतना का समन्वय आवश्यक है—
   (a) प्रौद्योगिकी और अध्यात्म के समन्वय के लिए
   (b) यान्त्रिकता और प्रौद्योगिकी के विकास के लिए
   (c) मानवता की रक्षा और विकास के लिए
   (d) बौद्धिकता और रागात्मकता के समन्वय के लिए
10. श्रद्धा और इड़ा के समन्वय से कवि का अभिप्रेत है—
    (a) भौतिकी और रसायन का
    (b) रागात्मकता और बौद्धिकता का
    (c) रागात्मकता और विरागात्मकता का
    (d) सहृदयता और कर्मठता का

उत्तरमाला

1. (a) 2. (b) 3. (a) 4. (b) 5. (d) 6. (c)
7. (a) 8. (b) 9. (c) 10. (b)

7.

लन्दन शहर टेम्स नदी के किनारे पर बसा हुआ है, जिसका पाट चौड़ा है और पानी गहरा। समुद्र तट के निकट होने और टेम्स नदी में काफी पानी रहने के कारण, लन्दन एक विशाल बन्दरगाह भी है। वहाँ रोज सैकड़ों जहाज आते-जाते हैं और दूर से देखने पर टेम्स नदी के ऊपर मस्तूलों का जंगल मालूम होता है। यहाँ से पृथ्वी की सभी दिशाओं को माल जाता है और वहाँ से आता है। लन्दन तथा इंगलिस्तान की भोजन सामग्री का बहुत भाग इसी बन्दरगाह पर पहुँचता है। यदि एक सप्ताह के लिए जहाजों का आना-जाना बन्द हो जाए तो इस देश में त्राहि-त्राहि मच जाए। इसलिए ब्रिटिश साम्राज्य ने अपनी नाविक शक्ति इतनी प्रबल कर ली है कि उससे दुनिया में कोई भी राज्यशक्ति समुद्री युद्ध में टक्कर नहीं ले सकती। *(रेलवे, 2001)*

1. ब्रिटिश साम्राज्य ने अपनी नाविक शक्ति क्यों इतनी प्रबल बना ली ?
   (a) कोई शत्रु इसे हरा न सके
   (b) कोई लन्दन पर आक्रमण न कर सके
   (c) कोई इसके जहाजों का आना-जाना न रोक सके
   (d) लन्दन शहर को कोई क्षति न पहुँच सके
2. मस्तूलों का जंगल कहने से लेखक का क्या अभिप्राय है ?
   (a) मस्तूलों की पंक्तियाँ (b) असंख्य मस्तूल
   (c) मस्तूलों का आकर्षक दृश्य (d) मस्तूलों की बहार
3. 'त्राहि-त्राहि मच जाने' का क्या अर्थ है ?
   (a) हल्ला मच जाना (b) हल्ला-गुल्ला आरम्भ होना
   (c) शोर-शराबा होना (d) हाहाकार मच जाना
4. 'टक्कर लेने' का अर्थ है—
   (a) तुलना करना (b) मुकाबला करना
   (c) टकराना (d) लोहा मानना
5. लन्दन बन्दरगाह कहाँ पर स्थित है ?
   (a) समुद्र तट पर (b) काफी गहरे पानी पर
   (c) जहाजों के जंगल में (d) नदी के तट पर

उत्तरमाला

1. (c) 2. (b) 3. (d) 4. (b) 5. (d)

8.

निकम्मे रहकर मनुष्यों की चिन्तन-शक्ति थक गई है। बिस्तरों और आसनों पर सोते-सोते मन के घोड़े हार गए हैं। सारा जीवन-रस निचुड़ चुका है। स्वप्न पुराने हो चुके हैं। आजकल कविता में नयापन नहीं। उसमें पुराने जमाने की पुनरावृत्ति मात्र है। इस नकल में असल की पवित्रता का अभाव है। अब तो

एक नए प्रकार का कलाकौशलपूर्ण संगीत साहित्य संसार में प्रचलित होने वाला है। यदि वह न प्रचलित हुआ तो मशीनों के पहियों के नीचे दबकर हमें मरा समझिये। यह नया साहित्य मजदूरों के हृदय से निकलेगा। उन मजदूरों के कंठ से यह नई कविता निकलेगी जो अपने जीवन आनन्द के साथ खेत की मेड़ों का, कपड़ों के धागों का , जूते के टांकों का, लकड़ी के रंगों का भेदभाव दूर करेंगे। नंगे सिर और पाँव, धूल से पिटे और कीचड़ से रंगे हुए वे बेजुबान कवि जब जंगल में लकड़ी काटेंगे तब लकड़ी काटने के शब्द इनके असभ्य स्वरों से मिश्रित होकर वायुयान पर चढ़ दसों दिशाओं में ऐसा अद्‌भुत गान करेगा कि भविष्य के कलावन्तों के लिए वही ध्रुपद और मल्हार का काम देगा। कला रूपी धर्म की तभी वृद्धि होगी, तभी नए कवि पैदा होंगे, तभी नए औलियों का उद्‌भव होगा। परन्तु ये सब के सब मजदूरी के दूध से पलेंगे। शुद्धाचरण, सभ्यता और कविता आदि के फूल इन्हीं ऋषियों के उद्यान में प्रफुल्लित होंगे। *(रेलवे, 2002)*

1. कविता में नवीन विषयों के अभाव का मुख्य कारण यह है कि
   (a) मनुष्य का सारा जीवन-रस निचुड़ चुका है, स्वप्न पुराने हो चुके हैं।
   (b) श्रमहीनता की स्थिति ने मनुष्य की चिन्तन-शक्ति क्षीण कर दी है।
   (c) मनुष्य ने नवीन विषयों पर विचार करना बन्द कर दिया है।
   (d) मनुष्य ने नवीन कल्पनाएं करनी बन्द कर दी है।
2. यदि संगीत नवीन साहित्य संसार में प्रचलित नहीं हुआ तो मनुष्य—
   (a) नवीन कला-कौशलपूर्ण संगीत से वंचित रह जाएगा।
   (b) भौतिकता के आधिक्य के कारण भावहीन हो जाएगा।
   (c) भविष्य में कभी साहित्यिक प्रगति न कर पाएगा।
   (d) मशीनों का गुलाम बनकर रह जाएगा।
3. नवीन साहित्य का प्रमुख विषय होगा—
   (a) श्रमजीवियों के कण्ठ से निकला राग
   (b) मजदूरों के जीवन में बिखरा आनन्द
   (c) आम आदमी के श्रमपूर्ण जीवन
   (d) खेत की मेड़, कपड़े के धागे, जूते के टाँके और लकड़ी के रंग
4. मजदूर बेजुबान रहकर भी कविता कर सकता है—
   (a) औजारों से निकलने वाले संगीत के माध्यम से
   (b) भविष्य के कलावंतों को नवीन दृष्टि प्रदान करके
   (c) नवीन साहित्य के विषय-रूप में प्रतिष्ठित होकर
   (d) अपनी भावनाओं की लिखित अभिव्यक्ति के माध्यम से
5. आधुनिक युग में लिखी जा रही कविता में नयापन नहीं है क्योंकि इसमें—
   (a) असली काव्य की पवित्रता का अभाव है।
   (b) नई कला-कौशलपूर्ण अभिव्यक्ति को स्थान नहीं मिला है।
   (c) परम्परागत मूल्यों की अवधारणा नहीं है।
   (d) नवीन भावों की अभिव्यक्ति नहीं मिल रही है।

उत्तरमाला

1. (d) 2. (d) 3. (b) 4. (a) 5. (d)

9.

ज़िन्दगी के असली मजे उनके लिए नहीं हैं जो फूलों की छाँह के नीचे खेलते और सोते हैं, बल्कि फूलों की छाँह के नीचे अगर जीवन का कोई स्वाद छिपा है, तो वह भी उन्हीं के लिए है जो दूर रेगिस्तान से आ रहे हैं जिनका कंठ सूखा हुआ है, ओठ फटे हुए और सारा बदन पसीने से तर है। पानी में जो अमृतवाला तत्व है, उसे वह जानता है जो धूप में खूब सूख चुका है, वह नहीं जो रेगिस्तान में कभी पड़ा ही नहीं है। *(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)*

1. यह गद्यांश किसका लिखा हुआ है ?
   (a) रामधारी सिंह 'दिनकर' (b) रामचन्द्र शुक्ल
   (c) गुलाब राय (d) बालमुकुन्द गुप्त
2. ज़िन्दगी के असली मजे किनके लिए है ?
   (a) जो आराम करते हैं (b) जो परिश्रम करते हैं
   (c) जो शहर में रहते हैं (d) जो पैसे वाले है
3. उपर्युक्त गद्यांश में किस बात के महत्व को बताया गया है?
   (a) प्रकृति (b) जीवन (c) श्रम (d) भाग्य
4. जो धूप में खूब सूख चुका है, से अभिप्राय है—
   (a) कड़ा परिश्रम करना (b) धूप सेंकना
   (c) बीमार होना (d) रेगिस्तान में रहना
5. 'अमृतवाला तत्व' का तात्पर्य है—
   (a) जीवन का सार (b) अमृत
   (c) जीवन का रहस्य (d) समुद्र से निकलाहुआ अमृत

उत्तरमाला

1. (a) 2. (b) 3. (c) 4. (a) 5. (a)

10.

भूषण महाराज ने विषय और विशेषतया नायक चुनने में बड़ी बुद्धिमता से काम लिया है। शिवाजी और छत्रसाल से महानुभावों के पवित्र चरित्रों का वर्णन करने वाले की जितनी प्रशंसा की जाए थोड़ी है। शिवाजी ने एक जमींदार और बीजापुरधीश के नौकर के पुत्र होकर चक्रवर्ती राज्य स्थापित करने की इच्छा को पूर्ण-सा कर दिखाया और छत्रसाल बुन्देला ने जिस समय मुगलों का सामना करने का साहस किया उस समय उसके पास केवल पाँच सवार और पच्चीस पैदल थे। इसी सेना से इस महानुभाव ने दिल्ली का सामना करने की हिम्मत की और मरते समय अपने उत्तराधिकारियों के लिए दो करोड़ वार्षिक मुनाफे का स्वतंत्र राज्य छोड़ा। *(टी० जी० टी०, 2004)*

1. महाकवि भूषण दरबारी कवि थे, उनके आश्रयदाता राजा का नाम था—
   (a) शिवाजी (b) छत्रसाल
   (c) औरंगजेब (d) वीर सिंह जूदेव
2. छत्रपति शिवाजी की प्रशस्ति में लिखे गये दो काव्य ग्रंथों के नाम हैं—
   (a) शिवा बावनी, शिवराज भूषण
   (b) शिवा चरित, शिवा विलास
   (c) शिवा वैभव, शिवा चिन्तन
   (d) शिव कथा, शिवा विक्रम
3. इस गद्यांश का सार्थक शीर्षक हो सकता है—
   (a) भूषण विवेक (b) भूषण की बुद्धिमत्ता
   (c) भूषण की कला
   (d) भूषण का काव्यनायक चयन
4. छत्रसाल बुन्देला ने जिस समय मुगलों का सामना किया, उस समय उनके पास थे—
   (a) दो सवार और पाँच पैदल
   (b) पाँच सवार और पच्चीस पैदल
   (c) पच्चीस सवार और दो पैदल
   (d) पच्चीस सवार और पाँच पैदल
5. भूषण का प्रिय काव्य रस था—
   (a) करुण (b) शान्त (c) वीर (d) शृंगार

उत्तरमाला

1. (a) 2. (a) 3. (b) 4. (b) 5. (c)

11.

वास्तव में हृदय वही है जो कोमल भावों और स्वदेश प्रेम से ओतप्रोत हो। प्रत्येक देशवासी को अपने वतन से प्रेम होता है, चाहे उसका देश सूखा, गर्म या दलदलों से युक्त हो। देश-प्रेम के लिए किसी आकर्षण की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि वह तो अपनी भूमि के प्रति मनुष्य मात्र की स्वाभाविक ममता है। मानव ही नहीं पशु-पक्षियों तक को अपना देश प्यारा होता है। संध्या समय पक्षी अपने नीड़ की ओर उड़े चले जाते हैं। देश-प्रेम का अंकुर सभी में विद्यमान है। कुछ लोग समझते हैं कि मातृ भूमि के नारे लगाने से ही देश-प्रेम व्यक्त होता है। दिन-भर वे त्याग, बलिदान और वीरता की कथा सुनाते नहीं थकते, लेकिन परीक्षा की घड़ी आने पर भाग खड़े होते हैं। ऐसे लोग स्वार्थ त्यागकर, जान जोखिम में डालकर देश की सेवा क्या करेंगे ? आज ऐसे लोगों की आवश्यकता नहीं है।*(अनुवादक परीक्षा, 2005)*

1. देश-प्रेम का अंकुर विद्यमान है—
   (a) सभी मानवों में (b) सभी प्राणियों में
   (c) सभी पक्षियों में (d) सभी पशुओं में
2. सच्चा देश-प्रेमी—
   (a) वीर सपूतों की कहानियाँ सुनाता है।
   (b) मातृभूमि का जयघोष करता है।
   (c) परीक्षा की कसौटी पर खरा उतरता है।
   (d) अपनी भूमि देश के लिए दान कर देता है।
3. देश-प्रेम का अभिप्राय है—
   (a) देश के प्रति कोमल भावों का उदय
   (b) अनथक प्रयत्न करके देश का निर्माण करना
   (c) देशहित के लिए शत्रु से संघर्ष करना
   (d) देश के प्रति व्यक्ति का स्वाभाविक ममत्व
4. संध्या समय पक्षी अपने घोंसलों में वापस चले जाते हैं, क्योंकि—
   (a) दिन-भर घूमकर वे थक जाते हैं।
   (b) उन्हें रात को आराम करना है।
   (c) जानवर भी अपने निवास-स्थान को चले जाते हैं।
   (d) उन्हें अपना नीड़ प्यारा होता है।
5. वही देश महान् है जहाँ के लोग—
   (a) शिक्षित और प्रशिक्षित हैं।
   (b) बेरोजगार तथा निरुद्यमी नहीं है।
   (c) कृषि और व्यापार से धनार्जन करते हैं।
   (d) त्याग और उत्सर्ग में सदा आगे रहते हैं।

उत्तरमाला

1. (b) 2. (c) 3. (d) 4. (d) 5. (d)

12.

आवश्यकता इस बात की है कि हमारी शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषा हो, जिसमें राष्ट्र के हृदय-मन-प्राण के सूक्ष्मतम और गम्भीरतम संवेदन मुखरित हों और हमारा पाठ्यक्रम यूरोप तथा अमेरिका के पाठ्यक्रम पर आधरित न होकर हमारी अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं एवं आवश्यकताओं का प्रतिनिधित्व करे। भारतीय भाषाओं, भारतीय इतिहास, भारतीय दर्शन, भारतीय धर्म और भारतीय समाजशास्त्र को हम सर्वोपरि स्थान दें। उन्हें अपने शिक्षाक्रम में गौण स्थान देकर या शिक्षित जन को उनसे वंचित रखकर हमने राष्ट्रीय संस्कृति में एक महान् रिक्ति को जन्म दिया है, जो नयी पीढ़ी को भीतर से खोखला कर रहा है। हम राष्ट्रीय परम्परा से ही नहीं, सामयिक जीवन प्रवाह से भी दूर जा पड़े हैं। विदेशी पश्चिमी चश्मों के भीतर से देखने पर अपने घर के प्राणी भी बे-पहचाने और अजीब से लगने लगे हैं। शिक्षित जन और सामान्य जनता के बीच खाई बढ़ती गई है और विश्व संस्कृति के दावेदार होने का दम्भ करते हुए भी हम घर में वामन ही बने रह गए हैं। इस स्थिति को हास्यास्पद ही कहा जा सकता है।

1. उपर्युक्त गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक है—
   (a) हमारा शिक्षा-माध्यम और पाठ्यक्रम
   (b) शिक्षित जन और सामान्य जनता
   (c) हमारी सांस्कृतिक परम्परा
   (d) शिक्षा का माध्यम
2. हमारी शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषा इसलिए होना चाहिए क्योंकि उसमें—
   (a) विदेशी पाठ्यक्रम का अभाव होता है।
   (b) भारतीय इतिहास और भारतीय दर्शन का ज्ञान निहित होता है।
   (c) सामयिक जीवन निरन्तर प्रवाहित होता रहता है।
   (d) भारतीय मानस का स्पन्दन ध्वनित होता है।
3. हमारी शिक्षा में ऐसे पाठ्यक्रम की आवश्यकता है जिसमें
   (a) सामयिक जन-संस्कृति का समावेश हो।
   (b) भारतीय सांस्कृतिक परम्परा का प्रतिनिधित्व हो।
   (c) पाश्चात्य संस्कृति का पूर्ण ज्ञान कराने की क्षमता हो।
   (d) आधुनिक वैज्ञानिक विचारधाराओं का सन्निवेश हो।
4. हमें राष्ट्रीय सांस्कृतिक परम्परा के साथ-साथ जुड़ना चाहिए—
   (a) सामयिक जीवन-प्रवाह से
   (b) समसामयिक वैज्ञानिक विचारधारा से
   (c) अद्यतन साहित्यिक परम्परा से
   (d) भारतीय नव्य समाजशास्त्र से
5. शिक्षित जन और सामान्य जनता में निरन्तर अन्तर बढ़ने का कारण है कि हम—
   (a) भारतीय समाजशास्त्र को सर्वोपरि स्थान नहीं देते।
   (b) विदेशी चश्मे लगाकर अपने लोगों को देखते हैं।
   (c) भारतीय भाषाओं का अध्ययन नहीं करते।
   (d) नई पीढ़ी को भीतर से खोखला कर रहे हैं।

उत्तरमाला

1. (a) 2. (d) 3. (b) 4. (d) 5. (b)

13.

सच्चे वीर अपने प्रेम के जोर से लोगों को सदा के लिए बाँध देते हैं। वीरता की अभिव्यक्ति कई प्रकार से होती है, कभी लड़ने-मरने से, खून बहाने से, तोप तलवार के सामने बलिदान करने से होती है, तो कभी जीवन के गूढ़ तत्व और सत्य की तलाश में बुद्ध जैसे राजा विरक्त होकर वीर हो जाते हैं। वीरता एक प्रकार की अन्तः प्रेरणा है जब कभी उसका विकास हुआ तभी एक रौनक, एक रंग, एक बहार संसार में छा गई। वीरता हमेशा निराली और नई होती है। वीरों को बनाने के कारखाने नहीं होते। वे तो देवदार के वृक्ष की भाँति जीवन रूपी वन में स्वयं पैदा होते हैं और बिना किसी के पानी दिये, बिना किसी के दूध पिलाये बढ़ते हैं। ''जीवन के केन्द्र में निवास करो और सत्य की चट्टान पर दृढ़ता से खड़े हो जाओ। बाहर की सतह छोड़कर जीवन के अन्दर की तहों में पहुँचें तब नये रंग खिलेंगे।'' यही वीरता का संदेश है।

1. इस गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक होगा—
   (a) वीरता संस्मरण (b) सच्ची वीरता
   (c) वीरों का उत्पन्न होना (d) देवदार और वीर

2. वीरता का संदेश क्या है ?
   (a) यह संकल्प कि किसी भी हालत में युद्ध जीतना है
   (b) बुद्ध जैसे राजा की भाँति विरक्त होना
   (c) उद्देश्य के लिए सच्चाई पर चट्टान की तरह अटल रहना
   (d) हमेशा नया और निराला रहना
3. वीरों की देवदार वृक्ष से तुलना की गई, क्योंकि दोनों—
   (a) खाना-पीना मिलने पर ही बढ़ते हैं
   (b) का दिल उदार होता है
   (c) सत्य का हमेशा पालन करते हैं
   (d) स्वयं पैदा होते हैं और बिना किसी के दूध पिलाये बढ़ते हैं
4. निम्नलिखित में से कौन-सा रूप वीरता का नहीं है ?
   (a) क्रोध (b) युद्ध (c) त्याग (d) दान
5. वीरता का एक विशेष लक्षण है—
   (a) नयापन (b) नकल (c) हास्य (d) करुणा

उत्तरमाला

1. (b) 2. (c) 3. (d) 4. (a) 5. (a)

14.

सामान्यतः दुष्टों की वन्दना में या तो भय रहता है या व्यंग्य, परन्तु जहाँ हम हानि होने के पहले ही हानि के कारण की वन्दना करने लगते हैं वहाँ हमारी वन्दना के मूल में भय नहीं, बल्कि उसकी स्थायी दशा की आशंका है। इस वन्दना में दुष्टों को थपकी देकर सुलाने की चाल है जिसमें विघ्न बाधाओं से जान बच सके। आशंका से उत्पन्न यह नम्रता गोस्वामी जी को आश्रय से आलंबन बना देती है। जब स्फुट अंशों के संचारी भावों तथा अनुभवों को छोड़कर वन्दना के पीछे निहित भावना की दृष्टि से देखते हैं, तो यह आश्रय से संक्रमित आलंबन का उदाहरण बन जाता है। संतों, देवताओं तथा राम की वन्दना पर्याप्त नहीं इसलिए दुष्टों की भी वन्दना की जाती है। इससे दुष्टों के महत्व की भायिक सृष्टि होती है और वह उन्हें और भी उपहास्य बना देती है।

1. दुष्ट वन्दना के पीछे लेखक का उद्देश्य है—
   (a) दुष्टों को लज्जित करना
   (b) दुष्टों को थपकी देकर सुलाना
   (c) दुष्टों से अपना बचाव करना
   (d) दुष्टों का सहयोग प्राप्त करना
2. रामचरित मानस एक भक्ति काव्य है। इसमें दुष्ट वन्दना का रहस्य है—
   (a) तुलसी की व्यापक दृष्टि
   (b) तुलसी का सभी को राममय देखना
   (c) तुलसी की उदारता (d) तुलसी का शील-सौजन्य
3. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक हो सकता है—
   (a) तुलसी की दुष्ट वन्दना (b) तुलसी की उदारता
   (c) तुलसी का मानवीय दृष्टिकोण
   (d) उपर्युक्त तीनों
4. देवताओं, महापुरुषों, सज्जनों के साथ दुष्टों की वन्दना इसलिए सार्थक कही जायेगी कि महाकवि तुलसी दास—
   (a) संत कवि थे (b) उदार नेता थे
   (c) हित-अनहित और अपने-पराये की भावना से ऊपर उठ चुके थे
   (d) निर्वरता चाहते थे
5. जीवन में हास्य का महत्व इसलिए है कि वह जीवन को—
   (a) प्रेरणा देता है (b) आनन्दित करता है
   (c) आगे बढ़ाता है (d) सरस बनाता है

उत्तरमाला

1. (b) 2. (b) 3. (c) 4. (b) 5. (d)

15.

अस्ताचल रवि, जल छल-छल छवि
स्तब्ध विश्वकवि, जीवन उन्मन
मन्द पवन बहती सुधि रह रह
परिमल की कह कथा पुरातन
दूर नदी पर नौका सुन्दर
दीखी मृदु तर बहती ज्यों स्वर
वहाँ स्नेह की प्रतनु देह की
बिना गेह की बैठी नूतन
ऊपर शोभित मेघ सत्र सित
नीचे अमित नील जल दोलित
ध्यान-नयन मन चिन्त्य-प्राण-धन
किया शेष रवि ने कर अर्पण

1. इस कविता का सार्थक शीर्षक हो सकता है—
   (a) दिवस का अवसान (b) दिवा-गमन
   (c) अस्ताचल रवि (d) रवि का अर्पण
2. इस कविता में छायावादी कवि निराला ने—
   (a) प्रकृति का मनोरम चित्रण किया है
   (b) अस्तगत सूर्य और उसकी प्रतीक्षा में रत संध्या का वर्णन किया है
   (c) मादक भावनाओं की अभिव्यक्ति की है
   (d) सूर्यास्त का चित्रण किया है
3. इस पद्यांश में प्रयोग किया गया शब्द 'प्रतनु' अर्थ रखता है—
   (a) प्रमुदित (b) क्षीण (c) मृत (d) प्रेत
4. पण्डित निराला हिन्दी के—
   (a) श्रेष्ठ साहित्यकार थे (b) लेखक तथा कवि दोनों थे
   (c) समाजवादी कवि थे
   (d) प्रख्यात तथा सर्वोत्कृष्ट छायावादी कवि थे
5. उपर्युक्त पद्य में प्रयुक्त 'गेह' शब्द का प्रयोग अर्थ रखता है—
   (a) गेहूँ (b) एक जीव (c) घर (d) द्वार

उत्तरमाला

1. (b) 2. (d) 3. (b) 4. (b) 5. (c)

16.

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार
देख मराठे पुलकित होते उसके तलवारों के वार
नकली युद्ध व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना ये थे उसके प्रिय खेलवार
महाराष्ट्र कुल देवी उसकी भी आराध्य भवानी थी
बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी

1. उक्त पद्यांश का सही शीर्षक हो सकता है—
   (a) झाँसी की रानी (b) 1857 का गदर
   (c) अंग्रेजों का आक्रमण (d) महाराष्ट्र कुल देवी
2. इस कविता की कवयित्री का नाम है—
   (a) महादेवी वर्मा (b) सुभद्रा कुमारी चौहान
   (c) तारा पाण्डेय (d) मीराबाई
3. इस कविता में प्रयोग किया गया रस है—
   (a) भक्ति (b) करुण (c) शृंगार (d) वीर
4. कवयित्री की अधिकांश रचनाएँ—
   (a) सामाजिक हैं (b) वात्सल्यपूर्ण हैं
   (c) देशभक्तिपूर्ण हैं (d) धार्मिक हैं

5. 'खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' में मरदानी शब्द का अर्थ है—
(a) वीरांगना (b) पुरुषों जैसी
(c) पुरुषत्ववान (d) लड़ाकू

उत्तरमाला

1. (a) 2. (b) 3. (d) 4. (c) 5. (c)

17.

आज क्यों तेरी वीणा मौन
शिथिल शिथिल तन थकित हुये कर
स्पन्दन भी भुला जाता डर
मधुर कसक सा आज हृदय में
आन समाया कौन ?

झुकती आती पलकें निश्चल
चित्रित निद्रित से तारक चल
सोता पाराबार दृगों में
भर-भर लाया कौन ?
आज क्यों तेरी वीणा मौन ?

1. इस कविता के रचयिता हैं—
(a) सुमित्रानंदन पन्त (b) सुभद्रा कुमारी चौहान
(c) महादेवी वर्मा (d) मीराबाई

2. 'नीरजा' से उद्धृत इस कविता का आशय है—
(a) न जाने आज क्यों उनकी हृदतंत्री बज नहीं रही
(b) दुःखों से आपूरित हृदय तथा नेत्रों के अश्रुमय होने के बावजूद वीणा मौन क्यों है ?
(c) विरह व्यथा की कसक तन-मन को व्याकुल बना रही है, फिर भी आहें नहीं भरी जातीं, रहस्य प्रकट करने में न जाने मैं क्यों असमर्थ हूँ
(d) विरह व्यथा की कथा अकथनीय है

3. इस कविता का उपयुक्त शीर्षक होगा—
(a) सुधि बन छाया कौन (b) आज क्यों तेरी वीणा मौन
(c) हृदय में आन समाया कौन (d) मौन वीणा का रहस्य

4. कवयित्री के बारे में यह निर्विवाद सत्य है कि वह—
(a) सर्वोत्कृष्ट कवयित्री थी (b) साधना में दूसरी मीरा थी
(c) छायावादीत्रयी में न होकर अपनी विशिष्ट पहचान रखती थी
(d) सुप्रसिद्ध छायावादी कवयित्री थी

5. भाव व्यंजना की दृष्टि से यह कविता —
(a) दुर्बोध रचना है (b) श्रेष्ठ रचनाओं में से एक है
(c) आरम्भिक रचना है
(d) प्रकृति चित्रण की दृष्टि से बेजोड़ है

उत्तरमाला

1. (c) 2. (a) 3. (b) 4. (b) 5. (b)

18.

राज भाषा का अर्थ राजा या राज्य की भाषा है। वह भाषा जिसमें शासक या शासन का काम होता है। राष्ट्र भाषा वह है जिसका व्यवहार राष्ट्र के सामान्य जन करते हैं। राजभाषा का क्षेत्र सीमित होता है। राष्ट्र भाषा सारे देश की संपर्क भाषा है। राष्ट्र भाषा के साथ जनता का भावात्मक लगाव रहता है। क्योंकि उसके साथ जनसाधारण की सांस्कृतिक परंपरायें जुड़ी रहती हैं। राजभाषा के प्रति वैसा सम्मान हो तो सकता है, लेकिन नहीं भी हो सकता है, क्योंकि वह अपने देश की भी हो सकती है। किसी गैर देश से आये शासक की भी हो सकती है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में आज हिन्दी राजभाषा के रूप में ही विराजित है। 14 सितंबर, 1949 ई. को भारत के संविधान में हिन्दी को मान्यता प्रदान की गई है। संविधान की धारा 120 के अनुसार संसद का कार्य हिन्दी में या अंग्रेजी में किया जाता है। धारा 210 के अंतर्गत राज्यों के विधानमंडलों का कार्य अपने-अपने राज्य की राजभाषा या हिन्दी में या अंग्रेजी में किया जा सकता है। 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। इस भाषा का प्रसार तथा प्रचार के लिए महात्मा गाँधी का योगदान रहा है। धारा 344 में राष्ट्रपति को शासकीय कार्य में हिन्दी भाषा का प्रयोग अधिक करने के लिए कहा गया है।

1. राष्ट्रभाषा के प्रमुख लक्षणों में से इनमें से कौन-सा व्यवहार नहीं है ?
(a) क्षेत्र सीमित होता है (b) सामान्य जन भाषा है
(c) सारे देश की संपर्क भाषा है
(d) जनता की भावानात्मक तथा सांस्कृतिक भाषा है

2. हिन्दी भाषा को भारतीय संविधान में किस साल मान्यता प्राप्त हुई है ?
(a) 1947 (b) 1948 (c) 1949 (d) 1950

3. इस अनुच्छेद का निम्न में से उचित शीर्षक चुनिए।
(a) राजभाषा और राष्ट्रभाषा (b) भावनात्मक भाषा
(c) जनभाषा (d) बोलचाल की भाषा

4. इस अनुच्छेद के सार में किस भाषा को ज्यादा जोर देने की बात कही गयी है ?
(a) भारतीय सभी भाषाओं को (b) हिन्दी भाषा को
(c) संविधानिक भाषा को (d) दक्षिण की भाषा को

5. भारतीय किस भाषा को विश्व भाषा बनने की ज्यादा संभावना है ?
(a) कन्नड़ (b) मराठी (c) गुजराती (d) हिन्दी

6. धारा 344 किसे हिन्दी भाषा का प्रयोग ज्यादा शासकीय कार्य के लिए करने की बात कही गयी है ?
(a) मुख्यमंत्री (b) प्रधानमंत्री (c) राष्ट्रपति (d) शासकगण

7. आजादी के बाद देश में राजभाषा के रूप में कौन-सी भाषा स्थित है ?
(a) कन्नड़ (b) पंजाबी (c) हिन्दी (d) अंग्रेजी

8. भारत वर्ष में हिन्दी दिवस कब मनाया जाता है ?
(a) 2 अक्टुबर (b) 15 अगस्त
(c) 26 जनवरी (d) 14 सितंबर

9. हिन्दी भाषा के प्रचार एवं प्रसार में किसका योगदान रहा ?
(a) महात्मा गाँधीजी (b) जवाहरलाल नेहरु
(c) सुभाष चंद्र बोस (d) जय प्रकाश नारायण

10. संघ की राजभाषा हिन्दी तथा लिपि देवनागरी का उल्लेख किसमें है ?
(a) भारत में (b) संविधान में
(c) संविधान के 343 धारा में (d) सभी धारा के अंतर्गत

11. राजभाषा का अर्थ क्या है ?
(a) देश की भाषा (b) नगर की भाषा
(c) राजा या राज्य की भाषा (d) विदेशियों की भाषा

12. संविधान के किस धारा के अंतर्गत संसद का कार्य-कलाप हिन्दी या अंग्रेजी में करने का उल्लेख है ?
(a) धारा 210 (b) धारा 120 (c) धारा 343 (d) धारा 344

13. हिन्दी भाषा की लिपि क्या है ?
(a) द्राविड़ (b) देवनागरी (c) ब्राह्मी (d) खरोष्टी

14. इनमें से कौन-सी धारा हिन्दी भाषा के लिए अन्वित नहीं है ?
(a) धारा 100 (b) धारा 120 (c) धारा 210 (d) धारा 343

15. राज्य विधानमंडलों के कार्य-कलाप संबंधी भाषा का उल्लेख संविधान की कौन-सी धारा करती है ?
(a) धारा 210 (b) धारा 343 (c) धारा 344 (d) धारा 345

उत्तरमाला

1. (a) 2. (c) 3. (a) 4. (b) 5. (d) 6. (c)
7. (c) 8. (d) 9. (a) 10. (c) 11. (c) 12. (b)
13. (b) 14. (a) 15. (a)

19 शब्द-शक्ति, रस
(Word-Power, Sentiments)

शब्द-शक्ति (Word-Power)

➢ हिन्दी के रीतिकालीन आचार्य चिन्तामणि ने लिखा है कि ''जो सुन पड़े सो शब्द है, समुझि परै सो अर्थ'' अर्थात् जो सुनाई पड़े वह शब्द है तथा उसे सुनकर जो समझ में आवे वह उसका अर्थ है। स्पष्ट है कि जो ध्वनि हमें सुनाई पड़ती है वह 'शब्द' है, और उस ध्वनि से हम जो संकेत या मतलब ग्रहण करते हैं वह उसका 'अर्थ' है।

शब्द से अर्थ का बोध होता है। अतः शब्द हुआ 'बोधक' (बोध करानेवाला) और अर्थ हुआ 'बोध्य' (जिसका बोध कराया जाये)।

➢ मिठाई या चाट का नाम सुनते ही मुँह में पानी भर आता है। साँप या भूत का नाम सुनते ही मन में भय का संचार हो जाता है। यह प्रभाव अर्थगत है। अतः जिस शक्ति के द्वारा शब्द का अर्थगत प्रभाव पड़ता है वह शब्द-शक्ति है।

➢ शब्द का अर्थ-बोध करानेवाली शक्ति 'शब्द-शक्ति' कहलाती है। शब्द-शक्ति को संक्षेप में 'शक्ति' कहते हैं। इसे 'वृत्ति' या 'व्यापार' भी कहा जाता है।

➢ जितने प्रकार के शब्द होंगे उतने ही प्रकार की शक्तियाँ होंगी। शब्द तीन प्रकार के–वाचक, लक्षक एवं व्यंजक होते हैं तथा इन्हीं के अनुरूप तीन प्रकार के अर्थ–वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ एवं व्यंग्यार्थ होते हैं। शब्द और अर्थ के अनुरूप ही शब्द की तीन शक्तियाँ–अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना होती हैं।

शब्द	अर्थ	शक्ति
वाचक/अभिधेय	वाच्यार्थ/अभिधेयार्थ/मुख्यार्थ	अभिधा
लक्षक/लाक्षणिक	लक्ष्यार्थ	लक्षणा
व्यंजक	व्यंग्यार्थ/व्यंजनार्थ	व्यंजना

वाच्यार्थ कथित होता है, लक्ष्यार्थ लक्षित होता है और व्यंग्यार्थ व्यंजित, ध्वनित, सूचित या प्रतीत होता है।

शब्द में अर्थ तीन प्रकार से आता है। अर्थ के जो तीन स्रोत हैं उन्हीं के आधार पर शब्द की शक्तियों का नामकरण किया जाता है।

शब्द-शक्ति के प्रकार

➢ प्रक्रिया या पद्धति के आधार पर शब्द-शक्ति तीन प्रकार के होते हैं—अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना।

अभिधा से मुख्यार्थ का बोध होता है, लक्षणा से मुख्यार्थ से संबद्ध लक्ष्यार्थ का, लेकिन व्यंजना से न मुख्यार्थ का बोध होता है न लक्ष्यार्थ का, बल्कि इन दोनों से भिन्न अर्थ व्यंग्यार्थ का बोध होता है।

अभिधा (Literal Sense of a Word)

➢ परिभाषा : जिस शक्ति के माध्यम से शब्द का साक्षात् संकेतित (पहला/मुख्य/प्रसिद्ध/प्रचलित/पूर्वविदित) अर्थ बोध हो, उसे 'अभिधा' कहते हैं। जैसे—'बैल खड़ा है।'–इस वाक्य को सुनते ही बैल नामक एक विशेष प्रकार के जीव को हम समझ लेते हैं, उसे आदमी या किताब नहीं समझते। यहाँ 'बैल' वाचक शब्द है जिसका मुख्यार्थ विशेष जीव है। परंपरा, कोश, व्याकरण आदि से यह अर्थ पूर्वविदित (पहले से मालूम) है। यानी शब्द और उसके अर्थ के बीच किसी प्रकार की बाधा नहीं है।

(अभिधा का अर्थ है 'नाम'। दूसरे शब्दों में नामवाची अर्थ को बतलानेवाली शक्ति को अभिधा कहते हैं। नाम जाति, गुण, द्रव्य या क्रिया का होता है और ये सभी साक्षात् संकेतित होते हैं। अभिधा को 'शब्द की प्रथमा शक्ति' भी कहा जाता है।)

उदाहरण : निराला की 'वह तोड़ती पत्थर' कविता के आरंभ की ये पंक्तियाँ अभिधा के प्रयोग का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं—

''वह तोड़ती पत्थर।
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर।''

इन पंक्तियों में कवि, शब्दों से सीधे-सीधे जो अर्थ प्रकट करता है, वही अर्थ कविता का है—कवि ने पत्थर तोड़ती हुई स्त्री को इलाहाबाद के पथ पर देखा।

➢ इस शब्द-शक्ति के द्वारा तीन प्रकार के शब्दों का बोध होता है—रूढ़ शब्द (जैसे—कृष्ण), यौगिक शब्द (जैसे—पाठशाला) एवं योगरूढ़ शब्द (जैसे—जलज)।

➢ अभिधा का महत्त्व : अलंकारशास्त्रियों के अनुसार काव्य में अभिधा शब्द-शक्ति का विशेष महत्त्व नहीं है। लेकिन अभिधा एकदम से महत्त्वहीन नहीं है। हिन्दी के रीतिकालीन आचार्य देव का मानना है : ''अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणालीन/अधम व्यंजना रस विरस, उलटी कहत नवीन।'' आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का मत है : ''वास्तव में व्यंग्यार्थ या लक्ष्यार्थ के कारण चमत्कार आता है; परन्तु वह चमत्कार होता है वाच्यार्थ में ही। अतः इस वाच्यार्थ को देने वाली अभिधा शक्ति का अपना महत्त्व है।'' आचार्य शुक्ल अन्यत्र लिखते हैं : ''जब कविता में कल्पना और सौंदर्यवाद का अतिशय जोर हो जाता है तब जीवन की वास्तविकता पर बल देने के लिए काव्य में भी अभिधा शक्ति का महत्त्व बढ़ जाता है।''

लक्षणा (Figurative Sense of a Word)

➢ अभिधा के असमर्थ हो जाने पर जिस शक्ति के माध्यम से शब्द का अर्थ बोध हो, उसे 'लक्षणा' कहते हैं।

➢ लक्षणा की शर्तें : लक्षणा के लिए तीन शर्तें हैं—मुख्यार्थ में बाधा, मुख्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ में संबंध तथा रूढ़ि या प्रयोजन।

(i) मुख्यार्थ में बाधा : इसमें मुख्य अर्थ या अभिधेय अर्थ लागू नहीं होता है वह बाधित (असंगत) हो जाता है।

(ii) मुख्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ में संबंध : जब मुख्य अर्थ बाधित हो जाता है तो उसके स्थान पर दूसरा अर्थ (गौण अर्थ) लिया जाता है, पर यह दूसरा अर्थ अनिवार्य रूप से मुख्य अर्थ से संबंधित होता है।

(iii) रूढ़ि या प्रयोजन : मुख्य अर्थ को छोड़कर उसके दूसरे अर्थ को अपनाने के पीछे या तो कोई रूढ़ि होती है या कोई प्रयोजन।

रूढ़ि कहते हैं प्रयोग-प्रवाह, प्रसिद्धि को अर्थात् वैसा बोलने का चलन है, तरीका है। किसी बात को कहने की जो प्रथा हो जाती है, वह 'रूढ़ि' कहलाती है। जैसे—''मुझे देखते ही वह नौ दो ग्यारह हो गया।''—इस वाक्य में 'नौ दो ग्यारह होना' (मुहावरा) का अर्थ है—'भाग जाना।' इसके बदले में यदि कोई कहे कि 'मुझे देखते ही वह दस बीस चालीस हो गया।' या 'मुझे देखते ही वह ग्यारह दो नौ हो गया।' तो इसका कोई अर्थ नहीं होगा क्योंकि ऐसी कोई रूढ़ि नहीं है। यानी भागने की रूढ़ि अर्थात् प्रसिद्धि नौ दो ग्यारह में ही है।

प्रयोजन कहते है अभिप्राय या मतलब को। अर्थात् हमारे मन में कोई ऐसा अभिप्राय है जो प्रयुक्त शब्द से व्यक्त नहीं हो रहा है तब उसके लिए दूसरा शब्द प्रयोग कर अपना अभिप्राय प्रकट करते हैं। जैसे हम किसी को अतिशय मूर्ख कहना चाहते हैं तो ''तुम मूर्ख हो।'' कह देने से मूर्खता की अतिशयता प्रकट नहीं होती, लेकिन यदि हम कहे कि ''तुम बैल हो।'' तो इसका अर्थ है कि तुम अतिशय मूर्ख (बुद्धिहीन) हो। यहाँ 'बैल' शब्द का प्रयोग मूर्खता की अतिशयता बताने के प्रयोजन से किया गया है।

लक्षणा की शास्त्रीय परिभाषा : मुख्यार्थ के बाधित होने पर जिस शक्ति के द्वारा मुख्यार्थ से संबंधित अन्य अर्थ रूढ़ि या प्रयोजन के कारण लिया जाए, वह 'लक्षणा' है।

➢ उदाहरण :

(i) सभी मुहावरे व लोकोक्तियाँ—सभी मुहावरों एवं लोकोक्तियों में लक्षणा शब्द-शक्ति के सहारे अर्थ ग्रहण किया जाता है। जैसे—''उसके लिए चुल्लू भर पानी में डूब मरने की बात है।''— इस वाक्य में 'चुल्लू भर पानी में डूब मरना (मुहावरा)' से हमें शब्दों का मुख्यार्थ अभीष्ट नहीं है। हम इनसे दूसरा अर्थ लेते हैं कि 'बड़ी लज्जा की बात है।' इसी तरह 'राम चरण की जगह उसके भतीजे पिण्टू के घर के मालिक होने पर उसके पड़ोसी ने कहा—हंसा थे सो उड़ गये, कागा भये दीवान।'—इस वाक्य में 'हंसा थे सो उड़ गये, कागा भये दीवान (लोकोक्ति) से हम शब्दों का मुख्यार्थ नहीं लेते, बल्कि हम इनसे दूसरा अर्थ लेते हैं कि उक्त घर में 'सज्जन/योग्य/गुणवान व्यक्ति के स्थान पर दुर्जन/अयोग्य/गुणहीन व्यक्ति का आधिपत्य हो गया है।'

(ii) एक पद्यबद्ध उदाहरण : निराला की 'वह तोड़ती पत्थर' कविता की अंतिम पंक्ति—

देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं।

दृष्टि मार नहीं खाती, प्राणी मार खाता है, दृष्टि नहीं रोती प्राणी रोता है। इसलिए दृष्टि 'जो मार खा रोई नहीं'—इस कथन में अभिधेय अर्थ या मुख्य अर्थ लागू नहीं होता, बाधित हो जाता है। तब हम उससे संबंधित अन्य अथ दूसरा अर्थ लेते हैं—कवि उस स्त्री की बात कह रहा है जो जीवन संघर्ष में बार-बार मार खाकर या आघात झेलकर रोई नहीं।

(iii) एक और पद्यबद्ध उदाहरण : दिनकर की काव्य-कृति 'रेणुका' से—

विद्युत की इस चकाचौंध में,
देख, दीप की लौ रोती है,
अरी, हृदय को थाम,
महल के लिए झोंपड़ी बलि होती है।

इस पद्य का मुख्यार्थ स्पष्ट है कि विद्युत की इस चकाचौंध में दीप की लौ रोती है। अरी! हृदय को थाम ले, यहाँ महल के लिए झोंपड़ी बलि होती है। किन्तु इसका लक्ष्यार्थ यह है कि महलों में रहनेवाले लोगों को जो वैभव प्राप्त है वह वस्तुतः झोंपड़ी में रहनेवाले मजदूरों के श्रम का ही परिणाम है। इस पद्य में 'महल' का अर्थ महल के निवासी अर्थात् 'धनी' और 'झोंपड़ी' का अर्थ झोंपड़ी के निवासी अर्थात् 'निर्धन' अर्थ भी लक्षणा शब्द-शक्ति से गृहीत होते हैं। इसी प्रकार इस पद्य में प्रयुक्त 'विद्युत की चकाचौंध' का 'वैभव' अर्थ और 'दीपक की लौ का रोना' का 'श्रमिक जीवन' अर्थ भी लक्षणा शब्द-शक्ति द्वारा ज्ञात होते हैं।

➢ लक्षणा के भेद : कारण के आधार पर लक्षणा के दो भेद हैं—रूढ़ा लक्षणा एवं प्रयोजनवती लक्षणा

रूढ़ा लक्षणा : जहाँ रूढ़ि के कारण मुख्यार्थ से भिन्न लक्ष्यार्थ का बोध हो, वहाँ 'रूढ़ा लक्षणा' होती है।

उदाहरण :

(i) गद्यात्मक उदाहरण : ''आप तो एकदम राजा हरिशचंद्र हैं'' का लक्ष्यार्थ है आप हरिशचंद्र के समान सत्यवादी हैं। सत्यवादी व्यक्ति को राजा हरिशचंद्र कहना रूढ़ि है।

(ii) पद्यबद्ध उदाहरण : 'आगि बड़वागि ते बड़ी है आगि पेट की' (तुलसी) का मुख्यार्थ है—बड़वाग्नि यानी समुद्र में लगने वाली आग से बड़ी पेट की आग होती है। पेट में आग नहीं, भूख लगती है इसलिए मुख्यार्थ की बाधा है। लक्ष्यार्थ है तीव्र और कठिन भूख को व्यक्त करना जो पेट की आग के जरिये किया गया है। तीव्र और कठिन भूख के लिए 'पेट में आग लगना' कहना रूढ़ि है।

प्रयोजनवती लक्षणा : जहाँ प्रयोजन के कारण मुख्यार्थ से भिन्न लक्ष्यार्थ का बोध हो, वहाँ 'प्रयोजनवती लक्षणा' होती है।

उदाहरण :

(i) ''शिवाजी सिंह है''—यदि हम कहें कि शिवाजी सिंह हैं। तो सिंह शब्द के मुख्यार्थ (विशेष जीव) में बाधा पड़ जाती है। हम सब जानते हैं कि शिवाजी आदमी थे, सिंह नहीं लेकिन यहाँ शिवाजी के लिए सिंह शब्द का प्रयोग विशेष प्रयोजन के लिए किया गया है। शिवाजी को वीर या साहसी बताने के लिए सिंह शब्द का प्रयोग हुआ है। इस प्रकार 'सिंह' शब्द का 'वीर' या 'साहसी' अर्थ लक्ष्यार्थ है।

(ii) ''लड़का शेर है''—यदि हम कहें कि 'लड़का शेर है।' तो इसका लक्ष्यार्थ है 'लड़का निडर है।' यहाँ पर शेर का सामान्य अर्थ अभीष्ट नहीं है। लड़के को निडर बताने के प्रयोजन से उसके लिए शेर शब्द का प्रयोग किया गया है।

(iii) एक पद्यबद्ध उदाहरण :

कौशल्या के वचन सुनि भरत सहित रनिवास।
व्याकुल विलपत राजगृह मनहुँ शोक निवास।।

—तुलसी

कौशल्या के वचन सुनकर समस्त राजगृह व्याकुल होकर रो रहा है। 'राजगृह' अर्थात् राजभवन नहीं रो सकता। 'राजगृह' का लक्ष्यार्थ है 'राजगृह में रहनेवाले लोग'। समस्त राजगृह के राने से अत्यधिक दुःख को व्यक्त करने का विशेष प्रयोजन है।

प्रयोजनवती लक्षणा के भेद

भेद	लक्षण/पहचान-चिह्न	परिभाषा एवं उदाहरण
1. गौणी लक्षणा	सादृश्य संबंध	जहाँ सादृश्य संबंध अर्थात् समान गुण या धर्म के कारण लक्ष्यार्थ की प्रतीति हो। उदाहरण : 'मुख कमल'। सादृश्य संबंध के द्वारा लक्ष्यार्थ का बोध हो रहा है कि मुख कमल के समान कोमल है।
(i) सारोपा (स + आरोपा)	विषय/उपमेय/ आरोप का विषय + विषयी/ उपमान/आरोप्यमाण (दोनों)	जहाँ विषय और विषयी दोनों का शब्द निर्देश करते हुए अभेद बताया जाए। उदाहरण : 'सीता गाय है।' का लक्ष्यार्थ है—सीता सीधी-सादी है। यहाँ गाय (विषयी) का सीधापन-सादापन सीता (विषय) पर आरोपित है।
(ii) साध्यावसाना (स + अध्यवसाना) अध्यवसान = आत्मसात, निगरण	विषयी (केवल)	जहाँ केवल विषयी का कथन कर अभेद बताया जाए। उदाहरण : यदि कोई मालिक खीझ कर नौकर को कहे कि 'बैल कहीं का।' तो इस वाक्य में विषय (नौकर) का निर्देश नहीं है, केवल विषयी (बैल) का कथन है।
2. शुद्धा लक्षणा	सादृश्येतर संबंध सादृश्येतर = सादृश्य + इतर	जहाँ सादृश्येतर संबंध (सादृश्य संबंध के अतिरिक्त किसी अन्य संबंध) से लक्ष्यार्थ की प्रतीति हो। सादृश्येतर संबंध हैं—आधार-आधेय भाव, सामीप्य, वैपरीत्य, कार्य-कारण, तात्कर्म्य आदि। उदाहरण : (i) आधार-आधेय संबंध का उदाहरण : 'महात्मा गाँधी को देखने के लिए सारा शहर उमड़ पड़ा।' यहाँ 'शहर' का मुख्यार्थ (नगर) बाधित है, 'शहर' का लक्ष्यार्थ है—'शहर के निवासी'। शहर है—आधार और शहर का निवासी है—आधेय। (ii) सामीप्य संबंध का उदाहरण : आँचल में है दूध और आँखों में पानी। (यशोधरा) यहाँ आँचल का मुख्यार्थ (साड़ी का छोर) बाधित है, आँचल मैथिलीशरण गुप्त का लक्ष्यार्थ है—स्तन। चूँकि आँचल सदा स्तन के समीप रहता है, इसलिए आँचल और स्तन में सामीप्य संबंध है। (iii) वैपरीत्य संबंध का उदाहरण : 'तुम सूख-सूख कर हाथी हुए जा रहे हो।' कोई व्यक्ति सूख-सूखकर हाथी नहीं हो सकता है, लक्ष्यार्थ है—तुम बहुत दुर्बल हो गये हो। (iv) वैपरीत्य संबंध का एक और उदाहरण : 'उधो तुम अति चतुर सुजान' यहाँ जब गोपियाँ उद्धव को चतुर और सुजान बता रही है तो सूरदास वे वस्तुतः उद्धव को सीधा और अजान कह रही है। यहाँ चतुर और सुजान के मुख्यार्थ बाधित है और उनमें चतुरता का अभाव और अज्ञता का बोध कराना लक्ष्यार्थ है।
(i) उपादान लक्षणा (उपादान = ग्रहण करना)	मुख्यार्थ + लक्ष्यार्थ (दोनों)	जहाँ मुख्यार्थ के साथ लक्ष्यार्थ का भी ग्रहण हो। उदाहरण : 'पगड़ी की लाज रखिए।' यहाँ 'पगड़ी' का मुख्यार्थ है—पगड़ी, पाग और लक्ष्यार्थ है—'पगड़ी वाला'। यहाँ लक्ष्यार्थ के साथ-साथ मुख्यार्थ का भी ग्रहण किया गया है।
(ii) लक्षण-लक्षणा	लक्ष्यार्थ (केवल)	जहाँ मुख्यार्थ को छोड़कर (त्याग कर) केवल लक्ष्यार्थ का ग्रहण हो। उदाहरण : (i) 'वह पढ़ाने में बहुत कुशल है।'— इस वाक्य में 'कुशल' का मुख्यार्थ (कुश लाने वाला) बाधित है और केवल लक्ष्यार्थ (दक्ष) का ग्रहण किया गया है। (ii) 'माधुरी नृत्य में प्रवीण है।'—इस वाक्य में 'प्रवीण' का मुख्यार्थ (वीणा बजाने में निपुण) बाधित है और केवल लक्ष्यार्थ (कुशल) को ग्रहीत किया गया है। (iii) 'देवदत्त चौकन्ना हो गया।'—इस वाक्य में 'चौकन्ना' का मुख्यार्थ (चार कानों वाला) बाधित है और केवल लक्ष्यार्थ (सावधान) का ग्रहण किया गया है।

➢ *लक्षणा का महत्त्व : काव्य में लक्षणा के प्रयोग से जीवन के अनुभव को समृद्ध किया जाता है। कल्पना के सहारे सादृश्य और साधर्म्य के अनेकानेक विधानों द्वारा अनुभवों की सूक्ष्मता और विस्तार को प्रकट किया जाता है। इसलिए काव्य में लक्षणा शब्द-शक्ति की प्रबलता है।*

व्यंजना (Suggestive Sense of a Word)

➢ *परिभाषा : अभिधा व लक्षणा के असमर्थ हो जाने पर जिस शक्ति के माध्यम से शब्द का अर्थ बोध हो, उसे 'व्यंजना' कहते हैं।*

'व्यंजना' (वि + अंजना) शब्द का अर्थ है—'विशेष प्रकार का अंजन'। अंजन लगाने से आँखों की ज्योति बढ़ती है, पर विशेष प्रकार के अंजन लगाने से परोक्ष वस्तु भी दीखने लगती है। इसी प्रकार व्यंजना शब्द-शक्ति से अकथित अर्थ स्पष्ट होते हैं। जब अभिधा एवं लक्षणा अर्थ व्यक्त करने में असमर्थ हो जाती है तब व्यंजना शक्ति काव्य के छिपे हुए व्यंग्यार्थ का बोध कराती है।

व्यंग्यार्थ को 'ध्वन्यार्थ', 'सूच्यार्थ', 'आक्षेपार्थ', 'प्रतीयमानार्थ' आदि भी कहा जाता है।

उदाहरण :

(i) प्रसिद्ध उदाहरण : 'सूर्य अस्त हो गया।' इस वाक्य के सुनने के उपरांत प्रत्येक व्यक्ति इससे भिन्न-भिन्न अर्थ ग्रहण करता है। प्रसंग विशेष के अनुसार इस वाक्य के अनंत व्यंजनार्थ हो सकते हैं।

वाक्य	प्रसंग विशेष (वक्ता-श्रोता)	अर्थ
सूर्य अस्त हो गया	पिता के पुत्र से कहने पर	पढ़ाई-लिखाई शुरू करो।
	सास के बहू से कहने पर	चूल्हा-चौका आरंभ करो।
	किसान के हलवाहे से कहने पर	हल चलाना बंद करो।
	पशुपालक के चरवाहे से कहने पर	पशुओं को घर ले चलो।
	पुजारी के चेले से कहने पर	संध्या-पूजन का प्रबंध करो।
	राहगीर के अपने साथी से कहने पर	ठहरने का इंतजाम करो।
	कारवाँ-प्रमुख के उपप्रमुख से कहने पर	पड़ाव की व्यवस्था करो।

इस तरह इस एक वाक्य से वक्ता-श्रोता के अनुसार न जाने कितने अर्थ निकल सकते हैं। यहाँ जिसने भी अर्थ दिये गये हैं वे साक्षात् संकेतित नहीं हैं, इसलिए इनमें अभिधा शक्ति नहीं है। इनमें लक्षणा शक्ति भी नहीं है, कारण कि उक्त वाक्य लक्षणा की शर्त मुख्यार्थ में बाधा को पूरा नहीं करता क्योंकि यहाँ सूर्य का जो मुख्यार्थ है वह मौजूद है। साफ है कि इनमें पायी जानेवाली शब्द-शक्ति व्यंजना है।

(ii) एक पद्यबद्ध उदाहरण :

प्रभुहिं चितइ पुनि चितइ महि राजत लोचन लोल।
खेलत मनसिजु-मीन-जुग, जनु बिधुमंडल डोल।।

—तुलसी

यहाँ धनुष-यज्ञ के प्रसंग में सीता की मनोदशा का चित्रण किया गया है। इस पद्य की पहली पंक्ति का वाच्यार्थ/अभिधेयार्थ यह है कि सीता पहले राम की ओर देखती है और फिर धरती की ओर। इससे उनके चपल नेत्र शोभित हो रहे हैं। किन्तु व्यंजनार्थ यह है कि सीता के मन में इस समय उत्सुकता, हर्ष, लज्जा आदि के भाव क्षण-क्षण में प्रकट हो रहे हैं। राम को देखकर उत्सुकता और हर्ष का भाव उत्पन्न होता है, साथ ही दूसरों की उपस्थिति का ध्यान कर उनके मन में तुरंत लज्जा भी आ जाती है, और वे धरती की ओर देखने लगती हैं। पर हर्ष और उत्सुकता के वशीभूत होने से वे अपने को रोक नहीं पाती और फिर राम की ओर देखती है, किन्तु लज्जावश फिर धरती की ओर देखने लगती है। इस प्रकार यह चक्र कुछ समय तक चलता रहता है।

स्पष्ट है कि उक्त पद्य की पहली पंक्ति से हमें हर्ष, उत्सुकता, लज्जा आदि भावों की जो प्रतीति होती है वह न तो अभिधा शक्ति से होती है और न लक्षणा शक्ति से, बल्कि होती है व्यंजना शक्ति से।

(iii) एक और पद्यबद्ध उदाहरण :

चलती चाकी देख के दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय।।

—कबीर

यहाँ चलती चक्की को देखकर कबीरदास के दुःखी होने की बात कही गई है। उसके द्वारा यह अर्थ व्यंजित होता है कि संसार चक्की के समान है जिसके जन्म और मृत्यु रूपी दो पाटों के बीच आदमी पिसता रहता है।

➢ व्यंजना के भेद : व्यंजना के दो भेद हैं—शाब्दी व्यंजना एव आर्थी व्यंजना। शब्द पर आधारित व्यंजना को 'शाब्दी व्यंजना' एवं अर्थ पर आधारित व्यंजना को 'आर्थी व्यंजना' कहते हैं।

शब्द दो प्रकार के होते हैं—एकार्थक एवं अनेकार्थक। जिन शब्दों का केवल एक ही अर्थ होता है, उन्हें 'एकार्थक शब्द कहते हैं, जैसे—पुस्तक, दवा इत्यादि। जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें 'अनेकार्थक शब्द' कहते हैं, जैसे—कलम [अर्थ–1. लेखनी, 2. पेड़-पौधे की टहनी, 3. कलमकार की कूची, 4. चित्र-शैली (जैसे—पटना कलम) आदि], पानी (अर्थ–1. जल, 2. चमक, 3. प्रतिष्ठा आदि) इत्यादि। अनेकार्थक शब्दों पर टिकी व्यंजना को 'शाब्दी व्यंजना' तथा एकार्थक शब्दों पर टिकी व्यंजना को 'आर्थी व्यंजना' कहते हैं।

व्यंजना के भेद

भेद	लक्षण/पहचान-चिह्न	परिभाषा एवं उदाहरण
1. शाब्दी व्यंजना	अनेकार्थक शब्दों का प्रयोग	जहाँ अनेकार्थक शब्दों का प्रयोग हो, वहाँ 'शाब्दी व्यंजना' होती है। अनेकार्थक शब्द के अर्थ का निश्चय 14 आधारों में से किसी एक या अधिक आधार पर किया जाता है—संयोग, असंयोग, साहचर्य, विरोध, अर्थ, प्रकरण, लिंग, अन्य-सन्निधि (वक्ता व श्रोता के अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति की उपस्थिति), सामर्थ्य, औचित्य, देश, काल, व्यक्ति और काकु (स्वर विकार)। शाब्दी व्यंजना के दो भेद हैं— अभिधामूला एवं लक्षणामूला।
(i) अभिधामूला शाब्दी व्यंजना	अभिधात्मक शब्द पर आश्रित (निर्भर)	अभिधात्मक शब्द पर आश्रित (निर्भर) शाब्दी व्यंजना 'अभिधामूला शाब्दी व्यंजना' कहलाती है। उदाहरण : चिर जीवो जोरी जुरै, क्यों न सनेह गँभीर। को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के वीर।। —बिहारी बिहारी के इस दोहे का अभिधेयार्थ है— राधा कृष्ण की यह जोड़ी चिरजीवी हो। इनका गहरा प्रेम क्यों न जुड़े ? दोनों में कौन किससे घटकर है ? ये वृषभानुजा (वृषभानु + जा = वृषभानु की जाया/बेटी = राधा) है और वे हलधर (बलराम) के वीर भाई यानी कृष्ण। किन्तु 'वृषभानुजा' एवं 'हलधर के वीर' शब्द अनेकार्थक है, अतः उनसे दूसरा और तीसरा अर्थ भी ध्वनित होता है। दूसरे अर्थ में ये वृषभ + अनुजा = बैल की बहन यानी 'गाया' है और वे हलधर = बैल के वीर = भाई यानी 'साँड़' है। तीसरे अर्थ में ये 'वृष राशि में उत्पन्न' है और वे 'शेषनाग के अवतार'। इस दोहे में 'वृषभानुजा' के स्थान पर 'राधा' एवं 'हलधर' के स्थान पर 'बलराम' शब्द का प्रयोग कर दिया जाये तो यह व्यंग्यार्थ नष्ट हो जायेगा।

भेद	लक्षण/पहचान-चिह्न	परिभाषा एवं उदाहरण
(ii) लक्षणामूला शाब्दी व्यंजना	लाक्षणिक शब्द पर आश्रित (निर्भर)	लाक्षणिक शब्द पर आश्रित व्यंजना 'लक्षणामूला शाब्दी व्यंजना' कहलाती है। उदाहरण :फली सकल मनकामना, लूटयो अगणित चैन। आजु अँचे हरि रूप सखि, भये प्रफुल्लित नैन।। इस उदाहरण में लक्षणा के 'फली' का अर्थ है पूर्ण हुई, 'लूट्यो' का अर्थ है प्राप्त किया और 'अँचे' का अर्थ है-देखा। किन्तु व्यजना से संपूर्ण पद का व्यंग्यार्थ है प्रियतम के दर्शन से अत्यधिक आनंद प्राप्त किया।
2. आर्थी व्यंजना	एकार्थक शब्दों का प्रयोग	जहाँ एकार्थक शब्दों का प्रयोग हो, वहाँ 'आर्थी व्यंजना' होती है। एकार्थक शब्दों के अर्थ का निश्चय 10 आधारों में से किसी एक या अधिक आधार पर किया जाता है-वक्ता (कहनेवाला), बोधव्य (सुननेवाला), काकु (स्वर विकार), वाक्य, वाच्य, अन्य सन्निधि (कहनेवाले और सुननेवाले के अलावा किसी तीसरे शख्स की मौजूदगी), प्रकरण (प्रसंग), देश, काल एवं चेष्टा। उदाहरण :(i) काकु का उदाहरण— मैं सुकुमारि, नाथ वन जोगू। तुमहि उचित तप, मो कहँ भोगू।। —तुलसी सीता, राम से कहती है कि मैं सुकुमारी हूँ और आप वन जाने के योग्य हैं, आपके लिए तप का रास्ता उचित है और मुझे भोग के रास्ते पर चलने को कह रहे हैं। यहाँ सीता के कहने के विशेष प्रकार यानी स्वर विकार (काकु) के कारण यह ध्वनित हो रहा है कि मैं ही सुकुमारी नहीं हूँ, आप भी सुकुमार हैं। आप वन जाने के योग्य है तो मैं भी वन जाने के योग्य हूँ। मैं राजकुमारी हूँ तो आप भी राजकुमार हैं। अतः मेरा भी वन जाना उचित है। चूँकि इसमें प्रयुक्त सभी शब्द एकार्थक हैं इसलिए आर्थी व्यंजना है। (ii) अन्य-सन्निधि का उदाहरण : एक लड़की किसी लड़के से प्रेम करती है। उससे मिलने को व्याकुल है, पर उसे कोई खबर भी नहीं भिजवा सकती। अचानक एक दिन वह लड़का दिख गया, पर उस समय लड़की की सखी मौजूद थी। लड़की ने होशियारी के साथ अपनी सखी से कहा- क्या बताऊ सखी, दिन भर काम मे जुती रहती हूँ। सिर्फ शाम को थोड़ी फुरसत मिलती है तब कहीं नदी किनारे पानी लाने जाती हूँ, पर उस समय कोई चिड़िया का पूत भी नहीं होता। क्या करूँ, लाचार हूँ।'' इस साधारण वाक्य का अर्थ उस लड़के के नजदीक रहने (अन्य सन्निधि) से यह हो जाता है कि तुम शाम को नदी किनारे मिलो। (iii) चेष्टा का उदाहरण : कोटि मनोज लजावन हारे। सुमुखि कहहु को आहहि तुम्हारे।। सुनि सनेहमय मंजुल बानी। सकुचि सीय मन महँ मुसकानी।। —तुलसी तुलसी के इस चौपाई का मुख्यार्थ है—वनवास के समय राम, सीता एवं लक्ष्मण के दिव्य रूप को देखकर वन की स्त्रियों में सीता से राम की ओर संकेत कर परिचय पूछा तो उनकी स्निग्ध भोली वाणी सुनकर सीता ने संकोच के साथ मुस्कुरा दिया। किन्तु इस चौपाई को व्यंग्यार्थ है—सीता ने कुछ बोलकर उनके (वन के स्त्रियों के) प्रश्न का उत्तर नहीं दिया पर उनकी संकोच भरी मुस्कान ने बता दिया कि 'ये मेरे पति हैं।' चूँकि इस चौपाई में प्रयुक्त सभी शब्द एकार्थक हैं इसलिए इसमें आर्थी व्यंजना है और आर्थी व्यंजना का आधार आंगिक चेष्टा (संकोच भरी मुस्कान) है।

➢ *व्यंजना का महत्त्व : काव्य सौंदर्य के बोध में व्यंजना शब्द शक्ति का विशिष्ट एवं महत्त्वपूर्ण स्थान है। व्यंजना शब्द-शक्ति काव्य में अर्थ की गहराई, सघनता और विस्तार लाता है। काव्यशास्त्रियों ने सर्वश्रेष्ठ काव्य की सत्ता वहीं स्वीकार की है जहाँ रस व्यंग्य (व्यंजित) हो। रीतिकालीन कवि और आचार्य प्रतापसाहि के शब्दों में :*

व्यंग्य जीव है कवित में शब्द अर्थ गति अंग।
सोई उत्तर काव्य है बरणै व्यंग्य प्रसंग।।

अभिधा और लक्षणा में अंत

अभिधा और लक्षणा में अंतर इस प्रकार हैं—

(i) अभिधा और लक्षणा दोनों शब्द-शक्तियाँ हैं। दोनों से शब्दों के अर्थ का बोध होता है, पर अभिधा से शब्द के मुख्यार्थ का बोध होता है, किन्तु लक्षणा से मुख्यार्थ को बोध नहीं होता, बल्कि मुख्यार्थ से संबंधित अन्य अर्थ (लक्ष्यार्थ) का बोध होता है।

अभिधा का उदाहरण- 'बैल खड़ा है।'—इस वाक्य में बैल शब्द सुनते ही 'पशु विशेष' का चित्र आँखों के सामने आ जाता है। लक्षणा का उदाहरण- 'सुनील बैल है।'—सुनील को बैल कहने में मुख्यार्थ की बाधा है, क्योंकि कोई आदमी बैल नहीं हो सकता। बैल में जड़ता, बुद्धिहीनता आदि धर्म होते हैं। सुनील में भी बुद्धिहीनता है, इसलिए सादृश्य संबंध से बैल का लक्ष्यार्थ किया गया-बुद्धिहीन। बुद्धिहीनता का बोध हुआ लक्षणा के द्वारा। इसलिए इस वाक्य में लक्षणा है।

(ii) अभिधा शब्द-शक्ति तत्काल अपने मुख्यार्थ का बोध करा देती है, पर लक्षणा शब्द-शक्ति अपने लक्ष्यार्थ का बोध तत्काल नहीं करा पाती है। लक्षणा के लिए तीन बातों का होना नितांत आवश्यक है-मुख्यार्थ में बाधा, मुख्यार्थ और लक्ष्यार्थ में संबंध तथा रूढ़ि या प्रयोजन। इस त्रयी के अभाव में लक्षणा की कल्पना नहीं की जा सकती, लेकिन अभिधा की, की जा सकती है।

(iii) अभिधा शब्द-शक्ति शब्द की सबसे साधारण शक्ति है। इस शब्द-शक्ति का काव्य में कोई विशेष स्थान नहीं है, क्योंकि वाच्य (अभिधेय) शब्द में कोई चमत्कार नहीं रहता। लक्षक (लाक्षणिक) शब्द में चमत्कार रहता है, इसलिए इसकी काव्य में अधिक उपयोगिता है।

अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना में अंतर

अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना के बीच अंतर इस प्रकार हैं—

(i) अभिधा किसी शब्द के केवल उसी अर्थ को बतलाती है जो पहले से निश्चित और व्यवहार में प्रसिद्ध। यह अर्थ भाषा सीखते समय हमें बताया जाता है। शब्दकोश या व्याकरण से हम इस अर्थ को जानते हैं। किन्तु लक्षणा और व्यंजना से हम शब्दों के जो अर्थ निकालते हैं वे पहले से जाने हुए नहीं होते।

लक्षणा से हम शब्दों से ऐसा अर्थ निकालते हैं, जो शब्दों से सामान्यतः नहीं लिया जाता। पर यह अर्थ सदैव मुख्यार्थ से संबंधित ही होगा।

व्यंजना के द्वारा हम शब्दों से ऐसा अर्थ भी निकालते हैं जो उनके मुख्यार्थ से संबंधित न हों। दूसरे शब्दों में एक बात के भीतर जो दूसरी बात छिपी रहती है उसे हम व्यंजना शक्ति के द्वारा निकालते हैं।

(ii) अभिधा शक्ति शब्द की सबसे सामान्य शक्ति है। इसके द्वारा व्यक्त अर्थ में चमत्कार नहीं रहता है। दूसरी ओर लक्षणा और व्यंजना के अर्थ में विलक्षणता रहती है, इसलिए काव्य में जितना महत्त्व लक्षणा और व्यंजना का है, उतना अभिधा का नहीं।

व्यंजना का काव्यशास्त्र (साहित्यशास्त्र) में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। भले ही वैयाकरण, नैयायिक, मीमांसक, वेदांती आदि अभिधा के महत्त्व से संतुष्ट हो जाये, पर काव्यशास्त्र तो रसप्रधान है, रसास्वादन के बिना, सहृदय की तृप्ति नहीं होती और उस रसाभिव्यक्ति के लिए व्यंजना शक्ति की सत्ता नितांत आवश्यक है।

(iii) अभिधा और लक्षणा का व्यापार केवल शब्दों में होता है, किन्तु व्यंजना का व्यापार शब्द और अर्थ दोनों में।

(iv) वाचक और लक्षक तो केवल शब्द होते हैं, किन्तु व्यंजक केवल शब्द ही नहीं अपितु वक्ता, श्रोता, देश, काल, चेष्टा प्रकरण आदि भी व्यंजक होते हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. शब्द का अर्थ-बोध करानेवाली शक्ति है—
(a) शब्द-शक्ति (b) रस (c) छंद (d) अलंकार

2. निम्नलिखित में से किसे 'वृत्ति' या 'व्यापार' कहते हैं?
(a) शब्द-शक्ति को (b) रस को
(c) छंद को (d) अलंकार को

3. शब्द-शक्ति के मूलतः कितने भेद माने गये है?
(a) एक (b) दो (c) तीन (d) पाँच

4. निम्नलिखित में से कौन शब्द-शक्ति का भेद (प्रकार) नहीं है?
(a) अभिधा (b) लक्षणा (c) व्यंजना (d) रस

5. 'साक्षात् संकेतित' कहते हैं—
(a) अभिधा को (b) लक्षणा को
(c) व्यंजना को (d) इनमें से कोई नहीं

6. किसे 'शब्द की प्रथमा शक्ति' कहा जाता है?
(a) अभिधा को (b) लक्षणा को
(c) व्यंजना को (d) अलंकार को

7. 'बैल खड़ा है।'—इस वाक्य में प्रयुक्त शब्द 'बैल' में कौन-सी शब्द-शक्ति पायी जाती है?
(a) अभिधा (b) लक्षणा (c) व्यंजना (d) छंद

8. लक्षणा की शर्तों की संख्या है—
(a) एक (b) दो (c) तीन (d) चार

9. निम्नलिखित में से कौन लक्षणा की शर्तों में शामिल नहीं है?
(a) मुख्यार्थ में बाधा
(b) मुख्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ में संबंध
(c) रूढ़ि या प्रयोजन (d) व्यंग्यार्थ

10. जहाँ मुख्यार्थ की बाधा होने पर रूढ़ि या प्रयोजन के कारण मुख्यार्थ से संबद्ध अन्य अर्थ लक्षित हो, वहाँ शब्द-शक्ति होती है—
(a) अभिधा (b) लक्षणा (c) व्यंजना (d) तात्पर्या

11. ''अनिल ने सुनील से कहा : तुम बैल हो।'' इस वाक्य में प्रयुक्त शब्द 'बैल' में कौन-सी शब्द-शक्ति है?
(a) अभिधा (b) लक्षणा (c) व्यंजना (d) तात्पर्या

12. मुहावरों और लोकोक्तियों में जिस शब्द-शक्ति के जरिये अर्थ ग्रहण किया जाता है, वह है—
(a) अभिधा (b) लक्षणा (c) व्यंजना (d) तात्पर्या

13. 'रूढ़ा' और 'प्रयोजनवती' किस शब्द-शक्ति के भेद (प्रकार) हैं?
(a) अभिधा (b) लक्षणा (c) व्यंजना (d) तात्पर्या

14. अभिधा और लक्षणा के असमर्थ हो जाने पर जिस शब्द-शक्ति के माध्यम से शब्द का अर्थ लिया जाता है, वह है—
(a) व्यंजना (b) रस (c) छंद (d) अलंकार

15. 'शाब्दी' एवं 'आर्थी' किस शब्द-शक्ति के भेद हैं?
(a) अभिधा (b) लक्षणा (c) व्यंजना (d) तात्पर्या

उत्तरमाला

1. (a) 2. (a) 3. (c) 4. (d) 5. (a) 6. (a) 7. (a) 8. (c) 9. (d) 10. (b) 11. (b) 12. (b)
13. (b) 14. (a) 15. (c)

रस (Sentiments)

रस क्या है ?

- 'रस' का शाब्दिक अर्थ है 'आनंद'। काव्य को पढने या सुनने से जिस आनंद की अनुभूति होती है, उसे 'रस' कहा जाता है।
- पाठक या श्रोता के हृदय में स्थित स्थायी भाव ही विभावादि से संयुक्त होकर रस रूप में परिणत हो जाता है।
- रस को 'काव्य की आत्मा/ प्राण तत्व' माना जाता है।

रस के अवयव/अंग

रस के चार अवयव या, अंग हैं—स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव व संचारी/व्यभिचारी भाव।

(i) स्थायी भाव : स्थायी भाव का मतलब है प्रधान भाव। प्रधान भाव वही हो सकता है जो रस की अवस्था तक पहुँचता है। काव्य या नाटक में एक स्थायी भाव शुरू से आखिर तक होता है। स्थायी भावों की संख्या 9 मानी गई है। स्थायी भाव ही रस का आधार है। एक रस के मूल में एक स्थायी भाव रहता

है। अतएव रसों की संख्या भी 9 है, जिन्हें 'नवरस' कहा जाता है। मूलतः नवरस ही माने जाते हैं। बाद के आचार्यों ने 2 और भावों *(वात्सल्य व भगवद् विषयक रति)* को स्थायी भाव की मान्यता दी। इस प्रकार, स्थायी भावों की संख्या 11 तक पहुँच जाती है और तदनुरूप रसों की संख्या भी 11 तक पहुँच जाती है।

(ii) विभाव : स्थायी भावों के उद्‌बोधक कारण को विभाव कहते हैं। विभाव 2 प्रकार के होते हैं—आलंबन विभाव व उद्दीपन विभाव।

आलंबन विभाव : जिसका आलंबन या सहारा पाकर स्थायी भाव जगते हैं आलंबन विभाव कहलाता है; जैसे नायक नायिका। आलंबन विभाव के दो पक्ष होते हैं—आश्रयालंबन व विषयालंबन। जिसके मन में भाव जगे वह आश्रयालबन तथा जिसके प्रति या जिसके कारण मन में भाव जगे वह विषयालंबन कहलाता है।

उदाहरण : यदि राम के मन में सीता के प्रति रति का भाव जगता है तो राम आश्रय होंगे और सीता विषय।

उद्दीपन विभाव : जिन वस्तुओं या परिस्थितियों को देखकर स्थायी भाव उद्दीप्त होने लगता है उद्दीपन विभाव कहलाता है; जैसे— चाँदनी, कोकिल कूजन, एकांत स्थल, रमणीक उद्यान, नायक या नायिका की शारीरिक चेष्टाएँ आदि।

(iii) अनुभाव : मनोगत भाव को व्यक्त करनेवाले शरीर-विकार अनुभाव कहलाते हैं। अनुभावों की संख्या 8 मानी गई है— 1. स्तभ, 2. स्वेद, 3. रोमांच, 4. स्वर-भंग, 5. कम्प, 6. विवर्णता *(रंगहीनता)*, 7. अश्रु, 8. प्रलय *(संज्ञाहीनता/निश्चेष्टता)*।

(iv) संचारी/व्यभिचारी भाव : मन में संचरण करने वाले *(आने जाने वाले)* भावों को संचारी या व्यभिचारी भाव कहते हैं। संचारी भावों की कुल संख्या 33 मानी गई है—

1. हर्ष,
2. विषाद,
3. त्रास *(भय/व्यग्रता)*,
4. लज्जा *(व्रीड़ा)*,
5. ग्लानि,
6. चिंता,
7. शंका,
8. असूया *(दूसरे के उत्कर्ष के प्रति असहिष्णुता)*,
9. अमर्ष *(विरोधी का अपकार करने की अक्षमता से उत्पन्न दुःख)*,
10. मोह,
11. गर्व,
12. उत्सुकता,
13. उग्रता,
14. चपलता,
15. दीनता
16. जड़ता,
17. आवेग
18. निर्वेद *(अपने को कोसना या धिक्कारना)*,
19. धृति *(इच्छाओं की पूर्ति, चित्त की चंचलता का अभाव)*,
20. मति,
21. बिबोध *(चैतन्य लाभ)*,
22. वितर्क,
23. श्रम,
24. आलस्य,
25. निद्रा,
26. स्वप्न,
27. स्मृति,
28. मद,
29. उन्माद,
30. अवहित्था *(हर्ष आदि भावों को छिपाना)*,
31. अपस्मार *(मूर्च्छा)*,
32. व्याधि *(रोग)*,
33. मरण।

रस के प्रकार

रस	स्थायी भाव	उदाहरण
1. शृंगार रस	रति/ प्रेम	(i) संयोग शृंगार : *(संभोग शृंगार)* बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय। सौंह करे, भौंहनि हँसै, दैन कहै, नटि जाय। *(बिहारी)* (ii) वियोग शृंगार : *(विप्रलंभ शृंगार)* निसिदिन बरसत नयन हमारे सदा रहति पावस ऋतु हम पै जब ते स्याम सिधारे।। *(सूरदास)*
2. हास्य रस	हास	तंबूरा ले मंच पर बैठे प्रेमप्रताप, साज मिले पंद्रह मिनट, घंटा भर आलाप। घंटा भर आलाप, राग में मारा गोता, धीरे-धीरे खिसक चुके थे सारे श्रोता। *(काका हाथरसी)*
3. करुण रस	शोक	सोक बिकल सब रोवहिं रानी। रूपु सीलु बलु तेजु बखानी।। करहिं विलाप अनेक प्रकारा। परिहिं भूमि तल बारहिं बारा।। *(तुलसीदास)*
4. वीर रस	उत्साह	वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो। सामने पहाड़ हो कि सिंह की दहाड़ हो। तुम कभी रुको नहीं, तुम कभी झुको नहीं।। *(द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी)*
5. रौद्र रस	क्रोध	श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्षोभ से जलने लगे। सब शील अपना भूल कर करतल युगल मलने लगे।। संसार देखे अब हमारे शत्रु रण में मृत पड़े। करते हुए यह घोषणा वे हो गए उठ कर खड़े।। *(मैथिली शरण गुप्त)*
6. भयानक रस	भय	उधर गरजती सिंधु लहरियाँ कुटिल काल के जालों सी। चली आ रहीं फेन उगलती फन फैलाये व्यालों-सी।। *(जयशंकर प्रसाद)*
7. बीभत्स रस	जुगुप्सा/घृणा	सिर पर बैठ्यो काग आँख दोउ खात निकारत। खींचत जीभहिं स्यार अतिहि आनंद उर धारत।। गीध जांघि को खोदि-खोदि कै मांस उपारत। स्वान आंगुरिन काटि-काटि कै खात विदारत।। *(भारतेन्दु)*
8. अद्‌भुत रस	विस्मय/आश्चर्य	अखिल भुवन चर-अचर सब, हरि मुख में लखि मातु। चकित भई गद्‌गद् वचन, विकसित दृग पुलकातु।। *(सेनापति)*

रस	स्थायी भाव	उदाहरण
9. शांत रस	शम/निर्वेद *(वैराग्य/वीतराग)*	मन रे तन कागद का पुतला। लागै बूँद बिनसि जाय छिन में, गरब करै क्या इतना।। *(कबीर)*
10. वत्सल रस	वात्सल्य रति	किलकत कान्ह घुटरुवन आवत। मनिमय कनक नंद के आंगन बिम्ब पकरिवे धावत।। *(सूरदास)*
11. भक्ति रस	भगवद् विषयक रति/अनुराग	राम जपु, राम जपु, राम जपु बावरे। घोर भव नीर-निधि, नाम निज नाव रे।। *(तुलसीदास)*

नोट : 1. *शृंगार रस को 'रसराज/ रसपति' कहा जाता है।*

2. *नाटक में 8 ही रस माने जाते हैं क्योंकि वहां शांत को रस में नहीं गिना जाता। भरत मुनि ने रसों की संख्या 8 माना है।*

3. *भरत मुनि ने केवल 8 रसों की चर्चा की है, पर आचार्य अभिननगुप्त (950–1020 ई.) ने 'नवमोऽपि शान्तो रसः' कहकर 9 रसों को काव्य में स्वीकार किया है।*

4. *शृंगार रस के व्यापक दायरे में वत्सल रस व भक्ति रस आ जाते हैं इसलिए रसों की संख्या 9 ही मानना ज्यादा उपयुक्त है।*

रस संबंधी विविध तथ्य

भरतमुनि (*1 ली सदी*) को 'काव्यशास्त्र का प्रथम आचार्य' माना जाता है।

सर्वप्रथम आचार्य भरत मुनि ने अपने ग्रंथ 'नाट्य शास्त्र' में रस का विवेचन किया। उन्हें रस संप्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है।

भरत मुनि के कुछ प्रमुख सूत्र

1. 'विभावानुभाव व्यभिचारिसंयोगाद् रस निष्पतिः'—विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी *(संचारी)* के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।

2. 'नाना भावोपगमाद् रस निष्पत्तिः। नाना भावोपहिता अपि स्थायिनो भावा रसत्वमाप्नुवन्ति।'—नाना *(अनेक)* भावों के उपगम *(निकट आने/ मिलने)* से रस की निष्पत्ति होती है। नाना *(अनेक)* भावों से युक्त स्थायी भाव रसावस्था को प्राप्त होते हैं।

3. 'विभावानुभाव व्यभिचारि परिवृतः स्थायी भावो रस नाम लभते नरेन्द्रवत्'।—विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी से घिरे रहने वाले स्थायी भाव की स्थिति राजा के समान है। दूसरे शब्दों में, विभाव, अनुभाव व व्यभिचारी *(संचारी)* भाव को परिधीय स्थिति और स्थायी भाव को केन्द्रीय स्थिति प्राप्त है।

➢ रस-संप्रदाय के प्रतिष्ठापक आचार्य, मम्मट (11वीं सदी) ने काव्यानंद को 'ब्रह्मानंद सहोदर' *(ब्रह्मानंद—योगी द्वारा अनुभूत आनंद)* कहा है। वस्तुतः रस के संबंध में ब्रह्मानंद की कल्पना का मूल स्रोत तैत्तरीय उपनिषद है जिसमें कहा गया है 'रसो वै सः'—आनंद ही ब्रह्म है।

➢ रस-संप्रदाय के एक अन्य आचार्य, आचार्य विश्वनाथ *(14वीं सदी)* ने रस को काव्य की कसौटी माना है। उनका कथन है 'वाक्य रसात्मकं काव्यम्'—रसात्मक वाक्य ही काव्य है।

➢ हिन्दी में रसवादी आलोचक हैं आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डॉ० नगेन्द्र आदि। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने संस्कृत के रसवादी आचार्यों की तरह रस को अलौकिक न मानकर लौकिक माना है और उसकी लौकिक व्याख्या की है। वे रस की स्थिति को 'हृदय की मुक्तावस्था' के रूप में मानते हैं। उनके शब्द हैं : 'लोक-हृदय में व्यक्ति-हृदय के लीन होने की दशा का नाम रस-दशा है'।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. स्थायी भावों की कुल संख्या है—
(a) 9 (b) 10 (c) 11 (d) 12

2. शांत रस का स्थायी भाव क्या है ?
(a) जुगुप्सा (b) क्रोध
(c) शोक (d) निर्वेद *(रेलवे, 1999)*

3. शृंगार रस का स्थायी भाव क्या है ?
(a) उत्साह (b) शोक
(c) हास (d) रति
(रेलवे, 1997, सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

4. विस्मय स्थायी भाव किस रस में होता है?
(a) हास्य (b) शांत
(c) अद्भुत (d) बीभत्स
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

5. किलक अरे मैं नेह निहारूँ।
इन दाँतों पर मोती वारूँ।।
इन पंक्तियों में कौन-सा रस है ?—
(a) वीर (b) शांत
(c) वत्सल (d) हास
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 20001)

6. अति मलीन वृषभानुकुमारी।
अधोमुख रहति ऊरध नहिं चितवति ज्यों गथ हारे थकित जुआरी।
छूटे चिहुर, बदन कुम्हिलाने, ज्यों नलिनी हिमकर की मारी।।
इन पंक्तियों में कौन-सा रस है ?
(a) हास्य (b) करुण
(c) विप्रलंभ शृंगार (d) संयोग शृंगार
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

7. सर्वश्रेष्ठ रस किसे माना जाता है ?
(a) रौद्र रस (b) शृंगार रस
(c) करुण रस (d) वीर रस *(बैंक परीक्षा, 2002)*

8. कवि बिहारी मुख्यतः किस रस के कवि हैं ?
(a) करुण (b) भक्ति (c) शृंगार (d) वीर
(रेलवे, 2002)

9. मेरे तो गिरिधर गोपल दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई।।
इन पंक्तियों में कौन-सा रस है ?
(a) शांत (b) शृंगार
(c) करुण (d) हास्य
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

10. शोभित कर नवनीत लिए
घुटरुनि चलत रेनु तन मण्डित मुख दधि लेप किए।
इन पंक्तियों में कौन-सा रस है ?
(a) शृंगार (b) हास्य (c) करुण (d) वत्सल
(रेलवे, 2003)

11. रसोत्पत्ति में आश्रय की चेष्टाएं क्या कही जाती हैं ?
(a) विभाव (b) आलम्बन
(c) अनुभाव (d) उद्दीपन *(रेलवे, 2004)*

12. 'ट', 'ठ', 'ड', 'ढ' वर्णों के प्रयोग का सम्बन्ध काव्य के किस गुण से है ?
(a) माधुर्य (b) ओज
(c) प्रसाद (d) इनमें से कोई नहीं
(रेलवे, 2004)

13. माधुर्य गुण का किस रस में प्रयोग होता है ?
(a) शांत (b) शृंगार (c) भयानक (d) रौद्र
(रेलवे, 2004)

14. प्रिय पति वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है ?
दुःख-जलनिधि-डूबी का सहारा कहाँ है ?
इन पंक्तियों में कौन-सा स्थायी भाव है ?
(a) विस्मय (b) रति (c) शोक (d) क्रोध
(रेलवे, 2004)

15. रस कितने प्रकार के होते हैं ?
(a) 3 (b) 7 (c) 8 (d) 9
(बी० एड०, 2005)

16. ऊधो मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं।
हंससुता की सुन्दर कगरी और द्रुमन की छाँही।।
इन पंक्तियों में कौन-सा रस है ?
(a) शृंगार रस (b) हास्य रस
(c) वीर रस (d) करुण रस
(बी० एड०, 2005)

17. हिन्दी साहित्य का नौवाँ रस कौन-सा है ?
(a) भक्ति (b) वत्सल (c) शांत (d) करुण
(बी० एड०, 2005)

18. उस काल मारे क्रोध के, तन काँपने उसका लगा।
मानो हवा के जोर से, सोता हुआ सागर जगा।।
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा रस है ?
(a) वीर रस (b) रौद्र रस
(c) अद्भुत रस (d) करुण रस *(बी० एड०, 2005)*

19. 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' किसका कथन है ?
(a) विश्वनाथ (b) राजशेखर
(c) श्री हर्ष (d) भास
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

20. मन की उतप्त वेदना, मन ही मन में बहती थी।
चुप रहकर अन्तर्मन में, कुछ मौन व्यथा कहती थी।।
दुर्गम पथ पर चलने का वो संबल छूट गया था।
अविचल, अविकल वह प्राणी, भीतर से टूट गया था।।
उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों में कौन-सा रस अभिव्यंजित हो रहा है?
(a) शांत (b) वियोग शृंगार
(c) करुण (d) वत्सल
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

21. वीर रस का स्थायी भाव क्या होता है ?
(a) रति (b) उत्साह (c) हास्य (d) क्रोध

22. किस रस को 'रसराज' कहा जाता है ?
(a) शृंगार रस (b) हास्य
(c) वीर रस (d) शांत रस

23. संचारी भावों की संख्या है—
(a) 9 (b) 33 (c) 16 (d) 99
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ., 2009)

24. भरतमुनि के रससूत्र में निम्नलिखित में से किसका उल्लेख नहीं है ?
(a) स्थायी भाव (b) शांत
(c) अनुभाव (d) व्यभिचारी भाव
(यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ., 2010)

25. भरत मुनि के अनुसार रसों की संख्या है—
(a) आठ (b) नौ (c) दस (d) ग्यारह
(राजस्व निरीक्षक, 2014)

26. वीभत्स रस का स्थायी भाव है—
(a) भय (b) निर्वेद
(c) शोक (d) जुगुप्सा/घृणा
(राजस्व निरीक्षक, 2014)

27. क्रोध किस रस का स्थायी भाव है—
(a) बीभत्स (b) भयानक (c) रौद्र (d) वीर
(राजस्व निरीक्षक, 2014)

28. "जहँ-तहँ मज्जा माँस रुचिर लखि परत बगारे।
जित-जित छिटके हाड़, सेत कहुँ, कहुँ रतनारे।।"
इस अवतरण में—
(a) बीभत्स रस (b) अद्भुत रस
(c) भयानक रस (d) हास्य रस
(राजस्व निरीक्षक, 2014)

29. "केसव कहि न जाइ का कहिये।
देखत तव रचना विचित्र अति समुझि मनहिं मन रहिये।।"
इस काव्य-पंक्ति में है—
(a) रौद्र रस (b) शान्त रस
(c) भयानक रस (d) अद्भुत रस
(राजस्व निरीक्षक, 2014)

उत्तरमाला

1. (a)	2. (d)	3. (d)	4. (c)	5. (c)	6. (c)	7. (b)	8. (c)	9. (b)	10. (d)	11. (c)	12. (b)
13. (b)	14. (c)	15. (d)	16. (a)	17. (c)	18. (b)	19. (a)	20. (c)	21. (b)	22. (a)	23. (b)	24. (b)
25. (a)	26. (d)	27. (c)	28. (a)	29. (d)							

★★★

छंद
(Metres)
20

छंद क्या है?

- छंद शब्द 'छद्' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'आह्लादित करना', 'खुश करना।'
- यह आह्लाद वर्ण या मात्रा की नियमित संख्या के विन्यास से उत्पन्न होता है।
- इस प्रकार, छंद की परिभाषा होगी 'वर्णों या मात्राओं के नियमित संख्या के विन्यास से यदि आह्लाद पैदा हो, तो उसे छंद कहते हैं'।
- छंद का दूसरा नाम पिंगल भी है। इसका कारण यह है कि छंद-शास्त्र के आदि प्रणेता पिंगल नाम के ऋषि थे।
- छंद का सर्वप्रथम उल्लेख 'ऋग्वेद' में मिलता है।
- जिस प्रकार गद्य का नियामक व्याकरण है, उसी प्रकार पद्य का छंद शास्त्र।

छंद के अंग

- छंद के अंग निम्नलिखित हैं—

1. चरण / पद / पाद	2. वर्ण और मात्रा
3. संख्या और क्रम	4. गण
5. गति	6. यति / विराम
7. तुक	

1. चरण / पद / पाद

- छंद के प्रायः 4 भाग होते हैं। इनमें से प्रत्येक को 'चरण' कहते हैं। दूसरे शब्दों में, छंद के चतुर्थांश *(चतुर्थ भाग)* को चरण कहते हैं।
- कुछ छंदों में चरण तो चार होते हैं लेकिन वे लिखे दो ही पंक्तियों में जाते हैं, जैसे—दोहा, सोरठा आदि। ऐसे छंद की प्रत्येक पंक्ति को 'दल' कहते हैं।
- हिन्दी में कुछ छंद छः-छः पंक्तियों *(दलों)* में लिखे जाते हैं। ऐसे छंद दो छंदों के योग से बनते हैं, जैसे कुण्डलिया *(दोहा + रोला)*, छप्पय *(रोला + उल्लाला)* आदि।
- चरण 2 प्रकार के होते हैं—सम चरण और विषम चरण। प्रथम व तृतीय चरण को विषम चरण तथा द्वितीय व चतुर्थ चरण को सम चरण कहते हैं।

2. वर्ण और मात्रा

वर्ण/अक्षर

- एक स्वर वाली ध्वनि को वर्ण कहते हैं, चाहे वह स्वर ह्रस्व हो या दीर्घ।
- जिस ध्वनि में स्वर नहीं हो *(जैसे हलन्त शब्द राजन् का 'न्', संयुक्ताक्षर का पहला अक्षर- कृष्ण का 'ष्')* उसे वर्ण नहीं माना जाता।
- वर्ण को ही अक्षर कहते हैं।
- वर्ण 2 प्रकार के होते हैं—
  ह्रस्व स्वर वाले वर्ण *(ह्रस्व वर्ण)* : अ, इ, उ, ऋ; क, कि, कु, कृ
  दीर्घ स्वर वाले वर्ण *(दीर्घ वर्ण)* : आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ; का, की, कू, के, कै, को, कौ

मात्रा

- किसी वर्ण या ध्वनि के उच्चारण-काल को मात्रा कहते हैं।
- ह्रस्व वर्ण के उच्चारण में जो समय लगता है उसे एक मात्रा तथा दीर्घ वर्ण के उच्चारण में जो समय लगता है उसे दो मात्रा माना जाता है।
- इस प्रकार मात्रा दो प्रकार के होते हैं—
  ह्रस्व : अ, इ, उ, ऋ
  दीर्घ : आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

वर्ण और मात्रा की गणना

वर्ण की गणना

ह्रस्व स्वर वाले वर्ण *(ह्रस्व वर्ण)* —एकवर्णिक—अ, इ, उ, ऋ; क, कि, कु, कृ

दीर्घ स्वर वाले वर्ण *(दीर्घ वर्ण)*—एकवर्णिक—आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ; का, की, कू, के, कै, को, कौ

मात्रा की गणना

ह्रस्व स्वर — एकमात्रिक — अ, इ, उ, ऋ
दीर्घ स्वर — द्विमात्रिक — आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

- वर्णों और मात्राओं की गिनती में स्थूल भेद यही है कि वर्ण 'सस्वर अक्षर' को और मात्रा 'सिर्फ स्वर' को कहते हैं।

उदाहरण : 'राजा' एवं 'दिवस का अवसान समीप था' में वर्णों और मात्राओं की गणना करें।

1	2	= 2 वर्ण
रा	जा	
आ	आ	
।	।	
2	2	= 4 मात्रा

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	= 12 वर्ण
दि	व	स	का	अ	व	सा	न	स	मी	प	था	
इ	अ	अ	आ	अ	अ	आ	अ	अ	ई	अ	आ	
।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	
1	1	1	2	1	1	2	1	1	2	1	2	= 16 मात्रा

लघु व गुरु वर्ण

- छंदशास्त्री ह्रस्व स्वर तथा ह्रस्व स्वर वाले व्यंजन वर्ण को लघु कहते हैं। लघु के लिए प्रयुक्त चिह्न —एक पाई रेखा—।
- इसी प्रकार, दीर्घ स्वर तथा दीर्घ स्वर वाले व्यंजन वर्ण को गुरु कहते हैं। गुरु के लिए प्रयुक्त चिह्न—एक वर्तुल रेखा—ऽ
- लघु वर्ण के अंतर्गत शामिल किये जाते हैं—

—अ, इ, उ, ऋ
—क, कि, कु, कृ
—अँ, हँ *(चन्द्र बिन्दु वाले वर्ण)*
(अँसुवन) *(हँसी)*
—त्य *(संयुक्त व्यंजन वाले वर्ण)*
(नित्य)

➢ गुरु वर्ण के अंतर्गत शामिल किये जाते हैं—
—आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
—का, की, कू, के, कै, को, कौ
—इं, बिं, तः, धः *(अनुस्वार व विसर्ग वाले वर्ण)*
(इंदु) (बिंदु) (अतः) (अधः)
—आग्र का आ, वक्र का व *(संयुक्ताक्षर का पूर्ववर्ती वर्ण)*
—राजन् का ज *(हलन्त् वर्ण के पहले का वर्ण)*

3. संख्या और क्रम

➢ वर्णों और मात्राओं की गणना को संख्या कहते हैं।

➢ लघु-गुरु के स्थान निर्धारण को क्रम कहते हैं।

➢ वर्णिक छंदों के सभी चरणों में संख्या *(वर्णों की)* और क्रम *(लघु-गुरु का)* दोनों समान होते हैं।
जबकि मात्रिक छंदों के सभी चरणों में संख्या *(मात्राओं की)* तो समान होती है लेकिन क्रम *(लघु-गुरु का)* समान नहीं होते हैं।

4. गण *(केवल वर्णिक छंदों के मामले में लागू)*

➢ गण का अर्थ है 'समूह'।

➢ यह समूह तीन वर्णों का होता है। गण में 3 ही वर्ण होते हैं, न अधिक न कम।

➢ अतः गण की परिभाषा होगी 'लघु-गुरु के नियत क्रम से 3 वर्णों के समूह को गण कहा जाता है'।

गणों की संख्या 8 है—
यगण मगण तगण रगण जगण भगण नगण सगण

➢ गणों को याद रखने के लिए सूत्र—
यमाताराजभानसलगा
इसमें पहले आठ वर्ण गणों के सूचक हैं और अन्तिम दो वर्ण लघु (ल) व गुरु (गा)के।

➢ सूत्र से गण प्राप्त करने का तरीका—
बोधक वर्ण से आरंभ कर आगे के दो वर्णों को ले लें। गण अपने-आप निकल आएगा।
उदाहरण : यगण किसे कहते हैं
यमाता
। ऽ ऽ
अतः यगण का रूप हुआ—आदि लघु *(। ऽ ऽ)*

5. गति

➢ छंद के पढ़ने के प्रवाह या लय को गति कहते हैं।

➢ *गति का महत्व वर्णिक छंदों की अपेक्षा मात्रिक छंदों में अधिक है। बात यह है कि वर्णिक छंदों में तो लघु-गुरु का स्थान निश्चित रहता है किन्तु मात्रिक छंदों में लघु-गुरु का स्थान निश्चित नहीं रहता, पूरे चरण की मात्राओं का निर्देश मात्र रहता है।*
मात्राओं की संख्या ठीक रहने पर भी चरण की गति (प्रवाह) में बाधा पड़ सकती है।

जैसे—1. *दिवस का अवसान था समीप' में गति नहीं है जबकि 'दिवस का अवसान समीप था' में गति है।*
2. *चौपाई, अरिल्ल व पद्धरि—इन तीनों छंदों के प्रत्येक चरण में 16 मात्राएं होती हैं पर गति भेद से ये छंद परस्पर भिन्न हो जाते हैं।*

➢ अतएव, मात्रिक छंदों के निर्दोष प्रयोग के लिए गति का परिज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

➢ गति का परिज्ञान भाषा की प्रकृति , नाद के परिज्ञान एवं अभ्यास पर निर्भर करता है।

6. यति/विराम

➢ छंद में नियमित वर्ण या मात्रा पर साँस लेने के लिए रुकना पड़ता है, इसी रूकने के स्थान को *यति* या *विराम* कहते हैं।

➢ छोटे छंदों में साधारणतः यति चरण के अन्त में होती है पर बड़े छंदों में एक ही चरण में एक से अधिक यति या विराम होते हैं।
यति का निर्देश प्रायः छंद के लक्षण *(परिभाषा)* में ही कर दिया जाता है। जैसे मालिनी छंद में पहली यति 8 वर्णों के बाद तथा दूसरी यति 7 वर्णों के बाद पड़ती है।

7. तुक

➢ छंद के चरणान्त की अक्षर-मैत्री *(समान स्वर-व्यंजन की स्थापना)* को तुक कहते हैं।

➢ जिस छंद के अंत में तुक हो उसे तुकान्त छंद और जिसके अन्त में तुक न हो उसे अतुकान्त छंद कहते हैं।
अतुकान्त छंद को अँग्रजी में ब्लैंक वर्स *(Blank Verse)*कहते हैं।

छंद के भेद
वर्ण व मात्रा के आधार पर चरणों के विन्यास के आधार पर

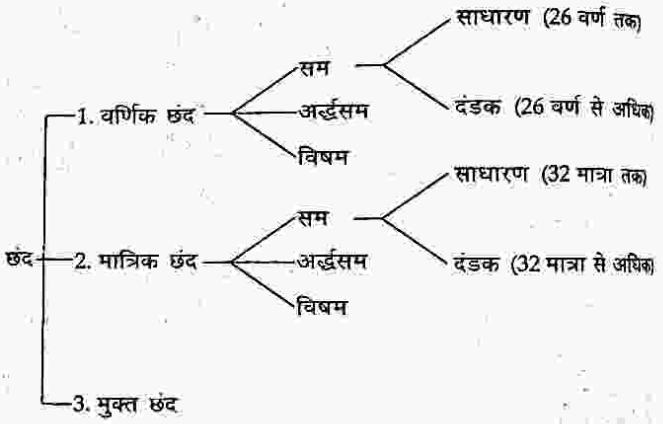

वर्णिक छंद *(या वृत)* : जिस छंद के सभी चरणों में वर्णों की संख्या समान हो।

मात्रिक छंद *(या जाति)* : जिस छंद के सभी चरणों में मात्राओं की संख्या समान हो।

मुक्त छंद : जिस छंद में वर्णिक या मात्रिक प्रतिबंध न हो।

1. वर्णिक छंद

➢ वर्णिक छंद के सभी चरणों में वर्णों की संख्या समान रहती है और लघु-गुरु का क्रम समान रहता है।

➢ प्रमुख वर्णिक छंद : प्रमाणिका *(8 वर्ण)*; स्वागता, भुजंगी, शालिनी, इन्द्रवज्रा, दोधक *(सभी 11वर्ण)*; वंशस्थ, भुजंगप्रयात, द्रुतविलम्बित, तोटक *(सभी 12 वर्ण)*; वसंततिलका *(14 वर्ण)*; मालिनी *(15 वर्ण)*; पंचचामर, चंचला *(सभी 16 वर्ण)*; मन्दाक्रान्ता, शिखरिणी *(सभी 17 वर्ण)*, शार्दूल विक्रीडित *(19 वर्ण)*, स्त्रग्धरा *(21 वर्ण)*, सवैया *(22 से 26 वर्ण)*, घनाक्षरी *(31 वर्ण)* रूपघनाक्षरी *(32 वर्ण)*, देवघनाक्षरी *(33 वर्ण)*, कवित्त/मनहरण *(31-33 वर्ण)*।

वर्णिक छंद का एक उदाहरण : मालिनी (15 वर्ण)

वर्णों की संख्या 15, यति 8 और 7 पर

परिभाषा— न न म य य मिले तो मालिनी छंद होवे

नगण	नगण	मगण	यगण	यगण	
।।।	।।।	SSS	।SS	।SS	
3	3	3	3	3	= 15 वर्ण

प्रथम चरण → प्रिय पति वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है ?
द्वितीय चरण → दुःख-जलनिधि-डूबी का सहारा कहाँ है ?
तृतीय चरण → लख मुख जिसका मैं आज लौं जी सकी हूँ,
चतुर्थ चरण → वह हृदय हमारा नैन-तारा कहाँ है ? (हरिऔध)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15 —वर्ण
प्रि	य	प	ति	व	ह	मे	रा	प्रा	ण	प्या	रा	क	हाँ	है
नगण			नगण			मगण			यगण			यगण		

2. मात्रिक छंद

➢ मात्रिक छंद के सभी चरणों में मात्राओं की संख्या तो समान रहती है लेकिन लघु-गुरु के क्रम पर ध्यान नहीं दिया जाता है।

प्रमुख मात्रिक छंद

(A) सम मात्रिक छंद : अहीर *(11 मात्रा)*, तोमर *(12 मात्रा)*, मानव *(14 मात्रा)*; अरिल्ल, पद्धरि/पद्धटिका, चौपाई *(सभी 16 मात्रा)*; पीयूषवर्ष, सुमेरु (दोनों 19 मात्रा), राधिका *(22 मात्रा)*, रोला, दिक्पाल, रूपमाला *(सभी 24 मात्रा)*, गीतिका *(26 मात्रा)*, सरसी *(27 मात्रा)*, सार *(28 मात्रा)*, हरिगीतिका *(28 मात्रा)*, ताटंक *(30 मात्रा)*, वीर या आल्हा *(31 मात्रा)*।

(B) अर्द्धसम मात्रिक छंद : बरवै *(विषम चरण में—12 मात्रा, सम चरण में—7 मात्रा)*, दोहा *(विषम—13, सम—11)*, सोरठा *(दोहा का उल्टा)*, उल्लाला *(विषम—15, सम—13)*।

(C) विषम मात्रिक छंद : कुण्डलिया *(दोहा + रोला)*, छप्पय *(रोला + उल्लाला)*।

मात्रिक छंद के दो उदाहरण : चौपाई व दोहा

(i) चौपाई *(16 मात्रा)*—सम मात्रिक छंद का उदाहरण

प्रथम चरण → बंदउँ गुरुपद पदुम परागा।
द्वितीय चरण → सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।
तृतीय चरण → अमिअ मूरिमय चूरन चारू।
चतुर्थ चरण → समन सकल भव रुज परिवारू। *(तुलसी)*

बंदउँ	गुरुपद	पदुम	परागा
।।।	।।।।	।।।	।।।
अंअउँ	उ उअअ	अउअ	अआआ
2 1 1	1 1 1 1	1 1 1	1 2 2 = 16 मात्रा

(ii) दोहा (13 मात्रा + 11 मात्रा)—अर्द्धसम मात्रिक छंद का उदाहरण

प्रथम चरण ↓   द्वितीय चरण ↓

प्रथम दल → रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
द्वितीय दल → पानी गये न ऊबरै, मोती मानुस चून।। (रहीम)

↑ तृतीय चरण   ↑ चतुर्थ चरण

प्रथम चरण	विषम चरण (13 मात्रा)	द्वितीय चरण	सम चरण (11 मात्रा)
तृथीय चरण		चतुर्थ चरण	

रहिमन	पानी	राखिये	बिन	पानी	सब	सून
1111	2 2	2 1 2 = 13	1 1	2 2	1 1	21 = 11

3. मुक्त छंद

➢ जिस विषम छंद में वर्णिक या मात्रिक प्रतिबंध न हो, न प्रत्येक चरण में वर्णों की संख्या और क्रम समान हो और मात्राओं की कोई निश्चित व्यवस्था हो तथा जिसमें नाद और ताल के आधार पर पंक्तियों में लय लाकर उन्हें गतिशील करने का आग्रह हो, वह मुक्त छंद है।

उदाहरण : निराला की कविता 'जूही की कली' इत्यादि।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. छंद का सर्वप्रथम उल्लेख कहाँ मिलता है ?
(a) ऋग्वेद (b) यजुर्वेद (c) सामवेद (d) उपनिषद

2. कोई भी छंद किसमें विभक्त रहता है ?
(a) चरणों में (b) यति में
(c) दोनों में ही (d) इनमें से कोई नहीं

3. चारों चरणों में समान मात्राओं वाले छंद को क्या कहते हैं ?
(a) सम मात्रिक छंद (b) विषम मात्रिक छंद
(c) अर्द्धसम मात्रिक छंद (d) ये सभी *(रेलवे, 1997)*

4. निम्नलिखित में सम मात्रिक छंद का कौन-सा उदाहरण है ?
(a) दोहा (b) सोरठा (c) चौपाई (d) ये सभी
(रेलवे, 1997)

5. नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास यही काल।
अली कली ही सौ बंध्यो, आगे कौन हवाल।।
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा छंद है ?
(a) दोहा (b) सोरठा (c) बरवै (d) छप्पय
(बी० एड०, 2000)

6. शिल्पगत आधार पर दोहे से उल्टा छंद है—
(a) रोला (b) चौपाई (c) सोरठा (d) बरवै
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

7. सुनु सिय सत्य असीस हमारी।
पूजिहि मन कामना तुम्हारी।।
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा छंद है ?
(a) बरवै (b) सोरठा (c) दोहा (d) चौपाई
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

8. निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति कौ मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय को शूल।।
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा छंद है ?
(a) सोरठा (b) दोहा
(c) रोला (d) हरिगीतिका
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

9. जिस छंद के पहले तथा तीसरे चरणों में 13-13 और दूसरे तथा चौथे चरणों में 11-11 मात्राएँ होती हैं; वह छंद कहलाता है—
(a) रोला (b) चौपाई (c) कुण्डलिया (d) दोहा
(बैंक परीक्षा, 2002)

10. रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती मानुस चून।।
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा छंद है ?
(a) दोहा (b) सवैया (c) चौपाई (d) काकली
(रेलवे, 2002)

11. किसको पुकारे यहाँ रोकर अरण्य बीच,
चाहे जो करो शरण्य शरण तिहारे हैं।
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा छंद है ?
(a) उल्लाला (b) छप्पय (c) रोला (d) घनाक्षरी
(रेलवे, 2003)

12. अर्द्धसम मात्रिक जाति का छंद है—
(a) रोला (b) दोहा (c) चौपाई (d) कुण्डलिया
(टी० जी० टी०, 2004)

13. चौपाई के प्रत्येक चरण में मात्राएँ होती हैं—
(a) 11 (b) 13 (c) 16 (d) 15
(टी० जी० टी०, 2004)

14. छंद कितने प्रकार के होते हैं ?
(a) 2 (b) 3 (c) 4 (d) 5
(बी० एड०, 2005)

15. मूक होइ वाचाल पंगु चढ़ई गिरिवर गहन।
जासु कृपा सो दयाल द्रवहु सकल कलिमल दहन।।
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा छंद है ?
(a) दोहा (b) चौपाई (c) सोरठा (d) बरवै
(बी० एड०, 2005)

16. दोहे और रोले को क्रम से मिलाने पर कौन-सा छंद बनता है ?
(a) हरिगीतिका (b) कुण्डलिया
(c) सवैया (d) बरवै *(बी० एड०, 2005)*

17. अवधि शिला का उर पर था गुरु भार।
तिल-तिल काट रही थी दृग जल धार ।।
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा छंद हैं ?
(a) दोहा (b) सोरठा (c) रोला (d) बरवै
(बी० एड०, 2005)

18. हम जो कुछ देख रहे हैं, सुन्दर है सत्य नहीं है।
यह दृश्य जगत भासित है, बिन कर्म शिवत्व नहीं है।।
उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों में कौन-सा छंद है ?
(a) 14–14 मात्राओं की यति से 28 मात्राओं वाला मात्रिक छंद
(b) 10–10 वर्णों की यति से 20 वर्णों वाला वर्णिक छंद
(c) 13–13 मात्राओं की यति से 26 मात्राओं वाला मात्रिक छंद
(d) 15–15 मात्राओं की यति से 30 मात्राओं वाला मात्रिक छंद
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

19. घनाक्षरी छंद है—
(a) मात्रिक (b) वर्णिक
(c) मिश्र (d) इनमें से कोई नहीं
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

20. वीर या आल्हा किस जाति का छंद है ?
(a) वर्णिक (b) मात्रिक
(c) मुक्त (d) इनमें से कोई नहीं

21. जिस छंद में वर्णिक या मात्रिक प्रतिबंध न हो, वह छंद क्या कहलाता है?
(a) वर्णिक छंद (b) मात्रिक छंद
(c) मुक्त छंद (d) इनमें से कोई नहीं

22. निराला की कविता 'जूही की कली' उदाहरण है—
(a) वर्णिक छंद का (b) मात्रिक छंद का
(c) मुक्त छंद का (d) इनमें से कोई नहीं

23. चरण में वर्णों की संख्या (कम से अधिक) के आधार पर वर्णिक छंदों का सही अनुक्रम कौन-सा है ?
(a) वसन्त तिलका–मन्दाक्रान्ता–शार्दूल विक्रीडित–इन्द्रवज्रा
(b) मन्दाक्रान्ता–शार्दूल विक्रीडित–इन्द्रवज्रा–वसन्त तिलका
(c) शार्दूल विक्रीडित–इन्द्रवज्रा–वसन्त तिलका–मन्दाक्रान्ता
(d) इन्द्रवज्रा–वसन्त तिलका–मन्दाक्रान्ता–शार्दूल विक्रीडित
(यू.जी.सी.नेट/जे.आर.एफ., 2013)

24. चरण में मात्राओं की संख्या (कम से अधिक) के आधार पर मात्रिक छंदों का सही अनुक्रम कौन-सा है ?
(a) पीयूषवर्धक–रोला–गीतिका–चौपाई
(b) रोला–गीतिका–चौपाई–पीयूषवर्धक
(c) गीतिका–चौपाई–पीयूषवर्धक–रोला
(d) चौपाई–पीयूषवर्धक–रोला–गीतिका
(यू.जी.सी.नेट/जे.आर.एफ., 2013)

उत्तरमाला

1. (a)	2. (c)	3. (a)	4. (c)	5. (a)	6. (c)	7. (d)	8. (b)	9. (d)	10. (a)	11. (d)	12. (b)
13. (c)	14. (b)	15. (c)	16. (b)	17. (d)	18. (a)	19. (b)	20. (b)	21. (c)	22. (c)	23. (d)	24. (d)

★★★

21 अलंकार (Ornaments)

अलंकार क्या है ?

➢ अलंकार का शाब्दिक अर्थ है 'आभूषण'। जिस प्रकार सुवर्ण आदि के आभूषणों से शरीर की शोभा बढ़ती है उसी प्रकार काव्य-अलंकारों से काव्य की।

➢ संस्कृत के अलंकार संप्रदाय के प्रतिष्ठापक आचार्य दण्डी के शब्दों में 'काव्य शोभाकरान् धर्मान अलंकारान् प्रचक्षते'—काव्य के शोभाकारक धर्म *(गुण)* अलंकार कहलाते हैं।

➢ हिन्दी के कवि केशवदास एक अलंकारवादी कवि हैं।

अलंकार के प्रकार

अलंकार के तीन प्रकार हैं—

(A) शब्दालंकार — शब्द पर आश्रित अलंकार
(B) अर्थालंकार — अर्थ पर आश्रित अलंकार
(C) आधुनिक/पाश्चात्य अलंकार — आधुनिक काल में पाश्चात्य साहित्य से आए अलंकार

(A) शब्दालंकार

	अलंकार	लक्षण/पहचान चिह्न	उदाहरण/ टिप्पणी
1.	अनुप्रास *	व्यंजन वर्णों की आवृत्ति	*बँदउँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुवास सरस अनुरागा। (तुलसी)* प द स र की आवृत्ति
(i)	छेकानुप्रास	अनेक व्यंजनों की एक वार स्वरूपतः व क्रमतः आवृत्ति	*बंदऊँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुवास सरस अनुरागा।। (तुलसी)* पद पदुम में पद एवं सुरुचि सरस में सर— स्वरूप की आवृत्ति पद में प के बाद द, पदुम में प के बाद द; सुरुचि में स के बाद र, सरस में स के बाद र } क्रम की आवृत्ति
(ii)	वृत्यनुप्रास	अनेक व्यंजनों की अनेक वार स्वरूपतः व क्रमतः आवृत्ति	*कलावती केलिवती कलिन्दजा* कल की 2 बार आवृत्ति— स्वरूपतः आवृत्ति क ल की 2 बार आवृत्ति— क्रमतः आवृत्ति
(iii)	लाटानुप्रास	तात्पर्य मात्र के भेद से शब्द व अर्थ दोनों की पुनरुक्ति	*लड़का तो लड़का ही है* ——— शब्द की पुनरुक्ति ↓ ↓ सामान्य लड़का रूप बुद्धि शीलादि गुण संपन्न लड़का — अर्थ की पुनरुक्ति
2.	यमक *	शब्दों की आवृत्ति (जहाँ एक शब्द एक से अधिक बार प्रयुक्त हो और उसके अर्थ अलग-अलग हों)	*कनक¹-कनक² ते सौगुनी, मादकता अधिकाय* *वा खाए बौराय जग, या पाए बौराय ।। (बिहारी)* कनक शब्द की एक बार आवृत्ति 1. सोना 2. धतूरा
3.	श्लेष *	एक शब्द में एक से अधिक अर्थ जुड़े हों (जहाँ कोई शब्द एक ही बार प्रयुक्त हो किन्तु प्रसंग भेद में उसके अर्थ अलग-अलग हों)	*रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।* *पानी गये न ऊबरै, मोती मानुस चून ।। (रहीम)* ↓ 1. चमक 2. प्रतिष्ठा 3. जल
4.	वक्रोक्ति *	प्रत्यक्ष अर्थ के अतिरिक्त भिन्न अर्थ	*एक कबूतर देख हाथ में पूछा कहाँ अपर है ?*
(i)	श्लेषमूला वक्रोक्ति	श्लेष के द्वारा वक्रोक्ति	*उसने कहा अपर कैसा ? वह उड़ गया सपर है।। (गुरुभक्त सिंह)* यहाँ पूर्वार्द्ध में जहाँगीर ने दूसरे कबूतर के बारे में पूछने के लिए 'अपर' *(दूसरा)* शब्द का प्रयोग किया है जबकि उत्तरार्द्ध में नूरजहाँ ने 'अपर' का 'बिना पर *(पंख)* वाला' अर्थ कर उत्तर दिया है।
(ii)	काकुमूला वक्रोक्ति	काकु (ध्वनि विकार/आवाज में परिवर्तन) के द्वारा वक्रोक्ति	*आप जाइए तो।* ➡ *आप जाइए।* *आप जाइए तो ?* ➡ *आप नहीं जाइए।*
5.	वीप्सा	मनोभावों को प्रकट करने के लिए शब्द दुहराना *(वीप्सा- दुहराना)*	*छिः, छिः; राम, राम; चुप, चुप देखो, देखो।*

अर्थालंकार

अलंकार	लक्षण/पहचान चिह्न	उदाहरण/ टिप्पणी
1. उपमा **	भिन्न पदार्थों का सादृश्य प्रतिपादन उपमा के चार अंग— उपमेय/प्रस्तुत—जिसकी उपमा दी जाय उपमान/अप्रस्तुत—जिससे उपमा दी जाय समान धर्म *(गुण)*—उपमेय व उपमान में पाया जानेवाला उभयनिष्ठ गुण सादृश्य वाचक शब्द—उपमेय व उपमान की समता बताने वाला शब्द *(सा, ऐसा, जैसा, ज्यों, सदृश, समान)*	
(i) पूर्णोपमा	जिसमे उपमा के चारो अंग मौजूद हों	*मुख चन्द्र-सा सुन्दर है।* मुख-उपमेय, चन्द्र-उपमान, समान धर्म-सुन्दरता, सादृश्य वाचक शब्द-सा
(ii) लुप्तोपमा	जिसमें उपमा के एक, दो या तीन अंग लुप्त *(गायब)* हो	*मुख चन्द्र-सा है।* समान धर्म 'सुन्दरता' का लोप
2. प्रतीप *	उपमा का उल्टा *(प्रसिद्ध उपमान को उपमेय बना देना)*	*मुख-सा चन्द्र है।* ↓ ↓ उपमान उपमेय
3. उपमेयोपमा *	प्रतीप + उपमा	*मुख-सा चन्द्र और चन्द्र-सा मुख है।*
4. अनन्वय * (न अन्वय)	एक ही वस्तु को उपमेय व उपमान दोनों कहना *(जब उपमेय की समता देने के लिए कोई उपमान नहीं होता और कहा जाता है उसके समान वही है)*	(i) *मुख मुख ही सा है।* (ii) *राम से राम, सिया सी सिया*
5. संदेह *	उपमेय में उपमान का संदेह	*यह मुख है या चन्द्र है।*
6. उत्प्रेक्षा **	उपमेय में उपमान की संभावना *(बोधक शब्द— मानो, मनु, मनहु, जानो, जनु, जनहु)*	*मुख मानो चन्द्र है।* ↓ बोधक शब्द
7. रूपक **	उपमेय में उपमान का आरोप *(निषेधरहित)*	*मुख चन्द्र है।*
8. अपह्नुति *	उपमेय में उपमान का आरोप *(निषेधसहित)*	*यह मुख नहीं, चन्द्र है।*
9. अतिशयोक्ति *	उपमेय को निगलकर उपमान के साथ अभिन्नता प्रदर्शित करना *(जहाँ बहुत बढ़ा-चढ़ाकर लोक सीमा से बाहर की बात कही जाय)*	*यह चन्द्र है।*
10. उल्लेख *	विषय भेद से एक वस्तु का अनेक प्रकार से वर्णन *(उल्लेख)*	(i) *उसके मुख को कोई कमल, कोई चन्द्र कहता है।* (ii) *जाकी रही भावना जैसी, प्रभू-मूरति देखी तिन तैसी। देखहि भूप महा रनधीरा, मनहु वीर रस धरे सरीरा। डरे कुटिल नृप प्रभुहिं निहारी, मनहु भयानक मूरति भारी। (तुलसी)*
11. स्मरण	सदृश या विसदृश वस्तु के प्रत्यक्ष से पूर्वानुभूत वस्तु का स्मरण	*चन्द्र को देखकर मुख याद आता है।*
12. भ्रांतिमान/भ्रम *	सादृश्य के कारण एक वस्तु को दूसरी वस्तु मान लेना *नोट—भ्रांतिमान अलंकार में उपमेय व उपमान के सादृश्य का आभास सत्य मान लिया जाता है, परन्तु संदेह अलंकार में दुविधा (संदेह)बनी रहती है 'ये हैं' या 'वो है'।*	*फिरत घरन नूतन पथिक चले चकित चित भागि।* *फूल्यो देखि पलास वन, समुहें समुझि दवागि॥ (बिहारी)* यहाँ विदेश गमन करने वाले नये पथिक पुष्पित पलाश वन को देखकर (पलाश के फूल बहुत लाल होते हैं) उसे दावाग्नि (जंगल की आग)समझ डर से फिर घर लौट आते हैं।
13. तुल्ययोगिता	अनेक प्रस्तुतों या अप्रस्तुतों का एक धर्म में संबंध बताना	*अपने तन के जानि कै, जोवन नृपति प्रबीन।* *स्तन, मन, नैन, नितंब को बड़ो इजाफा कीन॥ (बिहारी)* यहाँ यौवन के वर्णन में स्तन, मन, नेत्र व नितम्ब सबों का बढ़ना प्रासंगिक है, अतः ये सभी प्रस्तुत हैं और सबों का 'बड़ो इजाफा कीन' इस एक साधारण धर्म द्वारा संबंध कथित है।
दीपक	प्रस्तुत व अप्रस्तुत दोनों का एक धर्म से संबंध बताना	*मुख और चन्द्र शोभते हैं।*
प्रतिवस्तूपमा	उपमेय व उपमान वाक्यों में एक ही साधारण धर्म को विभिन्न शब्दों से कहना	*मुख को देखकर नेत्र तृप्त हो जाते हैं (उपमेय वाक्य); चन्द्र दर्शन से किसकी आँखें नहीं जुड़ाती? (उपमान वाक्य)*
दृष्टान्त *	उपमेय-उपमान में बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव *(भाव-साम्य—एक ही आशय की दो भिन्न अभिव्यक्ति)*	*उसका मुख निसर्ग सुन्दर (प्राकृतिक रूप से सुन्दर) है; चन्द्रमा को प्रसाधन की क्या आवश्यकता?* *मूल आशय—सुन्दर वस्तु का स्वाभाविक (प्राकृतिक) रूप से सुन्दर लगना*

अलंकार	लक्षण/पहचान चिह्न	उदाहरण/ टिप्पणी
17. निदर्शना	उपमेय का गुण उपमान में अथवा उपमान का गुण उपमेय मे आरोपित होना	*रवि ससि नखत दिपहिं ओहि जोति।* *रतन पदारथ मानिक मोती॥ (जायसी)* यहाँ पद्मावती की दन्त ज्योति *(उपमेय)* से रवि, शशि, नक्षत्र, रत्न, माणिक्य और मोती *(सभी उपमान)* का ज्योतित होना कहा गया है। अतः उपमेय का गुण *(दीप्त होना—चमकना)* उपमान में आरोपित होने से निदर्शना अलंकार है।
18. व्यतिरेक *	उपमान की अपेक्षा उपमेय का व्यतिरेक यानी उत्कर्ष वर्णन	*चन्द्र सकलंक, मुख निष्कलंक, दोनों में समता कैसी?*
19. सहोक्ति	सहार्थक शब्द के बल से जहाँ एक शब्द से अनेक अर्थ निकले *(सहार्थक शब्द—सह, संग, साथ आदि)*	*भौंहनि संग चढ़ाइयौ, कर गति चाप मनोज।* *नाह नेह संग ही बढ़्यौ, लोचन लाज, उरोज॥* यहाँ नायिका के यौवन का वर्णन है। भौंहों की कुटिलता के साथ-साथ काम ने धनुष चढ़ाया तात्पर्य यह कि उन बंकिम भौंहों से मन में काम-विकार उत्पन्न हुआ। वैसे ही प्रिय के प्रेम के साथ साथ नायिका के नयनों में लाज व स्तन बढ़े।
20. विनोक्ति	यदि कोई वस्तु किसी अन्य वस्तु के बिना अशोभन या शोभन बतायी जाय	*बिना पुत्र सूना सदन, गत गुन सूनी देह।* *वित्त बिना सब शून्य है, प्रियतम बिना सनेह॥* यहाँ पुत्र के बिना घर, गुण के बिना शरीर, धन के बिना सब कुछ और प्रियतम के बिना स्नेह की अशोभनता बतायी गई है।
21. समासोक्ति *	प्रस्तुत के माध्यम से अप्रस्तुत का वर्णन	*चंप लता सुकुमार तू, धन तुव भाग्य बिसाल।* *तेरे ढिग सोहत सुखद, सुन्दर स्याम तमाल॥* यहाँ कहा जा रहा है प्रस्तुत चम्पक लता से जो तमाल वृक्ष से लिपटी है—अरी चम्पक लता! तू बड़ी कोमल है, तू धन्य और बड़ी भाग्यशालिनी है जो तेरे समीप सुखद, सुन्दर श्याम तमाल शोभ रहे है। लेकिन 'चम्पक लता' व 'तमाल' के माध्यम से अप्रस्तुत 'राधा' व 'कृष्ण' का वर्णन किया गया है।
22. अन्योक्ति /अप्रस्तुत प्रशंसा *	समासोक्ति का उल्टा यानी अप्रस्तुत *(प्रतीकों)* के माध्यम से प्रस्तुत का वर्णन	नहि पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल। अली कली ही सौं बिध्यौं, आगे कौन हवाल॥ *(बिहारी)* यहाँ भ्रमर और कली का प्रसंग अप्रस्तुत विधान के रूप में है जिसके माध्यम से राजा जय सिंह को सचेत किया गया है।
23. पर्यायोक्ति	सीधे न कहकर घुमा-फिराकर कहना	*आपने कैसे कृपा की।* इसका अर्थ है आप किस काम के लिए आये।
24. व्याजस्तुति (व्याज—निन्दा)	निन्दा से स्तुति या स्तुति से निन्दा की प्रतीति	*उधो तुम अति चतुर सुजान* *जे पहिले रंग रंगी स्याम रंग तिन्ह न चढ़ै रंग आन। (सूर)* यहाँ उद्धव की प्रशंसा में निन्दा छिपी है।
25. परिकर	यदि विशेषण साभिप्राय हो	*जानो न नेक व्यथा पर की,* *बलिहारी तऊ पै सुजान कहावत।*
26. परिकरांकुर	यदि विशेष्य साभिप्राय हो	*प्यारी कहत लजात नहीं,* *पावस चलत विदेस॥ (बिहारी)*
27. आक्षेप	किसी विवाक्षित वस्तु को बिना पूरा किये बीच में ही छोड़ देना	*आपसे कहना तो बहुत कुछ था पर उससे लाभ क्या होगा।*
28. विरोधाभास *	विरोध न होने पर भी विरोध का आभास	*मीठी लगे अँखियान लुनाई।*
29. विभावना *	कारण के अभाव में कार्य की उत्पत्ति का वर्णन	*बिनु पद चलै, सुनै बिनु काना।* *कर बिनु करम करै विधि नाना॥ (तुलसी)*
30. विशेषोक्ति *	कारण के रहते हुए भी कार्य का न होना	*नैनों से सदैव जल की वर्षा होती रहती है तब भी प्यास नहीं बुझती*
31. असंगति *	कारण और कार्य में संगति का अभाव *(कारण कहीं और, कार्य कहीं और)*	*दृग उरझत टूटत कुटुम (बिहारी)* यहाँ उलझती है आँखें अतः टूटना भी उन्हें ही चाहिए पर टूटता है कुटुम्ब से संबंध।
32. विषम	दो बेमेल पदार्थों का संबंध बताना	*को कहि सकै बड़ेन की, लखै बड़ी हू भूल।* *दीन्हे दई गुलाब के, इन डारन ये फूल॥ (बिहारी)* कहाँ तो गुलाब की कँटीली डार और कहाँ ऐसे सुकुमार फूल। इन दो बेमेल वस्तुओं का एकत्रीकरण विधाता की भूल का ही तो परिणाम है।

अलंकार	लक्षण/पहचान चिह्न	उदाहरण/ टिप्पणी
33. कारणमाला	एक का दूसरा कारण, दूसरे का तीसरा कारण,.... बताते जाना	*होत लोभ ते मोह, मोहहि ते उपजे गरब। गरब बढ़ाये कोह, कोह कलह कलहु व्यथा॥* लोभ → मोह → गर्व → क्रोध → कलह → व्यथा
34. एकावली	पूर्व-पूर्व वस्तु के प्रति पर पर वस्तु का विशेषण रूप से स्थापन या निषेध	*मानुष वही जो हो गुनी, गुनी जो कोविद रूप। कोविद जो कविपद लहै, कवि जो उक्ति अनूप॥* यहाँ 'मानुष' विशेष्य और 'गुनी' उसका विशेषण है; आगे चलकर यह 'गुनी' ही विशेष्य हो जाता है और 'कोविद' उसका विशेषण ;...
35. काव्यलिंग* *(लिंग-कारण)*	किसी कथन का कारण देना *(पहचान चिह्न—जिसमें क्योंकि, इसलिए, चूँकि आदि की सहायता से अर्थ किया जा सके)*	*कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।* 1. सोना 2. धतूरा *उहि खाये बौरात नर, इहि पाये बौराय॥ (बिहारी)* 2. कारण 1. कारण सोना धतूरे की अपेक्षा सौ गुना अधिक मादक होता है 'क्योंकि' धतूरे को खाने पर नशा होता है पर सोना हाथ में आते ही।
36. सार	वस्तुओं का उत्तरोत्तर उत्कर्ष वर्णन	*अति ऊँचे गिरि, गिरि से भी ऊँचे हरिपद हैं। उनसे भी ऊँचे सज्जन के हृदय विशद हैं॥* यहाँ पर्वत की अपेक्षा भगवान के चरण और भगवान के चरण की अपेक्षा सज्जनों के हृदय का उत्कर्ष वर्णन है।
37. अनुमान	साधन *(प्रत्यक्ष)* के द्वारा साध्य *(अप्रत्यक्ष)* का चमत्कारपूर्ण वर्णन	*मोहि करत कत बावरी, किये दुराव दुरै न। कहे देत रंग राति के, रँग निचुरत से नैन॥ (बिहारी)* यहाँ लाल आँखें देखकर रात की रति-केलि का अनुमान हो रहा है। 'रंग निचुरत से नैन' साधन है जिसके द्वारा 'राति के रंग' साध्य का अनुमान होता है।
38. यथासंख्य/क्रम *	कुछ पदार्थों का उल्लेख करके उसी क्रम *(सिलसिले)* से उनसे संबद्ध अन्य पदार्थों, कार्यों या गुणों का वर्णन करना	*मनि' मानिक' मुकता' छवि जैसी। अहि' गिरि' गजसिर' सोह न तैसी॥ (तुलसी)* यहा प्रथम चरण में मणि, माणिक्य और मुक्ता का जिस क्रम से कथन है द्वितीय चरण में उसी क्रम से उनको जोड़ना पड़ता है। मणि सर्प के सिर पर, माणिक्य पर्वत पर और मुक्ता हाथी के मस्तक पर उत्पन्न होती है।
39. अर्थापत्ति	एक बात से दूसरी बात का स्वतः सिद्ध हो जाना	*अथवा एक परस में ही जब, तरस रही मैं इतनी होगी विकल न जाने तब वह, सदा संगिनी कितनी ?* कुब्जा की उक्ति है—कृष्ण के एक ही स्पर्श के बाद उनसे वियुक्त होकर जब मुझे इतनी बेकली *(व्याकुलता/बेचैनी)* है तो उनसे बिछुड़कर सदा साथ रहने वाली बेचारी राधा की कैसी दशा होगी। *(मैथिली शरण गुप्त)*
40. परिसंख्या	एक ही वस्तु की अनेक स्थानों में स्थिति संभव होने पर भी अन्यत्र निषेध कर उसका एक स्थान में वर्णन करना	*राम के राज्य में वक्रता केवल सुन्दरियों के कटाक्ष में थी।*
41. सम	परस्पर अनुकूल वस्तुओं का योग्य संबंध वर्णन	*चिरजीवो जोरी, जुरै क्यों न सनेह गँभीर। को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के बीर॥ (बिहारी)* यहाँ राधा और कृष्ण की योग्य जोड़ी की प्रशंसा है।
42. तद्गुण	अपने गुण को छोड़कर उत्कृष्ट गुण वाली दूसरी वस्तु के गुण को ग्रहण करना	*अरुण किरण-माला से रवि की, निर्झर का चंचल उज्ज्वल जल, बन सुवर्ण, पिघले सुवर्ण की, धारा-सा बहता है अविरल।* यहाँ सूर्य की लाल किरणों के संपर्क में आने से निर्झर का जल अपनी उज्ज्वलता को छोड़कर सूर्य की लालिमा ग्रहण कर सुन्दर वर्ण वाला बन गया है।
43. अतद्गुण	तद्गुण का उल्टा *(दूसरी वस्तु के गुण को ग्रहण न करना)*	*संत न छाँड़ें संतई, कोटिक मिलें असंत। चन्दन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग॥ (रहीम)*
44. मीलित * (मिल जाना)	अनुरूप वस्तु के द्वारा किसी वस्तु का छिप जाना	*बरन बास सुकुमारता, सब विधि रही समाय। पखुरी लगी गुलाब की, गाल न जानी जाय॥ (बिहारी)* गुलाब की पखुड़ी नायिका के गाल पर सटी है पर रंग, गंध और कोमलता के अतिशय सादृश्य के कारण उस गुलाब की पखुड़ी का अलग से ज्ञान नहीं होता।

अलंकार	लक्षण/पहचान चिह्न	उदाहरण/ टिप्पणी
45. उन्मीलित	मीलित का उल्टा	*दीठि न परत समान दुति, कनक कनक से गात। भूषण कर करकस लगत, परस पिछाने जात॥ (बिहारी)* यहाँ सुनहले शरीर और सोने के आभूषणों का अंतर नहीं दीखता पर स्पर्श में कठोरता के अनुभव से आभूषणों और अंगों का पार्थक्य मालूम पड़ता है।
46. सामान्य	सदृश गुणों के कारण प्रस्तुत का अप्रस्तुत के साथ अभेद प्रतिपादन	*वह उज्ज्वल प्रासाद, चाँदनी से मिल एकाकार।* गुण साम्य *(सुन्दरता)* के कारण प्रस्तुत *(प्रासाद)* अप्रस्तुत *(चाँदनी)* से मिलकर अभिन्न प्रतीत हो रहा है।
47. स्वभावोक्ति	वस्तु का यथावत/स्वाभाविक वर्णन	*सोभित कर नवनीत लिए घुटरुन चलत रेनु तनु मंडित मुख दधि लेप किए। (सूर)* यहाँ कृष्ण की बाल-चेष्टा का स्वाभाविक वर्णन है।
48. व्याजोक्ति *(व्याज—छल बहाना)*	प्रकट हुए रहस्य को किसी बहाने से छिपा लेना	*कारे बरन डरावनो, कत आवत इहि गेह। कै वा लख्यौ सखी! लखे लगै थरथरी देह॥ (बिहारी)* नायिका किसी सखी के पास बैठी है। वहीं किसी काम से कृष्ण चले आते हैं। उन्हें देखकर नायिका को आलिंगनेच्छाजन्य कम्पन *(थरथरी)* हो आता है पर उसे वह यह कह छिपाती है कि इस काले व्यक्ति को देखकर ही मैं डर से काँपने लगती हूँ।
49. अर्थान्तरन्यास *	सामान्य का विशेष से या विशेष का सामान्य से समर्थन करना सामान्य—अधिकव्यापी, जो बहुतों पर लागू हो विशेष—अल्पव्यापी, जो थोड़े पर ही लागू हो	*जो 'रहीम' उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग। चंदन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग॥ (रहीम)* सामान्य का विशेष से समर्थन प्रथम चरण—सामान्य बात द्वितीय चरण—विशेष बात
50. लोकोक्ति *	प्रसंगवश लोकोक्ति का प्रयोग करना	*आछे दिन पाछे गये, हरि से कियो न हेत। अब पछतावा क्या करै, चिड़ियाँ चुग गई खेत॥ (कबीर)* कहावत
51. उदाहरण *	एक वाक्य कहकर उसके उदाहरण के रूप में दूसरा वाक्य कहना नोट—'दृष्टान्त' में दोनों वाक्यों में बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव रहता है तथा कोई वाचक शब्द नहीं होता; जबकि 'उदाहरण' में दोनों वाक्यों का साधारण धर्म तो भिन्न रहता है परन्तु वाचक शब्द के द्वारा उनमें समानता प्रदर्शित की जाती है।	*वे रहीम नर धन्य हैं, पर उपकारी अंग। बाँटन वारे को लगे, ज्यों मेंहदी को रंग॥ (रहीम)* वाचक शब्द

(C) आधुनिक/पाश्चात्य अलंकार

1. मानवीकरण (Personification) **	अमानव *(प्रकृति, पशु-पक्षी व निर्जीव पदार्थ)* में मानवीय गुणों का आरोपण	*जगीं वनस्पतियाँ अलसाई, मुख धोती शीतल जल से। (प्रसाद)*
2. ध्वन्यर्थ व्यंजना (Onomatopia)	ऐसे शब्दों का प्रयोग जिनसे वर्णित वस्तु प्रसंग का ध्वनि-चित्र अंकित हो जाय	*चरमर-चरमर-चूँ-चरर-मरर जा रही चली भैंसागाड़ी। (भगवतीचरण वर्मा)*
3. विशेषण-विपर्यय (Transferred epithet)*	विशेषण का विपर्यय कर देना *(स्थान बदल देना)*	*इस करुणाकलित हृदय में अब विकल रागिनी बजती। (प्रसाद)* यहाँ 'विकल' विशेषण रागिनी के साथ लगाया गया है जबकि कवि का हृदय विकल हो सकता है रागिनी नहीं।

नोट : 1. एक तारक चिह्न (*) महत्त्वपूर्ण अलंकार के द्योतक हैं। 2 दो तारक चिह्न (**) अति महत्त्वपूर्ण अलंकार के द्योतक हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए में कौन-सा अलंकार है?
(a) अनुप्रास (b) यमक (c) उत्प्रेक्षा (d) उपमा

2. चरर मरर खुल गए, अरर रवस्फुटों से में कौन सा अलंकार है?
(a) अनुप्रास (b) श्लेष (c) यमक (d) उत्प्रेक्षा *(रेलवे, 1997)*

3. बड़े न हूजे गुनन बिनु बिरद बड़ाई पाय।
कहत धतूरे सों कनक, गहनो गढ़ो न जाय॥
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन सा अलंकार है?
(a) अतिशयोक्ति (b) प्रतिवस्तूपमा
(c) अर्थान्तरन्यास (d) विरोधाभास *(रेलवे, 199?)*

4. चरण-कमल बन्दौ हरि राई में कौन सा अलंकार है?
(a) श्लेष (b) उपमा
(c) रूपक (d) अतिशयोक्ति *(रेलवे, 2000)*

5. कनक कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।
वा खाए बौरात नर, या पाए बौराय॥
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन सा अलंकार है?
(a) उपमा (b) यमक (c) अनुप्रास (d) श्लेष *(बी० एड०, 2000)*

6. नवल सुन्दर श्याम शरीर में कौन सा अलंकार है?
(a) उल्लेख (b) उपमा
(c) रूपक (d) अतिशयोक्ति
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

7. दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह सन्ध्या-सुन्दरी परी सी
धीरे-धीरे-धीरे।
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है ?
(a) उपमा (b) रूपक
(c) मानवीकरण (d) इनमें से कोई नहीं
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

8. तीन बेर खाती थी वे तीन बेर खाती हैं में कौन-सा अलकार है ?
(a) अनुप्रास (b) श्लेष (c) यमक (d) अन्योक्ति
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

9. अब अलि रही गुलाब में, अपत कटीली डार में कौन-सा अलंकार है ?
(a) उपमा (b) उत्प्रेक्षा
(c) अन्योक्ति (d) अतिशयोक्ति
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

10. अति मलीन वृषभानुकुमारी।
अधोमुख रहति, उरध नहि चितवत, ज्यों गथ हारे थकित जुआरी।
छूटे चिहुर बदन कुम्हिलानो, ज्यों नलिनी हिमकर की मारी।।
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है ?
(a) अनुप्रास (b) उत्प्रेक्षा (c) रूपक (d) उपमा
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

11. नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सौं बिध्यौं, आगे कौन हवाल।।
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलकार है ?
(a) रूपक (b) विशेषोक्ति
(c) अन्योक्ति (d) अतिशयोक्ति
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

12. कबिरा सोई पीर है, जे जाने पर पीर।
जे पर पीर न जानई, सो काफिर बेपीर।।
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?
(a) यमक (b) रूपक (c) पुनरुक्ति (d) श्लेष
(बैंक परीक्षा, 2002)

13. संदेसनि मधुवन-कूप भरे में कौन-सा अलंकार है ?
(a) रूपक (b) वक्रोक्ति
(c) अन्योक्ति (d) अतिशयोक्ति *(रेलवे, 2002)*

14. पट-पीत मानहुं तड़ित रुचि, सुचि नौमि जनक सुतावरं में कौन-सा अलंकार है ?
(a) उपमा (b) रूपक
(c) उत्प्रेक्षा (d) उदाहरण *(रेलवे, 2002)*

15. रहिमन जो गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारे लगै, बढ़े अंधेरो होय।।
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलकार है ?
(a) उपमा (b) रूपक
(c) यमक (d) श्लेष
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

16. ध्वनि-मयी कर के गिरि-कंदरा,
कलित-कानन-केलि-निकुंज को।
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है ?
(a) छेकानुप्रास (b) वृत्त्यनुप्रास
(c) लाटानुप्रास (d) यमक *(रेलवे, 2003)*

17. कुन्द इन्दु सन देह, उमा रमन वरुण अमन में कौन-सा अलंकार है ?
(a) श्लेष (b) उपमा (c) अनुप्रास (d) रूपक
(बी० एड०, 2004)

18. जहाँ बिना कारण के कार्य का होना पाया जाए वहाँ कौन-सा अलंकार होता है ?
(a) विरोधाभास (b) विशेषोक्ति
(c) विभावना (d) भ्रांतिमान *(बी० एड०, 2004)*

19. जहाँ उपमेय में अनेक उपमानों की शंका होती है वहाँ कौन-सा अलंकार होता है ?
(a) यमक (b) श्लेष (c) भ्रांतिमान (d) संदेह
(बी० एड०, 2005)

20. भारत के सम भारत है में कौन-सा अलंकार है ?
(a) रूपक (b) अनन्वय (c) उपमा (d) यमक
(बी० एड०, 2005)

21. पूत कपूत तो क्यों धन संचय।
पूत सपूत तो क्यों धन संचय।।
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलकार है ?
(a) छेकानुप्रास (b) लाटानुप्रास
(c) वृत्त्यनुप्रास (d) अन्त्यानुप्रास
(बी० एड०, 2005)

22. उसी तपस्वी से लंबे थे, देवदार दो चार खड़े।
इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ?
(a) अनुप्रास (b) प्रतीप (c) रूपक (d) यमक
(बी० एड०, 2005)

23. ''बिनु पद चलै सुनै बिनु काना।
कर बिनु कर्म करै विधि नाना।।''
इस चौपाई में अलंकार है—
(a) विषम (b) विभावना (c) असंगति (d) तद्गुण
(राजस्व निरीक्षक, 2011)

24. जहाँ उपमेय का निषेध करके उपमान का आरोप किया जाता है, वहाँ होता है—
(a) रूपक अलंकार (b) उत्प्रेक्षा अलंकार
(c) अपह्नुति अलंकार (d) उपमा अलंकार
(राजस्व निरीक्षक, 2011)

25. किस पंक्ति में अपह्नुति अलंकार है ?
(a) इसका मुख चंद्र के समान है
(b) चंद्र इसके मुख के समान है
(c) इसका मुख ही चंद्र है
(d) यह चंद्र नहीं मुख है *(राजस्व निरीक्षक, 2011)*

26. निम्नलिखित में कौन-सा शब्दालंकार नहीं है ?
(a) श्लेष (b) वीप्सा (c) उपमा (d) वक्रोक्ति
(नेट/जे.आर.एफ., 2011)

उत्तरमाला

1. (a)	2. (a)	3. (c)	4. (c)	5. (b)	6. (a)	7. (a)	8. (c)	9. (c)	10. (d)	11. (c)	12. (a)
13. (d)	14. (a)	15. (d)	16. (b)	17. (b)	18. (c)	19. (d)	20. (b)	21. (b)	22. (b)	23. (b)	24. (c)
25. (d)	26. (c)										

★★★

22 हिन्दी साहित्य : मुख्य तथ्य
(Hindi Literature : Main Facts)

काव्य

आदिकाल (650 ई०–1350 ई०)

- हिन्दी साहित्येतिहास के विभिन्न कालों के नामकरण का प्रथम श्रेय जार्ज ग्रियर्सन को है।
- हिन्दी साहित्येतिहास के आरंभिक काल के नामकरण का प्रश्न विवादास्पद है। इस काल को ग्रियर्सन ने 'चारण काल', मिश्र बंधु ने 'प्रारंभिक काल', महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'बीज वपन काल', शुक्ल ने 'आदिकाल: वीर गाथाकाल', राहुल सांकृत्यायन ने 'सिद्ध—सामंत काल', राम कुमार वर्मा ने 'संधिकाल' व 'चारण काल', हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'आदिकाल' की संज्ञा दी है।
- आदिकाल में तीन प्रमुख प्रवृत्तियाँ मिलती हैं—धार्मिकता, वीरगाथात्मकता व शृंगारिकता।
- प्रबंधात्मक काव्यकृतियाँ : रासो काव्य, कीर्तिलता, कीर्तिपताका इत्यादि।
  मुक्तक काव्यकृतियाँ : खुसरो की पहेलियाँ, सिद्धों-नाथों की रचनाएँ, विद्यापति की पदावली इत्यादि।
- विद्यापति ने 'कीर्तिलता' व 'कीर्तिपताका' की रचना अवहट्ट में और 'पदावली' की रचना मैथिली में की।
- आदिकाल में दो शैलियाँ मिलती हैं डिंगल व पिंगल। डिंगल शैली में कर्कश शब्दावलियों का प्रयोग होता है जबकि पिंगल शैली में कर्णप्रिय शब्दावलियों की। कर्कश शब्दावलियों के कारण डिंगल शैली अलोकप्रिय होती चली गई। जबकि कर्णप्रिय शब्दावलियों के कारण पिंगल शैली लोकप्रिय होती चली गई और आगे चलकर इसका ब्रजभाषा में विगलन हो गया।
- 'पृथ्वी राज रासो' कथानक रूढ़ियों का कोश है। *[कथानक रूढ़ि (Motif)—एक प्रकार का प्रतीक जिसके साथ एक पूरी की पूरी कथा जुड़ी हो।]*
- अपभ्रंश में 15 मात्राओं का एक 'चउपई' छंद मिलता है। हिन्दी ने चउपई में एक मात्रा बढ़ाकर 'चौपाई' के रूप में अपनाया अर्थात् चौपाई 16 मात्राओं का छंद है।
- आदिकाल में 'आल्हा' छंद *(31 मात्रा)* बहुत प्रचलित था। यह वीर रस का बड़ा ही लोकप्रिय छंद था।
- दोहा, रासा, तोमर, नाराच, पद्धति, पज्झटिका, अरिल्ल आदि छंदों का प्रयोग आदिकाल में मिलता है।
- चौपाई के साथ दोहा रखने की पद्धति 'कडवक' कहलाती है। कडवक का प्रयोग आगे चलकर भक्ति काल में जायसी और तुलसी ने किया।
- अमीर खुसरो को 'हिन्द-इस्लामी समन्वित संस्कृति का प्रथम प्रतिनिधि' कहा जाता है।
- आदिकालीन साहित्य के तीन सर्वप्रमुख रूप हैं—सिद्ध-साहित्य, नाथ-साहित्य एवं रासो साहित्य।
- सिद्धों द्वारा जनभाषा में लिखित साहित्य को 'सिद्ध-साहित्य' कहा जाता है। यह साहित्य बौद्ध धर्म के वज्रयान शाखा का प्रचार करने हेतु रचा गया।
- सिद्धों की संख्या 84 मानी जाती है। तांत्रिक क्रियाओं में आस्था तथा मंत्र द्वारा सिद्धि चाहने के कारण इन्हें 'सिद्ध' कहा गया। 84 सिद्धों में सरहपा, शबरपा, कण्हपा, लुइपा, डोम्भिपा, कुक्कुरिपा आदि प्रमुख हैं। सरहपा प्रथम सिद्ध है। इन्हें सहजयान का प्रवर्तक कहा जाता है।
- सिद्ध कवियों की रचनाएँ दो रूपों में मिलती हैं 'दोहा कोष' और 'चर्यापद'। सिद्धाचार्यों द्वारा रचित दोहों का सग्रह 'दोहा कोष' के नाम से तथा उनके द्वारा रचित पद 'चर्या पद' के नाम से प्रसिद्ध हैं।
- सिद्ध-साहित्य की भाषा को अपभ्रंश एवं हिन्दी के संधि काल की भाषा मानी जाती है इसलिए इसे 'संधा' या 'संध्या' भाषा का नाम दिया जाता है।
- 10वीं सदी के अंत में शैव धर्म एक नये रूप में आरंभ हुआ जिसे 'योगिनी कौल मार्ग', 'नाथ पंथ' या 'हठयोग' कहा गया। इसका उदय बौद्ध-सिद्धों की वाममार्गी भोग-प्रधान योगधारा की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ।
- अनुश्रुति के अनुसार 9 नाथ हैं—आदि नाथ *(शिव)*, जलंधर नाथ, मछंदर नाथ, गोरखनाथ, गैनी नाथ, निवृति नाथ आदि। लेकिन नाथ-साहित्य के प्रवर्तक गोरखनाथ ही थे।
- बौद्ध-सिद्धों की वाणी में पूर्वीपन का पुट है तो शैव-नाथों की वाणी में पश्चिमीपन का।
- 'रासो' शब्द की व्युत्पत्ति को लेकर विद्वानों में मतभेद है।
- रासो-काव्य को मुख्यतः 3 वर्गों में बाँटा जाता है—
  1. वीर गाथात्मक रासो काव्य : पृथ्वीराज रासो, हम्मीर रासो, खुमाण रासो, परमाल रासो, विजयपाल रासो।
  2. शृंगारपरक रासो काव्य : बीसल देव रासो, संदेश रासक, मुंज रासो।
  3. धार्मिक व उपदेशमूलक रासो काव्य : उपदेश रसायन रास, चन्दनबाला रस, स्थूलिभद्र रास, भरतेश्वर बाहुबलि रास, रेवन्तगिरि रास।
- पृथ्वीराज रासो (चंदबरदाई) : रासो काव्य परंपरा का प्रतिनिधि व सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ, आदिकाल का सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रंथ, काव्य-रूप—प्रबंध, रस—वीर व शृंगार, अलकार—अनुप्रास व यमक (चंदबरदाई के प्रिय), छंद—विविध छंद (लगभग 68), गुण—ओज व माधुर्य, भाषा—राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा, शैली—पिंगल।
- पृथ्वीराज रासो में चौहान शासक पृथ्वीराज के अनेक युद्धों और विवाहों का सजीव चित्रण हुआ है।
- पृथ्वीराज रासो एक अर्द्धप्रामाणिक रचना है।
- परमाल रासो (जगनिक) : मूल रूप से उपलब्ध नहीं है लेकिन इसका एक अंश उपलब्ध है जिसे 'आल्हा खंड' कहा जाता है। इसका छंद आल्हा या वीर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

- संदेश रासक (अब्दुल रहमान) एक विरह काव्य है।
- रासो काव्य की सामान्य विशेषताएँ 1. ऐतिहासिकता व कल्पना का सम्मिश्रण 2. प्रशस्ति काव्य 3. युद्ध व प्रेम का वर्णन 4. वीरतापूर्ण भाषा 5. डिंगल पिंगल शैली का प्रयोग 6. छंदों का बहुमुखी प्रयोग
- चंदबरदाई दिल्ली के चौहान शासक पृथ्वी राज-III चौहान के सामंत व राजकवि थे।
- *अमीर खुसरो* का मूल नाम अबुल हसन था। दिल्ली के सुल्तान जलालुद्दीन खल्जी ने उनकी कविता से खुश होकर उन्हें 'अमीर' का खिताब दिया और 'खुसरो' उनका तखल्लुस (उपनाम) था। इस प्रकार वे बन गए—अमीर खुसरो। बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे अरबी, फारसी, तुर्की, संस्कृत एवं हिन्दी के विद्वान थे। उन्होंने फारसी में ऐतिहासिक साहित्यिक पुस्तकें लिखी, ब्रजभाषा में गीतों कव्वालियों की रचना की और खड़ी बोली में पहेलियाँ-मुकरियाँ बुझाईं। संगीत के क्षेत्र में उन्हें कव्वाली, तराना गायन शैली एवं सितार वाद्य यंत्र का जन्मदाता माना जाता है।
- *विद्यापति* बिहार के दरभंगा जिले के बिसफी गाँव के रहनेवाले थे। उन्हें मिथिला के महाराजा कीर्ति सिंह और शिव सिंह का संरक्षण प्राप्त था।
- जिस रचना के कारण विद्यापति 'मैथिल कोकिल' कहलाए वह उनकी मैथिली में रचित 'पदावली' है। यह मुक्तक काव्य है और इसमें पदों का संकलन है। पूरी पदावली भक्ति व शृंगार की धूपछांही है।

प्रसिद्ध पंक्तियाँ

- बारह बरस लौं कूकर जीवै अरु तेरह लौं जियै सियार/बरस अठारह क्षत्रिय जीवै आगे जीवन को धिक्कार —*जगनिक*
- भल्ला हुआ जो मारिया बहिणी म्हारा कंतु/लज्जेजंतु वयस्सियहु जइ भग्गा घरु एंतु *(अच्छा हुआ जो मेरा पति युद्ध में मारा गया; हे बहिन! यदि वह भागा हुआ घर आता तो मैं अपनी समवयस्काओं (सहेलियों) के सम्मुख लज्जित होती।)* —*हेमचंद्र*
- बालचंद विज्जावइ भासा/दुहु नहिं लग्गइ दुज्जन हासा *(जिस तरह बाल चंद्रमा निर्दोष है उसी तरह विद्यापति की भाषा; दोनों का दुर्जन उपहास नहीं कर सकते)* —*विद्यापति*
- षटभाषा पुराणं च कुराणंग कथित मया *(मैंने अपनी रचना षटभाषा में की है और इसकी प्रेरणा पुराण व कुरान दोनों से ली है)* —*चंदबरदाई*
- 'मैंने एक बूंद चखी है और पाया है कि घाटियों में खोया हुआ पक्षी अब तक महानदी के विस्तार से अपरिचित था' *(संस्कृत साहित्य के संबंध में)* —*अमीर खुसरो*
- पंडिअ सअल सत्त वक्खाणअ/देहहिं बुद्ध बसन्त न जाणअ। *(पंडित सभी शास्त्रों का बखान करते हैं परन्तु देह में बसने वाले बुद्ध (ब्रह्म) को नहीं जानते।)* —*सरहपा*
- जोइ जोइ पिण्डे सोई ब्रह्माण्डे *(जो शरीर में है वही ब्रह्माण्ड में है)* —*गोरखनाथ*
- गगन मंडल में ऊँधा कूवा, वहाँ अमृत का बासा/सगुरा होइ सु भरि भरि पीवै, निगुरा जाइ पियासा —*गोरखनाथ*
- काहे को बियाहे परदेस सुन बाबुल मोर *(गीत)*—*अमीर खुसरो*
- बड़ी कठिन है डगर पनघट की *(कव्वाली)*—*अमीर खुसरो*
- छाप तिलक सब छीनी रे मोसे नैना मिलाइके *(पूर्वी अवधी में रचित कव्वाली)* —*अमीर खुसरो*
- एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा/चारों ओर वह थाल फिरे, मोती उससे एक न गिरे *(पहेली)* —*अमीर खुसरो*
- नित मेरे घर आवत है रात गये फिर जावत है/फंसत अमावस गोरि के फंदा है सखि साजन, ना सखि, चंदा *(मुकरी/कहमुकरनी)* —*अमीर खुसरो*
- खीर पकाई जतन से और चरखा दिया जलाय।
  आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजाय। ला पानी पिला। *(ढकोसला)* —*अमीर खुसरो*
- जेहाल मिसकीं मकुन तगाफुल दुराय नैना बनाय बतियाँ;/के ताब-ए-हिज्रां न दारम-ए-जां न लेहु काहे लगाय छतियाँ— प्रिय मेरे हाल से बेखबर मत रह, नजरों से दूर रहकर यूँ बातें न बनाओ कि मैं जुदाई को सहने की ताकत नहीं रखता, मुझे अपने सीने से लगा क्यों नहीं लेते *(फारसी-हिन्दी मिश्रित गजल)* —*अमीर खुसरो*
- गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस/चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देस *(अपने गुरु निजामुद्दीन औलिया की मृत्यु पर)* —*अमीर खुसरो*

  [नोट : सूफी मत में आराध्य (भगवान, गुरु) को स्त्री तथा आराधक (भक्त, शिष्य) को पुरुष के तौर पर देखने की रवायत है।]
- खुसरो दरिया प्रेम का, उल्टी वाकी धार।
  जो उबरा सो डूब गया, जो डूबा सो पार ।।—अमीर खुसरो
- खुसरो पाती प्रेम की, बिरला बांचे कोय।
  वेद कुरआन पोथी पढ़े, बिना प्रेम का होय ।।—अमीर खुसरो
- खुसरो रैन सुहाग की जागी पी के संग।
  तन मेरो मन पीव को दोऊ भय एक रंग ।। —अमीर खुसरो
- तुर्क हिन्दुस्तानियम मन हिंदवी गोयम जवाब
  (अर्थात मैं हिन्दुस्तानी तुर्क हूँ, हिन्दवी में जवाब देता हूँ।) —*अमीर खुसरो*
- ''मैं हिन्दुस्तान की तूती ('तूती-ए-हिन्दुस्तान') हूँ। अगर तुम वास्तव में मुझसे जानना चाहते हो, तो हिंदवी में पूछो, मैं तुम्हें अनुपम बातें बता सकूँगा।'' —*अमीर खुसरो*
- न लफ्ज़े हिंदवीस्त अज़ फारसी कम
  (अर्थात हिंदवी बोल फारसी से कम नहीं।)—*अमीर खुसरो*
- आध बदन ससि विहँसि देखावलि आध पिहिलि निज बाहु/कछु एक भाग बलाहक झाँपल किछुक गरासल राहु— नायिका ने अपना चेहरा हाथ से छिपा रखा है। कवि कहता है कि उसका चंद्रमुख आधा छिपा है और आधा दिख रहा है। ऐसा लगता है मानो चंद्रमा के एक भाग को बादल ने ढ़ंक रखा है और आधा दिख रहा है *('पदावली' से)* — *विद्यापति*
- 'आध्यात्मिक रंग के चश्मे आजकल बहुत सस्ते हो गये हैं। उन्हें चढ़ाकर जैसे कुछ लोगों को 'गीत गोविन्द' *(जयदेव)* के पदों में आध्यात्मिकता दिखती है वैसे ही 'पदावली' *(विद्यापति)* के पदों में।' —*रामचन्द्र शुक्ल*

- प्राइव मुणिहि वि भन्तडी ते मणिअडा गणन्ति/अखइ निरामइ परम-पइ अज्जवि लउ न लहन्ति।—प्राय: मुनियों को भी भ्रांति हो जाती है, वे मनका गिनते हैं। अक्षय निरामय परम पद में आज भी लौ नहीं लगा पाते।
  —*हेमचन्द्र (प्राकृत व्याकरण)*
- पिय-संगमि कउ निद्दडी पिअहो परोक्खहो केम/मइँ बिन्निवि विन्नासिया निद्द न एम्व न तेम्व—प्रिय के संगम में नींद कहाँ? प्रिय के परोक्ष में *(सामने न रहने पर)* नींद कहाँ? मैं दोनों प्रकार से नष्ट हुई? नींद न यों, न त्यों।
  —*हेमचन्द्र (प्राकृत व्याकरण)*
- जो गुण गोवइ अप्पणा पयडा करइ परस्सु/तसु हउँ कलजुगि दुल्लहहो बलि किज्जउँ सुअणस्सु।—जो अपना गुण छिपाए, दूसरे का प्रकट करे, कलियुग में दुर्लभ सुजन पर मैं बलि जाउं। —*हेमचन्द्र (प्राकृत व्याकरण)*
- माधव हम परिनाम निरासा —*विद्यापति*
- कनक कदलि पर सिंह समारल ता पर मेरु समाने—*विद्यापति*
- जाहि मन पवन न संचरई
  रवि ससि नहीं पवेस —*सरहपा*
- अवधू रहिया हाटे वाटे रूप विरष की छाया।
  तजिवा काम क्रोध लोभ मोह संसार की माया ।।—*गोरखनाथ*
- पुस्तक जल्हण हाथ दै चलि गज्जन नृप काज —*चंदबरदाई*
- मनहु कला ससभान कला सोलह सो बन्निय —*चंदबरदाई*

आदिकालीन रचना एवं रचनाकार

रचनाकार	रचना
स्वयंभू	पउम चरिउ, रिट्ठणेमि चरिउ *(अरिष्टनेमि चरित)*
सरहपा	दोहाकोष
शबरपा	चर्या पद
कण्हपा	कण्हपाद गीतिका, दोहा कोश
गोरखनाथ *(नाथ पंथ के प्रवर्तक)*	सबदी, पद, प्राण संकली, सिष्या दासन
चंदबरदाई	पृथ्वीराज रासो *(शुक्ल के अनुसार हिन्दी का प्रथम महाकाव्य)*
शार्ङ्गधर	हम्मीर रासो
दलपति विजय	खुमाण रासो
जगनिक	परमाल रासो
नल्ह सिंह भाट	विजयपाल रासो
नरपति नाल्ह	बीसलदेव रासो
अब्दुर रहमान	संदेश रासक
अज्ञात	मुंज रासो
देवसेन	श्रावकाचार
जिन दत्त सूरी	उपदेश रसायन रास
आसगु	चन्दनबाला रास
जिनधर्म सूरी	स्थूलिभद्र रास
शालिभद्र सूरी	भरतेश्वर बाहुबली रास
विजय सेन	रेवन्तगिरि रास
सुमतिगणि	नेमिनाथ रास
हेमचंद्र	सिद्ध हेमचन्द्र शब्दानुशासन
विद्यापति	पदावली *(मैथिली में)*, कीर्तिलता व कीर्तिपताका *(अवहट्ठ में)*, लिखनावली *(संस्कृत में)*
कल्लोल कवि	ढोला मारू रा दूहा
मधुकर	जयमयंक जस चंद्रिका
भट्ट केदार	जयचंद प्रकाश

पूर्व मध्य काल/भक्ति काल (1350 ई०-1650 ई०)

- भक्ति काल को हिन्दी साहित्य का स्वर्ण काल कहा जाता है।
- भक्ति काल के उदय के बारे में सबसे पहले जार्ज ग्रियर्सन ने मत व्यक्त किया। वे इसे 'ईसायत की देन' मानते हैं।
- ताराचंद के अनुसार भक्ति काल का उदय 'अरबों की देन' है।
- रामचन्द्र शुक्ल के मतानुसार, 'देश में मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर हिन्दू जनता के हृदय में गौरव, गर्व और उत्साह के लिए वह अवकाश न रह गया। उसके सामने ही उनके देव मंदिर गिराए जाते थे, देव मूर्तियाँ तोड़ी जाती थीं और पूज्य पुरुषों का अपमान होता था और वे कुछ भी नहीं कर सकते थे। ऐसी दशा में अपनी वीरता के गीत न तो वे गा ही सकते थे और न बिना लज्जित हुए सुन ही सकते थे। .... अपने पौरुष से हताश जाति के लिए भगवान की शरणागति में जाने के अलावा दूसरा मार्ग ही क्या था? .... भक्ति का जो सोता दक्षिण की ओर से धीरे-धीरे उत्तर भारत की ओर पहले से ही आ रहा था उसे राजनीतिक परिवर्तन के कारण शून्य पड़ते हुए जनता के हृदय क्षेत्र में फैलने के लिए पूरा स्थान मिला।'
- हजारी प्रसाद द्विवेदी के मतानुसार, 'मैं तो जोर देकर कहना चाहता हूँ कि अगर इस्लाम नहीं आया होता तो भी इस साहित्य का बारह आना वैसा ही होता जैसा आज है।...... बौद्ध तत्ववाद जो निश्चित ही बौद्ध आचार्यों की चिंता की देन था, मध्ययुग के हिन्दी साहित्य के उस अंग पर अपना निश्चित पदचिह्न छोड़ गया है जिसे संत साहित्य नाम दिया गया है। ...... मैं जो कहना चाहता हूँ वह यह है कि बौद्ध धर्म क्रमशः लोक धर्म का रूप ग्रहण कर रहा था और उसका निश्चित चिह्न हम हिन्दी साहित्य में पाते हैं।'
- समग्रतः भक्ति आंदोलन का उदय ग्रियर्सन व ताराचंद के लिए बाह्य प्रभाव, शुक्ल के लिए बाहरी आक्रमण की प्रतिक्रिया तथा द्विवेदी के लिए भारतीय परंपरा का स्वतः स्फूर्त विकास था।
- भक्ति आंदोलन की शुरुआत दक्षिण में हुई और उसके पुरस्कर्ता आलवार भक्त थे। बाद में वैष्णव आचार्यों—रामानुज, निम्बार्क, मध्व, विष्णु स्वामी—ने भक्ति को दार्शनिक आधार प्रदान किया। दार्शनिक विवेचन द्वारा पुष्टि पाकर दक्षिण भारत में भक्ति की बहुत उन्नति हुई और दक्षिण से चली हुई भक्ति की लहर 13वीं सदी ई. में महाराष्ट्र पहुँची। तदन्तर यह उत्तर भारत पहुँची। उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन के सूत्रपात का श्रेय रामानन्द को है *('भक्ति द्राविड़ उपजी, लाए रामानन्द')*। रामानंद ने उत्तर भारत में भक्ति को जन जन तक पहुँचाकर इसे लोकप्रिय बनाया।
- भक्ति आंदोलन का स्वरूप देशव्यापी था। दक्षिण में आलवार, नायनार व वैष्णव आचार्यों, महाराष्ट्र में वारकरी संप्रदाय *(ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ, तुका राम)*, उत्तर भारत में रामानंद, वल्लभ आचार्य, बंगाल में चैतन्य, असम में शंकरदेव *(महापुरुषीय धर्म—एक शरण संप्रदाय)*, उड़ीसा में पंचसखा *(बलरामदास, अनंतदास, यशोवन्त दास, जगन्नाथ दास, अच्युतानंद)* आदि इसी बात को प्रमाणित करते हैं।
- भक्ति काव्य की दो काव्य धाराएँ हैं—निर्गुण काव्य धारा व सगुण काव्य धारा।

➢ निर्गुण काव्य-धारा की दो शाखाएँ हैं—ज्ञानाश्रयी शाखा/संत काव्य व प्रेमाश्रयी शाखा/सूफी काव्य। संत काव्य के प्रतिनिधि कवि कबीर हैं व सूफी काव्य के प्रतिनिधि कवि जायसी हैं।

➢ सगुण काव्य-धारा की दो शाखाएँ हैं—कृष्णाश्रयी शाखा/कृष्ण भक्ति काव्य व रामाश्रयी शाखा/राम भक्ति काव्य। कृष्ण भक्ति काव्य के प्रतिनिधि कवि सूरदास हैं व राम भक्ति काव्य के प्रतिनिधि कवि तुलसी दास हैं।

➢ प्रबंधात्मक काव्यकृतियाँ : पद्मावत, रामचरितमानस
मुक्तक काव्य कृतियाँ : गीतावली, कवितावली, कबीर के पद

➢ कबीर की रचनाओं में साधनात्मक रहस्यवाद मिलता है जबकि जायसी की रचनाओं में भावात्मक रहस्यवाद।

➢ निर्गुण काव्य की विशेषताएँ : 1. निर्गुण निराकार ईश्वर में विश्वास 2. लौकिक प्रेम द्वारा अलौकिक/आध्यात्मिक प्रेम की अभिव्यक्ति 3. धार्मिक रूढ़ियों व सामाजिक कुरीतियों का विरोध 4. जाति प्रथा का विरोध व हिन्दू-मुस्लिम एकता का समर्थन 5. रहस्यवाद का प्रभाव 6. लोक भाषा का प्रयोग।

➢ सगुण काव्य की विशेषताएँ : 1. अवतारवाद में विश्वास 2. ईश्वर की लीलाओं का गायन 3. भक्ति का विशिष्ट रूप *(रागानुगा भक्ति—कृष्ण भक्त कवियों द्वारा, वैधी भक्ति—राम भक्त कवियों द्वारा)* 4. लोक भाषा का प्रयोग

➢ कबीर ने अपने आदर्श-राज्य (Utopia) को 'अमर देस', रैदास ने 'बेगमपुरा' (ऐसा शहर जहाँ कोई गम न हो) एवं तुलसी ने 'राम-राज कहा है।

➢ 'संत काव्य' का सामान्य अर्थ है संतों के द्वारा रचा गया काव्य। लेकिन जब हिन्दी में 'संत काव्य' कहा जाता है तो उसका अर्थ होता है निर्गुणोपासक ज्ञानमार्गी कवियों के द्वारा रचा गया काव्य।

➢ संत कवि : कबीर, नामदेव, रैदास, नानक, धर्मदास, रज्जब, मलूकदास, दादू, सुंदरदास, चरनदास, सहजोबाई आदि।

➢ सुंदरदास को छोड़कर सभी संत कवि कामगार तबके से आते हैं; जैसे—कबीर *(जुलाहा)*, नामदेव *(दर्जी)*, रैदास *(चमार)*, दादू *(धुनकर)*, सेना *(नाई)*, सदना *(कसाई)*।

➢ संत काव्य की विशेषताएँ—धार्मिक : 1. निर्गुण ब्रह्म की संकल्पना 2. गुरु की महत्ता 3. योग व भक्ति का समन्वय 4. पंचमकार 5. अनुभूति की प्रामाणिकता व शास्त्र ज्ञान की अनावश्यकता 6. आडम्बरवाद का विरोध 7. संप्रदायवाद का विरोध; सामाजिक : 1. जातिवाद का विरोध 2. समानता के प्रेम पर बल; शिल्पगत : 1. मुक्तक काव्य-रूप 2. मिश्रित भाषा 3. उलटबाँसी शैली *(संधा/संध्याभाषा—हर प्रसाद शास्त्री)* 4. पौराणिक संदर्भों व हठयोग से संबंधित मिथकीय प्रयोग 5. प्रतीकों का भरपूर प्रयोग।

➢ रामचन्द्र शुक्ल ने कबीर की भाषा को 'सधुक्कड़ी भाषा' की संज्ञा दी है।

➢ श्यामसुंदर दास ने कई बोलियों के मिश्रण से बनी होने के कारण कबीर की भाषा को 'पंचमेल खिचड़ी' कहा है।

➢ बोली के ठेठ शब्दों के प्रयोग के कारण ही हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर को 'वाणी का डिक्टेटर' कहा है।

➢ 'प्रेमाख्यानक काव्य' का अर्थ है जायसी आदि निर्गुणोपासक प्रेममार्गी सूफी कवियों के द्वारा रचित प्रेम-कथा काव्य।

➢ प्रेमाख्यानक काव्य को प्रेमाख्यान काव्य, प्रेमकथानक काव्य, प्रेम काव्य, प्रेममार्गी *(सूफी)* काव्य आदि नामों से भी पुकारा जाता है।

➢ प्रेमाख्यानक काव्य की विशेषताएँ : 1. विषय वस्तु/कथावस्तु का प्रयोग 2. अवांतर/गौण प्रसंगों की भरमार व काव्येतर विषयों का समावेश 3. विभिन्न तरह के पात्र 4. प्रेम का आधिक्य 5. काव्य-रूप—कथा-काव्य 6. द्वंद्वात्मक काव्य-शिल्प *(लोक कथा व शिष्ट कथा का मेल)* 7. काव्य-भाषा—अवधी 8. कथा रूपक या प्रतीक काव्य 9. वियोग शृंगार/विरह शृंगार को अधिक महत्व *('पद्मावत' के एक अंश—नागमती का विरह वर्णन— को हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि कहा जाता है)*

➢ यों तो सभी प्रेमाख्यानों में सामान्य मानव की प्रेम कथाएं हैं लेकिन सूफियों का तर्क है कि इश्क मजाजी *(मानवीय प्रेम)* इश्क हकीकी *(दैविक प्रेम)* की सीढ़ी है।

➢ मलिक मुहम्मद जायसी जायस के रहने वाले थे। ये सिकंदर लोदी एवं बाबर के समकालीन थे।

➢ जायसी के यश का आधार है—'पद्मावत'।

➢ 'पद्मावत' प्रेम की पीर की व्यंजना करने वाला विशद प्रबंध काव्य है। यह चौपाई-दोहा में निबद्ध *(7 चौपाई के बाद 1 दोहा)* मसनवी शैली में लिखा गया है।

➢ 'पद्मावत' की कथा चितौड़ के शासक रतन सेन और सिंहलद्वीप की राजकन्या पद्मिनी की प्रेम कहानी पर आधारित है। इसमें ('पद्मावत' में) रतनसेन की पहली पत्नी नागमती के वियोग का अनूठा वर्णन किया गया है। 'पद्मावत' के नागमती-वियोग खंड को हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि माना जाता है।

➢ जिन भक्त कवियों ने विष्णु के अवतार के रूप में कृष्ण की उपासना को अपना लक्ष्य बनाया वे 'कृष्णाश्रयी शाखा' के कवि कहलाए।

➢ मध्य युग में कृष्ण भक्ति का प्रचार ब्रज मण्डल में बड़े उत्साह और भावना के साथ हुआ। इस ब्रज मण्डल में कई कृष्ण-भक्ति संप्रदाय सक्रिय थे। इनमें बल्लभ, निम्बार्क, राधा वल्लभ, हरिदासी *(सखी संप्रदाय)* और चैतन्य *(गौड़ीय)* संप्रदाय विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन संप्रदायों से जुड़े ढेर सारे कवि कृष्ण काव्य रच रहे थे।

➢ लेकिन जो समर्थ कवि कृष्ण काव्य को एक लोकप्रिय काव्य-आंदोलन के रूप में प्रतिष्ठित किया वे सभी बल्लभ संप्रदाय से जुड़े थे।

➢ बल्लभ संप्रदाय का दार्शनिक सिद्धांत 'शुद्धाद्वैत' तथा साधना मार्ग 'पुष्टि मार्ग' कहलाता है। पुष्टि मार्ग का आधार-ग्रंथ 'भागवत' *(श्रीमद्भागवत)* है।

➢ पुष्टि मार्ग में बल्लभाचार्य ने 4 कवियों *(सूरदास, कुंभनदास, परमानंद दास व कृष्णदास)* को दीक्षित किया। उनके मरणोपरांत उनके पुत्र विटठ्लनाथ आचार्य की गद्दी पर बैठे और उन्होंने भी 4 कवियों *(छीतस्वामी, गोविंदस्वामी, चतुर्भुजदास व नंददास)* को दीक्षित किया। विटठ्लनाथ ने इन दीक्षित कवियों को मिलाकर 'अष्टछाप' की स्थापना 1565 ई० में की। सूरदास इनमें सर्वप्रमुख हैं और उन्हें 'अष्टछाप का जहाज' कहा जाता है।

- निम्बार्क संप्रदाय से जुड़े कवि थे—श्री भट्ट, हरि व्यास देव; राधा बल्लभ संप्रदाय से संबद्ध कवि हित हरिवंश थे; हरिदासी संप्रदाय की स्थापना स्वामी हरिदास ने की और वे ही इस संप्रदाय के प्रथम और अंतिम कवि थे। चैतन्य संप्रदाय से संबद्ध कवि गदाधर भट्ट थे।
- कुछ कृष्ण भक्त कवि संप्रदाय निरपेक्ष भी थे; जैसे—मीरा, रसखान आदि।
- कृष्ण भक्ति काव्य धारा ऐसी काव्य धारा थी जिसमें सबसे अधिक कवि शामिल हुए।
- कृष्ण भक्ति काव्य की विशेषताएँ : 1. कृष्ण का ब्रह्म रूप में चित्रण 2. बाल-लीला व वात्सल्य वर्णन 3. शृंगार चित्रण 4. नारी मुक्ति 5. सामान्यता पर बल 6. आश्रयत्व का विरोध 7. लोक संस्कृति पर बल 8. लोक संग्रह 9. काव्य-रूप : मुक्तक काव्य की प्रधानता 10. काव्य-भाषा—ब्रजभाषा 11. गेय पद परंपरा।
- माता-पिता की जो ममता अपने संतान पर बरसती है उसे 'वात्सल्य' कहते हैं। सूर वात्सल्य चित्रण के लिए विश्व में अन्यतम कवि माने जाते हैं। इन्हीं के कारण, रसों के अतिरिक्त वात्सल्य को एक रस के रूप में मान्यता मिली।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की राय है, 'यद्यपि तुलसी के समान सूर का काव्य क्षेत्र इतना व्यापक नहीं कि उसमें जीवन की भिन्न-भिन्न दशाओं का समावेश हो पर जिस परिमित पुण्यभूमि में उनकी वाणी ने संचरण किया उसका कोई कोना अछूता न छूटा। शृंगार और वात्सल्य के क्षेत्र में जहाँ तक इनकी दृष्टि पहुँची वहाँ तक और किसी कवि की नहीं। इन दोनों क्षेत्रों में तो इस महाकवि ने मानो औरों के लिए कुछ छोड़ा ही नहीं।'
- भक्ति आंदोलन में कृष्ण काव्यधारा ही एकमात्र ऐसी धारा है जिसमें नारी मुक्ति का स्वर मिलता है। इनमें सबसे प्रखर स्वर मीरा बाई का है। मीरा अपने समय के सामंती समाज के खिलाफ एक क्रांतिकारी स्वर है।
- जिन भक्त कवियों ने विष्णु के अवतार के रूप में राम की उपासना को अपना लक्ष्य बनाया वे 'रामाश्रयी शाखा' के कवि कहलाए।
- कुछ उल्लेखनीय राम भक्त कवि हैं—रामानंद, अग्रदास, ईश्वर दास, तुलसी दास, नाभादास, केशवदास, नरहरिदास आदि।
- राम भक्ति काव्य धारा के सबसे बड़े और प्रतिनिधि कवि हैं तुलसी दास।
- राम भक्त कवियों की संख्या अपेक्षाकृत कम है। कम संख्या होने का सबसे बड़ा कारण है तुलसीदास का बरगदमयी व्यक्तित्व।
- यह सवर्णवादी काव्य धारा है इसलिए यह उच्चवर्ण में ज्यादा लोकप्रिय हुआ।
- राम भक्ति काव्य की विशेषताएँ : 1. राम का लोक नायक रूप 2. लोक मंगल की सिद्धि 3. सामूहिकता पर बल 4. समन्वयवाद 5. मर्यादावाद 6. मानवतावाद 7. काव्य-रूप—प्रबंध व मुक्तक दोनों 8. काव्य-भाषा—मुख्यतः अवधी 9. दार्शनिक प्रतीकों की बहुलता।
- राम भक्ति काव्य धारा आगे चलकर रीति काल में मर्यादावाद की लीक छोड़कर रसिकोपासना की ओर बढ़ जाती है।
- 'तुलसी का सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है।' *—हजारी प्रसाद द्विवेदी*
- 'भारतवर्ष का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो।' *—हजारी प्रसाद द्विवेदी*

प्रसिद्ध पंक्तियाँ

- संतन को कहा सीकरी सो काम?
  आवत जात पनहियाँ टूटी, बिसरि गयो हरिनाम।
  जिनको मुख देखे दुख उपजत, तिनको करिबे परी सलाम।
  —कुंभनदास
- नाहिन रहियो मन में ठौर
  नंद नंदन अक्षत कैसे आनिअ उर और *—सूरदास*
- हऊं तो चाकर राम के पटौ लिखौ दरबार,
  अब का तुलसी होहिंगे नर के मनसबदार। *—तुलसीदास*
- आँखड़ियाँ झाँई पड़ी, पंथ निहारि-निहारि
  जीभड़ियाँ झाला पड़याँ, राम पुकारि पुकारि। *—कबीर*
- तीरथ बरत न करौ अंदेशा। तुम्हारे चरन कमल मतेसा।।
  जह तह जाओ तुम्हारी पूजा। तुमसा देव और नहीं दूजा।।
  —जायसी
- तलफत रहति मीन चातक ज्यों, जल बिनु तृषानु छीजे
  अँखियां हरि दर्शन की भूखी। *—सूरदास*
- हे री मैं तो प्रेम दीवानी मेरा दरद न जाने कोई। *—मीरा*
- एक भरोसो एक बल एक आस विश्वास।
  एक राम घनश्याम हित, चातक तुलसीदास। *—तुलसीदास*
- गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागूँ पाई।
  बलिहारी गुरु आपने जिन गोविंद दियो बताई।। *—कबीर*
- पाँड़े कौन कुमति तोंहि लागे, कसरे मुल्ला बाँग नेवाजा।
  —कबीर
- बंदऊ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।
  महामोह तम पुंज जासु वचन रविकर निकर।।*—तुलसीदास*
- राम नांव ततसार है। *—कबीर*
- कबीर सुमिरण सार है और सकल जंजाल। *—कबीर*
- पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ पंडित भया न कोई।
  ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होई।। *—कबीर*
- आयो घोष बड़ो व्यापारी।
  लादि खेप गुन ज्ञान-जोग की ब्रज में आय उतारी। *—सूरदास*
- मूक होई वाचाल, पंगु चढई गिरिवर गहन।
  जासु कृपा सो दयाल द्रवउ सकल कली मल दहन।।
  —तुलसीदास
- सिया राममय सब जग जानी, करऊं प्रणाम जोरि जुग पानि।
  —तुलसीदास
- जांति-पांति पूछै नहीं कोई, हरि को भजै सो हरि का होई।
  —रामानंद
- साईं के सब जीव है कीरी कुंजर दोय।
  सब घाट साईयां सूनी सेज न कोय। *—कबीर*
- मैं राम का कुता मोतिया मेरा नाम। *—कबीर*
- बड़े न हुजै गुनन बिन, बिरद बड़ाई पाय।
  कहत धतूरे सो कनक, गहनो गढ़ो न जाय।।
  (बिरद = नाम, सो = सदृश, समान)
  —कबीर

➢ राम सो बड़ो है कौन, मोसो कौन छोटो ?
राम सो खरो है कौन, मोसो कौन खोटो। —*तुलसीदास*

➢ प्रभूजी तुम चंदन हम पानी। —*रैदास*

➢ सुखिया सब संसार है खावे अरु सोवे,
दुखिया दास कबीर है जागे अरु रोवै। —*कबीर*

➢ नारी नसावे तीन गुन, जो नर पासे होय।
भक्ति मुक्ति नित ध्यान में, पैठि सकै नहीं कोय।। —*कबीर*

➢ ढोल गंवार शूद्र पशु नारी, ये सब है तारन के आधिकारी।
—*तुलसीदास*

➢ पांणी ही तै हिम भया, हिम हवै गया बिलाई।
जो कुछ था सोई भया, अब कछू कह्या न जाइ।। —*कबीर*

➢ एक जोति थैं सब उपजा, कौन ब्राह्मण कौन सूदा। —*कबीर*

➢ एक कहै तो है नहीं, दोइ कहै तो गारी।
है जैसा तैसा रहे कहे कबीर उचारि।। —*कबीर*

➢ सतगुरु है रंगरेज मन की चुनरी रंग डारी —*कबीर*

➢ संसकिरत (संस्कृत) है कूप जल भाषा बहता नीर —*कबीर*

➢ अवधु मेरा मन मतवारा।
गुड़ करि ज्ञान, ध्यान करि महुआ, पीवै पीवनहारा।। —*कबीर*

➢ पंडित मुल्ला जो कह दिया।
झाड़ि चले हम कुछ नहीं लिया।। —*कबीर*

➢ पंडित वाद वदन्ते झूठा —*कबीर*

➢ पठत-पठत किते दिन बीते गति एको नहीं जानि। —*कबीर*

➢ मैं कहता हूँ आँखिन देखी/तू कहता है कागद लेखी। —*कबीर*

➢ गंगा में नहाये कहो को नर तरिए।
मछिरी न तरि जाको पानी में घर है।। —*कबीर*

➢ कंकड़ पाथड़ जोड़ि के मस्जिद लिये बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे क्या बहरा हुआ खुदाय।। —*कबीर*

➢ जो तू बाभन बाभनि जाया तो आन बाट काहे न आया।
जो तू तुरक तुरकनि जाया तो भीतर खतना क्यों न कराया।।
—*कबीर*

➢ हिन्दु तुरक का कर्ता एके, ता गति लखि न जाय। —*कबीर*

➢ हिन्दुअन की हिन्दुआइ देखी, तुरकन की तुरकाइ
अरे इन दोऊ कहीं राह न पाई। —*कबीर*

➢ जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहने दो म्यान।। —*कबीर*

➢ जात भी ओछी, करम भी ओछा, ओछा करब करम हमारा।
नीचे से फिर ऊंचा कीन्हा, कह रैदास खलास चमारा।।
—*रैदास*

➢ झिलमिल झगरा झूलते बाकी रहु न काहु।
गोरख अटके कालपुर कौन कहावे साधु।। —*कबीर*

➢ दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना, राम नाम का मरम है आना
—*कबीर*

➢ शूरा सोइ *(सती)* सराहिए जो लड़े धनी के हेत।
पुर्जा-पुर्जा कटि पड़ै तौ ना छाड़े खेत।। —*कबीर*

➢ आगा जो लागा नीर में कादो जरिया झारि।
उत्तर दक्षिण के पंडिता, मुए विचारि विचारि।। —*कबीर*

➢ सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे,
अरथ अमित अति आखर थोरे। (तुलसी के अनुसार कविता की परिभाषा) —*तुलसी*

➢ गोरख जगायो जोग भगति भगायो लोग। *(कवितावली)*
—*तुलसी*

➢ गुपुत रहहु, कोऊ लखय न पावे, परगट भये कछु हाथ न आवे। गुपुत रहे तेई जाई पहुँचे, परगट नीचे गए विगुचे।।
—*उसमान*

➢ पहले प्रीत गुरु से कीजै, प्रेम बाट में तब पग दीजै। —*उसमान*

➢ रवि ससि नखत दियहि ओहि जोती,
रतन पदारथ माणिक मोती।
जहँ तहँ विहसि सुभावहि हँसी।
तहँ जहँ छिटकी जोति परगसी।। —*जायसी*

➢ बसहि पक्षी बोलहि बहुभाखा,
करहि हुलास देखिके शाखा। —*जायसी*

➢ तन चितउर, मन राजा कीन्हा।
हिय सिंघल, बुधि पदमिनी चीन्हा।।
गुरु सुआ जेहि पंथ दिखावा।
बिनु गुरु जगत को निरगुण पावा।।
नागमती यह दुनिया धंधा।
बांचा सोई न एहि चित्त बंधा।।
राघव दूत सोई सैतान।
माया अलाउदी सुल्तान।। —*जायसी*

➢ जहाँ न राति न दिवस है,
जहाँ न पौन न घरानि।
तेहि वन होई सुअरा बसा,
को रे मिलावे आनि।। —*जायसी*

➢ मानुस प्रेम भएउँ बैकुंठी
नाहि त काह छार भरि मूठि।
(प्रेम ही मनुष्य के जीवन का चरम मूल्य है, जिसे पाकर मनुष्य बैकुंठी हो जाता है, अन्यथा वह एक मुट्ठी राख नहीं तो और क्या है ?) —*जायसी*

➢ छार उठाइ लीन्हि एक मूठी,
दीन्हि उड़ाइ पिरिथमी झूठी। —*जायसी*

➢ सोलह सहस्त्र पीर तनु एकै, राधा जीव सब देह। —*सूरदास*

➢ पुख नछत्र सिर ऊपर आवा।
हौं बिनु नाँह मंदिर को छावा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरि।
मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी। —*जायसी*

➢ पिउ सो कहहू संदेसड़ा हे भौंरा हे काग।
सो धनि बिरहें जरि मुई तेहिक धुँआ हम लाग।। —*जायसी*

➢ जसोदा हरि पालने झुलावे/सोवत जानि मौन ह्वै रहि करि करि सैन बतावे/इहि अंतर अकुलाइ उठे हरि, जसुमती मधुरे गावे। —*सूरदास*

➢ सिखवत चलत जसोदा मैया
अरबराय करि पानि गहावत डगमगाय धरनी धरि पैंया।
—*सूरदास*

➢ मैया हौं न चरैहों गाय —*सूरदास*

➢ मैया री मोहिं माखन भावे —*सूरदास*

➢ मैया कबहि बढेगी चोटी —*सूरदास*

➢ मैया मोहि दाउ बहुत खिझायौ —*सूरदास*

➢ 'जिस तरह के उन्मुक्त समाज की कल्पना अंग्रेज कवि शेली ने की है ठीक उसी तरह का उन्मुक्त समाज है गोपियों का।'
—*आचार्य शुक्ल*

➢ 'गोपियों का वियोग-वर्णन, वर्णन के लिए ही है उसमें परिस्थितियों का अनुरोध नहीं है। राधा या गोपियों के विरह में वह तीव्रता और गंभीरता नहीं है जो समुद्र पार अशोक वन में बैठी सीता के विरह में है।'
—*आचार्य शुक्ल*

➢ अति मलीन वृषभानु कुमारी।/छूटे चिहुर वदन कुभिलाने, ज्यों नलिनी हिमकर की मारी।
—*सूरदास*

➢ ज्यों स्वतंत्र होई त्यों बिगड़हिं नारी
(जिमी स्वतंत्र भए बिगड़हिं नारी)
—*तुलसीदास*

➢ सास कहे ननद खिजाये राणा रह्यो रिसाय
पहरा राखियो, चौकी बिठायो, तालो दियो जराय। —*मीरा*

➢ संतन ठीग बैठि-बैठि लोक लाज खोई
—*मीरा*

➢ या लकुटि अरु कंवरिया पर
राज तिहु पुर को तजि डारो
—*रसखान*

➢ काग के भाग को का कहिये,
हरि हाथ सो ले गयो माखन रोटी
—*रसखान*

➢ मानुस हौं तो वही रसखान बसो संग गोकुल गांव के ग्वारन
—*रसखान*

➢ 'जिस प्रकार रामचरित का गान करने वाले भक्त कवियों में गोस्वामी तुलसीदास जी का स्थान सर्वश्रेष्ठ है उसी प्रकार कृष्णचरित गानेवाले भक्त कवियों में महात्मा सूरदास जी का। वास्तव में ये हिन्दी काव्यगगन के सूर्य और चंद्र हैं।'
—*आचार्य शुक्ल*

➢ रचि महेश निज मानस राखा
पाई सुसमय शिवासन भाखा
—*तुलसीदास*

➢ मंगल भवन अमंगल हारी
द्रवहु सुदशरथ अजिर बिहारी
—*तुलसीदास*

➢ सबहिं नचावत राम गोसाईं
मोहि नचावत तुलसी गोसाई
—*फादर कामिल बुल्के*

➢ 'बुद्ध के बाद तुलसी भारत के सबसे बड़े समन्वयकारी हैं'
—*जार्ज ग्रियर्सन*

➢ 'मानस *(तुलसी)* लोक से शास्त्र का, संस्कृत से भाषा *(देश भाषा)* का, सगुण से निर्गुण का, ज्ञान से भक्ति का, शैव से वैष्णव का, ब्राह्मण से शूद्र का, पंडित से मूर्ख का, गार्हस्थ से वैराग्य का समन्वय है।'
—*हजारी प्रसाद द्विवेदी*

➢ बहुरि वदन विधु अँचल ढाँकी, पिय तन चितै भौंह करि बांकी खंजन मंजु तिरीछे नैननि, निज पति कहेउ तिनहहिं सिय सैननि। *(ग्रामीण स्त्रियों द्वारा राम से संबंध के प्रश्न पूछने पर सीता का आंगिक लक्षणों से जवाब)*—*तुलसीदास*

➢ हे खग हे मृग मधुकर श्रेणी क्या तूने देखी सीता मृगनयनी
—*तुलसीदास*

➢ पूजिये विप्र शील गुण हीना, शूद्र न गुण गन ज्ञान प्रवीना
—*तुलसीदास*

➢ छिति, जल, पावक, गगन, समीरा
पंचरचित यह अधम शरीरा।
—*तुलसीदास*

➢ कत विधि सृजी नारी जग माहीं, पराधीन सपनेहु सुख नाहीं
—*तुलसीदास*

➢ अखिल विश्व यह मोर उपाया
सब पर मोहि बराबर माया।
—*तुलसीदास*

➢ काह कहौं छवि आजुकि भले बने हो नाथ।
तुलसी मस्तक तव नवै धरो धनुष शर हाथ।।—*तुलसीदास*

➢ सब मम प्रिय सब मम उपजाये
सबते अधिक मनुज मोहिं भावे
—*तुलसीदास*

➢ मेरी न जात-पाँत, न चहौ काहू की जात-पाँत —*तुलसीदास*

➢ सुन रे मानुष भाई,
सबार ऊपर मानुष सत्य
ताहार ऊपर किछु नाई।
—*चण्डी दास*

➢ बड़ा भाग मानुष तन पावा,
सुर दुर्लभ सब ग्रंथहिं गावा
—*तुलसीदास*

➢ 'जिस युग में कबीर, जायसी, तुलसी, सूर जैसे रससिद्ध कवियों और महात्माओं की दिव्य वाणी उनके अन्तःकरणों से निकलकर देश के कोने-कोने में फैली थी, उसे साहित्य के इतिहास में सामान्यतः भक्ति युग कहते हैं। निश्चित ही वह हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग था।' —*श्याम सुन्दर दास*

➢ 'हिन्दी काव्य की सब प्रकार की रचना शैली के ऊपर गोस्वामी तुलसीदास ने अपना ऊँचा आसन प्रतिष्ठित किया है। यह उच्चता और किसी को प्राप्त नहीं।' —*रामचन्द्र शुक्ल*

➢ जनकसुता, जगजननि जानकी।
अतिसय प्रिय करुणानिधान की।
—*तुलसीदास*

➢ तजिए ताहि कोटि बैरी सम जद्यपि परम सनेही। —*तुलसीदास*

➢ अंसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम बेल बोई।
—*मीरा*

➢ सावन माँ उमग्यो हियरा भणक सुण्या हरि आवण री।
—*मीरा*

➢ घायल की गति घायल जानै और न जानै कोई। —*मीरा*

➢ मोर पंखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरे पहिरौंगी।
ओढ़ि पिताबंर लै लकुटी बन गोधन ग्वालन संग फिरौंगी।
भावतो सोई मेरो रसखानि सो तेरे कहे सब स्वाँग करौंगी।
या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी।
—*रसखान*

➢ जब जब होइ धरम की हानी। बढहिं असुर महा अभिमानी।।
तब तब धरि प्रभु मनुज सरीरा। हरहिं सकल सज्जन भवपीरा।।
—*तुलसीदास*

➢ 'समूचे भारतीय साहित्य में अपने ढंग का अकेला साहित्य है। इसी का नाम भक्ति साहित्य है। यह एक नई दुनिया है।'
—*हजारी प्रसाद द्विवेदी*

➢ जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहिं।
प्रेम गली अती सांकरी, ता में दो न समाहि।।
—*कबीर*

➢ मो सम कौन कुटिल खल कामी
—*सूरदास*

➢ भरोसो दृढ़ इन चरनन केरो
—*सूरदास*

➢ धुनि ग्रमे उत्पन्नो, दादू योगेंद्रा महामुनि
—*रज्जब*

➢ सब ते भले विमूढ़ जन, जिन्हें न व्यापै जगत गति
—*तुलसीदास*

➢ केसव कहि न जाइ का कहिए।
देखत तब रचना विचित्र अति, समुझि मनहि मन रहिए।
('विनय पत्रिका')
—*तुलसीदास*

➢ पुष्टिमार्ग का जहाज जात है सो जाको कछु लेना हो सो लेउ —*विट्ठलदास*

➢ हरि है राजनीति पढि आए —*सूरदास*

➢ अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।। —*मलूकदास*

➢ हाड़ जरै ज्यों लाकड़ी, केस जरै ज्यों घास।
सब जग जलता देख, भया कबीर उदास।। —*कबीर*

➢ विक्रम धँसा प्रेम का बारा, सपनावती कहँ गयऊ पतारा। —*मंझन*

➢ कब घर में बैठे रहे, नाहिंन हाट बाजार
मधुमालती, मृगावती पोथी दोउ उचार। —*बनारसी दास*

➢ मुझको क्या तू ढूँढे बंदे, मैं तो तेरे पास रे। —*कबीर*

➢ रुकमिनि पुनि वैसहि मरि गई
कुलवंती सत सो सति भई —*कुतबन*

➢ बलंदीप देखा अँगरेजा, तहाँ जाई जेहि कठिन करेजा—*उसमान*

➢ जानत है वह सिरजनहारा, जो किछु है मन मरम हमारा।
हिंदू मग पर पाँव न राखेऊ, का जो बहुतै हिंदी भाखेऊ।।
('अनुराग बाँसुरी') —*नूर मुहम्मद*

➢ यह सिर नवे न राम कू, नाहीं गिरियो टूट।
आन देव नहिं परसिये, यह तन जायो छूट।। —*चरनदास*

➢ सुरतिय, नरतिय, नागतिय, सब चाहत अस होय।
गोद लिए हुलसी फिरै, तुलसी सो सुत होय।। —*रहीम*

➢ मो मन गिरिधर छवि पै अटक्यो/ललित त्रिभंग चाल पै चलि कै, चिबुक चारु गड़ि ठटक्यो —*कृष्णदास*

➢ कहा करौ बैकुंठहि जाय
जहाँ नहिं नंद, जहाँ न जसोदा, नहिं जहँ गोपी, ग्वाल न गाय —*परमानंद दास*

➢ बसो मेरे नैनन में नंदलाल
मोहनि मूरत, साँवरि सूरत, नैना बने रसाल —*मीरा*

➢ लोटा तुलसीदास को लाख टका को मोल —*होलराय*

➢ साखी सबद दोहरा, कहि कहिनी उपखान।
भगति निरूपहिं निंदहि बेद पुरान।। —*तुलसीदास*

➢ माता पिता जग जाइ तज्यो
विधिहू न लिख्यो कछु भाल भलाई —*तुलसीदास*

➢ निर्गुण ब्रह्म को कियो समाधु
तव ही चले कबीरा साधु। —*दादू*

➢ अपना मस्तक काटिकै बीर हुआ कबीर —*दादू*

➢ सो जागी जाके मन में मुद्रा/रात-दिवस ना करई निद्रा—*कबीर*

➢ काहे री नलिनी तू कुम्हलानी/तेरे ही नालि सरोवर पानी। —*कबीर*

➢ कलि कुटिल जीव निस्तार हित वाल्मीकि तुलसी भयो —*नाभादास*

➢ नैया बिच नदिया डूबति जाय —*कबीर*

➢ भक्तिहिं ज्ञानहिं नहिं कछु भेदा —*तुलसी*

➢ प्रभुजी मोरे अवगुन चित्त न धरो —*सूर*

➢ अब लौ नसानो अब न नसैहों [अब तक का जीवन नाश (बर्बाद) किया। आगे न करूंगा।] —*तुलसी*

➢ अव्वल अल्लाह नूर उपाया कुदरत के सब बंदे —*कबीर*

➢ संत हृदय नवनीत समाना —*तुलसी*

➢ रामझरोखे बैठ के जग का मुजरा देख —*कबीर*

➢ निर्गुण रूप सुलभ अति, सगुन जान नहिं कोई।
सुगम अगम नाना चरित, सुनि मुनि-मन भ्रम होई।। —*तुलसी*

➢ स्याम गौर किमि कहौं बखानी।
गिरा अनयन नयन बिनु बानी।। —*तुलसी*

➢ दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे मांहि।
ज्यों रहीम नटकुंडली, सिमिट कूदि चलि जांहि।। —*रहीम*

➢ प्रेम प्रेम ते होय प्रेम ते पारहिं पइए —*सूर*

➢ तब लग ही जीबो भला देबौ होय न धीम।
जन में रहिबो कुँचित गति उचित न होय रहीम।। —*रहीम*

➢ सेस महेस गनेस दिनेस, सुरेसहुँ जाहि निरंतर गावैं।
जाहिं अनादि अनन्त अखंड, अछेद अभेद सुबेद बतावैं।। —*रसखान*

➢ बहु बीती थोरी रही, सोऊ बीती जाय।
हित ध्रुव बेगि विचारि कै बसि बृंदावन आय।। —*ध्रुवदास*

पूर्व-मध्यकालीन/भक्तिकालीन रचना एवं रचनाकार

(A) संत काव्य	
बीजक *(1. रमैनी 2. सबद 3. साखी; संकलन- धर्मदास)*	कबीरदास *(निर्गुण पंथ के प्रवर्तक)*
बानी	रैदास
ग्रंथ साहिब में संकलित *(संकलन-गुरु अर्जुन देव)*	नानक देव
सुंदर विलाप	सुंदर दास
रत्न खान, ज्ञानबोध	मलूक दास
(B) सूफी काव्य	
हंसावली	असाइत
चंदायन या लोरकहा	मुल्ला दाऊद
मधुमालती	मंझन
मृगावती	कुतबन
चित्रावती	उसमान
पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम, कन्हावत	जायसी
माधवानल कामकंदला	आलम
ज्ञान दीपक	शेख नबी
रस रतन	पुहकर
लखमसेन पद्मावती कथा	दामोदर कवि
रूप मंजरी	नंद दास
सत्यवती कथा	ईश्वर दास
इंद्रावती, अनुराग बाँसुरी	नूर मुहम्मद
(C) कृष्ण भक्ति काव्य	
सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी, भ्रमरगीत *(सूरसागर से संकलित अंश)*	सूरदास
फुटकल पद	कुंभन दास
परमानंद सागर	परममानंद दास
जुगलमान चरित्र	कृष्ण दास
फुटकल पद	छीत स्वामी
फुटकल पद	गोविंद स्वामी
द्वादशयश, भक्ति प्रताप, हितजू को मंगल	चतुर्भुज दास
रास पंचाध्यायी, भंवर गीत *(प्रबंध काव्य)*	नंद दास
युगल शतक	श्री भट्ट
हित चौरासी	हित हरिवंश
हरिदास जी के पद	स्वामी हरिदास
भक्त नामावली, रसलावनी	ध्रुव दास

बरसी जी का मायरा, गीत गोविंद टीका, राग भीराथाई गोविंद, राग सोरठ के पद

प्रेम वाटिका, सुजान रसखान, दानलीला — रसखान

सुदामा चरित — नरोत्तमदास

(D) राम भक्ति काव्य

राम आरती — राभानंद

रामाष्टयाम, राम भजन मंजरी — अग्र दास

भरत मिलाप, अंगद पैज — ईश्वर दास

रामचरित मानस (प्र०), गीतावली, कवितावली, विनयपत्रिका, दोहावली, कृष्ण गीतावली, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, बरवै रामायण (प्र०), रामाज्ञा प्रश्नावली, वैराग्य संदीपनी, राम लला नहछू — तुलसीदास

भक्त माल — नाभादास

रामचन्द्रिका *(प्रबंध काव्य)* — केशव दास

पौरुषेय रामायण — नरहरि दास

(E) विविध

पंचसहेली — छीहल

हरिचरित, भागवत दशम स्कंध भाषा — लालच दास

रुक्मिणी मंगल, छप्पय नीति, कवित्त संग्रह — महापात्र नरहरि बंदीजन

माधवानल कामकंदला — आलम

शत प्रश्नोत्तरी — मनोहर कवि

हनुमन्नाटक — बलभद्र मिश्र

कविप्रिया, रसिक प्रिया, वीर सिंह देव चरित (प्र०), विज्ञान गीता, रतनबावनी, जहाँगीर जस चंद्रिका — केशव दास

रहीम दोहावली या सतसई, बरवै नायिका भेद, शृंगार सोरठा, मदनाष्टक, रास पंचाध्यायी, रहीम रत्नावली — रहीम *(अब्दुर्रहीम खाने खाना)*

काव्य कल्पद्रुम — सेनापति

रस रतन — पुहकर कवि

सुंदर शृंगार — सुंदर

पद्मिनी चरित्र — लालचंद

'अष्टछाप' के कवि

वल्लभाचार्य के शिष्य 1. सूरदास 2. कुंभन दास 3. परमानंद दास 4. कृष्ण दास

विट्ठलनाथ के शिष्य 5. छीत स्वामी 6. गोविंद स्वामी 7. चतुर्भुज दास 8. नंद दास

उत्तर-मध्यकाल / रीतिकाल (1650 ई०– 1850 ई०)

➢ नामकरण की दृष्टि से उत्तर-मध्यकाल विवादास्पद है। इसे मिश्र बंधु ने 'अलंकृत काल', रामचन्द्र शुक्ल ने 'रीतिकाल' और विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने 'शृंगार काल' कहा है।

➢ रीतिकाल के उदय के संबंध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का मत है : 'इसका कारण जनता की रुचि नहीं, आश्रयदाताओं की रुचि थी, जिसके लिए वीरता और कर्मण्यता का जीवन बहुत कम रह गया था। ··· रीतिकालीन कविता में लक्षण ग्रंथ, नायिका भेद, शृंगारिकता आदि की जो प्रवृत्तियाँ मिलती हैं उसकी परंपरा संस्कृत साहित्य से चली आ रही थी'।

➢ डॉ० नगेन्द्र का मत है, 'घोर सामाजिक और राजनीतिक पतन के उस युग में जीवन बाह्य अभिव्यक्तियों से निराश होकर घर की चारदीवारी में कैद हो गया था। घर में न शास्त्र चिंतन था न धर्म चिंतन। अभिव्यक्ति का एक ही माध्यम था—काम। जीवन की बाह्य अभिव्यक्तियों से निराश होकर मन नारी के अंगों में मुँह छिपाकर विशुद्ध विभोर तो हो जाता था'।

➢ हजारी प्र० द्विवेदी के अनुसार, 'संस्कृत के प्राचीन साहित्य विशेषतः रामायण और महाभारत से यदि भक्तिकाल के कवियों ने प्रेरणा ली तो रीतिकाल के कवियों ने उत्तरकालीन संस्कृत साहित्य से प्रेरणा व प्रभाव लिया। ·····लक्षण ग्रंथ, नायिका भेद, अलंकार और संचारी आदि भावों के पूर्वनिर्मित वर्गीकरण का आधार लेकर ये कवि बंधी-सधी बोली में बंधे-सधे भावों की कवायद करने लगे'।

➢ समग्रतः रीतिकालीन काव्य जनकाव्य नहीं है बल्कि दरबारी संस्कृति का काव्य है। इसमें शृंगार और शब्द-सज्जा पर जोर रहा। कवियों ने सामान्य जनता की रुचि को अनदेखा कर सामंतों एवं रईसों की अभिरुचियों को कविता के केन्द्र में रखा। इससे कविता आम आदमी के दुख एवं हर्ष से जुड़ने के बजाय दरबारों के वैभव व विलास से जुड़ गई।

➢ रीतिकाल की दो मुख्य प्रवृत्तियां थीं—
1. रीति निरूपण 2. शृंगारिकता।

➢ रीति निरूपण को काव्यांग विवेचन के आधार पर दो वर्गों में बाँटा जा सकता है

(i) सर्वांग विवेचन : सर्वांग विवेचन के अन्तर्गत काव्य के सभी अंगों *(रस, छंद, अलंकार आदि)* को विवेचन का विषय बनाया गया है। चिन्तामणि का 'कविकुलकल्पतरु', देव का 'शब्द रसायन', कुलपति का 'रस रहस्य', भिखारी दास का 'काव्य निर्णय' इसी तरह के ग्रंथ हैं।

(ii) विशिष्टांग विवेचन : विशिष्टांग विवेचन के तहत काव्यांगों में रस, छंद व अलंकारों में से किसी एक अथवा दो अथवा तीनों का विवेचन का विषय बनाया गया है। तीनों में रस में और रस में भी शृंगार रस में रचनाकारों ने विशेष दिलचस्पी दिखाई है। 'रसविलास' *(चिंतामणि)*, 'रसार्णव' *(सुखदेव मिश्र)*, 'रस प्रबोध' *(रसलीन)*, 'रसराज' *(मतिराम)*, 'शृंगार निर्णय' *(भिखारी दास)*, 'अलंकार रत्नाकर' *(दलपति राय)*, 'छंद विलास' *(माखन)* आदि इसी श्रेणी के ग्रंथ हैं।

➢ रीति निरूपण की परिपाटी बहुत सतही है। रीति निरूपण में रीति कालीन रचनाकारों की रुचि शास्त्र के प्रति निष्ठा का परिणाम नहीं है बल्कि दरबार में पैदा हुई रचनात्मक आवश्यकता है। इनका उद्देश्य सिर्फ नवोदित कवियों को काव्यशास्त्र की हल्की-फुल्की जानकारी देना है तथा अपने आश्रयदाताओं पर अपने पांडित्य का धौंस जमाकर अर्थ दोहन करना है।

➢ रीतिकालीन कवियों को तीन वर्गों में बाँटा जाता है—रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध एवं रीतिमुक्त।

(i) रीतिबद्ध कवि : रीतिबद्ध कवियों *(आचार्य कवियों)* ने अपने लक्षण ग्रंथों में प्रत्यक्ष रूप से रीति परम्परा का निर्वाह किया है; जैसे—केशवदास, चिंतामणि, मतिराम, सेनापति, देव, पद्माकर आदि। आचार्य राचन्द्र शुक्ल ने केशवदास को 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा है।

(ii) रीतिसिद्ध कवि : रीतिसिद्ध कवियों की रचनाओं की पृष्ठभूमि में अप्रत्यक्ष रूप से रीति परिपाटी काम कर रही होती है। उनकी रचनाओं को पढ़ने से साफ पता चलता है कि उन्होंने काव्य शास्त्र को पचा रखा है। बिहारी, रसनिधि आदि इस वर्ग में आते हैं।

(iii) रीतिमुक्त कवि : रीति परंपरा से मुक्त कवियों को रीतिमुक्त कवि कहा जाता है। घनानंद, आलम, ठाकुर, बोधा, द्विजदेव आदि इस वर्ग में आते हैं।

➢ रीतिकालीन आचार्यों में देव एकमात्र अपवाद हैं जिन्होंने रीति निरूपण के क्षेत्र में मौलिक उद्‌भावनाएं की।

➢ रीतिकाल की दूसरी मुख्य प्रवृत्ति शृंगारिकता थी।

(i) रीतिबद्ध कवियों की शृंगारिकता : रीतिबद्ध कवियों ने काव्यांग निरूपण करते हुए उदाहरणस्वरूप शृंगारिक रचनाएं प्रस्तुत की है। केशवदास, चिंतामणि, देव, मतिराम आदि की रचनाओं में इसे देखा जा सकता है।

(ii) रीतिसिद्ध कवियों की शृंगारिकता : रीतिसिद्ध कवियों का काव्य रीति निरूपण से तो दूर है, किन्तु रीति की छाप लिए हुए है। बिहारी, रसनिधि आदि की रचनाओं में इसे देखा जा सकता है।

(iii) रीतिमुक्त कवियों की शृंगारिकता : रीतिमुक्त कवियों की शृंगारिकता विशिष्ट प्रकार की है। रीतिमुक्त कवि 'प्रेम की पीर' के सच्चे गायक थे। इनके शृंगार में प्रेम की तीव्रता भी है एवं आत्मा की पुकार भी। घनानंद, आलम, ठाकुर, बोधा आदि की रचनाओं में इसे महसूस किया जा सकता है।

➢ आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है : "शृंगार रस के ग्रंथों में जितनी ख्याति और जितना मान 'बिहारी सतसई' का हुआ उतना और किसी का नहीं। इसका एक-एक दोहा हिन्दी साहित्य में एक-एक रत्न माना जाता है। ..... बिहारी ने इस सतसई के अतिरिक्त और कोई ग्रंथ नहीं लिखा। यही एक ग्रंथ उनकी इतनी बड़ी कीर्ति का आधार है। ..... मुक्तक कविता में जो गुण होना चाहिए वह बिहारी के दोहों में अपने चरम उत्कर्ष को पहुँचा है, इसमें कोई संदेह नहीं। ..... जिस कवि में कल्पना की समाहार शक्ति के साथ भाषा की समाहार शक्ति जितनी अधिक होगी उतनी ही वह मुक्तक की रचना में सफल होगा। यह क्षमता बिहारी में पूर्ण रूप से वर्तमान थी। इसी से वे दोहे ऐसे छोटे छंद में इतना रस भर सके हैं। इनके दोहे क्या हैं रस के छोटे-छोटे छींटें हैं।"

थोड़े में बहुत कुछ कहने की अद्‌भुत क्षमता को देखते हुए किसी ने कहा है—

सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगे, घाव करै गंभीर।।

अर्थात् जिस तरह नावक अर्थात् तीरंदाज के तीर देखने में छोटे होते हैं पर गंभीर घाव करते हैं, उसी तरह बिहारी सतसई के दोहे देखने में छोटे लगते हैं पर अत्यंत गहरा प्रभाव छोड़ते हैं।

➢ *रीतिकाल की गौण प्रवृत्तियाँ थीं—भक्ति, वीरकाव्य/राज प्रशस्ति व नीति।*

➢ *रीतिकाल में भक्ति की प्रवृत्ति मंगलाचरणों, ग्रंथों की समाप्ति पर आशीर्वचनों, काव्यांग विवेचन संबंधी ग्रंथों में दिए गए उदाहरणों आदि में मिलती है।*

➢ *रीतिकाल में लाल कवि, पद्माकर भट्ट, सूदन, खुमान, जोधराज आदि ने जहाँ प्रबंधात्मक वीर-काव्य की रचना की, वहीं भूषण, बाँकी दास आदि मुक्तक वीर-काव्य की। इन कवियों ने अपने संरक्षक राजाओं का ओजस्वी वर्णन किया है।*

➢ *रीतिकाल में वृन्द, रामसहाय दास, दीन दयाल गिरि, गिरिधर, कविराय, घाघ-भड्डरि, वैताल आदि ने नीति विषयक रचनाएँ रची।*

➢ रीतिकालीन शिल्पगत विशेषताएँ : 1. सतसई परम्परा का पुनरुद्धार 2. काव्य भाषा—ब्रजभाषा *(श्रुति मधुर व कोमल कांत पदावलियों से युक्त तराशी हुई भाषा)* 3. काव्य-रूप—मुख्यतः मुक्तक का प्रयोग 4. दोहा छंद की प्रधानता *(दोहे 'गागर में सागर' शैली वाली कहावत को चरितार्थ करते है तथा लोकप्रियता के लिहाज से संस्कृत के 'श्लोक' एवं अरबी-फारसी के शेर के समतुल्य है।)*: दोहे के अलावा 'सवैया' *(शृंगार रस के अनुकूल छंद)* और 'कवित्त' *(वीर रस के अनुकूल छंद)* रीति कवियों के प्रिय छंद थे। केशवदास की 'रामचंद्रिका' को 'छंदों का अजायबघर' कहा जाता है।

➢ रीतिमुक्त/रीति स्वच्छन्द काव्य की विशेषताएँ : बंधन या परिपाटी से मुक्त रहकर रीतिकाव्य धारा के प्रवाह के विरुद्ध एक अलग तथा विशिष्ट पहचान बनाने वाली काव्यधारा 'रीतिमुक्त काव्य' के नाम से जाना जाता है। रीतिमुक्त काव्य की विशेषताएँ थीं : 1. रीति स्वच्छंदता 2. स्वअनुभूत प्रेम की अभिव्यक्ति 3. विरह का आधिक्य 4. कला पक्ष के स्थान पर भाव पक्ष पर जोर 5. पृथक् काव्यादर्श/ प्राचीन काव्य परम्परा का त्याग 6. सहज, स्वाभाविक एवं प्रभावी अभिव्यक्ति 7. सरल, मनोहारी बिम्ब योजना व सटीक प्रतीक विधान।

➢ रीतिकालीन देव ने फ्रायड की तरह, लेकिन फ्रायड के बहुत पहले ही, काम *(Sex)* को समस्त जीवों की प्रक्रियाओं के केन्द्र में रखकर अपने समय में क्रांतिकारी चिंतन दिया।

प्रसिद्ध पंक्तियाँ

➢ इत आवति चलि, जाति उत चली छ सातक हाथ।
चढ़ि हिंडोरे सी रहै लागे उसासनु हाथ।।
(विरही नायिका इतनी अशक्त हो गयी है कि सांस लेने मात्र से छः सात हाथ पीछे चली जाती है और सांस छोड़ने मात्र से छः सात हाथ आगे चली जाती है। ऐसा लगता है मानो जमीन पर खड़ी न होकर हिंडोले पर चढ़ी हुई है।)
—बिहारी

➢ वासर की संपति उलूक ज्यों न चितवत
(जिस तरह दिन में उल्लू संपत्ति की ओर नहीं ताकते उसी तरह राम अन्य स्त्रियों की तरफ नहीं देखते।)—केशवदास

➢ आगे के कवि रीझिहें, तो कविताई, न तौ
राधिका कन्हाई सुमिरन को बहानो है।
(आगे के कवि रीझें तो कविता है अन्यथा राधा-कृष्ण के स्मरण का बहाना ही सही।) *—भिखारी दास*

➢ जान्यौ चहै जु थोरे ही, रस कविता को बंस।
तिन्ह रसिकन के हेतु यह, कान्हों रस सारंस।।
—भिखारीदास

➢ काव्य की रीति सिखी सुकवीन सों
(मैंने काव्य की रीति कवियों से ही सीखी है।)—भिखारीदास

➢ तुलसी गंग दुवौ भए सुकविन के सरदार *—भिखारीदास*

➢ रीति सुभाषा कवित की बरनत बुधि अनुसार *—चिंतामणि*

➢ अपनी-अपनी रीति के काव्य और कवि-रीति *—देव*

➢ अति सूधो सनेह को मारग है, जहाँ नैकु सयानप बाँक नहीं।
तहँ साँचे चलैं ताजि आपनपौ, झिझकै कपटी जे निसाक नहीं।
—घनानंद

➢ यह कैसो संयोग न सूझि पड़ै जो वियोग न एको विछोहत है —घनानंद

➢ मोहे तो मेरे कवित्त बनावत। —घनानंद

➢ यह प्रेम को पंथ कराल महा तरवारि की धार पर धावनो है —बोधा

➢ जदपि सुजाति सुलक्षणी सुवरण सरस सुवृत्त।
भूषण बिनु न विराजई कविता वनिता मीत।। —केशवदास

➢ लोचन, वचन, प्रसाद, मृदु हास, वास चित्त मोद।
इतने प्रगट जानिये वरनत सुकवि विनोद ।। —मतिराम

➢ युक्ति सराही मुक्ति हेतु, मुक्ति भुक्ति को धाम।
युक्ति, मुक्ति और भुक्ति को मूल सो कहिये काम।। —देव

➢ दृग अरुझत, टूटत कुटुम्ब, जुरत चतुर चित प्रीति।
पड़ति गांठ दुर्जन हिये दई नई यह रीति।। —बिहारी

➢ फागु के भीर अभीरन में गहि
गोविंदै लै गई भीतर गोरी।
भाई करी मन की पद्माकर,
ऊपर नाहिं अबीर की झोरी।
छीनी पितंबर कम्मर ते सु
विदा दई मीड़ि कपोलन रोरी
नैन नचाय कही मुसकाय,
'लला फिर आइयो खेलन होरी'। —पद्माकर

➢ आँखिन मूंदिबै के मिस,
आनि अचानक पीठि उरोज लगावै —चिंतामणि

➢ मानस की जात सभै एकै पहिचानबो —गुरु गोविंद सिंह

➢ अभिधा उत्तम काव्य है मध्य लक्षणा लीन
अधम व्यंजना रस विरस, उलटी कहत प्रवीन। —देव

➢ अमिय, हलाहल, मदभरे, सेत, स्याम, रतनार।
जियत, मरत, झुकि-झुकि परत, जेहि चितवत एक बार।।
—रसलीन

➢ भले बुरे सम, जौ लौ बोलत नाहिं
जानि परत है काक पिक, ऋतु बसंत के माहिं। —वृन्द

➢ कनक छुरी सी कामिनी काहे को कटि छीन —आलम

➢ नेही महा ब्रजभाषा प्रवीन और सुंदरतानि के भेद को जानै
—ब्रजनाथ

➢ एक सुभान कै आनन पै कुरबान जहाँ लगि रूप जहाँ को
—बोधा

➢ आलम नेवाज सिरताज पातसाहन के
गाज ते दराज कौन नजर तिहारी है —चन्द्रशेखर

➢ देखे मुख भावै अनदेखे कमल चंद
ताते मुख मुरझे कमला न चंद। —केशवदास

➢ सटपटाति-सी ससि मुखी मुख घूँघट पर ढाँकि —बिहारी

➢ मेरी भव बाधा हरो —बिहारी

➢ कुंदन का रंग फीको लगै, झलकै अति अंगनि चारू गोराई।
आँखिन में अलसानि, चित्तौन में मंजु विलासन की सरसाई।।
को बिन मोल बिकात नहीं मतिराम लहे मुसकानि मिठाई।
ज्यों-ज्यों निहारिए नेरे ह्वै नैननि त्यों-त्यों खरी निकरै सी निकाई।।
—मतिराम

➢ तंत्रीनाद कवित्त रस सरस राग रति रंग।
अनबूड़े बूड़े तिरे जे बूड़े सब अंग।। —बिहारी

➢ साजि चतुरंग वीर रंग में तुरंग चढि —भूषण

➢ गुलगुली गिलमैं, गलीचा है, गुनीजन हैं,
चिक हैं, चिराकैं हैं, चिरागन की माला हैं।
कहै पद्माकर है गजक गजा हू सजी,
सज्जा हैं, सुरा हैं, सुराही हैं, सुप्याला हैं। —पद्माकर

➢ रावरे रूप की रीति अनूप, नयो नयो लागै ज्यौं ज्यौं निहारियै।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आन तिहारियै।
—घनानंद

➢ घनानंद प्यारे सुजान सुनौ, इत एक तें दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन सी पाटी पढ़े हो लला, मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।।
[सुजान—घनानंद की प्रेमिका का नाम; घनानंद ने प्रायः सुजान (एक अर्थ—सुजान, दूसरा अर्थ—श्रीकृष्ण) को संबोधित करते हुए अपनी कविताएँ रची हैं] —घनानंद

➢ चाह के रंग मैं भीज्यौ हियो, बिछुरें-मिलें प्रीतम सांति न मानै।
भाषा प्रबीन, सुछंद सदा रहै, सो घनजी के कबित्त बखानै।।
—ब्रजनाथ (घनानंद के कवि-मित्र एवं प्रशस्तिकार)

उत्तर-मध्यकालीन/रीतिकालीन रचना एवं रचनाकार

रचनाकार	उत्तर-मध्यकालीन/रीतिकालीन रचना
चिंतामणि	कविकुल कल्पतरु, रस विलास, काव्य विवेक, शृंगार मंजरी, छंद विचार
मतिराम	रसराज, ललित ललाम, अलंकार पंचाशिका, वृत्तकौमुदी
राजा जसवंत सिंह	भाषा भूषण
भिखारी दास	काव्य निर्णय, शृंगार निर्णय
याकूब खाँ	रस भूषण
रसिक सुमति	अलंकार चन्द्रोदय
दूलह	कवि कुल कण्ठाभरण
देव	शब्द रसायन, काव्य रसायन, भाव विलास, भवानी विलास, सुजान विनोद, सुख सागर तरंग
कुलपति मिश्र	रस रहस्य
सुखदेव मिश्र	रसार्णव
रसलीन	रस प्रबोध
दलपति राय	अलंकार रत्नाकर
माखन	छंद विलास
बिहारी	बिहारी सतसई
रसनिधि	रतनहजारा
घनानन्द	सुजान हित प्रबंध, वियोग बेलि, इश्कलता, प्रीति पावस, पदावली
आलम	आलम केलि
ठाकुर	ठाकुर ठसक
बोधा	विरह वारीश, इश्कनामा
द्विजदेव	शृंगार बत्तीसी, शृंगार चालीसी, शृंगार लतिका
लाल कवि	छत्र प्रकाश (प्रबंध)
पद्माकर भट्ट	हिम्मत बहादुर विरुदावली (प्रबंध)
सूदन	सुजान चरित (प्रबंध)
खुमान	लक्ष्मण शतक
जोधराज	हम्मीर रासो
भूषण	शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक
वृन्द	वृन्द सतसई
राम सहाय दास	राम सतसई
दीन दयाल गिरि	अन्योक्ति कल्पद्रुम
गिरिधर कविराय	स्फुट छन्द
गुरु गोविंद सिंह	सुनीति प्रकाश, सर्वसोलह प्रकाश, चण्डी चरित्र

आधुनिक काल (1850 ई०–अब तक)

भारतेन्दु युग (1850 ई०–1900 ई०)

- भारतेन्दु युग का नामकरण हिन्दी नवजागरण के अग्रदूत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाम पर किया गया है।
- भारतेन्दु युग की प्रवृत्तियाँ थीं—1. नवजागरण, 2. सामाजिक चेतना, 3. भक्ति भावना, 4. शृंगारिकता, 5. रीति निरूपण, 6. समस्या-पूर्ति।
- भारतेन्दु युग में भारतेन्दु को केन्द्र में रखते हुए अनेक कृती साहित्यकारों का एक उज्ज्वल मंडल प्रस्तुत हुआ, जिसे 'भारतेन्दु मण्डल' के नाम से जाना गया। इसमें भारतेन्दु के समानधर्मा रचनाकार थे। इस मंडल के रचनाकारों ने भारतेन्दु से प्रेरणा ग्रहण की और हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि का काम किया।
- भारतेन्दु मंडल के प्रमुख रचनाकार हैं—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रताप नारायण मिश्र, बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन', बाल कृष्ण भट्ट, अम्बिका दत्त व्यास, राधा चरण गोस्वामी, ठाकुर जगमोहन सिंह, लाला श्री निवास दास, सुधाकर द्विवेदी, राधा कृष्ण दास आदि।
- भारतेन्दु मण्डल के रचनाकारों का मूल स्वर नवजागरण है। नवजागरण की पहली अनुभूति हमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचनाओं में मिलती है।
- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के पिता गोपाल चन्द्र 'गिरिधर दास' अपने समय के प्रसिद्ध कवि थे।
- भारतेन्दु युगीन नवजागरण में एक ओर राजभक्ति *(ब्रिटिश शासन की प्रशंसा)* है तो दूसरी ओर देशभक्ति *(ब्रिटिश शोषण का विरोध)*।
- सामाजिक चेतना के चित्रण में कुछ कवियों की दृष्टि सुधारवादी थी तो कुछ कवियों की यथास्थितिवादी।
- भारतेन्दु युग में नारी शिक्षा, विधवाओं की दुर्दशा, छुआछूत आदि को लेकर सहानुभूतिपूर्ण कविताएं लिखी गयीं।
- भारतेन्दु युगीन कवियों ने जनता की समस्याओं का व्यापक रूप से चित्रण किया।
- भारतेन्दु युगीन भक्ति अन्य युगों की भाँति भक्ति-संप्रदाय निर्धारित भक्ति नहीं है। एक ही रचनाकार सगुण और निर्गुण दोनों तरह के पद रचते हैं।
- इस युग की भक्ति रचना की विशेषता यह थी निर्गुण और सगुण भक्ति में सगुण भक्ति ही मुख्य साधना दिशा थी और सगुण भक्ति में भी कृष्ण भक्ति काव्य अधिक परिमाण में रचे गये।
- भारतेन्दु युगीन कवियों ने शृंगार चित्रण में भक्ति कालीन कृष्ण काव्य परम्परा, रीतिकालीन नख-शिख, नायिका भेदी परम्परा तथा उर्दू कविता से सम्पर्क के फलस्वरूप प्रेम की वेदनात्मक व्यंजना को अपनाया।
- भारतेन्दु युगीन कवि सेवक, सरदार, लछिराम आदि ने रीतिकालीन पद्धति को अपनाया।
- रीति निरूपण के क्षेत्र में सेवक , सरदार, हनुमान, लछिराम वाली धारा सक्रिय रही।
- रीति निरूपण की तरह समस्या पूर्ति भी रीतिकालीन काव्य-प्रवृत्ति थी जिसे भारतेन्दुयुगीन कवियों ने नया रूप दिया तथा इसे सामंतोन्मुख के स्थान पर जनोन्मुख बनाया।
- कविता को जनोन्मुख बनाने का सबसे अधिक श्रेय समस्या पूर्ति को ही है।
- भारतेन्दु 'कविता वर्धिनी सभा' के जरिये समस्यापूर्तियों का आयोजन करते थे। इसकी देखा-देखी कानपुर के 'रसिक समाज', आजमगढ़ के 'कवि समाज' ने समस्या पूर्ति के सिलसिले को आगे बढाया।
- भारतेन्दु युग में प्रबंध काव्य कम लिखे गये और जो लिखे गये वे प्रसिद्धि नहीं प्राप्त कर सके। मुक्तक कविताएँ ज्यादा लोकप्रिय हुई।
- भारतेन्दु ने उन मुक्तक काव्य-रूपों का पुनरुद्धार किया जिन्हें अमीर खुसरो के बाद लगभग भुला दिया गया था। ये हैं पहेलियाँ और मुकरियाँ।
- भारतेन्दु युग में भाषा के क्षेत्र में द्वैत वर्तमान रहा—पद्य के लिए ब्रजभाषा और गद्य के लिए खड़ी बोली। हिन्दी गद्य की प्रायः सभी विधाओं का सूत्रपात भारतेन्दु युग में हुआ।
- समग्रत : भारतेन्दु युगीन काव्य में प्राचीन व नयी काव्य प्रवृत्तियों का मिश्रण मिलता है। इसमें यदि एक ओर खुसरो कालीन काव्य प्रवृत्ति पहेली व मुकरियां, भक्ति कालीन काव्य प्रवृत्ति भक्ति भावना, रीतिकालीन काव्य प्रवृत्तियाँ शृंगारिकता, रीति निरूपण, समस्यापूर्ति जैसी पुरानी काव्य प्रवृत्तियाँ मिलती हैं तो दूसरी ओर राज भक्ति, देश भक्ति, देशानुराग की भक्ति, समाज सुधार, अर्थनीति का खुलासा, भाषा प्रेम जैसी नयी काव्य प्रवृत्तियाँ भी मिलती हैं।

प्रसिद्ध पंक्तियाँ

- रोवहु सब मिलि, आवहु 'भारत भाई' ।
  हा! हा! भारत-दुर्दशा न देखी जाई ।। —*भारतेंदु*
- कठिन सिपाही द्रोह अनल जा जल बल नासी।
  जिन भय सिर न हिलाय सकत कहुँ भारतवासी।।
  —*भारतेन्दु*
- यह जीय धरकत यह न होई कहूं कोउ सुनि लेई।
  कछु दोष दै मारहिं और रोवन न दइहिं।।
  —*प्रताप नारायण मिश्र*
- अमिय की कटोरिया सी चिरजीवी रहो विक्टोरिया रानी।
  —*अंबिका दत्त व्यास*
- अँगरेज-राज सुख साज सजे सब भारी।
  पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी।। —*भारतेंदु*
- भीतर-भीतर सब रस चूसै, हँसि-हँसि के तन-मन-धन मूसै।
  जाहिर बातन में अति तेज, क्यों सखि सज्जन! नहीं अंगरेज।।
  —*भारतेंदु*
- सब गुरुजन को बुरा बतावैं, अपनी खिचड़ी अलग पकावैं।
  भीतर तत्व न, झूठी तेजी, क्यों सखि साजन नहिं अँगरेजी।।
  —*भारतेंदु*
- सर्वसु लिए जात अँगरेज,
  हम केवल लेक्चर के तेज। —*प्रताप नारायण मिश्र*
- अभी देखिये क्या दशा देश की हो,
  बदलता है रंग आसमां कैसे-कैसे। —*प्रताप नारायण मिश्र*
- हम आरत भारत वासिन पे अब दीनदयाल दया कीजिये!
  —*प्रताप नारायण मिश्र*

➢ हिन्दू मुस्लिम जैन पारसी इसाई सब जात।
सुखि होय भरे प्रेमधन सकल 'भारती भ्रात'।
—*बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन'*

➢ कौन करेजो नहिं कसकत,
सुनी विपत्ति बाल विधवन की। —*प्रताप नारायण मिश्र*

➢ हे धनियों ! क्या दीन जनों की नहीं सुनते हो हाहाकार।
जिसका मरे पड़ोसी भूखा उसके भोजन को धिक्कार।
—*बाल मुकुन्द गुप्त*

➢ बहुत फैलाये धर्म, बढाया छुआछूत का कर्म। —*भारतेन्दु*

➢ सभी धर्म में वही सत्य, सिद्धांत न और विचारो।—*भारतेन्दु*

➢ परदेसी की बुद्धि और वस्तुन की कर आस।
परवस ह्वै कबलौ कहौं रहिहों तुम वै दास।। —*भारतेन्दु*

➢ तबहि लख्यौ जहँ रह्यो एक दिन कंचन बरसत।
तहँ चौथाई जन रुखी रोटिहुँ को तरसत।।
—*प्रताप नारायण मिश्र*

➢ सखा पियारे कृष्ण के गुलाम राधा रानी के। —*भारतेन्दु*

➢ साँझ सवेरे पंछी सब क्या कहते हैं कुछ तेरा है।
हम सब इक दिन उड़ जायेंगे यह दिन चार बसेरा है।
—*भारतेन्दु*

➢ समस्या : आँखियाँ दुखिया नहीं मानति है
समस्या पूर्ति : यह संग में लागिये डोले सदा
बिन देखे न धीरज आनति है
प्रिय प्यारे तिहारे बिना
आँखियाँ दुखिया नहीं मानति है।
—*भारतेन्दु की एक समस्यापूर्ति*

➢ निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।।—*भारतेन्दु*

➢ अँगरेजी पढ़ि के जदपि. सब गुन होत प्रवीन।
पै निज भाषा ज्ञान बिन, रहत हीन को हीन।। —*भारतेन्दु*

➢ पढ़ि कमाय कीन्हों कहा, हरे देश कलेस।
जैसे कन्ता घर रहै, तैसे रहे विदेस।।—*प्रताप नारायण मिश्र*

➢ चहहु जु साँचहु निज कल्यान, तौ सब मिलि भारत सन्तान।
जपो निरन्तर एक जबान, *हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान*।।
—*प्रताप नारायण मिश्र*

➢ भारतेन्दु ने गद्य की भाषा को परिमार्जित करके उसे बहुत ही चलता, मधुर और स्वच्छ रूप दिया। उनके भाषा संसकार की महत्ता को सब लोगों ने मुक्त कंठ से स्वीकार किया और वे वर्तमान हिन्दी गद्य के प्रवर्तक माने गए।
—*रामचन्द्र शुक्ल*

➢ 'भारतेन्दु ने हिन्दी साहित्य को एक नये मार्ग पर खड़ा किया। वे साहित्य के नये युग के प्रवर्तक हुए।' —*रामचन्द्र शुक्ल*

➢ इन मुसलमान जनन पर कोटिन हिंदू बारहि —*भारतेन्दु*
(रसखान आदि की भक्ति पर रीझकर)

➢ आठ मास बीते जजमान
अब तो करो दच्छिना दान —*प्रताप नारायण मिश्र*

➢ 'साहित्य जन-समूह के हृदय का विकास है'।—*बालकृष्ण भट्ट*

➢ 'हिन्दी नयी चाल में ढली, सन् 1873 ई. में'।
—*भारतेन्दु हरिश्चन्द्र*

भारतेन्दुयुगीन रचना एवं रचनाकार

रचनाकार	भारतेन्दुयुगीन रचना
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	प्रेम मालिका, प्रेम सरोवर, गीत गोविन्दानन्द, वर्षा-विनोद, विनय-प्रेम पचासा, प्रेम-फुलवारी, वेणु-गीति; दशरथ विलाप, फूलों का गुच्छा *(खड़ी बोली में)*
बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन'	जीर्ण जनपद, आनन्द अरुणोदय, हार्दिक हर्षादर्श, मयंक महिमा, अलौकिक लीला, वर्षा-बिन्दु, लालित्य लहरी, बृजचन्द पंचक
प्रताप नारायण मिश्र	प्रेमपुष्पावली, मन की लहर, लोकोक्ति शतक, तृप्यन्ताम्, शृंगार विलास, दंगल खंड, ब्रेडला स्वागत
जगमोहन सिंह	प्रेमसंपत्ति लता, श्यामालता, श्यामा- सरोजिनी, देवयानी, ऋतु संहार *(अ०)*, मेघदूत *(अ०)*
अम्बिका दत्त व्यास	पावस पचासा, सुकवि सतसई, हो हो होरी
राधा कृष्ण दास	कंस वध (अपूर्ण), भारत बारहमासा, देश दशा

द्विवेदी युग (1900 ई०–1920 ई०)

➢ द्विवेदी युग 20वीं सदी के पहले दो दशकों का युग है। इन दो दशकों के कालखण्ड ने हिन्दी कविता को शृंगारिकता से राष्ट्रीयता, जड़ता से प्रगति तथा रूढ़ि से स्वच्छंदता के द्वार पर ला खड़ा किया।

➢ इस कालखंड के पथ प्रदर्शक, विचारक और सर्वस्वीकृत साहित्य नेता आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर इसका नाम द्विवेदी युग रखा गया है।

➢ यह सर्वथा उचित है क्योंकि हिन्दी के कवियों और लेखकों की एक पीढ़ी का निर्माण करने, हिन्दी के कोश निर्माण की पहल करने, हिन्दी व्याकरण को स्थिर करने और खड़ी बोली का परिष्कार करने और उसे पद्य की भाषा बनाने आदि का श्रेय बहुत हद तक महावीर प्रसाद द्विवेदी को ही है।

➢ द्विवेदी युग को 'जागरण-सुधार काल' भी कहा जाता है।

➢ द्विवेदी युग में अधिकांश कवियों ने द्विवेदी जी के दिशा निर्देश के अनुशासन में काव्य रचना की। किन्तु कुछ कवि ऐसे भी थे जो उनके अनुशासन में नही थे और काव्य सृजन कर रहे थे।

➢ इस तरह, इस युग के कवियों के दो वर्ग थे—द्विवेदी मंडल के कवि और द्विवेदी मंडल के बाहर के कवि। द्विवेदी मंडल के कवियों की काव्यधारा को 'अनुशासन की धारा' तथा द्विवेदी मंडल के बाहर के कवियों की काव्यधारा को 'स्वच्छंदता की धारा' कहा जाता है।

➢ द्विवेदी मंडल के कवियों में मैथिलीशरण गुप्त, हरिऔध, सियारामशरण गुप्त, नाथूराम शर्मा 'शंकर', महावीर प्रसाद द्विवेदी आते हैं।

➢ द्विवेदी मंडल के बाहर *(स्वच्छंदता की धारा)* के कवियों में *श्रीधर पाठक, मुकुटधर पाण्डेय, लोचन प्रसाद पांडेय, राम नरेश त्रिपाठी* आदि प्रमुख हैं। इन कवियों की विशेषताएं हैं प्रकृति का पर्यवेक्षण, उसकी स्वच्छंद भंगिमाओं का चित्रण, देशभक्ति, कथा गीत का प्रयोग, काव्य भाषा के रूप में खड़ी बोली की स्वीकृति आदि। स्वच्छंदता वादी काव्य की यही धारा आगे चलकर छायावाद में गहरी हो जाती है।

द्विवेदी युग की विशेषताएं :

1. जागरण-सुधार (राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक सुधार/सामाजिक चेतना, मानवतावाद आदि), 2. सोद्देश्यता, आदर्शपरकता व नीतिमत्ता, 3. आधुनिकता, 4. समस्या पूर्ति, 5. प्रकृति चित्रण, 6. विषय-विस्तार, इतिवृत्तात्मकता/विवरणात्मकता व उपदेशात्मकता, 7. काव्य-रूप—प्रबंध काव्य, खंड काव्य व मुक्तक कविता तीनों पर जोर, 8. गद्य और पद्य दोनों की भाषा के रूप में खड़ी बोली की मान्यता, बोधगम्य भाषा।

➢ *राम नरेश त्रिपाठी* ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीयता की एक संकल्पना विकसित की। उनकी राय में राष्ट्रीयता के तीन खतरे हैं—विदेशी शासन *(पराधीनता)*, एक तंत्रीय शासन *(तानाशाही शासन)* और विदेशी आक्रमण। इन्हीं तीन विषयों को लेकर त्रिपाठीजी ने काव्य त्रयी *(Trio)* की रचना की 'मिलन','पथिक' व 'स्वप्न'।

➢ *मैथिली शरण गुप्त* ने दो नारी प्रधान काव्य—'साकेत' व 'यशोधरा' की रचना की।

➢ भारतेन्दु युग में जिस तरह अम्बिका चरण व्यास समस्यापूर्ति की राह से कविता के क्षेत्र में आये उसी तरह द्विवेदी युग में नाथूराम शर्मा 'शंकर'।

➢ पहली बार द्विवेदी युग में प्रकृति को काव्य-विषय के रूप में मान्यता मिली। इसके पूर्व प्रकृति या तो उद्दीपन के रूप में आती थी या फिर अप्रस्तुत विधान का अंग बनकर। द्विवदी युग में प्रकृति को आलंबन तथा प्रस्तुत विधान के रूप में मान्यता मिली। पर द्विवेदी युग में प्रकृति का स्थिर-चित्रण हुआ है, गतिशील चित्रण नहीं।

➢ द्विवेदी युगीन कविता कथात्मक तथा अभिधात्मक होने के कारण इतिवृत्तात्मक/विवरणात्मक हो गई है।

➢ प्रबंध काव्य : 'प्रिय प्रवास' व 'वैदेही वनवास' *(हरिऔध)*, 'साकेत' व 'यशोधरा' *(मैथिली शरण गुप्त)*, 'उर्मिला' *(बालकृष्ण शर्मा नवीन)* आदि।

खण्ड काव्य : 'रंग में भंग', 'पंचवटी', 'जयद्रथ वध' व 'किसान' *(मैथिलीशरण गुप्त)*, 'मिलन', 'पथिक' व 'स्वप्न' *(राम नरेश त्रिपाठी)* आदि।

➢ द्विवेदी युग के आरंभ में खड़ी बोली अनगढ, शुष्क और अस्थिर- स्वरूप थी, किन्तु, शनैः शनैः उसका स्वरूप निश्चित, सुघड़ और मधुर बनता चला गया।

➢ खड़ी बोली के स्वरूप निर्धारण और विकास का श्रेय द्विवेदी युग को है। *मैथिली शरण गुप्त* द्विवेदी युग के सर्वाधिक प्रसिद्ध कवि थे। इनकी प्रथम पुस्तक 'रंग में भंग' *(1909)* है। इनकी ख्याति का मूलाधार 'भारत-भारती' *(1912)* है। 'भारत भारती' ने हिन्दी भाषियों में जाति और देश के प्रति गर्व और गौरव की भावनाएं जगाई और तभी से ये 'राष्ट्रकवि' के रूप में विख्यात हुए। ये प्रसिद्ध राम भक्त कवि थे। 'राम चरित मानस' के पश्चात हिन्दी में राम काव्य का दूसरा प्रसिद्ध उदाहरण *मैथिली शरण गुप्त* कृत 'साकेत' है।

प्रसिद्ध पंक्तियाँ

➢ हम कौन थे, क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी,
आओ, विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी।
('भारत-भारती') —*मैथिली शरण गुप्त*

➢ हाँ, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है,
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है ?
('भारत भारती') —*मैथिली शरण गुप्त*

➢ देशभक्त वीरों, मरने से नेक नहीं डरना होगा।
प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा।।
—*नाथूराम शर्मा 'शंकर'*

➢ धरती हिलाकर नींव भगा दे।
वज्रनाद से व्योम जगा दे।
क्षेय, और कुछ लाग लगा दे।
(स्वदेश संगीत) —*मैथिली शरण गुप्त*

➢ जिसको नहीं गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं नरपशु निरा है, और मृतक समान है।।
—*मैथिली शरण गुप्त*

➢ वन्दनीय वह देश जहाँ के देशी निज अभिमानी हों।
बांधवता में बँधे परस्पर परता के अज्ञानी हों।।
—*श्रीधर पाठक*

➢ पराधीन रहकर अपना मुख शोक न कह सकता है।
यह अपमान जगत में केवल पशु ही सह सकता है।।
—*राम नरेश त्रिपाठी*

➢ सखि, वे मुझसे कहकर जाते
('यशोधरा') —*मैथिली शरण गुप्त*

➢ अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।।
('यशोधरा') —*मैथिली शरण गुप्त*

➢ नारी पर नर का कितना अत्याचार है।
लगता है विद्रोह मात्र ही अब उसका प्रतिकार है।।
—*मैथिली शरण गुप्त*

➢ राम तुम मानव हो ईश्वर नहीं हो क्या ?
विश्व में रमे हुए सब कहीं नहीं हो क्या ?
—*मैथिली शरण गुप्त*

➢ मैं ढूंढता तुझे था जब कुंज और वन में,
तू मुझे खोजता था जब दीन के वतन में।
तू आह वन किसी को मुझको पुकारता था,
मैं था तुझे बुलाता संगीत के भजन में।।—*राम नरेश त्रिपाठी*

➢ साहित्य समाज का दर्पण है। —*महावीर प्रसाद द्विवेदी*

➢ केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए,
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।
('भारत-भारती') —*मैथिली शरण गुप्त*

➢ अधिकार खोकर बैठना यह महा दुष्कर्म है,
न्यायार्थ अपने बंधु को भी दंड देना धर्म है।
('जयद्रथ वध') —*मैथिली शरण गुप्त*

➢ अन्न नहीं है वस्त्र नहीं है रहने का न ठिकाना
कोई नहीं किसी का साथी अपना और बिगाना।
—*रामनरेश त्रिपाठी*

➢ दिवस का अवसान समीप था,
गगन था कुछ लोहित हो चला
तरु शिखा पर थी अब राजति
कमलिनी कुल-वल्लभ की प्रभा
('प्रिय प्रवास') —*अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'*

➢ अहा, ग्राम्य जीवन भी क्या है,
क्यों न इसे सबका मन चाहे। —*मैथिली शरण गुप्त*

➢ खरीफ के खेतों में जब सुनसान है,
रब्बी के ऊपर किसान का ध्यान है। —*श्रीधर पाठक*

➢ विजन वन-प्रांत था, प्रकृति मुख शांत था,
अटन का समय था, रजनि का उदय था। —*श्रीधर पाठक*

➢ लख अपार-प्रसार गिरीन्द में।
ब्रज धराधिप के प्रिय-पुत्र का।
सकल लोग लगे कहने, उसे
रख लिया है उँगली पर श्याम ने।
(*'प्रियप्रवास'*) —*'हरिऔध'*

➢ संदेश नहीं मैं यहाँ स्वर्ग का लाया,
इस धरती को ही स्वर्ग बनाने आया।
(*'साकेत'*) —*मैथिली शरण गुप्त*

➢ 'मैथिली शरण गुप्त की प्रतिभा की सबसे बड़ी विशेषता है कालानुसरण की क्षमता अर्थात् उत्तरोत्तर बदलती हुई भावनाओं और काव्य प्रणालियों को ग्रहण करते चलने की शक्ति। इस दृष्टि से हिन्दी भाषी जनता के प्रतिनिधि कवि ये निस्संदेह कहे जा सकते हैं'। —*रामचन्द्र शुक्ल*

➢ मैं आया उनके हेतु कि जो शापित हैं,
जो विवश, बलहीन दीन शापित है
(*'साकेत' में राम की उक्ति*) —*मैथिलीशरण गुप्त*

➢ हम राज्य लिये मरते हैं —*मैथिलीशरण गुप्त*

द्विवेदीयुगीन रचना एवं रचनाकार

रचनाकार	द्विवेदीयुगीन रचना
नाथूराम शर्मा 'शंकर'	अनुराग रत्न, शंकर सरोज, गर्भरण्डा रहस्य, शंकर सर्वस्व
श्रीधर पाठक	वनाष्टक, काश्मीर सुषमा, देहरादून, भारत गीत, जार्ज वंदना (कविता), बाल विधवा (कविता)
महावीर प्रसाद द्विवेदी	काव्य मंजूषा, सुमन, कान्यकुब्ज अबला-विलाप
'हरिऔध'	प्रियप्रवास, पद्यप्रसून, चुभते चौपदे, चोखे चौपदे, बोलचाल, रसकलस, वैदेही वनवास
राय देवी प्रसाद 'पूर्ण'	स्वदेशी कुण्डल, मृत्युंजय, राम-रावण विरोध, वसन्त-वियोग
रामचरित उपाध्याय	राष्ट्र भारती, देवदूत, देवसभा, विचित्र विवाह, रामचरित-चिन्तामणि (प्रबंध)
गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'	कृषक-क्रन्दन, प्रेम प्रचीसी, राष्ट्रीय वीणा, त्रिशूल तरंग, करुणा कादंबिनी
मैथिली शरण गुप्त	रंग में भंग, जयद्रथ वध, भारत भारती, पंचवटी, झंकार, साकेत, यशोधरा, द्वापर, जय भारत, विष्णु प्रिया
रामनरेश त्रिपाठी	मिलन, पथिक, स्वप्न, मानसी
बाल मुकुन्द गुप्त	स्फुट कविता
लाला भगवानदीन 'दीन'	वीर क्षत्राणी, वीर बालक, वीर पंचरत्न, नवीन बीन
लोचन प्रसाद पाण्डेय	प्रवासी, मेवाड़ गाथा, महानदी, पद्य पुष्पांजलि
मुकुटधर पाण्डेय	पूजा फूल, कानन कुसुम

छायावाद युग (1918 ई०–1936 ई०)

➢ 'छायावाद' के वास्तविक अर्थ को लेकर विद्वानों में मतभेद है।

➢ छायावाद का अर्थ मुकुटधर पाण्डेय ने 'रहस्यवाद', सुशील कुमार ने 'अस्पष्टता', महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'अन्योक्ति पद्धति', रामचन्द्र शुक्ल ने 'शैली वैचित्र्य', नंद दुलारे बाजपेयी ने 'आध्यात्मिक छाया का भान', डॉ० नगेन्द्र ने 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह' बताया है।

➢ नामवर सिंह के शब्दों में, 'छायावाद शब्द का अर्थ चाहे जो हो परंतु व्यावहारिक दृष्टि से यह प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी की उन समस्त कविताओं का द्योतक है जो 1918 ई० से लेकर 1936 ई० (*'उच्छवास' से 'युगान्त'*) तक लिखी गई'।

➢ सामान्य तौर पर किसी कविता के भावों की छाया यदि कहीं अन्यत्र जाकर पड़े तो वह 'छायावादी कविता' है। उदाहरण के तौर पर पंत की निम्न पंक्तियाँ देखी जा सकती हैं जो कहा तो जा रहा है छाँह के बारे में लेकिन अर्थ निकल रहा है नारी स्वातंत्र्य संबंधी :

कहो कौन तुम दमयंती सी इस तरु के नीचे सोयी, अहा तुम्हें भी त्याग गया क्या अलि नल-सा निष्ठुर कोई।

➢ छायावाद युग की विशेषताएं : 1. आत्माभिव्यक्ति अर्थात 'मैं' शैली/उत्तम पुरुष शैली, 2. आत्म-विस्तार/सामाजिक रूढ़ियों से मुक्ति 3. प्रकृति प्रेम 4. नारी प्रेम एवं उसकी मुक्ति का स्वर 5. अज्ञात व असीम के प्रति जिज्ञासा (रहस्यवाद) 6. सांस्कृतिक चेतना व सामाजिक चेतना/मानवतावाद 7. स्वच्छंद कल्पना का नवोन्मेष 8. विविध काव्य-रूपों का प्रयोग 9. काव्य-भाषा—ललित-लवंगी कोमल कांत पदावली वाली भाषा 10. मुक्त छंद का प्रयोग 11. प्रकृति संबंधी बिम्बों की बहुलता 12. भारतीय अलंकारों के साथ-साथ अंग्रेजी साहित्य के मानवीकरण व विशेषण विपर्यय अलंकारों का विपुल प्रयोग।

➢ छायावाद के कवि चातुष्टय —*प्रसाद, निराला, पंत व महादेवी*

➢ छायावादी काव्य में प्रसाद ने यदि प्रकृति को मिलाया, निराला ने मुक्तक छन्द दिया, पंत ने शब्दों को खराद पर चढ़ाकर सुडौल और सरस बनाया, तो महादेवी ने उसमें प्राण डाले।

➢ छायावाद को हिन्दी साहित्य में भक्ति काव्य के बाद स्थान दिया जाता है।

➢ प्रसाद की प्रथम काव्य कृति —*उर्वशी (1909 ई०)*
प्रसाद की प्रथम छायावादी काव्य कृति —*झरना (1918 ई०)*
प्रसाद की अंतिम काव्य कृति
—*कामायनी (1937 ई०)—सर्वाधिक प्रसिद्ध काव्य कृति*

➢ कामायनी के पात्र —*मनु, श्रद्धा व इड़ा*

➢ पंत की प्रथम छायावादी काव्य कृति—*उच्छवास (1918 ई०)*
पंत की अंतिम छायावादी काव्य कृति —*गुंजन (1932 ई०)*

छायावाद युग में विविध काव्य रूपों का प्रयोग हुआ

मुक्तक काव्य	सर्वाधिक लोकप्रिय
गीति काव्य	'करुणालय' (प्रसाद), 'पंचवटी प्रसंग' (निराला), 'शिल्पी' व 'सौवर्ण रजत शिखर' (पंत)

प्रबंध काव्य	'कामायनी' व 'प्रेम पथिक' (प्रसाद), 'ग्रंथि', 'लोकायतन' व 'सत्यकाम' (पंत), 'तुलसीदास' (निराला)
लंबी कविता	'प्रलय की छाया' व 'शेर सिंह का शस्त्र समर्पण' (प्रसाद); 'सरोज स्मृति' व 'राम की शक्ति पूजा' (निराला); 'परिवर्तन' (पंत)

प्रसिद्ध पंक्तियाँ

➢ मैंने मैं शैली अपनाई
देखा एक दुःखी निज भाई। —*निराला*

➢ व्यर्थ हो गया जीवन
मैं रण में गया हार । *('वनवेला')* —*निराला*

➢ धन्ये, मैं पिता निरर्थक था
कुछ भी तेरे हित न कर सका।
जाना तो अर्थागमोपाय
पर रहा सदा संकुचित काय
लखकर अनर्थ आर्थिक पथ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ समर। *('सरोज स्मृति')* —*निराला*

➢ छोटे से घर की लघु सीमा में
बंधे है क्षुद्र भाव,
यह सच है प्रिय
प्रेम का पयोनिधि तो उमड़ता है
सदा ही निःसीम भू पर। *('पंचवटी प्रसंग')* —*निराला*

➢ ताल-ताल से रे सदियों के जकड़े हृदय कपाट
खोल दे कर-कर कठिन प्रहार
आए अभ्यन्तर संयत चरणों से नव्य विराट
करे दर्शन पाये आभार। —*निराला*

➢ हाँ सखि ! आओ बाँह खोलकर हम
लगकर गले जुड़ा ले प्राण
फिर तुम तम में, मैं प्रियतम में
हो जावें द्रुत अंतर्धान। —*पंत*

➢ बीती विभावरी जाग री !
अम्बर-पनघट में डूबो रही
तारा-घट-ऊषा-नागरी। —*प्रसाद*

➢ दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या सुंदरी परी-सी
धीरे-धीरे-धीरे। *('संध्या सुन्दरी')* —*निराला*

➢ छोड़ द्रुमों की मृदु छाया
तोड़ प्रकृति से भी माया
बाले तेरे बाल-जाल में
कैसे उलझा दूँ लोचन ? —*पंत*

➢ नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।
('कामायनी') —*प्रसाद*

➢ मैं नीर भरी दुःख की बदली। —*महादेवी*

➢ तुमको पीड़ा में ढूँढ़ा
तुमको ढूँढ़ेगी पीड़ा —*महादेवी*

➢ नील परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघ बीच गुलाबी रंग। *('कामायनी')* —*प्रसाद*

➢ तोड़ दो यह झितिज, मैं भी देख लूं उस ओर क्या है ?
जा रहे जिस पंथ से युग कल्प, उसका छोर क्या है ?
—*महादेवी*

➢ स्तब्ध ज्योत्सना में जब संसार
चकित रहता शिशु सा नादान,
विश्व के पलकों पर सुकुमार
विचरते हैं स्वप्न अजान !
न जाने, नक्षत्रों से कौन ?
निमंत्रण देता मुझको मौन !! *('मौन निमंत्रण')* —*पंत*

➢ ले चल वहाँ भुलावा देकर
मेरे नाविक ! धीर-धीरे।
जिस निर्जन में सागर लहरी
अम्बर के कानों में गहरी
निश्छल प्रेम कथा कहती हो
तज कोलाहल की अवनी रे। *('लहर')* —*प्रसाद*

➢ हिमालय के आंगन में जिसे प्रथम किरणों का दे उपहार
—*प्रसाद*

➢ राजनीति का प्रश्न नहीं रे आज
जगत के सम्मुख एक वृहत सांस्कृतिक समस्या जग के निकट
उपस्थित —*पंत*

➢ छोड़ो मत ये सुख का कण है। —*प्रसाद*

➢ आह ! वेदना मिली विदाई। *('स्कंदगुप्त')* —*प्रसाद*

➢ जिए तो सदा उसी के लिए यही अभिमान रहे यह हर्ष
निछावर कर दे हम सर्वस्व हमारा प्यारा भारतवर्ष।
('स्कंदगुप्त') —*प्रसाद*

➢ अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान झितिज को मिलता एक सहारा।
('चन्द्रगुप्त') —*प्रसाद*

➢ हिमाद्रि तुंग शृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला
स्वतंत्रता पुकारती
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पथ है—बढ़े चलो, बढ़े चलो। *('चन्द्रगुप्त')*
—*प्रसाद*

➢ भारत माता ग्रामवासिनी। —*पंत*

➢ भारति जय विजय करे। —*निराला*

➢ शेरो की माँद में
आया है आज स्यार
जागो फिर एक बार। —*निराला*

➢ वह आता
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता। —*निराला*

➢ वह तोड़ती पत्थर।
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर। —*निराला*

➢ वियोगी होगा पहला कवि आह से उपजा होगा गान।
उमड़ कर आँखों से चुपचाप बही होगी कविता अनजान॥
—*पंत*

➤ विजन-वन-वल्लरी पर
सोती थी सुहाग भरी
स्नेह-स्वप्न-मग्न-अमल-कोमल तन तरुणी
जूही की कली
दृग बंद किए, शिथिल पत्रांक में। *('जूही की कली')*
—निराला

➤ खुल गये छंद के बंध
प्रास के रजत पाश। *—पंत*

➤ मुक्त छंद
सहज प्रकाशन वह मन का
निज भावों का प्रकट अकृत्रिम चित्र। *—निराला*

➤ तुमुल कोलाहल में
मैं हृदय की बात रे मन। *('कामायनी')* *—प्रसाद*

➤ प्रथम रश्मि का आना रंगिणि! तूने कैसे पहचाना ? *—पंत*

➤ जो घनीभूत पीड़ा थी
मस्तक में स्मृति-सी छाई,
दुर्दिन में आँसू बनकर
वह आज बरसने आई। *('आँसू')* *—प्रसाद*

➤ बाँधो न नाव इस ठाँव, बंधु!
पूछेगा सारा गाँव, बंधु! *—निराला*

➤ हाय! मृत्यु का ऐसा अमर अपार्थिव पूजन।
जब विषण्ण निर्जीव पड़ा हो जग का जीवन।
(ताज —'युगांत') *—पंत*

➤ 'प्रसाद पढाने योग्य है, निराला पढे जाने योग्य है और पंतजी से काव्यभाषा सीखने योग्य है'। *—अज्ञेय*

➤ 'छायावादी कविता का गौरव अक्षय है उसकी समृद्धि की समता केवल भक्ति काव्य ही कर सकता है'।*—डॉ० नगेन्द्र*

➤ 'निराला से बढकर स्वच्छंदतावादी कवि हिन्दी में नहीं है'।
—हजारी प्रसाद द्विवेदी

➤ 'मैं मजदूर हूँ, मजदूरी किए बिना मुझे भोजन करने का अधिकार नहीं'। *—प्रेमचंद*

➤ 'यदि प्रबंध काव्य एक विस्तृत वनस्थली है तो मुक्तक चुना हुआ गुलदस्ता'। *—रामचन्द्र शुक्ल*

➤ अधिकार सुख कितना मादक और सारहीन है *('स्कंदगुप्त')*
—प्रसाद

➤ स्नेह निर्झर बह गया है *— निराला*

➤ ओ वरुणा की शांत कछार *— प्रसाद*

➤ सजनि मधुर निजत्व दे कैसे मिलू अभिमानिनी मैं
—महादेवी वर्मा

➤ प्रिय के हाथ लगाए जागी, ऐसी मैं सो गई अभागी *—निराला*

➤ अधरों में राग अमंद पिये, अलकों में मलयज बंद किये
तू अब तक सोई है आली, आँखों में भरे विहाग री *— प्रसाद*

➤ कहो तुम रूपसि कौन, व्योम से उतर रही चुपचाप *— पंत*

➤ शैया सैकत पर दुग्ध धवल तन्वंगी गंगा ग्रीष्म विकल *— पंत*

➤ 'साहित्य, राजनीति के पीछे चलनेवाली सच्चाई नहीं, बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलनेवाली सच्चाई है'।
— प्रेमचंद (प्रगतिशील लेखक संघ के अध्यक्ष पद से बोलते हुए, 1936)

छायावादयुगीन रचना एवं रचनाकार

(A) छायावादी काव्य धारा	रचनाकार
उर्वशी, वनमिलन, प्रेमराज्य, अयोध्या का उद्धार, शोकोच्छवास, बभ्रूवाहन, कानन कुसुम, प्रेम पथिक, करुणालय, महाराणा का महत्व; झरना, आँसू, लहर, कामायनी *(केवल झरना से लेकर कामायनी तक छायावादी कविता है)*	जयशंकर प्रसाद
अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, सरोज स्मृति *(कविता)*, राम की शक्ति पूजा *(कविता)*	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
उच्छ्वास, ग्रन्थि, वीणा, पल्लव, गुंजन *(छायावादयुगीन)*; युगान्त, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्ण किरण, स्वर्ण धूलि, रजतशिखर, उत्तरा, वाणी, पतझर, स्वर्ण काव्य, लोकायतन	सुमित्रानंदन पंत
नीहार, रश्मि, नीरजा व सांध्य गीत *(सभी का संकलन 'यामा' नाम से)*	महादेवी वर्मा
रूपराशि, निशीथ, चित्ररेखा, आकाशगंगा	राम कुमार वर्मा
राका, मानसी, विसर्जन, युगदीप, अमृत और विष	उदय शंकर भट्ट
निर्माल्य, एकतारा, कल्पना	'वियोगी'
अन्तर्जगत	लक्ष्मी नारायण मिश्र
अनुभूति, अन्तर्ध्वनि	जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज'
(B) राष्ट्रवादी सांस्कृतिक काव्य धारा	
कैदी और कोकिला, हिमकिरीटिनी, हिम तरंगिनी, पुष्प की अभिलाषा *(क०)*	माखन लाल चतुर्वेदी
मौर्य विजय, अनाथ, दूर्वादल, विषाद, आर्द्रा, पाथेय, मृण्मयी, बापू, दैनिकी	सिया राम शरण गुप्त
त्रिधारा, मुकुल, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी *(क०)*, वीरों का कैसा हो वसंत *(क०)*	सुभद्रा कुमारी चौहान

छायावादोत्तर युग (1936 ई. के बाद)

छायावादोत्तर युग में हिन्दी काव्यधारा बहुमुखी हो जाती है—

(A) पुरानी काव्यधारा	
राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा	सियाराम शरण गुप्त, माखन लाल चतुर्वेदी, दिनकर, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सोहन लाल द्विवेदी, श्याम नारायण पाण्डेय आदि।
उत्तर-छायावादी काव्यधारा	निराला, पंत, महादेवी, जानकी वल्लभ शास्त्री आदि।
(B) नवीन काव्यधारा	
वैयक्तिक गीति कविता धारा *(प्रेम और मस्ती की काव्य धारा)*	बच्चन, नरेंद्र शर्मा, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', भगवती चरण वर्मा, नेपाली, आरसी प्रसाद सिंह आदि।
प्रगतिवादी काव्यधारा	केदारनाथ अग्रवाल, राम विलास शर्मा, नागार्जुन, रांगेय राघव, शिवमंगल सिंह 'सुमन', त्रिलोचन आदि।
प्रयोगवादी काव्य धारा	अज्ञेय, गिरिजा कुमार माथुर, मुक्तिबोध, भवानी प्रसाद मिश्र, शमशेर बहादुर सिंह, धर्मवीर भारती आदि।
नयी कविता काव्य धारा	

प्रगतिवाद (1936 ई०से...)

➤ संगठित रूप में हिन्दी में प्रगतिवाद का आरंभ 'प्रगतिशील लेखक संघ' द्वारा 1936 ई० में लखनऊ में आयोजित उस अधिवेशन से होता है जिसकी अध्यक्षता प्रेमचंद ने की थी। इसमें उन्होंने कहा था, 'साहित्य का उद्देश्य दबे-कुचले हुए वर्ग की मुक्ति का होना चाहिए'।

➢ 1935 ई० में इ० एम० फोस्टर ने प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन नामक एक संस्था की नींव पेरिस में रखी थी। इसी की देखा-देखी सज्जाद जहीर और मुल्क राज आनंद ने भारत में 1936 ई० में 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना की।

➢ एक साहित्यिक आंदोलन के रूप में प्रगतिवाद का इतिहास मोटे तौर पर 1936 ई० से लेकर 1956 ई० तक का इतिहास है, जिसके प्रमुख कवि हैं—केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, राम विलास शर्मा, रांगेय राघव, शिव मंगल सिंह 'सुमन', त्रिलोचन आदि।

➢ किन्तु व्यापक अर्थ में प्रगतिवाद न तो स्थिर मतवाद है और न ही स्थिर काव्य रूप बल्कि यह निरंतर विकासशील साहित्य धारा है। प्रगतिवाद के विकास में अपना योगदान देनेवाले परवर्ती कवियों में केदारनाथ सिंह, धूमिल, कुमार विमल, अरूण कमल, राजेश जोशी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

➢ प्रगतिवादी काव्य का मूलाधार मार्क्सवादी दर्शन है पर यह मार्क्सवाद का साहित्यिक रूपांतर मात्र नहीं है। प्रगतिवादी आंदोलन की पहचान जीवन और जगत के प्रति नये दृष्टिकोण में निहित है।

➢ यह नया दृष्टिकोण था : पुराने रूढ़िबद्ध जीवन-मूल्यों का त्याग; आध्यात्मिक व रहस्यात्मक अवधारणाओं के स्थान पर लोक आधारित अवधारणाओं को मानना; हर तरह के शोषण और दमन का विरोध; धर्म, लिंग, नस्ल, भाषा, क्षेत्र पर आधृत गैर-बराबरी का विरोध; स्वतंत्रता, समानता तथा लोकतंत्र में विश्वास; परिवर्तन व प्रगति में विश्वास; मेहनतकश लोगों के प्रति गहरी सहानुभूति; नारी पर हर तरह के अत्याचार का विरोध; साहित्य का लक्ष्य सामाजिकता में मानना आदि।

➢ प्रगतिवाद वैसी साहित्यिक प्रवृत्ति है जिसमें एक प्रकार की इतिहास चेतना, सामाजिक यथार्थ दृष्टि, वर्ग चेतन विचारधारा, प्रतिबद्धता या पक्षधरता, गहरी जीवनासक्ति, परिवर्तन के लिए सजगता और एक प्रकार की भविष्योन्मुखी दृष्टि मौजूद हो।

➢ प्रगतिवादी काव्य एक सीधी-सहज-तेज-प्रखर, कभी व्यंग्यपूर्ण आक्रामक काव्य-शैली का वाचक है।

➢ प्रगतिवाद साहित्य को सोद्देश्य मानता है और उसका उद्देश्य है 'जनता के लिए जनता का चित्रण' करना। दूसरे शब्दों में, वह कला 'कला के लिए' के सिद्धांत में यकीन नहीं करता बल्कि उसका यकीन तो 'कला जीवन के लिए' के फलसफे में है। मतलब कि प्रगतिवाद आनंदवादी मूल्यों के बजाय भौतिक उपयोगितावादी मूल्यों में विश्वास करता है।

➢ राजनीति में जो स्थान 'समाजवाद' का है वही स्थान साहित्य में 'प्रगतिवाद' का है।

➢ प्रगतिवादी काव्य की विशेषताएं : 1. समाजवादी यथार्थवाद/सामाजिक यथार्थ का चित्रण, 2. प्रकृति के प्रति लगाव 3. नारी प्रेम 4. राष्ट्रीयता 5. सांप्रदायिकता का विरोध 6. बोधगम्य भाषा (जनता की भाषा में जनता की बातें) व व्यंग्यात्मकता 7. मुक्त छंद का प्रयोग (मुक्त छंद का आधार कजरी, लावनी, ठुमरी जैसे लोक गीत) 8. मुक्तक काव्य रूप का प्रयोग।

➢ छायावाद व प्रगतिवाद में अंतर

(i) छायावाद में कविता करने का उद्देश्य 'स्वान्तः सुखाय' है जबकि प्रगतिवाद में 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' है।

(ii) छायावाद में वैयक्तिक भावना प्रबल है जबकि प्रगतिवाद में सामाजिक भावना।

(iii) छायावाद में अतिशय कल्पनाशीलता है जबकि प्रगतिवाद में ठोस यथार्थ।

प्रसिद्ध पंक्तियाँ

➢ मार हथौड़ा कर-कर चोट
लाल हुए काले लोहे को
जैसा चाहे वैसा मोड़। —*केदारनाथ अग्रवाल*

➢ घुन खाए शहतीरों पर की बारहखड़ी विधाता बाँचे
फटी भीत है, छत चूती है, आले पर विसतुइया नाचे
बरसाकर बेबस बच्चों पर मिनट-मिनट में पाँच तमाचे
दुखरन मास्टर गढ़ते रहते किसी तरह आदम के साँचे।
—*नागार्जुन*

➢ बापू के भी ताऊ निकले
तीनों बंदर बापू के
सरल सूत्र उलझाऊ निकले
तीनों बंदर बापू के। —*नागार्जुन*

➢ काटो-काटो-काटो करवी
साइत और कुसाइत क्या है ?
मारो-मारो-मारो हंसिया
हिंसा और अहिंसा क्या है ?
जीवन से बढ़ हिंसा क्या है। —*केदार नाथ अग्रवाल*

➢ भारत माता ग्रामवासिनी। —*पंत*

➢ एक बीते के बराबर
यह हरा ठिंगना चना
बाँधे मुरैठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल
सजकर खड़ा है। —*केदार नाथ अग्रवाल*

➢ हवा हूँ, हवा हूँ
मैं वसंती हवा हूँ। —*केदार नाथ अग्रवाल*

➢ तेज धार का कर्मठ पानी
चट्टानों के ऊपर चढ़कर
मार रहा है घूंसे कसकर
तोड़ रहा है तट चट्टानी। —*केदार नाथ अग्रवाल*

➢ मुझे जगत जीवन का प्रेमी
बना रहा है प्यार तुम्हारा। —*त्रिलोचन*

➢ खेत हमारे, भूमि हमारी
सारा देश हमारा है
इसलिए तो हमको इसका
चप्पा-चप्पा प्यारा है। —*नागार्जुन*

➢ झुका यूनियन जैक
तिरंगा फिर ऊँचा लहराया
बांध तोड़ कर देखो कैसे
जन समूह लहराया। —*राम विलास शर्मा*

➢ जाने कब तक घाव भरेंगे इस घायल मानवता के
जाने कब तक सच्चे होंगे सपने सबकी समता के।
—*नरेंद्र शर्मा*

➢ मांझी न बजाओ वंशी मेरा मन डोलता
मेरा मन डोलता है जैसे जल डोलता
जल का जहाज जैसे हल-हल डोलता।—*केदार नाथ अग्रवाल*

प्रयोगवाद (1943 ई० से...)

➢ यों तो प्रयोग हरेक युग में होते आये हैं, किन्तु 'प्रयोगवाद' नाम उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया है जो कुछ नये बोधों, संवेदनाओं तथा उन्हें प्रेषित करनेवाले शिल्पगत चमत्कारों को लेकर शुरू-शुरू में 'तार सप्तक' के माध्यम से वर्ष 1943 ई० में प्रकाशन जगत में आई और जो प्रगतिशील कविताओं के साथ विकसित होती गयी तथा जिनका पर्यावसान 'नयी कविता' में हो गया।

➢ इस तरह की कविताओं को सबसे पहले नंद दुलारे बाजपेयी ने 'प्रयोगवादी कविता' कहा।

➢ प्रगतिवाद की प्रतिक्रिया में उभरे और 1943 ई० के बाद की अज्ञेय, गिरिजा कुमार माथुर, मुक्तिबोध, नेमिचंद जैन, भारत भूषण अग्रवाल, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती आदि तथा नकेनवादियों —नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार व नरेश—की कविताएँ प्रयोगवादी कविताएँ हैं। प्रयोगवाद के अगुआ कवि अज्ञेय को 'प्रयोगवाद का प्रवर्तक' कहा जाता है।

➢ चूँकि नकेनवादियों ने अपने काव्य को 'प्रयोग पद्य' यानी 'प्रपद्य' कहा है, इसलिए नकेनवाद को 'प्रपद्यवाद' भी कहा जाता है।

➢ चूँकि प्रयोगवाद का उदय प्रगतिवाद की प्रतिक्रिया में हुआ इसलिए यह स्वाभाविक था कि प्रयोगवाद समाज की तुलना में व्यक्ति को, विचार धारा की तुलना में अनुभव को, विषय वस्तु की तुलना में कलात्मकता को महत्व देता। मतलब कि प्रयोगवाद भाव में व्यक्ति-सत्य तथा शिल्प में रूपवाद का पक्षधर है।

➢ प्रयोगवाद की विशेषताएँ : 1. अनुभूति व यथार्थ का संश्लेषण/बौद्धिकता का आग्रह 2. वाद या विचार धारा का विरोध 3. निरंतर प्रयोगशीलता 4. नई राहों का अन्वेषण 5. साहस और जोखिम 6. व्यक्तिवाद 7. काम संवेदना की अभिव्यक्ति 8. शिल्पगत प्रयोग 9. भाषा-शैलीगत प्रयोग।

➢ शिल्प के प्रति आग्रह देखकर ही इन्हें आलोचकों ने रूपवादी (Formist) तथा इनकी कविताओं को 'रूपाकाराग्रही कविता' कहा।

➢ प्रगतिवाद ने जहाँ शोषित वर्ग/निम्न वर्ग के जीवन को अपनी कविता के केन्द्र में रखा था जो उनके लिए अनजीया, अनभोगा था वहाँ मध्यवर्गीय प्रयोगवादी कवियों ने उस यथार्थ का चित्रण किया जो स्वयं उनका जीया हुआ, भोगा हुआ था। इसी कारण उनकी कविता में विस्तार कम है लेकिन गहराई अधिक।

प्रसिद्ध पंक्तियाँ

➢ फूल को प्यार करो
पर झरे तो झर जाने दो
जीवन का रस लो
देह, मन, आत्मा की रसना से
पर मरे तो मर जाने दो। —*अज्ञेय*

➢ नहीं,
सांझ
एक असभ्य आदमी की जम्हाई है,...
नहीं,
सांझ
एक शरीर लड़की है,...
नहीं,
सांझ
एक रद्दी स्याहसोख है —*केसरी कुसार*

➢ कन्हाई ने प्यार किया
कितनी गोपियों को कितनी बार
पर उड़ेलते रहे अपना सदा एक रूप पर
जिसे कभी पाया नहीं
जो किसी रूप में समाया नहीं
यदि किसी प्रेयसी में उसे पा लिया होता
तो फिर दूसरे को प्यार क्यों करता। —*अज्ञेय*

➢ किन्तु हम है द्वीप
हम धारा नहीं हैं
स्थिर समर्पण है हमारा
द्वीप हैं हम। —*अज्ञेय*

➢ उड़ चल हारिल, लिये हाथ में
यही अकेला ओछा तिनका
उषा जाग उठी प्राची में
कैसी बाट, भरोसा किनका! —*अज्ञेय*

➢ ये उपमान मैले हो गये हैं
देवता इन प्रतीकों से कर गये हैं कूच
कभी बासन अधिक घिसने से मुलम्मा छूट जाता है —*अज्ञेय*

➢ 'प्रयोगवाद' हिन्दी में बैठे-ठाले का धंधा बनकर आया था। प्रयोक्ताओं के पास न तो काव्य संबंधी कोई कौशल था और न किसी प्रकार की कथनीय वस्तु थी।
('नया साहित्य : नये प्रश्न') —*नंददुलारे वाजपेयी*

नयी कविता (1951 ई० से...)

➢ यों तो 'नयी कविता' के प्रारंभ को लेकर विद्वानों में विवाद है, लेकिन 'दूसरे सप्तक' के प्रकाशन वर्ष 1951 ई०से 'नयी कविता' का प्रारंभ मानना समीचीन है। इस सप्तक के प्रायः कवियों ने अपने वक्तव्यों में अपनी कविता को नयी कविता की संज्ञा दी है।

➢ जिस तरह प्रयोगवादी काव्यांदोलन को शुरू करने का श्रेय अज्ञेय की पत्रिका 'प्रतीक' को प्राप्त है उसी तरह नयी कविता आंदोलन को शुरू करने का श्रेय *जगदीश प्रसाद गुप्त* के संपादकत्व में निकलनेवाली पत्रिका 'नयी कविता' को जाता है।

➢ 'नयी कविता' भारतीय स्वतंत्रता के बाद लिखी गयी उन कविताओं को कहा जाता है, जिनमें परम्परागत कविता से आगे नये भाव बोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नये मूल्यों और नये शिल्प विधान का अन्वेषण किया गया।

➢ *अज्ञेय* को 'नयी कविता का भारतेन्दु' कह सकते हैं क्योंकि जिस प्रकार भारतेन्दु ने जो लिखा सो लिखा ही, साथ ही उन्होंने समकालीनों को इस दिशा में प्रेरित किया उसी प्रकार अज्ञेय ने भी स्वयं पृथुल साहित्य सृजन किया तथा औरों को प्रेरित-प्रोत्साहित किया।

➢ आम तौर पर 'दूसरा सप्तक' और 'तीसरा सप्तक' के कवियों को नयी कविता के कवियों में शामिल किया जाता है। 'दूसरा सप्तक' के कविगण : *रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, शमशेर बहादुर सिंह, भवानी प्रसाद मिश्र, शकुंतला माथुर* व *हरि नारायण व्यास*। 'तीसरा सप्तक' के कविगण : *कीर्ति चौधरी, प्रयाग नारायण त्रिपाठी, केदार नाथ सिंह, कुँवर नारायण, विजयदेव नारायण साही, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना* व *मदन वात्स्यायन*। अन्य कवि : *श्रीकांत वर्मा, दुष्यंत कुमार, मलयज, सुरेंद्र तिवारी, धूमिल, लक्ष्मीकांत वर्मा, अशोक बाजपेयी, चंद्रकांत देवताले* आदि।

➢ नयी कविता आंदोलन में एक साथ भिन्न-भिन्न वाद/दर्शन से जुड़े रचनाकार शामिल हुए। यदि *अज्ञेय* आधुनिक भावबोध वादी-अस्तित्ववादी या व्यक्तिवादी हैं तो *मुक्तिबोध, केदार नाथ सिंह* आदि मार्क्सवादी/समाजवादी; *भवानी प्रसाद मिश्र* यदि गाँधीवादी हैं तो *रघुवीर सहाय, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना* आदि लोहियावादी-समाजवादी और *धर्मवीर भारती* की रुचि सिर्फ देहवाद में है।

➢ नयी कविता के रचनाकारों पर दो वाद या विचारधाराओं अस्तित्ववाद व आधुनिकतावाद का प्रभाव विशेष रूप से पड़ा। 'अस्तित्ववाद' एक आधुनिक दर्शन है जिसमें यह विश्वास किया जाता है कि मनुष्य के अनुभव महत्वपूर्ण होते हैं और प्रत्येक कार्य के लिए वह खुद उत्तरदायी होता है। वैयक्तिकता, आत्मसम्बद्धता, स्वतंत्रता, अजनबियत, संवेदना, मृत्यु, त्रास, ऊब आदि इसके मुख्य तत्व हैं। 'आधुनिकतावाद' का संबंध पूँजीवादी विकास से है। पूँजीवादी विकास के साथ उभरे नये जीवन-मूल्यों एवं नयी जीवन पद्धति को आधुनिकतावाद की संज्ञा दी जाती है। इतिहास और परम्परा से विच्छेद, गहन स्वात्म चेतना, तटस्थता और अप्रतिबद्धता, व्यक्ति स्वातंत्र्य, अपने-आप में बंद दुनिया आदि इसके मुख्य तत्व हैं।

➢ नयी कविता की विशेषताएं : 1. कथ्य की व्यापकता, 2. अनुभूति की प्रामाणिकता 3. लघुमानववाद, क्षणवाद तथा तनाव व द्वन्द्व 4. मूल्यों की परीक्षा (वैयक्तिकता का एक मूल्य के रूप में स्थापना, निरर्थकता बोध, विसंगति बोध, पीड़ावाद; सामाजिकता) 5. लोक-सम्पृक्ति 6. काव्य संरचना (दो तरह की कविताएं : छोटी कविताएं—प्रगीतात्मक, लंबी कविताएं—नाटकीय, क्रिस्टलीय संरचना, छंदमुक्त कविता, फैंटेसी/स्वप्न कथा का भरपूर प्रयोग) 7. काव्य-भाषा—बातचीत की भाषा, शब्दों पर जोर 8. नये उपमान, नये प्रतीक, नये बिम्बों का प्रयोग।

➢ यदि छायावादी कविता का नायक 'महामानव' था, प्रगतिवादी कविता का नायक 'शोषित मानव' तो नयी कविता का नायक है 'लघुमानव'।

➢ 1959 ई० का साल ऐतिहासिक दृष्टि से नयी कविता के विकास का प्रायः चरम बिन्दु था। इस बिन्दु से एक रास्ता नयी कविता की रूढ़ियों की ओर जाता था जिसमें बिम्ब आदि विज्ञापित नुस्खों का अंधानुकरण किया जाता या फिर दूसरा रास्ता सच्चे सृजन का था जो बिम्बवादी प्रवृत्ति को तोड़ता। नये कवियों ने दूसरा रास्ता अपनाया। फलतः धीरे-धीरे काव्य सृजन बिम्ब के दायरे से निकलकर सीधे सपाट कथन की ओर अभिमुख हुआ, जिसे अशोक वाजपेयी 'सपाट बयानी' की संज्ञा देते हैं।

प्रसिद्ध पंक्तियाँ

➢ हम तो 'सारा-का-सारा' लेंगे जीवन
'कम-से-कम' वाली बात न हमसे कहिए। —*रघुवीर सहाय*

➢ मौन भी अभिव्यंजना है
जितना तुम्हारा सच है, उतना ही कहो
तुम व्याप नहीं सकते
तुममें जो व्यापा है उसे ही निबाहो। —*अज्ञेय*

➢ जी हाँ, हुजूर, मैं गीत बेचता हूँ।
मैं तरह-तरह के गीत बेचता हूँ
मैं किसिम-किसिम के
गीत बेचता हूँ। (*'गीतफरोश'*) —*भवानी प्रसाद मिश्र*

➢ हम सब बौने हैं, मन से, मस्तिष्क से
भावना से, चेतना से भी बुद्धि से, विवेक से भी
क्योंकि हम जन हैं
साधारण हैं
हम नहीं विशिष्ट। —*गिरिजा कुमार माथुर*

➢ मैं प्रस्तुत हूँ
यह क्षण भी कहीं न खो जाय
अभिमान नाम का, पद का भी तो होता है। —*कीर्ति चौधरी*

➢ कुछ होगा, कुछ होगा अगर मैं बोलूंगा
न टूटे, न टूटे तिलिस्म सत्ता का
मेरे अंदर एक कायर टूटेगा, टूट्! —*रघुवीर सहाय*

➢ जो कुछ है, उससे बेहतर चाहिए
पूरी दुनिया साफ करने के लिए एक मेहतर चाहिए
जो मैं हो नहीं सकता। —*मुक्तिबोध*

➢ भागता मैं दम छोड़
घूम गया कई मोड़ । (*'अंधेरे में'*) —*मुक्तिबोध*

➢ दुखों के दागों को तमगों सा पहना
(*'अंधेरे में'*) —*मुक्तिबोध*

➢ कहीं आग लग गयी, कहीं गोली चल गयी।
(*'अंधेरे में'*) —*मुक्तिबोध*

➢ मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ
लेकिन मुझे फेंक मत
इतिहासों की सामूहिक गति
सहसा झूठी पड़ जाने पर क्या जाने
सच्चाई टूटे हुए पहिये का आश्रय ले।
(*'टूटा पहिया'*) —*धर्मवीर भारती*

➢ जिंदगी, दो उंगलियों में दबी
सस्ती सिगरेट के जलते हुए टुकड़े की तरह है
जिसे कुछ लम्हों में पीकर
गली में फेंक दूँगा। —*नरेश मेहता*

➢ मैं यह तुम्हारा अश्वत्थामा हूँ
शेष हूँ अभी तक
जैसे रोगी मुर्दे के मुख में शेष रहता है
गंदा कफ बासी पीप के रूप में
शेष अभी तक मैं। (*'अंधा युग'*) —*धर्मवीर भारती*

➢ दुःख सबको मांजता है और
चाहे स्वयं सबको मुक्ति देना वह न जाने, किन्तु
जिनको माँजता है
उन्हें यह सीख देता है सबको मुक्त रखे। —*अज्ञेय*

➤ अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे
उठाने ही होंगे
तोड़ने होंगे ही मठ और गढ़ सब। *('अंधेरे में')*—मुक्तिबोध

➤ साँप !
तुम सभ्य हुए तो नहीं
नगर में बसना भी तुम्हें नहीं आया।
एक बात पूछूँ (उत्तर दोगे ?)
तब कैसे सीखा डँसना
विष कहाँ पाया ? —अज्ञेय

➤ पर सच तो यह है
कि यहाँ या कहीं भी फर्क नहीं पड़ता।
तुमने जहाँ लिखा है 'प्यार'
वहाँ लिख दो 'सड़क'
फर्क नहीं पड़ता।
मेरे युग का मुहावरा है :
'फर्क नहीं पड़ता'। —केदार नाथ सिंह

➤ मैं मरूँगा सुखी
मैंने जीवन की धज्जियाँ उड़ाई हैं —अज्ञेय

छायावादोत्तर युगीन

प्रसिद्ध पंक्तियाँ (विविध) :

➤ श्वानो को मिलता दूध वस्त्र
भूखे बालक अकुलाते हैं —दिनकर

➤ लेकिन होता भूडोल, बवंडर उठते हैं,
जनता जब कोपाकुल हो भृकुटि चढ़ाती है;
दो राह, समय के रथ का घर्घर नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है। —दिनकर

➤ कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाए
एक हिलोर इधर से आये, एक हिलोर उधर से आए।
—बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

➤ एक आदमी रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है, जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूँ .... 'यह तीसरा आदमी कौन है ?'
मेरे देश की संसद मौन है। *(रोटी और संसद)* —धूमिल

➤ क्या आज़ादी सिर्फ तीन थके हुए रंगों का नाम है
जिन्हें एक पहिया ढोता है
या इसका कोई खास मतलब होता है ?
(बीस साल बाद— 'संसद से सड़क तक') —धूमिल

➤ बाबूजी ! सच कहूँ— मेरी निगाह में
न कोई छोटा है
न कोई बड़ा है
मेरे लिए, हर आदमी एक जोड़ी जूता है
जो मेरे सामने
मरम्मत के लिए खड़ा है
(मोचीराम— 'संसद से सड़क तक') —धूमिल

➤ मेरे देश का समाजवाद
मालगोदाम में लटकती हुई
उन बाल्टियों की तरह है जिस पर 'आग' लिखा है
और उनमें बालू और पानी भरा है।
(पटकथा— 'संसद से सड़क तक') —धूमिल

➤ अपने यहाँ संसद—
तेल की वह घानी है
जिसमें आधा तेल है
और आधा पानी है
(पटकथा— 'संसद से सड़क तक') —धूमिल

➤ अपना क्या है इस जीवन में
सब तो लिया उधार
सारा लोहा उन लोगों का
अपनी केवल धार *('अपनी केवल धार')* —अरुण कमल

छायावादोत्तर युगीन रचना एवं रचनाकार

रचनाकार	छायावादोत्तर युगीन रचना
रामधारी सिंह 'दिनकर'	हुंकार, रेणुका, द्वंद्वगीत, कुरुक्षेत्र, इतिहास के आँसू, रश्मिरथी, धूप और धुआँ, दिल्ली, रसवंती, उर्वशी
बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	कुंकुम, उर्मिला, अपलक, रश्मिरेखा, क्वासि,हम विषपायी जनम के
हरिवंशराय 'बच्चन'	मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, सूत की माला,निशा-निमंत्रण, एकांत संगीत, सतरंगिनी, मिलन-यामिनी, आरती और अंगारे, आकुल अंतर
सुमित्रा नंदन पंत	शिल्पी, अतिमा, कला और बूढ़ा चाँद, लोकायतन, सत्यकाम
जानकी वल्लभ शास्त्री	मेघगीत, अवंतिका
नरेंद्र शर्मा	प्रभातफेरी, प्रवासी के गीत, पलाश वन, मिट्टी और फूल, कदलीवन
रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'	मधूलिका, अपराजिता, किरणबेला, लाल चूनर
आरसी प्रसाद सिंह	कलापी, पांचजन्य
केदारनाथ सिंह	नींद के बादल, फूल नहीं रंग बोलते हैं, अपूर्व, युग की गंगा
नागार्जुन	प्यासी पथराई आँखें, युगधारा, भस्मांकुर, सतरंगे पंखों वाली; ऐसे भी हम क्या, ऐसे भी तुम क्या; खिचड़ी विप्लव देखा हमने, हजार-हजार बाँहों वाली, पुरानी जूतियों का कोरस, रत्न नगर्भ, हरिजन गाथा *(क.)*
रांगेय राघव	राह का दीपक, अजेय खँडहर, पिघलते पत्थर, मेधावी, पांचाली
गिरिजाकुमार माथुर	मंजीर, कल्पांतर, शिलापंख चमकीले, नाश और निर्माण, मशीन का पुर्जा, धूप के धान, मैं वक्त के हूँ सामने, छाया मत छूना मन
गजानन माधव 'मुक्तिबोध'	भूरी-भूरी खाक धूल, चाँद का मुँह टेढ़ा है
भवानीप्रसाद मिश्र	सतपुड़ा के जंगल, गीतफरोश, खुशबू के शिलालेख, बुनी हुई रस्सी, कालजयी, गांधी पंचशती, कमल के फूल, इदं न मम, चकित है दुःख, वाणी की दीनता
सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'	भग्नदूत, चिंता, इत्यलम्, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, इंद्रधनुष रौंदे हुए ये, अरी ओ करुणा प्रभामय, आँगन के पार द्वार, कितनी नावों में कितनी बार, क्योंकि मैं उसे जानता हूँ, सागर-मुद्रा, पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ, महावृक्ष के नीचे, नदी की बाँक पर छाया, प्रिजन डेज एंड अदर पोएम्स *(अंग्रेजी में)*, असाध्य वीणा, रूपाम्बरा
धर्मवीर भारती	अंधायुग, कनुप्रिया, ठंडा लोहा, सात गीत वर्ष

रचनाकार	छायावादोत्तर युगीन रचना
शमशेर बहादुर सिंह	अमन का राग, चुका भी नहीं हूँ मैं, इतने पास अपने
कुँवर नारायण	परिवेश, हम तुम, चक्रव्यूह, आत्मजयी, आमने-सामने
नरेश मेहता	संशय की एक रात, वनपाखी सुनो, मेरा समर्पित एकांत, बोलने दो चीड़ को
त्रिलोचन	मिट्टी की बारात, धरती, गुलाब और बुलबुल, दिगंत, ताप के ताये हुए दिन, सात शब्द, उस जनपद का कवि हूँ
भारत भूषण अग्रवाल	कागज के फूल, जागते रहो, मुक्तिमार्ग, ओ अप्रस्तुत मन, उतना वह सूरज है
दुष्यंत कुमार	साये में धूप, सूर्य का स्वागत, एक कंठ विषपायी, आवाज के घेरे
प्रभाकर माचवे	जहाँ शब्द हैं, तेल की पकौड़ियाँ, स्वप्नभंग, अनुक्षण, मेपल
रघुवीर सहाय	सीढ़ियों पर धूप में, आत्महत्या के विरुद्ध, लोग भूल गए हैं, मेरा प्रतिनिधि, हँसो-हँसो जल्दी हँसो
शंभूनाथ सिंह	मन्वंतर, खण्डित सेतु
शिवमंगल सिंह 'सुमन'	हिल्लोल, जीवन के गान, प्रलय-सृजन, विश्वास बढ़ता ही गया
शकुंतला माथुर	अभी और कुछ इनका, चाँदनी और चूनर, दोपहरी, सुनसान गाड़ी
सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	खूँटियों पर टँगे लोग, कुआनो नदी, बाँस के पुल, काठ की घंटियाँ, एक सूनी नाव, गर्म हवाएँ, जंगल का दर्द
विजयदेव नारायण साही	मछलीघर, संवाद तुम से साखी
जगदीश गुप्त	नाव के पाँव, शब्दशः, हिमविद्ध, युग्म
हरिनारायण व्यास	मृग और तृष्णा, एक नशीला चाँद, उठे बादल झुके बादल, त्रिकोण पर सूर्योदय
श्रीकांत वर्मा	मायादर्पण, मगध, शब्दों की शताब्दी, दीनारंभ
राजकमल चौधरी	कंकावती, मुक्तिप्रसंग
अशोक वाजपेयी	एक पतंग अनंत में, शहर अब भी संभावना है
बालस्वरूप राही	जो नितांत मेरी है
'धूमिल'	संसद से सड़क तक, कल सुनना मुझे, सुदामा पाण्डे का प्रजातंत्र
अजित कुमार	अंकित होने दो, अकेले कंठ की पुकार
रामदरश मिश्र	पक गई है धूप, बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ
डॉ० विनय	एक पुरुष और, कई अंतराल, दूसरा राग
जगदीश चतुर्वेदी	इतिहास हंता
प्रमोद कौंसवाल	अपनी तरह का आदमी
संजीव मिश्र	कुछ शब्द जैसे मेज
'निराला'	कुकुरमुत्ता, गर्म पकौड़ी, प्रेम-संगीत, रानी और कानी खजोहरा, मास्को डायलाग्स, स्फटिक शिला, नये पत्ते, गीत गुंज, सांध्य काकली *(प्रकाशन मरणोपरांत—1969 ई०)*
उदयप्रकाश	सुनो कारीगर, क से कबूतर

प्रबंधात्मक काव्यकृतियाँ

रचनाकार	प्रबंधात्मक काव्यकृतियाँ
देवराज	आत्महत्याएँ, इला और अमिताभ
नरेश मेहता	प्रवाद पर्व, महाप्रस्थान, शबरी
भवानीप्रसाद मिश्र	कालजयी
भारतभूषण अग्रवाल	अग्निलीक
डॉ० विनय	पुनर्वास का दण्ड, एक मृत्यु प्रश्न
जगदीश चतुर्वेदी	सूर्यपुत्र
रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'	अपराधिता
शैलेश जैदी	अब किसे बनवास दोगे

सप्तक के कवि

'तार सप्तक' *(1943 ई०)*	अज्ञेय, मुक्तिबोध, गिरिजाकुमार माथुर, प्रभाकर माचवे, भारत भूषण अग्रवाल, नेमिचंद्र जैन, रामविलास शर्मा
दूसरा सप्तक *(1951 ई०)*	रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, शमशेर बहादुर सिंह, भवानी प्रसाद मिश्र, शकुंतला माथुर, हरिनारायण व्यास
तीसरा सप्तक *(1959 ई०)*	कीर्ति चौधरी, प्रयाग नारायण त्रिपाठी, केदारनाथ सिंह, कुँवरनारायण, विजयदेव नारायण साही, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, मदन वात्स्यायन
चौथा सप्तक *(1979 ई०)*	अवधेश कुमार, राजकुमार कुम्भज, स्वदेश भारती, नंद किशोर आचार्य, सुमन राजे, श्रीराम वर्मा व राजेंद्र किशोर

उपन्यास

उपन्यासकार	उपन्यास
श्रद्धाराम फिल्लौरी	भाग्यवती
लाला श्रीनिवासदास	परीक्षागुरु
बालकृष्ण भट्ट	नूतन ब्रह्मचारी, सौ अजान एक सुजान
भारतेंदु हरिश्चंद्र	पूर्ण प्रकाश, चंद्रप्रभा
देवकीनंदन खत्री	चंद्रकांता, नरेंद्रमोहिनी, वीरेंद्रवीर अथवा कटोरा भर खून, कुसुमकुमारी, चंद्रकांता संतति, भूतनाथ
मेहता लज्जाराम शर्मा	धूर्त रसिकलाल, स्वतंत्र रमा और परतंत्र लक्ष्मी, हिंदू गृहस्थ, आदर्श दम्पति, सुशीला विधवा, आदर्श हिंदू
किशोरीलाल गोस्वामी	प्रणयिनी-परिणय, त्रिवेणी, लवंगलता, लीलावती, तारा, चपला, मल्लिकादेवी वा बंगसरोजिनी अँगूठी का नगीना, लखनऊ की कब्रा वा शाही महलसरा
गोपालराय गहमरी	अद्भुत लाश, अद्भुत खून, खूनी कौन
'हरिऔध'	ठेठ हिंदी का ठाठ, अधखिला फूल
जगमोहन सिंह	श्यामा स्वप्न
पंडित गौरीदत्त	देवरानी-जेठानी की कहानी
सियारामशरण गुप्त	गोद, नारी, अंतिम आकांक्षा
शिवपूजन सहाय	देहाती दुनिया
ऋषभचरण जैन	दिल्ली का कलंक, दिल्ली का व्यभिचार, वेश्यायुग, रहस्यमयी
भवानीप्रसाद	पतिता की साधना, चंदन और पानी, त्यागमयी
प्रेमचंद	प्रेमा, सेवासदन, वरदान, प्रेमाश्रम, कायाकल्प, रंगभूमि, निर्मला, प्रतिज्ञा, गबन, कर्मभूमि, गोदान, मंगलसूत्र *(अपूर्ण)*
जयशंकर प्रसाद	कंकाल, तितली, इरावती *(अधूरा)*
'निराला'	अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरूपमा, चोटी की पकड़, काले कारनामे
पंत	हार
राधिकारमण प्रसाद सिंह	राम-रहीम
इलाचंद्र जोशी	पर्दे की रानी, घृणामयी, संन्यासी, प्रेत और छाया, मुक्तिपथ, जिप्सी, जहाज का पंछी
जैनेंद्र	ऋतुचक्र, सुवह के भूले, भूत का भविष्य
यशपाल	परख, त्यागपत्र, कल्याणी, सुनीता, सुखदा
	मुक्तिबोध
	दिव्या, अमिता, झूठा-सच *(दो भाग)*, दादा कामरेड, मनुष्य के रूप, मेरी तेरी उसकी बात, बारह घंटे
'अश्क'	गिरती दीवारें, शहर में घूमता आइना, सितारों का खेल, बड़ी-बड़ी आँखें, गरम राख, एक नन्ही कंदील, पत्थर-अल-पत्थर

उपन्यासकार	उपन्यास
अमृतलाल नागर	सुहाग के नूपुर, शतरंज के मोहरे, करवट, नाच्यौ बहुत गोपाल, अमृत और विष, बूँद और समुद्र, मानस का हंस, नवाबी मसनद, सेठ बाँकेमल, बिखरे तिनके, महाकाल, भूख, एकदा नैमिषारण्ये, खंजन नयन, करवट
उदयशंकर भट्ट	सागर लहरें और मनुष्य, डॉ० शेफाली, शेष-अशेष, लोक-परलोक, नए मोड़, एक नीड़ दो पंछी, दो अध्याय
भगवतीचरण वर्मा	चित्रलेखा, सबहिं नचावत राम गोसाईं, तीन वर्ष, भूले बिसरे चित्र, टेढ़े-मेढ़े रास्ते, सीधी-सच्ची बातें, सामर्थ्य और सीमा, आखिरी दाँव
वृंदावनलाल वर्मा	मृगनयनी, झाँसी की रानी, गढ़ कुण्डार, विराटा की पद्मिनी, अहिल्याबाई
आचार्य चतुरसेन शास्त्री	वैशाली की नगरवधू, धर्मयुग, अपराजिता, नरमेध, मंदिर की नर्तकी, हृदय की परख, हृदय की प्यास, वयं रक्षामः, आत्मदाह
राहुल सांकृत्यायन	सिंह सेनापति, जय यौधेय, वोल्गा से गंगा तक, किन्नरों के देश में, शैतान की आँखें, मधुर स्वप्न
हजारी प्रसाद द्विवेदी	बाणभट्ट की आत्मकथा, अनामदास का पोथा, चारुचंद्रलेख, पुनर्नवा
'उग्र'	दिल्ली का दलाल, चाकलेट, बुधुआ की बेटी, शराबी, चंद हसीनों के खतूत, फागुन के दिन चार
रांगेय राघव	मुर्दों का टीला, कब तक पुकारूँ, मेरी भवबाधा हरो, विषादमय, लखिमा की आँखें, देवकी का बेटा, यशोधरा जीत गई, अँधेरे के जुगनू
'रेणु'	मैला आँचल, जुलूस, कितने चौराहे, परती परिकथा, पल्टू बाबू रोड *(मरणोपरांत प्रकाशित)*
नागार्जुन	बलचनमा, रतिनाथ की चाची, नई पौध, उग्रतारा, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, दुखमोचन, कुंभीपाक
राजेंद्र यादव	सारा आकाश, उखड़े हुए लोग, शह और मात, मंत्रविद्ध, अनदेखे अनजान पुल
धर्मवीर भारती	गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा
'अज्ञेय'	शेखर एक जीवनी, नदी के द्वीप, अपने-अपने अजनबी
'मुक्तिबोध'	विपात्र
डॉ. द्वारका प्रसाद	घेरे के बाहर, मम्मी बिगड़ेगी
विष्णु प्रभाकर	निशिकांत, तट के बंधन, अर्द्धनारीश्वर, स्वप्नमयी
नरेश मेहता	प्रथम फाल्गुन, डूबते मस्तूल, धूमकेतु, नदी यशस्वी है, यह पथबंधु था, उत्तरकथा
रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'	चढ़ती धूप, नयी इमारत, उल्का, मरुप्रदीप
कमलेश्वर	एक सड़क 57 गलियाँ, लौटे हुए मुसाफिर, डाक बँगला, काली आँधी, समुद्र में खोया हुआ आदमी, सुबह दोपहर शाम, तीसरा आदमी, एक और चन्द्रकान्ता, कितने पाकिस्तान
प्रभाकर माचवे	परंतु, साया, द्वाभा, दर्द के पैवंद
मोहन राकेश	अँधेरे बंद कमरे, न आने वाला कल, नीली बाँहों की रोशनी में, काँपता हुआ दरिया, कई एक अकेले, अंतराल

उपन्यासकार	उपन्यास
निर्मल वर्मा	वे दिन, लाल टीन की छत, रात का रिपोर्टर, एक चिथड़ा सुख, अंतिम अरण्य
मन्नू भंडारी	महाभोज, आपका बंटी, एक इंच मुसकान *(सहयोगी लेखक राजेंद्र यादव)*
मार्कण्डेय	सेमल का फूल
उषा प्रियंवदा	पचपन खम्भे लाल दीवारें, रुकोगी नहीं राधिका
सर्वेश्वर	सोया हुआ जल, पागल कुत्तों का मसीहा, अँधेरे पर अँधेरा, उड़ते हुए रंग
भीष्म साहनी	तमस, झरोखे, कड़ियाँ, बसंती, मय्यादास की माड़ी
शरतचंद्र	देवदास, श्रीकांत, चरित्रहीन, गृहदाह, परिणीता, पथ के दावेदार
नरेंद्र कोहली	दीक्षा, अवसर, युद्ध की ओर, अभिज्ञान
शानी	काला जल, साँप और सीढ़ी, नदियाँ और सीपियाँ
राही मासूम रजा	आधा गाँव, सीन-75, असंतोष के दिन, ओस की बूँद, नीम का पेड़, कटरा बी आर्जू
श्रीलाल शुक्ल	राग दरबारी, सीमाएँ टूटती हैं, आदमी का जहर, अज्ञातवास
हरिशंकर परसाई	रानी नागमती की कहानी, तट की खोज
लक्ष्मीकांत वर्मा	टेराकोटा, खाली कुर्सी की आत्मा, एक कटा हुआ कागज, कोयल और आवृत्तियाँ
श्रीकांत वर्मा	दूसरी बार
राजकमल चौधरी	मछली मरी हुई, एक अनार एक बीमार, शहर था—शहर नहीं था
लक्ष्मी नारायण लाल	बड़ी चंपा छोटी चंपा, मन वृंदावन, काले फूले का पौधा, हरा समंदर-गोपी चंदर, धरती की आँखें, रूपाजीवा, प्रेम अपवित्र नदी
मनोहर श्याम जोशी	कुरु-कुरु स्वाहा, कसप, नेता जी कहिन, क्या
देवराज	पथ की खोज, अजय की डायरी, मैं, वे और आप, रोड़े और पत्थर
कृष्णा सोबती	सूरजमुखी अँधेरे के, जिंदगीनामा, हम हशमत, मित्रो मरजानी, यारों के यार, डार से बिछुड़ी, दिलो दानिश
महेंद्र भल्ला	एक पति के नोट्स
गिरिराज किशोर	यथा प्रस्तावित, ढाई घर, चिड़ियाघर, साहब, मात्राएँ
मणि मधुकर	सफेद मेमने, मेरी स्त्रियाँ, खुले हुए दरीचे
मंजुल भगत	अनारो, लेडी क्लब
दुष्यंत कुमार	छोटे-छोटे सवाल, दोहरी जिंदगी, आँगन में एक वृक्ष
शैलेश मटियानी	सर्पगंधा, मुठभेड़, आकाश कितना अनंत है, डेरेवाले, बावन नदियों का संगम, चंद औरतों का शहर, किस्सा नर्मदा बेन गंगूबाई, बोरीबली से बोरीबंदर तक, उगते सूरज की किरण
भैरव प्रसाद गुप्त	गंगा मैया, सत्ती मैया का चौरा
शिवप्रसाद सिंह 'रुद्र'	बहती गंगा, अलग-अलग वैतरणी
देवेंद्र सत्यार्थी	रथ के पहिए, कठपुतली, दूधगाछ, ब्रह्मपुत्र
विमल मित्र	हम चाकर रघुनाथ के, कैसे-कैसे सच, मन क्यों उदास है, मुजरिम हाज़िर
जगदंबा प्रसाद दीक्षित	मुर्दाघर
रघुवंश	अर्थहीन
बदी उज़्ज़मां	एक चूहे की मौत, सभापर्व, छाको की वापसी

कहानी

कहानीकार	कहानी/कहानी-संग्रह
इंशाअल्ला खाँ	रानी केतकी की कहानी
राजा शिवप्रसाद 'सितारे-हिंद'	राजा भोज का सपना
भारतेंदु	अद्‌भुत अपूर्व सपना
राजा बाला घोष *(बंगमहिला)*	दुलाईवाली
किशोरीलाल गोस्वामी	इंदुमती, गुलबहार
माधवप्रसाद मिश्र	मन की चंचलता
भगवानदीन	प्लेग की चुड़ैल
रामचंद्र शुक्ल	ग्यारह वर्ष का समय
राधिकारमण प्रसाद सिंह	कानों में कंगना
चंद्रधारी शर्मा गुलेरी	सुखमय जीवन, बुद्धू का काँटा, उसने कहा था
वृंदावनलाल वर्मा	राखीबंद भाई
विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक'	रक्षाबंधन, ताई, चित्रशाला *(दो भाग)*, गल्प मंदिर, मंगली, प्रेम प्रतिमा, कल्लोल, मणिमाला
मुंशी प्रेमचंद	पंचपरमेश्वर, सौत, बेटों वाली विधवा, सज्जनता का दण्ड, ईश्वरीय न्याय, रानी सारंधा, आत्माराम, बूढ़ी काकी, ईदगाह, पूस की रात, शतरंज के खिलाड़ी, कजाकी, अलग्योझा, तावान, ठाकुर का कुआँ, कफन; सप्त सरोज *(कहानी-संग्रह)*, मान सरोवर-8 भागों में *(कहानी-संग्रह)*
जयशंकर प्रसाद	ग्राम, छाया *(कहानी-संग्रह)*, इंद्रजाल, आकाशदीप, आँधी, सुनहरा साँप, सालवती, मधुवा, गुंडा, पुरस्कार, चूड़ी वाली नीरा, प्रतिध्वनि, देवरथ
सुदर्शन	सुदर्शन सुधा, तीर्थयात्रा, पुष्पलता, गल्पमंजरी, पनघट, हार की जीत, कवि की स्त्री
चतुरसेन शास्त्री	दुखवा मैं कासों कहूँ मोरी सजनी, अंबपालिका, भिक्षुराज, हल्दीघाटी में, बाणवधू
पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'	चिनगारियाँ, शैतान मंडली, इंद्रधनुष, बलात्कार, चाकलेट, दोज़ख की आग, निर्लज्जा, जब सारा आलम सोता है
जैनेंद्र	हत्या, खेल, अपना-अपना भाग्य, जय संधि, बाहुबली, वातायन, नीलम देश की राजकन्या, दो चिड़ियाँ , ध्रुवयात्रा, पाजेब, एक दिन, राजीव और भाभी
'अज्ञेय'	विपथगा, त्रिपथगा, परंपरा, कोठरी की बात, शरणार्थी, जयदोल, अमर वल्लरी, ये तेरे प्रतिरूप, रोज, पठार का धीरज, सिगनेलर, रेल की सीटी, कविप्रिया, मैना, हरसिंगार
'निराला'	लिली, सुकुल की बीवी, श्रीमती गजानंद देवी, चतुरी चमार, पद्मा
पंत	पानवाला
राहुल सांकृत्यायन	सतमी के बच्चे
सुभद्रा कुमारी चौहान	बिखरे मोती, उन्मादिनी, पापी पेट
भगवती चरण वर्मा	इंस्टालमेंट, दो बाँके, उत्तमी की माँ, प्रायश्चित, मुगलों ने सल्तनत बख्श दी, वो दुनिया
'अश्क'	मुक्त, देशभक्त, डाची, कांगड़ा का तेली, आकाशचारी, टेबुल लैंड
भुवनेश्वर	सूर्यपूजा, भेड़िए
'मुक्तिबोध'	काठ का सपना

कहानीकार	कहानी/कहानी-संग्रह
इलाचंद्र जोशी	आहुति, धन का अभिशाप, एकाकी घोर, कापालिक, प्रथम कहानी, दिवाली, चण्डों की दासी मैं, खँडहर की आत्माएँ, डायरी के नीरस पृष्ठ, आहुति और दिवाली
यशपाल	मक्रील, कुत्ते की पूँछ, फूलों का कुर्ता, पराया सुख, भस्मावृत चिनगारी, पाप का कीचड़, ज्ञानदान, तुमने क्यों कहा कि मैं सुंदर हूँ, पिंजरे की उड़ान
विष्णु प्रभाकर	धरती अब भी घूम रही है, संघर्ष के बाद
'रेणु'	ठुमरी, आदिम रात्रि की महक, तीसरी कसम, विघटन के क्षण, तीन बिंदिया
मोहन राकेश	मलबे का मालिक, एक और जिंदगी, जानवर और जानवर, परमात्मा का कुत्ता, खोया हुआ शहर, आर्द्रा, वासना की छाया में, फौलाद का आकाश, रोयें-रेशे
भीष्म साहनी	चीफ की दावत, मौकापरस्त, खून का रिश्ता, वाँग चू, पटरियाँ, भटकती राख
हरिशंकर परसाई	भोलाराम का जीव, निठल्ले की डायरी, एक फरिश्ते की कथा
शिवप्रसाद सिंह	आरपार की माला, मुर्दा सराय, इन्हें भी इंतजार है, कर्मनाशा की हार
निर्मल वर्मा	परिंदे, लवर्स, लंदन की एक रात, डेढ़ इंच ऊपर, कुत्ते की मौत, अँधेरे में, जलती झाड़ी, माया-दर्पण, धूप का एक टुकड़ा, पोस्टकार्ड, बीच बहस में
कमलेश्वर	राजा निरबंसिया, युद्ध, एक अश्लील कहानी, नीली झील, जार्ज पंचम की नाक, देवा की माँ, मांस का दरिया, बयान जो लिखा नहीं जाता, एक रुकी हुई जिंदगी
कमल जोशी	शीराजी, पत्थर की आँखें
राजेंद्र यादव	जहाँ लक्ष्मी कैद है, प्रतीक्षा, छोटे-छोटे ताजमहल, एक दुनिया समानांतर, लहरें और परछाइयाँ, टूटना तथा अन्य कहानियाँ, एक कमजोर लड़की की कहानी, अभिमन्यु की आत्मकथा
शेखर जोशी	कोसी का घटवार, बदबू, दाज्यू
अमरकांत	जिंदगी और जोंक, डिप्टी कलेक्टरी
मार्कण्डेय	गुलरा के बाबा, हंसा जाई अकेला, महुए का पेड़, सेमल का फूल, साबुन
धर्मवीर भारती	गुलकी बन्नो, सावित्री नं० 2 , बंद गली का आखिरी मकान, चाँद और टूटे हुए लोग, मुर्दों का गाँव
नरेश मेहता	निशा जी, तथापि, एक समर्पित महिला
सर्वेश्वर	पागल कुत्तों का मसीहा, अँधेरे पर अँधेरा
मन्नू भंडारी	मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है, एक प्लेट पुलाव, रानी माँ का चबूतरा, गीत का चुंबन
उषा प्रियंवदा	जिंदगी और गुलाब के फूल, चाँदनी में बर्फ पर, मछलियाँ, कितना बड़ा झूठ, एक कोई दूसरा, वापसी
कृष्णा सोबती	यारों के यार, बादलों के घेरे, तिन पहाड़, ऐ लड़की
ज्ञानरंजन	बहिर्गमन, घंटा, पिता, फेंस के इधर और उधर
गंगाप्रसाद 'विमल'	एक और विदाई, प्रश्नचिह्न
ज्ञानप्रकाश	अँधेरे के सिलसिले

कहानीकार	कहानी/कहानी-संग्रह
भगवती चरण वर्मा	एक पति के नोट्स, तीन-चार दिन
जयशंकर प्रसाद	चायघर में मृत्यु, चोट, हस्तक्षेप
काशीनाथ सिंह	सफेद कौआ
प्रफुल्ल भगत	
गिरिराज किशोर	गाउन, पेपरवेट, चिड़ियाघर, अलग-अलग कद के दो आदमी, फ्राक वाला घोड़ा
उदय प्रकाश	दरियाई घोड़ा, तिरीछ, और अंत में प्रार्थना, पॉल गोमरा का स्कूटर, दत्तात्रेय का दुःख, अरेबा-परेबा, मैंगोसिल; मोहनदास; पीली छतरी वाली लड़की, वारेन हेस्टिंग्स का सांड

नाटक

भारतेंदु युग

नाटककार	नाटक
प्राणचंद चौहान	रामायण महानाटक
महाराज विश्वनाथ सिंह	आनंद रघुनंदन
गोपालचंद्र गिरिधर दास	नहुष
भारतेंदु हरिश्चंद्र	विद्यासुंदर, रत्नावली, पाखण्ड विडंबन, धनंजय विजय, कर्पूर मंजरी, भारत-जननी, मुद्राराक्षस, दुर्लभ बंधु *(उपर्युक्त सभी अनूदित)*; वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, सत्यहरिश्चंद्र, श्रीचंद्रावली, विषस्य विषमौषधम, भारत-दुर्दशा, नीलदेवी, अँधेर नगरी, सती प्रताप, प्रेम योगिनी *(मौलिक)*
शिवनंदन सहाय	कृष्ण-सुदामा नाटक
लाला श्रीनिवासदास	संयोगिता स्वयंवर, प्रह्लाद-चरित्र, रणधीर प्रेममोहिनी, तप्त संवरण
राधाचरण गोस्वामी	अमरसिंह राठौर, बूढ़े मुँह मुँहासे *(प्रहसन)*
किशोरीलाल गोस्वामी	मयंक मंजरी, प्रणयिनी-परिणय
प्रताप नारायण मिश्र	भारत-दुर्दशा, कलिकौतुक रुपक, संगीत शाकुंतल, हठी हम्मीर
बालकृष्ण भट्ट	कलिराज की सभा, रेल का विकट खेल, दमयंती स्वयंवर, जैसा काम वैसा परिणाम *(प्रहसन)*, नई रोशनी का विष, वेणुसंहार
शीतला प्रसाद त्रिपाठी	जानकीमंगल
राधाकृष्ण दास	महाराणा प्रताप, दुःखिनी बाला, पद्मावती, धर्मालाप
देवकीनंदन त्रिपाठी	भारत-हरण
अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	प्रद्युम्न विजय व्यायोग, रुक्मिणी परिणय

प्रसाद/प्रसादोत्तर नाटक

नाटककार	नाटक
माखनलाल चतुर्वेदी	कृष्णार्जुन युद्ध
वृंदावनलाल वर्मा	सेनापति ऊदल
मिश्रबंधु	नेत्रोन्मीलन
जयशंकर प्रसाद	करुणालय, सज्जन, कामना, विशाख, कल्याणी परिणय, अजातशत्रु, एक घूँट, प्रायश्चित्त, चंद्रगुप्त, जनमेजय का नागयज्ञ, स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी
हरिकृष्ण 'प्रेमी'	स्वर्णविहान, रक्षाबंधन, साँपों की सृष्टि, पाताल विजय, शिवसाधना, स्वप्नभंग, विषपान, अमृत पुत्री, उद्धार, प्रतिशोध
लक्ष्मीनारायण मिश्र	अशोक, संन्यासी, आधी रात, मुक्ति का रहस्य, राक्षस का मंदिर, राजयोग, सिंदूर की होली, अपराजित, चक्रव्यूह
रामनरेश त्रिपाठी	सुभद्रा, जयंत
प्रेमचंद	कर्बला, संग्राम, प्रेम की बेदी
चतुरसेन शास्त्री	उत्सर्ग, अमर राठौर
उदयशंकर भट्ट	विक्रमादित्य, विश्वामित्र, दाहर अथवा सिंध पतन, शक-विजय, मत्स्यगंधा
सुदर्शन	अंजना, आनरेरी मजिस्ट्रेट, भाग्यचक्र
पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'	चुंबन, डिक्टेटर
सुमित्रानंदन पंत	ज्योत्स्ना, रजत शिखर, शिल्पी सौवर्ण
मैथिलीशरण गुप्त	अनघ, तिलोत्तमा, चंद्रहास
'अश्क'	जय-पराजय, छठा बेटा, कैद, उड़ान, अलग-अलग रास्ते, सूखी डाली, तौलिए, पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ, कस्बे के डिस्को क्लब का उद्घाटन, भँवर, अंधी गली, पैंतरे
विष्णु प्रभाकर	डॉक्टर, समाधि, टूटते परिवेश, अब और नहीं, लिपस्टिक की मुस्कान, नवप्रभात, रक्तचंदन, युगे युगे क्रांति
जगदीशचंद्र माथुर	कोणार्क, शारदीया, पहला राजा, दशरथ नंदन
धर्मवीर भारती	अंधा युग
'अज्ञेय'	उत्तरप्रियदर्शी
डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल	अंधा कुआँ, मादा कैक्टस, रातरानी, तीन आँखों वाली मछली, सुंदर रस, सूखा सरोवर, रक्तकमल, कलंकी, सूर्यमुख, पंचपुरुष, मिस्टर अभिमन्यु, करफ्यू, सुगन पंछी, दर्पन, गंगामाटी, राक्षस का मंदिर
मोहन राकेश	आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे-अधूरे, पैरों तले की जमीन *(अधूरा)*
सेठ गोविंददास	स्नेह या स्वर्ग, कर्त्तव्य
गिरिजा कुमार माथुर	कल्पांतर
सिद्धनाथ	सृष्टि की साँझ, लौह देवता, संघर्ष, विकलांगों का देश, बादलों का शाप
दुष्यंत कुमार	एक कण्ठ विषपायी
मन्नू भण्डारी	बिना दीवारों के घर, रजनी दर्पण
नरेश मेहता	सुबह के घंटे, खंडित यात्राएँ, उलझन
शिवप्रसाद सिंह	घाटियाँ गूँजती हैं
ज्ञानदेव अग्निहोत्री	नेफा की एक शाम, शुतुरमुर्ग
विपिन कुमार अग्रवाल	तीन अपाहिज, खोए हुए आदमी की खोज
सुरेंद्र वर्मा	द्रौपदी, आठवाँ सर्ग, सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, सेतुबंध, छोटे सैयद बड़े सैयद, शकुन्तला की अँगूठी
गिरीश कर्नाड	तुगलक, नागमंडल, रक्त-कल्याण
सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	बकरी, लड़ाई, कल भात आएगा
मुद्राराक्षस	मरजीवा, तेंदुआ, तिलचट्टा
भीष्म साहनी	कबीर खड़ा बजार में, हानूश, माधवी
हबीब तनवीर	चरणदास चोर, मिट्टी की गाड़ी, आगरा बाजार
शंकर शेष	एक और द्रोणाचार्य, फंदी, बंधन अपने-अपने, कोमल गांधार
गिरिराज किशोर	नरमेध, प्रजा ही रहने दो
मणि मधुकर	रसगंधर्व, खेला पोलमपुर
निर्मल वर्मा	तीन एकांत, वीक एण्ड, धूप का एक टुकड़ा, डेढ़ इंच ऊपर
गोविंद चातक	काला मुँह, अपने-अपने खूँटे
विजय तेंदुलकर	घासीराम कोतवाल, हल्ला बोल
स्वदेश दीपक	नाटक बाल भगवान, कोर्ट मार्शल, जलता हुआ रथ, सबसे उदास कविता, काल कोठरी

एकांकी

एकांकीकार	एकांकी
राधाचरण गोस्वामी	तन-मन-धन गुसाँई जी के अर्पण
बालकृष्ण भट्ट	शिक्षादान
देवकीनंदन खत्री	जनेऊ का खेल
उग्र	चार बेचारे, अफजल बध, भाई मियाँ
सुदर्शन	आनरेरी मजिस्ट्रेट, राजपूत की हार, प्रताप प्रतिज्ञा
जयशंकर प्रसाद	एक घूँट
डॉ० रामकुमार वर्मा	रेशमी टाई, चारुमित्रा, विभूति, सप्तकिरण, औरंगजेब की आखिरी रात, पृथ्वी राज की आँखें, एक तोले अफीम की कीमत, दीपदान, दस मिनट, चंगेज खाँ, कौमुदी-महोत्सव, मयूरपंख, जूही के फूल, 18 जुलाई की शाम, एक्ट्रेस
भुवनेश्वर	तौबे के कीड़े, आजादी की नींद, सिकंदर, एक साम्यहीन साम्यवादी, प्रतिभा का विवाह, स्ट्राइक, बाजीराव की तस्वीर, फोटोग्राफर के सामने, लाटरी, श्यामा
उदयशंकर भट्ट	आत्मदान, दस हजार, एक ही कब्र में, विस्फोट, समस्या का अंत, निर्दोष की रक्षा, बीमार का इलाज
'अश्क'	लक्ष्मी का स्वागत, जोंक, अधिकार का रक्षक, अंधी गली, अंजो दीदी, सूखी डाली, स्वर्ग की झलक, भँवर, मोहब्बत, आपस का समझौता, छः एकांकी, साहब को जुकाम है, विवाह के दिन, देवताओं की छाया में
जगदीशचंद्र माथुर	भोर का तारा, रीढ़ की हड्डी, मकड़ी का जाला, मेरी बाँसुरी, ओ मेरे सपने, कबूतरखाना
सेठ गोविंददास	ईद और होली, फाँसी, प्रायश्चित्त, एकादमी
रामनरेश त्रिपाठी	स्वप्नों के चित्र, दिमागी ऐयाशी
भगवतीचरण वर्मा	सबसे बड़ा आदमी
विष्णु प्रभाकर	प्रकाश और परछाई, पापी इन्सान, दस बजे रात, गहरा सागर, क्या वह दोषी था, वापसी
लक्ष्मी नारायण मिश्र	स्वर्ग में विप्लव, कटोरी में कमल, मुक्ति का रहस्य राजयोग
जैनेंद्र	टकराहट
लक्ष्मीनारायण लाल	पर्वत के पीछे, बहुरंगी, ताजमहल के आँसू, औलादी का बेटा, दूसरा दरवाजा
धर्मवीर भारती	नदी प्यासी थी, नीली झील, संगमरमर पर एक रात, मृष्टि का आखिरी आदमी, आवाज का नीलाम
प्रभाकर माचवे	गली के मोड़ पर, गाँधी की राह पर, पागलखाने में पंचकन्या, वधू चाहिए
हरिकृष्ण 'प्रेमी'	मातृमंदिर, राष्ट्रमंदिर, न्यायमंदिर, वाणीमंदिर
मोहन राकेश	अंडे के छिलके, प्यालियाँ टूटती हैं, सिपाही की माँ, अनरियाँ, बहुत बड़ा सवाल, हाँ! करफ्यू
गिरिराजकुमार माथुर	उमरकैद
मार्कण्डेय	पत्थर और परछाई

आलोचना

कृतिकार	कृति
भारतेंदु	नाटक
शिवसिंह सेंगर	शिवसिंह सरोज
पद्मसिंह शर्मा	बिहारी सतसई की भूमिका
कृष्ण बिहारी मिश्र	देव और बिहारी
बाबू गुलाबराय	सिद्धांत और अध्ययन, काव्य के रूप, नवरस
श्यामसुंदर दास	साहित्यालोचन, रूपक रहस्य, भाषा रहस्य
रामचंद्र शुक्ल	काव्य में रहस्यवाद, रस-मीमांसा, गोस्वामी तुलसीदास, भ्रमरगीत-सार, जायसी ग्रंथावली की भूमिका
निराला	रवींद्र कविता कानन, पंत और पल्लव
पंत	गद्यपथ, शिल्प और दर्शन, छायावाद: पुनर्मूल्यांकन
रामकुमार वर्मा	साहित्य समालोचना
नंददुलारे वाजपेयी	नया साहित्य नए प्रश्न, प्रकीर्णिका, कवि निराला
हजारी प्रसाद द्विवेदी	कबीर, सूर साहित्य, हिंदी साहित्य की भूमिका, हिंदी साहित्य का आदिकाल
गिरिजा कुमार माथुर	नई कविता : सीमाएँ और संभावनाएँ
रामविलास शर्मा	निराला की साहित्य साधना *(तीन भाग)*, भारतेंदु हरिश्चंद्र, भारतेंदु युग और हिंदी भाषा की विकास परंपरा, भाषा और समाज, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण, आचार्य शुक्ल, लोकजागरण और हिंदी साहित्य, नई कविता और अस्तित्ववाद
डॉ० नगेंद्र	सुमित्रानंदन पंत, साकेत : एक अध्ययन, रस-सिद्धांत, विचार और अनुभूति, रीतिकाव्य की भूमिका, देव और उनकी कविता, मिथक और साहित्य, भारतीय समीक्षा और आचार्य शुक्ल की काव्य-दृष्टि
डॉ० देवराज उपाध्याय	छायावाद का पतन, साहित्य चिंता, आधुनिक समीक्षा
'अज्ञेय'	त्रिशंकु, आत्मनेपद, अद्यतन, संवत्सर, स्मृति-लेखा, चौथा सप्तक, केंद्र और परिधि, पुष्करिणी, जोग लिखि, सर्जना और संदर्भ
नामवर सिंह	कविता के नए प्रतिमान, छायावाद, वाद-विवाद-संवाद, इतिहास और आलोचना, कहानी और नई कहानी
विजदेव नारायण साही	शमशेर की काव्यानुभूति की बनावट, लघुमानव के बहाने हिंदी कविता पर एक बहस, जायसी
रामस्वरूप चतुर्वेदी	मध्ययुगीन हिंदी काव्य-भाषा, अज्ञेय: आधुनिक रचना की समस्या, भाषा और संवेदना
लक्ष्मीकांत वर्मा	नई कविता के प्रतिमान, नये प्रतिमान पुराने निकष
जगदीश गुप्त	नई कविता: स्वरूप और समस्याएँ
धर्मवीर भारती	मानव मूल्य और साहित्य
विपिन कुमार अग्रवाल	आधुनिकता के पहलू
मलयज	कविता से साक्षात्कार
अशोक वाजपेयी	फिलहाल, कुछ पूर्वग्रह
निर्मल वर्मा	शब्द और स्मृति
'मुक्तिबोध'	नई कविता का आत्मसंघर्ष
नेमिचंद्र जैन	अधूरे साक्षात्कार
शिवदान सिंह चौहान	प्रगतिवाद, हिंदी साहित्य के अस्सी वर्ष, साहित्यानुशीलन, साहित्य की परख
डॉ० बच्चन सिंह	हिंदी आलोचना के बीज शब्द, साहित्य का समाजशास्त्र और रूपवाद, आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास

निबंध

निबंधकार	निबंध/निबंध-संग्रह
शिवप्रसाद 'सितारे-हिंद'	राजा भोज का सपना
महावीर प्रसाद द्विवेदी	म्युनिसिपैलिटी के कारनामे, जनकस्य दण्ड, रसज्ञ रंजन, कवि और कविता, लेखांजलि, आत्मनिवेदन, सुतापराधे

निबंधकार	निबंध/निबंध-संग्रह
चंद्रधर शर्मा गुलेरी	विक्रमोर्वशी की मूल कथा, अमंगल के स्थान में मंगल शब्द, मारेसि मोहि कुठाँव, कछुवा धर्म
बालमुकुंद गुप्त	शिवशंभू के चिट्ठे, चिट्ठे और खत
प्रतापनारायण मिश्र	निबंध-नवनीत, खुशामद, आप, बात, भौं, प्रताप पीयूष
पद्मसिंह शर्मा	पद्म पराग, प्रबंध मंजरी में संकलित निबंध
बालकृष्ण भट्ट	साहित्य सरोज, भट्ट निबंधावली *(आँसू, रुचि, जात-पाँत, सीमा रहस्य, आशा, चलन आदि)*, साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है *(नि.)*
भारतेंदु	पाँचवें पैगम्बर
सरदार पूर्णसिंह	मजदूरी और प्रेम, सच्ची वीरता, अमरीका का मस्त जोगी वाल्ट ह्विटमैन, पवित्रता, कन्यादान, आचरण की सभ्यता
बाबू गुलाबराय	फिर निराशा क्यों, ठलुआ क्लब, मन की बातें, मेरी असफलताएँ, कुछ उथले कुछ गहरे
रामचंद्र शुक्ल	चिंतामणि *(चार भाग)* में संकलित निबंध, कविता क्या है, साधारणीकरण और व्यक्ति-वैचित्र्यवाद
पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी	पंचपात्र *(संग्रह)*
शिवपूजन सहाय	कुछ *(संग्रह)*
'उग्र'	बुढ़ापा, गाली
माखनलाल चतुर्वेदी	साहित्य देवता, अमीर देवता, गरीब देवता
प्रसाद	काव्य कला तथा अन्य निबंध, यथार्थवाद और छायावाद, रंगमंच, मौर्यों का राज्य-परिवर्तन
महादेवी वर्मा	साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध, शृंखला की कड़ियाँ, क्षणदा, संधिनी, चिंतन के क्षण
जैनेंद्र	जड़ की बात, सोच-विचार, मंथन, मैं और वे, साहित्य का श्रेय और प्रेय, इतस्ततः, पूर्वोदय
हजारी प्रसाद द्विवेदी	अशोक के फूल, कल्पलता, विचार और वितर्क, नाखून क्यों बढ़ते हैं, कुटज, पुनश्च, प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद, ठाकुर की बटोर, आम फिर बौरा गए, कुटज *(नि.)*
'दिनकर'	मिट्टी की ओर, पंत, उजली आग, प्रसाद और मैथिलीशरण गुप्त, रेती के फूल, अर्द्धनारीश्वर
नंददुलारे वाजपेयी	आधुनिक साहित्य, नया साहित्य : नये प्रश्न, हिंदी साहित्य : 20वीं शताब्दी, जयशंकर प्रसाद, प्रेमचंद
नगेंद्र	यौवन के द्वार पर, आस्था के चरण, चेतना के बिंब, छायावाद की परिभाषा, साधारणीकरण *(नि.)*
रामवृक्ष बेनीपुरी	गेहूँ और गुलाब, वंदे वाणी विनायकौ, लाल तारा
'अज्ञेय'	त्रिशंकु, आलवाल, हिंदी साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य, भवंती, लिखि कागद कोरे, आत्मपरक, सबरंग (ललित निबंध-संग्रह)
देवेंद्र सत्यार्थी	धरती गाती है, एक युग : एक प्रतीक, रेखाएँ बोल उठीं
यशपाल	चक्कर क्लब, बात-बात में मात, गांधीवाद की शव परीक्षा, न्याय का संघर्ष, देखा सोचा समझा
कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	जिंदगी मुस्कराई, बाजे पायलिया में घुँघुरू, महके आँगन चहके द्वार
'अश्क'	मंटो : मेरा दुश्मन
प्रभाकर माचवे	खरगोश के सींग

निबंधकार	निबंध/निबंध-संग्रह
विद्यानिवास मिश्र	छितवन की छाँह, अंगद की नियति, तुम चंदन हम पानी, आँगन का पंछी और बंजारा मन, मैंने सिल पहुँचाई, कदम की फूली डाल, परंपरा बंधन नहीं, बसंत आ गया पर कोई बंधन नहीं, मेरा देश वापस लाओ, अग्निरथ
'मुक्तिबोध'	नई कविता का आत्मसंघर्ष तथा अन्य निबंध, नये साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, समीक्षा की समस्याएँ, एक साहित्यिक की डायरी, कला का तीसरा क्षण, शमशेर : मेरी दृष्टि में, कलाकार की व्यक्तिगत ईमानदारी, सौंदर्य प्रतीति की प्रक्रिया, कलात्मक अनुभव, उर्वशी : मनोविज्ञान, उर्वशी : दर्शन और काव्य, मध्ययुगीन भक्ति आंदोलन का एक पहलू
धर्मवीर भारती	ठेले पर हिमालय, पश्यंती, कहनी-अनकहनी, रामजी की चींटी : रामजी का शेर
शिवप्रसाद सिंह	शिखरों के सेतु
हरिशंकर परसाई	निठल्ले की डायरी, भूत के पाँव, सदाचार का तावीज, ठिठुरता गणतंत्र, जैसे उनके दिन फिरे, सुनो भाई साधो, विकलांग श्रद्धा का दौर, पगडंडियों का जमाना
कुबेरनाथ राय	प्रिया नीलकंठी, रस आखेटक, गंधमादन, विषादयोग
विजयेंद्र स्नातक	चिंतन के क्षण
नामवर सिंह	इतिहास और आलोचना, बकलम खुद
निर्मल वर्मा	शब्द और स्मृति, कला और जोखिम, ढलान से उतरते हुए
बनारसी दास चतुर्वेदी	हमारे आराध्य, साहित्य और जीवन
लक्ष्मीकांत वर्मा	नए प्रतिमान : पुराने निकष
कृष्ण बिहारी	बेहया का जंगल
विजयदेव नारायण साही	लघुमानव के बहाने हिंदी कविता पर बहस, शमशेर की काव्यानुभूति की बनावट

आत्मकथा

I. मौलिक आत्मकथाएं

कृति	कृतिकार
अर्द्धकथानक (1641 ई.)	बनारसीदास जैन
स्वरचित आत्मचरित (1879 ई.)	दयानंद सरस्वती
मुझमें देव जीवन का विकास (1909 ई.)	सत्यानंद अग्निहोत्री
मेरे जीवन के अनुभव (1914 ई.)	संत राय
फिजी द्वीप में मेरे इक्कीस वर्ष (1914 ई.)	तोताराम सनाढ्य
मेरा संक्षिप्त जीवन चरित्र-मेरा लिखित (1920 ई.)	राधाचरण गोस्वामी
आपबीता : काले पानी के कारावास की कहानी (1921 ई.)	भाई परमानंद
कल्याण मार्ग का पथिक (1925 ई.)	स्वामी श्रद्धानंद
आपबीती (1933 ई.)	लज्जाराम मेहता शर्मा
मैं क्रांतिकारी कैसे बना (1933 ई.)	राम विलास शुक्ल
प्रवासी की आत्मकथा (1939 ई.)	भवानी दयाल संन्यासी
मेरी असफलताएँ (1941 ई.)	गुलाब राय
मेरी आत्म-कहानी (1943 ई.)	श्यामसुंदर दास
पत्रकार की आत्मकथा (1943 ई.)	मूलचंद अग्रवाल
आत्मकथा (1943 ई.)	महात्मा नारायण स्वामी
मेरी जीवन यात्रा (भाग-1—1944 ई., भाग-2—1949 ई., भाग-3, 4, 5—1967 ई.)	राहुल सांकृत्यायन

कृति	कृतिकार
आत्मकथा (1946 ई.)	लाला लाजपत राय
अपनी की खोज में या बुकसेलर की डायरी (1947 ई.)	रामकुमार विद्यार्थी 'रावी'
मेरी जीवन कहानी (1948 ई.)	गणेश नारायण सोमाणी
मेरा जीवन प्रवाह (1948 ई.)	वियोगी हरि
मेरी जीवन गाथा (1949 ई.)	झुन्नक गणेश प्रसाद वर्णी
उलझी स्मृतियाँ (1950 ई.)	विनोद शंकर व्यास
स्वतन्त्रता की खोज में (1951 ई.)	सत्यदेव परिव्राजक
जीवन चक्र (1951 ई.)	गंगा प्रसाद उपाध्याय
क्रांतिकारी की आत्मकथा (1951 ई.)	मन्मथनाथ गुप्त
अज्ञात जीवन (1952 ई.)	अज्ञिन प्रसाद जैन
परिव्राजक की प्रजा (1952 ई.)	शांतिप्रिय द्विवेदी
सिंहावलोकन (भाग–1, 2—1952 ई.; भाग–3—1955 ई.)	यशपाल
चांद-सूरज के बीरन (1952 ई.)	देवेंद्र सत्यार्थी
साहित्यिक जीवन के अनुभव (1953 ई.)	किशोरीदास वाजपेयी
मुदरिम की गमकहानी (1953 ई.)	कालीदास कपूर
मेरी जीवन कहानी (1956 ई.)	रमादेवी मुरारका
समय का फेर (1956 ई.)	एल. पी. नागर
मेरी जीवन-यात्रा (1956 ई.)	जानकी देवी बजाज
आत्मकथा : आपबीती-जगबीती (1957 ई.)	नरदेव शास्त्री
मेरा नाटक काल (1957 ई.)	राधेश्याम कथावाचक
मेरी अपनी कथा (1958 ई.)	पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी
आत्म परीक्षण (भाग–1, 2, 3—1958 ई.)	सेठ गोविन्द दास
आत्मकथा (1958 ई.)	राम प्रसाद विस्मिल
बचपन के दो दिन (1959 ई.); यौवन के द्वार पर (1970 ई.)	डॉ. देवराज उपाध्याय
साठ वर्ष : एक रेखांकन (1960 ई.)	सुमित्रानंदन पंत
अपनी खबर (1960 ई.)	पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'
मेरी आत्मकहानी (1963 ई.)	आचार्य चतुरसेन शास्त्री
क्रांति पथ का पथिक (1966 ई.)	पृथ्वी सिंह आजाद
जीवन के चार अध्याय (1966 ई.)	भुवनेश्वर माधव मिश्र
आत्मकथा और संस्मरण (1967 ई.)	गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी
क्या भूलूं क्या याद करूं (1969 ई.); नीड़ का निर्माण फिर (1970 ई.); बसेरे से दूर (1978 ई.); दशद्वार से सोपान तक (1985 ई.)	हरिवंशराय बच्चन
अपनी कहानी (1970 ई.)	वृंदावन लाल वर्मा
प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र (1970 ई.)	हीरालाल शास्त्री
संघर्ष, सृजन और संघर्ष (1972 ई.)	व्योहार राजेन्द्र सिंह
भूली बातें याद करूं (1973 ई.)	राधाकृष्ण बिरला
विदा बंधु विदा (1973 ई.)	प्रणव कुमार वंद्योपाध्याय
एक आत्मकथा-अरुणायन (1974 ई.)	पीढ़ार रामवतार 'अरुण'
मेरी फिल्मी आत्मकथा (1974 ई.)	बलराज साहनी
राह चलते-चलते (1976 ई.)	रामेश्वर टांटिया
घर की बात (1983 ई.), अपनी धरती अपने लोग (1996 ई.)	रामविलास शर्मा
राख से लपटें (1984 ई.)	पुरुषोत्तम दास टंडन
मेरा जीवन (1985 ई.)	शिवपूजन सहाय
मेरे सात जनम (खंड—1,2,3)	हंसराज रहबर
टुकड़े-टुकड़े दास्तान (1986 ई.)	अमृतलाल नागर
मेरी जीवनधारा (1987 ई.)	यशपाल जैन
आत्म परिचय (1988 ई.)	फणीश्वर नाथ 'रेणु'
अर्धकथा (1988 ई.)	डॉ. नगेन्द्र
तपती पगडंडियों पर पदयात्रा (1989 ई.)	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
सहचर है समय (1991 ई.)	रामदरश मिश्र
फुरसत के दिन (2000 ई.); जो मैंने जिया (1992 ई.); यादों का चिराग (1997 ई.); जलती हुई नदी (1999 ई.)	कमलेश्वर
कहो व्यास कैसी कटी (1994 ई.)	गोपाल प्रसाद व्यास
गालिब छुटी शराब (2000 ई.)	रवीन्द्र कालिया
मुड़ मुड़कर देखता हूँ (2001 ई.)	राजेन्द्र यादव
वह जो यथार्थ था (2001 ई.)	आखिलेश
आज के अतीत (2003 ई०.	भीष्म साहनी
पाव भर जीरे में ब्रह्मभोज (2003 ई.)	अशोक बाजपेयी
मैंने मांडू नहीं देखा (2003 ई.)	स्वदेश दीपक
वसन्त से पतझर तक (2005 ई.)	रवीन्द्रनाथ त्यागी
पंखहीन (2004 ई.); मुक्त गगन में (2004 ई.); पंछी उड़ गया (2004 ई.)	विष्णु प्रभाकर
एक अंतहीन तलाश (2007 ई.)	कन्हैयालाल नंदन
गुजरा कहाँ-कहाँ से (2007 ई.)	देवेश ठाकुर

महिला लेखन धारा की आत्मकथाएं

दस्तक जिन्दगी की (1990 ई.); मोड़ जिन्दगी का (1996 ई.)	प्रतिभा अग्रवाल
जो कहा नहीं गया (1996 ई.)	कुसुम अंसल
लगता नहीं है दिल मेरा (1997 ई.)	कृष्णा अग्निहोत्री
बूंद बावड़ी (1999 ई.)	पद्मा सचदेव
कुछ कही कुछ अनकही (2000 ई.)	शीला झुनझुनवाला
कस्तूरी कुण्डल बसै (2002 ई.); गुड़िया भीतर गुड़िया (2008 ई.)	मैत्रेयी पुष्पा
हादसे (2005 ई.)	रमणिका गुप्ता
एक कहानी यह भी (2007 ई.)	मन्नू भण्डारी
अन्या से अनन्या (2007 ई.)	प्रभा खेतान
पिंजड़े की मैना (2008 ई.)	चन्द्रकिरण सौनरेक्सा

दलित लेखन धारा की आत्मकथाएं

अपने-अपने पिंजरे (भाग–1—1995 ई.; भाग–2—2000 ई.)	मोहन नैमिशराय
जूठन (1997 ई.)	ओम प्रकाश वाल्मीकि
तिरस्कृत (2002 ई.); संतप्त (2006 ई.)	सूरजपाल चौहान
मेरा बचपन मेरे कंधों पर (2009 ई.)	श्योराज सिंह बेचैन
मुर्दहिया (2010 ई.)	डॉ. तुलसीराम
शिकंजे का दर्द (2012 ई.)	सुशीला टाकभौरे

II. अनुदित आत्मकथाएं

आत्मकथाकार	आत्मकथा का मूल नाम, भाषा, प्रकाशन वर्ष	हिन्दी अनुवाद का नाम
मीर तकी मीर	जिक्र-ए-मीर, उर्दू, 1783 ई.	जिक्रे-मीर
मुंशी लुत्फुल्ला	एन ऑटोबायोग्राफी, अंग्रेजी, 1848 ई.	एक आत्मकथा
महात्मा गाँधी	आत्मचरित, गुजराती, 1926 ई.	आत्मकथा अथवा सत्य के प्रयोग
सुभाष चंद्र बोस	तरुणे सपन, बांग्ला, 1935 ई.	तरुण के स्वप्न
जवाहर लाल नेहरू	माई स्टोरी, अंग्रजी, 1936 ई.	मेरी कहानी
वेद मेहता	फेस टू फेस, अंग्रेजी, 1958 ई.	मेरा जीवन संघर्ष

आत्मकथाकार	आत्मकथा का मूल नाम, भाषा, हिन्दी अनुवाद का नाम प्रकाशन वर्ष
शचीन्द्र नाथ सान्याल	बंदी जीवन, बांग्ला, 1963 ई. बंदी जीवन
हंसा वाडकर	सांगत्ये एका, मराठी, 1972 ई. आभिनेत्री की आपबीती
जोश मलीहाबादी	यादों की बारात, उर्दू, 1972 ई. यादों की बारात
अमृता प्रीतम	रसीदी टिकट, पंजाबी, 1977 ई. रसीदी टिकट
कमला दास	माई स्टोरी, अंग्रेजी, 1977 ई. मेरी कहानी
दलीप कौर टिवाणा	नंगे पैरों दा सफर, पंजाब, नंगे पैरों का सफर 1980 ई.

जीवनी

जीवनीकार	जीवनी (प्रकाशन वर्ष)
नाभा दास	भक्तमाल *(1585 ई.)*
गोसाईं गोकुलनाथ	चौरासी वैष्णवन की वार्ता, दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता *(17 वीं सदी ई.)*
गोपाल शर्मा शास्त्री	दयानंद दिग्विजय *(1881 ई.)*
रमाशंकर व्यास	नेपोलियन बोनापार्ट का जीवन चरित्र *(1883 ई.)*
देवी प्रसाद मुंसिफ	महाराजा मान सिंह का जीवन चरित्र *(1883 ई.)*, राजा मालदेव *(1889 ई.)*, उदय सिंह महाराजा *(1893 ई.)*, जसवंत सिंह *(1896 ई.)*, प्रताप सिंह महाराणा *(1903 ई.)*, संग्राम सिंह राणा *(1904 ई.)*
कार्तिक प्रसाद खत्री	अहिल्याबाई का जीवन चरित्र *(1887 ई.)*, छत्रपति शिवाजी का जीवन चरित्र *(1890 ई.)*, मीराबाई का जीवन चरित्र *(1893 ई.)*
राधाकृष्ण दास	श्री नागरीदास जी का जीवन चरित्र *(1894 ई.)*, कविवर बिहारी लाल *(1895 ई.)*, सूरदास *(1900 ई.)*, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जीवन चरित्र *(1904 ई.)*
बलभद्र मिश्र	स्वामी दयानंद महाराज का जीवन चरित्र *(1896 ई.)*
गौरीशंकर हीराचंद ओझा	कर्नल जेम्स टॉड *(1902 ई.)*
शिवनंदन सहाय	हरिश्चन्द्र *(1905 ई.)*
बालमुकुंद गुप्त	प्रताप नारायण मिश्र *(1907 ई.)*
बाबू श्याम सुंदर दास	हिन्दी कोविद रत्नमाला *(प्रथम भाग—1909 ई., द्वितीय भाग–1914 ई.; हिन्दी के 40 साहित्यकारों की जीवनियाँ)*
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	बाबू राधाकृष्ण दास *(1913 ई.)*
मुकुंदी लाल वर्मा	कर्मवीर गाँधी *(1913 ई.)*
संपूर्णानंद	धर्मवीर गाँधी *(1914 ई.)*, देशबंधु चित्तरंजन दास *(1921 ई.)*
आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी	सुकवि प्राचीन पंडित और कवि *(1918 ई.)*, संकीर्तन *(1924 ई.)*, चरित चर्चा *(1929 ई.)*
सुख संपतिराय भंडारी	डाक्टर सर जगदीश चन्द्र बसु और उनके आविष्कार *(1919 ई.)*
स्वामी सत्यानंद	दयानंद प्रकाश *(1919 ई.)*
राजेन्द्र प्रसाद	चंपारण में महात्मा गाँधी *(1919 ई.)*, बापू के कदमों में *(1950 ई.)*
रामचंद्र वर्मा	महात्मा गाँधी *(1921 ई.)*
रामदयाल तिवारी	गाँधी मीमांसा *(1921 ई.)*
ईश्वरी प्रसाद वर्मा	लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक *(1921 ई.)*
बनारसी दास चतुर्वेदी	कविरत्न सत्यनारायण जी की जीवनी *(1926 ई.)*
गणेश शंकर विद्यार्थी	श्री गाँधी *(1931 ई.)*

जीवनीकार	जीवनी (प्रकाशन वर्ष)
इन्द्र वाचस्पति	जवाहर लाल नेहरू *(1933 ई.)*
सत्यभक्त	कार्ल मार्क्स *(1933 ई.)*
ब्रजरत्न दास	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र *(1934 ई.)*
सीताराम चतुर्वेदी	महामना पंडित मदन मोहन मालवीय *(1937 ई.)*
मन्मथनाथ गुप्त	चंद्रशेखर आजाद *(1938 ई.)*
लक्ष्मण प्रसाद भारद्वाज	महात्मा गाँधी *(1939 ई.)*, हमारे जवाहर लाल नेहरू *(1948 ई.)*
घनश्याम बिड़ला	बापू *(1940 ई.)*, मेरे जीवन में गाँधीजी *(1975 ई.)*
शिवरानी देवी	प्रेमचंद घर में *(1944 ई.)*
छविनाथ पाण्डेय	नेताजी सुभाष *(1946 ई.)*
काका कालेलकर	बापू की झाँकियाँ *(1948 ई.)*
सुशीला नायर	बापू के कारावास की कहानी *(1949 ई.)*
रामवृक्ष बेनीपुरी	जयप्रकाश नारायण *(1951 ई.)*
राहुल सांकृत्यायन	स्तालिन, कार्ल मार्क्स, लेनिन *(1954 ई.)*
जैमिनी कौशिक बरूआ	माखन लाल चतुर्वेदी *(1960 ई.)*
लक्ष्मी शंकर व्यास	पराड़करजी और पत्रकारिता *(1960 ई.)*
चंद्रशेखर शुक्ल	रामचन्द्र शुक्ल : जीवनी और कृतित्व *(1962 ई.)*
मदन गोपाल	कलम का मजदूर *(1964 ई.; मूलतः अंग्रेजी में; प्रेमचंद के जीवन पर)*
जैनेन्द्र कुमार	अकाल पुरूष गाँधी *(1968 ई.)*
राम विलास शर्मा	निराला की साहित्य साधना-प्रथम खंड *(1969 ई.)*
शिव कुमार कौशिक	प्रियदर्शिनी इंदिरा गाँधी *(1970 ई.)*
शांति जोशी	सुमित्रानंदन पंतः जीवन और साहित्य *(प्रथम खंड–1970 ई; द्वितीय खंड-1977 ई.)*
जगदीश चंद्र माथुर	जिन्होंने जीना जाना *(1954 ई.; 12 प्रसिद्ध व्यक्तियों के चरित-लेख)*
शिव प्रसाद सिंह	उत्तर योगी : श्री अरविंद *(1972 ई.)*
विष्णु प्रभाकर	आवारा मसीहा *(1974 ई.; बांग्ला साहित्यकार शरतचन्द्र की जीवनी)*
विष्णुचंद्र शर्मा	अग्निसेतु *(1976 ई.; बांग्ला के विद्रोही कवि नजरूल इस्लाम के जीवन पर)*, समय साम्यवादी *(1997 ई.; राहुल सांकृत्यायन के जीवन पर)*
राम कमल राय	शिखर से सागर तक *(1986 ई.; अज्ञेय की जीवन-यात्रा)*
शोभाकांत	बाबूजी *(1991 ई.; नागार्जुन के जीवन पर)*
तेज बहादुर चौधरी	मेरे बड़े भाई शमशेर जी *(1995 ई.)*
कमला सांकृत्यायन	महामानव महापंडित *(1995 ई.; राहुल सांकृत्यायन के जीवन पर)*
प्रतिभा अग्रवाल	प्यारे हरिश्चन्द्र जू *(1997 ई.)*
सुलोचना रांगेय राघव	रांगेय राघव : एक अंतरंग परिचय *(1997 ई.)*
मदन मोहन ठाकौर	राजेन्द्र यादव-मार्फत मदन मोहन ठाकौर *(1999 ई.)*
बिन्दु अग्रवाल	स्मृति के झरोखे में *(1999 ई.; भारत भूषण अग्रवाल के जीवन पर)*
महिमा मेहता	उत्सव पुरुष—नरेश मेहता *(2003 ई.)*
कुमुद नागर	वट वृक्ष की छाया में *(2004 ई.; अमृत लाल नागर के जीवन पर)*
ज्ञान चंद जैन	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : एक व्यक्तित्व चित्र *(2004 ई.)*
कृष्ण बिहारी मिश्र	रामकृष्ण परमहंस : कल्पतरू की उत्सव लीला *(2004 ई.)*
गायत्री कमलेश्वर	मेरे हमसफर *(2005 ई.)*

संस्मरण

कृति	कृतिकार
अनुमोदन का अंत *(1905 ई.)*, सभा की सभ्यता *(1907 ई.)*	महावीर प्रसाद द्विवेदी
हरिऔध जी का संस्मरण	बालमुकुंद गुप्त
शिकार *(1936 ई.)*, बोलती प्रतिमा *(1937 ई.)*, भाई जगन्नाथ, प्राणों का सौदा *(1939 ई.)*, जंगल के जीव *(1949 ई.)*	श्रीराम शर्मा
लाल तारा *(1938 ई.)*, माटी की मूरतें *(1946 ई.)*, गेहूँ और गुलाब *(1950 ई.)*, जंजीर और दीवारें (1955 ई.), मील के पत्थर *(1957 ई.)*	रामवृक्ष बेनीपुरी
अतीत के चलचित्र *(1941 ई.)*, स्मृति की रेखाएँ *(1947 ई.)*, पथ के साथी *(1956 ई.)*, क्षणदा *(1957 ई.)*, स्मारिका *(1971 ई.)*	महादेवी वर्मा
तीस दिन : मालवीय जी के साथ *(1942 ई.)*	रामनरेश त्रिपाठी
हमारे आराध्य *(1952 ई.)*	बनारसीदास चतुर्वेदी
जिंदगी मुस्काई *(1953 ई.)*, दीप जले शंख बजे *(1959 ई.)*, माटी हो गई सोना *(1959 ई.)*	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
ये और वे *(1954 ई.)*	जैनेंद्र
बचपन की स्मृतियाँ *(1955 ई.)*, असहयोग के मेरे साथी *(1956 ई.)*, जिनका मैं कृतज्ञ *(1957 ई.)*	राहुल सांकृत्यायन
मंटो : मेरा दुश्मन *(1956 ई.)*, ज्यादा अपनी कम परायी *(1959 ई.)*	'अश्क'
वट-पीपल *(1961 ई.)*	'दिनकर'
समय के पाँव *(1962 ई.)*	माखन लाल चतुर्वेदी
नए-पुराने झरोखे *(1962 ई.)*	'बच्चन'
दस तस्वीरें *(1963 ई.)*, जिन्होंने जीना जाना *(1971 ई.)*	जगदीश चंद्र माथुर
वे दिन वे लोग *(1965 ई.)*	शिवपूजन सहाय
कुछ शब्द : कुछ रेखाएँ *(1965 ई.)*	विष्णु प्रभाकर
चेतना के बिंब *(1967 ई.)*	नगेंद्र
जिनके साथ जिया *(1973 ई.)*	अमृत लाल नागर
स्मृतिलेखा *(1982 ई.)*	'अज्ञेय'

रेखा-चित्र

रेखा-चित्रकार	रेखा-चित्र (प्रकाशन वर्ष)
पद्म सिंह शर्मा	पद्म पराग *(1929 ई.)*
श्रीराम शर्मा	बोलती प्रतिमा *(1937 ई.)*
प्रकाशचंद्र गुप्त	शब्द-चित्र एवं रेखा-चित्र *(1940 ई.)*, पुरानी स्मृतियाँ और नये स्केच *(1947 ई.)*
महादेवी वर्मा	अतीत के चलचित्र *(1941 ई.)*, स्मृति की रेखाएँ *(1947 ई.)*
भदन्त आनंद कौसल्यायन	जो न भूल सका *(1945 ई.)*
रामवृक्ष बेनीपुरी	माटी की मूरतें *(1946 ई.)*, गेहूँ और गुलाब *(1950 ई.)*
देवेंद्र सत्यार्थी	रेखाएँ बोल उठीं *(1949 ई.)*
सत्यवती मल्लिक	अमिट रेखाएँ *(1951 ई.)*
बनारसी दास चतुर्वेदी	रेखाचित्र *(1952 ई.)*
विनय मोहन शर्मा	रेखा और रंग *(1955 ई.)*
उपेन्द्र नाथ अश्क	रेखाएँ और चित्र *(1955 ई.)*
सेठ गोविन्द दास	स्मृति कण *(1959 ई.)*
प्रेम नारायण टण्डन	रेखा-चित्र *(1959 ई.)*
जगदीश चंद्र माथुर	दस तस्वीरें *(1963 ई.)*
रामनाथ सुमन	बाबूराव विष्णु पराड़कर
शिवपूजन सहाय	वे दिन वे लोग *(1965 ई.)*
विष्णु प्रभाकर	कुछ शब्द : कुछ रेखाएँ *(1965 ई.)*
महावीर त्यागी	मेरी कौन सुनेगा
कृष्णा सोबती	हम हशमत *(1977 ई.)*
भीमसेन त्यागी	आदमी से आदमी तक *(1982 ई.)*
राम विलास शर्मा	विराम चिह्न *(1985 ई.)*

यात्रा-वृत्तान्त

यात्रा-वृत्तान्तकार	यात्रा-वृत्तान्त (प्रकाशन वर्ष)
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	सरयू पार की यात्रा, मेहदावल की यात्रा, लखनऊ की यात्रा, हरद्वार की यात्रा *(1871 ई. से 1879 ई. के बीच)*
श्रीमती हरदेवी	लंदन यात्रा *(1883 ई.)*
भगवान दास वर्मा	लंदन का यात्री *(1884 ई.)*
दामोदर शास्त्री	मेरी पूर्व दिग्यात्रा *(1885 ई.)*, मेरी दक्षिण दिग्यात्रा *(1886 ई.)*
तोताराम वर्मा	ब्रजविनोद *(1888 ई.)*
देवी प्रसाद खत्री	रामेश्वरम यात्रा *(1893 ई.)*, बद्रिकाश्रम यात्रा *(1902 ई.)*
बाल कृष्ण भट्ट	गया यात्रा *(1894 ई.)*
प्रताप नारायण मिश्र	विलायत यात्रा *(1897 ई.)*
ठाकुर गदाधर सिंह	चीन में तेरह मास *(1902 ई.)*
स्वामी सत्यदेव परिव्राजक	अमरीका दिग्दर्शन *(1911 ई.)*, मेरी कैलाश यात्रा *(1915 ई.)*, अमरीका भ्रमण *(1916 ई.)*, मेरी जर्मन यात्रा *(1926 ई.)*, यूरोप की सुखद स्मृतियाँ *(1937 ई.)*, अमरीका प्रवास की मेरी अद्भुत कहानी *(1937 ई.)*, मेरी पाँचवीं जर्मनी यात्रा
शिव प्रसाद गुप्त	पृथ्वी प्रदक्षिणा *(1914 ई.)*
गोपालराम गहमरी	लंका यात्रा *(1916 ई.)*
राहुल सांकृत्यायन	मेरी लद्दाख यात्रा *(1916 ई.)*, लंका यात्रावलि *(1927-28 ई.)*, मेरी यूरोप यात्रा *(1932 ई.)*, मेरी तिब्बत यात्रा *(1934 ई.)*, यात्रा के पन्ने *(1934-36 ई.)*, मेरी यूरोप यात्रा *(1935 ई.)*, जापान *(1935 ई.)*, ईरान *(1935-37 ई.)*, तिब्बत में सवा वर्ष *(1939 ई.)*, किन्नर देश में *(1940 ई.)*, रूस में पच्चीस मास *(1944-47 ई.)*, घुमक्कड़ शास्त्र *(1949 ई.)*, एशिया के दुर्गम खण्डों में *(1956 ई.)*, चीन में कम्यून *(1959 ई.)*
जवाहर लाल नेहरू	रूस की सैर *(1929 ई.)*, आँखों देखा रूस *(1953 ई.)*
मौलवी महेश प्रसाद	मेरी ईरान यात्रा *(1930 ई.)*
कन्हैयालाल मिश्र 'आर्योपदेशक'	हमारी जापान यात्रा *(1931 ई.)*, मेरी ईराक यात्रा *(1940 ई.)*
राम नारायण मिश्र	यूरोप यात्रा में छः मास *(1932 ई.)*
गणेश नारायण सोमानी	मेरी यूरोप यात्रा *(1932 ई.)*
प्रो. मनोरंजन	उत्तराखण्ड के पथ पर *(1936 ई.)*
सेठ गोविन्द दास	हमारा प्रधान उपनिवेश *(1938 ई.)*, सुदूर दक्षिण पूर्व *(1951 ई.)*, पृथ्वी परिक्रमा *(1954 ई.)*
संता राम	स्वदेश विदेश यात्रा *(1940 ई.)*
सूर्य नारायण व्यास	सागर प्रवास *(1940 ई.)*
सत्य नारायण	आवारे की यूरोप यात्रा *(1940 ई.)*, युद्ध यात्रा *(1940 ई.)*
राम वृक्ष बेनीपुरी	पैरों में पंख बाँधकर *(1952 ई.)*, उड़ते चलो, उड़ते चलो *(1954 ई.)*

यात्रा-वृत्तान्तकार	यात्रा-वृत्तान्त *(प्रकाशन वर्ष)*
यशपाल	लोहे की दीवार के दोनों ओर *(1953 ई.)*, जय अमरनाथ *(1955 ई.)*, राह बीती *(1956 ई.)*, उत्तराखंड के पथ पर *(1958 ई.)*, स्वर्गोद्यान बिना साँप *(1975 ई.)*
अज्ञेय	अरे यायावर, रहेगा याद ? *(1953 ई.)*, एक बूँद सहसा उछली *(1960 ई.)*
मोहन राकेश	आखिरी चट्टान तक *(1953 ई.)*
भगवत शरण उपाध्याय	कलकत्ता से पीकिंग *(1954 ई.)*, सागर की लहरों पर *(1959 ई.)*
भदंत आनंद कौसल्यायन	आज का जापान
आर.आर. खाडिलकर	हालैण्ड में पच्चीस दिन *(1954 ई.)*, बदलते रूस में *(1958 ई.)*
स्वामी सत्यभक्त	मेरी अफ्रीका यात्रा *(1955 ई.)*
अमृत राय	सुबह के रंग
ब्रज किशोर नारायण	नंदन से लंदन *(1957 ई.)*
दिनकर	देश-विदेश यात्रा *(1957 ई.)*, मेरी यात्राएँ *(1970 ई.)*
भुवनेश्वर प्रसाद 'भुवन'	आँखों देखा यूरोप *(1958 ई.)*
प्रभाकर द्विवेदी	पार उतरि कहँ जइहों *(1958 ई.)*, धूप में सोई नदी *(1976 ई.)*
गोपाल प्रसाद व्यास	अरबों के देश में *(1960 ई.)*
रघुवंश	हरी घाटी *(1961 ई.)*
प्रभाकर माचवे	गोरी नजरों में हम *(1964 ई.)*
निर्मल वर्मा	चीड़ों पर चाँदनी *(1964 ई.)*
बलराज साहनी	रूसी सफरनामा *(1971 ई.)*
डॉ. नगेन्द्र	अप्रवासी की यात्राएँ *(1972 ई.)*
शंकर दयाल सिंह	गाँधी के देश से लेनिन के देश में *(1973 ई.)*
श्रीकांत वर्मा	अपोलो का रथ *(1975 ई.)*
कमलेश्वर	खण्डित यात्राएँ *(1975 ई.)*, कश्मीर : रात के बाद *(1997 ई.)*, आँखों देखा पाकिस्तान *(2006 ई.)*
गोविन्द मिश्र	धुंध भरी सुर्खी *(1979 ई.)*, दरख्तों के पार शाम *(1980 ई.)*, झूलती जड़ें *(1990 ई.)*, परतों के बीच *(1997 ई.)*
कन्हैया लाल नंदन	धरती लाल गुलाबी चेहरे *(1982 ई.)*
विष्णु प्रभाकर	ज्योति पुंज हिमालय *(1982 ई.)*, हमसफर मिलते रहे *(1996 ई.)*
अजित कुमार	सफरी झोले में *(1958 ई.)*, यहाँ से कहीं भी *(1997 ई.)*
राजेन्द्र अवस्थी	हवा में तैरते हुए *(1986 ई.)*
राम दरश मिश्र	तना हुआ इन्द्रधनुष *(1990 ई.)*, भोर का सपना *(1993 ई.)*, पड़ोस की खुशबू *(1999 ई.)*
धर्मवीर भारती	यात्रा चक्र *(1995 ई.)*
शिव प्रसाद सिंह	मदजा पत्र कथा कहे *(1996 ई.)*
दिनेश आलोक	लिबर्टी के देश में *(1997 ई.)*
वल्लभ डोभाल	आधी रात का सफर *(1998 ई.)*
हिमांशु जोशी	यातना शिविर में *(1998 ई.)*
कृष्णदत्त पालीवाल	जापान में कुछ दिन *(2003 ई.)*
नरेश मेहता	कितना अकेला आकाश *(2003 ई.)*
नासिरा शर्मा	जहाँ फव्वारे लहू रोते है *(2003 ई.)*
मनोहर श्याम जोशी	क्या हाल हैं चीन के *(2006 ई.)*, पश्चिमी जर्मनी पर उड़ती नजर *(2006 ई.)*

रिपोर्ताज़

रचनाकार	रिपोर्ताज *(प्रकाशन वर्ष)*
शिवदान सिंह चौहान	लक्ष्मीपुरा *(1938 ई., 'रूपाभ' पत्रिका में प्रकाशित होने वाली रिपोर्ट)*
रांगेय राघव	तूफानों के बीच *(1946 ई., 'हंस' पत्रिका में बंगाल के अकाल से संबंधित रिपोर्टों का पुस्तकाकार संकलन)*
भदंत आनंद कौसल्यायन	देश की मिट्टी बुलाती है
शमशेर बहादुर सिंह	प्लाट का मोर्चा *(1952 ई.)*
कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	क्षण बोले कण मुस्काए *(1953 ई.)*
शिव सागर मिश्र	वे लड़ेंगे हजारों साल *(1966 ई.)*
धर्मवीर भारती	युद्ध यात्रा *(1972 ई.)*
विवेकी राय	जुलूस रुका है *(1977 ई.)*
फणीश्वरनाथ 'रेणु'	ऋण जल धन जल *(1977 ई.)*, नेपाली क्रांति कथा *(1978 ई.)*, श्रुत-अश्रुत पूर्व *(1984 ई.)*

भाषेतिहास

भाषेतिहासकार	भाषेतिहास
धीरेन्द्र वर्मा *(1897–1973 ई.)*	हिन्दी भाषा का इतिहास *(1933 ई.)*
उदय नारायण तिवारी *(1903–1984 ई.)*	हिन्दी भाषा का उद्‌गम और विकास *(1955 ई.)*
हरदेव बाहरी *(1907–2000 ई.)*	हिन्दी : उद्‌भव, विकास और रूप *(1965 ई.)*
भोलानाथ तिवारी *(1922–1989 ई.)*	हिन्दी भाषा *(1966 ई.)*

शोध-प्रबंध

शोध-प्रबंधकार	शोध-प्रबंध
धीरेन्द्र वर्मा *(1897–1973 ई.)*	ला लाँग ब्रज *(फ्रेंच भाषा में, 1935 ई. हिन्दी में अनुवाद—'ब्रजभाषा' नाम से)*
बाबू राम सक्सेना *(1897–1988 ई.)*	दि इवॉल्यूशन ऑफ अवधी *(अंग्रेजी भाषा में, 1938 ई., हिन्दी में अनुवाद—'अवधी का विकास' नाम से)*
उदय नारायण तिवारी *(1903–1984 ई.)*	ऑरिजिन एण्ड डेवलपमेण्ट ऑफ भोजपुरी *(अंग्रेजी भाषा में, 1946 ई.; हिन्दी में अनुवाद—'भोजपुरी भाषा का उद्‌गम और विकास' नाम से)*
फादर कामिल बुल्के (1909–1982 ई.)	*रामकथा : उत्पत्ति और विकास (हिन्दी भाषा में प्रस्तुत हिन्दी का प्रथम शोध-प्रबंध, 1949 ई.)*
नामवर सिंह *(जन्म–1927 ई.)*	हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग *(हिन्दी भाषा में, 1952 ई.)*

साहित्येतिहास

साहित्येतिहासकार	साहित्येतिहास
गाँर्सा-द-तासी *(1794–1878 ई.)*	इस्तवार द ला लितरेच्यूर ऐन्दुई ऐ ऐन्दुस्तानी *(फ्रेंच भाषा में लिखा गया हिंदी साहित्य का पहला इतिहास)* दो भागों में—1839 ई० व 1847 ई०
ठाकुर शिवसिंह सेंगर *(1833–78 ई.)*	शिवसिंह सरोज *(हिंदी भाषा में लिखा गया हिंदी साहित्य के इतिहास का पहला ग्रंथ, 1000 कवियों का परिचय)* 1878 ई०
जॉर्ज ए० ग्रियर्सन *(1851–1941 ई.)*	माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दोस्तान, 1889 *(काल-विभाजन व नामकरण का सर्वप्रथम प्रयास किया गया)* प्रथम प्रकाशन—एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की पत्रिका के विशेषांक के रूप में 1888 ई० में।

साहित्येतिहासकार	साहित्येतिहास
मिश्रबंधु *[(गणेश बिहारी मिश्र (1880–1939 ई.), श्याम बिहारी मिश्र (1874–1947 ई.) व शुकदेव बिहारी मिश्र (1878–1951 ई.)]*	मिश्रबंधु विनोद प्रथम तीन भाग—1913, चतुर्थ भाग—1934 [5000 कवियों का परिचय ('बड़ा भारी कवि वृत संग्रह'—आचार्य शुक्ल के शब्दों में), सूचनाओं का अपार भंडार, परवर्ती साहित्येतिहासकारों के लिए कच्चे माल का खजाना]
एडविन ग्रीव्स *(1854–1941 ई.)*	ए स्केच ऑफ हिन्दी लिटरेचर (हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास) 1918 ई०
एफ. ई. के. *(1870–1974 ई.)*	ए हिस्ट्री ऑफ हिन्दी लिटरेचर (हिन्दी साहित्य का परिचय मात्र) 1920 ई०
रामचंद्र शुक्ल *(1884–1941 ई.)*	हिंदी साहित्य का इतिहास *(1000 कवियों का परिचय दिया गया है)* 1929, संवर्द्धित संस्करण : 1940
डॉ० रामकुमार वर्मा *(1905–90 ई.)*	हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास *(1938 ई., 693 ई. से 1693 ई. तक की कालावधि का इतिहास)*
हजारी प्रसाद द्विवेदी *(1907–79 ई.)*	हिंदी साहित्य की भूमिका *(1940 ई.)*, हिन्दी साहित्य का आदिकाल *(1952 ई.)*, हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास *(1953 ई.)*
लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय *(जन्म – 1914 ई.)*	आधुनिक हिन्दी साहित्य *(1941 ई.)*, आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका *(1952 ई.)*
नंददुलारे वाजपेयी *(1906–67 ई.)*	हिंदी साहित्य : बीसवीं शताब्दी *(1942 ई.)*, आधुनिक साहित्य *(1950 ई.)*
राहुल सांकृत्यायन *(1893–1963 ई.)*	हिंदी काव्यधारा, *(1944 ई.)*, दक्खिनी हिन्दी काव्यधारा *(1952 ई.)*
नामवर सिंह *(जन्म – 1927 ई.)*	आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ *(1954 ई.)*
विश्वनाथ प्रसाद मिश्र *(1906–82 ई.)*	हिंदी साहित्य का अतीत प्रथम भाग : 1939 ई., द्वितीय भाग : 1960 ई.
गणपतिचंद्र गुप्त *(जन्म–1928 ई.)*	हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास *(दो भाग)* : 1965 ई.
'अज्ञेय' *(1911–87 ई.)*	हिंदी साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य *(1967 ई.)*
डॉ० नगेंद्र *(1915–99 ई.)*	हिंदी साहित्य का इतिहास *(संपादन)* : 1973 ई., हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास *(नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित)* : 6ठे एवं 10वें भाग का संपादन डॉ० नगेंद्र द्वारा
राममूर्ति त्रिपाठी *(1929–2009 ई.)*	हिंदी साहित्य का इतिहास
शिवकुमार शर्मा	हिंदी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ
प्रो० महेंद्र कुमार	हिंदी साहित्य का उत्तर मध्यकाल
प्रभाकर माचवे *(1919–91 ई.)*	हिंदी साहित्य की कहानी
रामस्वरूप चतुर्वेदी *(1931–2003 ई.)*	हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास *(1986 ई०)*
विजयेन्द्र स्नातक *(1914–98 ई.)*	हिंदी साहित्य का इतिहास *(1996 ई०)*
बच्चन सिंह *(1919–2008 ई.)*	हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास *(1996 ई०)*
सुमन राजे *(1938–2008 ई.)*	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास *(2003 ई०)*

प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ

1. बंगाल गजट/कलकत्ता जनरल एडवर्टाइजर/हिक्की गजट : 29 जनवरी, 1780, साप्ताहिक *(अंग्रेजी में)*. संपादक : जेम्स आगस्टस हिक्की, भारत का प्रथम समाचारपत्र
2. उदंत मार्तण्ड : 30 मई, 1826, साप्ताहिक, कलकत्ता से प्रकाशित, संपादक : पं० जुगलकिशोर शुक्ल, प्रथम हिंदी पत्र *(चूँकि हिन्दी का पहला समाचार-पत्र 'उदंत मार्तण्ड' 30 मई 1826 को प्रकाशित हुआ था इसलिए 30 मई को 'हिन्दी पत्रकारिता दिवस' के रूप में मनाया जाता है।)*
3. बंगदूत : 1829, साप्ताहिक, कलकत्ता, संपादक : राजा राममोहन राय, एकसाथ चार भाषाओं—बांग्ला, हिन्दी उर्दू व अंग्रेजी में छपनेवाला पत्र।
4. बनारस अखबार : 1849, काशी से प्रकाशित, संपादक : राजा शिवप्रसाद 'सितारे-हिंद', हिन्दी प्रदेश से प्रकाशित पहला हिंदी समाचारपत्र
5. समाचार-सुधावर्षण : 1854, कलकत्ता से प्रकाशित, संपादक : श्यामसुंदर सेन, प्रथम हिंदी दैनिक पत्र
6. प्रजा हितैषी : 1855, आगरा से प्रकाशित, संपादक : राजा लक्ष्मणसिंह
7. तत्त्वबोधिनी पत्रिका : 1865, मासिक, बरेली, संपादक : गुलाब शंकर
8. वृत्तांत विलास : 1867, मासिक, जम्मू से प्रकाशित
9. कविवचन सुधा : 15 अगस्त, 1867, मासिक पत्रिका, काशी, संपादक : भारतेंदु हरिश्चंद्र
10. हरिश्चंद्र मैगजीन *(हरिश्चंद्र पत्रिका)* : 1873, बनारस, संपादक : भारतेंदु हरिश्चंद्र
11. बालाबोधिनी : 1874, मासिक पत्रिका, बनारस, संपादक : भारतेंदु हरिश्चंद्र, केवल महिलाओं के लिए
12. सदादर्श : 1874, साप्ताहिक, दिल्ली, सं. : लाला श्रीनिवास दास
13. हिंदी प्रदीप : 1877, मासिक, इलाहाबाद, संपादक : बालकृष्ण भट्ट
14. भारत मित्र : 1877, साप्ताहिक, संपादक : बालमुकुंद गुप्त
15. ब्राह्मण : 1880, मासिक, कानपुर, संपादक : प्रतापनारायण मिश्र
16. आनंद कादंबिनी : 1881 ई०, मासिक, मिर्जापुर, संपादक : बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'
17. भारतेंदु : 1883, वृंदावन, संपादक : राधाचरण गोस्वामी
18. द्वंद्व : 1883, मासिक, लाहौर, संपादक : अंबिकादत्त व्यास
19. भारतोदय : 1885, कानपुर से प्रकाशित, संपादक : सीताराम शर्मा, दूसरा हिंदी दैनिक
20. (i) अखबारे चुनार : 1866, चुनार, संपादक : बालमुकुंद गुप्त, उर्दू का पत्र
    (ii) कोहिनूर : 1888, लाहौर, संपादक : बालमुकुंद गुप्त, उर्दू का पत्र
21. नागरी नीरद : 1893, साप्ताहिक, मिर्जापुर, संपादक : बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'
22. नागरीप्रचारिणी पत्रिका : 1896, त्रैमासिक, काशी, संस्थापक : श्यामसुंदरदास, रामनारायण मिश्र, शिवकुमार सिंह

23. उपन्यास : 1898, काशी, मासिक, संपादक : पं० किशोरीलाल गोस्वामी;
24. सरस्वती : 1900, मासिक, इलाहाबाद *(प्रारंभ में काशी से)*; संपादक : श्याम सुन्दर दास व चार अन्य *(1900-03)*, महावीर प्रसाद द्विवेदी *(1903-20)*, पं० देवीदत्त शुक्ल *(1920–47)*, प्रकाशन काल : *(1900–82)*
25. सुदर्शन : 1900, मासिक, काशी, संपादक : देवकीनंदन खत्री, माधवप्रसाद मिश्र
26. समालोचक : 1902, जयपुर, संपादक : चंद्रधर शर्मा गुलेरी
27. अभ्युदय : 1907, साप्ताहिक, प्रयाग, संपादक : मदनमोहन मालवीय
28. इन्दु : 1909, मासिक, वाराणसी, सं. : अम्बिका प्रसाद गुप्त, रूप नारायण पाण्डेय; जयशंकर प्रसाद की आरंभिक रचनाओं को प्रकाशित करने का श्रेय।
29. मर्यादा : 1910, 1921-23, मासिक, वाराणसी, सं.: कृष्णकांत मालवीय, पद्मकांत मालवीय, लक्ष्मीधर बाजपेयी।
30. प्रताप : 1913, साप्ताहिक, कानपुर से प्रकाशित, संपादक : गणेश शंकर विद्यार्थी
31. प्रभा : 1913, मासिक, खण्डवा *(कानपुर)*, संपादक : कालूराम, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', माखनलाल चतुर्वेदी
32. श्री शारदा : 1916, मासिक, जबलपुर, सं. : नर्मदा प्रसाद मिश्र, द्वारिका प्रसाद मिश्र, सालग्राम द्विवेदी, संरक्षक : सेठ गोविन्द दास; छायावाद युग का श्रेष्ठ पत्र, इसने 1920 में छायावाद संबंधी लेखमाला प्रकाशित कर छायावाद को सर्वप्रथम मान्यता प्रदान की।
33. कर्मवीर : 1919, जबलपुर, साप्ताहिक, संपादक : माखनलाल चतुर्वेदी
34. चाँद : 1920, साप्ताहिक *(बाद में मासिक)*, प्रयाग, संपादक : रामरख सहगल, चंडीप्रसाद, महादेवी वर्मा
35. हिंदी नवजीवन : 1921, साप्ताहिक, अहमदाबाद, संपादक : महात्मा गाँधी
36. समन्वय : 1922, मासिक, कलकत्ता, माधवानंद के संपादकत्व में आरंभ, बाद में 'निराला' द्वारा संपादन
37. माधुरी : 1922, लखनऊ, संपादक : प्रेमचंद
38. मतवाला : 1923, साप्ताहिक, कलकत्ता से प्रकाशित, संपादक : 'निराला'
39. वीणा : 1927, मासिक, श्री मध्य भारत हिन्दी साहित्य, इन्दौर, प्रथम संपादक : पंडित अम्बिका प्रसाद, वर्तमान संपादक : विनायक पाण्डेय त्रिपाठी, हिन्दी में निकलनेवाली पत्रिकाओं में सबसे प्राचीन पत्रिका
40. विशाल भारत : 1928, मासिक, कलकत्ता से प्रकाशित, संपादक : बनारसीदास चतुर्वेदी, 'अज्ञेय', श्रीराम शर्मा
41. सुधा : 1929, मासिक, लखनऊ, संपादक : दुलारेलाल भार्गव, 'निराला'
42. हंस : 1930, मासिक, बनारस, संपादक : प्रेमचंद
43. हिन्दुस्तानी : 1931, त्रैमासिक, इलाहाबाद, सं. : रामचंद्र टंडन; हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद का मुखपत्र।
44. जागरण : 1932, साप्ताहिक, बनारस, प्रेमचंद, छायावाद का घोर समर्थक पत्र
45. भारत : 1933, अर्द्ध साप्ताहिक, इलाहाबाद से प्रकाशित, संपादक : नंददुलारे वाजपेयी
46. साहित्य-संदेश : 1937, मासिक, आगरा, संपादक : बाबू गुलाबराय
47. रूपाभ : 1938, मासिक पत्र, संपादक : पंत
48. हिन्दी अनुशीलन : 1943, त्रैमासिक, प्रयाग, सं. : धीरेन्द्र वर्मा; भारतीय हिन्दी परिषद, प्रयाग का मुख पत्र।
49. प्रतीक : 1947, द्विमासिक, इलाहाबाद, संपादक : 'अज्ञेय'
50. कल्पना : 1949, द्विमासिक, हैदराबाद, संपादक : आर्येन्द्र शर्मा
51. धर्मयुग : 1950, साप्ताहिक, बंबई, संपादक : धर्मवीर भारती
52. आलोचना : 1951, त्रैमासिक, दिल्ली, संपादक : शिवदान सिंह चौहान, चार सदस्यीय संपादकमंडल *(धर्मवीर भारती, रघुवंश, व्रजेश्वर वर्मा व विजयदेव नारायण साही)*, नामवर सिंह
53. वसुधा : 1953, मासिक, जबलपुर, सं. : राजेश्वर प्रसाद गुरु, हरिशंकर परसाई; प्रलेस का मुखपत्र मुक्तिबोध की रचनाएँ पहली बार इसी पत्रिका में प्रकाशित हुई।
54. नये पत्ते : 1953, इलाहाबाद, संपादक : लक्ष्मीकान्त वर्मा
55. नयी कविता : 1954, अर्द्धवार्षिक, इलाहाबाद, संस्थापक-संपादक : जगदीश गुप्त
56. ज्ञानोदय : 1955, मासिक, कलकत्ता, संपादक : कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
57. निकष : 1956, साप्ताहिक, इलाहाबाद, संपादक : धर्मवीर भारती
58. कृति : 1958, दिल्ली, संपादक : नरेश मेहता, श्रीकांत वर्मा
59. समालोचक : 1958, मासिक पत्र, आगरा से प्रकाशित, संपादक : रामविलास शर्मा
60. पहल : 1960, त्रैमासिक, जयपुर, संपादक : ज्ञानरंजन
61. क ख ग : 1963, त्रैमासिक, इलाहाबाद, संपादक : रघुवंश
62. माध्यम : 1964, मासिक, प्रयाग/इलाहाबाद, सं. : बालकृष्ण राव।
63. दिनमान : 1965, साप्ताहिक, दिल्ली, संपादक : रघुवीर सहाय
64. संचेतना : 1967, त्रैमासिक, दिल्ली, सं.: महीप सिंह; उच्च स्तरीय लघु पत्र।
65. समीक्षा : 1968, त्रैमासिक *(बाद में मासिक)*, पटना, सं. : देवेन्द्र नाथ शर्मा, गोपाल राय।
66. कथा : 1972, त्रैमासिक *(बाद में मासिक)*, इलाहाबाद, सं.: मार्कण्डेय।
67. पूर्वग्रह : 1974, मासिक, भोपाल, संपादक : अशोक बाजपेयी
68. साक्षात्कार : 1976, त्रैमासिक, भोपाल, सं. : ज्ञानी; म. प्र. साहित्य परिषद्, भोपाल का मुखपत्र।
69. दस्तावेज़ : 1978, गोरखपुर, सं. : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
70. अभिप्राय : 1981, इलाहाबाद, सं. : राजेन्द्र कुमार
71. समकालीन जनमत : 1981, पटना / इलाहाबाद, सं. : रामजी राय।
72. वर्तमान साहित्य : 1984, मासिक, इलाहाबाद, संपादक : विभूति नारायण
73. हंस *(पुनर्प्रकाशन)* : 1986, मासिक, दिल्ली, संपादक : राजेन्द्र यादव

74. वागर्थ : जून 1995, मासिक, कलकत्ता, सं. : प्रभाकर श्रोत्रिय।
75. साहित्य अमृत : अगस्त 1995, मासिक, नई दिल्ली, सं. : पं. विद्यानिवास मिश्र।
76. कथादेश : 1997, मासिक, दिल्ली, संपादक : हरि नारायण
77. तद्भव : मार्च 1999, लखनऊ, सं. : अखिलेश।
78. कसौटी : अप्रैल जून 1999, त्रैमासिक, पटना, सं. : नंदकिशोर नवल।
79. बहुवचन : अक्तू दिसम्बर 1999, त्रैमासिक, वर्धा, सं. : अशोक बाजपेयी; महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा का पत्र।
80. कथाक्रम : 2000, त्रैमासिक, लखनऊ, सं. : शैलेन्द्र सागर
81. परख : 2000, इलाहाबाद, सं. : कृष्ण मोहन
82. सधान : अप्रैल-जून 2001, त्रैमासिक, इलाहाबाद / दिल्ली, सं. : लाल बहादुर वर्मा
83. पुस्तक वार्ता : 2001, द्वैमासिक, वर्धा, सं.: राकेश श्रीमाल; महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा का पत्र।
84. नया ज्ञानोदय : 2002, मासिक, नई दिल्ली, सं. : रवीन्द्र कालिया; भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली का पत्र।
85. वाक् : 2007, त्रैमासिक, नई दिल्ली, सं. : सुधीश पचौरी।
86. पाखी : सितम्बर 2008, मासिक, नोएडा (उ. प्र.), सं. : अपूर्व जोशी।
87. पुस्तक संस्कृति : जनवरी-मार्च 2016, त्रैमासिक, नई दिल्ली से बलदेव भाई शर्मा, एन. बी. टी. नई दिल्ली की पत्रिका

प्रमुख स्थापनाएँ

फोर्ट विलियम कालेज, कलकता	4 मई, 1800 ई०
कवितावर्धिनी सभा, काशी	*1870 ई. (संस्थापक-भरतेन्दु हरिश्चन्द्र)*
हिन्दी (भाषा) संवर्द्धिनी सभा, अलीगढ	1874 ई० *(संस्थापक-भारतेन्दु मंडल के एक सदस्य बाबू तोताराम वर्मा)*
हिन्दी उद्धारिणी प्रतिनिधि मध्य सभा, प्रयाग	1884 ई०
नागरी प्रचारिणी सभा, काशी	16 जुलाई, 1893 ई० *(संस्थापक-श्याम सुंदर दास, राम नारायण मिश्र व शिव कुमार सिंह)*
सरस्वती (पत्रिका), काशी *(बाद में इलाहाबाद से प्रकाशन)*	1900 ई० *(संस्थापक-चिंतामणि घोष)*
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग	1910 ई० *(प्रथम सभापति-मदन मोहन मालवीय)*
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार संस्था, मद्रास	1915 ई० *(संस्थापक-महात्मा गाँधी)*
अखिल भारतीय संगीत परिषद	1919 ई०
प्रगतिशील लेखक संघ (प्रलेसं)	9 अप्रैल, 1936 ई० *(प्रथम अधिवेशन-लखनऊ, प्रथम सभापति-प्रेमचंद)*
इंडियन पीपुल्स थियेटर एसोसिएशन (IPTA)	25 मई, 1942 ई०
परिमल, इलाहाबाद *(नये लेखकों की संस्था)*	10 दिसम्बर, 1944 ई० *(संस्थापक-डॉ. रघुवंश, लक्ष्मीकांत वर्मा, विजयदेव नारायण साही, धर्मवीर भारती व जगदीश गुप्त) प्रलेसं के जवाब में स्थापित संस्था*
संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली	28 जनवरी, 1953 ई० *(भारत सरकार द्वारा)*
साहित्य अकादमी, नई दिल्ली	12 मार्च, 1954 ई० *(भारत सरकार द्वारा)*
राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (NSD), नई दिल्ली	1959 ई०
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा (उ प्र.)	1962 ई० *(भारत सरकार द्वारा)*
जनवादी लेखक संघ (जलेसं), नई दिल्ली	फरवरी, 1982 ई०
जन संस्कृति मंच (जसम), नई दिल्ली	26 अक्तूबर, 1985 ई०
महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा *(महाराष्ट्र)*	1997 ई०

प्रमुख वाद

वाद	प्रवर्तक
संस्कृत काव्यशास्त्र	
रस-संप्रदाय	भरत मुनि
अलंकार-संप्रदाय	भामह, मम्मट
रीति-संप्रदाय	दण्डी, वामन
ध्वनि-संप्रदाय	आनंदवर्धन
वक्रोक्ति-संप्रदाय	कुन्तक
औचित्य-संप्रदाय	क्षेमेन्द्र
हिन्दी काव्यशास्त्र	
रीतिवाद	केशवदास *(शुक्ल के अनुसार चिंतामणि)*
स्वच्छंदतावाद	श्रीधर पाठक
छायावाद	जय शंकर प्रसाद
हालावाद	हरिवंश राय 'बच्चन'
प्रयोगवाद	'अज्ञेय'
प्रपद्यवाद या नकेनवाद	नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार, नरेश रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'
मांसलवाद	ओंकार नाथ त्रिपाठी
कैप्सूलवाद	
पाश्चात्य काव्यशास्त्र	
औदात्यवाद	लोंजाइनस *(3री सदी ई०)*
अस्तित्ववाद	सॉरिन कीर्कगार्द *(1813-55)*
मार्क्सवाद	कार्ल मार्क्स *(1818-83)*
मनोविश्लेषणवाद	फ्रॉयड *(1856-1939)*
प्रतीकवाद	जीन मोरियस *(1856-1910)*
अभिव्यंजनावाद	बेनदेतो क्रोचे *(1866-1952)*
बिम्बवाद	टी०ई० ह्यूम *(1883-1917)*

प्रमुख दर्शन

दर्शन	प्रवर्तक
सांख्य	कपिल
योग	पतंजलि
न्याय	अक्षपाद गौतम
वैशेषिक	उलूक कणद
मीमांसा/पूर्व-मीमांसा	जैमिनी
वेदांत/उत्तर मीमांसा	बादरायण
लोकायत/बार्हस्पत्य	चार्वाक *(बृहस्पति का शिष्य)*
बौद्ध/क्षणिकवाद	गौतम बुद्ध
जैन/स्यादवाद	महावीर
अद्वैत मत *(स्मृति/स्मार्त संप्रदाय)*	शंकराचार्य *(भक्ति आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार करने वाला)*
विशिष्टाद्वैत मत *(श्री संप्रदाय)*	रामानुज आचार्य *(भक्ति आंदोलन का प्रारंभिक प्रतिपादक)*

दर्शन	प्रवर्तक
द्वैताद्वैत/भेदाभेद मत *(सनकादि/ नंबिक संप्रदाय)*	निम्बार्क आचार्य
द्वैत मत *(ब्रह्म संप्रदाय)*	मध्व आचार्य
शुद्धाद्वैत मत *(रूद्र संप्रदाय)*	विष्णु स्वामी
पुष्टिमार्ग/शुद्धाद्वैत मत *(रूद्र संप्रदाय)*	वल्लभ आचार्य
अचित्यभेदाभेद मत *(गौड़ीय वैष्णव संप्रदाय)*	चैतन्य
राधा वल्लभ संप्रदाय	हित हरिवंश
रामावत/रामानंदी संप्रदाय	रामानंद
कबीर पंथी संप्रदाय	कबीर
सिख मत *(नानक पंथी संप्रदाय)*	नानक
उदासी संप्रदाय	श्रीचंद *(गुरु नानक के पुत्र)*
बिश्नुई संप्रदाय	जंभनाथ
हरिदासी *(सखी)* संप्रदाय	स्वामी हरिदास

प्रमुख गुरु/ शिष्य

गुरु	शिष्य
गोविन्द योगी	शंकराचार्य
मत्स्येंद्रनाथ/मछंदर नाथ	गोरखनाथ
यादव प्रकाश	रामानुज आचार्य
नारद मुनि	निम्बार्क आचार्य
राघवानंद	रामानंद
रामानंद	12 प्रसिद्ध शिष्य—अनंतादास, सुखानंद, सुरसुरानंद, नरहयानंद, भावानंद, पीपा *(राजपूत राजा)*, कबीर *(जुलाहा)*, सेना *(नाई)*, धन्ना *(जाट किसान)*, रैदास *(चमार)*, पद्मावती, सुरसरी
विष्णु स्वामी	वल्लभाचार्य
वल्लभाचार्य	सूरदास
रैदास	मीराबाई
बाबा नरहरिदास	तुलसीदास
अग्रदास	नाभादास
शेख मोहिदी	जायसी
हाजी बाबा	उसमान
महावीर प्रसाद द्विवेदी	मैथिली शरण गुप्त, प्रेमचंद, 'निराला'

प्रमुख उपनाम

मूल नाम	उपनाम/लोकप्रिय नाम/छद्म नाम
वाल्मीकि	आदि कवि
स्वयंभू	अपभ्रंश का बाल्मीकि
सरहपा	हिन्दी का प्रथम कवि
अमीर खुसरो	हिन्दुस्तान की तूती/हिन्द-इस्लामी समन्वित संस्कृति का प्रतिनिधि
विद्यापति	मैथिल कोकिल/अभिनव जयदेव
असाइत	प्रथम सूफी कवि
मलिक मुहम्मद	जायसी
सूरदास	अष्टछाप का जहाज/पुष्टिमार्ग का जहाज/ खंजन नयन/भावाधिपति/वात्सल्य रस सम्राट
नंददास	जड़िया कवि
सैयद इब्राहिम	रसखान
तुलसीदास	कवि शिरोमणि/मानस का हंस/लोक नायक/हिन्दी का जातीय कवि
तुलसी और गंग	सुकविन के सरदार
अब्दुर्रहीम 'खानेखाना'	रहीम
नरहरि बंदीजन	महापात्र
महेश दास	ब्रह्म /बीरबल
केशवदास	कठिन काव्य का प्रेत
मतिराम	पुराने पंथ के पथिक
घनानंद	प्रेम की पीर का कवि/ साक्षात रसमूर्ति/ जबाँदानी का दावा रखनेवाला कवि
भिखारीदास	दास
सैयद गुलाम नबी	रसलीन
महाराज सावंत सिंह	नागरीदास
सदासुख लाल	नियाज
जगन्नाथ दास	रत्नाकर
राजा शिव प्रसाद	सितारे-हिन्द/भारतेन्दु के विद्यागुरु
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	हिन्दी नवजागरण का अग्रदूत/नवयुग के अग्रदूत/हिन्दी साहित्य में आधुनिकता के जन्मदाता/रसा
बदरी नारायण चौधरी	प्रेमघन
महावीर प्रसाद द्विवेदी	भुजंगभूषण भट्टाचार्य/सुकवि किंकर/कल्लू अल्हइत/नियम नारायण शर्मा
नाथूराम शर्मा	कविता-कामिनी कांत/भारतेन्तु-प्रज्ञेन्दु/ साहित्य-सुधाकर/शंकर
अयोध्या सिंह उपाध्याय	कवि सम्राट/हरिऔध
राय देवी प्रसाद	पूर्ण
गया प्रसाद शुक्ल	सनेही/त्रिशूल
मैथिलीशरण गुप्त	प्रथम राष्ट्रकवि/दद्दा
बाल मुकुंद गुप्त	शिवशंभु
लाला भगवानदीन	दीन
सत्य नारायण	कविरत्न
जयशंकर प्रसाद	झारखण्डी/कलाधर/आधुनिक कविता के सुमेरु
सूर्यकांत त्रिपाठी	निराला/महाप्राण
सुमित्रा नंदन पंत	प्रकृति का सुकुमार कवि/गोसाईं दत्त/ साईदा/नन्दिनी/एक निहत्था/सुधाकर प्रिय/ रावणार्यनुज/मोती/नंदनजी/नयन/लक्ष्मण/ मुकुल
महादेवी वर्मा	आधुनिक युग की मीरा
माखन लाल चतुर्वेदी	एक भारतीय आत्मा
मोहन लाल महतो	वियोगी
जनार्दन प्रसाद झा	द्विज
वैद्यनाथ मिश्र	नागार्जुन/यात्री/जनकवि
त्र्यंबक वीर राघवाचार्य	रांगेय राघव
रामधारी सिंह	दिनकर
बालकृष्ण शर्मा	नवीन
शिव मंगल सिंह	सुमन
गोपाल शरण सिंह	नेपाली
हरिवंश राय बच्चन	हालावादी कवि
सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन	अज्ञेय/कठिन गद्य का प्रेत/कुट्टि चातन
नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार व नरेश *(नाम के आदि अक्षर न के न से बनाया गया नामकरण)*	नकेन
शमशेर बहादुर सिंह	कवियों का कवि
फैंटसी का कवि/मुक्तिबोध	
सुदामा पांडे	धूमिल
कुमार विकल	धूम्रधर्मी कविताओं का कवि
धनपत राय	प्रेमचंद/उपन्यास सम्राट/कहानी सम्राट/ कलम का सिपाही/कलम का मजदूर/भारत का मैक्सिम गोर्की

मूल नाम	उपनाम/लोकप्रिय नाम/छद्म नाम
वृंदावन लाल वर्मा	बुंदेलखंड का चंदबरदाई
शिव पूजन सहाय	शिव
पाण्डेय बेचन शर्मा	उग्र
उपेन्द्र नाथ	अश्क
रामेश्वर शुक्ल	अंचल/मांसलवादी
विश्वंभर नाथ शर्मा	कौशिक
चण्डी प्रसाद	हृदयेश
फणीश्वर नाथ	रेणु
चन्द्रधर शर्मा	गुलेरी
राजेन्द्र बाला घोष	बंग महिला
शरतचंद्र	आवारा मसीहा
हरिकृष्ण	प्रेमी
विद्यानिवास मिश्र	भ्रमरानंद/परंपरा जीवी
वियोगी हरि	गद्य-काव्य का लेखक
गणेश बिहारी मिश्र, श्याम मिश्रबंधु	
बिहारी मिश्र व शुकदेव	
बिहारी मिश्र	
रामचंद्र शुक्ल	मुनि मार्ग के हिमायती
नंद दुलारे वाजपेयी	मौष्ठववादी/स्वच्छंदतावादी आलोचक
डॉ० नगेन्द्र	रसवादी आलोचक
नेमिचंद्र जैन	आलोचकों का आलोचक
किशोरीदास बाजपेयी	हिन्दी के पाणिनी
राम विलास शर्मा	अगिया वैताल/निरंजन
दुष्यंत कुमार	हिन्दी गजलों के राजकुमार

प्रमुख तिथि / वर्ष

ईस्वी पूर्व (ई.पू.)

750 *लौकिक संस्कृत* का क्रमिक विकास।

500 बौद्ध व जैन प्राकृत-ग्रंथों का उद्भव *(पूर्वी भारत)*।

400 *पाणिनी* द्वारा 'अष्टाध्यायी' *(संस्कृत व्याकरण)* का प्रचलन *(पश्चिमी भारत)*, जिसमें वैदिक संस्कृत से पाणिनीय संस्कृत (लौकिक संस्कृत) में स्वरूप परिवर्तन की झलक मिलती है।

322 मौर्य सम्राटों के प्राकृत *(पालि)* भाषा में उत्कीर्ण ब्राह्मी लिपि के शिलालेख।

ईस्वी (ई.)

320 गुप्त लिपि का उद्भव *(ब्राह्मी की उत्तरी शैली से)* जोकि 5वीं सदी ई. तक प्रयुक्त होती रही।

400 *कालिदास* प्रणीत ग्रंथ 'विक्रमोर्वशीयम्' में अपभ्रंश का प्रयोग।

550 *वल्लभी नरेश धरसेन* के शिलालेख में अपभ्रंश साहित्य *(विशेषतः प्रबंध रचना)* का उल्लेख।

769 *सिद्ध कवि सरहपा (जो हिन्दी के सर्वप्रथम कवि माने जाते हैं)* द्वारा 'दोहाकोश' की रचना।

779 *'कुवलयमालाकहा'* में *उद्योतन सूरि* द्वारा प्रांतीय भाषाओं का प्रयोग।

933 *जैन कवि देवसेन* द्वारा *'श्रावकाचार' (जिसे हिन्दी का प्रथम ग्रंथ माना जाता है)* की रचना।

1088-1172 *'शब्दानुशासन'* के रचयिता *आचार्य हेमचन्द्र* का जीवन-काल।

1100 प्राचीन नागरी लिपि का उद्भव *(15वीं-16वीं सदी से आधुनिक नागरी लिपि का उद्भव)*।

1168-92 *'पृथ्वीराजरासो'* के रचयिता *चंदबरदाई* का जीवन काल।

1253-1325 *अमीर खुसरो* का जीवन-काल। खुसरो ने अपनी भाषा के लिए *'हिन्दवी'* शब्द का प्रयोग किया।

1350-1450 *मैथिल कोकिल विद्यापति* का जीवन-काल।

1354 ब्रजभाषा के प्रथम ग्रंथ *'प्रद्युम्नचरित' (सुधीर अग्रवाल)* की रचना।

1368-1468 *आचार्य रामानंद* का जीवन-काल। आचार्य रामानंद के प्रभाव से सगुण भक्ति काव्य धारा का आरंभ *(1450)*।

1370 सूफी कवि *असाइत* द्वारा 'हंसावली' की रचना से सूफी प्रेमगाथा काव्य धारा का आरंभ।

1379 अवधी की प्रथम कृति 'चंदायन' या 'लोरकहा' *(मुल्ला दाउद)* की रचना।

1398-1518 संत कवि कबीर का जीवन-काल। कबीर की रचनाओं से निर्गुण भक्ति काव्य धारा का आरंभ।

1400-79 अपभ्रंश काव्य परम्परा के अंतिम कवि *रयधू* का जीवन-काल।

1479-1582 'सूरसागर' के रचयिता *सूरदास* का जीवन-काल।

1492-1542 'पद्मावत' के रचयिता *जायसी* का जीवन-काल।

1498-1562 *मीराबाई* का जीवन-काल।

1532-1623 'रामचरितमानस' महाकाव्य के रचयिता *तुलसीदास* का जीवन-काल।

1555-1617 *केशवदास* का जीवन काल।

1580 *बुरहानुद्दीन जानम* की 'कलमीत-उल-हकायत' प्रारंभिक दक्खिनी साहित्य रचना।

1585 भक्त कवि *नाभादास* कृत 'भक्तमाल' *(हिन्दी भक्त कवियों का परिचायत्मक ग्रंथ)* : हिन्दी की प्रथम जीवनी।

1595-1663 'बिहारी सतसई' के रचयिता *बिहारी* का जीवन काल।

1604 'आदि ग्रंथ' में सिक्खों के 5वें गुरु, *गुरु अर्जुनदेव* द्वारा अनेक कवियों की रचनाओं का संग्रह।

1609-85 *चिंतामणि* का जीवन-काल।

1623 *जटमल* रचित 'गोरा बादल की कथा' : खड़ी बोली का प्रथम गद्य ग्रंथ।

1613-1715 *भूषण* का जीवन-काल।

1617-93 *मतिराम* का जीवन-काल।

1641 *बनारसीदास* रचित 'अर्धकथानक' : हिन्दी की प्रथम आत्मकथा।

1643 आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार रीति-काव्य परंपरा का प्रारंभ।

1645 मुगल बादशाह शाहजहाँ द्वारा दिल्ली में लाल किले का निर्माण। स्थानीय भाषा को 'उर्दू' कहा जाने लगा।

1650 *सेनापति* का रचना-काल।

1667-1707 *वली दक्कनी* का जीवन-काल। दिल्ली के अभिजात वर्ग में फारसी का स्थान उर्दू ने लेना प्रारंभ किया, जिसे साधारणतः *सौदा, मीर* आदि द्वारा 'हिन्दी' कहा गया।

1673-1767 *देव* का जीवन-काल।

1689-1757 *घनानंद* का जीवन-काल।

1750 भिखारीदास का रचना-काल।

1753-1833 *पद्माकर* का जीवन-काल।

1796 प्राचीनतम मुद्राक्षर आधारित देवनागरी लिपि में मुद्रण *(जॉन गिलक्राइस्ट, 'हिन्दुस्तानी भाषा का व्याकरण', कलकत्ता)*।

1803 फोर्ट विलियम कॉलेज, कलकत्ता के लिए आधुनिक हिन्दी गद्यकार *लल्लूजी लाल* प्रणीत 'प्रेमसागर' *(श्रीमद्भागवत पुराण के दशम स्कंध का खड़ी बोली गद्य रूपान्तर)* का प्रकाशन।

1813-46 त्रावणकोर के महाराजा *स्वाति तिरूनल राम वर्मा* का जीवन-काल। वर्मा ने दक्षिण भारतीय भाषाओं के साथ हिन्दी में पद्य रचना की।

1826 कलकत्ता से हिन्दी के प्रथम समाचार-पत्र 'उदंत मार्तंड' *(सपादक : युगल किशोर शुक्ल)* का प्रकाशन आरंभ *(30 मई)*। 30 मई को 'हिन्दी पत्रकारिता दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

1833-86 गुजराती के महाकवि नर्मद का जीवन-काल। नर्मद ने हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाने का विचार रखा।

1837-81 'ओम जय जगदीश हरे ' *(भजन)* के रचनाकार *श्रद्धाराम फुल्लौरी* का जीवन-काल।

1839, 1847 फ्रांसीसी विद्वान *गार्सा द तासी* द्वारा फ्रांसीसी भाषा में हिन्दी साहित्य का इतिहास *('इस्तवार द ला लितरेत्यूर ऐन्दोई ऐ ऐन्दुस्तानी')* दो भागों में लिखा गया।

1850 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग उस भाषा के लिए समाप्त हो गया जिसे अब 'उर्दू' कहा जाता है।

1850-85 *भारतेन्दु हरिश्चन्द्र* का जीवन-काल *['भारत दुर्दशा' (नाटक)* : 1876, 'अंधेर नगरी' *(नाटक)* : 1881, नाटक *(आलोचना)* : 1883] ।

1854 कलकत्ता से प्रथम हिन्दी दैनिक पत्र 'समाचार सुधावर्षण' *(संपादक : श्यामसुंदर सेन)* का प्रकाशन आरंभ।

1856-94 *प्रताप नारायण मिश्र* का जीवन-काल *['भारत दुर्दशा' (नाटक) : 1886]*।

1864-1938 *महावीर प्रसाद द्विवेदी* का जीवन-काल *['सरस्वती पत्रिका का संपादन : 1903-20, 'संपत्तिशास्त्र' (अर्थशास्त्र विषयक ग्रंथ) : 1907]*।

1873 'हरिश्चन्द्र मैग्जीन' का प्रकाशन आरंभ *(भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'हरिश्चन्द्र मैग्जीन' के प्रकाशन वर्ष को एक महत्त्वपूर्ण घटना माना और अपने इतिहास-जर्नल 'काल चक्र' में लिखा : 'हिन्दी नई चाल में ढली, सन् 1873 ई. में' ।)*।

1875 *स्वामी दयानंद* के हिन्दी ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' का प्रकाशन।

1875-1945 *श्यामसुंदर दास* का जीवन-काल *('साहित्यालोचन' : 1912, 'हिन्दी कोविद रत्नमाला'— पहला भाग : 1909, दूसरा भाग : 1914)*

1877 *श्रद्धाराम फुल्लौरी* ने 'भाग्यवती नामक उपन्यास रचा। 'भाग्यवती' का प्रकाशन दस वर्ष बाद 1887 में।

1880-1936 *प्रेमचंद* का जीवन-काल *['सेवासदन' (उपन्यास) : 1918, 'गोदान' (उपन्यास) : 1936]*

1882 हिन्दी के प्रथम मौलिक उपन्यास 'परीक्षा गुरु' *(लाला श्रीनिवास दास)* का प्रकाशन।

1884-1941 *आचार्य रामचन्द्र शुक्ल* का जीवन-काल *[हिन्दी साहित्य का इतिहास : 1929, चिंतामणि— भाग एक : 1939]*

1886-1964 *मैथिली शरण गुप्त* का जीवन-काल *['भारत भारती' (काव्य) : 1912, 'साकेत' (काव्य) : 1932, 'यशोधरा' (काव्य) : 1962]*।

1888-1963 *बाबू गुलाब राय* का जीवन-काल *['मेरी असफलताएँ' (आत्मकथा) : 1941]*।

1889-1937 *जयशंकर प्रसाद* का जीवन-काल *['स्कंदगुप्त' (नाटक)* : 1932, *'कामयानी' (काव्य) : 1937]*।

1889-1968 *माखनलाल चतुर्वेदी ['हिमकिरीटनी' (काव्य) : 1941, 'हिमतरंगिनी' (काव्य) : 1948]*।

1889-1969 *वृंदावन लाल वर्मा* का जीवन-काल [झांसी की रानी (उपन्यास) : 1946] ।

1891 'चंद्रकांता'—उपन्यास *(बाबू देवकी नंदन खत्री)* का प्रकाशन।

1893 नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की स्थापना *(संस्थापकत्रयी: बाबू श्याम सुंदर दास, पं. रामनारायण मिश्र और ठाकुर शिवकुमार सिंह)*

1893-1963 *राहुल सांस्कृत्यायन* का जीवन-काल।

1899-1961 *निराला* का जीवन-काल *['अनामिका' (काव्य) : 1923, परिमल (काव्य) : 1929, गीतिका (काव्य) : 1936, तुलसीदास (काव्य) : 1938, कुकुरमुत्ता (काव्य) : 1942, अणिमा (काव्य) : 1943, नये पत्ते (काव्य) : 1946]*।

1900-77 *सुमित्रानंदन पंत* का जीवन-काल *['उच्छवास' (काव्य) : 1920, 'युगांत' (काव्य): 1936, 'ग्राम्या' (काव्य): 1940, 'कला और बूढ़ा चाँद' (काव्य) : 1959, 'चिदम्बरा' (काव्य) : 1959]*

1900 प्रसिद्ध पत्रिका 'सरस्वती' का प्रकाशन आरंभ। *(संपादक: श्यामसुंदरदास व 4 अन्य)*। 'सरस्वती' पत्रिका में *किशोरी लाल गोस्वामी* की कहानी 'इंदुमती' का प्रकाशन *('इंदुमती' हिन्दी की पहली कहानी मानी जाती है।)*।

1902-82 *इलाचंद्र जोशी* का जीवन-काल।

1903-76 *यशपाल* का जीवन-काल *['दिव्या' (उपन्यास) : 1945, 'झूठा सच' (उपन्यास)—प्रथम भाग : 1958, द्वितीय भाग : 1960]*

1903-81 *भगवती चरण वर्मा* का जीवन-काल *['चित्रलेखा' (उपन्यास) : 1934]*

1905 'चंद्रकाता संतति'— उपन्यास *(बाबू देवकीनंदन खत्री)* का प्रकाशन।

1905-88 *जैनेन्द्र कुमार* का जीवन-काल *['त्यागपत्र' (उपन्यास) : 1937]* ।

1906-67 *नंददुलारे बाजपेयी* का जीवन-काल।

1907-87 *महादेवी वर्मा* का जीवन-काल।

1907-89 *आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी* का जीवन-काल *['हिन्दी साहित्य की भूमिका' : 1940, 'कबीर' : 1940]*

1907-2003 *हरिवंश राय 'बच्चन'* का जीवन-काल *['मधुशाला' (काव्य) : 1935]*

1908-74 *रामधारी सिंह 'दिनकर'* का जीवन-काल *['कुरुक्षेत्र' (काव्य) : 1940, 'रश्मिरथी' (काव्य) : 1952, 'उर्वशी' (काव्य) : 1961; 'संस्कृति के चार अध्याय' (निबंध) : 1956]*

1909 'कविता क्या है ?' —निबंध *(रामचन्द्र शुक्ल)* का 'सरस्वती' में प्रकाशन।

1910-96 *उपेन्द्रनाथ अश्क* का जीवन-काल।

1910-98 *नागार्जुन* का जीवन-काल।

1911-87 *'अज्ञेय'* का जीवन-काल *[शेखर : एक जीवनी (उपन्यास) —प्रथम भाग : 1941, द्वितीय भाग : 1944, 'कितनी नावों में कितनी बार '(काव्य) : 1967]*

1912-2009 *विष्णु प्रभाकर* का जीवन-काल *['आवारा मसीहा' (जीवनी) : 1974, 'अर्द्धनारीश्वर' (उपन्यास): 1992]*

1912-2000 *राम विलास शर्मा* का जीवन-काल *[निराला की साहित्य साधना (आलोचना)— प्रथम भाग: 1969, द्वितीय भाग: 1972, तृतीय भाग: 1976]*

1913 दादा साहब फाल्के ने हिन्दी चित्रपट के इतिहास में 'राजा हरिश्चन्द्र' नामक प्रथम हिन्दी फिल्म (चलचित्र) का निर्माण किया।

1914 खड़ी बोली हिन्दी के प्रथम महाकाव्य 'प्रियप्रवास' *(अयोध्या सिंह आध्याय 'हरिऔध')* का प्रकाशन।

1915 *गाँधीजी* ने 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा' की स्थापना मद्रास में की। 'उसने कहा था'— कहानी *(चंद्रधर शर्मा गुलेरी)* का 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशन।

1916-90 *अमृत लाल नागर* का जीवन-काल।

1916 'जुही की कली'— कविता *(निराला)* का प्रकाशन।

1917-64 *मुक्तिबोध* का जीवन-काल *['चाँद का मुँह टेढ़ा है' (काव्य) : 1964]*।

1918 मराठी भाषी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने कांग्रेस अध्यक्ष की हैसियत से घोषणा की कि हिन्दी भारत की राजभाषा होगी।

1921 'हिन्दी व्याकरण' *(पं. कामता प्रसाद गुरु)* का प्रकाशन।

1921-77 *फणीश्वर नाथ 'रेणु'* का जीवन-काल *['मैला आँचल' (उपन्यास) : 1954]*

1922-90 रघुवीर सहाय का जीवन-काल *['आत्म हत्या के विरुद्ध' (काव्य) : 1967]*।

1925-2011 श्रीलाल शुक्ल का जीवन-काल *['राग दरबारी' (उपन्यास) : 1968]*।

1925-72 मोहन राकेश का जीवन-काल *[आषाढ़ का एक दिन (नाटक) : 1958, 'अंधेरे बंद कमरे' (उपन्यास) : 1961]*

1926-97 धर्मवीर भारती का जीवन-काल *[गुनाहों का देवता (उपन्यास) : 1949, 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' (उपन्यास) : 1952, अंधा युग (नाटक) : 1954]*

1927 नामवर सिंह का जन्म *['छायावाद' (आलोचना) : 1954, 'कविता के नये प्रतिमान' (आलोचना) : 1968, 'दूसरी परंपरा की खोज' (आलोचना) : 1982, 'वाद-विवाद-संवाद' (आलोचना) : 1989]*

1929–2005 निर्मल वर्मा का जीवन-काल *['वे दिन (उपन्यास) : 1964]*।

1929 'हिन्दी शब्द सागर' *(संपादकत्रयी : श्याम सुंदर दास, रामचन्द्र शुक्ल, रामचन्द्र वर्मा)* का प्रकाशन।

1930 का दशक हिन्दी टाइपराइटर का विकास *(शैलेन्द्र मेहता)*।

1931 हिन्दी की पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' *(निर्माता : आर्देशिर ईरानी)* पर्दे पर आई।

1934 'चित्रलेखा'—उपन्यास *(भगवती चरण वर्मा)* का प्रकाशन।

1935 'मधुशाला'— काव्य *('बच्चन')* का प्रकाशन। 'सरोज स्मृति'— कविता *(निराला)* का प्रकाशन। मद्रास राज्य के मुख्यमंत्री की हैसियत से सी. राजागोपालाचारी ने राज्य में हिन्दी शिक्षा को अनिवार्य किया।

1936 'गोदान'—उपन्यास *(प्रेमचंद)* का प्रकाशन। 'राम की शक्ति पूजा'— कविता *(निराला)* का प्रकाशन। 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना।

1937 'कामायनी'—काव्य *(प्रसाद)* का प्रकाशन वर्ष। 'त्यागपत्र'— उपन्यास *(जैनेन्द्र कुमार)* का प्रकाशन।

1943 'तार सप्तक' का प्रकाशन।

1944 'परिमल' की स्थापना।

1949 14 सितम्बर, 1949 ई. को संविधान सभा ने हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

1950 26 जनवरी, 1950 ई. को भारत का संविधान लागू। तदनुसार उसमें किए गए भाषाई प्रावधान *(अनुच्छेद 120, 210, 343 से 351 तक एवं 8वीं अनुसूची)* लागू।

1951 'आलोचना' *(पत्रिका)* का प्रकाशनारंभ। 'दूसरे सप्तक' का प्रकाशन।

1954 'मैला आँचल'—उपन्यास *(रेणु)* का प्रकाशन, 'अंधा युग'— नाटक *(धर्मवीर भारती)* का प्रकाशन।

1955 प्रथम राजभाषा आयोग/बाल गंगाधर *(बी.जी.)* खेर आयोग का गठन *(7 जून)*।

1957 प्रथम राजभाषा समिति/गोविन्द बल्लभ *(जी.बी.)* पंत समिति का गठन *(16 नवम्बर)*।

1958 *'हिन्दी शब्दानुशासन' (पं. किशोरीदास बाजपेयी)* का प्रकाशन।

1960 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली की स्थापना।

1962 केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा (उ०प्र०) की स्थापना।

1963 राजभाषा अधिनियम, 1963 पारित *(1967 में संशोधन)*।

1966 *'आधा गाँव'*—उपन्यास *(राही मासूम रज़ा)* का प्रकाशन।

967 केन्द्रीय हिन्दी समिति, नई दिल्ली की स्थापना।

968 संसद द्वारा संकल्प *(resolution)* पारित। तदनुसार त्रिभाषा सूत्र *(Three-Language Formula)* लागू। 'राग दरबारी'— उपन्यास *(श्रीलाल शुक्ल)* का प्रकाशन।

1972 *'संसद से सड़क तक'*— काव्य *(धूमिल)* का प्रकाशन।

1975 नागपुर में प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन *(10 जनवरी से 14 जनवरी तक)*; *प्रत्येक वर्ष 10 जनवरी को* 'विश्व हिन्दी दिवस' (World Hindi Day) के रूप में मनाया जाता है। राजभाषा विभाग *(गृह मंत्रालय का अधीनस्थ विभाग)* की स्थापना। *'साये में धूप'*— हिन्दी ग़ज़ल संग्रह *(दुष्यन्त कुमार)* का प्रकाशन।

1976 भारत सरकार द्वारा राजभाषा नियम पारित (यथासंशोधित, 1987) जिनमें प्रधान राजभाषा हिन्दी एवं सहराजभाषा अंग्रेजी व अन्य प्रादेशिक भाषाओं के प्रयोग हेतु नियम दिए गए हैं।

1977 संयुक्त राष्ट्र संघ *(UNO)* में हिन्दी में पहली बार *अटल बिहारी बाजपेयी* ने भाषण दिया (4 अक्तूबर)।

1979 संघ लोक सेवा आयोग *(UPSC)* द्वारा आयोजित किए जाने वाले सिविल सेवा *(Civil Services)* परीक्षा में माध्यम के रूप में अभ्यर्थियों को अंग्रेजी भाषा के स्थान पर 8वीं अनुसूची में दर्ज भाषाओं *(जिनमें एक भाषा हिन्दी भी है)* में से किसी एक भाषा में उत्तर देने का विकल्प मिला। *(नोट : इससे पूर्व परीक्षा का माध्यम सिर्फ अंग्रेजी था।)*

1982 'जनवादी लेखक संघ' *(जलेस)*, नई दिल्ली की स्थापना।

1985 'जन संस्कृति मंच' *(जसम)*, नई दिल्ली की स्थापना।

1986 'हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास' *(राम स्वरूप चतुर्वेदी)* का प्रकाशन।

1996 हिन्दी के प्रथम समांतर कोश / थिसॉरस *(Thesaurus)*— 'समांतर कोश'— *(संपादक दंपती : अरविंद कुमार व कुसुम कुमार)* का प्रकाशन। 'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास' *(बच्चन सिंह)* का प्रकाशन।

1997 हिन्दी के प्रथम अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय —महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा *(महाराष्ट्र)*— की स्थापना।

2003 92वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2003 के द्वारा संविधान की 8वीं अनुसूची में हिन्दी की एक बोली— मैथिली— को स्थान दिया गया। मैथिली, हिन्दी क्षेत्र की बोलियों में से 8वीं अनुसूची में स्थान पाने वाली पहली बोली है।

2007 न्यूयार्क *(अमेरिका)* में आठवें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन *(13 जुलाई से 15 जुलाई तक)*।

2012 जोहान्सबर्ग *(दक्षिण अफ्रीका)* में नवें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन *(22 सितम्बर से 24 सितम्बर तक)*।

हिन्दी में सर्वप्रथम

अपभ्रंश के प्रथम महाकवि	स्वयंभू
अपभ्रंश का प्रथम कडवक बद्ध *(7 चौपाई के बाद 1 दोहा का क्रम)* रचना	पउम चरिउ *(स्वयंभू)*
अपभ्रंश के प्रथम ऐतिहासिक वैयाकरण	हेमचन्द्र
हिन्दी के प्रथम कवि	सरहपा *(9वीं सदी)*
हिन्दी में चौपाई-दोहा का सर्वप्रथम प्रयोग	सरहपा
हिन्दी की प्रथम रचना	श्रावकाचार *(देवसेन कृत)*
हिन्दी साहित्य की प्रथम रचना	पृथ्वीराज रासो *(चंदबरदाई)*
हिन्दी साहित्य का प्रथम महाकाव्य	पृथ्वी राज रासो
हिन्दी काव्य में बारहमासा वर्णन का प्रथम प्रयोग	बीसलदेव रासो *(नरपति नाल्ह)*
किसी भारतीय भाषा में रचित इस्लाम धर्मावलबी कवि की प्रथम रचना	संदेश रासक *(अब्दुर रहमान)*
अवहट्ट का सर्वप्रथम प्रयोग	विद्यापति ने 'कीर्तिलता' में
हिन्दी के सर्वप्रथम गीतकार	विद्यापति

मुकरियों की शुरुआत	अमीर खुसरो ने
भक्ति के प्रवर्तक	रामानुज आचार्य
हिन्दी के प्रथम सूफी कवि	असाइत
सूफी प्रेमाख्यान का प्रथम काव्य	हंसावली *(असाइत)*
हिन्दी का प्रथम बड़ा महाकाव्य	पद्मावत *(जायसी)*
हिन्दी का प्रथम वक्रोक्ति कथात्मक महाकाव्य	पद्मावत
हिन्दी की आदि कवयित्री	मीराबाई
कृष्ण-भक्ति काव्य का सबसे प्रसिद्ध काव्य	सूरसागर *(सूरदास)*
राम-भक्ति काव्य का सबसे प्रसिद्ध काव्य	रामचरित मानस *(तुलसीदास)*
भक्ति काल को 'हिन्दी काव्य का स्वर्ण युग' घोषित करनेवाला प्रथम व्यक्ति	जार्ज ग्रियर्सन
सतसई परंपरा का आरंभ	तुलसी सतसई *(कुछ कृपाराम की 'हिततरंगिनी को मानते हैं)*
रीति काव्य का सर्वप्रथम ग्रंथ	हिततरंगिनी (कृपाराम)
खड़ी बोली में लिखित सर्वप्रथम काव्य ग्रंथ	श्रीधर पाठक द्वारा अनूदित 'एकांतवासी योगी'
खड़ी बोली के प्रथम स्वच्छंदतावादी कवि	श्रीधर पाठक
'स्वच्छंदतावाद' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग	श्लेगर *(जर्मन आलोचक)*, मुकुटधर पाण्डेय *(हिन्दी में)*
खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य	प्रिय प्रवास *(हरिऔध)*
गीति काव्य शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग	लोचन प्रसाद पाण्डेय ने 'कुसुमन माला' की भूमिका में
छायावाद की प्रथम कृति	'झरना' *(1918 ई०)* प्रसाद
शुक्लानुसार छायावाद का प्रथम व प्रतिनिधि कवि	पंत
मुक्त छंद का प्रथम प्रयोगकर्ता	निराला *('जुही की कली' में)*
निराला की प्रथम कविता	जुही की कली *(1916 ई०)*
निराला की प्रथम काव्य कृति	जुही की कली *(1918 ई०)*
प्रसाद की प्रथम काव्य कृति	'उर्वशी' *(1909 ई०)*
प्रसाद की प्रथम छायावादी काव्य कृति	'झरना' *(1918 ई०)*
पंत की प्रथम कविता	गिरजे का घण्टा *(1916 ई०)*
पंत की प्रथम छायावादी काव्यकृति	'उच्छवास' *(1918 ई०)*
महादेवी की प्रथम काव्य कृति	'नीहार' *(1930 ई०)*
'प्रयोगवाद' शब्द का प्रथम प्रयोग	नंद दुलारे वाजपेयी
'नयी कविता' नाम दिया	'अज्ञेय' ने
'अज्ञेय' की प्रथम काव्य कृति	भग्नदूत *(1933 ई०)*
हिन्दी की प्रथम दलित रचना	'अछूत की शिकायत', *रचनाकार*–पटना (बिहार) के बासी हीरा डोम, प्रकाशन–'सरस्वती' पत्रिका के सितम्बर, 1914 अंक में
प्रेमचंद का प्रथम उपन्यास	प्रेमा अर्थात् दो सखियों का विवाह, *(1907 ई०) (हमखुर्मा व हम सवाब का हिन्दी रूपान्तर)*
हिन्दी का प्रथम उपन्यास	परीक्षा गुरु *(लाला श्री निवास दास)*
प्रेमचंद का मूल रूप से हिन्दी में लिखित प्रथम उपन्यास	कायाकल्प *(1926 ई०)*
जैनेन्द्र का प्रथम उपन्यास	परख *(1929 ई०)*
इलाचंद्र जोशी का प्रथम उपन्यास	घृणामयी *(1929 ई०)*
भगवतीचरण वर्मा का प्रथम उपन्यास	चित्रलेखा *(1934 ई०)*
अज्ञेय का प्रथम उपन्यास	शेखर एक जीवनी *(1941 ई०)*
रेणु का प्रथम उपन्यास	मैला आँचल *(1954 ई०)*
निर्मल वर्मा का प्रथम उपन्यास	वे दिन *(1964 ई०)*
हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी	इंदुमती *(किशोरी लाल)*
हिन्दी की प्रथम कहानी लेखिका	बंग महिला *(राजेन्द्र बाला घोष)*
प्रसाद की प्रथम कहानी	ग्राम *(1911 ई०)*
प्रेमचंद की प्रथम कहानी	पंच परमेश्वर *(1916 ई०)*
अज्ञेय का प्रथम कहानी संग्रह	विपथगा *(1937 ई०)*
'नयी कहानी' की प्रथम कृति	परिंदे *(निर्मल वर्मा)*
निर्मल वर्मा का प्रथम कहानी संग्रह	परिंदे *(1960 ई०)*
कमलेश्वर का प्रथम कहानी संग्रह	राजा निरबंसिया *(1957 ई०)*
हिन्दी का प्रथम मौलिक नाटक	नहुष *(गोपालचंद्र)*
हिन्दी का प्रथम अभिनीत नाटक	जानकी मंगल *(शीतला प्रसाद त्रिपाठी)*
प्रसाद का प्रथम ऐतिहासिक नाटक	राज्यश्री *(1915 ई०)*
हिन्दी का प्रथम एकांकी	एक घूँट *(प्रसाद)*
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की पहली सैद्धांतिक आलोचनात्मक कृति	काव्य में रहस्यवाद
रस-विवेचन को पहली बार मनोवैज्ञानिक आधार प्रदान किया	रामचन्द्र शुक्ल ने
हिन्दी में साधारणीकरण के संबंध में पहला चिंतन (साधारणीकरण का प्रथम प्रयोग कर्ता–भट्टनायक)	रामचन्द्र शुक्ल
पद्य में रचित हिन्दी की प्रथम आत्मकथा	अर्द्धकथानक *(1641 ई० बनारसीदास)*
गद्य में रचित हिन्दी की प्रथम आत्मकथा	स्वचरित आत्मचरित *(1879 ई., दयानंद सरस्वती)*
हिन्दी में प्रथम जीवनी	भक्त माल *(1585 ई०, नाभादास)*
हिन्दी में प्रथम संस्मरण	हरिऔधजी का संस्मरण *(बालमुकुन्द गुप्त)*
हिन्दी में प्रथम रेखाचित्र	पद्म-पराग *(1929 ई., पद्म सिंह शर्मा)*
हिन्दी में प्रथम यात्रा-वृतान्त	लंदन यात्रा *(1883 ई०, श्रीमती हरदेवी)*
हिन्दी में प्रथम रिपोर्ताज	लक्ष्मीपुरा *(1938 ई. शिवदान सिंह चौहान)*
हिन्दी गद्य-काव्य की प्रथम रचना	साधना *(रायकृष्ण दास)*
हिन्दी साहित्येतिहास का प्रथम ग्रंथ	इस्तवार द ला लितरेच्यूर ऐन्दुई ऐ ऐन्दुस्तानी *(गाँर्सा-द-तासी)*
हिन्दी साहित्येतिहास का हिन्दी भाषा में लिखा जानेवाला प्रथम ग्रथ	शिवसिंह सरोज *(शिव सिंह सेंगर)*
हिन्दी साहित्येतिहास का प्रथम वास्तविक ग्रंथ	द माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर आफ हिन्दुस्तान *(जार्ज ग्रियर्सन)*
हिन्दी साहित्य के कालविभाजन व नामकरण का प्रथम प्रयास करनेवाला	जार्ज ग्रियर्सन
हिन्दी साहित्येतिहास का प्रथम व्यवस्थित ग्रंथ	हिन्दी साहित्य का इतिहास *(रामचन्द्र शुक्ल)*
परंपरा की दृष्टि से रचित हिन्दी साहित्येतिहास का प्रथम ग्रंथ	हिन्दी साहित्य की भूमिका *(हजारी प्रसाद द्विवेदी)*
साहित्येतिहास का प्रथम मार्क्सवादी ग्रंथकार	राम विलास शर्मा
खड़ी बोली (पद्य) का प्रथम प्रयोगकर्त्ता	अमीर खुसरो
खड़ी बोली गद्य की प्रथम रचना	चंद छंद बरनन की महिमा *(गंग कवि)*

खड़ी बोली में साहित्यिक स्वरूप का सर्वप्रथम प्रयोग किया	राम प्रसाद निरंजनी ने 'योगभाषा वशिष्ठ' में
खड़ी बोली काव्य रचना के पक्ष में आंदोलन चलाने वाले इतिहास-पुरुष	अयोध्या प्रसाद खत्री
भारतीय द्वारा देशी भाषा में प्रकाशित प्रथम पत्र	संवाद कौमुदी *(1821 ई०, सं. : राजा राम मोहन राय)*
प्रथम हिन्दी पत्र	उदंत मार्तण्ड *(30— मई, 1826 ई०)*
प्रथम हिन्दी दैनिक	समाचार सुधा वर्षण *(1854 ई०)*
प्रथम हिन्दी वेबसाइट	वेबदुनिया *(1999 ई०)*
हिन्दी की प्रथम लघु पत्रिका	नये पत्ते *(लक्ष्मी कांत वर्मा)*
हिन्दी में प्रकाशित प्रथम ग्रंथावली	भारतेन्दु ग्रंथावली *(खड्ग विलास प्रेस, पटना)*
हिन्दी के लिए प्रथम साहित्य अकादमी पुरस्कार	हिमतरंगिनी *(माखनलाल चतुर्वेदी, 1954 ई० में)*
ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित प्रथम हिन्दी साहित्यकार	पंत *(चिदंबरा, 1968 ई०)*
ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित प्रथम हिन्दी महिला साहित्यकार	महादेवी वर्मा *(यामा, 1982 ई०)*
प्रथम व्यास सम्मान	भारत के भाषा-परिवार और हिन्दी *(डॉ० राम विलास शर्मा, 1991)*
प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन	नागपुर *(1975 ई०)*
एम० ए० (हिन्दी) का सर्वप्रथम शिक्षण प्रारंभ हुआ	काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में *(1921 ई० में)*
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रथम हिन्दी विभागाध्यक्ष	श्यामसुंदर दास
साहित्य अकादमी का प्रथम अध्यक्ष	पं० जवाहरलाल नेहरु
हिन्दी साहित्य परिषद् का प्रथम अध्यक्ष	पुरुषोत्तम दास टंडन
संयुक्त राष्ट्र संघ *(UNO)* में हिन्दी में भाषण देने वाला प्रथम व्यक्ति	अटल बिहारी बाजपेयी *(1977 ई.)*
हिन्दी भाषा का प्रथम वैज्ञानिक इतिहास	'हिन्दी भाषा का इतिहास' *(1933 ई., धीरेन्द्र वर्मा)*
विश्व का प्रथम व्याकरण-ग्रंथ	'अष्टाध्यायी' *(4थी सदी ई. पू., पाणिनी)*
हिन्दी का प्रथम वैयाकरण	जोहन जोशुआ केटलेर *[हालैण्ड निवासी केटलेर डच ईस्ट इंडिया कंपनी के एलची (राजदूत) के रूप में भारत में दो दशक (1696–1716) तक रहे; 'हिन्दुस्तानी ग्रामर' (1698 ई., डच भाषा में)]*
हिन्दी भाषा में हिन्दी का व्याकरण लिखने वाला प्रथम वैयाकरण	पादरी एम.टी. आदम *['हिन्दी भाषा का व्याकरण' (1827 ई., हिन्दी भाषा में, कलकत्ता से प्रकाशित)]*
हिन्दी का प्रथम भारतीय वैयाकरण	पं. श्रीलाल *(बिहार निवासी; 'भाषा चन्द्रोदय', 1855 ई.)*
हिन्दी के दो सर्वाधिक प्रसिद्ध वैयाकरण	पं. कामता प्रसाद गुरु *('हिन्दी व्याकरण', 1921 ई.; नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से प्रकाशित)* एवं पं. किशोरी दास बाजपेयी *('हिन्दी शब्दानुशासन', 1958 ई.; नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से प्रकाशित)*
विश्व का प्रथम कोशकार/शब्दकोशकार	महर्षि यास्क *('निरुक्त', 5वीं, सदी ई.पू.)*
हिन्दी के प्रथम कोशकार/शब्दकोशकार	अमीर खुसरो *('खलिक-ए-बारी'— द्विभाषी कोश / फारसी-हिन्दवी कोश)*
हिन्दी भाषा में हिन्दी का कोश/शब्दकोश संपादित करने वाला प्रथम कोशकार/ शब्दाकोशकार	पादरी एम.टी.आदम *('हिन्दी कोश', 1829 ई., कलकत्ता से प्रकाशित)*
हिन्दी का प्रथम मौलिक कोश/शब्दकोश	'हिन्दी शब्द सागर' *(1929 ई.; नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से प्रकाशित, संपादक त्रयी: श्याम सुंदर दास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल व आचार्य रामचंद्र वर्मा)*
हिन्दी का प्रथम समांतर कोश/थिसॉरस *(Thesauras)*	'समांतर कोश' *(1996 ई.; नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक दंपती: अरविन्द कुमार व कुसुम कुमार)*
हिन्दी का प्रथम भाषा सर्वेक्षक	अमीर खुसरो *(1317 ई. में भाषा सर्वेक्षण)*
हिन्दी का सर्वाधिक प्रसिद्ध भाषा सर्वेक्षक	जॉर्ज ए. ग्रियर्सन *(1894 ई. में भाषा सर्वेक्षण का कार्य आरंभ एवं 1927 ई. में भाषा सर्वेक्षण का कार्य संपन्न, संपादित ग्रंथ का नाम : 'ए लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' (भारतीय भाषा सर्वेक्षण)*
छपाई के लिए नागरी टाइपों का निर्माण करने वाला प्रथम व्यक्ति	चार्ल्स विल्किन्स *(1750–1836 ई.)*
हिन्दी माध्यम से सम्पूर्ण शिक्षा देने वाली देश की पहली संस्था	गुरुकुल काँगड़ी, हरिद्वार
हिन्दी का प्रथम अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय	महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा *(महाराष्ट्र)*
हिन्दी की प्रथम शोध कृति/हिन्दी साहित्य से संबद्ध प्रथम शोध कृति	डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल कृत *'निर्गुण स्कूल ऑफ हिन्दी पोएट्री' (अंग्रेजी भाषा में, 1934 ई., हिन्दी में अनुवाद—'हिन्दी काव्य में निर्गुण संप्रदाय' नाम से)*
हिन्दी भाषा से संबद्ध प्रथम शोध कृति	डॉ. धीरेन्द्र वर्मा कृत *'ला लाँग ब्रज' (फ्रेंच भाषा में, 1935 ई., हिन्दी में अनुवाद—'ब्रजभाषा' नाम से)*
हिन्दी माध्यम में प्रस्तुत हिन्दी की प्रथम शोध कृति	फ़ादर कामिल बुल्के कृत *'रामकथा : उत्पत्ति और विकास' (1949 ई.)*

पुरस्कार

साहित्य अकादमी (हिन्दी के लिए)

रचना	साहित्यकार	वर्ष
हिमतरंगिनी *(काव्य)*	माखनलाल चतुर्वेदी	1955 ई०
पद्मावत संजीवनी व्याख्या *(टीका/ व्याख्या)*	वासुदेवशरण अग्रवाल	1956 ई०
बुद्ध धर्म दर्शन	आचार्य नरेंद्र देव	1957 ई०
मध्य एशिया का इतिहास *(इ०)*	राहुल सांकृत्यायन	1958 ई०
संस्कृति के चार अध्याय *(नि०)*	'दिनकर'	1959 ई०

रचना	साहित्यकार	वर्ष
कला और बूढ़ा चाँद *(काव्य)*	पंत	1960 ई०
भूले-बिसरे चित्र *(उपन्यास)*	भगवतीचरण वर्मा	1961 ई०
कलम का सिपाही *(जीवनी)*	अमृतराय	1963 ई०
आँगन के पार द्वार *(काव्य)*	'अज्ञेय'	1964 ई०
रस-सिद्धांत *(समीक्षा)*	नगेंद्र	1965 ई०
मुक्तिबोध *(उपन्यास)*	जैनेंद्र	1966 ई०
अमृत और विष *(उपन्यास)*	अमृतलाल नागर	1967 ई०
दो चट्टानें *(काव्य)*	हरिवंशराय 'बच्चन'	1968 ई०
राग दरबारी *(उपन्यास)*	श्रीलाल शुक्ल	1969 ई०
निराला की साहित्य साधना *(आ०)*	रामविलास शर्मा	1970 ई०
कविता के नये प्रतिमान *(आ०)*	डॉ० नामवर सिंह	1971 ई०
बुनी हुई रस्सी *(काव्य)*	भवानीप्रसाद मिश्र	1972 ई०
आलोक पर्व *(निबंध)*	हजारीप्रसाद द्विवेदी	1973 ई०
मिट्टी की बारात *(काव्य)*	शिवमंगल सिंह 'सुमन'	1974 ई०
तमस *(उपन्यास)*	भीष्म साहनी	1975 ई०
मेरी तेरी उसकी बात *(उपन्यास)*	यशपाल	1976 ई०
चुका भी नहीं हूँ मैं *(काव्य)*	शमशेर	1977 ई०
उतना बस सूरज हूँ *(काव्य)*	भारतभूषण अग्रवाल	1978 ई०
कल सुनना मुझे *(काव्य)*	'धूमिल'	1979 ई०
जिंदगीनामा *(उपन्यास)*	कृष्णा सोबती	1980 ई०
ताप के ताये हुए दिन *(काव्य)*	त्रिलोचन शास्त्री	1981 ई०
विकलांग श्रद्धा का दौर (व्यंग्य)	हरिशंकर परसाई	1982 ई०
खूँटियों पर टँगे लोग *(काव्य)*	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	1983 ई०
लोग भूल गए हैं *(काव्य)*	रघुवीर सहाय	1984 ई०
कव्वे और काला पानी *(क०सं०)*	निर्मल वर्मा	1985 ई०
अपूर्व *(काव्य)*	केदारनाथ अग्रवाल	1986 ई०
मगध *(काव्य)*	श्रीकांत वर्मा	1987 ई०
अरण्य *(काव्य)*	नरेश मेहता	1988 ई०
अकाल में सारस *(काव्य)*	केदारनाथ सिंह	1989 ई०
नीला चाँद *(उपन्यास)*	शिवप्रसाद सिंह	1990 ई०
मैं वक्त के हूँ सामने *(काव्य)*	गिरिजाकुमार माथुर	1991 ई०
ढाई घर *(उपन्यास)*	गिरिराज किशोर	1992 ई०
अर्द्धनारीश्वर *(उपन्यास)*	विष्णु प्रभाकर	1993 ई०
कहीं नहीं वहीं *(काव्य)*	अशोक वाजपेयी	1994 ई०
कोई दूसरा नहीं *(काव्य)*	कुँवर नारायण	1995 ई०
मुझे चाँद चाहिए *(उपन्यास)*	सुरेंद्र वर्मा	1996 ई०
अनुभव के आकाश में चाँद *(काव्य)*	लीलाधर जगूड़ी	1997 ई०
नये इलाके में *(काव्य)*	अरुण कमल	1998 ई०
दीवार में एक खिड़की रहती थी *(उपन्यास)*	विनोद कुमार शुक्ल	1999 ई०
हम जो देखते हैं *(काव्य)*	मंगलेश डबराल	2000 ई०
कलिकथा: वाया बाईपास *(उपन्यास)*	अलका सरावगी	2001 ई०
दो पंक्तियों के बीच *(काव्य)*	राजेश जोशी	2002 ई०
कितने पाकिस्तान *(उपन्यास)*	कमलेश्वर	2003 ई०
दुष्चक्र में स्रष्टा *(काव्य)*	वीरेन डंगवाल	2004 ई०
क्याप *(उपन्यास)*	मनोहर श्याम जोशी	2005 ई०
संशयात्मा *(काव्य)*	ज्ञानेंद्रपति	2006 ई०
इन्हीं हथियारों से *(उपन्यास)*	अमरकांत	2007 ई०
कोहरे में कैद रंग *(उपन्यास)*	गोविंद मिश्र	2008 ई०
हवा में हस्ताक्षर *(काव्य)*	कैलाश बाजपेयी	2009 ई०
मोहन दास *(कहानी)*	उदय प्रकाश	2010 ई०
रेहन पर रग्घू *(उपन्यास)*	काशीनाथ सिंह	2011 ई०
पत्थर फेंक रहा हूँ *(काव्य)*	चन्द्रकांत देवताले	2012 ई०
मिलजुल मन (उपन्यास)	मृदुला गर्ग	2013 ई०
विनायक *(उपन्यास)*	रमेश चंद्र शाह	2014 ई०
आग की हंसी *(काव्य)*	राम दरश मिश्र	2015 ई०

व्यास सम्मान

(हिन्दी की उत्कृष्ट साहित्यिक कृति हेतु के.के. बिड़ला फाउंडेशन द्वारा दिया जानेवाला सम्मान)

रचना	साहित्यकार	वर्ष
भारत के भाषा परिवार और हिन्दी	डॉ० रामविलास शर्मा	1991 ई०
नीला चाँद *(उपन्यास)*	शिवप्रसाद सिंह	1992 ई०
मैं वक्त के हूँ सामने *(काव्य)*	गिरिजा कुमार माथुर	1993 ई०
सपना अभी भी *(काव्य)*	धर्मवीर भारती	1994 ई०
आत्मजयी *(काव्य)*	कुँवर नारायण	1995 ई०
हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास *(साहित्येतिहास)*	रामस्वरूप चतुर्वेदी	1996 ई०
उत्तर कबीर व अन्य कविताएँ *(काव्य)*	केदारनाथ सिंह	1997 ई०
पाँच आंगनों वाला घर *(उपन्यास)*	गोविंद मिश्र	1998 ई०
विश्रामपुर का संत *(उपन्यास)*	श्री लाल शुक्ल	1999 ई०
पहला गिरमिटिया *(उपन्यास)*	गिरिराज किशोर	2000 ई०
आलोचना का पक्ष *(आलोचना)*	रमेश चंद्र शाह	2001 ई०
पृथ्वी का कृष्ण पक्ष *(काव्य)*	कैलाश वाजपेयी	2002 ई०
आवां *(उपन्यास)*	चित्रा मुद्गल	2003 ई०
कठगुलाब *(उपन्यास)*	मृदुला गर्ग	2004 ई०
कथा सतीसर *(उपन्यास)*	चंद्रकांता	2005 ई०
कवित का अर्थात् *(आलोचना)*	परमानंद श्रीवास्तव	2006 ई०
समय-सरगम *(उपन्यास)*	कृष्णा सोबती	2007 ई०
एक कहानी यह भी *(आत्मकथा)*	मन्नू भंडारी	2008 ई०
इन्हीं हथियारों से *(उपन्यास)*	अमरकांत	2009 ई०
फिर भी कुछ रह जाएगा *(काव्य)*	विश्वनाथ तिवारी	2010 ई०
आम के पत्ते *(काव्य)*	राम दरश मिश्र	2011 ई०
न भूतो न भविष्यति *(उपन्यास)*	नरेन्द्र कोहली	2012 ई०
व्योमकेश दरवेश (जीवनी)	विश्वनाथ त्रिपाठी	2013 ई०
प्रेमचंद की कहानियों का कालक्रमानुसार अध्ययन *(आलोचना)*	कमल किशोर गोयनका	2014 ई.
क्षमा *(काव्य)*	सुनीता जैन	2015 ई.

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हिन्दी साहित्यकार

रचना	साहित्यकार	वर्ष (क्रम)
चिदंबरा	पंत	1968 ई० (4था)
उर्वशी	'दिनकर'	1972 ई० (8वां)
कितनी नावों में कितनी बार	'अज्ञेय'	1978 ई० (14वां)
यामा	महादेवी वर्मा	1982 ई० (18वां)
सम्पूर्ण साहित्य	नरेश मेहता	1992 ई० (28वां)
सम्पूर्ण साहित्य	निर्मल वर्मा *(पंजाबी लेखक गुरदयाल सिंह के साथ संयुक्त रूप से)*	1999 ई० (35वां)
सम्पूर्ण साहित्य	कुँवर नारायण	2005 ई० (41वां)
सम्पूर्ण साहित्य	अमरकांत एवं श्रीलाल शुक्ल	2009 ई० (45वां)
सम्पूर्ण साहित्य	केदारनाथ सिंह	2013 ई० (49वां)

नोट : *वर्ष 1984 ई० के बाद यह पुरस्कार लेखक के समग्र योगदान पर दिया जाने लगा है।*

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. हिन्दी साहित्य के आरंभिक काल को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने क्या कहा है?
(a) आदि काल (b) चारण काल
(c) वीरगाथा काल (d) सिद्ध-सामंत काल

2. वीरगाथा काल का कवि नहीं है —
(a) चन्दबरदाई (b) नामदेव (c) जगनिक (d) मधुकर

3. वीरगाथा काल के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं—
(a) चन्दबरदाई (b) जगनिक
(c) दलपति विजय (d) विद्यापति

4. 'पृथ्वीराज रासो' के रचनाकार हैं—
(a) जयदेव (b) चन्दबरदाई (c) जगनिक (d) विद्यापति

5. कबीरदास की भाषा थी—
(a) ब्रज (b) कन्नौजी (c) सधुक्कड़ी (d) खड़ी बोली
(रेलवे, 1997)

6. कटकटान कपि कुंजर भारी।
दुहु भुजदंड तमकि महिमारी।।
डोलत धरनि सभापद खसे।
चले धाजि भय मारूत ग्रसे।।
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं—
(a) तुलसीदास (b) जायसी
(c) देव (d) नूर मोहम्मद *(रेलवे, 1997)*

7. नयन जो देखा कमल-सा निरमल नीर सरीर।
हंसत जो देखा हंस भा दसन ज्योति नगहीर।।
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं —
(a) तुलसीदास (b) जयशंकर प्रसाद
(c) जायसी (d) कबीरदास *(रेलवे, 1997)*

8. 'शिवा बावनी' के रचनाकार हैं —
(a) पद्माकर (b) भूषण (c) केशवदास (d) जगनिक
(रेलवे, 1997)

9. नर की और नल नीर की गति एके करि जोय।
जेतो नीचो हे चले तेतो ऊँचो होय।।
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं—
(a) तुलसीदास (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) बिहारीलाल (d) केशवदास *(रेलवे, 1997)*

10. सखि वे मुझसे कह कर जाते ।
प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं—
(a) अज्ञेय (b) मैथिली शरण गुप्त
(c) हरिऔध (d) जयशंकर प्रसाद
(रेलवे, 1997)

11. हिन्दी कविता को छंदों की परिधि से मुक्त करानेवाले थे—
(a) सुमित्रानंदन पंत (b) जयशंकर प्रसाद
(c) महादेवी वर्मा (d) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
(रेलवे, 1997)

12. 'तितली' किसकी रचना है ?
(a) जयशंकर प्रसाद (b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(c) श्याम सुन्दर दास (d) आचार्य महावीर प्र० द्विवेदी
(रेलवे, 1997)

13. 'अतीत के चलचित्र' के रचयिता हैं—
(a) जयशंकर प्रसाद (b) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
(c) महादेवी वर्मा (d) सुमित्रानंदन पंत
(रेलवे, 1997)

14. 'पल्लव' के रचयिता हैं—
(a) सुमित्रानंदन पंत (b) निराला
(c) जयशंकर प्रसाद (d) महादेवी वर्मा *(रेलवे,1997)*

15. 'चिन्तामणि' के रचयिता हैं—
(a) जयशंकर प्रसाद (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) हरिऔध *(रेलवे,1997)*

16. 'जनमेजय का नागयज्ञ' किसकी कृति हैं ?
(a) सेठ गोविन्द दास (b) जयशंकर प्रसाद
(c) लक्ष्मी नारायण लाल (d) गोविन्द वल्लभ पंत
(रेलवे,1997)

17. हम दीवानों की क्या हस्ती, हैं आज यहाँ कल वहाँ चले।
मस्ती का आलम साथ चला, हम धूल उड़ाते जहाँ चले।।
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं—
(a) सियारामशरण गुप्त (b) भगवती चरण वर्मा
(c) सुभद्रा कुमारी चौहान (d) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(रेलवे, 1997)

18. निम्नलिखित में सबसे पहले अपनी आत्मकथा हिन्दी में किसने लिखी ?
(a) श्याम सुन्दर दास (b) सेठ गोविन्द दास
(c) जवाहर लाल नेहरू (d) राजेन्द्र प्रसाद
(ग्राम पंचायत परीक्षा, 1998)

19. अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।
उपर्युक्त पंक्तियाँ किस काव्य की हैं ?
(a) कामायनी (b) साकेत (c) यशोधरा (d) आँसू
(ग्राम पंचायत परीक्षा, 1998)

20. हिमालय के आँगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार,
उषा ने हँस अभिवादन किया और पहनाया हीरे का हार।
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं —
(a) रामधारी सिंह 'दिनकर' (b) माखन लाल चतुर्वेदी
(c) जयशंकर प्रसाद (d) मैथिली शरण गुप्त
(ग्राम पंचायत परीक्षा, 1998)

21. आंचलिक रचनाएँ किससे संबंधित होती हैं ?
(a) देश विशेष से (b) लोक विशेष से
(c) क्षेत्र विशेष से (d) जाति विशेष से
(बी० एड०, 1999)

22. निर्गुण भक्ति काव्य का प्रमुख कवि है ?
(a) सूरदास (b) तुलसीदास (c) कबीरदास (d) केशवदास
(बी०एड०, 2000)

23. 'श्रद्धा' किस कृति की नायिका है ?
(a) कामायनी (b) कुरुक्षेत्र (c) रामायण (d) साकेत
(बी० एड०, 2000)

24. तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियहिं न पान।
प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं—
(a) रहीम (b) कबीरदास (c) रसखान (d) बिहारी
(रेलवे, 2000)

25. तरनि-तनूजा-तट तमाल तरुवर बहु छाए।
प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं—
(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (b) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(c) माखनलाल चतुर्वेदी (d) राम नरेश त्रिपाठी
(रेलवे, 2000)

26. बुँदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं—
(a) सत्यनारायण पाण्डेय (b) मैथिलीशरण गुप्त
(c) सुभद्रा कुमारी चौहान (d) महादेवी वर्मा
(बी०एड०, 2000)

मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ में देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढाने जिस पथ जावें वीर अनेक ।।
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं—
(a) सत्यनारायण पाण्डेय (b) सोहन लाल द्विवेदी
(c) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (d) माखन लाल चतुर्वेदी
(बी०एड०, 2000)

दरवाजे से चंडालगढ़ी की तरफ नजर दौड़ाने पर एक अद्‌भुत दृश्य दिखाई देता था।— इस पंक्ति के रचनाकार हैं :
(a) राहुल सांकृत्यायन (b) रामचन्द्र शुक्ल
(c) जवाहर लाल नेहरू (d) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद
(रेलवे, 2000)

9. भूषण की कविता का प्रधान स्वर है —
(a) व्यंग्यात्मक (b) प्रशस्तिपरक
(c) शृंगारिक (d) कारुणिक
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

30. अपभ्रंश में कृष्ण काव्य के प्रणेता हैं—
(a) पुष्पदन्त (b) शालिभद्र सूरि
(c) स्वयंभू (d) हरिभद्र सूरि
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

31. प्रथम सूफी प्रेमाख्यानक काव्य के रचयिता हैं—
(a) नूर मुहम्मद (b) जायसी
(c) मुल्ला दाऊद (d) कुतबन
(व्याख्याता परीक्षा , 2001)

32. हिन्दी के प्रथम गद्यकार हैं—
(a) राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द'
(b) लल्लूलाल
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (d) बालकृष्ण भट्ट
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

33. हिन्दी के सर्वप्रथम प्रकाशित पत्र का नाम है—
(a) सम्मेलन पत्रिका (b) उतण्ड मार्तण्ड
(c) सरस्वती (d) नागरी प्रचारिणी पत्रिका
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

34. छायावाद के प्रवर्तक का नाम है —
(a) सुमित्रानंदन पंत (b) श्रीधर पाठक
(c) मुकुटधर पांडेय (d) जयशंकर प्रसाद
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

35. 'प्रगतिवाद उपयोगितावाद का दूसरा नाम है।'— यह कथन किसका है ?
(a) राम विलास शर्मा (b) प्रेमचंद
(c) नन्द दुलारे वाजपेयी (d) सुमित्रानंदन पंत
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

36. प्रेमचन्द के अधूरे उपन्यास का नाम है
(a) गबन (b) रंगभूमि (c) मंगलसूत्र (d) सेवासदन
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

37. रामधारी सिंह 'दिनकर' को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ था—
(a) 'रश्मिरथी' पर (b) 'परशुराम की प्रतीक्षा' पर
(c) 'कुरुक्षेत्र' पर (d) 'उर्वशी' पर
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

38. हिन्दी साहित्य के इतिहास के सर्वप्रथम लेखक का नाम है—
(a) जार्ज ग्रियर्सन (b) शिवसिंह सेंगर
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (d) गार्सा द तासी
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

39. 'पद्मावत' किसकी रचना है ?
(a) नाभादास (b) केशवदास (c) तुलसीदास (d) जायसी
(रेलवे, 2001)

40. 'बैताल पचीसी' के रचनाकार हैं —
(a) लल्लूलाल (b) सदल मिश्र (c) नाभा दास (d) सूरति मिश्र
(रेलवे, 2001)

41. 'सुहाग के नूपुर' के रचयिता हैं —
(a) निराला (b) मोहन राकेश
(c) अमृत लाल नागर (d) प्रेमचन्द
(स्टेनोग्रफर परीक्षा, 2001)

42. 'संस्कृति के चार अध्याय' किसकी रचना है ?
(a) रामधारी सिंह 'दिनकर' (b) भगवती चरण वर्मा
(c) माखनलाल चतुर्वेदी (d) सुभद्रा कुमारी चौहान
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

43. 'अशोक के फूल' (निबंध-संग्रह) के रचनाकार हैं—
(a) कुबेरनाथ राय (b) गुलाब राय
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) हजारी प्र० द्विवेदी
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

44. 'झरना' (काव्य-संग्रह) के रचयिता हैं —
(a) सोहन लाल द्विवेदी (b) महादेवी वर्मा
(c) जयशंकर प्रसाद (d) सुभद्रा कुमारी चौहान
(लेखाकार परीक्षा, 2001)

45. 'भारत भारती' (काव्य) के रचनाकार है—
(a) गोपालशरण सिंह 'नेपाली' (b) नरेश मेहता
(c) मैथिलीशरण गुप्त (d) धर्मवीर भारती
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

46. 'दोहाकोश' के रचयिता हैं —
(a) लुइपा (b) जोइन्दु (c) सरहपा (d) कण्हपा
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

47. 'प्रेमसागर' के रचनाकार हैं —
(a) सदल मिश्र (b) उसमान (c) लल्लूलाल (d) सुन्दर दास
(रेलवे, 2001)

48. 'पंच परमेश्वर' (कहानी) के लेखक हैं—
(a) रामधारी सिंह 'दिनकर' (b) प्रेमचन्द
(c) मैथिलीशरण गुप्त (d) सुमित्रानंदन पंत
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

49. 'तोड़ती पत्थर' (कविता) के कवि हैं—
(a) सुभद्रा कुमारी चौहान (b) महादेवी वर्मा
(c) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (d) माखन लाल चतुर्वेदी
(लेखाकार परीक्षा, 2001)

50. 'हार की जीत' (कहानी) के कहानीकार हैं —
(a) सुदर्शन (b) यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'
(c) कमलेश्वर (d) रांगेय राघव
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

51. 'रानी केतकी की कहानी' के रचयिता हैं—
(a) वृन्दावन लाल वर्मा (b) किशोरी लाल गोस्वामी
(c) माधव राव सप्रे (d) इंशा अल्ला खाँ
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

52. 'शिव शंभु के चिट्ठे' से संबंधित रचनाकार हैं —
(a) बाबू तोता राम (b) केशव राम भट्ट
(c) अम्बिका दत्त व्यास (d) बाल मुकुन्द गुप्त
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

53. 'रसिक प्रिया' के रचयिता हैं—
(a) मलूक दास (b) बिहारी लाल
(c) दादू दयाल (d) केशव दास *(रेलवे, 2001)*

54. 'कुटज' के रचयिता हैं—
(a) शांति प्रिय द्विवेदी (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) कुबेरनाथ राय (d) विद्या निवास मिश्र
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

55. 'आँसू' (काव्य) के रचनाकार हैं—
(a) सुमित्रानंदन पंत (b) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
(c) जयशंकर प्रसाद (d) मैथिलीशरण गुप्त
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

56. चन्दन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग—
प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं—
(a) सूरदास (b) कबीर (c) बिहारी (d) रहीम
(लेखाकार परीक्षा, 2001)

57. अमिय हलाहल, मदभरे, सेत स्याम, रतनार।
जियत, मरत, झुकि-झुकि परत जेहि चितवत इक बार॥
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं—
(a) आलम (b) रसलीन (c) बिहारी (d) मतिराम
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

58. जब-जब होय धर्म की हानी, बाढ़ै असुर अधम अभिमानी।
प्रस्तुत पंक्ति के रचनाकार हैं—
(a) रसखान (b) तुलसी (c) बिहारी (d) कबीर
(पी० सी० एस०, 2001)

59. परहित सरिस धर्म नहि भाई, परपीड़ा सम नहिं अधमाई।
प्रस्तुत पक्ति किसकी है ?
(a) रसखान (b) तुलसी (c) बिहारी (d) मीरा
(लेखाकार परीक्षा, 2001)

60. रक्त है ? या है नसों में क्षुद्र पानी,
जाँच कर तू सीस दे देकर जवानी।
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं —
(a) माखनलाल चतुर्वेदी (b) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(c) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (d) सुभद्रा कुमारी चौहान
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

61. दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या सुन्दरी परी सी
धीरे-धीरे-धीरे।
प्रस्तुत पंक्तियों के रचनाकार हैं —
(a) महादेवी वर्मा (b) सुमित्रानंदन पंत
(c) रामधारी सिंह 'दिनकर' (d) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

62. साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।
इस पंक्ति के रचयिता हैं—
(a) कबीर (b) जायसी (c) मीरा (d) रसखान
(पी० सी० एस०, 2001)

63. 'अष्टछाप' के सर्वश्रेष्ठ भक्त कवि के रूप में ..... का नाम लिया जाता है।
(a) कुंभनदास (b) सूरदास
(c) परमानंद दास (d) कृष्ण दास *(रेलवे, 2002)*

64. 'राम चरित मानस' की भाषा क्या है ?
(a) भोजपुरी (b) प्राकृत (c) ब्रजभाषा (d) अवधी
(बैंक परीक्षा, 2002, बी. एड., 2007)

65. भूषण किस रस के कवि थे ?
(a) रौद्र रस (b) करुण रस (c) वीर रस (d) शृंगार रस
(बैंक परीक्षा, 2002)

66. 'हिन्दी का आदि कवि' किसे माना जाता है ?
(a) अब्दुर रहमान (b) सरहपा
(c) स्वयंभू (d) पुष्पदंत
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

67. 'राम चरित मानस' में कितने काण्ड हैं ?
(a) 4 (b) 5 (c) 7 (d) 8
(बैंक परीक्षा, 2002)

68. निम्नलिखित में कौन-सा एक व्यंग्य लेखक है ?
(a) श्याम सुन्दर दास (b) विद्या निवास मिश्र
(c) राहुल सांकृत्यायन (d) हरिशंकर परसाई
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

69. 'आपका बंटी' रचना की प्रधान समस्या को उजागर करने वाले विकल्प को चुनिए—
(a) राजनीतिक समस्या (b) मनोवैज्ञानिक समस्या
(c) शिक्षा समस्या (d) तलाक से जुड़ी बाल समस्या
(रेलवे, 2002)

70. हिन्दी पत्रिका 'कादम्बिनी' के संपादक कौन हैं ?
(a) राजेन्द्र अवस्थी (b) रमेश बक्षी
(c) राजेन्द्र यादव (d) दुर्गा प्रसाद शुक्ल
(रेलवे, 2002)

71. 'दिनकर' किस रस के कवि माने जाते हैं ?
(a) रौद्र रस (b) करुण रस (c) वीर रस (d) शृंगार रस
(बैंक परीक्षा, 2002)

72. 'निराला' को कैसा कवि माना जाता है ?
(a) अवसरवादी (b) क्रांतिकारी
(c) पलायनवादी (d) भाग्यवादी *(बैंक परीक्षा, 2002)*

73. निम्नलिखित में कौन-सा एक उपन्यास जैनेन्द्र रचित है ?
(a) पुनर्नवा (b) परख
(c) सेवासदन (d) एकदा नैमिषारण्ये
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

74. हिन्दी गद्य का जन्मदाता किसको माना जाता है ?
(a) प्रताप नारायण मिश्र (b) महावीर प्र. द्विवेदी
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (d) बालकृष्ण भट्ट
(बैंक परीक्षा, 2002)

75. कवि कालिदास की 'अभिज्ञान शाकुन्तलम' का हिन्दी अनुवाद किसने किया ?
(a) सदासुख लाल (b) गोस्वामी विट्ठलनाथ
(c) राजा शिवप्रसाद (d) राजा लक्ष्मण सिंह
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

76. किस काल को स्वर्णकाल कहा जाता है ?
(a) रीति काल (b) भक्ति काल
(c) आदि काल (d) आधुनिक काल
(बैंक परीक्षा, 2002)

77. सूरदास के गुरु कौन थे ?
(a) रामानंद (b) मध्वाचार्य
(c) रामदास (d) बल्लभाचार्य
(बैंक परीक्षा, 2002)

78. 'कामायनी' किस प्रकार का ग्रंथ है ?
(a) खण्ड काव्य (b) मुक्तक काव्य
(c) महाकाव्य (d) चम्पू काव्य
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

79. 'गागर में सागर' भरने का कार्य किस कवि ने किया है ?
(a) बिहारी (b) रसखान (c) घनानंद (d) सूरदास
(बैंक परीक्षा, 2002)

80. 'महाभोज' रचना की प्रधान समस्या को उजागर करने वाले विकल्प को चुनिए—
(a) भ्रष्टाचार की समस्या (b) नारी समस्या
(c) राजनीतिक समस्या (d) मनोवैज्ञानिक समस्या
(रेलवे, 2002)

81. 'वापसी' किस विधा में रचित है ?
(a) आत्मकथा (b) कहानी (c) संस्मरण (d) यात्रा-वृत्त
(रेलवे, 2002)

82. 'तोड़ती पत्थर' कैसी कविता है ?
(a) व्यंग्यपरक (b) उपदेशात्मक
(c) यथार्थवादी (d) आदर्शवादी
(बैंक परीक्षा, 2002)

83. फणीश्वरनाथ 'रेणु' से संबद्ध सही प्रदेश का नाम चुनिए—
(a) महाराष्ट्र (b) बिहार (c) हिमाचल (d) उत्तरांचल
(रेलवे, 2002)

84. विद्यापति की 'पदावली' की भाषा क्या है?
(a) मैथिली (b) ब्रजभाषा (c) भोजपुरी (d) मगही
(बैंक परीक्षा, 2002)

85. .....को 'उग्र' कहते हैं ?
(a) रामेश्वर लाल दूबे (b) पाण्डेय बेचन शर्मा
(c) नरेश मेहता (d) अज्ञेय *(रेलवे, 2002)*

86. बिहारी किस राजा के दरबारी कवि थे ?
(a) महाराणा प्रताप (b) शिवाजी
(c) जय सिंह (d) तेज सिंह *(बैंक परीक्षा, 2002)*

87. 'शेष कादम्बरी' के रचयिता है ?
(a) नरेश मेहता (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) बाणभट्ट (d) अलका सरावगी
(यू० जी० सी०, 2002)

88. 'राग दरबारी' (उपन्यास) के रचयिता हैं ?
(a) राही मासूम रजा (b) श्रीलाल शुक्ल
(c) हरिशंकर परसाई (d) शरद जोशी *(रेलवे, 2002)*

89. 'पूस की रात' (कहानी) के रचनाकार हैं—
(a) प्रेमचन्द (b) शिवपूजन सहाय
(c) निराला (d) प्रसाद *(रेलवे, 2002)*

90. 'ध्रुव स्वामिनी' (नाटक) के रचयिता हैं—
(a) राम कुमार वर्मा (b) राम वृक्ष बेनीपुरी
(c) जयशंकर प्रसाद (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(बैंक परीक्षा, 2002)

91. 'आत्मनिर्भरता' (निबंध) के रचनाकार हैं—
(a) महावीर प्र.द्विवेदी (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) अजित कुमार
(बैंक परीक्षा, 2002)

92. 'गंगा छवि वर्णन' (कविता) के रचनाकार हैं—
(a) जयशंकर प्रसाद (b) मैथिलीशरण गुप्त
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (d) हरिऔध *(बैंक परीक्षा, 2002)*

93. 'अनामदास का पोथा' (उपन्यास) के रचयिता हैं—
(a) माखन लाल चतुर्वेदी (b) सोहन लाल द्विवेदी
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

94. 'भिक्षुक' (कविता) के रचयिता हैं—
(a) प्रसाद (b) पंत
(c) महादेवी वर्मा (d) निराला *(बैंक परीक्षा, 2002)*

95. 'भ्रमरगीत' के रचयिता हैं—
(a) सूरदास (b) घनानन्द (c) विद्यापति (d) शिवसिंह
(बैंक परीक्षा, 2002)

96. 'ईदगाह' (कहानी) के रचनाकार हैं—
(a) प्रेमचंद (b) अज्ञेय (c) प्रसाद (d) जैनेन्द्र
(बैंक परीक्षा, 2002)

97. 'वीरों का कैसा हो वसंत' (कविता) के रचयिता हैं—
(a) केदारनाथ सिंह (b) सुभद्रा कुमारी चौहान
(c) अज्ञेय (d) धर्मवीर भारती
(बैंक परीक्षा, 2002)

98. 'संदेश रासक' के रचयिता हैं—
(a) अमीर खुसरो (b) अब्दुर रहमान
(c) रासनिधि (d) रसलीन *(यू०जी०सी०, 2002)*

99. 'साखी' के रचयिता हैं—
(a) रसखान (b) सूरदास (c) कबीरदास (d) रहीम
(बैंक परीक्षा, 2002)

100. मसि कागद छुयो नहीं कलम गही नहिं हाथ।
प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं—
(a) दादू दयाल (b) कबीरदास (c) रैदास (d) सुन्दर दास
(रेलवे, 2002)

101. लोग हैं लागि कवित्त बनावत, मोहिं तो मेरे कवित्त बनावत।
प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं—
(a) केशवदास (b) घनानन्द
(c) भिखारी दास (d) पद्माकर *(यू०जी०सी०, 2002)*

102. अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा-लीन।
अधम व्यंजना रस-विरस, उलटी कहत प्रवीन॥
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं—
(a) भिखारी दास (b) बिहारी
(c) देव (d) चिन्तामणि
(यू० जी० सी०, 2002)

103. ले चल मुझे भुलावा देकर, मेरे नाविक धीर-धीरे।
प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं—
(a) नरेन्द्र शर्मा (b) जयशंकर प्रसाद
(c) राम नरेश त्रिपाठी (d) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

104. कविता का अंतिम लक्ष्य जगत् के मार्मिक पक्षों का प्रत्यक्षीकरण कर उनके साथ मनुष्य हृदय का सामंजस्य स्थापन है।
उपर्युक्त कथन किसका है ?
(a) महावीर प्रसाद द्विवेदी (b) रामचन्द्र शुक्ल
(c) नगेन्द्र (d) जयशंकर प्रसाद
(यू० जी० सी०, 2002)

105. केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए॥
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं—
(a) सुमित्रानंदन पंत (b) मैथिलीशरण गुप्त
(c) हरिऔध (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(यू० जी० सी०, 2002)

106. बैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है।
यह कथन किसका है—
(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (b) मुक्तिबोध
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(रेलवे, 2002)

107. शब्दार्थौ सहितं काव्यम्।
यह उक्ति किसकी है ?
(a) मम्मट (b) भामह (c) कुन्तक (d) चिन्तामणि
(यू० जी० सी०, 2002)

108. ढाई अक्षर प्रेम के, पढ़ै सो पंडित होय।
प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं—
(a) मीराबाई (b) कबीर दास
(c) जायसी (d) तुलसी दास
(बैंक परीक्षा, 2002)

109. 'वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे' के रचयिता हैं—
(a) जगदीश गुप्त (b) बाल मुकुन्द गुप्त
(c) मैथिली शरण गुप्त (d) सियाराम शरण गुप्त
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

110. इनमें से कौन भक्ति काल का कवि नहीं हैं—
(a) नाभा दास (b) रसखान
(c) नंद दास (d) अमीर खुसरो
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

111. बिहारी ने क्या लिखे ?
(a) पद (b) दोहे (c) चौपाई (d) कवित्त
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

112. निम्नलिखित में से कौन-सा प्रबंध काव्य है ?
(a) रामचरित मानस (b) आँसू
(c) एक कंठ विषपायी (d) बिहारी रत्नाकर
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

113. निम्नलिखित में किन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है?
(a) प्रेमचन्द (b) नामवर सिंह
(c) निराला (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

114. 'पृथ्वीराज रासो' किस काल की रचना है—
(a) आदि काल (b) रीति काल
(c) भक्ति काल (d) आधुनिक काल
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

115. निम्नलिखित में से कौन छायावादी कवि हैं ?
(a) भारत भूषण अग्रवाल (b) तुलसीदास
(c) सुमित्रानंदन पंत (d) नागार्जुन
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

116. नामवर सिंह ने अधिकांश क्या लिखा है ?
(a) कविता (b) कहानी (c) संस्मरण (d) आलोचना
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

117. 'आत्मजयी' के रचयिता हैं—
(a) श्रीकांत वर्मा (b) नरेश मेहता
(c) कुँवर नारायण (d) मुक्तिबोध
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

118. 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' (काव्य) के रचयिता हैं—
(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (b) भवानी प्र० मिश्र
(c) गजानन माधव 'मुक्तिबोध' (d) गिरिजा कुमार माथुर
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

119. 'राम लला नहछू' के रचनाकार हैं—
(a) रत्नाकर (b) रैदास (c) तुलसीदास (d) घनानंद
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

120. 'आषाढ़ का एक दिन' (नाटक) के रचयिता हैं—
(a) सेठ गोविन्द दास (b) भीष्म साहनी
(c) मोहन राकेश (d) लक्ष्मी नारायण लाल
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

121. 'यामा' के रचयिता हैं—
(a) सुमित्रानंदन पंत (b) सुभद्रा कुमारी चौहान
(c) महादेवी वर्मा (d) मीराबाई *(बी० एड०, 2003)*

122. 'संसद से सड़क तक' (काव्य) के रचनाकार हैं—
(a) श्रीकांत वर्मा (b) सुदामा पांडेय 'धूमिल'
(c) अज्ञेय (d) रघुवीर सहाय
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

123. 'चीफ की दवात' (कहानी) के रचनाकार हैं—
(a) डॉ० देवराज (b) राजेन्द्र यादव
(c) भीष्म साहनी (d) दुष्यंत कुमार
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

124. 'सर्कस' (उपन्यास) के रचनाकार हैं—
(a) यशपाल (b) अमृत लाल नागर
(c) मन्नू भंडारी (d) संजीव
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

125. 'रंगभूमि' (उपन्यास) के रचनाकार हैं—
(a) राजेन्द्र यादव (b) रांगेय राघव
(c) प्रेमचंद (d) अमरकांत
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

126. प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि, राजत लोचन लोल।
खेलत मनसिज मीन जुग, जनु बिधु मंडल डोल॥
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं—
(a) तुलसीदास (b) दादू (c) कबीरदास (d) रहीम
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2

127. प्रभुजी तुम चंदन हम पानी।
जाकी अंग-अंग बास समानी॥
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं—
(a) रैदास (b) मलूक दास
(c) गुरु नानक (d) कबीर दास
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2(

128. जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।
प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं—
(a) सूरदास (b) मीराबाई (c) तुलसीदास (d) गिरिधर
(बी० एड०, 20

129. 'प्रेम पचीसी' (कहानी-संग्रह) के रचनाकार हैं—
(a) प्रेमचंद (b) जयशंकर प्रसाद
(c) अज्ञेय (d) यशपाल *(रेलवे, 200*

130. ज्ञानपीठ पुरस्कार किस क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य के लिए दिया जाता ?
(a) सिनेमा (b) विज्ञान
(c) समाज सेवा (d) साहित्य *(रेलवे, 200*

131. 'प्रेमसागर' के लेखक कौन हैं ?
(a) इंशा अल्ला खाँ (b) लल्लू लाल
(c) मुंशी प्रेमचन्द (d) मुंशी सदासुख लाल
(बी० एड०, 2004,

132. तुलसीदासजी ने अपनी रचनाओं में किसका वर्णन किया हैं?
(a) शिव (b) कृष्ण (c) राम (d) विष्णु
(बी० एड०, 2004)

133. 'त्यागपत्र' (उपन्यास) किसकी रचना है?
(a) प्रेमचंद (b) जैनेन्द्र कुमार
(c) अज्ञेय (d) रेणु *(रेलवे,,2004)*

134. ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया जाता है—
(a) हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु
(b) भारतीय लेखकों की आर्थिक सहायता हेतु
(c) भारतीय भाषा में साहित्यकारों के रचनात्मक लेखन हेतु
(d) इनमें से कोई नहीं *(रेलवे, 2004)*

135. ज्ञानपीठ पुरस्कार पानेवाले हिन्दी के प्रथम साहित्यकार हैं—
(a) सुमित्रानंदन पंत (b) रामधारी सिंह दिनकर
(c) अज्ञेय (d) महादेवी वर्मा *(रेलवे, 2004)*

136. 'विनयपत्रिका' के रचयिता का नाम है—
(a) सूरदास (b) कबीरदास (c) तुलसीदास (d) केशवदास
(बी० एड०, 2005)

137. 'मानस का हंस' के लेखक का नाम है—
(a) जयशंकर प्रसाद (b) प्रेमचंद
(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) अमृत लाल नागर
(बी० एड०, 2005)

138. 'मजदूरी और प्रेम' (निबंध) के रचनाकार हैं—
(a) सरदार पूर्ण सिंह (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) प्रताप नारायण मिश्र (d) रामचन्द्र शुक्ल
(बी० एड०, 2005

139. 'कलम का सिपाही' क्या है ?
(a) आत्मकथा (b) रेखाचित्र (c) संस्मरण (d) जीवनी
(बी० एड० 200

140. दुःख ही जीवन की कथा रही।
क्या कहूँ आज जो नहीं कही।।
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता का नाम है—
(a) महादेवी वर्मा (b) जयशंकर प्रसाद
(c) सुमित्रानंदन पंत (d) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
(बी० एड०, 2005)

141. हिन्दी की पहली कहानी लेखिका का नाम है—
(a) बंग महिला (b) सत्यवती
(c) चन्द्र किरन (d) चन्द्रकांता *(बी० एड०, 2005)*

142. खड़ी बोली के सर्वप्रथम लोकप्रिय कवि कौन माने जाते हैं ?
(a) रामधारी सिंह 'दिनकर' (b) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
(c) मैथिली शरण गुप्त
(d) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' *(रेलवे, 2005)*

143. फणीश्वर नाथ 'रेणु' किसके लेखक हैं ?
(a) गबन (b) गीतांजलि
(c) मैला आँचल (d) कामायनी *(रेलवे, 2005)*

144. 'गोदान' किसकी कृति है ?
(a) फणीश्वर नाथ 'रेणु' (b) प्रेमचंद
(c) अज्ञेय (d) जयशंकर प्रसाद
(रेलवे, 2005)

145. 'कस्तूरी कुंडल बसै' आत्मकथा है—
(a) शीला झुनझुनवाला की (b) मैत्रेयी पुष्पा की
(c) कुसुम अंचल की (d) गोपाल प्रसाद व्यास की
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

146. 'चरणदास चोर' किसकी नाट्य कृति है ?
(a) मुद्राराक्षस (b) बलराज पंडित
(c) हबीब तनवीर (d) नाग बोडस
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

147. भूसन बिनु न विराजई कविता वनिता मित्त। यह कथन किसका है ?
(a) तुलसीदास (b) भिखारी दास
(c) केशवदास (d) मतिराम
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

148. ज्ञानमार्गी शाखा के कवियों को किस नाम से पुकारा जाता है ?
(a) सिद्ध कवि (b) नाथपंथी कवि
(c) भक्त कवि (d) संत कवि
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

149. इन मुसलमान हरिजनन पर कोटिक हिन्दुन वारिए
यह कथन किसका है ?
(a) रसखान का (b) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का
(c) परशुराम चतुर्वेदी का
(d) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का *(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)*

150. 'अपभ्रंश का वाल्मीकि' किसे कहा जाता है ?
(a) पुष्पदंत को (b) धनपाल को
(c) शालिभद्र सूरि को (d) स्वयंभू को
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

151. चंदबरदाई किसके दरबारी कवि थे ?
(a) महाराज हम्मीर के (b) महाराज बीसल देव के
(c) महाराणा प्रताप के (d) पृथ्वीराज चौहान के
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

152. मलिक मुहम्मद जायसी को 'जायसी' कहा जाता है क्योंकि वे—
(a) जायस गोत्र में पैदा हुए थे
(b) जायस मत को मानने वाले थे
(c) जायस नामक स्थान के निवासी थे
(d) इनमें से कोई नहीं
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

153. रीतिकाल का वह कौन-सा कवि है, जो अपनी मात्र एक कृति से हिन्दी साहित्य में अमर हो गया ?
(a) रहीम (b) मतिराम (c) बिहारी (d) देव
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

154. 'कठिन काव्य का प्रेत' किस कवि को कहा जाता हैं ?
(a) सेनापति को (b) चिन्तामणि को
(c) मतिराम को (d) केशवदास को
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

155. 'द्विवेदी युग' का नामकरण किसके नाम पर हुआ है ?
(a) शांतिप्रिय द्विवेदी (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) राम अवध द्विवेदी
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

156. 'हिन्दी प्रदीप' के यशस्वी संपादक का नाम है—
(a) राधा कृष्ण गोस्वामी (b) बाल कृष्ण भट्ट
(c) अम्बिका दत्त व्यास (d) लाला भगवानदीन
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

157. निम्नलिखित में कौन 'सरस्वती' पत्रिका के संपादक नहीं रहे हैं ?
(a) श्याम सुन्दर दास (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) श्री नारायण चतुर्वेदी (d) शांति प्रिय द्विवेदी
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

158. 'उसने कहा था' के मुख्य पात्र का नाम है—
(a) खालसा सिंह (b) करतार सिंह
(c) लहना सिंह (d) परमिंदर सिंह
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

159. निम्नलिखित में से कौन-सा नाटक प्रसाद का नहीं है ?
(a) जनमेजय का नागयज्ञ (b) स्कंदगुप्त
(c) ध्रुवस्वामिनी (d) सिन्दूर की होली
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

160. हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल को इस नाम से भी अभिहित किया जाता है—
(a) जीवनी काल (b) पद्य काल
(c) संस्मरण काल (d) गद्य काल
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

161. हिन्दी साहित्य में प्रयोगवाद के प्रवर्तक का नाम है—
(a) निराला (b) अज्ञेय
(c) पंत (d) जयशंकर प्रसाद

162. 'मृगनयनी' उपन्यास के रचनाकार हैं—
(a) उपेन्द्र नाथ अश्क (b) यशपाल
(c) जैनेन्द्र कुमार (d) वृन्दावन लाल वर्मा

163. जायसी किस धारा के कवि हैं—
(a) ज्ञानमार्गी काव्यधारा (b) प्रेमाख्यानक काव्यधारा
(c) नाथपंथी काव्यधारा (d) रासक काव्य धारा

164. निम्नलिखित में से कौन-सी पुस्तक प्रेमचन्द द्वारा लिखित नहीं है ?
(a) कायाकल्प (b) जय पराजय
(c) रंगभूमि (d) प्रेमाश्रम

165. 'कितने पाकिस्तान' नामक उपन्यास के लेखक हैं—
(a) राजेन्द्र कुमार (b) कमलेश्वर
(c) सत्य प्रकाश मिश्र (d) खुशवन्त सिंह
(हरियाणा बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2007)

166. 'मैथिल कोकिल' किसे कहा जाता है ?
(a) विद्यापति (b) अमीर खुसरो
(c) चंदबरदाई (d) हेमचन्द्र
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

167. 'प्रकृति के सुकुमार कवि' किसे कहा जाता है ?
(a) जयशंकर प्रसाद (b) सुमित्रानंदन पंत
(c) महादेवी वर्मा (d) निराला
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

168. 'एक भारतीय आत्मा' किसे कहा जाता है ?
(a) जयशंकर प्रसाद (b) माखनलाल चतुर्वेदी
(c) रामधारी सिंह दिनकर (d) सुमित्रानंदन पंत
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

169. 'कथा सम्राट' किसे कहा जाता है ?
(a) प्रेमचंद (b) जैनेन्द्र कुमार
(c) अज्ञेय (d) फणीश्वरनाथ 'रेणु'
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

170. बाल चित्रण में कौन-सा कवि श्रेष्ठ है ?
(a) रसखान (b) मीराबाई (c) सूरदास (d) कबीरदास
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

171. निम्नांकित प्रश्न में दी गई रचना के रचनाकार के सही विकल्प का चयन कीजिए—
उर्वशी
(a) रामधारी सिंह 'दिनकर' (b) सुमित्रानंदन पंत
(c) निराला (d) अज्ञेय
(आर.आर.बी. इलाहाबाद एकाउन्टेन्ट, 2010)

उत्तरमाला

1. (c)	2. (b)	3. (a)	4. (b)	5. (c)	6. (a)	7. (c)	8. (b)	9. (c)	10. (b)	11. (d)	12. (a)
13. (c)	14. (a)	15. (c)	16. (b)	17. (b)	18. (d)	19. (c)	20. (c)	21. (c)	22. (c)	23. (a)	24. (a)
25. (a)	26. (c)	27. (d)	28. (a)	29. (b)	30. (a)	31. (c)	32. (b)	33. (b)	34. (d)	35. (c)	36. (c)
37. (d)	38. (d)	39. (d)	40. (d)	41. (c)	42. (a)	43. (d)	44. (c)	45. (c)	46. (c)	47. (c)	48. (b)
49. (c)	50. (a)	51. (d)	52. (d)	53. (d)	54. (b)	55. (c)	56. (d)	57. (b)	58. (b)	59. (b)	60. (a)
61. (d)	62. (a)	63. (b)	64. (d)	65. (c)	66. (c)	67. (c)	68. (d)	69. (d)	70. (a)	71. (c)	72. (b)
73. (b)	74. (c)	75. (d)	76. (b)	77. (d)	78. (c)	79. (a)	80. (c)	81. (b)	82. (c)	83. (b)	84. (a)
85. (b)	86. (c)	87. (d)	88. (b)	89. (a)	90. (c)	91. (b)	92. (c)	93. (c)	94. (d)	95. (a)	96. (a)
97. (b)	98. (b)	99. (c)	100. (b)	101. (b)	102. (c)	103. (b)	104. (b)	105. (b)	106. (c)	107. (b)	108. (b)
109. (c)	110. (d)	111. (b)	112. (a)	113. (b)	114. (a)	115. (c)	116. (d)	117. (c)	118. (c)	119. (c)	120. (c)
121. (c)	122. (b)	123. (c)	124. (d)	125. (c)	126. (a)	127. (a)	128. (c)	129. (a)	130. (d)	131. (b)	132. (c)
133. (b)	134. (c)	135. (a)	136. (c)	137. (d)	138. (a)	139. (d)	140. (d)	141. (a)	142. (d)	143. (c)	144. (b)
145. (b)	146. (c)	147. (c)	148. (d)	149. (b)	150. (d)	151. (d)	152. (c)	153. (c)	154. (d)	155. (b)	156. (b)
157. (d)	158. (c)	159. (d)	160. (d)	161. (b)	162. (d)	163. (b)	164. (b)	165. (b)	166. (a)	167. (b)	168. (b)
169. (a)	170. (c)	171. (a)									

★★★